MINHAJUL AABIDEEN (HINDI)

"तसव्वुफ़" के मौज़ूअ़ पर मुख़्तसर व जामेअ़ किताब

मिन्हाजुल आ़बिदीन

-: मुसन्निफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَیہِ رَحمَۃُ اللہِ الکافی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मिन्हाजुल आ़बिदीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**उर्दू**" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का "**हिन्दी**" रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

"तसव्वुफ़"

के मौज़ूअ़ पर मुख़्तसर व जामेअ़ किताब

मिन्हाजुल आ़बिदीन

-: मुसन्निफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (अल मुतवफ़्फ़ा, 505 हि.)

-: मुतर्जिम :-

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सईद अह़मद नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى

(अल मुतवफ़्फ़ा 1986 ई)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या, शो'बए तख़्रीज (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

नाम किताब : **मिन्हाजुल आ़बिदीन**

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम, हज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली** शाफ़ेई عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی

मुतर्जिम : हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सईद अह़मद नक़्शबन्दी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या, शो'बए तख़्रीज (**दा'वते इस्लामी**)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल, सि. 1436 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली – 6

–: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :–

❁...**अह़मदाबाद** : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद, गुजरात –1, फ़ोन : 9327168200

❁... **मुम्बई** : 19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 022-23454429

❁... **नागपूर** : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09373110621

❁.... **अजमेर** : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

❁.... **हुबली** : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

❁... **हैदराबाद** : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... **कानपूर** : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, यू.पी. फ़ोन : 09335272252

❁... **बनारस** : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, यू.पी. फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
फ़ेहरिस्ते किताब	1	दूसरी रुकावट :	
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	4	मख़्लूक़ से मेल जोल	87
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़		हिकायत	116
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)	6	सुवाल व जवाब	117
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	तीसरी रुकावट :	
तआरुफ़े मुसन्निफ़	10	शैतान	120
मुक़द्दमए किताब	15	चौथा आइक़ (मानेअ)	
पहला बाब	36	नफ़्स	139
पहली घाटी :		सुवाल व जवाब	142
इल्म के बयान में	36	सुवाल व जवाब	142
सुवाल व जवाब	48	सुवाल व जवाब	144
सुवाल व जवाब	49	सुवाल व जवाब	154
दूसरा बाब	56	फ़स्ले अव्वल :	
दूसरी घाटी :		आंख के बयान में	163
तौबा के बयान में	56	पहला उसूल	163
सुवाल व जवाब	58	दूसरा उसूल	167
सुवाल व जवाब	61	तीसरा उसूल	168
सुवाल व जवाब	62	फ़स्ले दुवुम :	
फ़स्ल	72	कान के बयान में	169
तीसरा बाब	76	तीसरी फ़स्ल :	
तीसरी घाटी :		ज़बान के बयान में	171
अवाइक़े अरबआ के बयान में	76	पहला उसूल	172
पहला आइक़ (मानेअ) :		दूसरा उसूल	173
दुन्या और जो कुछ इस में है	76	तीसरा उसूल	174
सुवाल व जवाब	79	चौथा उसूल	175
सुवाल व जवाब	83	पांचवां उसूल	177
		पहली वजह	178

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
दूसरी वजह	179	चौथी आफ़त	222
तीसरी वजह	179	पांचवीं आफ़त	223
चौथी वजह	179	छटी आफ़त	224
चौथी फ़स्ल :		सातवीं आफ़त	225
दिल के बयान में	180	आठवीं आफ़त	226
पहला उसूल	180	नवीं आफ़त	226
दूसरा उसूल	181	दसवीं आफ़त	228
तीसरा उसूल	182	**फ़स्ल**	243
चौथा उसूल	183	इब्लीस के शर से बचना ज़रूरी है	245
पांचवां उसूल	184	लोगों से मेल जोल की मज़म्मत	246
सुवाल	187	मज़म्मते नफ़्स का बयान	248
जवाब	188	**फ़स्ल**	256
तूले अमल का बयान	190	आंख की हिफ़ाज़त	256
दूसरी आफ़त :		ज़बान की हिफ़ाज़त	256
हसद	198	पेट की हिफ़ाज़त	258
जल्द बाज़ी के नुक़्सानात	202	दिल की हिफ़ाज़त	260
किब्र का बयान	204	**फ़स्ल**	266
सुवाल व जवाब	208	**चौथा बाब**	272
अमल की हक़ीक़त का बयान	208	**चौथी घाटी में :**	
सुवाल	211	**येह घाटी "अक़बतुल अवारिज़"**	
जवाब	212	**के नाम से मौसूम है**	272
हसद की हक़ीक़त का बयान	213	**अव्वल आरिज़ा :** रिज़्क़	272
उजलत की हक़ीक़त	215	तवक्कुल की ता'रीफ़	288
किब्र की हक़ीक़त	215	तवक्कुल पैदा करने का तरीक़ा	289
पाचवीं फ़स्ल :		**दूसरा आरिज़ा :** सफ़र के ख़तरात का तसव्वुर और ख़याल	300
शिकम की हिफ़ाज़त के बयान में	217	हिकायत	301
पहली आफ़त	220	तफ़्वीज़ के मा'ना	304
दूसरी आफ़त	221	**तीसरा आरिज़ा :** क़ज़ा और इस की मुख़्तलिफ़ अक़्साम	312
तीसरी आफ़त	222	क़ज़ाए इलाही पर राज़ी होने की दूसरी वजह	314

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
चौथा आ़रिज़ा : मसाइब और तकालीफ़	318	रोज़े क़ियामत	415
सुवाल : सब्र की ह़क़ीक़त	327	जन्नत और दोज़ख़ का बयान	418
जवाब	327	**फ़स्ल**	427
सब्र किस त़रह़ पैदा किया जाए ?	328	**छटा बाब**	430
फ़स्ल	328	**छटी घाटी :**	
फ़स्ल	336	**अ़क़बतुल क़वादिह़**	340
पहला नुक्ता	336	उ़ज्ब	447
दूसरा नुक्ता	338	उ़ज्ब की ह़क़ीक़त और मा'ना	448
तीसरा नुक्ता	340	उ़ज्ब और रिया से बचने के उसूल	454
चौथा नुक्ता	340	पहला उसूल	454
तफ़्वीज़ का बयान	347	दूसरा उसूल	456
रिज़ा बिल क़ज़ा का बयान	350	तीसरा, चौथा उसूल	458
सब्र का बयान	354	ह़िकायत	460
सब्र ज़रर रसां चीज़ों को दूर करता है	355	उ़ज्ब का बयान	461
फ़स्ल	362	ह़िसाब	464
पांचवां बाब	369	**फ़स्ल**	469
पांचवीं घाटी :		**फ़स्ल**	471
अ़क़बतुल बवाइस	369	**फ़स्ल**	489
रजा (उम्मीद) का बयान	372	**सातवां बाब**	494
ह़िकायत	374	**सातवीं घाटी :**	
फ़स्ल	380	शुक्र के बयान में	494
अस्ले अव्वल :		ने'मते तौफ़ीक़ और ने'मते इ़स्मत	497
तरग़ीब व तरहीब	385	**फ़स्ल**	505
दूसरी अस्ल :		**फ़स्ल**	523
अल्लाह तआ़ला के अफ़्आ़ल	391	**फ़स्ल**	533
तीसरी अस्ल :		अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त का समरा	539
आख़िरत के वा'दा व वई़द	409	वोह बीस जो दुन्या में है	540
मौत का बयान	409	वोह बीस जो आख़िरत में है	543
क़ब्र और बा'दल मौत का ह़ाल	412	माख़ज़ो मराजेअ़	554

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"फै़ज़ाने मिन्हाजुल आ़बिदीन" (उर्दू) के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "18 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(المعجم الكبير للطبراني،٦/١٨٥،حديث:٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

«1» बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।
«2» जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

«1» हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) «2» अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा «3» ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और «4» क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा «5» कुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा «6» जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहा "عَزَّوَجَلَّ" और «7» जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा «8» इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुसन्निफ़, मुतर्जिम और जिन इस्लामी भाइयों ने इस पर काम किया है उन को ईसाले सवाब करूंगा «9» (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "**याद दाश्त**" वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा «10» (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी

ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा «11» किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़हात पढ़ कर इल्मे दीन हासिल करने के सवाब का हक़दार बनूंगा «12» दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा «13» इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी (مؤطا امام مالك،٢/٤٠٧،حديث:١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा «14» जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 126) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये «15» इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा «16» जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा : فَسْــٴَـلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَۙ (پ١٤،النحل:٤٣) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो ऐ लोगो ! इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" पर अ़मल करते हुवे उ़लमा से रुजूअ़ करूंगा «17» हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा «18» किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

*हर नेक व जाइज़ काम से क़ब्ल ख़ूब अच्छी अच्छी निय्यतें फ़रमा लेनी चाहियें, मुख़्तलिफ़ नेक व जाइज़ कामों की निय्यतें शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه *ने अपनी मुतअ़द्दिद कुतुब व रसाइल व पेम्फ़लेट और कार्ड में मौक़अ़ की मुनासबत से तह़रीर फ़रमाई हैं इन के मुत़ालए़ से अपने कामों में ख़ूब ख़ूब अच्छी निय्यतें फ़रमा कर मज़ीद अज्रो सवाब ह़ासिल कीजिये।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

*अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्याभर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे **गुम्बदे ख़ज़रा** शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

"मिन्हाजुल आ़बिदीन" अ़रबी ज़बान में तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर निहायत ही उ़म्दा किताब है जिस के मुतअ़द्दिद मुतअ़द्दिद उ़लमाए किराम ने तराजुम किये हैं पेशे नज़र तर्जमा **ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सईद अह़मद नक़्शबन्दी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेहतरीन काविश है जिस में आप ने बड़ी महारत व सलासत से काम लिया है।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "दारुल उ़लूम मुह़म्मदिय्या रज़विय्या" भख्खी शरीफ़ तह़सील फालिया ज़िल्अ़ मन्डी बहाउद्दीन (पंजाब) से दर्से निज़ामी की ता'लीम मुकम्मल फ़रमाई, फिर आप ने मर्कज़ुल औलिया लाहोर में सुकूनत इख़्तियार की, जहां आप ने ह़ज़रते दाता गंजबख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की जामेअ़ मस्जिद में इमामत व ख़िताबत के फ़राइज़ की अन्जाम देही के साथ साथ **"दर्से कुरआन"** और **"दर्से कशफुल मह़जूब"** के अन्वार बिखेरे। आप एक मह़नती और जहदे मुसलसल के धनी आ़लिमे दीन थे, आप की ज़िन्दगी दर्सी और ता'लीमी ख़िदमात के साथ साथ तस्नीफ़ो तालीफ़ में भी गुज़री है, आप ने **"मक्तूबाते इमाम रब्बानी"**, **"कीमियाए सआ़दत"**, **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"**, और **"अश्अ़तुल्लमआ़त"** जैसी अ़ज़ीम कुतुब के **तर्जमे** किये हैं नीज़ **"मस्लके इमाम रब्बानी"** जैसी किताब लिखी जिस में आप ने ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'लीमात और नज़रिय्यात का तह़फ़्फ़ुज़ फ़रमाया। आप का मज़ारे मुबारक मर्कज़ुल औलिया लाहोर दाता दरबार के शुमाल में वाक़ेअ़ है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए तख़रीज (अल मदीनतुल इल्मिय्या) के 5 इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की बिल खुसूस सय्यिद मुह़म्मद वक़ार अ़त्तारी मदनी, ज़हूर अह़मद दानिश

अ़त्तारी मदनी, इब्ने ह़नीफ़ मुह़म्मद सईद अ़त्तारी मदनी ने ख़ूब कोशिश की, काम की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

«1» मुकम्मल किताब का तक़ाबुल «2» अह़ादीसे मुबारका की तख़रीज «3» तक़ाबुले आयात व तराजिम «4» अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیۡن के ज़िक्र के साथ जहां تَرَحُّم وتَرَضِّی (दुआ़इय्या कलिमात) किताबत में रह गए हैं वहां ब्रेकेट में ह़स्बे ह़ाल इन का इज़ाफ़ा «5» मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग «6» ह़वालाजात की तफ़्तीश «7» क़ाबिले ग़ौर मक़ामात पर तह़क़ीक़ व नज़रे सानी «8» मुफ़ीद व नागुज़ीर ह़वाशी «9» आयाते क़ुरआनी की पेस्टिंग «10» ह़त्तल मक़्दूर मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब व तस्हील «11» ह़वाशी में तर्जमए कन्ज़ुल ईमान का ख़ुसूसी एहतिमाम «12» ह़वाशी में बा'ज़ मक़ामात में किताबत की अग़लात़ की निशान देही व तसह़ीह़ «13» अ़रबी इ़बारात, आ'लाम व अमाकिन पर ए'राब का एहतिमाम «14» फ़ॉरमेटिंग और फ़ाईनल प्रूफ़ रीडिंग जैसे अहम मराह़िल शामिल हैं।

पेशे नज़र किताब में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी लाशुऊ़री कोताह फ़हमी का दख़्ल है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि वोह हमें इस किताब से ख़ूब ख़ूब इक्तिसाबे फ़ैज़ करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा कर अपने इन्आ़म याफ़्ता बन्दों में शुमार फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तख़रीज

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

ह़सब नसब

आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की कुन्यत "अबू ह़ामिद", लक़ब "हुज्जतुल इस्लाम" और नामे नामी इस्मे गिरामी "मुह़म्मद" बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद तूसी ग़ज़ाली शाफ़ेई رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی है । (اتحاف السادة المتقين ، مقدمة الكتاب، ۱/۹)

विलादते बा सआ़दत

आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) **450** हि. में ख़ुरासान के ज़िल्अ़ तूस के अ़लाक़े त़ाबिरान में पैदा हुवे । (اتحاف السادة المتقين ، مقدمة الكتاب، ۱/۹)

इब्तिदाई ह़ालाते ज़िन्दगी

आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد शहर ख़ुरासान ही में ऊन कात कर बेचा करते थे या'नी पेशे के लिहाज़ से धागे के ताजिर थे, अ़रबी में "काते हुवे सूत" को "**ग़ज़्ल**" कहते हैं इसी निस्बत से आप का ख़ानदान "**ग़ज़ाली**" कहलाता है। अभी आप और आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی कम उ़म्र ही थे कि **465** हि. में वालिदे मोह़तरम विसाल फ़रमा गए । इन्तिक़ाल से पहले उन्हों ने अपने एक सूफ़ी दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی को वसिय्यत की थी कि "मेरा तमाम असासा मेरे इन दोनों बेटों की ता'लीम व परवरिश पर ख़र्च कर दीजियेगा ।" वसिय्यत के मुत़ाबिक़ इन के वालिदे गिरामी का सरमाया इन की ता'लीम व परवरिश पर सर्फ़ कर दिया गया । (اتحاف السادة المتقين ، مقدمة الكتاب، ۱/۹)

ता'लीम के लिये सफ़र

इब्तिदाई ता'लीम अपने शहर में ही ह़ासिल की जहां कुतुबे फ़िक़्ह ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से पढ़ीं, **20** साल से कम ही के थे कि (ईरान के मशरिक़ी शहर) जुरजान तशरीफ़ ले गए वहां ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इस्माईली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی की ख़िदमत में कुछ अ़र्सा रहे। फिर अपने शहर तूस लौट आए, **473** हि. में (ईरान के क़दीम शहर) नैशापूर में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन इमाम अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی (मुतवफ़्फ़ा **478** हि.) की बारगाह में ज़ानूए तलम्मुज़ तै किया और इन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़रा, मन्तिक़ और ह़िक्मत वग़ैरा में महारते ताम्मा ह़ासिल की, **478** हि. में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल के बा'द इन की जगह आप को इस मन्सबे आ'ला पर फ़ाइज़ किया गया, **484** हि. में मद्रसए निज़ामिय्या (बग़दाद) के **शैख़ुल जामिअ़ा** (वाइस चान्सेलर) का ओ़हदा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पेश किया जिसे आप ने क़बूल फ़रमा लिया। चार साल बग़दाद में तदरीस व तस्नीफ़ में मश्ग़ूलिय्यत के बा'द ह़ज के इरादे से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना हो गए। बक़ौल अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **597** हि.) "बग़दाद में आप की मजलिसे दर्स में बड़े बड़े उ़लमाए किराम ह़ाज़िर होते। जो आप से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते और आप के बयान पर ह़ैरत का इज़्हार करते और आप के कलाम को अपनी किताबों में नक़्ल करते।" (المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، ۹/۱۶۸) एक अ़र्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा, फिर दोबारा दिमश्क़ तशरीफ़ लाए और जामेए दिमश्क़ के मग़रिबी

मनारे पर ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे में मश्ग़ूल हो गए। मुल्के शाम में **10** साल क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान "**इह़याउल उ़लूम** (**4** जिल्दें)", **जवाहिरुल कुरआन**, **तफ़्सीरे याक़ूतुत्तावील** (**40** जिल्दें) और **मिश्कातुल अन्वार** वग़ैरा मश्हूर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। फिर हि़जाज़, बग़दाद और नैशापूर के दरमियान सफ़र जारी रहा और बिल आख़िर अपने आबाई शहर तूस वापस आ कर इ़बादत व रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और ता दमे आख़िर वा'ज़ व नसीह़त, इ़बादत व रियाज़त और तसव्वुफ़ की तदरीस में मश्ग़ूल रहे।

(اتحاف السادة المتّقين،مقدمة الكتاب، ١/٩تا١١ وشذرات الذهب، ٤/١٤٤تا١٤٥)

शैख़े कामिल की बैअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने दौरे त़ालिबे इ़ल्मी में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमज़ी तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मुतवफ़्फ़ा **477** हि.) के हाथ पर (**27** साल की उ़म्र में) बैअ़त की। शैख़ मौसूफ़ बहुत आ़ली मर्तबत, फ़िक़्हे शाफ़ेई के ज़बरदस्त आ़लिम और मज़ाहिबे सल्फ़ से बा ख़बर थे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा **417** हि.) के जलीलुल क़द्र शागिर्दों में से हैं। (اتحاف السادة المتّقين،مقدمة الكتاب، ١/٢٦)

बात़िनी उ़लूम की तलाश

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **478** हि. ता **484** हि. सरताजे मदारिसे इस्लामिय्या मद्रसए निज़ामिय्या नैशापूर में "**इमामुल ह़रमैन**" फिर **484** हि. ता **488** हि. मर्कज़े उ़लूमे इस्लामिय्या मद्रसए निज़ामिय्या बग़दाद में "**मुदर्रिसे आ'ला**" के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। सुल्ताने वक़्त और मुल्क भर के उ़लमा व फ़ु-ज़ला आप के तबह़्ह़ुरे इ़ल्मी

के क़ाइल हो गए और एक वक़्त ऐसा भी आया कि बादशाहे वक़्त से ज़ियादा इमाम साहिब का सिक्का लोगों के दिलों पर बैठ गया। सल्त़नते सिलजूक़िय्या के वज़ीरे आ'ज़म निज़ामुल मुल्क त़ूसी ब नफ़्से नफ़ीस उमूरे ममलुकत में आप से मश्वरा करते थे। तमाम उ़लूम की तक्मील के बा'द अव्वलन इमामुल ह़रमैन फिर मुदर्रिसे आ'ला जैसे ओ़हदों पर मुतमक्किन रहने के बा वुजूद आप को जिस बात़िनी व रूह़ानी सुकून की तलाश थी वोह ह़ासिल न हो सका। बग़दाद जो उस वक़्त मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों और बात़िल मज़ाहिब के बेजा मुनाज़रों और मुजादलों का दंगल बना हुवा और फ़ितना व फ़साद की कैफ़िय्यत त़ारी थी। (मुक़द्दमाए इह़याउ़ल उ़लूम (मुतर्जम अज़ अ़ल्लामा मुह़म्मद सिद्दीक़ हज़ारवी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی) **1/19** मुलख़्ख़सन) आप ने उन फ़िर्क़ों के उ़लूम व अ़क़ाइद की तह़क़ीक़ शुरूअ़ की। इस तह़क़ीक़ व जुस्तजू से इज़्त़िराब और बढ़ गया मगर जब तसव्वुफ़ पर मौजूद कुतुब का मुत़ालआ़ किया तो मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ इ़ल्म काफ़ी नहीं बल्कि अ़मल की ज़रूरत है। अल ग़रज़ रूह़ानी सुकून की ख़ात़िर आप ने मन्सबे तदरीस छोड़ दिया। दुन्या की गूनागूं मसरूफ़िय्यात और रंगारंगी से बिल्कुल कनारा कशी इख़्तियार कर ली ह़त्ताकि लिबासे फ़ाख़िरा के बजाए एक कम्बल ओढ़ा करते थे और लज़ीज़ ग़िज़ाओं की जगह साग पात पर गुज़र बसर होने लगी। अपने शहर त़ूस पहुंच कर सूफ़िया के लिये एक ख़ानक़ाह और शौक़े इ़ल्म रखने वालों के लिये एक मद्रसा ता'मीर किया और फिर ता दमे ह़यात अवरादो वज़ाइफ़, रियाज़त व इ़बादत, गोशा नशीनी और तदरीसे तसव्वुफ़ में मश्ग़ूल रहे।

(مراۃ الجنان وعبرۃ الیقظان،۳/۱۳۷ ملخصًا)

तस्नीफ़ व तालीफ़

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने कई उ़लूम व फ़ुनून में सेंकड़ों कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ किये, जिन में से चन्द मश्हूर कुतुब के नाम मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

اِحْيَاءُ عُلُوْمِ الدِّيْن، اَلْاِمْلَاءُ عَلٰى مُشْكَلِ الْاِحْيَاء [و يسمى ايضًا "اَلْاَجْوِبَةُ الْمُسْكِتَه عَنِ الْاَسْئِلَةِ الْمُبْهَتَه"]، اَلْاَرْبَعِيْن، اَلْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى، اَلْاِقْتِصَاد فِى الْاِعْتِقَاد، اِلْجَامُ الْعَوَام عَنْ عِلْمِ الْكَلَام، اَسْرَارُ مُعَامَلَاتِ الدِّيْن، اَسْرَارُ الْاَنْوَارِ الْاِلٰهِيَّه بِالْاٰيَاتِ الْمَتْلُوَّه، اَخْلَاقُ الْاَبْرَار وَ النَّجَاةُ مِنَ الْاَشْرَار، اَسْرَارُ اِتِّبَاعِ السُّنَّه، اَسْرَارُ الْحُرُوْف وَ الْكَلِمَات، اَيُّهَا الْوَلَد، بِدَايَةُ الْهِدَايَه۔(اتحاف السادة المتقين،مقدمة الكتاب، ١/٥٦)

दारे फ़ना से दारे बक़ा का सफ़र

उ़म्र के आख़िरी हिस्से में अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی का ज़ियादा तर वक़्त इबादत में गुज़रता और शबो रोज़ मुजाहदात व रियाज़ात में बसर करते थे मगर तस्नीफ़ व तालीफ़ का मश्ग़ला बिल्कुल तर्क न फ़रमाया। उसूले फ़िक़्ह में आप की आ'ला दर्जे की तस्नीफ़ "**अल मुस्तस्फ़ा**" 504 हि. की तस्नीफ़ है। इस के एक बरस बा'द आप ने 55 साल की उ़म्र में बरोज़ पीर 14 जुमादिल आख़िर 505 हि. में ब मक़ामे त़ाबरान (तू़स) में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं मदफ़ून हुवे।

(अज़ इह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 1/14 ता 35 मुलतक़त़न)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ ط

शैख़, सालेह़, ज़ाहिद, अ़ल्लामा अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया (अल्लाह तआ़ला उसे बख़्शे) कि मेरे शैख़, इमामे अजल, नेक बख़्त, तौफ़ीक़ याफ़्ता, हुज्जतुल इस्लाम, दीन की ज़ीनत, उम्मत के लिये शरफ़, अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली तूसी (عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی) ने मेरे सामने येह किताब पढ़ी और नक़्ल की, अल्लाह तआ़ला उन की रूह़ को खुश करे और जन्नत में उन के दरजात व मरातिब बुलन्द फ़रमाए, येह इमाम मौसूफ़ की आख़िरी तस्नीफ़ है और मुसन्निफ़ عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ से इस किताब के सुनने का मौक़अ़ सिर्फ़ इन के ख़ास अह़बाब को ही मयस्सर आया है।

किताब का आग़ाज़ इन अल्फ़ाज़ से होता है

सब ख़ूबियां अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम काइनात का मालिक है, जिस ने तमाम मौजूदात को अपनी ह़िक्मते कामिला से तरतीब दिया, जो ह़कीम, जवाद, ग़ालिब और करीम जैसे आ'ला सिफ़ाती अस्मा से मुत्तसिफ़ है जिस ने इन्सान को बेहतरीन फ़ित़रत पर पैदा फ़रमाया और ज़मीनो आस्मान जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ को अपनी क़ुदरते कामिला से वुजूद का जामा पहनाया और जिस ने दोनों जहान के उमूर को **अह़सन त़रीक़े** [1] पर चलाया और जिन्नो इन्स को सिर्फ़ अपनी ही इ़बादत के लिये पैदा किया।

1....बेहतरीन अन्दाज़।

लिक़ाए इलाही[1] का क़स्द करने वालों के लिये उस तक पहुंचने की राहें कुशादा हैं और ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिये उस की हस्ती पर वाज़ेह़ दलाइल मौजूद हैं लेकिन **अल्लाह** तआ़ला जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत की राह दिखाए।

और क़ियामत तक हुज़ूरे पूरनूर, सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप की आल और आप के अस्ह़ाब पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यिबो ताहिर थे, **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत और उस की त़रफ़ से सलामती नाज़िल होती रहे और हमेशा आप की और आप के मुतअ़ल्लिक़ीन की अ़ज़मत क़ाइम रहे।

اَمَّا بَعْد ! ऐ अ़ज़ीज़ भाइयो ! (**अल्लाह** तआ़ला मुझे और आप सब को अपनी रिज़ा का पाबन्द बनाए जो जन्नते फ़िरदौस की राह है) ख़ुदावन्दे करीम का इरशाद है :

وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾ (2) *मैं ही तुम्हारा रब हूं इस लिये मेरी ही इबादत करो।*

क़ुरआने मजीद में एक और जगह फ़रमाया :

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۲۲﴾ع (3) *(जन्नतियों को जन्नत में दाख़िल होते वक़्त कहा जाएगा) येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी कोशिश (जो तुम ने दुन्या में की) मक़्बूल हुई।*

आयाते मुन्दरिजए बाला से मा'लूम हुवा कि जन्नत में जाना उसी को नसीब होगा जिस ने दुन्या में कोशिश की और कमा

---

1 ....**अल्लाह** तआ़ला से मिलने।

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं तुम्हारा रब हूं तो मेरी इबादत करो। (پ۱۷،الانبیاء:۹۲)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी। (پ۲۹، الدھر : ۲۲)

ह़क़्क़ुहू ख़ुदा की बन्दगी में मसरूफ़ रहा, इस लिये हम ने इ़बादात की ह़क़ीक़त में नज़र की, इस के त़रीक़ों पर ग़ौर किया, इस के बुन्यादी उमूर और उन मक़ासिद में नज़र दौड़ाई जो **सालिके राहे आख़िरत**[1] को दरपेश हैं, तो ग़ौर करने से मा'लूम हुवा कि **त़रीक़े इ़बादत**[2] निहायत दुश्वार और मुश्किल है, इस राह में निहायत तंगो तारीक घाटियां उ़बूर करना पड़ती हैं, शदीद मशक़्क़तों का सामना करना पड़ता है। बड़ी बड़ी आफ़ात रास्ते में पेश आती हैं और मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में बहुत मवानेअ़ और रुकावटें दरपेश हैं और तूल व त़वील, **ग़ैर मरई**[3] मसाफ़तों को तै करना पड़ता है।

ग़ौर करने से येह भी मा'लूम हुवा कि इ़बादत के रास्ते में **गूनागूं**[4] हलाक और तबाह कुन चीज़ें मख़्फ़ी हैं और येह कि येह रास्ता ख़त़रनाक दुश्मनों और डाकूओं में घिरा हुवा है और येह कि इस रास्ते की शाख़ें और फ़ुरूआ़त सख़्त पेचीदा हैं मगर इस रास्ते का ऐसा मुश्किल और पेचीदा होना ज़रूरी है क्यूंकि येह जन्नत का रास्ता है और जन्नत में पहुंचना कोई आसान नहीं।

और इ़बादत का इतना मुश्किल होना हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस इरशाद की तस्दीक़ करता है, आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया है :

اَلَا وَ اِنَّ الْجَنَّةَ حُفَّتْ بِالْمَكَارِهِ وَ اِنَّ النَّارَ حُفَّتْ بِالشَّهَوَاتِ[5] सुन लो ! जन्नत ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने से ह़ासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात की पैरवी की वजह से जाएंगे।

1...आख़िरत की राह पर चलने वाले। 2...इ़बादत की राहों पर चलना
3...जो आंखों से दिखाई न दे। 4...त़रह़ त़रह़ की।

5......الزھد لھناد، باب صفة حر النار، ١/١٧١، حديث : ٢٤٤ـ

इसी बारे में आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का दूसरा इरशाद येह है : اَلَا وَ اِنَّ الْجَنَّةَ حَزْنٌ بِرَبْوَةٍ وَّ اِنَّ النَّارَ سَهْلٌ بِسَهْوَةٍ[1] सुन लो कि जन्नत ऊंचे टीले पर **संगलाख़**[2] ज़मीन की त़रह़ है और दोज़ख़ सेह़्न में नर्म व हमवार ज़मीन के अन्दर है। या'नी अव्वलुज़्ज़िक्र ज़मीन में काश्त कर के फल ह़ासिल करना निहायत मेह़नत त़लब है।

फिर इ़बादत से मुतअ़ल्लिक़ा मुश्किलात के साथ साथ इन्सान एक कमज़ोर मख़्लूक़ है और ज़माना त़रह़ त़रह़ की **सुऊ़बतों**[3] से लबरैज़ है और दीन का मुआ़मला तरक़्क़ी के बजाए **तनज़्ज़ुल**[4] की त़रफ़ रुजूअ़ कर रहा है फिर दुन्यवी मश्ग़ूलिय्यतें बहुत हैं और इ़बादत के वासित़े वक़्त बहुत मुख़्तसर है, इधर इन्सान की उ़म्र बहुत कम है और मज़ीद येह कि इन्सान आ'माले सालिह़ा की बजा आवरी में बहुत ला परवाई करता है या'नी ख़ुशूअ़ और ख़ुज़ूअ़ वग़ैरा का ख़याल बहुत कम रखता है और जिस ज़ात ने आ'माल को परखना है वोह इन्तिहाई बसीर है। इन तमाम परेशानियों के साथ साथ मौत हर **सानिया**[5] क़रीब आ रही है और इन्सान को जो सफ़र दरपेश है वोह बहुत त़वील है।

मुन्दरिजए बाला मुश्किलात में घिरे हुवे इन्सान को पता होना चाहिये कि इस ख़त़रनाक और ज़रूरी सफ़र का तोशा सिर्फ़ इ़बादत है और सफ़र में ज़ादे राह का होना ज़रूरी है और इस ज़ादे राह को फ़राहम करने का वक़्त इस तेज़ी से गुज़र रहा है कि हरगिज़ वापस नहीं आएगा। तो जो शख़्स इस थोड़े से वक़्त में ज़ादे आख़िरत तय्यार करने में कामयाब हो गया समझो वोह नजात पा गया और उस ने हमेशा की सआ़दत ह़ासिल कर ली। लेकिन जिस

---

1 ......الجامع الصغير، ص ١٧٣، حديث: ٢٨٨٧، بتغير-

2 पथरीली। 3 मुश्किलात। 4 ज़वाल /पस्ती। 5 पल / मिनट का साठवां ह़िस्सा।

अह़मक़ ने इस इन्तिहाई क़ीमती वक़्त को **लह्वो लअ़ब**[1] में खो दिया और ज़ादे आख़िरत मुहय्या न कर सका तो वोह बिला शक नाकाम व नामुराद रहा और तबाहो बरबाद लोगों में से हो गया।

मज़्कूरा वुजूहात के बाइ़स येह इ़बादत जिस क़दर मुश्किल है इस से कहीं ज़ियादा अहम भी है इसी लिये इस सफ़र पर कमर बस्ता होने वाले थोड़े हैं और फिर जम कर **इस्तिक़लाल**[2] से इस सफ़र की मनाज़िल तै़ करने वाले इस से थोड़े हैं मगर मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने वाले ही ख़ुदा को प्यारे हैं, इन्हीं को **अल्लाह** ने अपनी मह़ब्बत व मा'रिफ़त के लिये चुना और मुन्तख़ब किया और इन्हीं लोगों को रब तआ़ला तौफ़ीक़ व **इ़स्मत**[3] के साथ मज़्बूत़ करता है फिर येही लोग जन्नते फ़िरदौस के मुस्तह़िक़ बनते हैं और उस की रिज़ा का मक़ाम पाते हैं। तो हम **अल्लाह** तआ़ला से (जिस का ज़िक्र बुलन्द है) इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें और तुम्हें अपनी रह़मत से सआ़दत मन्द करे और कामयाब लोगों में शामिल करे।

जब हम ने त़रीक़े इ़बादत व रियाज़त को मज़्कूरा नौइ़य्यत का पाया और इस राह के **क़त़्अ़**[4] करने के अस्बाब पर पूरा पूरा ग़ौर किया और उन चीज़ों पर ग़ौर किया जिन का इन्सान फ़रीज़ए इ़बादत अदा करते वक़्त मोह़ताज है, मसलन इ़बादत की **इस्ति'दाद**[5] और कुव्वत होना, इसे अ़मली त़ौर पर बजा लाना, इस से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी इ़ल्म ह़ासिल करना और दीगर ज़रूरी तदाबीर इख़्तियार करना जो **अल्लाह** की तौफ़ीक़ व **इआ़नत**[6] से ही अ़मल में लाई जा सकती है और ख़ुदा की रह़मत से ही बन्दा इस की मुश्किल घाटियों

---

1 फ़ुज़ूल कामों, 2 मुस्तक़िल मिज़ाजी। 3 गुनाहों से ह़िफ़ाज़त। 4 तै। 5 त़ाक़त। 6 मदद।

को उ़बूर करने में कामयाब हो सकता है, तो हम ने सफ़रे आख़िरत को तै़ करने के मुतअ़ल्लिक़ा उमूर व अस्बाब पर कई किताबें लिखीं जैसे اِحْیَاءُ عُلُوْمِ دِیْن" ، "اَلْقُرْبَۃُ اِلَی اللہ" वग़ैरा, जिन में इ़बादत के **दक़ाइक़**[1] व **ग़वामिज़**[2] पर बह़स की गई है। इन किताबों में ऐसी तह़क़ीक़ात हैं जिन को **आ़म्मतुन्नास**[3] के ज़ेहन नहीं समझ सकते। जब अ़वाम इन नफ़ीस बहसों को न समझ सके तो उन्हों ने अपनी कम फ़हमी से इन पर नुक्ता चीनी शुरूअ़ कर दी और जो बातें उन के नाक़िस **मज़ाक़**[4] के मुवाफ़िक़ न आईं, इन्हें फ़ुज़ूल **क़ीलो क़ाल**[5] का मह़ल बना लिया। लेकिन इस क़िस्म की क़ीलो क़ाल कोई नई शै नहीं, क्या आप को मा'लूम नहीं कि रब्बुल आ़लमीन का कलाम फ़साह़त व बलाग़त और ऊंचे मसाइल और मे'यारी मज़ामीन के ए'तिबार से बे मिस्ल व बे मिसाल है, मगर **मो'तरिज़ीन**[6] ने इस के मुतअ़ल्लिक़ भी कह दिया कि [7] اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۵﴾ येह तो अगले वक़्तों के क़िस्से कहानियां हैं।

और क्या आप ने ह़ज़रते ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के येह अश्आ़र नहीं सुने :

(١) اِنِّیْ لَاَکْتُمُ مِنْ عِلْمِیْ جَوَاهِرَهٗ — کَیْلَا یَرٰی ذَاکَ ذُوْجَهْلٍ فَیُفْتَتَنَا[8]

(٢) وَ قَدْ تَقَدَّمَ فِیْ هٰذَا اَبُوْ حَسَنٍ — اِلَی الْحُسَیْنِ وَوَصّٰی قَبْلَهُ الْحَسَنَا

(٣) یَارُبَّ جَوْهَرُعِلْمٍ لَوْ اَبُوْحُ بِهٖ — لَقِیْلَ لِیْ اَنْتَ مِمَّنْ یَّعْبُدُ الْوَثَنَا

(٤) وَلَاسْتَحَلَّ رِجَالٌ مُّسْلِمُوْنَ دَمِیْ — یَرَوْنَ اَقْبَحَ مَا یَاْتُوْنَهٗ حَسَنًا

---

1 ग़ौरो फ़िक्र से समझने वाले उमूर। 2 ग़ैर वाज़ेह़ उमूर। 3 आ़म लोगों। 4 ज़ौक़। 5 बह़स। 6 ए'तिराज़ करने वालों। 7 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें। (پ۷،الانعام:۲۵) 8 यहां लफ़्ज़ فَیَفْتَتِنَا (फ़यफ़्तनिना) था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ (फ़युफ़्ततना) है, लिहाज़ा इस की **तस्ह़ीह़** कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

तर्जमा : (1) मुझे अपने कई इल्मी जवाहिर पारे पोशीदा रखने पड़ते हैं ताकि जुहला इन की तह तक न पहुंचने के बाइस कहीं फ़ितने में मुब्तला न कर दें।
(2) और मुझ से पहले मेरे जद्दे अमजद (ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) भी इमामे ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को फ़रमा गए हैं कि
(3) ऐ मेरे **अल्लाह** ! अगर मैं अपने इल्मी मोती लोगों के सामने ज़ाहिर कर दूं तो मुझे येह कहेंगे कि येह तो कोई बुत परस्त है।
(4) वोह ऐसे पुर अस्रार उ़लूम हैं कि उन को सुन कर मुसलमान भी मेरे क़त्ल के दरपे हो जाएं और क़त्ल की इस बद तरीन ह़रकत को दुरुस्त ख़याल करें।

तो बुज़ुर्गाने दीन ने जिन का दरगाहे ईज़्दी में बुलन्द मक़ाम है, फ़ुज़ूल ए'तिराज़ात की परवा न करते हुवे और तमाम उम्मत पर नज़्रे करम फ़रमाते हुवे इस मौज़ूअ़ पर कई किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं मैं भी उस ज़ाते अक़्दस की त़रफ़ मुल्तजी हुवा जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में **तमाम आ़लमे ख़ल्क़ व अम्र**[(1)] की चीज़ें हैं कि मुझे एक ऐसी किताब तस्नीफ़ करने की तौफ़ीक़ दे जिस पर सब मुत्तफ़िक़ हों और जिस को पढ़ने से तमाम को फ़ाइदा पहुंचे तो उस रह़ीम व करीम ज़ात ने मेरी येह इल्तिजा क़बूल फ़रमाई उस ने अपने फ़ज़्लो करम से इबादत के अ़जीबो ग़रीब अस्रारो रुमूज़ पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और मुझे इस किताब की अ़जीब तरतीब व तदवीन का **इल्हाम फ़रमाया**[(2)] ऐसी तरतीब मैं किसी और किताब की तस्नीफ़ में नहीं क़ाइम कर सका येह वोह तस्नीफ़ है जिस की मैं ख़ुद ता'रीफ़ करता हूं। (فَاَقُوْلُ وَبِاللّٰہِ التَّوْفِیْق)

1 येह माद्दी दुन्या और अरवाह़ व फ़िरिश्तों की दुन्या।
2 **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मेरे दिल में येह बात डाली गई।

सब से पहले बन्दे को रब की इबादत की तरफ़ जो चीज़ मुतवज्जेह करती है वोह **अल्लाह** की तरफ़ से बन्दे के दिल में इबादत का ख़याल और उस की तरफ़ से नेक आ'माल की तौफ़ीक़ है, रब तआ़ला के इस क़ौल में इसी तौफ़ीक़ व ख़याल की तरफ़ इशारा है। रब तआ़ला का इरशाद है :

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ (1)

ख़ुदा तआ़ला ने जिस का सीना इस्लाम के लिये खोल दिया हो उस में ख़ुदा का एक नूर पैदा हो जाता है।

और हुज़ूरे पुरनूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपने इस इरशाद में इसी की तरफ़ इशारा फ़रमाया है :

اِنَّ النُّوْرَ اِذَا دَخَلَ الْقَلْبَ اِنْفَسَحَ وَ انْشَرَحَ जब बन्दे के दिल में ख़ुदा तआ़ला का नूर दाख़िल होता है तो दिल में वुस्अ़त और इनशिराह़ पैदा हो जाता है।

सहाबए किराम (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस नूर और ख़याल के बन्दे में आने की क्या अ़लामत है ? तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जवाब दिया :

"اَلتَّجَافِيْ عَنْ دَارِ الْغُرُوْرِ وَ الْاِنَابَةُ اِلٰى دَارِ الْخُلُوْدِ وَ الْاِسْتِعْدَادُ لِلْمَوْتِ قَبْلَ نُزُوْلِ الْمَوْتِ"(2)

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिये खोल दिया तो वोह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है। (پ٢٣،الزمر:٢٢)

2 الزهد لابن مبارك،باب الهرب من الخطايا...الخ،ص١٠٦،حديث:٣١٥بتغير و الزهد لوكيع، باب الاستعداد للموت، الجزء الاول(الف) ، ص٢٣٧ ، حديث:١٥

इस फ़ानी दुन्या से कनारा कशी, आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़, मौत आने से पहले मौत की तय्यारी।

तो सब से पहले बन्दे के दिल में जब येह ख़याल **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इल्क़ा होता है कि मैं तो **अल्लाह** तआ़ला की क़िस्म क़िस्म की ने'मतों में डूबा हुवा हूं जैसे ज़िन्दगी की ने'मत, क़ुदरत, अ़क़्ल, बोल चाल और दीगर आ'ला सिफ़ात व लज़्ज़ात की चीज़ें और उस ने मेरे लिये ऐसे अस्बाब भी मुहय्या फ़रमाए जिन के ज़रीए़ मैं अपने आप को तकालीफ़ और नुक़्सान देह चीज़ों से मह़फ़ूज़ रख सकता हूं और आफ़ात से अपने आप को बचा सकता हूं और फिर बन्दा जब येह भी सोचता है कि जिस **मुन्इम**(1) ने मुझे येह ने'मतें अ़त़ा की हैं वोह मुझ से इन ने'मतों का शुक्र और अपनी **ख़िदमत**(2) का मुत़ालबा करेगा और अगर मैं ने ने'मतों पर शुक्र और इस की ख़िदमत न की तो वोह येह ने'मतें मुझ से छीन लेगा और इस ना शुक्री की वजह से वोह मुझ पर(3) नाराज़ होगा और एक रोज़ सज़ा देगा।

और बन्दा जब येह भी ख़याल करता है कि उस मुन्इम ने अपनी मा'रिफ़त व ख़िदमत के आदाब बताने के लिये हमारी त़रफ़ रसूल भेजे जिन को ऐसे ऐसे मो'जिज़ात अ़त़ा किये जो इन्सानी अ़क़्ल व त़ाक़त से बाहर थे, उन्हों ने आ कर बताया कि ऐ बन्दे ! तेरा एक परवर दगार है जो हर शै पर क़ादिर है हर शै को जानता है हमेशा ज़िन्दा है हमेशा से मुतकल्लिम है, जो चाहे इरादा फ़रमाता

---

(1) ने'मत देने वाले। (2) इबादत। (3) यहां से लफ़्ज़ "**ग़ुस्सा**" को ह़ज़्फ़ कर दिया है क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़ "**ग़ुस्सा**" इस्ति'माल करने को फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 26, सफ़ह़ा 457 पर मन्अ़ किया गया है। (इ़ल्मिय्या)

है, उस ने तुझे बा'ज़ काम करने का और बा'ज़ न करने का हुक्म दिया है, उसे येह भी ता़क़त है कि अगर मैं ने नाफ़रमानी की तो मुझे अ़ज़ाब देगा और ता़अ़त का नेक सिला देगा, वोह मेरे तमाम पोशीदा अस्रार को जानता है और जो कुछ मेरी फ़िक्र में आता है वोह उसे भी जानता है, और उस ने ता़अ़त करने वालों से सवाब का वा'दा फ़रमाया है और नाफ़रमानों को अ़ज़ाब से डराया है और उस ने अह़कामे शरअ़ की बजा आवरी मुझ पर लाज़िम की है।

इन तमाम मुन्दरिजए बाला चीज़ों का ख़याल करने से बन्दे के दिल में येह बात **रासिख़**[1] हो जाती है कि मैं एक **मुमकिन**[2] और **फ़ानी**[3] चीज़ हूं, मेरे अन्दर ख़ुद कोई कमाल नहीं और न ही कोई ज़ाती ख़ूबी है। अपने मुतअ़ल्लिक़ येह राए क़ाइम करने में अ़क़्ले इन्सानी को ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

तो इन तमाम उमूर का तसव्वुर करने से बन्दे पर अपने परवर दगार का ख़ौफ़ त़ारी होता है और वोह घबरा उठता है, येही घबराहट बन्दे को ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार करती है और येही घबरा देने वाला तसव्वुर इतमामे हुज्जत करता है और इन्सान के तमाम बहानों को क़त्अ़ कर के रख देता है, येही ख़याल उसे आयाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र करने पर मजबूर करता है चुनान्चे, इस ख़याल से एक सलीमुल फ़ित़रत इन्सान चोंक जाता है और उस में क़लक़ व इज़्तिराब पैदा हो जाता है तो बन्दा अपनी नजात की राह तलाश करता है और हुसूले अम्न के ज़राएअ़ ढूंडता है, कुछ तो अपने दिमाग़ से सोचता है और कुछ दूसरों से मा'लूम करने की कोशिश करता है।

---

1 दिल में पुख़्ता। 2 जो पहले न था फिर अल्लाह तआ़ला के पैदा करने से मौजूद हुवा। 3 ख़त्म हो जाने वाली।

तो बन्दा उस के सिवा और कोई रास्ता नहीं पाता कि काइनात में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि ख़ालिक़ की मा'रिफ़त और पहचान ह़ासिल हो और ताकि ज़ाते ख़ुदावन्दी के मुतअ़ल्लिक़ जो इस से ग़ाइब है इल्मे यक़ीन ह़ासिल हो और येह जाने कि मेरा एक रब है जिस ने इसे अम्र व नह्य का **मुकल्लफ़**[1] बनाया है।

तो येह ग़ौरो फ़िक्र करना और अपने ख़ालिक़ के मुतअ़ल्लिक़ इल्मे यक़ीन ह़ासिल करना पहली घाटी है जो त़रीक़े इबादत में पेश आती है। इसे इल्म व मा'रिफ़त की घाटी से मौसूम किया गया है। येह इल्म व मा'रिफ़त इस लिये ज़रूरी है ताकि बन्दे को इबादत के मुआ़मले में अहम मा'लूमात की वाक़िफ़िय्यत ह़ासिल हो और ताकि इस राह को सोच बिचार और ग़ौरो फ़िक्र से तै करे। येह सोचो बिचार और ग़ौरो फ़िक्र इल्म व मा'रिफ़त की घाटी में दाख़िल है। बन्दे को चाहिये कि आख़िरत की त़रफ़ राह नुमाई करने वाले उ़लमाए किराम से भी इस अ़क़्बा (घाटी) से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करे।

हम ने उ़लमाए आख़िरत की तख़्सीस इस लिये की है कि ऐसे उ़लमा ही सिराते़ मुस्तक़ीम की राह नुमाई कर सकते हैं, ऐसे उ़लमा ही उम्मत के चश्मो चराग़ हैं और येही उम्मते मर्ह़ूमा की क़ियादत के लाइक़ हैं, तो सफ़रे आख़िरत के मुसाफ़िर को चाहिये कि ऐसे ही उ़लमा से **इस्तिफ़ादा करे**[2] और इन्ही की नेक दुआ़एं ले क्यूंकि ऐसे पाकीज़ा सीरत लोगों की दुआ़ ही दस्तगीर और रह़मत व तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी का **मूजिब**[3] होती है ताकि बन्दा इन की नेक दुआ़ओं और रब तआ़ला की तौफ़ीक़ के ज़रीए़ राहे आख़िरत को तै कर सके।

---

1 पाबन्द। 2 फ़ाइदा ह़ासिल करे। 3 सबब।

इस इल्म व मा'रिफ़त के ज़रीए उन उमूर का यक़ीन भी हो जाएगा कि मेरा एक मा'बूदे बर ह़क़ है जिस का कोई शरीक नहीं, उसी ने मुझे पैदा किया और त़रह़ त़रह़ की ने'मतों से नवाज़ा बन्दे को इस का भी यक़ीन हो जाएगा कि उस मा'बूदे बर ह़क़ ने मुझे इन अ़त़ा कर्दा ने'मतों के शुक्र का हुक्म दिया है और ज़ाहिर व बात़िन में ख़िदमत व त़ाअ़त का **अम्र**(1) फ़रमाया है और कुफ़्र व दीगर **मआ़सी**(2) से रोका और इन की सज़ा से डराया है और येह फ़ैसला सुना दिया है कि अगर बन्दा उस की ख़िदमत व त़ाअ़त करेगा तो वोह आख़िरत में उसे ग़ैर फ़ानी सिला और बदला इनायत फ़रमाएगा और नाफ़रमानी व सरकशी करने वाले को **दाइमी अ़ज़ाब**(3) में मुब्तला करेगा, तो येह यक़ीन व मा'रिफ़त बन्दे को अपने मालिको मौला की ख़िदमत व त़ाअ़त पर उभारते हैं और उस आक़ा की ख़िदमत की तरग़ीब देते हैं जिस ने उस को हर क़िस्म की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं और बन्दा अगर ख़ुलूस से उस आक़ा की तलाश करे तो उसे पा भी ले और उस की पहचान व मा'रिफ़त हो जाए बा वुजूद येह कि पहले इस से जाहिल होता है।

अगर्चे बन्दा इस मा'रिफ़त व पहचान से रब तआ़ला की इबादत व ख़िदमत की त़रफ़ राग़िब होता है लेकिन उसे येह मा'लूम नहीं होता कि उस की इबादत कैसे की जाती है और उस के लिये बन्दे के ज़ाहिर व बात़िन में क्या क्या चीज़ें ज़रूरी हैं। इस लिये मज़्कूरा इल्मो यक़ीन के साथ साथ उन फ़राइज़ को सीखने की ज़रूरत पड़ती है जिन का तअ़ल्लुक़ बन्दे के ज़ाहिर व बात़िन के साथ है, पस बन्दा जब फ़राइज़ को अच्छी त़रह़ जान लेता है अब

1 .....हुक्म। 2 ......गुनाहों। 3 ......हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब।

इन्हें इ़ल्मी तौ़र पर बजा लाने का इरादा करता है। जब शुरूअ़ होने लगता है तो अपने आप को त़रह़ त़रह़ के गुनाहों और मआ़सी से मुलव्विस पाता है और येह अकसर लोगों का ह़ाल है।

तो जब बन्दा अपने गुनाहों पर नज़्र करता है तो दिल में कहता है कि मैं इ़बादत की त़रफ़ कैसे मुतवज्जेह हो सकता हूं? जब कि मैं गुनाह करने पर अड़ा हुवा हूं और जब कि मेरा ज़ाहिरो बात़िन गुनाहों की नजासत से आलूदा है, इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होने से क़ब्ल मुझ पर लाज़िम है कि गुनाहों से सच्ची तौबा करूं ताकि गुनाहों की नजासत से पाक हो सकूं और मआ़सी की मन्ह़ूस क़ैदो बन्द से ख़लासी पा सकूं, ताकि त़ाअ़ते ख़ुदावन्दी के लाइक़ हो सकूं और उस की बन्दगी की बिसात़ बिछा सकूं, तो गुनाहों से पाक होने के लिये इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होने से क़ब्ल तौबा की घाटी उ़बूर करना पड़ती है इस घाटी को **अ़क़बतुत्तौबा** के नाम से मौसूम किया गया है। तो इस बिना पर बन्दे को ज़रूरी तौ़र पर इस घाटी को उ़बूर करना पड़ता है ताकि अस्ल मक़्सूद की त़रफ़ मुतवज्जेह होने के लाइक़ हो सके इस लिये बन्दे पर लाज़िम है कि पूरे अरकान व शराइत़ के साथ तौबा करे और पूरी एह़तियात़ के साथ इस घाटी को उ़बूर करे, जब तौबए सादिक़ नसीब हो जाए और येह मरह़ला त़ै कर ले तो इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह हो।

मगर जब बन्दा तौबा से फ़ारिग़ हो कर इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो इ़बादत को भी त़रह़ त़रह़ की रुकावटों और मुश्किलात में घिरा हुवा पाता है, हर रुकावट अपनी नोइ़य्यत के ए'तिबार से उसे इ़बादत से रोकती है और इ़बादत से रोकने वाली अस्ल में चार चीज़ें हैं :

﴾1﴿ दुन्या ﴾2﴿ लोगों से मेल जोल ﴾3﴿ शैत़ान ﴾4﴿ नफ़्स।

लिहाज़ा पहले इन चार चीज़ों को राह से हटाना और दूर करना ज़रूरी है वरना बन्दा अपने मक़्सद में कामयाब नहीं हो सकता, तो इन चार चीज़ों को चार त़रीक़ों से दूर करे : ﴾1﴿ दुन्या से क़त़अ़ तअ़ल्लुक़ करे ﴾2﴿ लोगों से मेल जोल तर्क करे ﴾3﴿ इब्लीस से मुह़ारबा और जंग करे ﴾4﴿ नफ़्स पर सख़्ती करे।

मगर नफ़्स पर सख़्ती करना सब से ज़ियादा मुश्किल है, न तो बन्दा इस से बिल्कुल बे नियाज़ हो सकता है और न ही शैत़ान की त़रह़ इस पर ह़द से ज़ियादा सख़्ती की जा सकती है, क्यूंकि इ़बादत की मन्ज़िल त़ै करने के लिये येह नफ़्स ही बन्दे की सुवारी और आला व ज़रीआ़ है और अगर्चे नफ़्स इ़बादत का आला और ज़रीआ़ है मगर इ़बादात में इस की मुवाफ़क़त व मुत़ाबक़त की भी उम्मीद नहीं की जा सकती क्यूंकि नेक काम की मुख़ालफ़त नफ़्स की **जिबिल्लत**[1] में दाख़िल है, येह तो लह्वो लअ़ब का मुश्ताक़ है, इस लिये इस से काम लेने के लिये ज़रूरी है कि इसे तक़्वा की लगाम दी जाए ताकि येह बन्दे में रहे तो सही मगर मुत़ीअ़ फ़रमां बरदार हो कर न कि सरकश व बाग़ी हो कर, ताकि ह़स्बे ज़रूरत नेक कामों में इस से काम लिया जाए और फ़साद अंगेज़ व हलाक कुन उमूर से क़ैद में रखा जाए।

जब बन्दा इन चार चीज़ों को रास्ते से हटा देता है और ख़ुदा की इमदाद व इआ़नत से इस मरह़ले को भी त़ै कर लेता है और इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो अब चन्द और मवानेअ़ उसे पेश आते हैं जो इ़बादत के लिये फ़राग़त, दिल जमई और यक्सूई पैदा नहीं होने देते और येह **मवानेअ़**[2] भी ता'दाद में चार हैं :

1 .....फ़ित़रत व आ़दत। 2 ......रुकावटें।

(1) **अव्वल रिज़्क़,** क्यूंकि नफ़्स इस का मुत़ालबा करता है और बन्दे के दिल में येह वस्वसा डालता है कि तेरे लिये रिज़्क़ और गिज़ा ज़रूरी है अगर तू दुन्या से किनारा कश हो गया और मख़्लूक़ से अ़लाहिदगी इख़्तियार कर ली तो तेरी गिज़ा और रिज़्क़ कहां से मुहय्या होगा ?

(2) **दूसरा आ़रिज़ा,** वोह ख़त़रात व ख़यालात हैं जो बन्दे के दिमाग़ में हर उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ पैदा होते हैं जिस से इन्सान डरता है या जिस चीज़ की उम्मीद रखता है, जिसे पसन्द या नापसन्द तसव्वुर करता है उसे नहीं मा'लूम होता कि इस काम में मेरे लिये भलाई है या ख़राबी क्यूंकि उमूरे दुन्या के नताइज पोशीदा हैं तो बन्दा इन्ही ख़यालात में खो जाता है और बसा अवक़ात **परागन्दा ख़याली**[1] के बाइ़स हलाकत व तबाही में जा पड़ता है।

(3) **तीसरा आ़रिज़ा,** यक्सूई से इ़बादत करने में येह है कि बन्दा जब ख़ुलूसे क़ल्ब से इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो चारों त़रफ़ से दुन्यवी मसाइब व तकालीफ़ उठ खड़ी होती है, ख़ुसूसन जब कि बन्दा **ख़ल्क़**[2] से अ़लाहिदगी, शैत़ान से जंग और नफ़्स की मुख़ालफ़त करने पर आमादा हो जाए। तो इन मसाइब व मुश्किलात को बरदाश्त करते वक़्त किस क़दर गुस्सा पीना पड़ता है और कैसी सख़्तियां झेलनी पड़ती हैं और कितने **हुज़्नो मलाल**[3] में घुलना पड़ता है और कैसी कैसी भयानक मुसीबतें आती हैं।

(4) **चौथा आ़रिज़ा,** इ़बादत के सिलसिले में क़ज़ाए ख़ुदावन्दी है, जो मुख़्तलिफ़ नोइय्यतों में बन्दे पर वारिद होती है या'नी कभी

---

1 बुरे ख़यालात। 2 मख़्लूक़। 3 रन्जो ग़म।

आराम, कभी तक्लीफ़ और बन्दे का नफ़्स **त़बअ़न**[1] शरारत व फ़ितने की त़रफ़ माइल है, ग़ुस्से में जल्दी आ जाता है।

तो इ़बादत में यक्सूई पैदा करने के लिये इन चार मुन्दरिजए बाला अ़वारिज़ की घाटी भी उ़बूर करना पड़ती है, येह अ़वारिजे़ अरबआ़ चार चीज़ों के ज़रीए़ दफ़्अ़ हो सकते हैं : ﴾1﴿ रिज़्क़ के मुआ़मले में ख़ुदा तआ़ला पर तवक्कुल करे ﴾2﴿ ख़यालात व तफ़क्कुरात के हुजूम के वक़्त अपने मुआ़मले को रब के ह़वाले करे ﴾3﴿ तकालीफ़ व मसाइब पेश आने पर सब्र करे ﴾4﴿ क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रहे।

जब बन्दा **अल्लाह** तआ़ला के इज़्न, उस की ताईद और नुस्रत से इन अ़वारिज़े अरबआ़ को क़त़्अ़ कर के इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो अपने अन्दर नज़र करने से मह़सूस होता है कि मेरा नफ़्स नेक काम करने में बेह़िस, बे रग़बत और बहुत सुस्त है, नेक काम करने की इस में कभी सच्ची चाहत पैदा नहीं होती और नेकियों की त़रफ़ जिस त़रह़ राग़िब होना चाहिये राग़िब नहीं होता बल्कि इस का ज़ियादा तर रुजह़ान ग़फ़्लत, नेकियों से नफ़रत, आराम त़लबी, लग़्व, बेहूदा और जाहिलाना बातों की त़रफ़ रहता है, इस लिये एक ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है जो नफ़्स को इन ख़राबियों से रोके और ऐसी शै की ज़रूरत पड़ती है जो इसे उमूरे ख़ैर की त़रफ़ राग़िब करे और इ़बादत की मह़ब्बत और शौक़े इ़बादत इस में पैदा करे।

तो ख़राबियों से रोकने वाली और नेकियों की त़रफ़ मुतवज्जेह करने वाली दो चीज़ें ख़ौफ़ व रजा हैं।

1....फ़ित़्री त़ौर पर।

रजा तो येह है कि बन्दा ता़अ़त व इ़बादत के सिले में बहुत बड़े सवाब की उम्मीद रखे और **अल्लाह** तआ़ला ने जो जन्नत की उ़म्दा उ़म्दा ने'मतें अ़ता़ करने के उस से वा'दे किये हैं उन पर ए'तिमाद और यक़ीन करे। तो अज्रे अ़ज़ीम की उम्मीद और जन्नत में उ़म्दा उ़म्दा ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने का यक़ीन बन्दे के लिये नेक काम करने का बाइ़स व ज़रीआ़ बनता है, ता़आ़त की तरग़ीब देता है और दिल में आ'माले सालिहा़ की तह़रीक पैदा करता है और इ़बादत के जज़्बे को बेदार करता है।

और **ख़ौफ़** येह है कि इन्सान हर वक़्त रब तआ़ला के दर्द नाक अ़ज़ाबों से डरता रहे और उन सज़ाओं और अ़ज़ाबों का तसव्वुर ज़ेह़न में रखे जो नाफ़रमानी और गुनाह करने वालों को दिये जाएंगे। ऐसा ख़ौफ़ जब बन्दे के दिल में रासिख़ हो जाता है तो बन्दा इस ख़ौफ़ के बाइ़स गुनाहों से बाज़ रहता है और दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है, चूंकि ख़ौफ़ो रजा बन्दे को इ़बादत पर उभारते हैं इस लिये इस घाटी का नाम عَقَبَةُ الْبَوَاعِث रखा गया है।

जब बन्दा **ख़ौफ़ो रजा** की मुन्दरिजए बाला घाटी **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल और उस की इमदाद व इआ़नत से उ़बूर कर लेता है और अस्ल मक़्सूद या'नी इ़बादत की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो अब उसे यक्सूई और दिल जमई से इ़बादत करने में कोई चीज़ मानेअ़ और आ़रिज़ नहीं होती बल्कि वोह अपने अन्दर ऐसे अवसाफ़ पाता है और ऐसे जज़्बात मह़सूस करता है जो उसे इ़बादत की त़रफ़ तरग़ीब और ता़अ़त व आ'माले सालेह़ा की दा'वत देते हैं तो अब उसे इ़बादत करते वक़्त नशात़ व सुरूर और लज़्ज़त व राह़त ह़ासिल होती है और इ़बादत पर **दवाम**(1) नसीब होता है

1....हमेशगी।

मगर यका यक दौराने इ़बादत दो और बड़ी आफ़तें सर निकालती हैं, एक रिया (दिखावा), दूसरी उ़जब (ख़ुद पसन्दी) या'नी अपने मुतअ़ल्लिक़ नेक और पारसा होने का ख़याल, चुनान्चे, कभी तो अपनी इ़बादत को इस त़रह़ ख़राब और तबाह करता है कि दूसरों पर ज़ाहिर करता है और कभी अपने आप को नेक और पाकीज़ा ख़याल कर के अपनी नेकियां ज़ाएअ़ कर देता है। इस लिये अब उसे येह घाटी उ़बूर करनी पड़ती है और इसे अ़क़बतुल क़वादिह़ कहते हैं, चुनान्चे, इ़बादत में इख़्लास और रब तआ़ला के गूनांगूं एह़सानात को ज़ेह्न में मल्हूज़ रखते हुवे बन्दा इस मुश्किल घाटी को भी ख़ुदा के फ़ज़्लो करम, उस के **इज़्न**(1) और उस की रह़मत से पूरी एह़तियात़ और दानिशमन्दी के साथ उ़बूर करता है ताकि उस की नेकियां रिया व उ़जब वग़ैरा जैसी आफ़तों से सालिम व मह़फ़ूज़ रहें।

जब इन मुन्दरिजए बाला दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़र जाता है तो अब **कमा ह़क़्क़ुहू**(2) इ़बादत बजा लाने के क़ाबिल होता है और अब इस की बन्दगी तमाम उ़यूब व नक़ाइस से पाक होती है लेकिन फिर जब बन्दा अपने ह़ालाते ज़िन्दगी पर नज़र करता है तो अपने आप को रब तआ़ला के बे शुमार एह़सानात, बे शुमार अ़त़ाओं और क़िस्म क़िस्म की ने'मतों में डूबा हुवा पाता है, मसलन इ़बादत और इन मुश्किल घाटियों को उ़बूर करने की तौफ़ीक़, **मज़र्रत रसां**(3) चीज़ों से ह़िफ़ाज़त, दूसरी मख़्लूक़ात पर अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वग़ैरा वग़ैरा, तो इन एह़सानात और ने'मतों को याद कर के उस के दिल में ख़ौफ़ पैदा होता है कि कहीं मैं इन के शुक्र से ग़ाफ़िल न हो जाऊं और **कुफ़्राने ने'मत**(4) के गुनाह में मुब्तला न हो जाऊं और कुफ़्राने ने'मत के बाइस कहीं उस के

---

1 इजाज़त। 2 जैसा कि उस का ह़क़ है। 3 नुक़्सान देह। 4 ना शुक्री।

मुख़्लिस खुद्दाम के बुलन्द रुत्बे से गिर न जाऊं और नाशुक्री करने से येह ने'मतें मुझ से कहीं छिन न जाएं और मैं अल्लाह तआ़ला की नज़्रे करम और उस के अल्ताफ़े करीमाना से महरूम न हो जाऊं, तो इस लिये ह़म्दो शुक्र की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और कसरते ज़िक्रो फ़िक्र के ज़रीए इस अ़क़बतुल ह़म्दे वश्शुक्र को उ़बूर करता है, इस से फ़ारिग़ होने के बा'द वोह अपने आप को मक़्सूद के क़रीब और अपने मत़्लूब को सामने पाता है।

चुनान्चे, इस के बा'द मसाफ़त त़ै करने से बन्दा अल्लाह तआ़ला के **अल्त़ाफ़**[1] की नर्म ज़मीन और शौक़ो महब्बत के मैदान में जा पहुंचता है फिर रिज़ा के बाग़ात, उन्स के गुलिस्तां और रूहानी फ़रह़तों के मक़ाम पर पहुंच जाता है, अब उसे खुदा का कुर्बे ख़ास अ़त़ा होता है, और अल्लाह तआ़ला से मुनाजात करने वालों की मजलिस में जगह पा लेता है और उस की त़रफ़ से ख़ास इन्आ़मात व इकरामात से मुशर्रफ़ होता है तो बन्दा इन ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होता है और अपनी उ़म्र के बक़िया अय्याम रूहानी राह़त व सुरूर में बसर करता है, यहां तो ज़ाहिरी जिस्म के ए'तिबार से आराम पाता है और आख़िरत में रूहानी ए'तिबार से।

ऐसा इन्सान हर वक़्त पैग़ामे इलाही या'नी इस दुन्या से कूच करने का मुन्तज़िर रहता है, उस का दिल दुन्या से उचाट हो जाता है, दुन्या को ह़क़ारत की नज़र से देखता है, मौत का मुश्ताक़ रहता है और मलाए आ'ला के साथ मुल्ह़िक़ होने का ख़्वाहिश मन्द रहता है, चुनान्चे, खुदा के क़ासिद अचानक उस के पास जन्नत की खुश ख़बरी और जन्नत के फ़िरिश्ते जन्नत की खुश्बूएं ले कर आना शुरूअ़ हो जाते हैं और उस को पाक रूह़ मुसर्रत अंगेज़ बिशारत और कामिल उन्स व प्यार के साथ इस दारे फ़ानी से जन्नत के

[1].....नवाज़िशों।

बाग़ात की त़रफ़ मुन्तक़िल करते हैं, वहां येह मोमिन अपनी ज़ईफ़ व ह़क़ीर जान के लिये दाइमी ने'मतें और बहुत बड़ा मुल्क पाता है और फ़ज़्लो करम करने वाला मेहरबान रब उसे मरहबा कहता है, अपना कुर्बे ख़ास अ़त़ा करता है और इन्आ़मो इकराम करते हुवे उस से मुलाक़ात करता है, येह मोमिन बन्दा वहां ऐसे इन्आ़मात से नवाज़ा जाता है जिन के बयान से बयान करने वाले आ़जिज़ हैं और **सिफ़त**(1) करने वाले जिन की **सिफ़त**(2) नहीं कर सकते, इसी त़रह़ उस को हमेशा नई नई और आ'ला आ'ला और उ़म्दा उ़म्दा ने'मतें अ़त़ा होती रहेंगी, तो ऐसे इन्सान को कितनी बड़ी सआ़दत नसीब होती है और येह मोमिन कितनी बड़ी दौलत का मालिक बन जाता है और कितनी अ़ज़ीम कामयाबी ह़ासिल कर लेता है और कैसी बुलन्द शान का ह़ामिल बन जाता है, ऐसे शख़्स को हज़ार हज़ार मुबारक क्यूंकि उस का अन्जाम बहुत अच्छा है, हम भी दरबारे ईज़दी में इल्तिजा करते हैं कि हम पर भी येह एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाए और हमें भी इस ने'मते उ़ज़्मा से नवाज़े और रब तआ़ला के लिये येह कोई मुश्किल नहीं ।

हम दरबारे ख़ुदावन्दी में येह भी दुआ़ करते हैं कि वोह हमें उन लोगों में से न करे जिन को इस एह़साने अ़ज़ीम से ज़बानी बयान, सिर्फ़ सुनने, सरसरी इ़ल्म और वक़्ती आरज़ू के सिवा **ह़ाली त़ौर**(3) पर कोई ह़िस्सा नहीं मिला, हम येह भी दुआ़ करते हैं कि क़ियामत के रोज़ हमारा इ़ल्म हम पर **हुज्जत**(4) न बने और **अल्लाह** तआ़ला से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे और फिर अ़मल में इस्तिक़ामत दे, वोही सब से बेहतर रह़मो करम करने

---

1 ता'रीफ़ । 2 ता'रीफ़ । 3 ह़क़ीक़ी त़ौर । 4 हमारे ख़िलाफ़ दलील ।

वाला है और हमारे हुज़ूर, दोनों जहान के सरदार मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ला ता'दाद सलातो सलाम नाज़िल हो, और आप के अस्हा़ब और आप की आल पर भी और **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ज़ियादा से ज़ियादा शरफ़ो इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाए।

येह है इस किताब की तरतीब, जो मेरे मौला ने इबादत के सिलसिले में मुझे इल्हाम फ़रमाई।

ऐ अ़ज़ीज़ अज़ जान ! अब तू **अल्लाह** की तौफ़ीक़ से येह जान कि कुल सात घाटियां बनती हैं :

पहली : इ़ल्म की।

दूसरी : तौबा की।

तीसरी : अ़वाइक़ व मवानिअ़ की।

चौथी : अ़वारिज़ की।

पांचवीं : बवाइ़स या'नी इबादत पर उभारने वाली चीज़ों की।

छटी : क़वादिह़ या'नी उन चीज़ों की जो इबादत में ख़राबी पैदा करते हैं।

सातवीं : ह़म्दो शुक्र की।

इस किताब **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में इन्ही सात **अ़क़बात**(1) का ज़िक्र है।

अब हम हर एक की इस त़रह़ शर्ह़ करते हैं कि अल्फ़ाज़ तो मुख़्तसर हों मगर तमाम ज़रूरी नुक्ते बयान भी हो जाएं, हम हर एक की शर्ह़ अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा बाब में करेंगे **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى ही तौफ़ीक़ का देने वाला है और उस के करम से ही बयान व अ़मल में दुरुस्ती बरक़रार रह सकती है। وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

---

(1) घाटियों।

पहला बाब

पहली घाटी इल्म के बयान में

मैं **अल्लाह** की तौफ़ीक़ से कहता हूं कि ऐ इख़्लास की आरज़ू करने वाले और ऐ सच्ची इबादत की त़लब करने वाले, **अल्लाह** तआ़ला तुझे उमूरे ख़ैर की तौफ़ीक़ दे। सब से अव्वल तुझ पर येह लाज़िम है कि इल्मे शरीअ़त ह़ासिल करे क्यूंकि येह इबादत का **मौक़ूफ़ अ़लैह**(1) है और इसी पर इस का दारोमदार है और तू जान ले कि इल्म और इस के मुत़ाबिक़ इबादत दो ऐसे कमाल हैं कि मुसन्निफ़ीन की तस्नीफ़ात, मुअ़ल्लिमीन की ता'लीमें, वाइज़ीन के वा'ज़, मुफ़क्किरीन की नज़रो फ़िक्र वग़ैरा जो भी तुम देख या सुन रहे हो सब कुछ इस इल्मो अ़मल में कमाल ह़ासिल करने के लिये हैं बल्कि **इन्ज़ाले कुतुब**,(2) **बिअ़्सते अम्बिया**,(3) सातों आस्मानों और ज़मीनों और इन की दरमियानी मख़्लूक़ की पैदाइश भी इसी लिये है।

तुम कुरआने मजीद की इन दो आयतों पर तो ज़रा ग़ौर करो :

﴿۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ۬ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾ (4)

अल्लाह वोह है जिस ने सात आस्मान बनाए और इन्हीं के बराबर ज़मीनें, अल्लाह का हुक्म इन के दरमियान उतरता है ताकि जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है।

---

1 बुन्याद। 2 आस्मानी किताबों का नाज़िल करना। 3 अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام का भेजा जाना।
4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** है जिस ने सात आस्मान बनाए और इन्ही के बराबर ज़मीनें, हुक्म इन के दरमियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** का इल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है। (پ ۲۸، الطلاق : ۱۲)

सिर्फ़ येही एक आयत फ़ज़ीलते इल्म के सुबूत के लिये काफ़ी है, ख़ास कर इल्मे तौह़ीद के लिये।

﴿۲﴾ وَمَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ ﴿۵۶﴾ (1)

मैं ने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है।

येह आयते करीमा शराफ़ते इ़बादत के सुबूत के लिये काफ़ी है, इस आयत से येह मा'लूम हुवा कि बन्दे पर अपने रब की बन्दगी लाज़िम है, तो इस इ़ल्म व इ़बादत को ही सब से ज़ियादा अ़ज़्मत वाली चीज़ तसव्वुर करना चाहिये क्यूंकि पैदाइशे काइनात से मक़्सूद इन्हीं दो चीज़ों में कमाल ह़ासिल करना है, इस लिये बन्दे को चाहिये कि इन्हीं दो के साथ मश्ग़ूल रहे, इन्हीं दो के ह़ुसूल के लिये मशक़्क़तें बरदाश्त करे और इन्हीं दो में ग़ौरो फ़िक्र करता रहे।

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू यक़ीन कर कि इन दो के सिवा जो कुछ दुन्या में है सब बात़िल है कि उस में कोई भलाई नहीं और इन के इ़लावा जो कुछ है **लग़्वियात**(2) है जिस से कुछ ह़ासिल नहीं, जब तेरे ज़ेह्न में इ़ल्म व इ़बादत की अहम्मिय्यत आ गई तो अब येह बात समझ कि इ़ल्म इ़बादत से अफ़्ज़ल व अशरफ़ है इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِي عَلٰى اَدْنٰى رَجُلٍ مِّنْ اُمَّتِيْ (3)

आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी मेरी अपने अदना उम्मती पर।

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें। (پ۲۷، الذریت : ۵٦) (2) फ़ुज़ूल ।

(3) سنن الترمذی، کتاب العلم،باب ماجاء فی فضل الفقه...الخ،٤/٣١٣،حدیث:٢٦٩٤، بتغیر۔

एक जगह आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

(1)نَظْرَةٌ إِلَى الْعَالِمِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ عِبَادَةِ سَنَةٍ صِيَامِهَا وَ قِيَامِهَا आ़लिम की त़रफ़ एक बार नज़र मेरे नज़्दीक **एक बरस**[2] रोज़े रखने और **एक बरस**[3] रात को नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है।

एक और जगह आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

(4)أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى أَشْرَفِ أَهْلِ الْجَنَّةِ قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ هُمْ عُلَمَاءُ أُمَّتِي

क्या मैं तुम्हें सब से ज़ियादा बुलन्द मर्तबे वाले जन्नती न बताऊं ? सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बताइये, तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि वोह मेरी उम्मत के उ़लमा हैं।

मुन्दरिजए बाला अह़ादीस से साबित हुवा कि इ़बादत से इ़ल्म अफ़्ज़ल है लेकिन इ़ल्म के साथ साथ इ़बादत भी ज़रूरी है बिग़ैर इ़बादत इ़ल्म का कोई फ़ाइदा नहीं क्यूंकि इ़ल्म दरख़्त की मानिन्द है और इ़बादत फल की त़रह़ और दरख़्त की क़द्र फल से होती है, अगर्चे दरख़्त अस्ल है, लिहाज़ा बन्दे के लिये इ़ल्म व इ़बादत दोनों का होना ज़रूरी है।

इसी लिये ह़ज़रते ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "इ़ल्म को इस त़रह़ ह़ासिल करो कि इ़बादत को नुक़्सान न दे और इ़बादत इस त़रह़ करो कि इ़ल्म को नुक़्सान न हो।" और येह बड़ी पुख़्ता बात है कि इ़ल्म व इ़बादत दोनों ज़रूरी हैं मगर पहले इ़ल्म

---

1 ......المقاصد الحسنة ،حرف النون ، ص٤٥٤ ، حديث:١٢٥١، بتغير ـ

2 यहां लफ़्ज़ "सो बरस" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "एक बरस" है लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या) 3 हाशिया 2 मुलाह़ज़ा कर लें

4 ...... تاريخ جرجان للسهمى،حرف الباء، ١/١٦٢،حديث:٢١٥ـ

हा़सिल करना ज़रूरी है क्यूंकि इल्म इबादत की बुन्याद और इस का रहनुमा है इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْعِلْمُ اِمَامُ الْعَمَلِ وَ الْعَمَلُ تَابِعُهٗ(1) इल्म अ़मल की बुन्याद है और अ़मल इस के ताबेअ़ है।

इल्म का इबादत की अस्ल होना और इसे इबादत से पहले हा़सिल करना दो वजह से ज़रूरी है :

एक इस लिये ताकि बन्दा रब की इबादत कर सके और इस इबादत को तमाम उ़यूबो नक़ाइस से मह़फ़ूज़ रख सके क्यूंकि बन्दे पर लाज़िम है कि पहले अपने मा'बूद को पहचाने और फिर उस की इबादत में मस्रूफ़ हो, और बन्दा अपने मा'बूदे बरह़क़ की इबादत कर ही कैसे सकता है जब की उसे येह मा'लूम न हो कि उस मा'बूद के नाम क्या हैं, उस की सिफ़तें क्या हैं और कौन सी चीज़ें उस की शान के लाइक़ हैं और कौन सी बातें उस की शान के ख़िलाफ़ हैं। बसा अवक़ात ऐसा होता है कि जहालत की बिना पर बन्दा अपने मा'बूदे बरह़क़ के लिये ऐसी सिफ़तों पर ए'तिक़ाद रखता है जो क़त़अ़न उस की शान के लाइक़ नहीं होतीं और इस सूए ए'तिक़ादी के बाइ़स इबादत ज़ाएअ़ हो जाती है, हम ने इस अ़ज़ीम ख़त़रे की पूरी त़रह़ शर्ह़ अपनी किताब "**इह़याउल उ़लूम**" के बाब सूए ख़ातिमा में कर दी है।

फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! तुझ पर लाज़िम है कि इन तमाम फ़राइज़ व वाजिबाते शरइय्या का इल्म हा़सिल करे जिन का तुझे हुक्म दिया गया है ताकि इन्हें सही़ह़ तौ़र पर अदा कर सके और उन तमाम उमूर

(1)......الترغيب والترهيب، كتاب العلم، ١/٦٦، حديث: ١٠٨۔

का भी इ़ल्म ह़ासिल करे जो नाजाइज़ और ख़िलाफ़े शरअ़ हैं ताकि उन से बच सके वरना जब तक त़ाअ़त व इ़बादत की ह़क़ीक़त, नोइ़य्यत और कैफ़िय्यते अदा मा'लूम न हो, इस की सह़ीह़ बजा आवरी कैसे हो सकती है ? और जब तक येह मा'लूम न हो कि येह येह चीज़ें गुनाह है उस वक़्त तक कैसे उन से परहेज़ हो सकता है ?

इस लिये पहले इ़बादाते शरइ़य्या जैसे त़हारत, नमाज़, रोज़ा वग़ैरा की ह़क़ीक़त, इन के जुम्ला अह़काम और इन की तमाम शराइत़ मा'लूम करना ज़रूरी हैं और फिर ही दुरुस्त त़रीक़े से इन को अदा किया जा सकता है। बे इ़ल्मी के सबब बहुत मुमकिन है कि इन्सान बरसों और मुद्दतों एक ऐसे अ़मल को नेक ख़याल कर के करता रहे जो दर ह़क़ीक़त उस की त़हारत और उस की नमाज़ों को ख़राब कर रहा हो बल्कि त़हारत और नमाज़ें ख़िलाफ़े सुन्नत त़रीक़े पर अदा होती रहें और करने वाले को बिल्कुल इ़ल्म न हो और बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी हो सकता है कि जब कोई मुश्किल मस्अला दरपेश आए तो न तो वोह खुद सीखा हो और न ही बर वक़्त उसे ह़ल करने वाला कोई मिले तो दिक़्क़त होगी।

फिर ज़ाहिरी इ़बादात व त़ाआ़त की क़बूलिय्यत का दारो मदार **बात़िनी अख़्लाक़े फ़ाज़िला**(1) पर है जो दिल से तअ़ल्लुक़ रखते हैं इस लिये इन का जानना भी ज़रूरी है, जैसे तवक्कुल की ह़क़ीक़त, **तफ़्वीज़**,(2) रिज़ा, सब्र, तौबा और इख़्लास वग़ैरा के मआ़नी, जिन का मुफ़स्सल ज़िक्र اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی अभी आएगा। इन के साथ साथ उन उमूर के मआ़नी का जानना भी ज़रूरी है जो बात़िन के उ़यूब हैं और जो तवक्कुल, सब्र और रिज़ा वग़ैरा की ज़िद

(1) बात़िन में मौजूद अच्छी सिफ़ात। (2) सब मुआ़मलात अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द करना।

हैं, जैसे गुस्सा, **तूले अमल,**[1] रिया और तकब्बुर वग़ैरा क्यूंकि इन **ख़साइले रज़ीला**[2] से बचना भी लाज़िम और ज़रूरी है।

अल्लाह तआ़ला ने **अख़्लाक़े फ़ाज़िला**[3] पैदा करने और ख़साइले रज़ीला को दूर करने का हुक्म अपनी किताब में वाज़ेह़ तौर पर दिया है, तवक्कुल के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۲۳ (4)

*और **अल्लाह** पर ही भरोसा करो अगर तुम ईमानदार हो।*

शुक्र के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝۱۷۲ (5)

और अपने रब का शुक्र करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

सब्र के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद होता है :

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ (6)

*सब्र करो और तुम **अल्लाह** तआ़ला ही की तौफ़ीक़ से सब्र कर सकते हो।*

तफ़्वीज़ के मुतअ़ल्लिक़ यूं इरशाद फ़रमाया :

وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝۸ (7)

तमाम से अ़लाहि़दा हो कर सिर्फ़ उसी के लिये हो जाओ।

---

1 लम्बी उम्मीद। 2 बुरी ख़स्लतें। 3 अच्छे अख़्लाक़।

4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है। (پ٦،المائدة:٢٣)

5 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** का एह़सान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो। (پ ٢،البقرة:١٧٢)

6 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र **अल्लाह** ही की तौफ़ीक़ से है। (پ ١٤،النحل:١٢٧)

7 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब से टूट कर उसी के हो रहो। (پ ٢٩، المزمل:٨)

इसी त़रह़ और भी कई आयात हैं जिन में अख़्लाक़े फ़ाज़िला से मुत्तसिफ़ होने का हुक्म दिया गया है तो जिस त़रह़ नमाज़, रोज़ा वग़ैरा ज़ाहिरी अह़काम व फ़राइज़ आयाते क़ुरआनिया से साबित हैं इसी त़रह़ तवक्कुल, रिज़ा और सब्र वग़ैरा भी क़ुरआने पाक की आयात से साबित हैं।

तो जब तवक्कुल वग़ैरा भी लाज़िम व ज़रूरी हैं तो सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा वग़ैरा पर ही सारा ज़ोर देना और उ़म्दा अख़्लाक़ का ह़ामिल न बनना दुरुस्त नहीं क्यूंकि दोनों क़िस्म के ज़ाहिरी व बात़िनी अह़काम के मुतअ़ल्लिक़ एक ही रब ने एक ही किताब में हुक्म दिया है, मगर तुम बात़िनी अवसाफ़ से मुत़लक़न बे ख़बर हो चुके हो और ऐसे लोगों के लिये फ़तवे लिखने में मसरूफ़ हो जिन्हों ने दुन्या को ही का'बए मक़्सूद ठहरा लिया है यहां तक कि इन्हों ने नेकी को बुराई का और बुराई को नेकी का दरजा दे दिया है। अफ़सोस ! तुम ऐसे लोगों के लिये फ़तवा नवेसी में मश्ग़ूल हो कर उन पाकीज़ा उ़लूम से बे परवाह हो गए हो जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपनी मुक़द्दस किताब में नूर, ह़िक्मत और हिदायत वग़ैरा के अल्फ़ाज़ से **ता'बीर**(1) फ़रमाया है। तुम उन लोगों के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहते जिन्हों ने **कस्बे ह़राम**(2) को पेशा बना लिया है और जो रात दिन ज़लील दुन्या जम्अ़ करने में मसरूफ़ हैं।

ऐ भलाई के दा'वेदारो ! तुम्हें इस का ख़ौफ़ नहीं कि बड़े बड़े फ़राइज़ को तो पसे पुश्त डाल रहे हो और नफ़्ल नमाज़, रोज़ा वग़ैरा में मश्ग़ूल हो, फ़राइज़ से तारिक हो कर नवाफ़िल अदा करने वालो ! इन नवाफ़िल की कोई वक़्अ़त नहीं, अकसर ऐसा भी होता है कि तुम ऐसे गुनाह पर क़ाइम होते हो जो तुम्हें दोज़ख़ में डाल

---

(1) बयान। (2) ह़राम काम।

दे मगर **मुबाह़**[1] खाने पीने और नींद वग़ैरा से बचते रहते हो जो इ़बादत में तुम को तक़्विय्यत देते हैं तो तुम्हारा ऐसा परहेज़ बे मा'ना और फ़ुज़ूल है और इन तमाम से बदतर येह है कि तुम दुन्यवी उम्मीदों में मुब्तला हो ह़ालांकि दुन्या की उम्मीदें **मह़्ज़**[2] गुनाह हैं और जहालत की बिना पर तुम इन उम्मीदों को निय्यते ख़ैर गुमान करते हो क्यूंकि तुम इन दोनों के फ़र्क़ से जाहिल हो तुम दुन्यवी उम्मीदों और निय्यते ख़ैर में इस लिये भी फ़र्क़ नहीं कर सकते क्यूंकि येह दोनों ब ज़ाहिर एक दूसरे से मिलती जुलती हैं।

बा'ज़ अवक़ात तुम बेचैन होते हो और **जज़अ़ फ़ज़अ़**[3] वग़ैरा करते हो और इसे **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में गिड़ गिड़ाना और आ़जिज़ी करना ख़याल करते हो और कभी तुम मह़्ज़ रिया कर रहे होते हो मगर तुम्हारा गुमान येह होता है कि हम **अल्लाह** की ह़म्द कर रहे हैं और लोगों को **नेकी की दा'वत** दे रहे हैं, इस त़रह़ तुम गुनाहों को नेकियां और अ़ज़ाब को सवाब समझने लग जाते हो और एक बहुत बड़े धोके में मुब्तला हो जाते हो और सख़्त ख़राबी में पड़ जाते हो, तो ख़ुदा की क़सम ! बिग़ैर इ़ल्म अ़मल करने वालों के लिये सब से बड़ी मुसीबत येही है।

और फिर ज़ाहिरी आ'माल का बात़िनी अवसाफ़ के साथ एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है अगर बात़िन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी ख़राब होंगे और अगर बात़िन ह़सद, रिया और तकब्बुर वग़ैरा उ़यूब से पाक हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त होते हैं, अगर दिल में इख़्लास होगा तो ज़ाहिरी अ़मल भी ठीक होगा और अगर बात़िन में रिया हो तो ज़ाहिरी अ़मल भी नादुरुस्त होगा, इसी त़रह़

---

1 जाइज़। 2 सरासर। 3 रोना पीटना।

अगर कोई अपने आ'माले सालिहा को रब तआ़ला का फ़ज़्लो करम समझे तो ठीक है और अगर इन्हें अपना ज़ाती कमाल तसव्वुर करे तो **ख़ुद सिताई**[1] के बाइ़स वोह आ'माल बरबाद हो जाते हैं इस लिये जब तक बातिनी उमूर का ज़ाहिरी आ'माल से तअ़ल्लुक़, बातिनी अवसाफ़ की ज़ाहिरी आ'माल में तासीर और अवसाफ़े बातिनी के ज़रीए ज़ाहिरी आ'माल की हिफ़ाज़त की कैफ़िय्यत वग़ैरा का पता न चले तो ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त नहीं हो सकते और जहालत व बे इ़ल्मी के बाइ़स न तो ज़ाहिरी आ'माल में दुरुस्ती पैदा हो सकती है और न ही बातिनी अख़्लाक़े फ़ाज़िला या ख़साइले रज़ीला का पता चल सकता है और अ़मल करने वाले के हाथ में सिवाए मशक़्क़त और मैल कुचेल के कुछ नहीं आता और येही सब से बड़ा ख़सारा और नुक़्सान है इसी लिये सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इ़ल्म की शान में फ़रमाया :

اِنَّ نَوْمًا عَلٰى عِلْمٍ خَيْرٌ مِّنْ صَلٰوةٍ عَلٰى جَهْلٍ[2]

आ़लिम का सोना जाहिल की नमाज़ से बेहतर है।

क्यूंकि इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल करने वाले के आ'माल अकसर अवक़ात बजाए दुरुस्ती और सवाब के ख़राब और बाइ़से अ़ज़ाब बन जाते हैं इ़ल्म की शान में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया :

اِنَّهٗ يُلْهَمُهُ السُّعَدَاءُ وَ يُحْرَمُهُ الْاَشْقِيَاءُ[3] इ़ल्म सआ़दत मन्दों को नसीब होता है और **शक़ी**[4] लोग इस ने'मत से महरूम रहते हैं।

---

1 अपनी ही ता'रीफ़ करने।

2 ...... فردوس الاخبار، باب النون، ٢/٣٦٥، حديث: ٧٠٠٠۔

3 ...... جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فى فضل العلم، ص٧٨، حديث: ٢٤٠
وحلية الاولياء، ٣٦۔معاذ بن جبل، ١/٣٠٣، رقم: ٨٠٩۔

4 बद नसीब।

इस इरशाद का मत़लब येह है कि बे इ़ल्म की **शक़ावत**[1] येह है कि उस ने इ़ल्म तो सीखा नहीं होता ख़ाली इ़बादत की मशक़्क़त और दिक़्क़त उठाता है तो ऐसी इ़बादत से सिवाए जिस्मानी मशक़्क़त के कुछ सवाब वग़ैरा नहीं मिलता, बा अ़मल और ज़ाहिद उ़लमा चूंकि इ़ल्मो अ़मल के जामेअ़ होते हैं इस लिये उन का दरजा ख़ुदा तआ़ला के हां बाक़ी तमाम लोगों से ज़ियादा होता है और इ़ल्म ही इस बुलन्दिये मर्तबा की अस्ल है क्यूंकि इ़ल्म त़ाअ़त व इ़बादत का **मौक़ूफ़ अ़लैह**[2] है और इसी पर आ'माल का दारो मदार है, अहले बसीरत और अस्ह़ाबे **तौफ़ीक़ व ताईद**[3] ने यूं ही इस मज़्मून को बयान फ़रमाया है और वोह पूरी त़रह़ इस मुआ़मले की तह को पहुंचे हैं।

मुन्दरिजए बाला बयान से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि इ़बादत न तो इ़ल्म के बिग़ैर की जा सकती है और न ही **सालिम**[4] रह सकती है तो साबित हो गया कि सह़ीह़ त़रीक़े से इ़बादत बजा लाने के लिये पहले इ़ल्म ह़ासिल करना लाज़िम और ज़रूरी है।

दूसरी वजह इ़बादत से इ़ल्म के **मुक़द्दम**[5] होने की येह है कि इ़ल्म से दिल में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ और उस की हैबत पैदा होती है, **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है :

اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ط(6)

***अल्लाह** का ख़ौफ़ उ़लमा के दिलों में ही है।*

---

1 बद नसीबी। 2 बुन्याद। 3 वोह लोग जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से ख़ुसूसी ताईद व तौफ़ीक़ ह़ासिल है। 4 दुरुस्त। 5 पहले।
6 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं। (پ ۲۲،فاطر:۲۸)

येह इस लिये कि जिस को खुदा तआ़ला की मा'रिफ़त नहीं होती उस के दिल में खुदा का ख़ौफ़ नहीं होता और न ही ऐसा शख़्स सह़ीह़ मा'नों में रब तआ़ला की ता'ज़ीम व त़ाअ़त बजा ला सकता है, तो इ़ल्म से ही रब की मा'रिफ़त और पहचान होगी और इ़ल्म के ज़रीए़ ही उस की अ़ज़मत व हैबत दिल में बैठेगी पस इ़ल्म से ही तमाम त़ाआ़त व इ़बादात का फल मिलता है और इ़ल्म के बाइ़स ही इन्सान हर क़िस्म की **मा'सियत**[1] से बच सकता है और या फिर अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से और इ़बादत से मक़्सूद भी तो येह दो ही चीज़ें हैं : एक उस की मा'रिफ़त और दूसरी दिल में उस का ख़ौफ़ और हैबत । इस लिये ऐ **राहे आख़िरत के सालिक !**[2] सब से अव्वल तेरे लिये इ़ल्म ह़ासिल करना लाज़िम और ज़रूरी है, और अल्लाह ही तौफ़ीक़ का मालिक है हर वक़्त येह दुआ़ करनी चाहिये कि उस का फ़ज़्ल और उस की रह़मत सब के शामिले ह़ाल रहे ।

शायद तुम कहो कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّ مُسْلِمَةٍ[3] इ़ल्म की तलाश हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है ।

तो वोह कौन सा इ़ल्म है जिस की तलाश लाज़िम और ज़रूरी है और दुरुस्तिये इ़बादत के लिये कितने इ़ल्म की ज़रूरत है ? तुम्हारे इस सुवाल का जवाब येह है कि जिन उ़लूम की त़लब फ़र्ज़ है वोह तीन इ़ल्म हैं :

﴾1﴿ इ़ल्मे तौह़ीद ﴾2﴿ इ़ल्मे सिर्र या'नी जिस इ़ल्म का तअ़ल्लुक़ दिल और दिल के मुतअ़ल्लिक़ात से है ﴾3﴿ इ़ल्मे शरीअ़त ।

---

1 गुनाह । 2 त़रीक़त के रास्ते पर चलने वाले ।

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة،باب فضل العلماء...الخ، ١/١٤٦، حديث:٢٢٤ـ

लेकिन इन तीन उ़लूम से इतनी मिक़्दार लाज़िम और ज़रूरी है जिस से लाज़िम व ज़रूरी उमूर की पूरी पूरी मा'रिफ़त व यक़ीन हो जाए।

इल्मे तौह़ीद से इतना ज़रूरी है जिस से दीन के उसूल मा'लूम हो जाएं वोह उसूल येह हैं कि

तुम्हें येह मा'लूम हो कि हमारा एक मा'बूदे बर ह़क़ है जो हर शै को जानता है और तमाम मुमकिनात पर उस की क़ुदरत ह़ावी है, जो चाहे इरादा करता है, हमेशा ज़िन्दा है, अज़ल से मुतकल्लिम है, सब कुछ देखता और सुनता है, एक है कोई उस का शरीक नहीं, वोह तमाम सिफ़ाते कमालिय्या से अज़लन अबदन मुत्तसिफ़ है, हर ऐब व नक़्स से मुनज़्ज़ा व पाक है, उस पर कभी ज़वाल नहीं आ सकता, इमकान के शाइबे से पाक है और क़दीम भी सिर्फ़ वोही है।

और येह भी यक़ीन करे कि ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के ख़ास बन्दे और रसूल हैं और जो अह़काम आप ख़ुदा की त़रफ़ से लाए सब ह़क़ हैं और आख़िरत के बारे में जो ख़बरें आप ने दी हैं सब ह़क़ हैं फिर उन तमाम अह़काम व मसाइल को भी मा'लूम करे जो सुन्नत हैं ताकि ख़िलाफ़े शरअ़ कामों और बिदआ़त से मह़फ़ूज़ रहे, इस लिये कि बिदअ़त में मुब्तला हो कर इन्सान सुन्नत की पैरवी से मह़रूम हो जाता है और दीन ख़त़रे में पड़ जाता है।

दलाइले तौह़ीद के उसूल व कुल्लिय्यात किताबुल्लाह में मौजूद हैं और हमारे मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) ने **उसूले दियानात**[1] की किताबों में इन दलाइल को वज़ाह़त से लिखा है।

---

1 उसूले अ़क़ाइद।

खुलासा येह है कि जिस चीज़ से जाहिल रह कर गुमराही में पड़ने का ख़त़रा हो उस का इल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है। इल्म की अहम्मिय्यत को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन करो और तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही के हाथ में है।

और इल्मे सिर्र से इस क़दर जानना ज़रूरी है जिस से सफ़ाइये क़ल्ब के अस्बाब मा'लूम हो जाएं और येह मा'लूम हो जाए कि किस किस चीज़ से दिल को पाक करना ज़रूरी है ताकि दिल में **अल्लाह** तआ़ला की हैबत और ता'ज़ीम और आ'माल में इख़्लास पैदा हो नीज़ उन उमूर को जानना भी ज़रूरी है जिन से निय्यत दुरुस्त रह सके और ज़ाहिरी व बात़िनी आ'माल व इबादात, ज़ाहिरी व बात़िनी आफ़ात से मह़फ़ूज़ रह सकें और इन सब उमूर का बयान اِنْ شَآءَ اللّٰه تعَالٰی हमारी इस किताब में आइन्दा आएगा।

और इल्मे शरीअ़त से इस क़दर जानना ज़रूरी है जिस से येह मा'लूम हो जाए कि येह उमूर ज़रूरी हैं ताकि इन्हें अदा किया जा सके, जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा, मगर ह़ज, ज़कात और जिहाद वग़ैरा के अह़काम व मसाइल उन को जानने लाज़िम हैं जिन पर येह फ़र्ज़ हों और जिन पर येह चीज़ें फ़र्ज़ नहीं उन पर इन की जुज़इय्यात और इन की तफ़्सीलात जानना लाज़िम नहीं। इन तीन उ़लूम से बस इतना जानना लाज़िम व ज़रूरी है जो हम ने बयान कर दिया है।

सुवाल : क्या इल्मे तौह़ीद में उन तफ़्सीलात व दलाइल का मा'लूम करना भी ज़रूरी है जिन से मज़ाहिबे बात़िला की तरदीद हो सके और जिन से ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम उन पर साबित की जा सके और जिन दलाइल से तमाम बिदआ़त को बात़िल साबित किया जा सके और सुनने नबविय्या की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ की जा सके ?

जवाब : ऐ अ़ज़ीज़ ! इन तमाम तफ़ासील का जानना फ़र्ज़े किफ़ाया है या'नी तमाम पर लाज़िम नहीं, हां ! तुम पर इतना जानना ज़रूरी है जिस से तुम्हारे अ़क़ाइद दुरुस्त रह सकें और बस। तुम पर येह लाज़िम नहीं कि इल्मे तौह़ीद की तमाम फ़ुरूआ़त और इस की बारीकियां और दीगर मुतअ़ल्लिक़ा उमूर को जानो, हां अगर कहीं दीन के बुन्यादी मसाइल में तुम्हें शुबा लाह़िक़ हो या लाह़िक़ होने का ख़ौफ़ हो तो मुख़्तसर गुफ़्तगू से किसी दूसरे शख़्स से येह शुबा ह़ल करा सकते हो मगर झगड़े व जिदाल वग़ैरा से हमेशा परहेज़ करो क्यूंकि झगड़ा व जिदाल एक मोहलिक मरज़ है जिस का कोई इलाज नहीं इस लिये हमेशा इस से बचो क्यूंकि जो शख़्स इस मरज़ में मुब्तला हो जाता है अगर अल्लाह तआ़ला की रह़मत व मेहरबानी शामिले ह़ाल न हो तो उस का मह़फ़ूज़ रहना मुश्किल हो जाता है।

फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! येह भी जान ले कि जब दुन्या के हर अ़लाक़े में अहले सुन्नत व जमाअ़त के मुबल्लिग़ीन व उ़लमा मौजूद हैं जो गुमराह फ़िर्क़ों के रद्द में मसरूफ़ हैं और वोह इस फ़न्ने तरदीद में ठोस मा'लूमात के मालिक भी हैं और गुमराहों के वसाविस व शुब्हात से अहले ह़क़ के सीनों को पाक करते रहते हैं। तो तुम्हारे ज़िम्मे से इन तफ़्सीलात में पड़ना साक़ित़ हो गया।

इसी त़रह़ इल्मे सिर्र के दक़ाइक़ मा'लूम करना भी ज़रूरी नहीं और न ही तमाम अ़जाइबे क़ल्ब की तह तक पहुंचना लाज़िम है सिर्फ़ इस क़दर मा'लूमात ज़रूरी हैं जिन से इ़बादत को हर क़िस्म के उ़यूब व नक़ाइस से मह़फ़ूज़ रखा जा सके और जिन के ज़रीए़ इ़बादात को मुकम्मल त़रीक़े से अदा किया जा सके, जैसे इख़्लास, ह़म्द, शुक्र और तवक्कुल वग़ैरा की ह़क़ीक़त, इस के इ़लावा ज़ाइद मा'लूमात में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

इसी त़रह़ इल्मे शरीअ़त के अन्दर तमाम बैअ़, शिराअ, इजारा, निकाह़, त़लाक़ और जिनायात वग़ैरा के मसाइल सीखने भी तमाम पर लाज़िम नहीं बल्कि इन तफ़्सीलात का इ़ल्म भी फ़र्ज़े किफ़ाया है।

सुवाल : क्या इ़ल्मे तौह़ीद की ज़रूरी मा'लूमात उस्ताद से सीखे बिग़ैर सिर्फ़ अपनी नज़र व फ़िक्र से ह़ासिल हो सकती हैं ?

जवाब : इस सिलसिले में उस्ताद से **इस्तिआ़नत**[1] ज़रूरी है क्यूंकि वोह मुश्किल मक़ामात को वाज़ेह़ करता है और इ़ल्मी पेचीदगियों को आसान करता है उस की रहनुमाई में इन्सान उ़लूम की तह़सील आसानी व सहूलत से कर सकता है और जिस शख़्स पर ख़ुदा का ख़ास एह़सान होता है उसे ही दीन के मुअ़ल्लिम बनने का शरफ़ अ़त़ा होता है।

फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! तू येह भी जान ले कि इ़ल्म की घाटी अगर्चे बहुत सख़्त घाटी है मगर इस के बिग़ैर मत़लूब व मक़्सूद का ह़ुसूल भी नामुमकिन है और अगर्चे इस का नफ़्अ़ बहुत है मगर इस घाटी से गुज़रना भी दुश्वार है और इस में बड़े बड़े ख़त़रात हैं, कितने ही ऐसे हैं जिन्हों ने इ़ल्म ह़ासिल न किया तो गुमराह हो गए और कितने ही ऐसे हैं जो इस राह पर चले मगर रास्ते में फिसल गए और इस में कितने ही घूमने वाले ह़ैरानी का शिकार और हज़ारों इस रास्ते पर चलने वाले ला पता हो गए और कितने ही ऐसे हैं जो इस घाटी को त़ै करने के दरपे हुवे तो **अल्लाह** तआ़ला की इमदाद से थोड़े ही वक़्त में मन्ज़िले मक़्सूद पर जा पहुंचे और बा'ज़ वोह हैं जो सत्तर साल से इस मन्ज़िल को त़ै करने में मसरूफ़ हैं और हर चीज़ का इख़्तियार दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला ही को है।

---

1 मदद लेना।

लेकिन जैसा कि हम ने बयान किया है इ़ल्म का नफ़्अ़ बहुत ज़ियादा है क्यूंकि बन्दा इ़बादत के मुआ़मले में इ़ल्म का सख़्त मोह़ताज है और इ़बादत की दीवार इ़ल्म पर ही क़ाइम होती है, ख़ास कर इ़ल्मे तौह़ीद व इ़ल्मे सिर्र पर, इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ येह रिवायत आई है कि एक दफ़्आ़ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि

"يَا دَاوٗدُ تَعَلَّمِ الْعِلْمَ النَّافِعَ فَقَالَ دَاوٗدُ وَ مَا الْعِلْمُ النَّافِعُ فَقَالَ اَنْ تَعْرِفَ جَلَالِیْ وَ عَظَمَتِیْ وَ كِبْرِيَائِیْ وَ كَمَالَ قُدْرَتِیْ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ فَاِنَّ هٰذَا الَّذِیْ يُقَرِّبُكَ اِلَیَّ"

ऐ दावूद ! **इ़ल्मे नाफ़ेअ़** ह़ासिल कर, आप ने अ़र्ज़ किया : नाफ़ेअ़ इ़ल्म कौन सा है ? तो रब तआ़ला ने फ़रमाया : इ़ल्मे नाफ़ेअ़ वोह है जिस से तुझे मेरे जलाल, मेरी अ़ज़मत, मेरी बड़ाई और हर शै पर मेरी कमाले क़ुदरत का पता चले क्यूंकि ऐसा इ़ल्म ही तुझे मेरे क़रीब कर सकता है।

और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि मैं नाबालिग़ी में ही फ़ौत हो जाता और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाता और बड़ा हो कर ख़ुदा की मा'रिफ़त ह़ासिल न करता और येह इस लिये कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त ज़ियादा होगी उस में ख़ुदा का ख़ौफ़ भी ज़ियादा होगा और जिस को ख़ौफ़ ज़ियादा होगा वोह इ़बादत ज़ियादा करेगा और जो इ़बादत ज़ियादा करेगा उस का तअ़ल्लुक़ भी **अल्लाह** के साथ ज़ियादा **ख़ालिस** होगा।

लेकिन इ़ल्म ह़ासिल करते वक़्त सब से ज़ियादा ख़ुलूस को निगाह में रखना चाहिये, और रिवायत की निस्बत दिरायत को ज़ियादा त़लब करना चाहिये क्यूंकि इ़ल्म में ख़त़रात भी बहुत हैं, इस लिये कि जो शख़्स इस ग़रज़ से इ़ल्म ह़ासिल करे कि लोग उस की त़रफ़

तवज्जोह करें और इ़ल्म के ज़रीए़ उमरा की हमनशीनी ह़ासिल हो और ताकि इ़ल्म के सबब बह़्स व मुनाज़रा करने वालों के सामने फ़ख़्र व शैख़ी करे और ज़लील दुन्या को जम्अ़ करे तो ऐसे शख़्स की निय्यत फ़ासिद है और उस की येह तिजारत तबाह और उस का लैन दैन नुक़्सान देह है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ لِيُفَاخِرَ الْعُلَمَاءَ اَوْ لِيُمَارِىَ بِهِ السُّفَهَاءَ اَوْ لِيَصْرِفَ بِهٖ وُجُوْهَ النَّاسِ اِلَيْهِ اَدْخَلَهُ اللّٰهُ النَّارَ "(مشکوة) (1)

जो शख़्स इस लिये इ़ल्म ह़ासिल करे ताकि उ़लमा के सामने फ़ख़्र करे या बे वुक़ूफ़ों के साथ इ़ल्म के ज़रीए़ झगड़े या लोगों की तवज्जोह अपनी त़रफ़ फेरे तो ऐसे शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला दोज़ख़ की आग में डालेगा।

ह़ज़रते बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया :

عَمِلْتُ فِى الْمُجَاهَدَةِ ثَلَاثِيْنَ سَنَةً فَمَا وَجَدْتُ شَيْئًا اَشَدَّ عَلَىَّ مِنَ الْعِلْمِ وَ خَطَرِهٖ

मैं ने तीस साल मुजाहदा किया तो इ़ल्म और इस के ख़त़रात से ज़ियादा सख़्त किसी चीज़ को न पाया।

और इस बात से भी बचना कि शैत़ान कहीं तुम्हारे ज़ेहन में येह वहम न डाल दे कि जब इ़ल्म में इतने ख़त़रात हैं तो इसे ह़ासिल ही नहीं करना चाहिये, ऐसा वहम दुरुस्त नहीं क्यूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام से मरवी है कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

اُطْلِعْتُ لَيْلَةَ الْمِعْرَاجِ عَلَى النَّارِ فَرَاَيْتُ اَكْثَرَ اَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ مِنَ الْمَالِ؟ قَالَ لَا بَلْ مِنَ الْعِلْمِ (2)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فیمن یطلب...الخ، ۴/۲۹۷، حدیث:۲۶۶۳، بتغیر۔

2 ......روح البیان، النساء، تحت الآیۃ:۱۶۲، ۲/۳۲۲، بتغیر ۔

मे'राज की रात मैं ने अहले दोज़ख़ को देखा तो मुझे उन में फ़क़ीर व मोह़ताज ज़ियादा नज़र आए। सह़ाबा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ने अ़र्ज़ किया : क्या मालो दौलत के मोह़ताज ? तो आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : नहीं, बल्कि इ़ल्म के मोह़ताज।

तो जो शख़्स इ़ल्म न सीखे वोह इ़बादात और इन के अरकान ठीक त़रीक़े से अदा नहीं कर सकता, बिलफ़र्ज़ अगर कोई शख़्स तमाम आस्मानों के फ़िरिश्तों जितनी इ़बादत करे मगर इ़ल्म न हो तो वोह ख़सारे में ही रहेगा।

इस लिये जिस त़रह़ भी हो इ़ल्म ज़रूर ह़ासिल करो और इस के ह़ासिल करने में परेशान और सुस्त न बनो, वरना गुमराही के ख़त़रात से दोचार हो जाओगे, हर क़िस्म की गुमराही से **अल्लाह** की पनाह।

फिर जब तुम **अल्लाह** तआ़ला की कारीगरी में ग़ौर करोगे और ख़ूब गहरी नज़र से देखोगे तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि हमारा एक मा'बूद है जो सब कुछ कर सकता है, जिसे हर चीज़ का इ़ल्म है, जो हमेशा ज़िन्दा है और जो चाहे करता है, जो हर बात को सुनता और देखता है, जो अज़ल से मुतकल्लिम है जिस का इ़ल्म, इरादा और कलाम फ़ना व ज़वाल से मुनज़्ज़ा है, जो हर ऐ़ब व नक़्स से पाक है, जो मुमकिनात की सिफ़ात से मौसूफ़ नहीं हो सकता और न ही मख़्लूक़ अश्या की ख़ुसूसिय्यात उस में पाई जा सकती हैं, न वोह मख़्लूक़ में से किसी बात में मुशाबेह है और न मख़्लूक़ ही किसी अम्र में उस से मुशाबेह है, वोह मकान और जिहत की क़ैद से पाक है और आफ़ात व ह़वादिस उस पर नहीं आ सकते, इसी त़रह़ जब तुम सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात, आप के ख़साइल और अ़लामाते नबुव्वत पर ग़ौर

करोगे तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल और उस की वह़ी पहुंचाने में अमीन हैं, ग़ौर करने से तुम पर इस अम्र की ह़क़्क़ानिय्यत भी वाज़ेह़ हो जाएगी कि सलफ़े **सालिह़ीन**(1) (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) का येह अ़क़ीदा कि जन्नत में **अल्लाह** तआ़ला का दीदार बिग़ैर जिहत और मकान के होगा ह़क़ है और येह कि वोह हमेशा से मौजूद है, मगर किसी **ह़द**(2) में मह़दूद नहीं और तुम पर इस अम्र की ह़क़्क़ानिय्यत भी रोशन हो जाएगी कि उस का कलाम ग़ैर मख़्लूक़ है और येह कि वोह ह़ुरूफ़ व असवात से मुरक्कब नहीं क्यूंकि ह़ुरूफ़ व असवात से तरकीब ह़ादीस है और ह़ादीस चीज़ क़दीम की सिफ़त नहीं हो सकती।

ग़ौर करने से तुम पर येह भी इ़यां हो जाएगा कि मुल्क व **मलकूत**(3) में जो कुछ वुक़ूअ़ पज़ीर होता है वोह ख़ुदा की तक़्दीर और क़ज़ा से होता है और हर चीज़ का आ़लमे वुजूद में ज़ुहूर भी उस के इरादे और मशिय्यत से होता है, ख़ैरो शर भी उसी की त़रफ़ से हैं और नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक भी दर ह़क़ीक़त वोही है और कुफ़्रो ईमान भी उसी की जानिब से हैं और मख़्लूक़ के लिये उस पर कोई चीज़ लाज़िम नहीं, वोह अगर किसी को सवाब अ़त़ा फ़रमाए तो येह उस का फ़ज़्ल है और अगर किसी को अ़ज़ाब दे तो येह उस का अ़द्ल है।

और जब तुम्हें इस का भी यक़ीन हो जाए कि जो इरशादात भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से सादिर हुवे हैं सब ह़क़ और दुरुस्त हैं और ह़श्र नश्र, अ़ज़ाबे क़ब्र, सुवाले मुन्कर व नकीर वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जो ख़बरें भी दी हैं सब सच्ची और ह़क़ हैं और सलफ़े सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) का इन सब बातों पर ए'तिक़ाद था, वोह सब इन पर

1...गुज़श्ता बुज़ुर्गों 2...इह़ात़ा 3...ज़मीनो आस्मान

मज़बूत़ी से क़ाइम थे और इन सब उमूर पर अग़राज़े नफ़्सानी व बिदअ़ात पैदा होने से पहले ही इत्तिफ़ाक़ व इजमाअ़ हो चुका है। (अल्लाह तआ़ला ख़्वाहिशात की पैरवी और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर की पैरवी करने से हम सब को बचाए।)

फिर जब दिल के आ'माल, बात़िनी अस्बाब और उन अश्या पर ग़ौर करोगे जिन का जाइज़ या नाजाइज़ होना इस किताब में मज़्कूर है फिर तुम्हें उन उमूर की पहचान भी हो जाए जिन की तुम्हें इबादत में ज़रूरत है जैसे त़हारत, नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा का इल्म। खुलासा येह कि जब तुम्हें तमाम मुन्दरिजए बाला चीज़ों का पूरी त़रह़ इल्म व यक़ीन हो गया, तो अब तुम उम्मते मुह़म्मदिय्या के **रासिख़ीन उ़लमा**(1) के ज़ुमरे में शामिल हो गए। अब अगर तुम ने इल्म के मुत़ाबिक़ पूरी त़रह़ अ़मल भी किया और अपनी आख़िरत दुरुस्त और आबाद करने में लग गए तो तुम आ़बिद होने के साथ साथ एक साह़िबे बसीरत आ़लिम भी बन गए और दीन के बारे में अब तुम ब फ़ज़्ले ख़ुदा जाहिल या ग़ाफ़िल नहीं रहे और न ही किसी के मुक़ल्लिद रहे। तुम्हें ऐसे शरफ़ पर मुबारक देनी चाहिये तुम्हारे इल्म की बहुत ज़ियादा क़ीमत है और तुम्हें इस पर बहुत ज़ियादा सवाब मिलेगा और तुम ने इल्म की घाटी को उ़बूर कर लिया और तह़सीले इल्म के बारे में अल्लाह तआ़ला का जो तुम पर ह़क़ था उसे तुम ने **बिऔ़ने इलाही**(2) अदा कर दिया।

अल्लाह तआ़ला से इल्तिजा है कि वोह हमें और तुम्हें दीन पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

وَ هُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

---

1. वोह उ़लमा जिन्हें इल्म के अन्दर पुख़्तगी ह़ासिल है।
2. अल्लाह तआ़ला की मदद से।

दूसरा बाब

दूसरी घाटी तौबा के बयान में

फिर ऐ इ़बादत के त़ालिब ! तुझ पर इ़बादत में मश्ग़ूल होने से क़ब्ल अपने गुनाहों से तौबा करना लाज़िम है और येह दो वजह से लाज़िम है :

एक तो इस लिये ताकि तौबा के बाइ़स तुम्हें त़ाअ़त व इ़बादत की तौफ़ीक़ नसीब हो क्यूंकि गुनाहों की नुहूसत बन्दे को त़ाअ़ात व इ़बादात बजा लाने से मह़रूम कर देती है और इस पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत़ कर देती है, यक़ीन जानो ! कि गुनाह एक ऐसी ज़ंजीर है जो बन्दे को त़ाअ़ात व नेकी की त़रफ़ चलने से रोक देती है और गुनाहों के होते हुवे उमूरे ख़ैर में जल्दी नहीं हो सकती क्यूंकि गुनाहों का **सिक़्ल**(1) और बोझ नेकियों के सुकून को पैदा नहीं होने देता और न ही त़ाअ़ात में निशात़ व ख़ुशी पैदा होने देता है और गुनाहों पर इसरार और अड़ा रहना दिल को सियाह कर देता है । इस त़रह़ इन्सान **क़सावते क़ल्बी**(2) और गुनाहों की तारीकी में मुब्तला हो जाता है, न उस में ख़ुलूस पैदा हो सकता है और न ही दिल का **तज़किया**(3) और न ही इ़बादत में लज़्ज़त व **ह़लावत**(4) पैदा हो सकती है, जो शख़्स गुनाहों से **ताइब**(5) नहीं होगा, अगर ख़ुदा का फ़ज़्ल उस के शामिले ह़ाल न हुवा तो रफ़्ता रफ़्ता येह गुनाह उसे कुफ़्र तक पहुंचा देंगे । ऐसे शख़्स पर **शक़ावत**(6) और बद बख़्ती ग़ालिब आ जाएगी, तो ऐसे शख़्स पर तअ़ज्जुब है कि इस नुहूसत व **क़सावत**(7) के होते हुवे इसे त़ाअ़ाते इलाही की

---

(1) भारी पन । (2) दिल की सख़्ती । (3) दिल की सफ़ाई । (4) मिठास । (5) तौबा करने वाला । (6) बद नसीबी । (7) सख़्त दिली ।

तौफ़ीक़ किस त़रह़ मिल सकती है? और गुनाहों पर अड़ने वाला शख़्स त़ाअ़ाते ख़ुदावन्दी का दा'वा कैसे कर सकता है और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर को अपनाते हुवे वोह इ़बादते ख़ुदावन्दी कैसे बजा ला सकता है? इसी त़रह़ जो शख़्स गुनाहों की गन्दगी और पलीदी से आलूदा हो वोह **अल्लाह** तआ़ला की मुनाजात का क़ुर्ब कैसे ह़ासिल कर सकता है? इसी लिये हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِذَا کَذَبَ الْعَبْدُ تَنَحّٰی عَنْہُ الْمَلَکَانِ مِنْ نَتْنِ مَا یَخْرُجُ مِنْ فِیْہِ[1]

जब इन्सान झूट बोलता है तो दोनों **किरामन कातिबीन**[2] झूट की बदबू की वजह से उस से अ़लाहि़दा हो जाते हैं।

और झूट व ग़ीबत के होते हुवे ज़बान ज़िक्रे इलाही के लाइक़ कैसे हो सकती है? इस लिये गुनाहों पर इसरार करने वाले आदमी को नेक काम की तौफ़ीक़ मिलना बहुत मुश्किल है और न ही इ़बादत करते वक़्त ऐसे शख़्स के आ'ज़ा में चुस्ती और सुकून पैदा हो सकता है ऐसा शख़्स अगर कुछ टूटी फूटी इ़बादत करेगा तो वोह भी मशक़्क़त के साथ फिर ऐसी इ़बादत में लज़्ज़त व सफ़ाई वग़ैरा कुछ न होगी येह सब कुछ गुनाहों की नुहू़सत और तर्के तौबा से होगा।

उस शख़्स ने सच फ़रमाया है जिस ने कहा है कि अगर तू रात को नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की और दिन को रोज़ा रखने की कुव्वत नहीं रखता तो समझ ले कि तू मन्हू़स हो चुका है और **मआ़सी**[3] की नुहू़सत तुझ पर मुसल्लत़ हो चुकी है।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ،باب ما جاء الفحش...الخ،۳۹۲/۳، حدیث: ۱۹۷۹، بتغیر والکامل لابن عدی،مقدمۃالمصنف،الباب السادس،۸۸/۱، بتغیر۔

2 आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते।

3 गुनाहों।

तौबा के ज़रूरी होने की **दूसरी वजह** येह है कि बिगै़र तौबा के इ़बादात क़बूल नहीं होतीं, जिस त़रह़ क़र्ज़ ख़्वाह का क़र्ज़ अदा करने से पहले उस के सामने हदिये और तोह़फ़े कोई अहम्मिय्यत नहीं रखते और न वोह इन्हें क़बूल करता है, इसी त़रह़ पहले गुनाहों से तौबा लाज़िम है इस के बा'द आ़म इ़बादाते नाफ़िला, इसी त़रह़ जब फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे लाज़िम हों तो उस के नवाफ़िल वगै़रा कैसे क़बूल हो सकते हैं ? यूं ही अगर कोई शख़्स ह़राम व ममनूअ़ काम तो तर्क न करे मगर मुबाह़ व ह़लाल अश्या में परहेज़ व एह़तियात़ करे तो उस का ऐसा परहेज़ क्या वक़्अ़त रख सकता है ? और वोह शख़्स ख़ुदा तआ़ला से मुनाजात, उस की दरगाह में पसन्दीदा और उस की सना करने के लाइक़ कैसे हो सकता है जिस पर ख़ुदा तआ़ला नाराज़ हो, गुनाहों पर इस्रार करने वालों का अकसर येही ह़ाल है।

सुवाल : तौबतुन्नुसूह़ के क्या मा'ना हैं, इस की ता'रीफ़ क्या है और बन्दे को क्या करना चाहिये जिस से उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाएं ?

जवाब : दिल के कामों में से एक काम तौबा है और आ़म उ़लमा ने इस की ता'रीफ़ येह की है : تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ عَنِ الذَّنْب दिल को गुनाहों से पाक करना, और हमारे शैख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह ता'रीफ़ की है :

اِنَّـهٗ تَرْكُ اِخْتِيَارِ ذَنْبٍ سَبَقَ مِثْلُهٗ عَنْهُ مَنْزِلَةً لَا صُوْرَةً تَعْظِيْمًا لِـلّٰهِ تَعَالٰى وَ حَذْرًا مِّنْ سَخَطِهٖ

आइन्दा के लिये ऐसे गुनाह को तर्क कर देने का क़स्द करना जिस दर्जे का पहले गुनाह हो चुका हो, और येह तर्क मह़ज़ ख़ुदा की ता'ज़ीम और उस की नाराज़ी के डर के बाइ़स हो।

शैख़ की ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ तौबा की चार शर्तें हैं

﴾1﴿ गुनाह तर्क कर देने का इरादा, इस का मत़लब येह है कि अपने दिल को इस बात पर पुख़्ता और मज़्बूत़ कर ले कि आइन्दा कभी गुनाहों की त़रफ़ रुजूअ़ नहीं करूंगा, लेकिन अगर कोई शख़्स बिल फ़े'ल गुनाह छोड़ दे मगर दिल में ख़याल हो कि फिर कभी करूंगा, या इब्तिदाअन गुनाह छोड़ने का इरादा ही **मुतरद्दिद**[1] हो तो ऐसा शख़्स बा'ज़ अवक़ात फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, ऐसा शख़्स अगर्चे वक़्ती त़ौर पर गुनाहों से रुक जाता है मगर इसे **ताइब**[2] नहीं कहा जा सकता।

﴾2﴿ दूसरी शर्त़ येह है कि जिस गुनाह से तौबा कर रहा हो उस मर्तबे का गुनाह पहले कहीं इस से सादिर हो चुका हो क्यूंकि अगर पहले से ऐसा गुनाह सादिर नहीं हो सिर्फ़ आइन्दा के लिये इस से बचता है तो ऐसे शख़्स को ताइब नहीं कहेंगे बल्कि मुत्तक़ी कहेंगे, क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुफ़्र से बचने वाला तो कह सकते हैं मगर कुफ़्र से तौबा करने वाला नहीं कह सकते क्यूंकि कुफ़्र तो مَعَاذَ اللّٰه कभी भी आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से सादिर नहीं हुवा, और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कुफ़्र से ताइब कहेंगे क्यूंकि आप पहले ह़ालते कुफ़्र में रह चुके थे।

﴾3﴿ तीसरी शर्त़ येह है कि वोह गुनाह रुत्बे में पहले गुनाह की त़रह़ हो न कि सूरत में, क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि जिस पुराने बुढ्ढे ने जवानी के ज़माने में ज़िना या डाका ज़नी का इर्तिकाब किया हो, वोह अब बुढ़ापे में तौबा तो कर सकता है क्यूंकि तौबा का दरवाज़ा

---

1 तज़बज़ुब का शिकार। 2 तौबा करने वाला।

बन्द नहीं मगर अब उसे ज़िना या डाकाज़नी के तर्क का इख़्तियार नहीं क्यूंकि अब वोह अ़मली तौ़र पर येह गुनाह नहीं कर सकता तो चूंकि अब वोह ज़िना या डाकाज़नी पर क़ादिर नहीं, इस लिये येह नहीं कह सकते कि वोह अपने इख़्तियार से इन्हें छोड़ रहा है या इन से रुक रहा है क्यूंकि अब वोह आ़जिज़ हो चुका है और इसे अब इन पर क़ुदरत नहीं रही मगर वोह इस वक़्त भी ज़िना या डाकाज़नी जैसे दूसरे ह़राम व ममनूअ़ अफ़्आ़ल पर क़ादिर है जैसे झूट बोलना, किसी पर ज़िना की तोहमत लगाना, किसी की ग़ीबत या चुग़ली करना वग़ैरा उमूर येह सब गुनाह हैं अगर्चे हर एक में अपनी अपनी नौइय्यत के ए'तिबार से फ़र्क़ है लेकिन येह तमाम गुनाह एक ही रुत्बे के शुमार होते हैं मगर येह गुनाह बिदअ़त की पैरवी से कम हैं और बिदअ़त की पैरवी कुफ़्र से कम है तो येह तौबा जो ज़िना या डाकाज़नी से होगी सूरतन तौबा होगी।

﴾4﴿ चौथी शर्त़ येह है कि गुनाहों से तौबा **अल्लाह** तआ़ला की ता'ज़ीम के लिये और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब से डर कर हो, किसी दुन्यवी ग़रज़ या लोगों से डर कर या **त़लबे सना**[1] के लिये या अपनी मश्हूरी या जिस्मानी लाग़री की वजह से या मोह़ताजी और किसी और रुकावट की वजह से न हो।

जब तौबा के येह अरकान व शराइत़ पाए जाएंगे तौबा मुकम्मल तौ़र पर होगी और इसे **तौबए सादिक़ा** कहा जाएगा।

तौबा के मुक़द्दमात तीन अम्र हैं या'नी जिन चीज़ों का तौबा से पहले होना ज़रूरी है :

अव्वल : येह कि अपने गुनाहों को निहायत **क़बीह़ अफ़्आ़ल**[2] तसव्वुर करे।

---

❶ ता'रीफ़ के हुसूल। ❷ बुरे काम।

दुवुम : येह कि **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब की शिद्दत और उस के ग़ज़ब की सख़्ती को दिल में ह़ाज़िर करे।

सिवुम : येह कि अपनी कमज़ोरी और गुनाह के बारे में अपनी बेह़याई को मह़सूस करे और इस का ए'तिराफ़ करे।

क्यूंकि जो शख़्स सूरज की तेज़ धूप, चोकीदार के थप्पड़ और च्यूंटी के डंक को बरदाश्त नहीं कर सकता वोह दोज़ख़ की शदीद गर्मी, जहन्नम के फ़िरिश्तों की मार और इन्तिहाई ज़हरीले सांपों के डंक कैसे बरदाश्त कर सकता है ! दोज़ख़ में बिच्छू ख़च्चर जितने बड़े और वहां के सांप ऊंट की गर्दन जितने मोटे होंगे और येह सांप और बिच्छू वग़ैरा दोज़ख़ की आग के होंगे। इस वक़्त वोह ग़ज़ब और ग़ुस्से के मकान में रखे हुवे हैं, हम बार बार ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं।

तुम अगर इन दहशत नाक उमूर को याद रखोगे और हर दिन रात में किसी वक़्त इन की याद ताज़ा करते रहोगे तो ज़रूर तुम्हें गुनाहों से ख़ालिस तौबा नसीब हो जाएगी। **अल्लाह** तआ़ला हर एक को अपने फ़ज़्ल से तौबा की तौफ़ीक़ दे।

सुवाल : अगर कोई शख़्स येह कहे कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो तौबा के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ येह फ़रमाया है कि اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ (1) "या'नी गुनाहों पर पशेमान होने का नाम तौबा है।" तौबा के जो अरकान व शराइत़ तुम ने बयान किये हैं इन का हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तो कोई ज़िक्र नहीं फ़रमाया।

---

1 ......سنن ابن ماجه ،كتاب الزهد ، باب ذكر التوبة ، ٤/٤٩٢ ، حديث:٤٢٥٢ـ

जवाब : सिर्फ़ नदामत को तौबा नहीं कहा जा सकता क्यूंकि गुनाहों पर पशेमानी बन्दे के इख़्तियार व क़ुदरत में नहीं, तुम इस चीज़ को मह़सूस करते हो कि बसा अवक़ात बन्दा एक फ़े'ल पर नादिम व पशेमान हो रहा होता है ह़ालांकि दिल से वोह इस नदामत व पशेमानी को पसन्द नहीं कर रहा होता तो मा'लूम हुवा कि नदामत व पशेमानी बन्दे के इख़्तियार में नहीं और तौबा तो इख़्तियारी चीज़ है इसी लिये तौबा का हुक्म दिया गया है, तो इस तशरीह़ से साफ़ त़ौर पर मा'लूम हुवा कि नदामत व पशेमानी यक़ीनन ऐ़न तौबा नहीं, इस लिये मज़्कूरा ह़दीस के वोह मा'ना नहीं जो ज़ाहिरन समझ में आते हैं बल्कि इस के येह मा'ना हैं कि अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत व हैबत का तसव्वुर कर के और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से जो नदामत व पशेमानी बन्दे के दिल में पैदा होती है वोह बन्दे को ख़ालिस तौबा करने पर उभारती है और ऐसी नदामत व पशेमानी **सह़ीह़ ताइबीन**[1] का ह़ाल और उन की सिफ़त है क्यूंकि बन्दा जब मुन्दरिजए बाला तौबा के **मुक़द्दमात**[2] को बार बार ख़याल में लाएगा तो उसे अपने गुनाहों पर नदामत मह़सूस होगी और येही नदामत उस को **तर्के मआ़सी**[3] पर उभारेगी और ऐसी नदामत आइन्दा के लिये भी ताइब के दिल में क़ाइम रहेगी और ख़ुदावन्दे तआ़ला के दरबार में आ़जिज़ी और ज़ारी पर **बरअंगेख़्ता करेगी**[4] तो चूंकि ऐसी नदामत तौबा का सबब और ताइब की सिफ़तों में से है इस लिये हुज़ूर (عَلَيْهِ السَّلَام) ने ऐसी नदामत को तौबा फ़रमा दिया। इस मा'ना को अच्छी त़रह़ समझ लो अल्लाह तआ़ला तुम्हें समझने की तौफ़ीक़ दे।

---

1 तौबा करने वालों। 2 वोह उमूर जिन का तौबा से पहले होना ज़रूरी है। 3 गुनाहों को छोड़ने। 4 माइल करेगी।

सुवाल : येह कैसे हो सकता है कि इन्सान ऐसा हो जाए कि उस से कोई सग़ीरा या कबीरा गुनाह सादिर ही न हो? ह़ालांकि अम्बियाए किराम صَلوٰةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ وَ سَلَامُہٗ जो तमाम मख़्लूक़ात से **क़त़ई**[1] त़ौर पर अशरफ़ व आ'ला थे उन के मुतअ़ल्लिक़ भी अहले इ़ल्म में इख़्तिलाफ़ है कि वोह इस मर्तबे पर पहुंचे या नहीं ?

जवाब : ऐसे दरजे पर पहुंच जाना कि कोई सग़ीरा या क़बीरा गुनाह सादिर न हो मुमकिन है मुह़ाल नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की तौफ़ीक़ जिस के शामिले ह़ाल हो जाए उस के लिये आसान है, **अल्लाह** तआ़ला जिस को चाहे अपनी रह़मत के साथ ख़ास़ कर लेता है।

फिर येह भी तौबा के शराइत़ में से है कि क़स्दन गुनाह सादिर न हो, अगर भूल चूक से कोई लगज़िश हो जाए तो ख़ुदा तआ़ला रऊफ़ुर्रह़ीम उसे मुआ़फ़ कर देगा और जिसे ख़ुदा की तौफ़ीक़ ह़ासिल हो गई हो वोह गुनाहों से बा आसानी मह़फ़ूज़ रह सकता है। अगर तुम तौबा न करने का येह बहाना करो कि हमें अपने नफ़्स पर ए'तिमाद नहीं शायद तौबा के बा'द गुनाहों से बाज़ रहे या न रहे और शायद हम तौबा पर साबित व मज़बूत़ रहें या न रहें, इस लिये तौबा करने से क्या फ़ाइदा, तो इस तावील का जवाब सुन लो कि ऐसा ख़याल शैत़ान का सरासर धोका और फ़रेब है क्यूंकि तुम्हें कैसे मा'लूम है कि तौबा के बा'द ज़रूर तुम से गुनाह हो जाएगा ! हो सकता है तौबा के बा'द **मुत्तसिल**[2] ही तुम पर मौत आ जाए और गुनाह करने का मौक़अ़ न मिले, बाक़ी येह वहम कि शायद गुनाह हो जाए तो ऐसे वहम का कोई ए'तिबार नहीं तुम पर सिर्फ़ येह लाज़िम है कि तौबा के वक़्त आइन्दा गुनाह तर्क कर देने का इरादा पक्का और सच्चा हो, बाक़ी इस इरादे पर तुम्हें इस्तिक़ामत देना ख़ुदा का काम है पस अगर इस इरादे

---
1 यक़ीनी। 2 साथ/फ़ौरन

पर तुम खु़दा के फ़ज़्ल से क़ाइम रहे तो येही मक़्सूद है और अगर खु़दा न ख़्वास्ता तुम इस इरादे पर क़ाइम न रहे तो भी तुम्हारे गुज़श्ता गुनाह तो मुआ़फ़ हो गए, गुज़श्ता गुनाहों के अ़ज़ाब से तो तुम्हें ख़लासी मिल गई और गुज़श्ता गुनाहों की आलूदगी से तुम पाक हो गए। तौबा के बा'द अगर कोई गुनाह हुवा हो तो बस वोही तुम्हारे ज़िम्मे है तो साबिक़ा गुनाहों का मुआ़फ़ हो जाना कोई कम नफ़्अ़ है ? इस लिये सिर्फ़ इस वस्वसे से तौबा करने से न रुको कि **मबादा**[1] फिर गुनाह हो जाए क्यूंकि ख़ालिस तौबा करने से तुम्हें दो बड़े फ़ाइदों से एक फ़ाइदा तो यक़ीनन होगा कि या तो हमेशा कि लिये तौबतुन्नुसूह़ मयस्सर आ जाएगी या साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। **अल्लाह** तआ़ला ही तौफ़ीक़ व हिदायत का मालिक है।

गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ येह याद रखो कि गुनाहों की नोइय्यत मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि गुनाह तीन क़िस्म के हैं :

एक येह कि तुम ने खु़दा के फ़र्ज़ करदा अह़काम को अदा न किया हो और इन की अदाएगी तुम्हारे ज़िम्मे हो जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और कफ़्फ़ारा वग़ैरा तो येह मह़ज़ ज़बानी तौबा से मुआ़फ़ नहीं होंगे बल्कि ह़त्तल इमकान इन की क़ज़ा लाज़िम है।

दूसरी क़िस्म वोह गुनाह जिन की अब क़ज़ा तो नहीं हो सकती मगर हों वोह भी तुम्हारे और खु़दा के दरमियान ही जैसे कहीं शराब नोशी की हो या **राग रंग**[2] की मह़फ़िल सजाई हो या **सूद खाया हो तो**[3] इस क़िस्म के गुनाहों की मुआ़फ़ी की सूरत

---

1 खु़दा न ख़्वास्ता। 2 गाने बाजों। 3 जो माल रिश्वत या तग़न्नी (गाने) या चोरी से ह़ासिल हुवा इस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे वोह न रहे हों तो वारिसों को दे, पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे येही हुक्म सूद वग़ैरा उ़क़ूदे फ़ासिदा का है फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि जिस से लिया बिल ख़ुसूस उन्हें वापस करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि उसे इख़्तियार है कि (जिस से लिया) उसे वापस कर दे ख़्वाह इब्तिदाअन तसद्दुक़ (ख़ैरात) कर दे।

(चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 46, बह़वाला फ़तावा रज़विय्या, 23/552)

येह है कि गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत व पशेमानी की जाए और आइन्दा के लिये उन्हें तर्क कर देने का **मुसम्मम**[1] इरादा कर लिया जाए।

तीसरी क़िस्म वोह गुनाह हैं जो तुम्हारे और मख़्लूक़ के दरमियान हैं। तमाम गुनाहों से ज़ियादा संगीन गुनाह येह तीसरी क़िस्म के गुनाह हैं इन की नोइय्यत मुख़्तलिफ़ होती है बा'ज़ किसी के माल से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और बा'ज़ किसी की ज़ात से, इसी त़रह़ बा'ज़ वोह होते हैं जिन का तअ़ल्लुक़ किसी की इ़ज़्ज़त व हु़रमत से होता है और बा'ज़ वोह होते हैं जो किसी को दीनी तौ़र पर नुक़्सान पहुंचाया होता है।

तो जिन का तअ़ल्लुक़ माल से है उन के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी है कि अगर हो सके तो वोह माल वापस कर दिया जाए अगर गुरबत व इफ़्लास के बाइ़स वापस करने से मा'ज़ूर है तो साहि़बे माल से जाइज़ व ह़लाल करवा ले अगर साहि़बे माल मर चुका है या वहां मौजूद नहीं तो माल की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ कोई चीज़ सदक़ा कर दे और अगर येह भी मुमकिन न हो तो आ'माले सालिह़ा की कसरत करे और **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में गिर्या व ज़ारी करे ताकि रोज़े क़ियामत ख़ुदा तआ़ला उस साहि़बे माल को राज़ी कर दे और वोह गुनाह जिन का तअ़ल्लुक़ किसी की जान या ज़ात से हो जैसे किसी को क़त्ल किया हो तो उस के **इवज़**[2] क़िसास देना लाज़िम है या मक़्तूल के वारिसों से मुआ़फ़ कराना ज़रूरी है और अगर वारिस मौजूद नहीं तो दरबारे ईज़दी में गिर्या व ज़ारी ज़रूरी है और ख़ुदा से इस की मुआ़फ़ी चाहना लाज़िम है ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मक़्तूल को तुम से राज़ी कर दे और किसी की इ़ज़्ज़त व आबरू से मुतअ़ल्लिक़ येह गुनाह है कि

1 पक्का/पुख़्ता। 2 बदले में।

किसी की ग़ीबत की जाए (और उसे मा'लूम हो जाए) या किसी पर बोहतान लगाया जाए या किसी को गालियां दी जाएं तो इस क़िस्म के गुनाह की मुआ़फ़ी की सूरत येह है कि उस के सामने अपने आप को झूटा कहा जाए और अपनी ज़ियादती और ख़त़ा का ए'तिराफ़ किया जाए और अगर उस के सामने अपनी ज़ियादती व ग़लत़ी का ए'तिराफ़ करने में फ़ितना और झगड़े का सह़ीह़ अन्देशा हो तो इस सूरत में भी मुआ़फ़ी के लिये ख़ुदा के दरबार में ही गिर्या व ज़ारी करे ताकि मुआ़फ़ी हो जाए और किसी की आबरू से मुतअ़ल्लिक़ येह गुनाह है कि किसी के अहलो इ़याल से ख़ियानत की जाए या कोई और ह़रकते बद की जाए तो ऐसे गुनाह को न तो उस के सामने ज़ाहिर किया जा सकता है और न ही मुआ़फ़ करवाया जा सकता है तो इस की मुआ़फ़ी के लिये भी दरबारे ईज़दी में ही गिर्या व ज़ारी करनी चाहिये । हां अगर फ़ितने का ख़ौफ़ न हो, अगर्चे येह नादिर है तो उस के सामने ज़ाहिर कर के मुआ़फ़ करा लिया जाए और वोह गुनाह जिन का तअ़ल्लुक़ किसी के दीन से हो, येह हैं कि किसी को काफ़िर या बिदअ़ती या गुमराह कहा जाए तो येह भी सख़्त गुनाह है, ऐसे गुनाहों की मुआ़फ़ी भी इसी सूरत में हो सकती है कि उस के सामने अपनी ख़त़ा और ग़लत़ी का ए'तिराफ़ किया जाए और अगर वोह मौजूद न हो तो दरबारे इलाही में गिड गिड़ाए और इस्तिग़फ़ार करे और अपने आप पर मलामत करे ताकि रोज़े क़ियामत ख़ुदा तआ़ला उस शख़्स को राज़ी कर दे ।

ख़ुलासा येह कि जहां तुम गुनाह के साथ तक्लीफ़ देने वालों को राज़ी भी कर सको वहां उन को राज़ी भी करो, वरना मुआ़फ़ी और बख़्शिश के लिये ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करो, उस के दरबार में गिर्या व ज़ारी करो और सदक़ा व ख़ैरात करो ताकि रोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दरमियान रिज़ामन्दी करा दे

इस लिये कि खुदा के फ़ज़्लो करम से येह उम्मीद है कि वोह तुम्हारी सादिक़ गिर्या व ज़ारी देख कर **तुम्हारे ख़स्म**[1] को अपने ख़ज़ानों से अ़ता कर के तुम्हारी त़रफ़ से राज़ी कर दे।

तौबा के अरकान व शराइत़ जो हम ने बयान किये हैं, जब तुम इन पर पूरी त़रह़ अ़मल पैरा हो जाओगे और आइन्दा के लिये अपने दिल को हर क़िस्म के गुनाहों से पाक रखने का अ़हद कर लोगे तो तुम्हारे गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। अब आइन्दा अगर इस अ़हद पर तो तुम क़ाइम रहे मगर गुज़श्ता क़ज़ाएं अदा न कर सके या नाराज़ लोगों को राज़ी न कर सके तो येह साबिक़ा गुनाह ही तुम्हारे ज़िम्मे रहे बाक़ी तमाम बख़्श दिये जाएंगे।

और इस बाबुत्तौबा की शर्ह़ बहुत त़वील है जिस की गुन्जाइश येह मुख़्तसर किताब नहीं रखती अगर इस की ज़ियादा शर्ह़ मत़लूब हो तो किताब "**इह़याउल उ़लूम**" के "**बाबुत्तौबा**" या "**अल क़ुर्बतुइलल्लाह**" या किताब "**अल ग़ायतुल क़ुस्वा**" का मुत़ालआ़ करो, यहां सिर्फ़ इसी क़दर बयान किया है जिस की अशद्द ज़रूरत थी।[2]

फिर तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि तौबा की घाटी बहुत सख़्त घाटी है इस की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है और इस से ग़फ़्लत शदीद नुक़्सान की **मूजिब**[3] है, तौबा की अहम्मिय्यत व ज़रूरत इस वाक़िए़ से ज़ाहिर होती है जो उस्ताद अबू इस्ह़ाक़ इस्फ़राइनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है, उस्ताद मौसूफ़ बा अ़मल और **रासिख़ फ़िल इ़ल्म**[4] उ़लमा में से थे, आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) फ़रमाते हैं :

---

1 तुम से अपने ह़क़ का मुत़ालबा करने वाले। 2 तौबा के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**तौबा की रिवायात व ह़िकायात**" का मुत़ालआ़ भी कीजिये। 3 बाइस। 4 ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रासिख़ फ़िल इ़ल्म वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इ़ल्म का मुत्तबिअ़ (अ़मल करने वाला) हो।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 3, सूरए आले इमरान, तह़तल आयत : 7, स. 104)

मैं ने तीस बरस **अल्लाह** तआ़ला से **तौबतुन्नुसूह़** नसीब होने की इल्तिजा की। तीस बरस के बा'द मैं अपने दिल में मुतअ़ज्जिब हुवा और दरबारे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया : "ऐ परवर दगार ! मुझे तीस बरस हुवे हैं तुझ से सिर्फ़ एक ह़ाजत के लिये इल्तिजा करते लेकिन तू ने अब तक वोह भी पूरी न की।" जब मैं सोया तो ख़्वाब में एक शख़्स देखा जो मुझे कह रहा था : तू अपनी तीस साला दुआ़ पर तअ़ज्जुब करता है तुझे येह मा'लूम नहीं कि तू कितनी बड़ी चीज़ का मुत़ालबा कर रहा है ? तू उस चीज़ का मुत़ालबा कर रहा है कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे अपना दोस्त बना ले, क्या तू ने **अल्लाह** तआ़ला का येह इरशाद नहीं सुना कि

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾ (1)

*बेशक **अल्लाह** तआ़ला तौबा करने वालों और सुथरा रहने वालों को दोस्त रखता है।*

तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै ख़याल करता है ?

ऐ ग़ाफ़िल मुसलमानो ! ज़रा उन अइम्मए दीन के ह़ालात पर तो नज़र करो कि वोह तौबा के लिये कितना एहतिमाम करते थे और **इस्लाहे़ कुलूब**(2) के लिये किस त़रह़ मुसलसल तगो दो में लगे रहते थे और तौशए आख़िरत तय्यार करने की ख़ात़िर किस त़रह़ जांफ़िशानी से मसरूफ़ रहते थे।

तौबा में ताख़ीर करना सख़्त नुक़्सान देह है क्यूंकि गुनाह से इब्तिदाअन **क़सावते क़ल्बी**(3) पैदा होती है फिर रफ़्ता रफ़्ता इन्सान कुफ़्र व गुमराही तक जा पहुंचता है, क्या तुम्हें इब्लीस और बल्अ़म बाऊ़रा का वाक़िआ़ याद नहीं ?

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। (پ۲، البقرة:۲۲۲)

2 दिलों की इस्लाह़।   3 दिल की सख़्ती।

उन से इब्तिदा में एक ही गुनाह सादिर हुवा मगर वोह बा'द में कुफ़्र व गुमराही तक पहुंच गए और हमेशा के लिये तबाह ह़ाल लोगों में शामिल हो गए, इस लिये तौबा के बारे में तुम पर बेदारी व कोशिश लाज़िम है अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि अ़न क़रीब गुनाहों पर इसरार करने के मरज़ का तुम्हारे दिल से **क़ल्अ़ क़म्अ़**[1] हो जाए और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गर्दन से उतर जाए और गुनाहों की वजह से जो क़सावते क़ल्बी पैदा होती है इस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो क्यूंकि बा'ज़ सालिह़ीन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْهِم) ने फ़रमाया :

"اِنَّ سَوَادَ الْقَلْبِ مِنَ الذُّنُوْبِ وَ عَلَامَةُ سَوَادِ الْقَلْبِ اَنْ لَّا تَجِدَ مِنَ الذُّنُوْبِ مَفْزَعًا وَّ لَا لِلطَّاعَةِ مَوْقِعًا وَّ لَا لِلْمَوْعِظَةِ مَنْجَعًا وَّ لَا تَسْتَحْقِرَنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ شَيْئًا فَتَحْسَبَ نَفْسَكَ تَائِبًا وَّ اَنْتَ مُصِرٌّ عَلَى الْكَبَائِرِ"

बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, ताअ़त के लिये मौक़अ़ नहीं मिलता, नसीह़त से कोई फ़ाइदा नहीं होता, ऐ अ़ज़ीज़ ! किसी गुनाह को मा'मूली न ख़याल कर और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब गुमान न कर।

ह़ज़रते कहमस बिन अल ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने फ़रमाया कि मुझ से एक गुनाह सरज़द हुवा, तो मैं उस पर चालीस बरस रोता रहा। लोगों ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! वोह कौन सा गुनाह था ?" तो आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने फ़रमाया : "एक दफ़्आ़ मेरा एक दोस्त मेरी मुलाक़ात को आया तो मैं ने उस के लिये मछली पकाई, जब वोह खाना खा चुका तो मैं ने उठ कर अपने पड़ोसी की दीवार से मिट्टी ले कर अपने मेहमान के हाथ धुलाए।"[2]

1 ख़ातिमा।

2 ......حلية الاولياء، كهمس الدعاء، ٦/٢٢٨، رقم:٨٣٨٩۔

पस ऐ लोगो ! नफ़्स को गुनाहों पर टोकते रहो, इस का **मुह़ासबा**[1] करते रहो और तौबा करने में सुस्ती और ताख़ीर न करो क्यूंकि मौत का वक़्त पोशीदा है और दुन्या धोके व फ़रेब में डाल रही है और नफ़्सो शैत़ान दो ख़त़रनाक दुश्मन तुम्हें गुमराह करने की ताक में हैं इस लिये हर वक़्त दरबारे ईज़दी में **तज़र्रुअ़ व ज़ारी**[2] करते रहो और अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़ाल अकसर अवक़ात जे़ह्न में दोहराते रहो जिन को रब तआ़ला ने ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और उन में अपनी रूह़ फूंकी और फिर फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर जन्नत में ले गए, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) से सिर्फ़ एक लग़्ज़िश सरज़द हुई तो अपने मक़ामे आ़ली से गिर गए यहां तक कि एक रिवायत में आया है कि लग़्ज़िश होने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) से पूछा :

”يَا اٰدَمُ اَىُّ جَارٍ كُنْتُ لَكَ؟ قَالَ نِعْمَ الجَارُ يَارَبِّ قَالَ يَا اٰدَمُ اُخْرُجْ مِنْ جَوَارِىْ وَضَعْ عَنْ رَاْسِكَ تَاجَ كَرَامَتِىْ ، فَاِنَّهٗ لَا يُجَاوِرُنِىْ مَنْ عَصَانِىْ“

ऐ आदम ! मेरा **जवारे रह़मत** तेरे लिये कैसा था ? आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ किया : बहुत अच्छा, तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : मेरे **जवारे रह़मत** से दूर चला जा और मेरी अ़त़ाकर्दा इ़ज़्ज़त का ताज सर से उतार दे क्यूंकि मेरी नाफ़रमानी करने वाला मेरे **जवारे रह़मत**[3] में रहने का अहल नहीं ।

---

(1) बाज़ पुर्स । (2) गिर्या व ज़ारी । (3) इस पेराग्राफ़ में जहां लफ़्ज़ “पड़ोसी” या “पड़ोस” था इस को “जवारे रह़मत” से बदल दिया है । (इ़ल्मिय्या)

एक रिवायत में आया है कि आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) दो सो बरस इस लग़्ज़िश पर रोते रहे, तब जा कर **अल्लाह** तआ़ला ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) की तौबा क़बूल फ़रमाई और इस लग़्ज़िश को मुआ़फ़ फ़रमाया। येह उस कामिल बुज़ुर्ग का ह़ाल है जो उस का नबी और दोस्त था तो आ़म लोगों का क्या ह़ाल होगा जो बे शुमार गुनाहों का इर्तिकाब कर चुके हैं ! दो सो बरस वोह इख़्लास का पैकर रोया जो वाक़ेई ताइब और ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाला था, तो गुनाहों पर इस्रार करने वाले ग़ाफ़िल को किस क़दर ज़ियादा गिर्या व ज़ारी की ज़रूरत होगी ? एक शाइ़र ने इसी चीज़ को कितने अच्छे अन्दाज़ में अदा किया है, शे'र

يَخَافُ عَلٰى نَفْسِهٖ مَنْ يَّتُوْبُ   فَكَيْفَ تَرٰى حَالَ مَنْ لَا يَتُوْبُ

वोह डर रहे हैं जो हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार में मसरूफ़ रहते हैं तो उन का क्या ह़ाल होगा जो सिरे से तौबा ही से ग़ाफ़िल हैं।

और तौबा करने के बा'द अगर तौबा तोड़ डालो और फिर गुनाह शुरूअ़ कर दो तो जल्द तौबा की त़रफ़ लौटो और नफ़्स को तौबा पर राग़िब करने के लिये येह कहो : "ऐ नफ़्स ! अब दोबारा ख़ुलूस से तौबा कर ले शायद येह तेरी आख़िरी तौबा हो और इस के बा'द इर्तिकाबे गुनाह के बिग़ैर ही तू मर जाए।" इसी त़रह़ गुनाह के बा'द तौबा करते रहो और जिस त़रह़ तुम ने गुनाह करना दस्तूर बना लिया है गुनाह के बा'द तौबा को भी पेशा बना लो और गुनाह कर के तौबा से आ़जिज़ न हो जाओ और कभी तौबा से मुंह न मोड़ो और शैत़ानी धोके में आ कर तौबा से हरगिज़ न रुको क्यूंकि तौबा करना नेक होने की अ़लामत है। क्या तुम ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशाद नहीं सुना ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

خَيْرُكُمْ كُلُّ مُفْتَنٍ تَوَّابٍ[1] तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जिस से अगर गुनाह सादिर हों तो बा'द में फ़ौरन तौबा करे।

और ख़ुदा की त़रफ़ ज़ियादा रुजूअ़ करे और गुनाहों पर पशेमान ज़ियादा हो और ख़ुदा तआ़ला से डर कर इस्तिग़फ़ार ज़ियादा करे, तुम इस आयते क़ुरआनी के मा'ना पर तो ग़ौर करो :

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾[2]

जो बुरे अ़मल करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी मांग ले तो अल्लाह तआ़ला को ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।

फ़स्ल

अल ग़रज़ जब तुम तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए़ अपने दिल को तमाम गुनाहों से साफ़ कर लो और आइन्दा के लिये अपने दिल को गुनाहों से दूर रखने पर **मोह्कम**[3] कर लो और इस ख़ुलूस से तौबा कर लो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिल को तौबा में सच्चा और ख़ालिस पाए और जहां तक हो सके लोगों को राज़ी कर लो जिन्हें तुम ने माली, बदनी या दीनी क़िस्म की अज़िय्यतें पहुंचाई हो, और गुज़श्ता ज़माने की छूटी हुई नमाज़ें और रोज़े वग़ैरा भी ह़त्तल इम्कान **क़ज़ा कर लो**[4] और जो क़ज़ा नहीं

---

1 ......شعب الايمان،باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة ، ٥/٤١٨ ، حديث:٧١٢١۔

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (پ٥،النساء:١١٠) 3 पक्का 4 क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دامت بركاتهم العاليه की मायानाज़ तालीफ़ "**नमाज़ के अह़काम**" से "**क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा**" और रोज़ों की क़ज़ा का त़रीक़ा जानने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 1 के बाब "**फ़ैज़ाने रमज़ान**" से "**अह़कामे रोज़ा**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

कर सकते उन की मुआफ़ी के लिये दरबारे ख़ुदावन्दी में गिर्या व ज़ारी भी कर चुको जिस के ज़रीए़ तुम्हारे **बाक़ी मांदा**[1] गुनाह और लग़ज़ीशें मुआफ़ हो जाएं तो फिर तुम ग़ुस्ल करो और पाक कपड़े पहनो और वुज़ू कर के पूरे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से चार रक्अ़त नमाज़ अदा करो और अपनी पेशानी को ऐसी जगह ज़मीन पर रखो जहां तुम्हें **अल्लाह** के सिवा कोई न देख रहा हो फिर तुम अपने चेहरे पर ख़ाक डालो, और अपने चेहरे को जो तमाम आ'ज़ा से आ'ला उ़ज़्व है ख़ाक से आलूदा करो और ह़ालत येह हो जाए कि आंखों से आंसू बह रहे हों। दिल ग़म के दरया में तैर रहा हो और शिद्दते ख़ौफ़ के बाइ़स तुम्हारे रोने की आवाज़ बे साख़्ता बुलन्द हो रही हो, एक एक कर के तुम्हारे गुनाह आंखों के सामने फिर रहे हों तो अपने गुनाहों को याद करते हुवे अपने नफ़्स को डांटते हुवे इस से यूं ख़िता़ब करो :

”اَمَا تَسْتَحْيِيْنَ يَا نَفْسُ اَمَا اٰنَ لَكِ اَنْ تَتُوْبِىْ اَلَكِ طَاقَةٌ بِعَذَابِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ اَلَكِ حَاجَةٌ بِسَخَطِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ“

ऐ नफ़्स ! क्या तुझे ख़ुदा से शर्म नहीं आती ? क्या तेरी तौबा का वक़्त अभी क़रीब नहीं आया ? क्या तुझ में क़ह्हारो जब्बार के दर्दनाक अ़ज़ाब बरदाश्त करने की सकत है ? क्या तू अपने ऊपर ख़ुदा को नाराज़ करने का ख़्वाहिश मन्द है ?

इसी त़रह़ चन्द बार गुनाहों को याद कर के इन अल्फ़ाज़ का तकरार करो और पूरे सोज़ो गुदाज़ से रोओ और गिर्या व ज़ारी करो, फिर सजदे से सर उठाओ और अपने मेहरबान ख़ुदा के आगे दुआ़ के लिये हाथ फैला दो और येह दुआ़ करो :

1 बाक़ी बचे हुवे।

"اِلٰهِیْ عَبْدُکَ الْاٰبِقُ رَجَعَ اِلَیْکَ وَ عَبْدُکَ الْعَاصِیْ رَجَعَ اِلَی الصُّلْحِ وَ عَبْدُکَ الْمُذْنِبُ اَتَاکَ بِالْعُذْرِ فَاعْفُ عَنِّیْ بِجُوْدِکَ وَ تَقَبَّلْنِیْ بِفَضْلِکَ وَ انْظُرْ اِلَیَّ بِرَحْمَتِکَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا سَلَفَ مِنَ الذُّنُوْبِ وَ اعْصِمْنِیْ فِیْمَا بَقِیَ مِنَ الْاَجَلِ فَاِنَّ الْخَیْرَ کُلَّهٗ بِیَدَیْکَ وَ اَنْتَ بِنَا رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ"

मौला ! तेरा भागा हुवा बन्दा तेरे दर पर वापस आ गिरा है, तेरा नाफ़रमान बन्दा सुल्ह़ की त़रफ़ लौट आया है और तेरा गुनहगार बन्दा **उ़ज़्र ख़्वाही**[1] के लिये तेरे दरबार में ह़ाज़िर है, मुझे अपने करम से बख़्श दे और मुझे क़बूल फ़रमा ले और मुझ पर नज़रे रह़मत फ़रमा, या इलाही ! मेरे गुज़श्ता तमाम गुनाह बख़्श दे और बाक़ी उ़म्र में हर गुनाह से मुझे मह़फ़ूज़ रख । तू ही हर भलाई का मालिक है और तू ही हम पर मेहरबान और नर्मी फ़रमाने वाला है ।

फिर येह दुआ़ करे जिसे दुआ़ए शिद्दत कहते हैं वोह दुआ़ येह है :

"یَا مُجَلِّیَ عَظَائِمِ الْاُمُوْرِ یَا مُنْتَهٰی هِمَّةِ الْمَهْمُوْمِیْنَ یَا مَنْ اِذَا اَرَادَ اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ کُنْ فَیَکُوْنُ اَحَاطَتْ بِنَا ذُنُوْبُنَا اَنْتَ الْمَذْخُوْرُ لَهَا یَا مَذْخُوْرَ الْکُلِّ شِدَّةٍ کُنْتُ اَدَّخِرُکَ لِهٰذِهِ السَّاعَةِ فَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ"

ऐ मुश्किलात को ह़ल करने वाले ! ऐ ग़मनाक और परेशान ह़ाल लोगों की जाए पनाह ! ऐ वोह क़ादिर ज़ात जिस की शान येह है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमा ले तो लफ़्ज़े **कुन**[2] फ़रमाने से वोह शै वुजूद में आ जाती है । हमारा ह़ाल येह है कि कसरते मआ़सी ने हम को घेर लिया है, तू इन सब को जानता है, ऐ हर मुसीबत व सख़्ती को जानने वाले ! **मैं इस घड़ी के लिये तुझे ही याद रखता हूं**[3] तू मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे, बेशक तू ही तौबा क़बूल फ़रमाने वाला और मेहरबान है ।

फिर जितना ज़ियादा रो सको, रोओ और अपनी ज़िल्लत व आ़जिज़ी का इज़्हार करो और ज़बान से येह दुआ़ करो :

---

1 मा'ज़िरत चाहने । 2 हो जा । 3 यहां अ़रबी दुआ़ का एक जुमला तर्जमा होने से रह गया था, इस के तर्जमे के साथ रब्त़े कलाम की ख़ात़िर अगले जुमले का तर्जमा भी सियाक़ व सबाक़ के मुत़ाबिक़ कर दिया गया है । (इ़ल्मिय्या)

”يَا مَنْ لَّا يَشْغِلُهٗ شَانٌ عَنْ شَانٍ وَ لَا سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ يَا مَنْ لَا تَغَالِطُهٗ كَثْرَةُ الْمَسَائِلِ يَا مَنْ لَّا يَبْرَمُهٗ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ اَذِقْنَا بَرْدَ عَفْوِكَ وَحَلَاوَةَ مَغْفِرَتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ“

ऐ वोह ज़ात जिस को एक काम दूसरे काम से मश्ग़ूल नहीं रख सकता और न एक त़रफ़ सुनना दूसरे सुनने से बाज़ रख सकता है। ऐ वोह ज़ात जिसे मसाइल की कसरत मुग़ालते में नहीं डाल सकती और ऐ वोह ज़ात जिसे गिर्या व ज़ारी करने वालों का गिर्या बे चैन नहीं करता[1] हमें अपनी मुआ़फ़ी की ठन्डक पहुंचा और बख़्शिश की ह़लावत नसीब फ़रमा, ऐ सब से बेहतर रह़मत करने वाले हम पर रह़्म फ़रमा, बेशक तू सब कुछ कर सकता है।

इस दुआ़ के बा'द हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर दुरूद शरीफ़ भेजो और तमाम मोअमिनीन व मोअमिनात के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करो और **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُهٗ की त़रफ़ रुजूअ़ करो।

जब येह तमाम मुन्दरिजए बाला दुआ़एं, दरबारे ख़ुदावन्दी में गिर्या व ज़ारी और तौबा व इस्तिग़्फ़ार वग़ैरा पूरी त़रह़ कर लो तो बेशक तुम्हें تَوْبَةُ النَّصُوْح ह़ासिल हो गई और तुम गुनाहों से ऐसे पाक हो गए जैसे आज ही पैदा हुवे, अब तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला दोस्त बना लेगा और तुम्हें बहुत अज्रो सवाब अ़त़ा करेगा और तुम पर इतनी रह़मत व बरकत नाज़िल फ़रमाएगा जिस का बयान नहीं हो सकता। अब तुम्हें ह़क़ीक़ी अम्न व ख़लासी ह़ासिल हो गई और तुम **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब और गुनाहों की सज़ा से नजात पा गए और दुन्या व आख़िरत में गुनाहों की आफ़त से छूट गए और तुम्हारी तौबा की घाटी बिइज़्ने इलाही उ़बूर हो गई और **अल्लाह** ही अपने फ़ज़्लो एह़सान से हिदायत का मालिक है।

1 यहां एक जुमले के तर्जमे में कुछ तसामिह़ था जिसे दूर कर दिया गया है। (इल्मिय्या)

तीसरा बाब
तीसरी घाटी अ़वाइके़ अरबआ़ के बयान में

ऐ इ़बादत के त़ालिब ! तौबा के बा'द मवानेअ़ और रुकावटों को दूर करना भी तुझ पर लाज़िम और ज़रूरी है ताकि तेरी इ़बादत दुरुस्त और मक्बूल हो सके, हम पहले बयान कर चुके हैं कि मवानेअ़ चार हैं :

अव्वल : दुन्या और जो कुछ इस में है

इस रुकावट को दूर करने का येही त़रीक़ा है कि तू इस से **तजर्रुद**[1] और अ़लाहि़दगी इख़्तियार करे और दिल से इस की मह़ब्बत निकाल डाले । येह तजर्रुद और ज़ोह्द दो वजह से ज़रूरी है, एक तो इस लिये कि तू इ़बादत कसरत से कर सके और इस में दुरुस्ती पैदा हो सके क्यूंकि दुन्या की मश्ग़ूलिय्यत तेरे ज़ाहिरो बाति़न को इ़बादत से रोकेगी, ज़ाहिर को तो इस त़रह़ कि तू त़लबे दुन्या के लिये मारा मारा फिरता रहेगा और बाति़न को इस त़रह़ कि तेरे दिल में लम्ह़ा ब लम्ह़ा **तह़सीले दुन्या**[2] के इरादे और वस्वसे पैदा होते रहेंगे और येह इरादा और वस्वसा दोनों इ़बादत में रुकावट बनेंगे क्यूंकि दिल एक है तो जब वोह एक चीज़ के साथ मश्ग़ूल होगा तो इस की ज़िद के साथ उस वक़्त मश्ग़ूल नहीं हो सकता और दुन्या व आख़िरत की मिसाल दो सोकनों की सी है, अगर तुम एक

1 गोशा नशीनी । 2 दुन्या के हु़सूल ।

को खुश करोगे तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी और दुन्या व आख़िरत के दरमियान मग़रिब व मशरिक़ जितना फ़ासिला है, जितना एक के क़रीब होते जाओगे, दूसरी से दूर होते जाओगे।

हम ने येह जो कहा कि बन्दे का ज़ाहिर त़लबे दुन्या में मशग़ूल हो जाता है, इस का सुबूत मुन्दरिजए ज़ैल रिवायत से होता है जो ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) फ़रमाते है :

زَاوَلْتُ اَنْ اَجْمَعَ بَیْنَ الْعِبَادَۃِ وَ التِّجَارَۃِ فَلَمْ یَجْتَمِعَا فَاَقْبَلْتُ عَلَی الْعِبَادَۃِ وَ تَرَکْتُ التِّجَارَۃَ

मैं ने इ़बादत व तिजारत को जम्अ़ करने का तजरिबा किया लेकिन येह दोनों जम्अ़ न हो सकीं तो मैं ने इ़बादत को इख़्तियार किया और तिजारत को छोड़ दिया।

ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया :

"لَوْ کَانَتَا مُجْتَمِعَتَیْنِ لِاَحَدٍ غَیْرِیْ لَاجْتَمَعَتَا لِیْ لِمَا اَعْطَانِی اللّٰہُ سُبْحَانَہٗ مِنَ الْقُوَّۃِ وَ اللِّیْن"

अगर इ़बादत व तिजारत मेरे सिवा किसी और में इकठ्ठी हो सकतीं तो मुझे दोनों ज़रूर मिलतीं क्यूंकि मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने कुव्वत और नर्मी दोनों अ़त़ा फ़रमाई हैं।

तो जब मुआ़मला येह है कि दोनों का इजतिमाअ़ मुश्किल है तो फ़ना होने वाली (दुन्या) का नुक़्सान गवारा कर लो, मगर सलामती और हिफ़ाज़त वाली चीज़ या'नी आख़िरत को न छोड़ो, बाक़ी रहा बन्दे के बात़िन का दुन्या के साथ मशग़ूल होना तो इस का सुबूत उस रिवायत से मिलता है जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है, आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

مَنْ اَحَبَّ دُنْیَاہُ اَضَرَّ بِآخِرَتِہٖ وَ مَنْ اَحَبَّ اٰخِرَتَہٗ اَضَرَّ بِدُنْیَاہُ فَاٰثِرُوْا مَا یَبْقٰی عَلٰی مَا یَفْنٰی (1)

जिस ने दुन्या को पसन्द किया उस ने आख़िरत का नुक़्सान किया और जिस ने आख़िरत को पसन्द किया उस ने दुन्या का नुक़्सान किया तो उस को इख़्तियार करो जिस का नफ़्अ़ पाइदार और दाइमी है और उस को छोड़ दो जो सिर्फ़ चन्द दिन है।

इन गुज़श्ता रिवायात से तुझ पर येह बात वाज़ेह़ हो गई है कि जब तक तेरा ज़ाहिरो बातिन दुन्या के साथ मश्ग़ूल रहेगा कमाह़क़्क़ुहू इ़बादत नहीं हो सकेगी मगर जब तू दुन्या से बे रग़बत हो जाएगा और ज़ाहिर व बातिन को दुन्या से ख़ाली और फ़ारिग़ कर देगा तो तुझे कमाह़क़्क़ुहू इ़बादत बजा लानी नसीब हो जाएगी बल्कि ज़ाहिरी व बातिनी आ'ज़ा तेरे मुआ़विन व मददगार हो जाएंगे, ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا زَهَدَ فِی الدُّنْیَا اِسْتَنَارَ قَلْبُهٗ بِالْحِكْمَةِ وَ تَعَاوَنَتْ اَعْضَاؤُهٗ فِی الْعِبَادَةِ

जब बन्दा दुन्या से ज़ोह्द व बे रग़बती इख़्तियार करता है तो उस का क़ल्ब ह़िक्मत से मुनव्वर हो जाता है और उस के आ'ज़ा इ़बादत के सिलसिले में उस के मुआ़विन व मददगार बन जाते हैं।

अ़वाइक़े अरबआ़ को दूर करने की दूसरी वजह येह है कि अ़वाइक़ ख़त्म हो जाने के बा'द तुम्हारे आ'माले सालिह़ा की क़द्रो क़ीमत बढ़ जाएगी और इन की अ़ज़मत व मर्तबा ज़ियादा हो जाएगा, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि

رَكْعَتَانِ مِنْ رَجُلٍ عَالِمٍ زَاهِدٍ قَلْبُهٗ خَيْرٌ وَ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ جَلَّ جَلَالُهٗ مِنْ عِبَادَةِ الْمُتَعَبِّدِيْنَ اِلٰى اٰخِرِ الدَّهْرِ اَبَدًا سَرْمَدًا (2)

---

1 ......مسند امام احمد ، ۷ / ۱٦٥ ، حدیث : ۱۹۷۱۷ ۔

2 ......تفسیر روح البیان،سورۃ الکھف،تحت الایۃ:٦٥،٥/۲۷۰ ، بتغیر۔

ज़ाहिदो आ़बिद आ़लिम की दो रक्अ़त नमाज़ **अल्लाह** तआ़ला के हां तकल्लुफ़ (मशक़्क़त) से इबादत करने वालों की क़ियामत तक की इबादत से अफ़्ज़ल व आ'ला है।

तो जब दुन्या में ज़ोह्द और इस से अ़लाहिदगी इख़्तियार करने से इबादत की अ़ज़मत ज़ियादा होती है और इस में इस्तिक़ामत व कसरत नसीब होती है तो त़ालिबे इबादत पर लाज़िम है कि ज़ोह्दो तजर्रुद का रास्ता इख़्तियार करे।

सुवाल : ज़ोह्द के क्या मा'ना और इस की ह़क़ीक़त क्या है?

जवाब : उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक ज़ोह्द दो क़िस्म है :

﴾1﴿ ज़ोह्दे मक़्दूर ﴾2﴿ ज़ोह्दे ग़ैर मक़्दूर,

ज़ोह्दे मक़्दूर या'नी वोह ज़ोह्द जो बन्दे के इख़्तियार में है वोह तीन चीज़ों के मजमूए़ का नाम है :

(1) दुन्या की जो चीज़ पास न हो उस की त़लब न करे (2) जो मोजूद हो उस को राहे ख़ुदा में तक़्सीम कर दे (3) दुन्या की अश्या का इरादा और उन्हें पसन्द करना तर्क कर दे। जिस शख़्स में येह तीन सिफ़तें मौजूद हों वोह **ज़ाहिद** है।

लेकिन **ज़ोह्दे ग़ैर मक़्दूर** या'नी वोह जो बन्दे के इख़्तियार में नहीं, येह है कि उस का दिल दुन्यवी अश्या को ह़ासिल करने के शौक़ से सर्द पड़ जाए। ज़ोह्दे ग़ैर मक़्दूर, ज़ोह्दे मक़्दूर के ज़रीए़ ह़ासिल होता है क्यूंकि ज़ोह्दे मक़्दूर, ग़ैर मक़्दूर का ज़रीआ़ व सबब है, जो अश्या बन्दे के पास न हों जब उन की त़लब छोड़ दे और मौजूद अश्या को राहे ख़ुदा में बांट दे और सवाबे आख़िरत की निय्यत से दुन्या व अस्बाबे दुन्या की आफ़ात याद करते हुवे बन्दा

जब आइन्दा के लिये माले दुन्या के ह़ासिल करने का इरादा और इस की चाहत दिल से निकाल दे तो इस के ज़रीए़ दिल में दुन्या की त़लब सर्द पड़ जाएगी और दुन्या व अस्बाबे दुन्या की त़लब से दिल का सर्द पड़ जाना ही ह़क़ीक़ी ज़ोह्द है।

फिर येह जानना चाहिये कि ज़ोह्दे मक़दूर की तीसरी जुज़ या'नी त़लबे दुन्या का इरादा भी दिल से निकाल देना बहुत मुश्किल है क्यूंकि बहुत ऐसे हैं जो ऊपर ऊपर से तो तारिके दुन्या हैं मगर उन के दिलों में दुन्या की मह़ब्बत चुटकियां लेती रहती है, ऐसा शख़्स इसी कश्मकश में मुब्तला रहता है ह़ालांकि ज़ोह्द की अस्ल शान इस तीसरी जुज़ से ही पैदा होती है, क्या तुम ने **अल्लाह** बुलन्द व बुज़ुर्ग के येह इरशादात नहीं सुने :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًاؕ (پ ۲۰)[1]

हम आख़िरत का घर सिर्फ़ उन लोगों को अ़त़ा करेंगे जो दुन्या में सरकशी व फ़साद का इरादा तक नहीं करते।

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत में दाख़िले का हुक्म उन लोगों के लिये बताया है जो सरकशी व फ़साद का इरादा नहीं करते, उन के लिये नहीं बताया जो सरकशी व फ़साद त़लब नहीं करते या अ़मली त़ौर पर नहीं करते, एक मक़ाम पर फ़रमाया है :

مَنْ كَانَ یُرِیْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖۚ وَ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ حَرْثَ الدُّنْیَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ

जो शख़्स आख़िरत की खेती का इरादा रखता है हम उसे उस खेती की और ज़ियादा तौफ़ीक़ देते हैं और जो दुन्या की खेती का इरादा करे, हम

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद। (پ ۲۰، القصص: ۸۳)

مِنۡ نَّصِيۡبٍ ﴿۲۰﴾ (پ ۲۵)(1)

उसे कुछ दे देते हैं मगर आख़िरत में उस का कोई हिस्सा नहीं रहता।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ فِيۡهَا مَا نَشَآءُ (پ ۱۵)(2)

जो शख़्स इस दुन्या को चाहे हम उस को अपनी मशिय्यत के मुताबिक़ इस से कुछ दे देते हैं।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

مَنۡ اَرَادَ الۡاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعۡيَهَا (پ ۱۵،بنی اسرائیل)(3)

जिस ने आख़िरत को चाहा और उस के लिये कोशिश की।

तो तुम इन तमाम मुन्दरिजए बाला आयात का मुत़ालआ़ नहीं करते कि इन तमाम में इरादे की त़रफ़ इशारा किया गया है तो मा'लूम हुवा कि इरादा एक बहुत बड़ी चीज़ है लेकिन जब इन्सान पहली दो चीज़ों (या'नी मौजूद माल राहे ह़क़ में सदक़ा करना और ग़ैर मौजूद की त़लब से बे नियाज़ होना) पर **अ़ज़्म व इस्तिक़लाल**[4] से अ़मल शुरूअ़ कर दे तो उम्मीद है कि रब तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से त़लबे दुन्या के इरादे को भी कुल्ली त़ौर पर दिल से निकाल दे क्यूंकि

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं। (پ۲۵، الشورٰی:۲۰)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो येह जल्दी वाली चाहे हम उसे इस में जल्द दे दें जो चाहें। (پ ۱۵، بنی اسرایل:۱۸)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे। (پ ۱۵، بنی اسرایل:۱۹)

4 मुस्तक़िल मिज़ाजी।

वोह ज़ात निहायत फ़ज़्लो करम फ़रमाने वाली है, फिर जिस चीज़ से राहे ख़ुदा में माल लगाने और तर्के दुन्या पर मदद मिलती है और जो शै इस सिलसिले में आसानी का बाइस है वोह येह है कि आफ़ाते दुन्या और इस के उ़यूब को ज़ेह्न में दोहराया जाए।

मज़म्मते दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ मशाइख़ رَحِمَهُمُ الله के बहुत अक़्वाल हैं, चुनान्चे, बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) ने फ़रमाया है :

تَـرَكْتُهَـا لِقِلَّةِ غَنَائِهَا وَسُرْعَةِ فَنَائِهَا وَخِسَّةِ شُرَكَائِهَا

मेरे दुन्या से मुतनफ़्फ़िर होने की वजह येह है कि वोह थोड़ा वक़्त इन्सान को दौलतमन्द करती है और जल्द ही फ़ना हो जाती है और जितने इस के त़ालिब हैं सब ख़सीस और कमीने हैं।

मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है कि मुन्दरिजए बाला क़ौल से भी दुन्या के साथ तअ़ल्लुक़ की बू आती है क्यूंकि जो शख़्स किसी शै से जुदाई का शिकवा करता है वोह दर ह़क़ीक़त उस के विसाल का आरज़ू मन्द होता है, इसी त़रह़ जो शख़्स किसी शै से इस बिना पर अ़लाह़िदगी इख़्तियार करता है कि इस में और भी शरीक हैं वोह दर ह़क़ीक़त इस अम्र का ख़्वाहिशमन्द होता है कि काश मैं अकेला ही इस का मालिक होता, इस लिये मज़म्मते दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ ज़ियादा दुरुस्त वोही है जो मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है, आप ने फ़रमाया : اَلدُّنْيَا عَدُوٌّ لِّلّٰهِ وَاَنْتَ مُحِبُّهٗ وَمَنْ اَحَبَّ اَحَدًا اَبْغَضَ عَدُوَّهٗ दुन्या ख़ुदा की दुश्मन है और तू ख़ुदा का दोस्त है और क़ाइदा है कि जो किसी को दोस्त रखता हो वोह अपने दोस्त के दुश्मन को भी अपना दुश्मन समझता है।

मेरे शैख़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने येह भी फ़रमाया :

لِاَنَّ الدُّنْیَا فِیْ اَصْلِھَا وَسِخَۃٌ جِیْفَۃٌ اَلَا تَرٰی اِنْ اٰخِرِھَا اِلَی الْقَذَرِ وَ الْفَسَادِ وَ
التَّـلَاشِیْ وَ الْاِضْمِحْلَالِ وَ النَّفَادِ لٰکِنَّھَا ضُمِّخَتْ بِطِیْبٍ وَطُوِیَتْ بِزِیْنَۃٍ

क्यूंकि येह दुन्या दर ह़क़ीक़त मैले कुचेले मुर्दार की मानिन्द है, तुम देखते नहीं कि इस के लज़ीज़ खाने थोड़ी देर में बदबूदार गन्दगी बन जाते हैं और अन्जामे कार इस की जै़बो ज़ीनत वाली चीजे़ं ख़राब, पज़मुर्दा और फ़ना व मा'दूम हो जाती हैं मगर इस के ज़ाहिर को ख़ुश्बूदार और मुज़य्यन कर दिया गया है।

तो ग़ाफ़िल इस के ज़ाहिर को देख कर इस के धोके में आ गए मगर दाना लोगों ने इस से कनारा कशी इख़्तियार की।

सुवाल : क्या ज़ोह्द इख़्तियार करना फ़र्ज़ है या नफ़्ल ?

जवाब : मशाइख़े अहले सुन्नत (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِم) के नज़्दीक ज़ोह्द दो चीज़ों से होता है, एक ह़राम से, दूसरा ह़लाल से। ह़राम अश्या से ज़ोह्द फ़र्ज़ है और ह़लाल से मुस्तह़ब। फिर जिन लोगों को त़ाअ़ात व इ़बादात में इस्तिक़ामत ह़ासिल है उन के नज़्दीक ह़राम एक नज्स और मुर्दार चीज़ की त़रह़ है ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर इस के इस्ति'माल की ज़रूरत पेश आए तो बहुत मा'मूली और ब क़दरे ज़रूरत इस्ति'माल करने की शरअ़न इजाज़त है मगर अबदाल व कामिलीन के नज़्दीक ह़लाल भी ज़रूरत से ज़ाइद इस्ति'माल करना मुर्दार की मानिन्द है, वोह ह़लाल भी ब क़दरे ज़रूरत व ह़ाजत ही इस्ति'माल करते हैं बाक़ी रहा ह़राम तो वोह उन के नज़्दीक आग की मानिन्द है इस के इस्ति'माल का उन्हें वहम तक नहीं आता। दिल के दुन्या से निकल जाने का येही मत़लब है कि त़लबे दुन्या के परागन्दा ख़यालों से दिल पाक व साफ़ हो जाए और यहां तक कि दुन्या की नफ़रत दिल में जा गुज़ीं हो जाए कि वोह इसे सख़्त गन्दी और मकरूह शै समझने

लगे यहां तक कि त़लबे दुन्या का कोई **दाइया**[1] दिल में न रहे।

सुवाल : येह कैसे हो सकता है कि अ़जीब अ़जीब शहवतों और लज़्ज़तों से आरास्ता पेरास्ता दुन्या को इन्सान आग या एक गन्दे मुर्दार की त़रह़ समझने लगे ख़ास कर हम जैसे कमज़ोर ख़िल्क़त और ज़ईफ़ त़बीअ़त तो बिल्कुल ऐसे नहीं हो सकते।

जवाब : **अल्लाह** तआ़ला जिस इन्सान को अपनी ख़ास तौफ़ीक़ से नवाज़ता है और जो आफ़ाते दुन्या से वाक़िफ़ व आगाह हो जाता है तो दुन्या उसे ऐसी ही ह़क़ीर व ज़लील मा'लूम होती है मगर जो बे वुक़ूफ़ इस के उ़यूब और इस की आफ़ात से अन्धा रहे और इस की ज़ाहिरी ज़ीनत (टीप-टॉप) से **फ़रेब ख़ुर्दा**[2] हो वोह दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ ऐसे तसव्वुर से तअ़ज्जुब ही करता है और वोह दुन्या को ह़क़ीर व ज़लील समझना नामुमकिन ख़याल करता है। मैं एक ऐसी मिसाल देता हूं जिस से दुन्या की ह़क़ीक़त तुम पर रोशन और वाज़ेह़ हो जाएगी :

एक शख़्स पूरी अश्या डाल कर नफ़ीस और उ़म्दा ह़ल्वा तय्यार करे मगर तय्यार करने के बा'द उस में ज़हरे क़ातिल का एक क़त़रा डाल दे, ज़ह्‌र डालते वक़्त एक शख़्स तो देख रहा था मगर दूसरा इस से बे ख़बर था जब दोनों के सामने वोह बेहतरीन और उ़म्दा ह़ल्वा खाने के लिये रखा जाएगा तो जिसे ज़ह्‌र की मिलावट का इ़ल्म है वोह हरगिज़ इस के खाने की त़रफ़ राग़िब नहीं होगा बल्कि खाने का ख़याल भी नहीं करेगा और उस के नज़दीक येह ह़ल्वा पेट में आग डालने से भी ज़ियादा मुश्किल होगा क्यूंकि वोह इस की अन्दरूनी आफ़त से वाक़िफ़ है वोह इस की ज़ाहिरी उ़म्दगी और नफ़ासत से धोके में नहीं आएगा मगर दूसरा शख़्स जिसे आमेज़िशे ज़ह्‌र का इ़ल्म नहीं वोह इस की ज़ाहिरी उ़म्दगी व नफ़ासत से फ़रैब में आ जाएगा

1 ख़्वाहिश। 2 फ़रेब में मुब्तला।

वोह हिर्स व लालच से ह़ल्वे पर टूट पड़ेगा और अपने साथी पर उस ह़ल्वे से नफ़रत की वजह से तअ़ज्जुब करेगा बल्कि उसे अह़मक़ और बे वुक़ूफ़ ख़याल करेगा। दुन्या की ह़राम अश्या भी बिऐ़निही इसी त़रह़ हैं जो अहले बसीरत इस्तिक़ामत के साथ शरीअ़ते ह़क़्क़ा के रास्ते पर गामज़न हैं वोह तो इस से सख़्त मुतनफ़्फ़िर हैं मगर ह़राम के नुक़्सानात से बे ख़बर लोग इस पर फ़िदा हो रहे हैं।

और अगर ह़ल्वा तय्यार करने वाले ने इस में ज़ह्‌र की मिलावट न की हो बल्कि इस में थूक दिया हो या नाक साफ़ की हो और इस थूक वग़ैरा को ह़ल्वे में मिला कर ऊपर से अच्छी त़रह़ दुरुस्त कर दिया हो तो जो आदमी इस कारवाई को देख रहा हो वोह तो इस ह़ल्वे से कराहत और नफ़रत का इज़्हार करेगा और सिवाए अशद्द ज़रूरत के इसे खाने पर रिज़ामन्द नहीं होगा लेकिन जो शख़्स मज़्कूरा कारवाई से नावाक़िफ़ होगा वोह इस की उ़म्दगी और नफ़ासत से मुतअस्सिर हो कर ख़ुशी ख़ुशी सब चट कर जाएगा बल्कि इस पर फ़रह़त व पसन्दीदगी का इज़्हार करेगा।

येह दुन्या के ह़लाल की मिसाल है जो अहले बसीरत व इस्तिक़ामत हैं वोह तो इसे सिर्फ़ ब क़दरे ह़ाजत इस्ति'माल में लाते हैं मगर अहले ग़फ़्लत इसे मन्न व सल्वा की त़रह़ उड़ाते हैं, देखिये यहां दोनों क़िस्म के लोगों की ख़िल्क़त व त़बीअ़त तो बराबर है मगर इ़ल्म व बसीरत, **जहालत व ख़िफ़ा**[1] की वजह से दोनों के अफ़्आ़ल में कितना फ़र्क़ है? अगर उस जाहिल व नावाक़िफ़ को आमेज़िशे ज़ह्‌र का इ़ल्म होता तो ज़रूर वोह इस से इजतिनाब करता और अगर उस वाक़िफ़ आदमी को मज़्कूरा आमेज़िश का पता न होता तो वोह इस बेख़बर शख़्स की त़रह़ बिला तवक़्क़ुफ़

---

1 पोशीदा होने।

सब ह़ल्वा हड़प कर जाता। तुम्हें इस बयान कर्दा मिसाल से अच्छी त़रह़ मा'लूम हो गया कि येह फ़र्क़ त़बीअ़त व ख़िल्क़त की वजह से नहीं बल्कि इ़ल्म व बसीरत की बिना पर है येह फ़र्क़ एक ठोस और पुख़्ता चीज़ है हर बा इन्साफ़ और अ़क़्लमन्द इस की दुरुस्ती का ए'तिराफ़ करेगा। और **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से हिदायत व तौफ़ीक़ का मालिक है।

सुवाल : कुछ न कुछ दुन्या का होना तो ज़रूरी है जिस से हमारी और हमारे अहलो इ़याल की ज़िन्दगी क़ाइम रह सके तो दुन्या से कुल्ली त़ौर पर अ़लाह़िदगी कैसे हो सकती है?

जवाब : ज़ोह्द से मक़्सूद येह है कि फ़ुज़ूल, ज़ाइद और ग़ैर ज़रूरी अश्या से इजतिनाब किया जाए ग़रज़ येह कि सिर्फ़ इस क़दर त़ाक़त व क़ुदरत मौजूद रहे जिस से इ़बादत व त़ाअ़ते ख़ुदावन्दी अदा हो सके, मह़ज़ खाना पीना और **लज़्ज़तगीर होना**[1] मक़्सूद न हो और ख़ुदा तआ़ला को इस पर भी क़ुदरत है कि तुम्हें सबब व ज़रीए़ से ज़िन्दा रखे या बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के, जैसे मलाइका कि इन माद्दी अस्बाब व ज़राएअ़ के बिग़ैर ही ज़िन्दा हैं। ख़ुदा तआ़ला को इस की भी त़ाक़त है कि तुम्हें तुम्हारे पास मौजूद शै के ज़रीए़ ज़िन्दा रखे या ऐसी शै मुहय्या फ़रमा दे जिस का तुम्हें वहम व गुमान तक न हो, जैसा कि रब तआ़ला ने एक जगह फ़रमाया :

وَمَنۡ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجۡعَلۡ لَّهٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ ؕ (2)

*जो तक़्वा व परहेज़गारी की राह इख़्तियार करे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे उस जगह से रोज़ी देता है जहां का उसे वहम व गुमान भी नहीं होता।*

---

(1) लज़्ज़त ह़ासिल करना। (2) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो। (پ۲۸، الطلاق:۲،۳)

इस लिये अगर तुम तक़्वा पर कारबन्द हो जाओ तो तुम्हें **बक़ाए ह़यात**[1] के लिये त़लबे दुन्या वग़ैरा की ह़ाजत नहीं और अगर ज़ोह्द का येह दरजा तुम्हें ह़ासिल न हो तो ज़ादे आख़िरत और तक़्वा की निय्यत से तलाश करो शहवत और लज़्ज़त की ग़रज़ से तलाश न करो क्यूंकि जब तुम्हारी निय्यत नेक होगी तो येह त़लब आख़िरत में ही शुमार होगी और इस त़रह़ तुम्हारे ज़ोह्द में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा, इस मज़्कूरा बयान को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन करो । وَبِاللّٰہِ التَّوْفِیْق

दूसरी रूकावट : मख़्लूक़ से मेल जोल

फिर मख़्लूक़ से अ़लाह़िदगी और **उ़ज़्लत**[2] भी लाज़िम है और इस के दो सबब हैं :

एक येह कि तुम मेल जोल में मुब्तला हो कर इ़बादत से मह़रूम हो जाओगे, एक बुज़ुर्ग (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं कि मैं एक जमाअ़त के पास से गुज़रा जो बह़सो मुबाह़सा में मश्ग़ूल थी और एक शख़्स उन से थोड़ी दूर हट कर अकेला बैठा हुवा था, मैं ने उस के क़रीब जा कर उस से गुफ़्त्गू करनी चाही तो उस ने जवाब दिया : “मैं ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहने को तेरे साथ गुफ़्त्गू करने से ज़ियादा मह़बूब समझता हूं ।” मैं ने कहा : तुम यहां अकेले बैठे हुवे हो ? तो उस ने कहा : “मैं अकेला नहीं बल्कि मेरे साथ एक मेरा रब है और दो **किरामन कातिबीन**[3] हैं ।”

---

1 ज़िन्दगी गुज़ारने । 2 गोशा नशीनी । 3 आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते ।

इस के बा'द मैं ने उस से सुवाल किया बह्‌सो मुबाह़सा करने वालों में बेहतर कौन है ? तो उस ने जवाब दिया : "जिस को ख़ुदा ने बख़्श दिया हो।" मैं ने पूछा : सीधी राह कौन सी है ? तो उस ने हाथ से आस्मान की त़रफ़ इशारा किया और खड़ा हो कर चल पड़ा। चलते वक़्त वोह येह कह रहा था : "ऐ **अल्लाह** ! तेरी अकसर मख़्लूक़ मुझे तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रखने की कोशिश करती है।"

तो मा'लूम हुवा कि मख़्लूक़ के साथ तअ़ल्लुक़ात इबादत से ग़ाफ़िल कर देते हैं बल्कि इबादत से रोक देते हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात हलाकत और बुराई में डाल देते हैं, जैसा कि ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया :

"मैं ने मख़्लूक़ से पांच चीज़ें त़लब कीं मगर न मिल सकीं, मैं ने उन से कहा : ज़ोहद व त़ाअ़त मेरे लिये मुहय्या करो, मगर वोह न कर सके। मैं ने कहा : ज़ोहद व त़ाअ़त में मेरी **इआ़नत**[1] ही करो, मगर वोह इआ़नत भी न कर सके। मैं ने कहा : अगर ज़ोहद व त़ाअ़त के लिये तुम से किनाराकशी करूं तो नाराज़ न होना, मगर वोह किनाराकशी पर नाराज़ हो गए। मैं ने कहा : ज़ोहद व त़ाअ़त के ह़ासिल करने में तुम रुकावट न बनना, मगर वोह रोकने से बाज़ न आए। **अख़ीर**[2] मैं ने कहा : मुझे ख़ुदा की नाफ़रमानी की त़रफ़ तो न बुलाओ, मगर उन्हों ने मेरी इस बात को भी तस्लीम न किया। जब लोगों से मेरी कोई मुराद भी पूरी न हुई तो मैं उन से किनाराकश हो गया और इस्लाहे़ नफ़्स में मश्ग़ूल हो गया।"

---

1 मदद। 2 आख़िर।

ऐ अ़ज़ीज़ ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गोशा नशीनी की ह़क़ीक़त, गोशा नशीनी के ज़माने और उस ज़माने के लोगों की वज़ाह़त फ़रमा दी है और हुक्म दिया है कि जब वोह वक़्त और ज़माना आए तो मख़्लूक़ से यक्सर किनाराकश हो जाना वरना तुम्हारा दीन तबाह और आख़िरत बरबाद हो जाएगी और येह वाज़ेह़ है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मत के **मसालेह़**[1] हम से ज़ियादा जानते थे और आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हम से ज़ियादा हमारे ख़ैर ख़्वाह थे, तो अगर तुम वोह ज़माना पाओ जिस में आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने उ़ज़्लत का हुक्म दिया है तो आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के हुक्म की ज़रूर ता'मील करो और आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नसीह़त पर अ़मल करो और ऐसा वहम भी न करो कि हम अपनी भलाइयों को हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से बेहतर जानते हैं और उ़ज़्लत व गोशा नशीनी के तर्क के लिये **लचर**[2] व बेहूदा तावीलात न करो और **रक़ीक़**[3] ह़ीलों के ज़रीए़ अपने दिल को न बहलाओ, अगर इस नाज़ुक वक़्त में हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इरशाद की ता'मील नहीं करोगे तो हलाक व बरबाद हो जाओगे और आख़िरत में तुम्हारा कोई उ़ज़्र नहीं सुना जाएगा।

एक मश्हूर ह़दीस में जो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, गोशा नशीनी के वक़्त की तशरीह़ कर दी है, चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ हम हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। फ़ितनों का ज़िक्र हो रहा था तो आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

---

1 फ़ाइदे। 2 बे मा'ना। 3 मा'मूली।

"اِذَا رَاَيْتُمُ النَّاسَ مَرَجَتْ عُهُوْدُ هُمْ وَ خَفَّتْ اَمَانَتُهُمْ وَكَانُوْا هٰكَذَا وَ شَبَّكَ بَيْنَ اَصَابِعِهٖ فَالْزِمْ بَيْتَكَ وَ اَمْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ وَ خُذْ مَا تَعْرِفُ وَ دَعْ مَا تُنْكِرُ وَعَلَيْكَ بِاَمْرِ الْخَاصَّةِ وَ دَعْ عَنْكَ اَمْرَ الْعَامَّةِ"(1)

जब तुम देखो कि लोग वा'दा ख़िलाफ़ी में मुब्तला हो जाएं और अमानत में ख़यानत करने लगें और लोगों में बेजा **इख़्तिलात़**(2) बढ़ जाए (और बेजा इख़्तिलात़ का तज़्किरा करते हुवे आप ने दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरी में डाल दीं) तो उस वक़्त शदीद ज़रूरत के बिग़ैर घर से बाहर न निकल, अपनी ज़बान पर कन्ट्रोल कर, नेक काम इख़्तियार कर, बुराई से इजतिनाब कर, उ़ज़्लत को अपने ऊपर लाज़िम पकड़ और मेल जोल से पूरी त़रह़ **एह़तिराज़**(3) कर।

एक और ह़दीस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़मानए उ़ज़्लत की येह निशानी बयान फ़रमाई है : ذٰلِكَ اَيَّامُ الْهَرْجِ या'नी उस वक़्त गोशा नशीनी लाज़िम है जब **हर्ज** आ़म हो। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : **हर्ज** से क्या मुराद है ? तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपने हमनशीन से बे ख़ौफ़ और मुत़मइन न हो।(4)

और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से

---

1 ......سنن ابی داوٗد، کتاب الملاحم، باب الامر والنہی، ٤/١٦٥، حدیث: ٤٣٤٣، بتغیر۔
2 मेल जोल। 3 परहेज़।
4 ......البحر الزخار، ٤/٢٧٦، الجزء الخامس عشر، حدیث: ١٤٤٤، بتغیر۔

एक ह़दीस मरवी है कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ह़ारिस**[1] बिन अ़मीरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को फ़रमाया :

"اِنْ يُّدْفَعْ عَنْ عُمُرِكَ فَسَيَاْتِي عَلَيْكَ زَمَانٌ كَثِيْرٌ خُطَبَائُهٗ قَلِيْلٌ عُلَمَائُهٗ كَثِيْرٌ سُؤَّالُهٗ قَلِيْلٌ مُعْطُوْهُ الْهَوٰى فِيْهِ قَاعِدُ الْعِلْمِ"

अगर तेरी उ़म्र ने वफ़ा की तो तू ऐसा ज़माना पाएगा जिस में ख़त़ीब बहुत होंगे लेकिन जामेअ़ आ़लिम कम होंगे गदागर बहुत होंगे लेकिन उन्हें देने वाले बहुत कम होंगे और इ़ल्म ख़्वाहिशात के ताबेअ़ हो जाएगा।

ह़ज़रते ह़ारिस[2] बिन अ़मीरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अ़र्ज़ किया : ऐसा ज़माना कब आएगा ? तो आप (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

"اِذَا اُمِيْتَتِ الصَّلٰوةُ وَ قُبِلَتِ الرِّشَاءُ وَ يُبَاعُ الدِّيْنُ بِعَرَضٍ يَسِيْرٍ مِنَ الدُّنْيَا فَالنَّجَاءَ اَلنَّجَاءَ ثُمَّ وَيُحَكَ النَّجَاءَ"

जब नमाज़ों की परवाह नहीं होगी, रिश्वत का लैन दैन आ़म होगा और दीनो मज़्हब ह़क़ीर दुन्या के इ़वज़ फ़रोख़्त कर दिया जाएगा, ऐसे वक़्त में बचना। आप (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने "बचने" का लफ़्ज़ तीन बार दोहराया।

मैं कहता हूं : हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने ज़मानए उ़ज़्लत की जो अ़लामात बताई हैं वोह सब की सब हमारे ज़माने में मौजूद हैं। (इमाम साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पांच सो हिजरी की ह़ालत बयान कर रहे हैं, आज चौदहवी सदी का **अख़ीर**[3] है। इस में उ़ज़्लत

---

1. यहां लफ़्ज़ "ह़रस" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "**ह़ारिस**" है लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (**इ़ल्मिय्या**)
2. ऐज़न। 3. आख़िर। 4. गोशा नशीनी।

गुज़ीनी[4] की अहम्मिय्यत व ज़रूरत का खुद अन्दाज़ा लगा लो)।

फिर सलफ़े सालिहीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ऐसे ख़राब वक़्त के लोगों से अ़लाहि़दा रहने की सख़्त ताकीद फ़रमाते थे वोह खुद तमाम उ़म्र मेल जोल और इख़्तिलात़ से किनाराकश रहे और दूसरों को इस की ताकीद फ़रमाते रहे। बिला शुबा वोह लोग हम से कहीं ज़ियादा साहि़बे बसीरत थे उन के बा'द का ज़माना उन के ज़माने से बेहतर नहीं बल्कि दीनी ए'तिबार से ज़ियादा तल्ख़ और ख़राब है।

ह़ज़रते युसूफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه खुदा की क़सम खा कर कहा करते थे कि हमारे ज़माने में गोशा नशीनी जाइज़ हो गई हैं, मैं (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) कहता हूं अगर उन के ज़माने में जाइज़ थी तो हमारे ज़माने में फ़र्ज़ हो गई है। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) से येह भी मन्क़ूल है कि आप ने ह़ज़रते अ़ब्बाद अल ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुन्दरिजए ज़ैल ख़त़ लिखा :

"اَمَّا بَعْدُ! فَاِنَّكَ فِيْ زَمَانٍ كَانَ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَوَّذُوْنَ بِاللّٰهِ مِنْ اَنْ يُدْرِكُوْهُ فِيْمَا بَلَغَنَا وَلَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَيْسَ لَنَا فَكَيْفَ بِنَا حِيْنَ اَدْرَكْنَاهُ عَلٰى قِلَّةِ عِلْمٍ وَقِلَّةِ صَبْرٍ وَ قِلَّةِ اَعْوَانٍ عَلَى الْخَيْرِ وَكَدَرٍ مِنَ الدُّنْيَا وَفَسَادٍ مِنَ النَّاسِ فَاِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: فِى الْعُزْلَةِ رَاحَةٌ مِنْ خُلَطَاءِ السُّوْءِ"

اَمَّا بَعْد ! तू ऐसे ज़माने में है जिस से हु़ज़ूर के सह़ाबा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) पनाह मांगते थे, ह़ालांकि वोह हम से ज़ियादा

आ़लिम थे। अब हमारा क्या ह़ाल होगा जब कि हम इसी ख़त़रनाक ज़माने में हैं और फिर हम इ़ल्म में उन से कम हैं, सब्र में कम हैं और नेकी पर इआ़नत करने वाले भी अब कम हैं और दुन्या ब निस्बत उस वक़्त के इस वक़्त ज़ियादा ख़राब है और लोगों में फ़साद भी ज़ियादा आ गया है, इसी लिये ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **"बुरे हमनशीन से किनाराकशी में राह़त है।"**

येह मुन्दरिजए ज़ैल अ़रबी अश्आ़र भी इसी सिलसिले में कहे गए हैं :

(١) هٰـذَا الزَّمَانُ الَّـذِیْ کُنَّا نُحَاذِرُہٗ　　فِیْ قَوْلِ کَعْبٍ وَ فِیْ قَوْلِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ

(٢) دَهْرٌ بِهٖ اَلْحَقُّ مَرْدُوْدٌ بِاَجْمَعِهٖ　　وَالظُّلْمُ وَالْبَغْیُ فِیْهِ غَیْرُ مَرْدُوْدٌ

(٣) اَعْمٰی اَصَمُّ مِنَ الْاَزْمَانِ مُلْتَبِسٌ　　فِیْهِ لِاِبْلِیْسَ تَصْوِیْبٌ تَصْعِیْدٌ

(٤) اِنْ دَامَ هٰذَا وَلَمْ یَحْدُثْ لَهٗ غَیْرٌ　　لَمْ یُبْکَ مَیِّتٌ وَلَمْ یُفْرَحْ بِمَوْلُوْدٍ

तर्जमा : (1) हमारा येह ज़माना वोही है जिस से हमें ह़ज़रते का'ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) व ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के क़ौल में डराया गया है।

(2) येह ऐसा ज़माना है जिस में ह़क़ मर्दूद है और ज़ुल्म व बग़ावत मक़्बूल व मह़बूब है।

(3) इस वक़्त दीन से अन्धे और बहरे मुसलमानों में मिल गए हैं और इस वक़्त इब्लीस को सच्चा और बुलन्द ख़याल कहा जाता है।

(4) अगर इस ज़माने की नाज़ुक ह़ालत येही रही और इस में कोई बेहतर तब्दीली रूनुमा न हुई तो इस के मरने वालों पर न इज़्हारे अफ़्सोस लाइक़ होगा और न नए पैदा होने वालों पर इज़्हारे मसर्रत मुनासिब होगा।

और मैं (इमाम ग़ज़ाली رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ने सुना है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ने ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) से कहा : मुझे कोई नसीह़त कीजिये, तो आप (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ने फ़रमाया : اَقْلِلْ مِنْ مَعْرِفَةِ النَّاسِ या'नी लोगों से मेल जोल और तआ़रुफ़ कम रख। तो सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने कहा : **अल्लाह** आप पर रह़्म करे, ह़दीस में तो आया है : اَكْثِرُوْا مِنْ مَّعْرِفَةِ النَّاسِ فَاِنَّ لِكُلِّ مُؤْمِنٍ شَفَاعَةً[1] या'नी लोगों से तआ़रुफ़ बढ़ाओ क्यूंकि हर वाक़िफ़ मोमिन दूसरे मोमिन की शफ़ाअ़त करेगा।

तो ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इस के जवाब में फ़रमाया : मेरा ग़ालिब गुमान येही है कि तुझे जो तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंची होगी वोह किसी वाक़िफ़ कार ही से पहुंची होगी। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने येह अल्फ़ाज़ कहे और फ़ौत हो गए, सुफ़्यान बिन उ़यैना (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) कहते हैं कि मैं ने आप को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा कि आप (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ हैं, मैं ने अ़र्ज़ किया कि कोई नसीह़त कीजिये तो आप (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ने फ़रमाया :

اَقْلِلْ مِنْ مَعْرِفَةِ النَّاسِ مَا اسْتَطَعْتَ فَاِنَّ التَّخَلُّصَ مِنْهُمْ شَدِيْدٌ

जहां तक हो सके लोगों से तआ़रुफ़ व वाक़िफ़िय्यत कम रख क्यूंकि मख़्लूक़ से इख़्तिलात़ से ख़लासी पाना सख़्त मुश्किल है। एक अ़रबी शाइ़र ने इस मज़्मून को इस तरह़ अदा किया है :

(١) وَ مَا زِلْتُ مُذْ لَاحَ الْمَشِيْبُ بِمَفْرِقِيْ   اُفَتِّشُ عَنْ هٰذَا الْوَرٰى وَاُكَشِّفُ

(٢) فَمَا اَنْ عَرَفْتُ النَّاسَ اِلَّا ذَمَمْتُهُمْ   جَزَى اللّٰهُ خَيْرًا كُلَّ مَنْ لَسْتُ اَعْرِفُ

---

1 ......فردوس الاخبار، ذكر الاحاديث التى امرها النبى...الخ، ١/٥٧، حديث: ٢١٩، بتغير۔

(۳)وَمَالِی ذَنْبٌ اَسْتَحِقُّ بِهِ الْجَفَاء سِوَی اَنَّنِیْ اَحْبَبْتُ مَنْ لَیْسَ یُنْصِفُ

(1) मैं लोगों के ह़ालात की तफ़्तीश और उन से तआ़रुफ़ पैदा करने में मसरूफ़ रहा यहां तक कि मैं बुढ़ापे की उ़म्र को पहुंच गया।
(2) तो मेरी जिन से भी वाक़िफ़िय्यत हुई मैं ने उन की बुराई ही की, अल्लाह तआ़ला उन को नेक जज़ा दे जिन को मैं नहीं जानता।
(3) वोह ग़लत़ी जिस के बाइ़स मैं ज़ियादा क़ाबिले मज़म्मत हूं येही है कि मैं ने उन को दोस्त बनाया जो इन्साफ़ व वफ़ा से ना आश्ना थे।

एक मकान के दरवाज़े पर येह अल्फ़ाज़ तह़रीर थे :

جَزَی اللّٰهُ مَنْ لَّا یَعْرِفُنَا خَیْرًا وَّ لَا جَزَی بِذٰلِكَ اَصْدِقَائَنَا فَمَا اُوْذِیْنَا قَطُّ اِلَّامِنْهُمْ

अल्लाह तआ़ला उन को जज़ाए ख़ैर दे जिन को हम नहीं जानते मगर उन्हें न दे जो हमारे दोस्त हैं क्यूंकि हमें जो ईज़ा व तक्लीफ़ पहुंची है वोह दोस्तों ही से पहुंची है।

अ़रबी के येह दो शे'र भी इसी सिलसिले में कहे गए हैं :

(۱)جَزَی اللّٰهُ عَنَّا الْخَیْرَ مَنْ لَیْسَ بَیْنَنَا وَ لَا بَیْنَـــهٗ وُدٌّ وَ لَا نَتَعَـــارَفُ

(۲) فَمَـا مَسَّنَا هَمٌّ وَ لَا نَالَنَا اَذًی مِـنَ الـنَّـاسِ اِلَّا مَنْ نَوَدُّ وَنَعْرِفُ

(1) अल्लाह उस को जज़ाए ख़ैर दे जिस की हम से कोई दोस्ती और तआ़रुफ़ नहीं।
(2) क्यूंकि हमें जो भी ग़म या ईज़ा पहुंची है वोह अपने दोस्तों और वाक़िफ़ कारों ही से पहुंची है।

ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया है :

هٰذَا زَمَانٌ اِحْفَظْ لِسَانَكَ وَاخْفِ مَكَانَكَ وَعَالِجْ قَلْبَكَ وَخُذْ مَا تَعْرِفُ وَدَعْ مَا تُنْكِرُ

इस नाजुक दौर में अपनी ज़बान की हि़फ़ाज़त कर, अपने मकान को **मस्तूर**(1) रख, अपने क़ल्ब की इस्लाह़ कर, नेक काम इख़्तियार कर और बुराई से इजतिनाब कर।

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ **ने अपने ज़माने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :**

ھٰذَا زَمَانُ السُّکُوۡتِ وَ لُزُوۡمِ الۡبُیُوۡتِ وَالرِّضَاءِ بِالۡقُوۡتِ اِلٰی اَنۡ تَمُوۡتَ

येह ख़ामोशी इख़्तियार करने का ज़माना है, इस वक़्त घर की चार दीवारी के अन्दर रहने में ही अम्न है और मा'मूली **मआ़श**(2) पर गुज़र बसर करना ही बेहतर है यहां तक कि मौत आ जाए।

और ह़ज़रते दावूद ताई رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ **से मन्क़ूल है :**

صُمۡ عَنِ الدُّنۡیَا وَاجۡعَلۡ فِطۡرَكَ الۡاٰخِرَۃَ وَ فِرَّ مِنَ النَّاسِ فِرَارَكَ مِنَ الۡاَسَدِ

दुन्या में रोज़े से रह, आख़िरत में जा कर येह रोज़ा इफ़्तार कर, और लोगों से इस त़रह़ दूर भाग जिस त़रह़ शेर से भागता है।

ह़ज़रते अबू उ़बैदा (رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) **ने फ़रमाया :**

"مَا رَاَیۡتُ حَکِیۡمًا قَطُّ اِلَّا قَالَ لِیۡ عَقِبَ کَلَامٍ اِنۡ اَحۡبَبۡتَ اَلَّا تُعۡرَفَ فَاَنۡتَ عَلٰی بَالٍ"

मैं ने जिस **दाना**(3) को भी देखा और उस से गुफ़्तगू की उस ने आख़िर येही कहा कि अगर तू इस बात को पसन्द करता है कि लोगों में तेरी जान पहचान न हो तो फिर तेरा **अल्लाह** के हां कुछ मक़ाम है।

इस क़िस्म की रिवायात इस क़दर ज़ियादा हैं कि इस मुख़्तसर किताब में इन के बयान की गुन्जाइश नहीं, हम ने इस क़िस्म की रिवायात को एक मुस्तक़िल किताब में जम्अ़ कर दिया है जिस का नाम हम ने "اَخۡلَاقُ الۡاَبۡرَارِ وَ النَّجَاۃُ مِنَ الۡاَشۡرَار" रखा है, इस का मुत़ालआ़

1 पोशीदा। 2 रोज़ी। 3 अ़क़्लमन्द।

करो, तुम्हें इस में अ़जीबो ग़रीब मा'लूमात मिलेंगी और अ़क़्लमन्द को तो इशारा ही काफ़ी है। وَ بِاللّٰهِ التَّوۡفِيۡق

दूसरा सबब जिस के बाइ़स मख़्लूक़ से अ़लाह़िदगी ज़रूरी है, येह है कि लोगों में मख़्लूत़ रह कर तुम्हारी इ़बादत व त़ाअ़त तबाहो बरबाद हो जाएगी اِلَّا مَا شَآءَ الله वोह इस त़रह़ कि लोगों में रह कर तुम रिया, ख़ुदसिताई और ज़ीनत में मुब्तला हो जाओगे, ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने क्या ही बेहतर फ़रमाया, आप फ़रमाते हैं :

رُؤۡيَةُ النَّاسِ بِسَاطُ[1] الرِّيَاء लोगों का देखना रिया की चटाई है।

बुज़ुर्गों ने रिया के ख़ौफ़ से लोगों से मुलाक़ात और एक दूसरे की ज़ियारत तर्क कर दी थी। रिवायात में मज़्कूर है कि ह़ज़रते हरिम बिन ह़य्यान (رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه)[2] ने ह़ज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه से अ़र्ज़ किया : "हमें मुलाक़ात व ज़ियारत के ज़रीए़ अपने साथ मिलाए रखिये।" तो आप ने फ़रमाया : मैं ने तुझे उन दो से भी ज़ियादा नाफ़ेअ़ शै के ज़रीए़ अपने साथ मिला रखा है और वोह तेरी अ़दमे मौजूदगी में तेरे ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर है, मुलाक़ात व ज़ियारत ठीक नहीं क्यूंकि इस से रिया व ज़ीनत वग़ैरा पैदा होते हैं।"

---

1 यहां लफ़्ज़ "بساطه" (बसात़ा) था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "بِسَاطُ" (बिसात़ु) है लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

2 यहां लफ़्ज़ "حبّان" (ह़ब्बान) था येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "حَيّان" (ह़य्यान) है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है (इ़ल्मिय्या)

जब ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सुलैमान ख़व्वास رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शहर में तशरीफ़ लाए तो लोगों ने ह़ज़रते सुलैमान رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कहा : "आप ह़ज़रते इब्राहीम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात को नहीं जाते ?" तो आप ने जवाब दिया : "इब्राहीम बिन अदहम (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की बजाए सरकश शैत़ान से मुलाक़ात करने को मैं ज़ियादा पसन्द करता हूं।" लोगों ने ऐसे जवाब पर बुरा मनाया तो आप ने फ़रमाया : "मुझे इस चीज़ का डर है कि जब मैं उन से मुलाक़ात करूंगा तो उन के साथ गुफ़्तगू और عَلَیْک سَلَیْک[1] में तकल्लुफ़ और **तज़य्युन**[2] करूंगा लेकिन अगर शैत़ान को देख पाउं तो उस से बचने और पनाह की तदबीर करूंगा।"

एक दफ़्आ़ मेरे (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के) शैख़ की किसी आ़रिफ़े कामिल से मुलाक़ात हो गई, देर तक दोनों एक दूसरे से मह़्वे गुफ़्तगू रहे फिर इख़्तितामे कलाम पर एक दूसरे के लिये दुआ़ए ख़ैर की। अ़लाह़िदा होते वक़्त मेरे शैख़ ने उस आ़रिफ़ से मुख़ात़ब हो कर कहा : "मैं आज की मजलिस को बेहतरीन मजलिस तसव्वुर करता हूं।" उस आ़रिफ़ ने जवाबन कहा : "मैं इसे एक ख़त़रनाक मजलिस तसव्वुर करता हूं, क्या दौराने गुफ़्तगू हम अपनी अपनी गुफ़्तगू को मुज़य्यन और अपने अपने उ़लूम को एक दूसरे पर ज़ाहिर करने की कोशिश नहीं कर रहे थे ? और क्या इस त़रह़ हम रिया व तकल्लुफ़ में मुब्तला नहीं हो गए थे !" येह सुन कर मेरे शैख़ रो पड़े और इतने रोए कि आप को ग़शी आ गई। येह वाक़िआ़ पेश आने के बा'द आप अकसर मुन्दरिजए ज़ैल अश्आ़र दोहराया करते थे :

---

1 सलाम दुआ़। 2 आरास्ता।

(١) يَـا وَيُلَتَـا مِـنُ مَوُقَفٍ مَـا بِـهِ — اَخُـوُفُ مَـنُ اَنُ يَّعُدِلَ الُحَاكِمُ

(٢) اُبَــارِزُ الـلّٰــهَ بِـعِـصُيَـانِـهِ — وَلَيُـسَ لِـىُ مِـنُ دُوُنِـهِ رَاحِمُ

(٣) يَـارَبِّ عَـفُوًا مِنكَ عَنُ مُذُنِبٍ — اَسُــرَفَ اِلَّا اَنَّـــهٗ نَــادِمُ

(٤) يَـقُوُلُ فِى اللَّيُلِ اِذَا مَادَجَى (1) — اٰهًـــا لِـذَنُـبٍ سَتَرَ الُعَـالِمُ

(1) हमारे **मौक़िफ़**[2] व रविय्ये पर अफ़्सोस कि ह़क़ीक़ी अ़द्ल के वक़्त येह इन्तिहाई ख़ौफ़नाक नताइज का **मूजिब**[3] होगा।

(2) मैं **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी कर के उस के अ़ज़ाब को चेलेन्ज कर रहा हूं ह़ालांकि उस ग़फ़ूरुर्रह़ीम के सिवा मुझ पर कोई रह़्म करने वाला भी नहीं।

(3) ऐ **अल्लाह** ! मैं अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी का **ख़्वास्तगार**[4] हूं मैं ने अगर्चे गुनाह कर के इन्तिहाई ज़ियादती की है मगर मैं इस पर नादिम ज़रूर हूं।

(4) जब अन्धेरी रात काइनात में तारीकी फैला देती है उस वक़्त मैं दरगाहे खुदावन्दी में आहो ज़ारी शुरूअ़ कर देता हूं जिस ने मेरे गुनाहों पर पर्दा डाल रखा है।

मुन्दरिजए बाला उन लोगों की मुलाक़ात का ह़ाल है जो ज़ोह्दो रियाज़त में अपनी मिसाल आप थे, तो दुन्यादार और फ़ुज़ूल व बेहूदा लोगों की आपस में मुलाक़ात के नताइज जो होंगे उन का **क़ियास**[5] तुम खुद कर लो।

ऐ अ़ज़ीज़ ! ज़मानए ए'तिक़ादी व अ़मली फ़सादात का गहवारा बन चुका है, लोग **ज़रर रसानी**[6] में ह़द से गुज़र गए हैं,

1 यहां लफ़्ज़ "ناداه" था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "ما دجى" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है।(इल्मिय्या) 2 नुक़्तए नज़र। 3 सबब। 4 आरज़ू मन्द। 5 अन्दाज़ा। 6 नुक़्सान पहुंचाने।

वोह तुझे इबादत से बाज़ रखने की पूरी कोशिश करेंगे, उन में रहते हुवे तू आख़िरत के लिये कुछ नहीं कर सकेगा बल्कि तेरी साबिक़ा नेकियां भी सब की सब ज़ाएअ़ हो जाएंगी, इस लिये उ़ज़्लत व गोशा नशीनी के सिवा तेरे लिये कोई चारा नहीं। (ख़ुदा इस ज़माने के शर से अपनी पनाह में रखे।)

सुवाल : किन किन लोगों पर उ़ज़्लत व गोशा नशीनी लाज़िम है ? और उ़ज़्लत के ए'तिबार से लोग कितने **त़बक़ात**(1) में तक़्सीम किये जा सकते हैं ? और उ़ज़्लत की ह़द क्या है जिस का निगाह रखना ज़रूरी है।

जवाब : ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान कि उ़ज़्लत के ए'तिबार से लोग दो त़बक़ों में तक़्सीम हो सकते हैं :

एक वोह जो न आ़लिम हैं और न ह़ाकिम ऐसे लोगों की त़रफ़ मख़्लूक़ मोह़ताज नहीं, तो ऐसे लोगों को चाहिये कि मख़्लूक़ से अलग और अ़लाह़िदा रहें, सिर्फ़ जुमुआ़, जमाअ़त, ईद, ह़ज या दीनी मजलिस में शिर्कत करें या **मईशत**(2) के लिये ब क़दरे ज़रूरत मेल जोल करें इस के इलावा लोगों से अलग रहें, किसी से मा'रिफ़त और वाक़िफ़िय्यत पैदा न करें और अगर इस क़िस्म का आदमी किसी मस्लिह़त की बिना पर लोगों से बिल्कुल ही अ़लाह़िदा रहना चाहिये और किसी दीनी या दुन्यवी काम में शिरकत न करना चाहिये तो उस शख़्स के उ़ज़्लत इख़्तियार करने के लिये मुन्दरिजए ज़ैल उमूर में से किसी एक अम्र का होना ज़रूरी है :

﴾1﴿ या तो आबादी से इतना दूर चला जाए कि जुमुआ़, जमाअ़त वग़ैरा अह़काम इस पर लाज़िम न रहें जैसे पहाड़ों की चोटियां या दूर दराज़ वादियां। बा'ज़ बुज़ुर्ग जो इबादत के लिये दूर दराज़ मक़ामात पर चले गए उन के जाने की एक वजह शायद येही थी।

---

(1) दरजात। (2) रोज़गार।

﴾2﴿ दूसरा अम्र येह है कि ऐसे शख़्स को इस अम्र का यक़ीन होना चाहिये कि लोगों से मा'मूली **इख़्तिलात़**(1) से भी नुक़्सान पहुंचेगा, तो इस बिना पर अगर वोह जुमुआ़, जमाअ़त वग़ैरा में भी शरीक न हो तो वोह मा'ज़ूर है और मैं ने ख़ुद मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में (अल्लाह इसे हर ह़ादिसे से मह़फ़ूज़ रखे) बा'ज़ ऐसे मशाइख़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) को देखा है जो बैतुल्लाह शरीफ़ के बिल्कुल क़रीब और तन्दुरुस्त होने के बा वुजूद नमाज़ की जमाअ़त में शरीक नहीं होते थे।

मैं ने एक दिन एक बुज़ुर्ग से इस की वजह दरयाफ़्त की तो उस ने वोही वजह बयान की जिस की त़रफ़ हम ने इशारा किया है कि इख़्तिलात़ से नुक़्सान पहुंचता है। मैं कहता हूं मा'ज़ूर पर कोई मलामत नहीं और अल्लाह तआ़ला हर एक के उ़ज़्र को ख़ूब जानता है क्यूंकि वोह सीनों के राज़ जानता है लेकिन ज़ियादा बेहतर और मुनासिब येही है कि क़रीब रहते हुवे जुमुआ़, जमाअ़त और दीगर उमूरे ख़ैर में शिर्कत करे और इस के **मा सिवा**(2) अ़लाहि़दा रहे अगर वोह दीनी उमूर में भी शरीक होना नहीं चाहता तो आबादी से इतनी दूर **सुकूनत**(3) इख़्तियार करे कि मुन्दरिजए बाला शरई अह़काम उस पर लाज़िम न रहें, लेकिन जो शख़्स है तो शहर या आबादी में ही मगर जुमुआ़, जमाअ़त वग़ैरा में शरीक न हो तो उस का ऐसा करना ठीक नहीं।

दूसरा त़बक़ा वोह लोग हैं जो दीन के ए'तिबार से लोगों के **मुक़्तदा**(4) हो, ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर की **तरदीद**(5)

---

1 मेल जोल। 2 इलावा से। 3 रिहाइश। 4 रहनुमा। 5 रद्द करने।

और **इस्बाते ह़क़**(1) में मसरूफ़ हों और अपने **अक़्वाल व अफ़्आ़ल**(2) से तब्लीग़े दीन में मश्ग़ूल हों, तो इन उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) को शरअ़न उ़ज़्लत की इजाज़त नहीं बल्कि ऐसे ह़ज़रात पर लाज़िम है कि **आ़म्मतुन्नास**(3) में रह कर दीन की नश्रो इशाअ़त करें। मुख़ालिफ़ीने इस्लाम और **फ़िर्क़े बात़िला**(4) के शुब्हात के जवाबात दें और अह़कामे इलाहिय्या के फैलाने और वाज़ेह़ करने में हमातन मश्ग़ूल रहें क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

اِذَا ظَهَرَ الْبِدَعُ وَ سَكَتَ الْعَالِمُ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ (5)

जब ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर आ़म हो जाएं और आ़लिमे दीन ख़ामोश रहे तो ऐसे आ़लिम पर ख़ुदा की ला'नत।

ख़ुलासा येह कि दीनी पेशवा के लिये किसी सूरत में उ़ज़्लत रवा नहीं, उस्ताद अबू बक्र बिन फ़ौरक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि जब आप ने इबादत की ग़रज़ से लोगों से अ़लाह़िदगी का इरादा फ़रमाया और पहाड़ों में पहुंच गए तो एक आवाज़ देने वाले ने ग़ैब से आवाज़ दी : "ऐ अबू बक्र ! जब तू मख़्लूक़ के लिये **अल्लाह** तआ़ला की हुज्जत और दलील है तो तू उन्हें छोड़ कर क्यूं यहां आया है ?"

और मुझ से मामून बिन अह़मद ने बयान किया कि उस्ताद अबू इस्ह़ाक़ इस्फ़राइनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **जबले लुबनान**(6) के गोशा नशीनों को फ़रमाया : "ऐ घास फूंस पर गुज़ारा करने वालो ! तुम

---

1 ह़क़ को साबित करने। 2 अपनी गुफ़्त्गू और किरदार। 3 आ़म लोगों। 4 बात़िल फ़िर्क़ों।

5 فردوس الاخبار، ۱/۱۸۸، حدیث:۱۲۷۵، باختلاف بعض الالفاظ

6 लुबनान के पहाड़।

सरकारे दो आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत को गुमराहों के चुंगल में छोड़ कर खुद यहां आ गए हो ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हमें लोगों में रहने की ता़कत नहीं और खुदा ने आप को कुव्वत दी है इस लिये आप रह सकते हैं।" इस के बा'द आप ने एक किताब तस्नीफ़ फ़रमाई जिस का नाम "اَلْجَامِعُ لِلْخَفِيِّ وَ الْجَلِيِّ" रखा।

लेकिन येह उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) जिस त़रह़ इ़ल्म में बे मिस्ल थे, अ़मल और उमूरे आख़िरत की मा'रिफ़त में भी सब से आगे थे। ऐ अ़ज़ीज़ ! जान ले कि ऐसे आ़लिम में दो चीज़ों का होना ज़रूरी है, एक तो सब्र, ह़िल्म, अपने नफ़्स का मुह़ासबा और हमेशा खुदा तआ़ला से सलामती का त़लब गार रहना, दूसरी येह कि बात़िन के ए'तिबार से लोगों से जुदा रहे, अगर्चे ज़ाहिरी जिस्म के ए'तिबार से वोह उन के साथ रहे, अगर लोग उस से कलाम करें तो उन से कलाम करे, वोह उस की ज़ियारत को आएं तो ह़स्बे मरातिब उन का शुक्रिया और एह़तिराम करे और अगर लोग उस से ए'राज़ करें और ख़ामोशी बरतें तो वोह उसे ग़नीमत शुमार करे। नेक बात में उन का हाथ बटाए और अगर वोह बुराई और शरारत की त़रफ़ माइल हों तो उन की मुख़ालफ़त करे और उन से अलग रहे और अगर लोग उस की डांट डपट से बुराई से बाज़ आ सकते हों तो उन्हें मुनासिब डांट डपट भी करे और जो ह़ुक़ूक़ उन में रहने के बाइ़स उस पर लाज़िम आते हैं उन को अदा करता रहे, जैसे वक़्तन फ़ वक़्तन उन से मेल मुलाक़ात, बीमारों की इ़यादत और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उन की ह़ाजात पूरी करना, मगर उन से किसी क़िस्म का मुत़ालबा न करे और न इस की उम्मीद रखे ह़त्तल वस्अ़ उन पर ख़र्च करे मगर उन से कोई चीज़ न ले, जो

तक्लीफ़ या ईज़ा उन से पहुंचे उसे बरदाश्त करे और हर एक को ख़न्दा पेशानी से मिले। अपने आप को उन के सामने बे परवाह ज़ाहिर करे, अपनी ह़ाजात उन से पोशीदा रखे और उन का ख़ुद इन्तिज़ाम करे, फिर इन बातों के साथ साथ नफ़्ली इ़बादत के लिये भी चोबीस घन्टों में कोई वक़्त ख़ास कर ले ताकि अपने ज़ाहिर और बातिन की इस्लाह़ भी जारी रख सके जैसा कि ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया :

اِنْ نِمْتُ اللَّيْلَ لَاُضَيِّعَنَّ(1) نَفْسِي وَ اِنْ نِمْتُ النَّهَارَ لَاُضَيِّعَنَّ(2) الرَّعِيَّةَ فَكَيْفَ بَيْنَ هَاتَيْنِ

अगर रात को सोता हूं तो अपनी आख़िरत बरबाद करता हूं और अगर दिन को नींद करूं तो **रुइय्यत**(3) तबाह होगी, तो इन दो बातों के होते हुवे मैं किस त़रह़ आराम का वक़्त निकाल सकता हूं ?

इसी मज़मून के मुवाफ़िक़ मैं ने मुन्दरिजए ज़ैल चन्द अश्आ़र कहे हैं :

(١) فَاِنْ كُنْتَ فِي هُدَي الْاَئِمَّةِ رَاغِبا — فَوَطِّنْ عَلٰى اَنْ تَنْتَحِيكَ الْوَقَائِعُ
(٢) بِنَفْسٍ وَقُورٍ عِنْدَ كُلِّ مُلِمَّةٍ — وَقَلْبٍ صَبُورٍ وَهُوَ فِى الصَّدْرِ مَانِعُ
(٣) لِسَانُكَ مَخْزُوْنٌ وَطَرْفُكَ مُلْجَمٌ — وَسِرُّكَ مَكْتُومٌ لَدَى الرَّبِّ ذَائِعُ
(٤) وَذِكْرُكَ مَغْمُورٌ وَ بَابُكَ مُغْلَقٌ — وَثَغْرُكَ بَسَّامٌ وَبَطْنُكَ جَائِعُ
(٥) وَقَلْبُكَ مَجْرُوحٌ وَسُوقُكَ كَاسِدٌ — وَفَضْلُكَ مَدْفُوْنٌ وَطَعْنُكَ شَائِعُ
(٦) وَفِى كُلِّ يَوْمٍ اَنْتَ جَارِعُ غُصَّةٍ — مِنَ الدَّهْرِ وَالْاِخْوَانِ وَالْقَلْبُ طَائِعُ
(٧) نَهَارُكَ شُغْلُ النَّاسِ مِنْ غَيْرِ مِنَّةٍ — وَلَيْلُكَ شَوْقٌ غَابَ عَنْهُ الطَّلَائِعُ
(٨) فَدُوْنَكَ هٰذَا اللَّيْلَ خُذْهُ ذَرِيْعَةً — لِيَوْمٍ عَبُوسٍ عَزَّ فِيْهِ الذَّرَائِعُ

---

1 यहां लफ़्ज़ "لاضعين" (ला दुईन) था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "لَاُضَيِّعَنَّ" (लउदय्यिअ़न्न) है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या) 2 ऐज़न। 3 रिआ़या।

(1) अगर तुम अपने अन्दर बुज़ुर्गों की सीरत पैदा करने के आरज़ूमन्द हो तो ज़माने के मसाइब व ह़वादिस बरदाश्त कर के अपने अन्दर नर्मी और तवाज़ोअ़ को मज़बूत़ करो।

(2) हर तक्लीफ़ के वक़्त नफ़्स में सन्जीदगी और क़ुव्वते बरदाश्त पैदा करो, दिल को साबिर बनाओ अगर्चे वोह इस से **मानेअ़**[1] है।

(3) तुम्हारी ज़बान मुंह में बन्द रहनी चाहिये और तुम्हारी आंखें लगाम में रहनी चाहियें, तुम्हारा मुआ़मला लोगों से **मस्तूर**[2] हो, सिर्फ़ ख़ुदा ही को इस का इल्म हो।

(4) तुम्हारा कोई चर्चा न हो, तुम्हारा दरवाज़ा बन्द हो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुश हो और पेट भूका हो।

(5) तुम्हारा दिल इश्क़े मौला से ज़ख़्मी हो, तुम्हारा बाज़ार बे रौनक़ हो, तुम्हारे कमालात मदफ़ून हों और तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ ता'न व **तश्नीअ़**[3] आ़म हो।

(6) हमेशा ज़माना और अहले ज़माना से मसाइब व तकालीफ़ के घूंट पीते रहो, दरआन ह़ाल येह कि तुम्हारा दिल शौक़े इत़ाअ़त से लबरैज़ हो।

(7) दिन को बिग़ैर एह़सान जताए नेक कामों में लोगों के हाथ बटाते रहो और रात लिक़ाए इलाही के शौक़ में काट दो, और इस ज़ौक़ो शौक़ का किसी को पता न हो।

(8) तुम इन मौजूदा रातों की क़द्र करो, इन को उस सख़्त दिन का ज़रीआ़ बनाओ जब हर क़िस्म के ज़राएअ़ कामयाबी मफ़्क़ूद होंगे।

---

1 रोकने वाला। 2 पोशीदा, (छुपा हुवा) 3 मलामत।

तो आ़लिमे दीन पर लाज़िम है कि ज़ाहिर में तो लोगों से मिला रहे मगर दिल से उन से बिल्कुल अलग रहे और ख़ुदा की क़सम ! येह बहुत मुश्किल और तल्ख़ है, इसी के मुतअ़ल्लिक़ हमारे शैख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :

يَا بُنَيَّ عِشْ مَعَ اَهْلِ زَمَانِكَ وَ لَا تَقْتَدِ بِهِمْ ऐ मेरे अ़ज़ीज़ बेटे ! अहले ज़माना के साथ ज़िन्दगी तो गुज़ार मगर किसी बात में उन की **इक़्तिदा**[1] न कर। फिर मेरे शैख़ (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने फ़रमाया : इस त़रह़ की ज़िन्दगी बसर करना इन्तिहाई तल्ख़ और मुश्किल है।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **से मरवी है :**

خَالِطِ النَّاسَ وَ زَايِلْهُمْ लोगों से ह़स्बे ज़रूरत **ख़ल्त़ मल्त़**[2] और लैन दैन रखो मगर अपने दीन को **ज़रर**[3] से बचाए रखो।

मैं कहता हूं जब फ़ितनों की मौजें तलात़ुम में हों, जब ह़क़ ज़वाल पज़ीर हो, जब लोग दीन से मुंह फेर कर दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाएं और किसी मोमिन की क़राबत या अ़ह्द का पास (लिह़ाज़) न करें, जब लोग आ़लिमे दीन से मुतनफ़्फ़िर हों और उसे न चाहें और न दीन के मुआ़मले में उस की इआ़नत करें और फ़ितने अ़वाम व ख़वास में फैल जाएं, तो ऐसे ह़ाल में आ़लिम अगर **उ़ज़्लत** व **अ़लाह़िदगी** इख़्तियार कर ले और अपने इल्म को फैलाना तर्क कर दे तो वोह मा'ज़ूर है और मैं तो येही कहता हूं कि हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने जिस ज़माने में उ़ज़्लत का हुक्म दिया था वोह हमारा ही ज़माना है क्यूंकि इस ज़माने में वोह सब उमूर मौजूद हैं जिन की वजह से उ़ज़्लत लाज़िम व ज़रूरी हो जाती

---
1 पैरवी। 2 मिलना जुलना। 3 नुक़्सान।

है और ह़क़ीक़तन मददगार **अल्लाह** तआ़ला ही है उसी पर तवक्कुल करना चाहिये।

येह है उ़ज़्लत और गोशा नशीनी का मुख़्तसर और ज़रूरी बयान, इस को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन करो क्यूंकि इस में ग़लत़ फ़हमी का अ़ज़ीम ख़त़रा है और ज़मानए उ़ज़्लत में इस से गुरैज़ करने में सख़्त नुक़्सान है। (وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيق)

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह हुक्म दिया है :

"عَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ فَاِنَّ يَدَ اللّٰهِ عَلَى الْجَمَاعَةِ وَ اِنَّ الشَّيْطَانَ ذِئْبُ الْاِنْسَانِ يَاْكُلُ الشَّاذَةَ وَ النَّاحِيَةَ وَ الْقَاصِيَةَ وَ الْفَاذَّةَ" (1)

तुम पर जमाअ़त में रहना लाज़िम है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला का दस्ते इनायत जमाअ़त पर ही है और बिला शुबा शैत़ान इन्सान के ह़क़ में भेड़िये की मानिन्द है जो रेवड़ से जुदा होने वाली (या आगे निकल जाने वाली या दूर चली जाने वाली या अकेली रह जाने वाली) बकरी को उड़ा ले जाता है।

इसी त़रह़ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

اِنَّ الشَّيْطَانَ مَعَ الْفَذِّ وَ هُوَ مَعَ الْاِثْنَيْنِ اَبْعَدُ (2) तन्हा आदमी के साथ शैत़ान होता है और जब दो हो जाएं तो उन के क़रीब नहीं आता।

जवाब : जहां सरकारे दो आ़लम عَلَيْهِ السَّلَام ने जमाअ़त में रहने की ताकीद फ़रमाई है वहां येह भी फ़रमाया है :

---

1 ......شعب الايمان، باب فى الاصلاح بين الناس، ٧/٤٨٨، حديث:١١٠٨٥ و باب فى الصلوات، فصل الصلوات الخمس...الخ، ٣/٥٧، حديث:٢٨٦٠، بتغير و ملتقطًا۔

2 ......السنن الكبرى للنسائى، كتاب عشرة النساء خلوة الرجل بالمرأة، ذكر اختلاف الفاظ الناقلين، ٥/٣٨٨، حديث:٩٢٢٤۔

"اَلْزِمْ بَيْتَكَ وَعَلَيْكَ بِالْخَاصَّةِ وَ دَعْ اَمْرَ الْعَامَّةِ"[1]

अपने घर में ही रह, तन्हाई इख़्तियार कर और आ़म मेल जोल से सख़्त इजतिनाब कर।

तो इस ह़दीस में ह़ुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़वाम से अलग रहने का हुक्म दिया है और इस ह़दीस और पहली दो के दरमियान दर ह़क़ीक़त कोई **तनाकुज़**[2] या इख़्तिलाफ़ नहीं, हम बा तौफ़ीक़े इलाही इन में **तत़बीक़**[3] अ़र्ज़ करते हैं :

ह़ुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के इरशाद عَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ में तीन एह़तिमाल हैं :

﴾1﴿ दीन और अह़काम में जमाअ़त से अ़लाह़िदा राह इख़्तियार करने की मुमानअ़त है, क्यूंकि तमाम उम्मत गुमराही पर मुत्तफ़िक़ नहीं हो सकती, तो **इजमाई मसाइल**[4] और बुन्यादी अह़काम में **जमहूर**[5] से अ़लाह़िदगी बात़िल और गुमराही है लेकिन अगर कोई शख़्स अपने दीन की ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से तन्हाई इख़्तियार कर ले तो इस ह़दीस में इस की मुमानअ़त नहीं।

﴾2﴿ आ़म मुसलमानों से नमाज़े बा जमाअ़त और जुमुआ़ वग़ैरा में अ़लाह़िदगी इख़्तियार न की जाए क्यूंकि मिल कर नमाज़े जुमुआ़ अदा करने में दीन को तक़्विय्यत पहुंचती है, इस्लाम का कमाल ज़ाहिर होता है और कुफ़्फ़ार व **मुलह़िदीन**[6] मुसलमानों का इजतिमाअ़ देख कर जलते हैं और जुमुआ़ व जमाअ़त वग़ैरा इस्लामी इजतिमाआ़त पर **अल्लाह** तआ़ला की बरकतें और रह़मतें नाज़िल होती है इसी लिये हम ने कहा है कि गोशा नशीन शख़्स पर लाज़िम है कि जुमुआ़ और जमाअ़त वग़ैरा दीनी

---

1 ......سنن ابی داوٗد، کتاب الملاحم،باب الامر والنھی، ٤/١٦٥، حدیث:٤٣٤٣، بتغیر۔

2 तज़ाद। 3 मुत़ाबक़त। 4 वोह मसाइल जिन पर उम्मते मुस्लिमा के मुज्तहिदीन मुत्तफ़िक़ हों। 5 उ़लमा की अक्सरिय्यत। 6 बे दीन लोग।

इजतिमाआ़त में आ़म मुसलमानों के साथ शरीक रहे और इस के सिवा आ़म तअ़ल्लुक़ात और मेल जोल से परहेज़ करे क्यूंकि आ़म इख़्तिलात़ में बहुत आफ़ात और नुक़्सानात हैं।

﴾3﴿ عَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ में तीसरा एह्तिमाल येह है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का येह इरशाद नेक ज़माने में **ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद**[1] शख़्स के लिये है लेकिन **क़विय्युल ए'तिक़ाद**[2], साहिबे बसीरत शख़्स जब ऐसे ज़माने को पाए जिस में फ़ितना व फ़साद हो, और जिस से हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने डराया है और जिस में उ़ज़्लत का हुक्म दिया है, तो उस के लिये उ़ज़्लत, ख़ल्त़ मल्त़ और मेल जोल से बेहतर है ताकि आफ़ात व फ़सादात से मह़फ़ूज़ रहे लेकिन मुनासिब येह है कि दीनी इजतिमाआ़त और उमूरे ख़ैर में शरीक होता रहे और अगर लोगों से मुकम्मल त़ौर पर अ़लाह़िदगी इख़्तियार करना चाहे तो किसी पहाड़ की चोटी या दूर वीराने में निकल जाए जिस के बाइ़स अपना दीन मह़फ़ूज़ रख सके।

मैं कहता हूं कि ऐसे शख़्स को भी चाहिये कि नेक इजतिमाआ़त और उमूरे ख़ैर में ज़रूर शरीक हो, ताकि इस का येह सवाब ज़ाएअ़ न हो, और इस्लामी इजतिमाआ़त **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक बहुत अहम्मिय्यत रखते हैं अगर्चे लोगों में फ़साद और दीन से ए'राज़ पाया जाता हो, और हम ने **अब्दाल**[3] के मुतअ़ल्लिक़ सुना है कि वोह जहां भी हों मज़कूरा इजतिमाआ़त में शिर्कत करते हैं और येह लोग ज़मीन में चलते फिरते रहते हैं और तमाम ज़मीन

1.....कमज़ोर ए'तिक़ाद वाले। 2.....क़वी ए'तिक़ाद वाला।

3.....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया**" सफ़्ह़ा 39 पर है : अब्दाल, औलियाउल्लाह के त़बक़ात में से एक त़बक़ा है, येह हर दौर में सात[7] होते हैं, इन के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला सात ज़मीनों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है।

इन के लिये एक क़दम है, अख़्बार[1] में आया है कि अब्दाल के लिये ज़मीन सिमट जाती है, इन्हें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ित़ाबात, बरकतें और अन्वाओ़ अक़्साम की रूह़ानी ने'मतें अ़त़ा होती रहती हैं, इन अब्दाल को इस अ़ज़ीम कामयाबी पर मुबारक हो, और हम दुआ़ करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला आख़िरत से ग़फ़्लत बरतने वालों के ह़ालात भी अपनी रह़मते कामिला से दुरुस्त करे और जो अपनी आख़िरत दुरुस्त करने में मसरूफ़ हैं उन्हें मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाए, मैं ने अपनी इस ह़ालते ज़ार के मुतअ़ल्लिक़ येह अश्आ़र कहे हैं :

(١)ظَفِرَ الطَّالِبُوْنَ وَاتَّصَلَ الْوَصْلُ وَفَازَ الْاَحْبَابُ بِالْاَحْبَابِ

(٢) وَبَقِيْنَا مُذَبْذَبِيْنَ حَيَارٰى بَيْنَ حَدِّ الْوِصَالِ وَالْاِجْتِنَابِ

(٣) نَرْتَجِى الْقُرْبَ بِالْبِعَادِ وَهٰذَا نَفْسُ حَالِ الْمُحَالِ لِلْاَلْبَابِ

(٤) فَاسْقِنَا مِنْكَ شَرْبَةً تُذْهِبُ الْغَمْ وَتَهْدِى اِلٰى طَرِيْقِ الصَّوَابِ

(٥) يَاطَبِيْبَ السَّقَامِ يَا مَرْهَمَ الْجَرْحِ وَيَا مُنْقِذِىْ مِنَ الْاَوْصَابِ

(٦)لَسْتُ اَدْرِىْ بِمَا اُدَاوِى سِقَامِى اَوْبِمَا ذَا اَفُوْزُ يَوْمَ الْحِسَابِ

(1) जिद्दो जहद करने वाले कामयाब हो गए, उन को वस्ल की सआ़दत नसीब हो गई और दोस्त दोस्तों की इमदाद व इआ़नत से मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच गए।

(2) और हम इसी त़रह़ तज़बज़ुब व ह़ैरानी के आ़लम में खड़े हैं और हिजरो विसाल के दरमियान मुअ़ल्लक़ हैं।

(3) तुम्हारा ह़ाल तो येह है कि रोज़ बरोज़ ख़ुदा से दूर हो रहे हो, और उम्मीद येह रखते हो कि वोह तुम्हें अपना क़ुर्ब नसीब करे, अ़क़्ले इन्सानी ऐसी उम्मीद को **बईद अज़ अ़क़्ल**[2] समझती है।

---

1 रिवायात। 2 अ़क़्ल में न आने वाली बात।

(4) ऐ **अल्लाह** ! हमें **अपना शरबते विसाल चखा**[1] जो हर क़िस्म का ग़म दूर करता है और राहे सवाब की त़रफ़ रहनुमाई करता है।
(5) ऐ हमारी ज़ाहिरी बात़िनी बीमारियों के त़बीब ! ऐ हमारे ज़ख़्मों की मरहम ! और ऐ हर क़िस्म की बीमारी से नजात देने वाले।
(6) मैं नहीं जानता कि मेरी बीमारियों की दवा क्या है या किस शै के ज़रीए रोज़े क़ियामत मेरी नजात होगी।

हम इस बयान को यहीं ख़त्म करते हैं और मसाइले उ़ज़्लत की त़रफ़ मुतवज्जेह होते हैं।

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो फ़रमाया है कि رَهْبَانِيَّةُ اُمَّتِی اَلْجُلُوْسُ فِی الْمَسَاجِدِ[2] मेरी उम्मत की **उ़ज़्लत** येही है कि वोह मसाजिद को अपनी निशस्त गाह बनाए।

इस ह़दीस में लोगों से अ़लाह़िदा हो कर किसी पहाड़ या जंगल में सुकूनत इख़्तियार करने से रोका गया है और लोगों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करने पर **ज़जर**[3] की गई है और तुम कहते हो कि लोगों से अ़लाह़िदा हो कर कहीं दूर चला जाए ?

जवाब : हु़ज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह इरशादे गिरामी अच्छे ज़माने के लिये है न कि फ़ितना व फ़साद के ज़माने के लिये, जैसा कि हम ज़िक्र कर चुके हैं, मज़्कूरा ह़दीस के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो शख़्स मस्जिद को अपनी निशस्त गाह बना ले, लोगों से मेल मिलाप छोड़ दे और उन के मुआ़मलात में मुदाख़लत तर्क कर दे तो वोह अगर्चे ब ज़ाहिर उन में है मगर ह़क़ीक़त में उन

---
1 अपना क़ुर्बे ख़ास अ़त़ा फ़रमा।
2 معرفة الصحابة، ٢٠١٥ـعثمان بن مظعون، ٣٦٦/٣، حديث: ٤٩٤١
3 मलामत

से जुदा है उ़ज़्लत व गोशा नशीनी से मक़्सूद भी येही है, मह़्ज़ मकान या जिस्म की अ़लाह़िदगी मक़्सूद नहीं, इस नुक्ते को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर। ख़ुदा तुझ पर रह़्म करे, ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुन्दरिजए ज़ैल इरशाद में इसी नुक्ते की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है, आप फ़रमाते हैं :

كُنْ وَاحِدًا جَامِعِيًّا وَّ مِنْ رَّبِّكَ ذَا أُنْسٍ وَّ مِنَ النَّاسِ وَحْشِيًّا तुम लोगों से ब ज़ाहिर मिले जुले रहो, मगर तुम्हारी उन्सिय्यत व मह़ब्बत सिर्फ़ रब तआ़ला के साथ हो, लोगों से तुम्हारा क़ल्बी तअ़ल्लुक़ न हो।

सुवाल : मदारिसे दीनिया के मुदर्रिसीन और शहरों में मुक़ीम सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारी क्या राए है क्यूंकि वोह तो उ़ज़्लत व गोशा नशीनी पर आ़मिल नहीं हैं ?

जवाब : मुदर्रिसीन की **तदरीस**[(1)] और सूफ़ियाए उ़ज़्ज़ाम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) की मजालिस बहुत अच्छी चीज़ें हैं, इस में दो फ़ाइदे हैं :

﴾1﴿ क़ल्बी त़ौर पर लोगों से अ़लाह़िदगी उन की मजालिस और उन के मुआ़मलात में शिर्कत और इख़्तिलात़ से परहेज़

﴾2﴿ जुमुआ़, जमाआ़त और दीगर इस्लामी उ़मूर में शिर्कत।

तो उन लोगों को वोही सलामती ह़ासिल होगी जो लोगों से बिल्कुल अ़लाह़िदा रहने वालों को नसीब होती है, सलामती के साथ साथ इन ह़ज़रात से एक और बहुत बड़ा फ़ाइदा ह़ासिल होता है वोह येह कि अ़वाम इन की **इक़्तिदा**[(2)] करते हैं, इन की बरकात से फ़ैज़याब होते हैं और इन से दीन के मुतअ़ल्लिक़ बेश क़ीमत

---

1 इल्मे दीन सिखाना। 2 पैरवी।

पन्दो नसाइह़[1] ह़ासिल करते रहते हैं, तो इन ह़ज़्रात का ह़ाल दुरुस्त रहता है इन को इ़ल्मो अ़मल की पुख़्तगी की बदौलत सुकून व इत़्मीनान मयस्सर रहता है। इसी फ़ैज़ रसानी के लिये अकसर **आ़रिफ़ीन**[2] लोगों में रहे हैं, लोगों को इन के हुस्ने अख़्लाक़ की वजह से कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचती थी बल्कि तक्लीफ़ की बजाए इन से फ़ाइदा पहुंचता था **आ़म्मतुन्नास** इन के आदाब व रुसूम की इक़्तिदा करते थे, इस त़रह़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के अख़्लाक़ लोगों में इस्लामी अख़्लाक़ को मज़्बूत़ करने का ज़रीआ़ बने रहे।

ज़ाहिर है कि **क़ाल**[3] से **ह़ाल**[4] की तब्लीग़ ज़ियादा मुअस्सिर और मुफ़ीद होती है, तो आ़रिफ़ीन और सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن) का अ़वाम में रहना **ता'मीरे सीरत**[5] के लिह़ाज़ से बहुत ही मुफ़ीद था।

सुवाल : वोह मुरीद जो **अकसर मनाज़िले तसव्वुफ़**[6] तै़ कर चुका हो, उसे **इब्तिदाई मुरीदीन**[7] के साथ रहने की इजाज़त है या नहीं ?

जवाब : वोह **मुब्तदी**[8] अगर सलफ़े सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن) के आदाब, इन की सीरत और इन की रुसूम पर दिल से क़ाइम हों तो उन के साथ रहने में मुज़ाइक़ा नहीं, वोह दीन में तुम्हारे भाई और साथी हैं और इ़बादत के सिलसिले में तुम्हारे मुआ़विन और मददगार हैं, ऐसों से अ़लाह़िदा होना दुरुस्त नहीं, ऐसे मुब्तदी **कोहे लुबनान**[9]

---

1 नसीह़तें। 2 अल्लाह तआ़ला की मा'रिफ़त रखने वाले औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام 3 सिर्फ़ बयान करने देने। 4 नेक आ'माल पर अ़मल पैरा होने। 5 लोगों के अच्छे किरदार बनाने। 6 राहे तसव्वुफ़ के ज़ियादा तर मरह़ले। 7 वोह मुरीदीन जो अभी राहे तसव्वुफ़ के इब्तिदाई मराह़िल में हों। 8 वोह मुरीदीन जो अभी राहे तसव्वुफ़ के इबतिदाई मराह़िल में हों। 9....लुबनान के पहाड़।

वग़ैरा के **तारिकुद्दुन्या**[1] ज़ाहिदों की त़रह़ हैं, हम ने सुना है कि कोहे लुबनान के ज़ाहिदीन में कई ऐसे गुरोह हैं जो तक़्वा और नेकी में लोगों से तआ़वुन करते हैं और ह़क़ व सब्र की तल्क़ीन करते हैं, हां वोह इब्तिदाई मुरीदीन जो अस्लाफ़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की सीरत, उन की पाकीज़ा रुसूम और उन के पसन्दीदा त़रीक़े छोड़ चुके हों और ना मुनासिब ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ और बे फ़ाइदा उमूर को उन्हों ने अपना शिआ़र बना लिया हो तो उन से भी इजतिनाब व अ़लाह़िदगी इसी त़रह़ ज़रूरी है जिस त़रह़ दूसरे आ़म लोगों से, त़बक़ए जुहला में घिरे हुवे मुरीदे सादिक़ को चाहिये कि अपने घर के किसी गोशे को इख़्तियार कर ले, अपनी ज़बान को बुराई से रोके रखे, नेक कामों में उन के साथ शुमूलिय्यत करे, मगर उन के अह़वाल और उन की आफ़ात से अपने आप को बचाए रखे, इस त़रह़ येह मुरीदे सादिक़ भी सह़ीह़ उ़ज़्लत नशीन शुमार होगा।

सुवाल : अगर कोई रियाज़त व मुजाहदा करने वाला मुब्तदी, उ़लमा के मदारिस और सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की मजालिस से निकल कर किसी तन्हा मक़ाम पर इस्लाहे़ नफ़्स और दूसरों की आफ़ात से बचने की ग़रज़ से चला जाए तो क्या उस का जाना दुरुस्त है ?

जवाब : जानना चाहिये कि बा अ़मल उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की दीनी दर्सगाहें और त़ालिबे आख़िरत सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की मुक़द्दस ख़ानक़ाहें ऐसे मुरीद के लिये मह़फ़ूज़ क़ल्ए़ की ह़ैसिय्यत रखती हैं, मुब्तदी इन में रह कर दीन के डाकूओं और चोरों से

1 ....दुन्या को तर्क करने वाले।

मह़फ़ूज़ रह सकता है, इन दर्सगाहों और ख़ानक़ाहों के बाहर का ख़ित़्त़ा ऐसे सह़रा की मानिन्द है, जहां हर वक़्त शैत़ानी लश्कर घूमते रहते हों जो क़ल्ए़ से बाहर रहने वाले को हलाक कर देते या गिरिफ़्तार कर लेते हों, तो जो रियाज़त व मुजाहदा करने वाला मुब्तदी मह़फ़ूज़ क़ल्ए़ से निकल कर चारों त़रफ़ से शैत़ानी लश्करों के नरगे में आ जाए उस का जो ह़श्र होगा ज़ाहिर है इस लिये ऐसे मुब्तदी के लिये इन मदारिस व मजालिस से बाहर क़दम रखना किसी त़रह़ भी ख़त़रे से ख़ाली नहीं लेकिन वोह शख़्स जो कामिल हो, ईमानी बसीरत से बह्रावर हो, दीनी त़ौर पर पुख़्ता और मज़बूत़ हो, उस के लिये क़ल्आ़ और सह़्रा **मुसावी**(1) है, शैत़ानी लश्कर उस पर हरगिज़ ग़ालिब नहीं आ सकते और न वोह उन की शर अंगेज़ियों से मरऊ़ब हो सकता है अगर्चे ऐसे शख़्स के लिये भी ह़िफ़ाज़ती क़ल्ए़ में ही रहना बेहतर है इस लिये कि दुश्मनों के इत्तिफ़ाक़ी और अचानक ह़मलों से बे ख़ौफ़ होना दुरुस्त नहीं ग़रज़ येह कि अहलुल्लाह के साथ रहना, उन की सोह़बत की मशक़्क़तें बरदाश्त करना ही बहेतर है और हर ह़ाल में उन्ही से त़लबे ख़ैर करना अच्छा है और **साह़िबे इस्तिक़ामत व रासिख़ुल ह़ाल**(2) पर उ़ज़्लत लाज़िम नहीं मगर बेहतर ज़रूर है।

इन बयान कर्दा मसाइले उ़ज़्लत पर अगर तुम अ़मल करोगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहोगे।

सुवाल : दीनी भाइयों की ज़ियारत, अपने मुख़्लिस अह़बाब से मुलाक़ात और उन के साथ गुफ़्तगू वग़ैरा का क्या हुक्म है?

---

(1) बराबर। (2) अपनी नेक ह़ालत पर मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहने वाले।

जवाब : दीनी भाइयों की ज़ियारत व मुलाक़ात जब कि वोह नेक और बुज़ुर्ग हों एक अच्छी चीज़ है ऐसे अश्ख़ास की ज़ियारत से इबादत में कुव्वत, मुआ़मलात में बरकत, ख़ुदा का कुर्ब और दिल की इस्लाह़ होती है और दीगर बहुत से फ़ाइदे ह़ासिल होते हैं लेकिन दो बातों का लिह़ाज़ बहुत ज़रूरी है :

﴾1﴿ ह़द से तजावुज़ न हो क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को फ़रमाया :

زُرْ غِبًّا تَزْدَدْ حُبًّا(1) हमारी ज़ियारत के लिये नाग़ा कर के आया करो ताकि मह़ब्बत ज़ियादा हो।

﴾2﴿ येह कि रियाकारी, अपने आप को आरास्ता करने, लग़्व गुफ़्त्गू, ग़ीबत और बे फ़ाइदा बातों से पूरे तौर पर इजतिनाब किया जाए, वरना फ़ाइदे के बजाए नुक़्सान होगा।

ह़िकायत

एक दफ़्आ़ ह़ज़रते फ़ुज़ैल और सुफ़्यान सौरी (رَحِمَهُمَا اللّٰه تعالٰی) की आपस में मुलाक़ात हुई, दोनों बुज़ुर्ग देर तक मसरूफ़े गुफ़्त्गू रहे फिर दोनों रो पड़े, आख़िर में ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने कहा :

"मैं आज की इस सोह़बत को बेहतरीन सोह़बत तसव्वुर करता हूं।" ह़ज़रते फ़ुज़ैल (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने फ़रमाया : "मैं तो इसे एक ख़त़रनाक सोह़बत ख़याल करता हूं।" सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने कहा : क्यूं ? ह़ज़रते फ़ुज़ैल (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने

(1)......شعب الايمان،باب فی حسن الخلق،فصل فی ترك الغضب...الخ،٦/٣٢٧،حديث:٨٣٦٣۔

जवाब दिया : "क्या हम दोनों अपनी बातों को मुज़य्यन और आरास्ता नहीं कर रहे थे ? और क्या हम तकल्लुफ़ व रिया में मुब्तला नहीं थे ?" सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) येह सुन कर रो पड़े ।

तो चाहिये कि अह़बाब की ज़ियारत व मुलाक़ात में मियाना रवी, एह़तियात़ को मुल्ह़ूज़ रखा जाए और रिया व तकल्लुफ़ वग़ैरा से इजतिनाब किया जाए ऐसी मुलाक़ात से तुम्हारी उ़ज़्लत में कोई फ़र्क़ नहीं होगा बल्कि फ़ाइदे की उम्मीद है ।

सुवाल : किन चीज़ों से उ़ज़्लत की रग़बत और इस में आसानी पैदा होती है ?

जवाब : तीन चीज़ों से :

﴾1﴿ दिन रात के चौबीस घन्टों में अकसर अवक़ात में इ़बादत में मश्ग़ूलिय्यत व मस्रूफ़िय्यत से, क्यूंकि अस्ल मस्रूफ़िय्यत येही है और लोगों से बे ज़रूरत मेल जोल और उन्सिय्यत इफ़्लास की अ़लामत है, जब तुम्हारा नफ़्स बिला ज़रूरत व बिला ह़ाजत लोगों से मुलाक़ात, उन की ज़ियारत और उन से मेल जोल का शाइक़ हो तो समझ लो कि तुम फ़ुज़ूल पन, दीन से ए'राज़ और नफ़्स के धोके में मुब्तला हो गए हो,

एक अ़रबी शाइर ने बहुत ख़ूब कहा है :

اِنَّ الْفَـــارِغَ اِلٰی سَلَامِكَ قَـادَنِیْ   وَلَـرُبَّـمَـا عَـمِـلَ الْـفُـضُـوْلَ الْفَارِغُ

"नेकियों से फ़राग़त की बिना पर मैं तुम से سلام علیکم करने आ गया हूं, वाक़ेई बेकार आदमी बहुत से फ़ुज़ूल काम कर बैठता है ।"

जब तुम सह़ीह़ मा'नों में इबादते ख़ुदावन्दी में मश्ग़ूल हो जाओगे और मुनाजाते इलाही का मज़ा पा लोगे तो तुम्हें ख़ुद ब ख़ुद किताबुल्लाह से उन्सिय्यत पैदा हो जाएगी, तुम्हारा दिल आ़म्मतुन्नास से अ़लाह़िदा रहने में राह़त मह़सूस करेगा और तुम्हें लोगों की आवाज़ और उन से गुफ़्तगू करने से नफ़रत आएगी।

मरवी है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर से जब वापस आते थे तो आप को लोगों से वह़शत आती थी, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) कानों में उंगलियां डाल लेते थे ताकि किसी की आवाज़ सुनाई न दे और आप (عَلَيْهِ السَّلَام) लोगों की आवाज़ को नफ़रत व वह़शत के ए'तिबार से गधे की मानिन्द ख़याल करते थे। इस लिये तुम्हें चाहिये कि हमारे शैख़ رَحمَۃُ اللّٰہ के मुन्दरिजए ज़ैल इरशाद पर अ़मल करो, आप ने फ़रमाया :

(١) اِرْضَ بِاللّٰهِ صَاحِبًا   وَ ذَرِ النَّاسَ جَانِبًا

(٢) صَادِقَ الْوُدِّ شَاهِدًا   كُنْتَ فِيْهِمْ وَ غَائِبًا

(٣) قَلِّبِ النَّاسَ كَيْفَ شِئْتَ   تَجِدْهُمْ عَقَارِبًا

(1) तुम लोगों से बिल्कुल किनारा कश हो जाओ और सिर्फ़ ख़ुदा ही को दोस्त बनाने में ख़ुशी तसव्वुर करो।

(2) तुम लोगों के चाहे मुख़्लिस दोस्त बनो और उन में रहो या उन से ग़ाइब।

(3) जब तुम्हें उन से वासित़ा पड़ेगा तो अपने ह़क़ में उन के दिल बिच्छूओं की मानिन्द पाओगे।

﴾2﴿ गोशा नशीनी की रग़बत पैदा करने वाली दूसरी चीज़ येह है कि तुम लोगों से हर क़िस्म का त़म्अ़ और उम्मीद मुन्क़त़अ़ कर लो,

इस त़रह़ तुम उन से बा आसानी किनारा कश हो सकोगे क्यूंकि जब तुम्हें किसी शख़्स से किसी क़िस्म का त़म्अ़ न हो तो तुम्हारे लिये उस का होना न होना बराबर होगा।

﴾3﴿ और तीसरी चीज़ येह है कि तुम लोगों में रहने की आफ़ात पर ग़ौर करो, उन को हर वक़्त याद रखो और दिल में दोहराते रहो।

जब तुम इन तीनों उमूर पर पाबन्दी करोगे तो ज़रूर मख़्लूक़ से अलग हो कर तुम्हारा रुजूअ़ ख़ुदावन्दे तआ़ला की त़रफ़ हो जाएगा और इस त़रह़ तुम्हें उ़ज़्लत गुज़ीनी की सआ़दत नसीब हो जाएगी और येह कठिन मन्ज़िल तुम्हें दिल पसन्द लगेगी और इस के ज़रीए़ तुम्हें दरबारे ख़ुदावन्दी में झुकने की तौफ़ीक़ नसीब हो जाएगी । (وَ بِاللّٰهِ التَّوۡفِيۡقِ وَ الۡعِصۡمَةِ)

ता'लीमे क़ुरआन के दो फ़ज़ाइल

दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ तुम में बेहतर वोह शख़्स है, जो क़ुरआन सीखे और सिखाए। (صحيح البخاری، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم من تعلم القرآن وعلمه، ۳/۴۱۰، حديث:۵۰۲۷)

﴾2﴿ जो क़ुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है (या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये दो अज्र हैं। (صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضل الماهر...الخ، ص۴۰۰، حديث:۷۹۸)

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स.148)

इबादत में तीसरी बड़ी रुकावट शैतान

ऐ बरादरे अ़ज़ीज़ ! इबादत में तरक़्क़ी और कामयाबी ह़ासिल करने के लिये शैतान से जंग और उस पर सख़्ती करना भी लाज़िम और ज़रूरी है और येह दो वजह से ज़रूरी है :

﴾1﴿ वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और हर वक़्त तुम्हें गुमराह करने के मन्सूबे बनाता रहता है उस से सुल्ह़ या रह़्म की उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती बल्कि वोह तुम्हें हलाक कर के ही दम लेगा, इस लिये ऐसे ख़तरनाक दुश्मन से बे ख़ौफ़ या ग़ाफ़िल रहना संगीन ग़लती है, तुम ज़रा मुन्दरिजए ज़ैल आयाते क़ुरआनिय्या में तो ग़ौर करो :

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَیْكُمْ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّیْطٰنَۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌۙ (1)

ऐ औलादे आदम ! मैं ने तुम से येह अ़हद नहीं लिया था कि दुन्या में जा कर शैताने लई़न की इबादत न करना, क्यूंकि वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

दूसरी आयत येह है :

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّاؕ (2)

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उस से दुश्मनी करो।

﴾2﴿ शैतान पर सख़्ती करने की दूसरी वजह येह है कि उस का तुम से दुश्मनी करना उस की फ़ित़रत में है वोह हमेशा तुम से **मुह़ारबा**(3) में मश्ग़ूल है और चौबीस घन्टे अपनी

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ अवलादे आदम ! क्या मैं ने तुम से अ़हद न लिया था कि शैत़ान को न पूजना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (پ۲۳،یٰس:۶۰)

(2) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो। (۲۲،فاطر:۶)　(3) लड़ाई।

शैत़नत(1) के तीर फेंकता रहता है और तुम उस की शरारत और **फ़ितना अन्दाज़ी**(2) से मुत़लक़न ग़ाफ़िल हो, इस ग़फ़्लत का जो अन्जाम होगा वोह ज़ाहिर है।

और शैत़ान को इन्सान की **अ़दावत**(3) के ख़िलाफ़ ज़ियादा भड़काने वाले चन्द मज़ीद अस्बाब येह हैं कि तुम ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत में मसरूफ़ हो, और मख़्लूक़े ख़ुदा को अपने क़ौलो फ़े'ल से दा'वते इस्लाम देने में लगे हुवे हो, और येह उमूर शैत़ान के पेशे, उस की हिम्मत उस की मुराद और उस के मिशन के क़त़्अ़न ख़िलाफ़ और मुतज़ाद हैं, लिहाज़ा इस त़रह़ तुम शैत़ान को ग़ज़बनाक करने, उस की शरारत, उस की अ़दावत और उस की मुख़ालफ़त को और ज़ियादा भड़काने में मसरूफ़ होते हो, जब तुम्हारा रविय्या उस के साथ येह है तो वोह भी बढ़ चढ़ कर तुम्हारी अ़दावत, तुम से जंग और तुम से मक्रो फ़रेब करने पर कमर बस्ता रहता है। यहां तक कि वोह तुम्हारे ह़ाल को **परागन्दा**(4) कर देता है बल्कि वोह येह कोशिश करता है कि वोह तुम्हारे ईमान ही का ख़ातिमा कर दे क्यूंकि वोह तुम से किसी वक़्त भी बे ख़ौफ़ नहीं, शैत़ान तो उन के साथ भी अ़दावत करने से बाज़ नहीं आता जो उस के साथ अ़दावत और मुख़ालफ़त नहीं करते, जैसे कुफ़्फ़ार, गुमराह और फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोग। तो उन के साथ उस की अ़दावत का क्या ह़ाल होगा जो हर वक़्त उस की मुख़ालफ़त और इस को ग़ज़बनाक करने और गुमराह कुन मन्सूबों को ख़ाक में मिलाने में मसरूफ़ रहते हों? तो ऐ इ़बादत और दा'वते ह़क़ में सरगर्मी का मुज़ाहरा करने वालो! आ़म लोगों के साथ उस की अ़दावत **उ़मूमी**(5) होगी मगर तुम से ख़ुसूसी, इस लिये तुम्हारा मुआ़मला निहायत अहम है।

---

(1) बुराई। (2) फ़ितना करने। (3) दुश्मनी। (4) ख़राब। (5) आ़म त़रह़ की।

फिर तुम्हारी अ़दावत व मुख़ालफ़त में इब्लीस सिर्फ़ अकेला नहीं बल्कि उस के हमराह शयातीन की मुनज़्ज़म जमाअ़त है। उस की जमाअ़त में तुम्हारा नफ़्स और तुम्हारी ख़्वाहिशात भी शामिल हैं जो तुम्हारी इन्तिहाई दुश्मन हैं और तुम पर ग़ालिब आने के लिये उस के पास हज़ारों ऐसे अस्बाब हैं जिन से तुम यक्सर ग़ाफ़िल हो।

हज़रते यह़्या मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बहुत ही ख़ूब फ़रमाया है, आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) फ़रमाते हैं :

اَلشَّيْطَانُ فَارِغٌ وَّ اَنْتَ مَشْغُوْلٌ وَّ الشَّيْطَانُ يَرَاكَ وَاَنْتَ لَا تَرَاهُ وَ اَنْتَ تَنْسَاهُ وَهُوَ لَا يَنْسَاكَ وَمِنْ نَفْسِكَ لِلشَّيْطَانِ عَلَيْكَ اَعْوَانٌ فَاِذَنْ لَا بُدَّ مِنْ مُحَارَبَتِهٖ وَقَهْرِهٖ وَ اِلَّا فَلَا تَاْمَنُ مِنَ الْفَسَادِ وَالْهَلَاكِ

शैत़ान फ़ारिग़ है और तू मश्ग़ूल है, वोह तुझे देखता है मगर तू उसे नहीं देखता, तू ने उसे भुलाया हुवा है मगर उस ने तुझे नहीं भुलाया और तेरे अन्दर भी शैत़ान के कई यारो मददगार हैं। इस लिये उस से मुह़ारबा और उस को मग़लूब करना बहुत ज़रूरी है वरना तू उस की शरारतों और हलाकतों से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता।

सुवाल : किस त़रह़ इब्लीस से मुह़ारबा किया जाए और कौन सी चीज़ उस को ज़ेर और मग़लूब कर सकती है?

जवाब : अहले मुजाहदा व रियाज़त के हां इस के दो त़रीक़े हैं :

एक वोह है जो बा'ज़ मशाइख़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया है कि इब्लीस को दफ़्अ़ करने के लिये सिर्फ़ ह़क़ तआ़ला से पनाह ली जाए, इस लिये कि शैत़ान एक कुत्ता है जिस को ह़क़ तआ़ला ने तुम पर मुसल्लत़ कर दिया है, अगर तुम उस से मुक़ाबला और उस को अपने से हटाने में मश्ग़ूल हो गए तो तंग आ जाओगे और तुम्हारा बहुत सा क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ हो जाएगा और आख़िरे कार वोह

ग़ालिब आ जाएगा और तुम्हें ज़ख़्मी कर देगा और काट खाएगा, इस लिये कुत्ते के मालिक के पास ही पनाह लेनी बेहतर है, जो उसे तुझ से हटा दे।

दूसरा त़रीक़ा येह है कि उस से मुक़ाबला किया जाए, उस को हटाने और उस की मुख़ालफ़त के लिये हर वक़्त कमर बस्ता रहा जाए। मैं (इमाम ग़ज़ाली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)) कहता हूं कि मेरे नज़्दीक ज़ियादा मुनासिब और बेहतर येह है कि दोनों त़रीक़ों पर अ़मल किया जाए, अव्वल तो उस की शरारतों से रब तआ़ला से पनाह मांगी जाए, जैसा कि हम को हुक्म है और **अल्लाह** तआ़ला उस की शरारतों से हमें मह़फ़ूज़ रखने के लिये काफ़ी है।

फिर अगर तुम येह मह़सूस करो कि शैत़ान ह़क़ तआ़ला से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला को हमारे मुजाहदे, हमारी क़ुव्वत और हमारे सब्र का इम्तिह़ान मत़लूब है या'नी ह़क़ तआ़ला येह देखना चाहता है कि तुम शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ारबा करते हो या उस से मग़्लूब हो जाते हो जैसे कि उस ने हम पर कुफ़्फ़ार वग़ैरा को मुसल्लत़ कर रखा है ह़ालांकि वोह इस पर क़ादिर है कि हमारे जिहाद वग़ैरा के बिग़ैर ही उन की शरारतों और फ़ित्नों को कुचल दे लेकिन वोह ऐसा नहीं करता बल्कि बन्दों को इन से जिहाद का हुक्म करता है ताकि आज़्माए कि किस के दिल में जज़्बए जिहाद और शहादत की तड़प है और कौन पूरे ख़ुलूस, **तन्दही**[1] और सब्र से इन का मुक़ाबला करता है **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

---

1 जांफ़िशानी/मेह़नत/कोशिश।

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ (1)

और ताकि अल्लाह तआ़ला मुख़्लिस ईमानदारों को ज़ाहिर कर दे और ताकि तुम में बा'ज़ को शहादत का रुत्बा अ़ता फ़रमाए।

एक मक़ाम पर यूं इरशाद फ़रमाया :

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ (2)

क्या तुम ने येह गुमान कर लिया है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अल्लाह तआ़ला ने तुम में से अभी तक मुजाहिदीन और सब्र करने वालों को जिहाद के ज़रीए़ मुमताज़ और अलग नहीं किया।

तो इसी त़रह़ शैत़ान के मुक़ाबले में भी हमें चुस्ती और पूरी कोशिश का हुक्म दिया गया है फिर हमारे उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है कि शैत़ान को मग़लूब करने और उस से मुक़ाबला करने के लिये तीन चीज़ों का होना ज़रूरी है :

पहली चीज़ येह है कि तुम उस के ह़ीलों और चालाकियों को मा'लूम करो और पहचानो, जब तुम्हें उस की ह़ीला साज़ियों का इ़ल्म हो जाएगा तो फिर वोह तुम को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा। जैसे चोर को जब मा'लूम हो जाए कि साहि़बे मकान को मेरा इ़ल्म हो गया है तो वोह भाग जाता है।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस लिये कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा दे। (پ۴، ال عمران: ۱۴۰)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिह़ान न लिया और न सब्र वालों की आज़माइश की। (پ۴، ال عمران: ۱۴۲)

दूसरी चीज़ येह है कि तुम शैत़ान की गुमराह कुन दा'वत को हरगिज़ मन्ज़ूर न करो, और तुम्हारा दिल क़त़अ़न उस से मुतअस्सिर न हो, और तुम उस के मुक़ाबले की त़रफ़ तवज्जोह न दो क्यूंकि इब्लीस एक भोकने वाले कुत्ते की मानिन्द है अगर तुम उस को छेड़ोगे तो ज़ियादा शोर मचाएगा और अगर **ए'राज़**(1) करोगे तो वोह भी ख़ामोश हो जाएगा।

इब्लीस से हिफ़ाज़त की **तीसरी** तदबीर येह है कि ज़िक्रे इलाही की कसरत की जाए। सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

اِنَّ ذِكْرَ اللّٰهِ تَعَالٰی فِیْ جَنْبِ الشَّيْطَانِ كَالْاٰكِلَةِ فِیْ جَنْبِ ابْنِ اٰدَم

शैत़ान के लिये ख़ुदा तआ़ला का ज़िक्र इतना तकलीफ़ देह है जिस त़रह़ इन्सान के लिये ख़ारिश।

सुवाल : शैत़ान के मक्रो फ़रेब किस त़रह़ मा'लूम हो सकते हैं ?

जवाब : शैत़ान के मक्रो फ़रेब कई त़रह़ के हैं, अव्वल तो उस के वस्वसे हैं जो उस के तीर हैं जिन के ज़रीए़ वोह लोगों के क़ुलूब मजरूह़ करता है और उन वसाविस का सह़ीह़ इन्किशाफ़ ख़वात़िर और ख़वात़िर की अक़्साम मा'लूम करने से हो सकता है।

दूसरी चीज़ उस के ह़ीले हैं जो ब मन्ज़िला जाल के हैं जिन से लोगों के दिलों को फांसता है और उन की मा'रिफ़त, शैत़ान के धोके, उन के अवसाफ़ और उन के रास्ते मा'लूम करने से होती है, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन ख़वात़िर व वसाविस की तफ़्सील में कई बाब लिखे हैं और हम (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने इस सिलसिले में एक मुस्तक़िल किताब "**तल्बीसे इब्लीस**"

1 तवज्जोह नहीं।

नाम तस्नीफ़ की है और हमारी येह ज़ेरे तस्नीफ़ किताब **इख़्तिसार व ईजाज़**[1] के बाइस इन ख़वातिर व वसाविस वग़ैरा की तफ़्सीलात की मुतहम्मिल नहीं हो सकती लेकिन हम हर एक चीज़ को इस किताब में ऐसे इख़्तिसार के साथ बयान करते हैं कि अगर इन पर अ़मल कर लिया जाए तो काफ़ी हो जाएं।

ऐ अ़ज़ीज़ ! दिल में जो ख़त़रात आते हैं इन की अस्ल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर इन्सान के दिल पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर किया हुवा है जो उसे **नेकियों का इल्हाम करता है**[2] इस फ़िरिश्ते को **मुल्हिम**[3] कहते हैं और इस की दा'वत को इल्हाम। इस के मुक़ाबले में ख़ुदा की त़रफ़ से दिल पर एक शैत़ान मुसल्लत़ कर दिया गया है जो बुराई की त़रफ़ बुलाता है, उस शैत़ान को वस्वास और उस की दा'वत को वस्वसा कहते हैं। मुल्हिम इन्सान को नेकियों की त़रफ़ बुलाता है और वस्वास सिर्फ़ बुराइयों की त़रफ़, येह अकसर उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की राए है लेकिन मेरे शैख़ رَحِمَهُ اللّٰه ने फ़रमाया है कि शैत़ान बसा अवक़ात ब ज़ाहिर नेकी की दा'वत देता है मगर दर अस्ल यहां भी उस का मक़्सद बुराई की त़रफ़ लगाना होता है और वोह इस त़रह़ कि बड़ी नेकी की बजाए छोटी की त़रफ़ बुलाता है जिस से एक बड़े गुनाह करने का नुक़्सान नेकी के सवाब से ज़ियादा हो जैसे उ़ज्ब[4] वग़ैरा, तो ख़ुदावन्दे तआ़ला की त़रफ़ से इन्सान के दिल पर दो **दाई**[5] मुक़र्रर हैं। हर एक अपनी नोइय्यत की दा'वत में लगा हुवा है और इन्सान अपने दिल से दोनों की दा'वत को सुनता और मह़सूस करता है।

---

1 मुख़्तसर होने। 2 दिल में नेक बात डालता है। 3 इल्हाम करने वाला। 4 ख़ुद पसन्दी। 5 दा'वत देने वाले।

रिवायात में आया है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

”اِذَا وُلِدَ لِاِبْنِ اٰدَمَ مَوْلُوْدٌ قَرَنَ اللّٰهُ سُبْحَانَهٗ بِهٖ مَلَكًا وَ قَرَنَ الشَّيْطَانُ بِهٖ شَيْطَانًا وَالشَّيْطَانُ جَاثِمٌ عَلٰى اُذُنِ قَلْبِ اِبْنِ اٰدَمَ الْاَيْسَرِ وَالْمَلَكُ جَاثِمٌ عَلٰى اُذُنِهِ الْاَيْمَنِ فَهُمَا يَدْعُوَانِهٖ“(1)

जिस किसी इन्सान के घर बच्चा पैदा होता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के साथ एक फ़िरिश्ता लगा देता है और शैत़ान उस के साथ एक शैत़ान लगा देता है शैत़ान उस के दिल के बाएं कान में फूंकता रहता है और फ़िरिश्ता दाएं में, इस त़रह़ दोनों अपनी अपनी दा'वत में लगे रहते हैं।

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है : لِلشَّيْطَانِ لَمَّةٌ بِابْنِ اٰدَمَ وَ لِلْمَلَكِ لَمَّةٌ(2) शैत़ान भी अपनी दा'वत के लिये इन्सान के पास आता है और फ़िरिश्ता भी।

फिर एक शै और भी ह़क़ तआ़ला ने इन्सान की त़बीअ़त में रखी है जिस की वजह से वोह हर क़िस्म की शहवत और लज़्ज़त की त़रफ़ माइल हो जाता है, चाहे जाइज़ हो या नाजाइज़, इस तीसरी चीज़ का नाम **ख़्वाहिशे नफ़्स** है जो इन्सान को आफ़ात में मुब्तला करती है, तो येह तीन चीज़ें हैं जो इन्सान को मुख़्तलिफ़ उमूर की त़रफ़ बुलाती हैं।

फिर इस **मुक़द्दमे**(3) के बा'द जानना चाहिये कि ख़वात़िर वोह **आसार**(4) हैं जो बन्दे के दिल में पैदा होते हैं और उसे किसी काम के करने या न करने का हुक्म देते हैं, ख़त़रे के मा'ना हैं :

---

(1)......مسند امام احمد، مسند عبد الله بن مسعود، ٢/٢٨، حديث: ٣٦٤٨، بتغير۔

(2)......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة البقرة، ٤/٤٦٤، حديث: ٢٩٩٩۔

(3) तम्हीद (4) असरात।

"**इज़्तिराब**" चूंकि येह भी कभी दिल में आता है और कभी जाता है जिस त़रह़ हवा कि कभी आती है और कभी जाती है तो इस आने जाने के इज़्तिराब के बाइ़स इस को ख़त़रा कहते हैं।

ह़क़ीक़त में हर क़िस्म के ख़वात़िर का ख़ालिक़ अल्लाह तआ़ला ही है, अस्बाब व ज़राएअ़ की त़रफ़ "**मजाज़न**" **निस्बत होती है**[1] और ख़वात़िर कुल चार क़िस्म हैं :

एक वोह जो इब्तिदाअन अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से इन्सान के क़ल्ब में पैदा होते हैं उन को सिर्फ़ ख़वात़िर करते हैं।

दूसरे वोह जो इन्सानी त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ क़ल्ब में पैदा होते हैं उन को हवाए नफ़्स कहते हैं।

तीसरे वोह जो मुल्हिम फ़िरिश्ते की दा'वत के ज़रीए ह़क़ तआ़ला की जानिब से दिल में पैदा होते हैं, उन्हें इल्हाम के नाम से मौसूम करते हैं।

चौथे वोह जो शैत़ानी दा'वत से क़ल्बे इन्सानी में आते हैं उन्हें वस्वसा कहा जाता है और शैत़ान की त़रफ़ मन्सूब करते हुवे उन्हें शैत़ानी ख़त़रात भी कहते हैं, ख़ुलासा येह कि ख़वात़िर चार अक़्साम हैं जिन का ज़िक्र हुवा।

---

1 मजाज़न निस्बत का मा'ना येह है कि किसी लफ़्ज़ की निस्बत उस के ह़क़ीक़ी मा'ना की त़रफ़ नहीं की जाए बल्कि किसी वजह से ग़ैर ह़क़ीक़ी मा'ना की त़रफ़ कर दी जाए जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ (پ٣،البقرة:٢٦١)

"**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाएं सात बालें।" इस आयते मुबारका के तह़्त "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में है : उगाने वाला ह़क़ीक़त में अल्लाह ही है दाने की त़रफ़ उस की निस्बत मजाज़ी है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, सूरतुल बक़रह, तह़्तल आयत : 261, स. 92)

फिर येह भी मा'लूम होना चाहिये कि जो ख़त़रा बिला वासित़ा रब तआ़ला की जानिब से इब्तिदाअन दिल में आता है वोह दो त़रह़ का होता है कभी नेक होता है और कभी बुरा, अच्छा तो इकराम व इतमामे हुज्जत के लिये होता है, और बुरा आज़माइश और मशक़्क़त में डालने के लिये और जो **ख़त़रा**[1] मुल्हिम की जानिब से होता है वोह ख़ैर ही होता है क्यूंकि मुल्हिम को नसीह़त और **इरशाद**[2] के वासित़े ही मुक़र्रर किया गया है, और जो ख़त़रा शैत़ान की जानिब से होता है वोह बुरा ही होता है ताकि बन्दा इस के ज़रीए़ गुमराही में मुब्तला हो और राहे ह़क़ से फिसले और कभी इस्तिदराज के त़ौर पर या'नी धोके में डालने की ग़रज़ से बज़ाहिर नेक भी होता है और जो ख़त़रा क़ल्ब में हवाए नफ़्स से पैदा होता है वोह फ़ुज़ूल और बुरी चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ होता है ताकि बन्दा **अम्रे ख़ैर**[3] से रुका रहे। और मैं ने बा'ज़ सलफ़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से सुना है कि हवाए नफ़्स भी बा'ज़ अवक़ात इन्सान को नेक उमूर पर उभारती है मगर इब्लिस की त़रह़ मक़्सद इस से भी बुराई की त़रफ़ लगाना होता है। येह है ख़वात़िरे अरबआ़ जिन का मलह़ूज़ रखना ज़रूरी है।

फिर तीन और उमूर को भी जानना अशद्द ज़रूरी है जो अस्ल मक़्सूद हैं :

एक येह कि ख़त़रए शर और ख़ैर में क्या फ़र्क़ है? दूसरे येह कि ख़त़रए शर, रह़मानी, शैत़ानी और नफ़्सानी में क्या इम्तियाज़ है। तीसरे येह कि ख़त़रए ख़ैर इब्तिदाई रह़मानी या इल्हामी या शैत़ानी और नफ़्सानी में क्या फ़र्क़ है? ताकि ख़त़रए ख़ैर रह़मानी और इल्हामी की इत्तिबाअ़ की जाए और नफ़्सानी व शैत़ानी से इजतिनाब किया जाए।

---

1 दिल में आने वाला ख़याल। 2 हिदायत। 3 अच्छे काम।

ख़त्रए ख़ैर और शर में फ़र्क़ का त़रीक़ा उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने येह लिखा है कि जो ख़त्रा क़ल्ब में आए उस का **मीज़ाने शरअ़**[1] से मुवाज़ना किया जाए, अगर उसूले शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो वोह ख़त्रा दुरुस्त और सह़ीह़ है वरना ग़लत़। अगर मीज़ाने शरअ़ से फ़र्क़ मा'लूम न हो सके तो सलफ़े सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की सीरते मुत़ह्हरा से मुवाज़ना किया जाए अगर उन की सीरत के मुत़ाबिक़ हो तो ख़ैर है वरना शर, अगर सीरते अस्लाफ़ से भी पता न चल सके तो उस को अपने नफ़्स और ख़्वाहिश से परखा जाए, अगर नफ़्स उस से त़बअ़न नफ़रत करे (किसी ख़ारिजी ख़ौफ़ व डर के बाइ़स नफ़रत न करे) तो वोह नेक है और अगर क़ल्ब में आने वाला ख़त्रा ऐसा हो कि नफ़्स अपनी त़बीअ़त और **सिरिश्त**[2] के ए'तिबार से उस की त़रफ़ माइल हो **अल्लाह** तआ़ला से किसी उम्मीद या तरग़ीब की बिना पर माइल न हो तो वोह ख़त्रए शर है क्यूंकि नफ़्स हमेशा बुराई की त़रफ़ ही माइल होता है क्यूंकि नफ़्स की फ़ित़रत में बुराई है। जब तुम इन मज़्कूरा बाला त़रीक़ों के ज़रीए ख़ूब कोशिश, एह़तियात़ और ध्यान के साथ ख़वात़िरे मज़्कूरा में फ़र्क़ व इम्तियाज़ का इरादा करोगे तो तुम पर بفضلہ تعالٰی नेक और बद ख़त्रे के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाएगा।

दूसरे अम्र में फ़र्क़ मा'लूम करने का त़रीक़ा हमारे उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने येह बताया है कि अगर तुम येह मा'लूम करना चाहो कि येह ख़याल और ख़त्रा शैत़ानी या रह़मानी या नफ़्सानी है तो इस ख़याल को तीन त़रह़ से जांचो, अगर वोह ख़याल और ख़त्रा पुख़्ता और मज़बूत़ और रासिख़ हो तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से या नफ़्स की जानिब से है और अगर रासिख़ न हो बल्कि इस में इज़्त़िराब और तरद्दुद हो तो ऐसा ख़याल शैत़ानी है।

---

1 शरीअ़त के बयान कर्दा उसूल व क़वाइ़द। 2 मिज़ाज।

बा'ज़ बुज़ुर्ग (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाया करते थे कि हवाए नफ़्स चीते की मानिन्द है जब तक उसे सख़्त शिकस्त न दी जाए और उस के साथ शिद्दत का मुआ़मला न किया जाए मग़्लूब व मरऊ़ब नहीं होगी या **ख़ारिजिय्युल अ़क़ीदा**(1) शख़्स की त़रह़ है कि जब तक ख़ारिजी को मारा और क़त्ल न कर दिया जाए अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता, और शैत़ान भेड़िये की मानिन्द है अगर तुम उस को एक जानिब से रोको तो दूसरी त़रफ़ से आ घुसता है।

ख़याले शर में इम्तियाज़ का दूसरा त़रीक़ा येह है कि अगर वोह गुनाह करने के बा'द दिल में आए तो वोह रह़मानी होगा, ताकि इस गुनाह की ज़िल्लत व ह़क़ारत दिल में आए। **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है :

كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (2)

और कुछ नहीं बल्कि गुनाहों की वजह से उन के दिलों पर ज़ंग लग चुका है।

मेरे शैख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाया करते थे कि गुनाह रफ़्ता रफ़्ता **क़सावते क़ल्बी**(3) में मुब्तला कर देते हैं, अव्वल अव्वल तो दिल में बुरे ख़त़रात आते हैं और फिर **रैन**(4) और ज़ंग लग जाता है।

और बुरा ख़याल गुनाह के बा'द मुत्तसिल दिल में न आए तो ऐसा ख़याल शैत़ानी होता है। गुमराह करने के लिये इब्लीस अकसर बुरे ख़यालात दिल में डालता है और अगर ऐसा ख़याल

---

1 एक गुमराह फ़िर्क़े वाले। 2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने। (پ ۳۰، المطففین:۱۴)
3 दिल की सख़्ती। 4 कदूरत।

हो कि ज़िक्रे ह़क़ से कमज़ोर या कम न हो तो समझ लो कि ऐसा ख़याल नफ़्सानी है और अगर ज़िक्र से कमज़ोर या कम हो तो ऐसा ख़याल शैत़ानी है, जैसा कि क़ुरआने मजीद के इन अल्फ़ाज़ की तफ़्सीर में कहा गया है : مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ[1] कि इब्लीस इन्सान के दिल के साथ लगा रहता है, बन्दा जब ज़िक्रे ख़ुदा करता है तो वोह अ़लाह़िदा हो जाता है और जब ग़फ़्लत करता है तो उस के दिल में **वस्वसा अन्दाज़ी करता**[2] है।

ह़क़ तआ़ला या फ़िरिश्ते की जानिब से बन्दे के क़ल्ब में जो ख़याल आता है उन दोनों में फ़र्क़ व इम्तियाज़ की पहचान येह है कि अगर वोह ख़याल पुख़्ता और क़वी हो तो ऐसा ख़याल रह़मानी है और अगर उस में तरद्दुद व इज़्त़िराब हो तो **मलकी**[3] है क्यूंकि फ़िरिश्ते को **नासेह़**[4] बना कर इन्सान के दिल पर मुक़र्रर किया गया है वोह हर त़रह़ बन्दे को नेकियों की त़रफ़ माइल करता है और नेक उमूर सामने लाता है ताकि इन्हें क़बूल करे और इन पर अ़मल करे।

फ़र्क़ व इम्तियाज़ की दूसरी सूरत येह है कि अगर ख़याल त़ाअ़त व मुजाहदे के बा'द दिल में आए तो रह़मानी है,

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَالَّذِیۡنَ جَاہَدُوۡا فِیۡنَا لَنَہۡدِیَنَّہُمۡ سُبُلَنَا ؕ[5]

जो लोग हम तक पहुंचने की कोशिश करते हैं हम उन के लिये ज़रूर अपने विसाल की राहें कुशादा कर देते हैं।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले और दबक रहे। (پ۳۰، الناس:٤) 2 वस्वसा डालता। 3 फ़िरिश्ते की त़रफ़ से। 4 नसीह़त करने वाला। 5 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे। (پ۲۱، العنكبوت:٦٩)

और एक मक़ाम पर फ़रमाया :

وَالَّذِیْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى (1)

*जो लोग हिदायत याफ़्ता हैं **अल्लाह** तआ़ला उन की हिदायत में और ज़ियादती करता है।*

और अगर नेक ख़याल ताअ़त व मुजाहदे के बा'द क़ल्ब में पैदा न हो बल्कि इब्तिदाअन पैदा हो तो वोह मलकी होता है और अगर नेक ख़याल बातिनी उसूल व आ'माल के मुतअ़ल्लिक़ हो तो वोह ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से होगा और अगर ज़ाहिरी फ़ुरूअ़ व आ'माल के मुतअ़ल्लिक़ हो तो फ़िरिश्ते की त़रफ़ से है क्यूंकि अकसर उ़लमा के नज़्दीक फ़िरिश्ते को बातिनी उमूर की मा'रिफ़त नहीं।

और जो नेक ख़याल इब्लीस की जानिब से होता है और जिस से दर ह़क़ीक़त उस का मक़्सूद गुनाह में मुब्तला करना होता है, तो हमारे शैख़ رَحمۃُ اللہِ تعالٰی ने इस की पहचान येह बताई है कि अगर इस से दिल में **ख़ुशी** पैदा हो, **ख़ौफ़** पैदा न हो, **उ़ज्लत**(2) पैदा हो, **तह़म्मुल** व **इत़मीनान** पैदा न हो, दिल में **बे ख़ौफ़ी** आए, **डर** न आए और आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ **ग़फ़्लत** पैदा हो, **बसीरत** पैदा न हो, तो ऐसा ख़याल शैत़ानी है इस लिये इस से इजतिनाब करो और अगर इस के ख़िलाफ़ हो या'नी इस से क़ल्ब में ख़ुशी के बजाए ख़ौफ़ पैदा हो, उ़ज्लत के बजाए तह़म्मुल पैदा हो, बे ख़ौफ़ी के बजाए डर पैदा हो और आख़िरत से ग़फ़्लत के बजाए

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने राह पाई **अल्लाह** ने उन की हिदायत और ज़ियादा फ़रमाई। (پ۲۶، محمد:۱۷) 2 जल्दबाज़ी।

उस की याद पैदा हो, तो येह ख़याल रह़मानी है। मैं कहता हूं यहां ख़ुशी से मुराद एक क़िस्म का सुकून है जिस में बसीरत नहीं होती और बा'ज़ दफ़्आ़ ज़िक्र से भी नशात़ व फ़रह़त पैदा होती है इस क़िस्म की ख़ुशी व फ़रह़त बुरी नहीं मगर इस के मवाक़ेअ़ मह़दूद हैं।

एक ह़दीस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

"اَلْعَجَلَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ اِلَّا فِىْ خَمْسٍ مَوَاضِعَ تَزْوِيْجُ الْبِكْرِ اِذَا اَدْرَكَتْ وَ قَضَاءُ الدَّيْنِ اِذَا وَجَبَ وَ تَجْهِيْزُ الْمَيِّتِ اِذَا مَاتَ وَ قِرَى الضَّيْفِ اِذَا نَزَلَ وَ تَوْبَةُ الذَّنْبِ اِذَا اَذْنَبَ"

पांच कामों के इ़लावा बाक़ी तमाम कामों में उ़ज्लत शैत़ानी फ़े'ल है, वोह पांच काम येह हैं : जब लड़की बालिग़ हो जाए तो जल्दी बियाह दी जाए, जब क़र्ज़ वाजिब हो तो जल्दी अदा कर दिया जाए, जब कोई मरे जल्द दफ़्न किया जाए, जब मेहमान आए तो उस की मेहमान नवाज़ी में जल्दी की जाए और गुनाह सरज़द होने पर जल्दी तौबा की जाए।

और ख़ौफ़ से मुराद येह है कि बन्दे के दिल में येह डर हो कि शायद मैं इरादे को अ़मली त़ौर पर कमा ह़क़्क़ुहू अदा कर सकूं या न, और शायद दरबारे ईज़दी में येह क़बूल हो या न हो, और बसीरत का मत़लब येह है कि इस इरादे में ग़ौर व तअम्मुल कर ले कि अच्छा और ख़ैर है या कि बुरा है और आख़िरत में इस पर सवाब मिलने की उम्मीद है या नहीं।

येह तीन उमूर ज़रूरी थे जिन की मा'रिफ़त से क़ल्बी ख़वात़िर व ख़यालात में फ़र्क़ व इम्तियाज़ मा'लूम हो सकता है, इस लिये इन्हें ज़ेहन नशीन करना ज़रूरी है और जहां तक हो सके इन की तह तक पहुंचना ज़रूरी है क्यूंकि इन तीन उमूर की मा'रिफ़त व वाक़िफ़िय्यत उ़लूमे लत़ीफ़ा व अस्रारे शरीफ़ा में से है।

बाक़ी रहे इब्लीस के धोके, जिन के ज़रीए़ बन्दे को त़ाअ़ात से रोकने की कोशिश करता है, वोह सात क़िस्म हैं :

(1) अव्वल त़ाअ़ात से रोकने की कोशिश करता है तो अगर अल्लाह तआ़ला बन्दे को बचा ले और बन्दा उस के मुत़ालबे को इस त़रह़ रद्द कर दे कि "मुझे त़ाअ़ात व इ़बादात की सख़्त ज़रूरत है क्यूंकि येह सफ़रे आख़िरत का **तौशा**[1] हैं और बिग़ैर तौशा सफ़र तै़ नहीं हो सकता।"

तो फिर इब्लीस इस त़रह़ गुमराह करता है कि (2) चलो आज रहने दो, येह काम कल कर लेना। अगर बन्दा इस से भी बच जाए और इब्लीस की बात को इस त़रह़ ठुकरा दे कि मेरी मौत मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और दूसरे येह कि अगर आज का काम कल पर छोड़ा तो कल का काम भी तो है वोह किस दिन करूंगा ? क्यूंकि कल का काम अ़लाह़िदा है। जब इब्लीस यहां भी ना उम्मीद होता है तो कहता है कि (3) जल्दी जल्दी करो ताकि फ़ुलां फ़ुलां काम के लिये फ़ारिग़ हो सको। अगर बन्दा उस के इस **ह़र्बे**[2] से भी बच जाए और इस त़रह़ रद्द कर दे कि क़लील नेकी इत़मीनान व सुकून के साथ उस नेकी से बेहतर है जो मिक़दार में ज़ियादा मगर **नाक़िस** हो।

अगर यहां भी वोह नाकाम हो तो बन्दे को (4) **रिया**[3] में मुब्तला करने की कोशिश करता है, अगर इस वक़्त भी बन्दा अल्लाह तआ़ला की इमदाद व ह़िफ़ाज़त से बच जाए और येह

---

(1) ज़ादेराह। (2) वार। (3) रियाकारी के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**रियाकारी**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

कह कर वस्वसए रिया को **मुस्तरद**[1] कर दे कि "मैं किसी और की नुमाइश के लिये इबादत क्यूं करूं ? क्या सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला का देखना मेरे वासिते़ काफ़ी नहीं है ? तो फिर वोह (5) उ़ज्ब[2] में मुब्तला करने की कोशिश करता है, और बन्दे को अज़ रूए वस्वसा कहता है कि "तू कितना बा अ़ज़्मत और **शब बेदार**[3] है और तू कितनी फ़ज़ीलत का मालिक है !" अगर ह़क़ तआ़ला के फ़ज़्लो करम से बन्दा अब भी मह़फ़ूज़ रहे और उ़ज्ब में मुब्तला न हो बल्कि इब्लीस के इस वस्वसे को इस त़रह़ रद्द कर दे कि "इस में मेरी क्या बुज़ुर्गी है येह तो सब **अल्लाह** तआ़ला का एह़सान है जिस ने मुझ गुनहगार को येह तौफ़ीक़ दी और येह भी उस का करम है कि मेरे ह़क़ीर व नाक़िस आ'माल को शरफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ा। अगर उस का फ़ज़्लो करम न होता तो मेरे बेह़द गुनाहों के मुक़ाबले में मेरे इन क़लील आ'माल की क्या वक़्अ़त थी ?"

अगर इब्लीस के येह मज़्कूरा ह़र्बे नाकाम हो जाएं तो फिर एक छटे (6) रास्ते से आता है और येह सब से ज़ियादा ख़त़रनाक है, बहुत ही दाना और होशयार शख़्स के सिवा कोई इस के धोके से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता और न ही इस से वाक़िफ़ हो सकता है, चुनान्चे, इब्लीस येह कहता है कि "ऐ नेक बन्दे ! तू लोगों से पोशीदा पोशीदा नेक आ'माल में कोशिश करता है, **अल्लाह** तआ़ला ख़ुद ब ख़ुद तेरे आ'माले ख़ैर को लोगों में **मुश्तहर**[4] कर देगा।"

येह कहने से उस का मक़्सूद रिया में मुब्तला करना होता है अगर **अल्लाह** तआ़ला की इनायत से बन्दा इब्लीस के इस **मुग़ालते़**[5] से भी बच जाए और उस के इस वस्वसे को इस त़रह़ नाकाम बना

1....रद्द। 2.....ख़ुद पसन्दी। 3....रातों को जाग कर इबादत करने वाला।
4....मश्हूर। 5.....धोके।

दे कि "मैं इस चीज़ का **मुतमन्नी**[1] नहीं हूं कि मेरी नेकियां अ़वाम में मश्हूर हों बल्कि जो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा है वोही दुरुस्त और ह़क़ है, चाहे ज़ाहिर करे चाहे ज़ाहिर न करे, वोह मुझे कोई मर्तबा अ़ता करे या न करे सब उस की मरज़ी है। लोगों के सामने इज़्हार या अ़दमे इज़्हार मेरे नज़्दीक **मसावी**[2] है क्यूंकि लोगों के हाथ में मेरा नफ़्अ़ नुक़्सान नहीं है।"

इस त़रह़ गुमराह करने से मायूस होने के बा'द इब्लीस यूं गुमराह करता है कि **(7)** "इन्सान के नेक व बद होने के मुतअ़ल्लिक़ रोज़े अज़ल में फ़ैसला हो चुका है, जो उस रोज़ बुरों में हो गया वोह बुरा ही रहेगा और जो अच्छों में हो गया वोह अच्छा ही रहेगा तुम्हारे आ'माल नेक व बद से फ़ैसलए अज़ली में हरगिज़ फ़र्क़ नहीं आ सकता !"

अगर **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को इस वस्वसए शैत़ानी से भी बचा ले और बन्दा इब्लीसे लईन को यूं जवाब दे कि मैं तो ख़ुदा तआ़ला का बन्दा हूं और बन्दे का काम है अपने मौला के हुक्म की ता'मील और **अल्लाह** तआ़ला चूंकि रब्बुल आ़लमीन है इस लिये जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे और फिर इ़बादत व त़ाअ़त किसी त़रह़ भी **मुज़िर**[3] नहीं क्यूंकि अगर मैं इ़ल्मे इलाही में **सईद**[4] हूं तो फिर भी और ज़ियादा सवाब का मोह़ताज हूं और अगर مَعَاذَاللہ इ़ल्मे इलाही में मेरा नाम बद बख़्तों में लिखा हो तो भी नेक आ'माल करने से अपने ऊपर येह मलामत तो नहीं करूंगा कि मुझे **अल्लाह** तआ़ला त़ाअ़त व इ़बादत न करने पर सज़ा देगा और कम अज़ कम येह तो है कि नाफ़रमान बन कर जहन्नम में जाने की निस्बत **मुत़ीअ़**[5] बन कर जाना बेहतर है लेकिन येह तो

---

1 ख़्वाहिश मन्द। 2 बराबर। 3 नुक़्सान देह। 4 सआ़दत मन्द। 5 इत़ाअ़त करने वाला।

सब महज़ **एह्तिमालात**[1] हैं वरना उस का वा'दा ह़क़ है और उस का कलाम क़त़अ़न सच्चा है और अल्लाह तआ़ला ने तो जा बजा त़ाआ़त व इ़बादात की बजा आवरी पर सवाबे **जमील**[2] के वा'दे फ़रमाए हैं, तो जो शख़्स ईमान व त़ाअ़त के साथ रब तआ़ला के दरबार में ह़ाज़िर होगा, वोह हरगिज़ दोज़ख़ में न जाएगा बल्कि ख़ुदा तआ़ला की मेहरबानी और आ'माले सालिह़ा की वजह से जन्नते फ़िरदौस में اِنْ شَآءَ اللّٰہ जगह पाएगा लेकिन ह़क़ीक़त में येह दुख़ूल भी वा'दए ख़ुदावन्दी की वजह से होगा। इसी सिदक़े वा'दा का इज़्हार करने के लिये अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में सईद लोगों के इस **मक़ूला**[3] को नक़्ल फ़रमाया है :

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ صَدَقَنَا وَعۡدَہٗ[4] *सब ता'रीफ़े ह़क़ तआ़ला के लिये हैं जिस ने हम से अपना वा'दा पूरा कर दिया।*

लिहाज़ा ख़ुदा तुम पर रह़्म करे, तुम्हें इब्लीस के ह़ीलों से बचने में होशयार और चोकन्ना रहना चाहिये क्यूंकि मुआ़मले की नज़ाकत तुम्हारे सामने है और इसी पर अपने बाक़ी अह़वाल व अफ़्आ़ल को भी **क़ियास**[5] कर लो और हर वक़्त अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब करते रहो और उस की पनाह में रहो क्यूंकि हर मुआ़मला उस के हाथ में है और तौफ़ीक़ अ़त़ा करने वाला भी वोही है। وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

1.....शको शुबा की बातें। 2.....बेहतरीन अज्र। 3.....क़ौल।
4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया। (پ ۲۴، الزمر:۷۴) 5.....अन्दाज़ा।

चौथा आ़इक़ (मानेअ़) "नफ़्स"

फिर ऐ इबादत के त़ालिब ! (अल्लाह तआ़ला तुझे और हमें हर लग़ज़िश से मह़फ़ूज़ रखे) इस नफ़्से अम्मारा की शरारतों से बचना भी बहुत ही ज़रूरी है क्यूंकि येह निहायत नुक़्सान देह दुश्मन है और इस की आफ़ात निहायत सख़्त हैं, इस का इलाज बहुत मुश्किल अम्र है, इस की बीमारी निहायत ख़त़रनाक बीमारी है और इस की दवा सब दवाओं से दुश्वार है।

नफ़्स का इस क़दर मुज़िर्र और ख़त़रनाक होना दो वजह से है : **अव्वल :** येह कि नफ़्स घर का चोर है, और चोर जब घर में ही छुपा हो तो इस से मह़फ़ूज़ रहना बहुत मुश्किल होता है और बहुत ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाता है, नफ़्स की शरारतों के मुतअ़ल्लिक़ किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

نَفْسِیُ اِلٰی مَا ضَرَّنِیُ دَاعِی   تُکَثِّرُ اَسْقَامِیُ وَاَوُجَاعِیُ

کَیُفَ اَحْتِیَالِیُ مِنُ عَدُوِّیُ اِذَا   کَانَ عَدُوِّیُ بَیُنَ اَضْلَاعِیُ

तर्जमा : (1) नफ़्स मुझे **मज़र्रत रसां**[1] कामों की त़रफ़ बुलाता है और मेरी बीमारियों और अमराज़ को ज़ियादा करता रहता है।

(2) उस दुश्मन से बचने की क्या तदबीर हो सकती है जो दोनों पहलूओं के दरमियान छुपा बैठा है।

दूसरी वजह येह है कि नफ़्स एक मह़बूब दुश्मन है और इन्सान को जब किसी से मह़ब्बत होती है तो उस के ड़यूब नज़र नहीं आते बल्कि मह़ब्बत की वजह से मह़बूब के ड़यूब से अन्धा रहता है, एक

1 नुक़्सान देह।

शाइर ने इस चीज़ को मुन्दरिजए ज़ैल दो शे'रों में बयान किया है :

وَلَسْتَ تَرٰى عَيْبًا لِذِى الْوِدِّ وَالْاِخَا   وَ لَا بَعْضَ مَا فِيْهِ اِذَا كُنْتَ رَاضِيًا

وَ عَيْنُ الرِّضَا عَنْ كُلِّ عَيْبٍ كَلِيْلَةٌ   وَ لٰكِنَّ عَيْنَ السُّخْطِ تُبْدِى الْمَسَاوِيَا

तर्जमा : (1) जब तेरी किसी से दोस्ती और उस से भाईचारा होता है और तू उस से राज़ी होता है तो तुझे उस का कोई ऐ़ब नज़र नहीं आता।

(2) रिज़ा और प्यार वाली आंख हर ऐ़ब से अन्धी होती है लेकिन दुश्मन आंख को बुराइयां ही बुराइयां दिखाई देती हैं।

तो जब इन्सान अपनी हर **क़बाह़त**[1] को नज़्रे **इस्तिह़सान**[2] से देखे और नफ़्स के उ़यूब से आगाह न हो जो हर वक़्त इन्सान के साथ अ़दावत और नुक़्सान रसानी में मसरूफ़ है, तो ऐसे शख़्स पर अगर ख़ुदा तआ़ला की रह़मत और उस का फ़ज़्ल न हुवा तो अ़न क़रीब हलाकत और ज़िल्लत के गहरे गढ़े में जा गिरेगा।

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू इस एक नुक्ते पर ही ग़ौर कर, येही तेरे लिये काफ़ी है, वोह नुक्ता येह है कि जब तू माज़ी पर नज़र करेगा तो तुझे मा'लूम होगा कि अव्वल रोज़ से जो ज़िल्लत व ख़्वारी जो तबाही जो गुनाह और जो आफ़त व मुसीबत दुन्या में वाक़ेअ़ हुई और क़ियामत तक होगी सब नफ़्स के बाइ़स ही हुई और होगी, बा'ज़ बुराइयां अकेले नफ़्स के बाइ़स और बा'ज़ नफ़्स की मुआ़वनत व शिर्कत के ज़रीए़, **अल्लाह** तआ़ला की सब से अव्वल नाफ़रमानी इब्लीस ने की और इस का बाइ़स **तकब्बुर व ह़सद**[3] था जब

1.....बुराई। 2.....अच्छी निगाह। 3.....**ह़सद** और **तकब्बुर** के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ दो किताबें "**तकब्बुर**" व "**ह़सद**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

इब्लीस ने हुक्मे इलाही के आगे तकब्बुर किया और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ह़सद किया तो उस की अस्सी हज़ार बरस की इ़बादत ज़ाएअ़ हो गई और वोह हमेशा के लिये ज़लालत व गुमराही के गहरे समन्दर में ग़रक़ाब हो गया, उस वक़्त न दुन्या थी न मख़्लूक़ और न ही कोई और इब्लीस था जो इस इब्लीस को गुमराह करता, लिहाज़ा इब्लीस के अन्दर तकब्बुर व ह़सद उस के **नफ़्स** की वजह से सादिर हुवा।

इब्लीस की **मर्दूदिय्यत**(1) के बा'द ह़ज़रते आदम व ह़व्वा عَلَيْهِمَا السَّلَام से जो **लग़्ज़िश**(2) ज़ुहूर पज़ीर हुई उस में भी चाहते नफ़्स कारगर थी। इब्लीस ने क़सम खा कर कहा कि दाना खा लेने के बा'द तुम्हें हमेशा के लिये जन्नत में रहना नसीब हो जाएगा। तो दोनों बक़ाए ह़यात को अ़ज़ीज़ गिरदानते हुवे फिसल गए। तो येह लग़्ज़िश भी (जो बा'द में बिल्कुल मुआ़फ़ हो गई) नफ़्स की मुआ़वनत व शिर्कत से वाक़ेअ़ हुई और दोनों ह़ज़रात इस बिना पर अल्लाह तआ़ला के जवारे **रह़मत**(3) व क़ुर्ब से दूर कर दिये गए और जन्नते फ़िरदौस से इस **फ़ानी**(4) ह़क़ीर, खोटी, हलाकत में डालने वाली दुन्या की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दिये गए और इस लग़्ज़िश के बाइ़स उन्हें बहुत कुछ **दिक़्क़तें**(5) पेश आईं और उन की अवलाद भी क़ियामत तक दुन्या के फन्दों में मुब्तला हो गई।

फिर **हाबील**(6) का क़त्ल भी बुख़्ल व ह़सद की वजह से ही हुवा, और **हारूत व मारूत**(7) भी शहवत के सबब फ़ितने में मुब्तला हुवे, और इसी त़रह़ क़ियामत तक नफ़्स की वजह से **नाक़ाबिले गुफ़्ता बेह**(8) वाक़िआ़त रू नुमा होते रहेंगे। मख़्लूक़

---

(1) मर्दूद होने। (2) इजतिहादी ख़त़ा। (3) यहां लफ़्ज़ "**पड़ोस**" को "**जवारे रह़मत**" से बदल दिया है। (इ़ल्मिय्या) (4) ख़त्म हो जाने वाली। (5) मुश्किलात। (6) ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बेटे। (7) येह दो फ़िरिश्ते हैं। (8) ना क़ाबिले बयान।

में जो फ़ित्ने, जो ख़राबियां, जो गुमराहियां और जो गुनाह वाक़ेअ़ होते हैं और होते रहेंगे उन की बुन्याद नफ़्स और नफ़्स की ख़्वाहिश ही होती है, अगर येह न होता तो मख़्लूक़ ख़ैरिय्यत और सलामती से रहती, जब नफ़्स की अ़दावत इस ह़द तक ख़त़रनाक है तो आ़क़िल को चाहिये कि नफ़्स की शरारतों से बचाव का एहतिमाम करे। (وَ اللّٰهُ الْهَادِی)

सुवाल : तो ऐसे दुश्मन से ह़िफ़ाज़त में रहने का ह़ीला और तदबीर क्या है ? इस की वज़ाह़त फ़रमाइये ताकि इस के मुत़ाबिक़ अ़मल किया जा सके।

जवाब : हम येह बयान कर चुके हैं कि नफ़्स का मुआ़मला सब से ज़ियादा सख़्त है क्यूंकि इसे बिल्कुल ख़त्म करना भी ह़िक्मते इलाही के ख़िलाफ़ है क्यूंकि येह इबादत के सिलसिले में बन्दों की सुवारी और ज़रीआ़ है।

कहते हैं किसी **आ'राबी**[1] ने अपने दोस्त के लिये दुआ़ए ख़ैर की और कहा कि "**अल्लाह** तआ़ला तेरे हर दुश्मन को ज़लील करे, सिवाए नफ़्स के।" क्यूंकि न तो उसे बिल्कुल ख़त्म किया जा सकता है क्यूंकि इस में भी नुक़्सान है तो दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना ज़रूरी है कि **कस्बे ह़सनात**[2] के लिये इस को कुव्वत और इस की तर्बिय्यत करो और बुराइयों से मह़फ़ूज़ रहने के लिये इस को ज़ईफ़ व लाग़िर भी रखो और **बन्दिश**[3] में भी।

इस बयान से वाज़ेह़ हुवा कि नफ़्स का इ़लाज बहुत मुश्किल अम्र और बड़ी दिक़्क़ते नज़र की ज़रूरत है हम येह भी बयान कर चुके हैं कि इस को तक़्वा और वरअ़ की लगाम दिये रखो, ताकि कस्बे ह़सनात और गुनाहों से ह़िफ़ाज़त दोनों फ़ाइदे ह़ासिल हों।

सुवाल : नफ़्से अम्मारा[4] तो बहुत ही सरकश, ज़िद्दी और बद फ़ित़रत

1 देहाती। 2 नेकियों के ह़ुसूल। 3 क़ैद। 4 बुराई पर उभारने वाला नफ़्स।

शै है, इस का लगाम से क़ाबू में आना मुश्किल है इस लिये और कौन सा ह़ीला हो सकता है जिस से हम इस को **ज़ेर**(1) कर सकें?

जवाब : तुम्हारा येह **इश्काल**(2) दुरुस्त है, वाक़ेई येह इन्तिहाई सरकश है, मगर इस का **ह़ीला**(3) येह है कि इसे बहुत ज़लीलो ख़्वार कर के रखा जाए ताकि लगाम में आ सके।

उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) ने फ़रमाया है कि नफ़्स को ख़्वार और उस के ज़ोर को तीन चीज़ों से तोड़ा जा सकता है :

अव्वल : येह कि उसे शहवात से रोका जाए क्यूंकि अड़यल हैवान को जब चारा कम मिलता है तो नर्म हो जाता है।

दूसरी : चीज़ येह कि इबादात का भारी बोझ उस पर लाद दिया जाए क्यूंकि गधे को जब चारा कम दिया जाए और बोझ ज़ियादा लादा जाए तो लाज़िमी तौर पर अपनी शैख़ी छोड़ देता है और **मुत़ीअ़ व मुन्क़ाद**(4) हो जाता है।

तीसरी : चीज़ येह है कि हर वक़्त रब तआ़ला से इमदाद त़लब करता रहे कि वोह नफ़्स के शरो फ़साद से बचाए रखे, तुम ने कुरआने ह़कीम में ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) का येह इरशाद नहीं पढ़ा :

اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ (5)

नफ़्स तो हमेशा बुराइयों का हुक्म ही देता है, हां जिस पर अल्लाह तआ़ला का रह़्म हो वोही मह़फ़ूज़ रहता है।

1....क़ाबू। 2....मुश्किल पेश करना। 3....त़रीक़ा। 4....फ़रमां बरदार।

5 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रह़्म करे। (پ ۱۳، یوسف:۵۳)

जब तुम इन तीन बातों पर कारबन्द हो जाओगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعَالٰی नफ़्से सरकश मुत़ीअ़ व मुन्क़ाद हो जाएगा। उस वक़्त तुम्हें इस को ज़ेर करने और लगाम देने में जल्दी करनी चाहिये ताकि आयिन्दा के लिये इस की शरारतों से मह़फ़ूज़ रह सको।

सुवाल : ज़रा तक़्वा की वज़ाह़त भी फ़रमा दें ताकि हम तक़्वा की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ हो जाएं ?

जवाब : ऐ अ़ज़ीज़ ! अव्वल तुझे येह जानना चाहिये कि तक़्वा एक नादिर ख़ज़ाना है अगर तुम इस ख़ज़ाने को पा लेने में कामयाब हो गए तो तुम्हें इस में बेश क़ीमत मोती व जवाहिरात मिलेंगे और इ़ल्म व दौलते रूह़ानी का बहुत बड़ा ख़ज़ाना हाथ लगेगा, रिज़्क़े करीम तुम्हारे हाथ आ जाएगा, तुम बहुत बड़ी कामयाबी ह़ासिल कर लोगे, बहुत बड़ी ग़नीमत पा लोगे और मुल्के अ़ज़ीम (जन्नत) के मालिक बन जाओगे, यूं समझो कि दुन्या व आख़िरत की भलाइयां तक़्वा में जम्अ़ कर दी गई हैं। तुम ज़रा क़ुरआने ह़कीम में तो ग़ौर करो कि कहीं इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो हर क़िस्म की ख़ैरो बरकत के मालिक बन जाओगे।" कहीं तक़्वा इख़्तियार करने पर अज्रो सवाब के वा'दे फ़रमाए गए हैं और कहीं फ़रमाया गया कि सआ़दत का ज़रीआ़ तक़्वा व परहेज़गारी इख़्तियार करना है। मैं यहां क़ुरआने ह़कीम से तक़्वा के बारह फ़वाइद बयान करता हूं :

﴾1﴿ मुत्तक़ी शख़्स की रब तआ़ला ह़म्दो सना करता है, इरशादे रब्बानी है :

وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ (1)

अगर तक़्वा और सब्र इख़्तियार करोगे तो बेशक येह बा हिम्मत कामों में से है।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो येह बड़ी हिम्मत का काम है। (پ٤،ال عمرٰن:١٨٦)

﴾2﴿ मुत्तक़ी शख़्स दुश्मनों से मामून व मह़फ़ूज़ रहता है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَاِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا لَا یَضُرُّكُمۡ كَیۡدُهُمۡ شَیۡــًٔا (1)

अगर तुम तक़्वा व सब्र इख़्तियार करोगे तो तुम्हें मुख़ालिफ़ों के मक्रो फ़रेब कुछ नुक़्सान न दे सकेंगे ।

﴾3﴿ मुत्तक़ी शख़्स की **अल्लाह** तआ़ला ताईदो इमदाद फ़रमाता है, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّالَّذِیۡنَ هُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾ (2)

*बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुत्तक़ी और नेकूकार लोगों के साथ है ।*

एक जगह फ़रमाया :

وَاللّٰهُ وَلِیُّ الۡمُتَّقِیۡنَ ﴿۱۹﴾ (3)

*और **अल्लाह** मुत्तक़ियों का ह़िमायती और कारसाज़ है ।*

﴾4﴿ अहले तक़्वा आख़िरत की हौलनाकियों और वहां के **शदाइद**[(4)] से नजात में रहेंगे और दुन्या में उन्हें रिज़्क़े ह़लाल नसीब होगा, चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

مَنۡ یَّتَّقِ اللّٰهَ یَجۡعَلۡ لَّهٗ مَخۡرَجًا ﴿۲﴾ وَّیَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ (5)

*जो शख़्स तक़्वा व परहेज़गारी को अपना शिआ़र बनाएगा **अल्लाह** तआ़ला उसे हर क़िस्म की गुमराही से बचने का रास्ता मुहय्या कर देगा, और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अ़ता करेगा जहां से उसे वहमो गुमान भी न होगा ।*

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किये रहो तो उन का दाऊं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा । (پ٤،ال عمرٰن:١٢٠) (2) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं । (پ١٤،النحل:١٢٨) (3) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और डर वालों का दोस्त **अल्लाह** । (پ٢٥،الجاثية:١٩) (4) सख़्तियां । (5) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो । (پ٢٨،الطلاق:٢-٣)

《5》 उस के आ'माल की इस्लाह़ हो जाएगी, कुरआने पाक में वारिद है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ (1)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और हमेशा दुरुस्त और सच्ची बात कहो, इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आ'माल की इस्लाह़ फ़रमा देगा।

《6》 तक़्वा की बरकत से तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं, कुरआने मजीद में है :

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ (2)

और तक़्वा इख़्तियार करने से अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर देगा।

《7》 मुत्तक़ी शख़्स अल्लाह तआ़ला का दोस्त बन जाता है, जैसा कि कलामुल्लाह शरीफ़ में आया है :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ (3)

बेशक अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी लोगों से मह़ब्बत रखता है।

《8》 तक़्वा से आ'माल दरजए क़बूलिय्यत को पहुंचते हैं, चुनान्चे इरशाद है :

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (4)

अल्लाह तआ़ला के हां सिर्फ़ अहले तक़्वा के आ'माल ही क़बूल होते हैं।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा। (پ۲۲،الاحزاب:۷۰۔۷۱)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। (پ۲۲،الاحزاب:۷۱)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (پ۱۰، التوبة:٤)

4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है। (پ٦،المائدة:۲۷)

﴾9﴿ तक़्वा के बाइ़स इन्सान ख़ुदा तआ़ला के हां ए'ज़ाज़ व इकराम का मुस्तह़िक़ हो जाता है, अल्लाह तआ़ला का इरशादे गिरामी है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ (1)

तुम में से ख़ुदा के हां वोही ज़ियादा इकराम का मुस्तह़िक़ है जो ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार है।

﴾10﴿ मुत्तक़ी लोगों को ब वक़्ते मौत दीदारे इलाही और आख़िरत में नजात की बिशारत दी जाती है, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ؕ۶۳ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ (2)

जो लोग ईमान लाए और तक़्वा की ज़िन्दगी इख़्तियार की उन्हें दुन्या व आख़िरत में बिशारत व ख़ुश ख़बरी है।

﴾11﴿ मुत्तक़ी लोग आतशे दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ रहेंगे, रब तआ़ला का इरशाद है :

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیْنَ اتَّقَوْا (3)

फिर हम अहले तक़्वा को नारे दोज़ख़ से नजात देंगे।

दूसरी जगह फ़रमाया :

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है। (پ٢٦،الحجرات:١٣)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी है दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में। (پ١١،یونس:٦٣،٦٤)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे। (پ١٦،مریم:٧٢)

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾ (1)

मुत्तक़ी इन्सान नारे दोज़ख़ से बचा लिया जाएगा।

﴾12﴿ अहले तक़्वा को हमेशा के लिये जन्नत में रहने की सआ़दत नसीब होगी, जैसा कि ह़क़ तआ़ला का इरशाद है :

اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ (2)

जन्नत अरबाबे तक़्वा के लिये तय्यार की गई हैं।

तो ख़ुलासा येह निकला कि दुन्या व आख़िरत की तमाम सआ़दत मन्दियां और भलाइयां इस एक तक़्वा में जम्अ़ कर दी गई हैं। इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! तू भी राहे तक़्वा इख़्तियार कर और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त इस से ह़िस्सा ह़ासिल कर।

फिर मज़्कूरा फ़वाइदे तक़्वा में तीन उमूर ख़ास कर इ़बादत से तअ़ल्लुक़ रखते हैं :

अव्वल : इ़बादत की तौफ़ीक़ और इस में इआ़नत व ताईद, जैसे फ़रमाया गया :

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ (3)

बेशक अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी लोगों के साथ है।

दुवुम : आ'माल की इस्लाह़ व दुरुस्ती और इ़बादत की ख़ामियों को पूरा करना, येह चीज़ भी तक़्वा से ह़ासिल होती है, चुनान्चे फ़रमाया :

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ (4)

तक़्वा की बरकत से रब तआ़ला तुम्हारे आ'माल की इस्लाह़ फ़रमा देगा।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बहुत जल्द इस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार। (پ٣٠،الليل:١٧)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है। (پ٤،ال عمرٰن:١٣٣)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह डर वालों के साथ है। (پ٢،البقرة:١٩٤)

4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा। (پ٢٢،الاحزاب:٧١)

सिवुम : क़बूलिय्यते आ'माल, क़बूलिय्यते आ'माल की येह फ़ज़ीलत भी अहले तक़्वा ही को नसीब होती है, इरशादे खुदावन्दी है :

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۲۷﴾ (1)

अल्लाह तआ़ला की दरगाह में अहले तक़्वा के आ'माल ही मक़्बूल होते हैं।

और इ़बादत का दारोमदार भी इन तीन उमूर पर है, पहले तो खुद तौफ़ीक़े इ़बादत, ताकि उस की बन्दगी की जा सके फिर इस में जो कमी रह जाए उस की इस्लाह़, और फिर इस इ़बादत का दरगाहे ह़क़ तआ़ला में मक़्बूल होना येह तीन उमूर या'नी तौफ़ीक़े इ़बादत, इस्लाह़े आ'माल और क़बूले आ'माल। येह वोह चीज़ें हैं जिन्हें आ़बिद लोग अल्लाह तआ़ला से रो रो कर मांगते हैं और दुआ़ करते हैं :

رَبَّنَا وَفِّقْنَا لِطَاعَتِكَ وَاَتِمَّ تَقْصِيْرَنَا وَتَقَبَّلْ مِنَّا

ऐ हमारे परवरदगार ! हमें त़ाअ़त की तौफ़ीक़ दे और हमारी कोताहियों को पूरा फ़रमा और हमारी त़ाअ़त को क़बूल फ़रमा।

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अहले तक़्वा से खुद ही बिग़ैर मुत़ालबा इन तीन उमूर का वा'दा फ़रमा लिया है और अस्ह़ाबे तक़्वा के ए'ज़ाज़ व इकराम का ज़िक्र फ़रमाया है। इस लिये अगर रब तआ़ला की इ़बादत व बन्दगी करना चाहते हो बल्कि दुन्या व आख़िरत की तमाम सआ़दात समेटना चाहते हो तो अपने में सिफ़ते तक़्वा पैदा करो। एक शाइ़र ने तक़्वा की क्या ही उ़म्दा अन्दाज़ में ता'रीफ़ की है :

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है। (پ۶،المائدۃ:۲۷)

مَنِ اتَّقَی اللّٰہَ فَذَاکَ الَّذِی سِیقَ اِلَیہِ الْمَتْجَرُ الرَّابِحُ
لَا یَتْبَعُ الْمَرْءَ اِلٰی قَبْرِہٖ غَیْرُ التُّقٰی وَالْعَمَلِ الصَّالِحِ

(1) जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है वोही नफ़्अ़ वाली शै ह़ासिल करता है।

(2) क़ब्र में इन्सान के साथ सिर्फ़ तक़्वा और अ़मले सालेह़ ही जाते हैं।

तक़्वा की शान बा'ज़ दूसरे शुअ़रा ने इस त़रह़ बयान की है :

(۱) مَنْ عَرَفَ اللّٰہَ فَلَمْ تُغْنِہٖ مَعْرِفَۃُ اللّٰہِ فَذَاكَ الشَّقِیّ

(۲) مَا یَصْنَعُ الْعَبْدُ بِعِزِّ الْغِنٰی وَ الْعِزُّ كُلُّ الْعِزِّ لِلْمُتَّقِی

(۳) مَا ضَرَّ ذَا الطَّاعَةِ مَا نَالَهٗ فِیْ طَاعَةِ اللّٰہِ وَ مَاذَا لَقِی

(1) जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला की मा'रिफ़त ह़ासिल हो और वोह इस मा'रिफ़त को काफ़ी न जाने तो ऐसा शख़्स बद बख़्त है।

(2) दौलत से इन्सान को क्या इ़ज़्ज़त ह़ासिल हो सकती है? इ़ज़्ज़त तो सब तक़्वा से वाबस्ता है।

(3) मुत्तक़ी शख़्स को जो चीज़ें अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त में ह़ासिल होती हैं वोह मुज़िर नहीं बल्कि मुफ़ीद ही मुफ़ीद हैं।

बा'ज़ लोगों ने किसी के मरने के बा'द उस की क़ब्र पर येह शे'र लिखा :

لَیْسَ زَادٌ سِوَی التُّقَا فَخُذِی مِنْہُ اَوْ دَعِی

(तक़्वा ही आख़िरत का तौशा है, अब तेरी मरज़ी है कि इसे ह़ासिल करे या छोड़ दे।)

फिर इस अस्ल पर भी ग़ौर करो कि तुम सारी उ़म्र इ़बादत के लिये मशक़्क़तें उठाते और मुजाहदे व रियाज़तें करते हो, यहां तक कि तुम इ़बादत के मक़्सद को पा लेते हो, लेकिन ख़ुदा न

ख़्वास्ता वोह इबादत अगर दरबारे इलाही में मक़्बूल न हो तो सारी कोशिशें और मुजाहदे ज़ाएअ़ हो गए, तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में फ़रमाया है :

(1) اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ *अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी लोगों ही की इबादत क़बूल फ़रमाता है।*

तो ज़ाहिर हुवा कि तमाम मुआ़मला तक़्वा ही से मुतअ़ल्लिक़ है, इसी लिये ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या की किसी शै पर या किसी इन्सान पर तअ़ज्जुब नहीं फ़रमाते थे मगर साहिबे तक़्वा पर।(2)

और ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि तौरात शरीफ़ में मज़्कूर है : "ऐ इन्सान ! तू मुत्तक़ी बन जा, फिर जहां चाहे सो।"(3)

ह़ज़रते आ़मिर बिन क़ैस (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) के मुतअ़ल्लिक़ सुना है कि आप ब वक़्ते मौत रो पड़े ह़ालांकि ज़िन्दगी में आप की ह़ालत येह थी कि हर दिन रात में एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते थे फिर अपने बिस्तर पर आते थे और बिस्तर को मुख़ात़िब हो कर फ़रमाते थे : "ऐ हर बुराई की जगह ! क़सम ख़ुदा की मैं ने तुझे एक पलक भर भी पसन्द नहीं किया।"

जब आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) रोए तो किसी ने कहा : आप क्यूं रोते हैं ? आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने जवाब दिया : मैं रब तआ़ला के इस क़ौल को याद कर के रोता हूं :

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है। (پ٦،المائدة:٢٧)

2 ......المسندللامام احمد،مسندعائشة رضی اللّٰہ عنہا،٩/٣٤١،حدیث:٢٤٤٥٧۔

3 ......الزھد الکبیر للبیھقی،ص٣٥٠،حدیث:٩٦٢۔

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۲۷﴾ (1)

फिर एक और नुक्ते पर भी ग़ौर करो जो तमाम उसूलों की अस्ल है, वोह येह कि बा'ज़ सालिह़ीन ने अपने किसी शैख़ (رَحمۃُ اللّٰہ) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : "मुझे कोई वसिय्यत कीजिये।" तो शैख़ (رَحمۃُ اللّٰہ) ने फ़रमाया : "मैं तुझे **अल्लाह** तआ़ला की वोह **वसिय्यत**(2) करता हूं जो उस ने तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को की है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

وَلَقَدْ وَصَّیْنَا الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ اِیَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ (3)

बेशक हम ने उन को जो तुम से पहले किताबों वाले गुज़रे हैं और तुम्हें ताकीद की है कि ***अल्लाह*** *तआ़ला से डरते रहो।*

मैं कहता हूं बन्दे की बेहतरी और भलाई का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और किसे हो सकता है ? और ख़ुदावन्दे तआ़ला बन्दे के लिये सब से ज़ियादा ख़ैर ख़्वाह सब से ज़ियादा रह़्म करने वाला और मेहरबान है तो जहां में बन्दे के लिये तक़्वा के इ़लावा अगर कोई और शै मुफ़ीद होती, उस में ज़ियादा भलाई होती, उस का ज़ियादा सवाब होता, इ़बादत में उस की ज़ियादा ज़रूरत होती, शान में तक़्वा से ऊपर होती और दुन्या व आख़िरत में तक़्वा से ज़ियादा वक़्अ़त रखती तो **अल्लाह** तआ़ला तक़्वा के बजाए अपने बन्दों को उस की **वसिय्यत**(4) और उस का हुक्म देता, और अपने ख़वास को उसी के हुक्म की

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है। (پ۶،المائدة:۲۷) 2 नसीह़त। 3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि **अल्लाह** से डरते रहो। (پ۵،النساء:۱۳۱) 4 नसीह़त।

ताकीद फ़रमाता, क्यूंकि उस की **हिक्मत**(1) मुकम्मल और उस की रह़मत वसीअ़ है। तो जब रब तआ़ला ने तक़्वा की ताकीद फ़रमाई और तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को इसी का हुक्म दिया तो साबित हो गया कि तक़्वा ही सब से आ'ला चीज़ है कोई और चीज़ नहीं और न इस के सिवा कुछ और मक़्सूद है।

इस तक़रीर से तुम पर येह भी वाज़ेह़ हो गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर भलाई, हर राहनुमाई, हर इरशाद, हर तम्बीह व तादीब, हर ता'लीम व तहज़ीब को तक़्वा ही से मुतअ़ल्लिक़ किया है और येह उस ने अपनी ह़िक्मत व रह़मत के ऐ़न मुत़ाबिक़ किया है और तुम्हें येह भी मा'लूम हो गया कि तक़्वा ही दीनी व दुन्यवी और उख़रवी भलाइयों का जामेअ़ है और तक़्वा बन्दगी व इ़बादत को दरजाते क़बूलिय्यत पर पहुंचाने का ज़ामिन व कफ़ील है।

एक शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

اَلَااِنَّمَاالتَّقْوٰی ھِیَ الْعِزُّ وَالْکَرَمْ وَحُبُّكَ لِلدُّنْیَا ھُوَالذُّلُّ وَالْعَدَمْ

وَلَیْسَ عَلٰی عَبْدٍ تَقِیٍّ نَقِیْصَۃٌ اِذَا صَحَّحَ التَّقْوٰی وَ اِنْ حَاكَ اَوْحَجَمْ

(1) सुन लो कि तक़्वा ही इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी है, दुन्या की मह़ब्बत तो ज़िल्लत व ख़्वारी है।

(2) जब कोई शख़्स अपने अन्दर वस्फ़े तक़्वा पैदा कर ले तो वोह अगर **जुलाहे**(2) का पेशा या **ह़ज्जाम**(3) का पेशा इख़्तियार कर ले तो इस में कोई ऐ़ब नहीं।

येह आख़िरी नुक्ता वोह अस्ल है कि इस से आ'ला कोई अस्ल नहीं और नूर व हिदायत वाले के लिये येह अस्ल काफ़ी है। चाहिये कि इस पर अ़मल करे और दूसरी चीज़ों से बे नियाज़ हो जाए। وَاللّٰہُ تَعَالٰی وَلِیُّ الْھِدَایَۃِ وَ التَّوْفِیْق

---

1 तदबीर। 2 कपड़ा बुनने। 3 पछने लगाने।

सुवाल : तुम्हारी इस तफ़्सील से मा'लूम होता है कि तक़्वा बहुत आ'ला शै है, इस का मर्तबा बहुत ही बुलन्द है और दुन्या व आख़िरत में इस की शदीद ज़रूरत है, और इस की पहचान करना अज़ ह़द ज़रूरी है लिहाज़ा हमें तफ़्सील के साथ इस की ह़क़ीक़त बताई जाए।

जवाब : बात यूं ही है कि तक़्वा एक निहायत ही अ़ज़ीम शै है, इस की **तह़सील**[1] ज़रूरी है और इस की मा'रीफ़त ह़ासिल किये बिग़ैर चारए कार नहीं लेकिन तुम्हें मा'लूम है कि जिस क़दर कोई काम आ'ला व मुफ़ीद होता है इसी क़दर उस का ह़ुसूल दुश्वार होता है और उतनी ही ज़ियादा मशक़्क़त व जिद्दो जहद का तक़ाज़ा करता है, और उतनी ही ज़ियादा बुलन्द हिम्मती चाहता है, लिहाज़ा जिस त़रह़ येह तक़्वा एक नफ़ीस व आ'ला चीज़ है इसी त़रह़ इस के ह़ुसूल के लिये अ़ज़ीम मुजाहदे और शदीद जिद्दो जहद की ज़रूरत है, नीज़ इस के ह़ुक़ूक़ व आदाब की निगहदाश्त की भी **अशद्द ज़रूरत** है, क्यूंकि दर्जात ह़स्बे मुजाहदा अ़त़ा होते हैं और जिस दर्जे की कोशिश की जाती है उसी दर्जे का समरा और फल मिलता है, क़ुरआने मजीद में फ़रमाया गया है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾ ع (2)

*जिन लोगों ने हम तक पहुंचने के लिये मुजाहदे व रियाज़तें की हैं हम उन्हें ज़रूर बिज़्ज़रूर अपने तक **वुसूल**[3] के रास्तों की रहनुमाई करेंगे और बेशक **अल्लाह** तआ़ला नेकूकार लोगों के साथ है।*

---

1 ह़ासिल करना। 2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है। (پ۲۱، العنکبوت:۶۹) 3 पहुंचने।

और **अल्लाह** तआ़ला रऊफ़ुर्रह़ीम है, हर मुश्किल को आसान करना उस के दस्ते कुदरत में है, अब तुम हमारी बातों की त़रफ़ कान लगाओ और इन को ज़ेह्न नशीन करने के लिये बेदार हो जाओ और तक़्वा की माहिय्यत व ह़क़ीक़त को पूरे ग़ौर से समझो, ताकि उस की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ होने के बा'द उस को ह़ासिल करने के लिये कमरबस्ता हो सको और उस की ह़क़ीक़त को जान लेने के बा'द उस पर अ़मल पैरा होने के लिये रब तआ़ला से मदद त़लब करो क्यूंकि अस्ल चीज़ वोही है। **अल्लाह** तआ़ला ही सब को अपने फ़ज़्लो करम से हिदायत व तौफ़ीक़ देता है।

ऐ अ़ज़ीज़ ! (**अल्लाह** तआ़ला तेरे दीन में बरकत और तेरे यक़ीन में इज़ाफ़ा फ़रमाए) तक़्वा के जो मा'ना मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने बयान फ़रमाए हैं पहले वोह जान, चुनान्चे, बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने तक़्वा के येह मा'ना किये हैं :

تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ عَنْ ذَنْبٍ لَّمْ يَسْبِقْ عَنْكَ مِثْلُهٗ "उस गुनाह से दिल को बचाना जिस की मिस्ल आगे तुझ से सादिर नहीं हुवा।" ताकि तुम्हारे अन्दर तर्के गुनाह के अ़ज़्म से हर क़िस्म के मआ़सी से बचाव व ह़िफ़ाज़त पैदा हो जाए।

मेरे शैख़ رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने तक़्वा की येही ता'रीफ़ की है क्यूंकि लफ़्ज़ "**तक़्वा**" लुग़ते अ़रब में अस्ल में وَقْوٰی था। और लफ़्ज़ وَقْوٰی وِقَايَةٌ की त़रह़ **मस्दर**[1] है। कहा जाता है : وَقٰی يَقِی وِقَايَةً وَ وَقْوٰی फिर واوٗ को تاء से तब्दील किया गया। जैसे وُكْلَان से تُكْلَان बना

---

[1] मस्दर उस इस्म को कहते हैं जिस से दूसरे कलिमात बनते हों और वोह ख़ुद किसी से न बना हो। (نصاب الصرف،ص٣)

दिया गया और وِقَايَةٌ के मा'ना हैं : **बचाव** व **ह़िफ़ाज़त** का ज़रीआ़। जब बन्दा तर्के मआ़सी का पुख़्ता अ़ज़्म कर लेता है और दिल को तर्के मआ़सी पर मज़्बूत़ कर लेता है तो ऐसे अ़ज़्म व इरादे वाले शख़्स को मुत्तक़ी और इस अ़ज़्म व मज़्बूत़ी को तक़्वा कहते हैं।

फिर तक़्वा का इत़्लाक़ क़ुरआने ह़कीम में तीन अश्या पर हुवा है, एक ख़ौफ़ व हैबते ख़ुदावन्दी जैसे :

وَاِیَّایَ فَاتَّقُوْنِ (1) *सिर्फ़ मुझ ही से ख़ौफ़ व डर रखो।*

दूसरी जगह फ़रमाया :

وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ (2) *और उस दिन से डरो जिस दिन तुम दरबारे ख़ुदावन्दी में पेश किये जाओगे।*

और तक़्वा का लफ़्ज़ त़ाअ़त व इ़बादत के मा'ना में भी इस्ति'माल हुवा है, चुनान्चे, रब तआ़ला का इरशादे गिरामी है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ (3) *ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला से इस त़रह़ डरो जिस त़रह़ उस से डरने का ह़क़ है।*

यहां डरने से मुराद त़ाअ़त व इ़बादत है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने येही मा'ना किये हैं, चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने तर्जमा करते हुवे यूं फ़रमाया है :

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझी से डरो। (پ۱،البقرۃ:۴۱)
2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे। (پ۳،البقرۃ:۲۸۱) 3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है। (پ۴،ال عمران:۱۰۲)

"اَطِیْعُوا اللّٰہَ حَقَّ اِطَاعَتِہٖ" अल्लाह तआ़ला की ऐसी इत़ाअ़त करो जैसी कि चाहिये।

और ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस आयत की यूं तफ़्सीर फ़रमाई है :

هُوَ اَنْ يُّطَاعَ فَلَا يُعْصٰى وَ اَنْ يُّذْكَرَ فَلَا يُنْسٰى وَ اَنْ يُّشْكَرَ فَلَا يُكْفَرَ[1]

اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ[2] के मा'ना हैं रब तआ़ला की ऐसी इत़ाअ़त करना कि फिर नाफ़रमानी न हो और उस की ऐसी याद का नक़्शा दिल में क़ाइम करना कि फिर **निस्यान**[3] वाक़ेअ़ न हो और उस की इस त़रह़ शुक्र गुज़ारी की जाए कि हरगिज़ नाशुक्री का सुदूर न हो।

और लफ़्ज़े तक़्वा क़ुरआने ह़कीम में तीसरे इस मा'ना में इस्ति'माल हुवा है : تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ مِنَ الذُّنُوْب दिल को गुनाहों से दूर रखना। और तक़्वा के ह़क़ीक़ी मा'ना येही तीसरे मा'ना हैं, पहले दोनों मा'ना **मजाज़ी**[4] हैं, क्या तुम ने क़ुरआने मजीद में येह आयते करीमा नहीं पढ़ी :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۲﴾[5]

*और जो लोग अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की इत़ाअ़त करते हैं और अल्लाह से डरते हैं और दिल को गुनाहों से दूर रखते हैं तो ऐसे ही लोग कामयाब और **फ़ाइज़ुल मराम**[6] हैं।*

---

1 ......تفسیر البحر المحیط ، اٰل عمرٰن ، تحت الآیۃ : ۱۰۲ ، ۳/ ۱۹ ، بتغیر ۔

2 پ۴،اٰل عمرٰن:۱۰۲ 3 भूल। 4 ग़ैर ह़क़ीक़ी। 5 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो येही लोग कामयाब हैं। (پ۱۸،النور:۵۲) 6 मक़्सद में कामयाब।

इस आयते करीमा में पहले इत़ाअ़त और ख़ौफ़ का ज़िक्र फ़रमाया और फिर तक़्वा का, तो मा'लूम हुवा कि तक़्वा इत़ाअ़त व ख़शिय्यत के सिवा किसी तीसरी शै का नाम है और वोह है : تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ مِنَ الذُّنُوْب(1)

फिर उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि तक़्वा के तीन मरातिब हैं :

﴾1﴿ शिर्क से तक़्वा (बचना) ﴾2﴿ बिदअ़त से तक़्वा (बचना) ﴾3﴿ गुनाहों से तक़्वा (बचना) । और **अल्लाह** तआ़ला ने येह तीनों मर्तबे इस एक आयत में ज़िक्र फ़रमा दिये हैं वोह आयए मुबारका येह है :

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ(2)

उन लोगों पर कोई गुनाह नहीं उस में जो उन्हों ने खाया, जब कि वोह तक़्वा इख़्तियार करें और ईमान लाएं और आ'माले सालेह़ बजा लाएं फिर तक़्वा इख़्तियार करें और ईमान लाएं फिर तक़्वा इख़्तियार करें और एह़सान की राह इख़्तियार करें ।

इस आयत में पहले तक़्वा से (मुराद) शिर्क से परहेज़ और ईमान से तौह़ीद मुराद है । दूसरे से (मुराद) बिदअ़त से परहेज़ और इस के मुक़ाबले ईमान से अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद व नज़रिय्यात का इक़रार व ए'तिराफ़ मुराद है और तीसरे तक़्वा से

---

1 दिल को गुनाहों से पाक रखना । 2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो ईमान लाए और नेक काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें । (پ۷،المائدۃ:۹۳)

सग़ीरा गुनाहों से परहेज़ और इस के मुक़ाबिल एह़सान से त़ाअ़त व इस्तिक़ामत मुराद है, तो इस वज़ाह़त से ज़ाहिर हुवा कि इस आयत में तक़्वा के तीनों मर्तबे बयान कर दिये गए हैं, या'नी मर्तबए ईमान, मर्तबए सुन्नत और इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी पर इस्तिक़ामत का मर्तबा। येह है वोह तफ़्सील जो हमारे उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने तक़्वा के मा'ना बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाई है।

मैं (ईमाम ग़ज़ाली (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)) कहता हूं कि मैं ने तक़्वा का एक और मा'ना भी पाया है और येह मा'ना हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से एक मशहूर ह़दीस में मरवी है, ह़दीस के अल्फ़ाज़ येह हैं :

"اِنَّمَا سُمِّيَ الْمُتَّقُوْنَ مُتَّقِيْنَ لِتَرْكِهِمْ مَا لَا بَاسَ بِهٖ حَذْرًا بِهٖ عَمَّا بِهٖ بَأْسٌ (1)" (2)۔

मुत्तक़ियों को मुत्तक़ी इस लिये कहा गया कि उन्हों ने उस काम को भी तर्क कर दिया जिस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं येह एह़तियात़ करते हुवे कि इस के ज़रीए ऐसे काम में न पड़ जाएं जिस में ह़रज और गुनाह हो।

मैं मुनासिब ख़याल करता हूं कि उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के बयान कर्दा मा'ना और इस ह़दीस में तक़्वा के वारिद शुदा मा'नों को जम्अ़ कर दूं ताकि तक़्वा के मुकम्मल और पूरे मा'ना बयान हो जाएं।

---

1 यहां लफ़्ज़ "بَـــائـس" (बअ्स) था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "بَأْسٌ" (बअ्सुन) है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (**इल्मिय्या**)

2 ......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة...الخ، باب ماجاء فی صفة الحوض، ٤/ ٢٠٤، حدیث: ٢٤٥٩، بتغیر۔

तो तक़्वा के जामेअ़ तरीन मा'ना येह हुवे कि "हर उस शै और काम से इजतिनाब करना जिस से दीन को नुक़्सान पहुंचने का ख़ौफ़ हो।" तुम्हें मा'लूम नहीं कि बुख़ार में मुब्तला शख़्स को जब वोह हर उस चीज़ से परहेज़ करे जो उस की सिह़्ह़त के लिये मुज़िर हो, जैसे खाना, पीना, और फल वग़ैरा तो उसे अस्ल परेहज़ करने वाला कहते हैं। इसी त़रह़ जो शख़्स हर ख़िलाफ़े शरअ़ अम्र से इजतिनाब करे तो ऐसा ही शख़्स दर ह़क़ीक़त मुत्तक़ी कहलाने का ह़क़दार है।

फिर वोह चीज़ें जिन से दीन को नुक़्सान पहुंचने का ख़ौफ़ है दो त़रह़ की हैं :

﴾1﴿ ह़राम व मा'सिय्यत ﴾2﴿ ह़लाल मगर ज़रूरत से ज़ाइद, क्यूंकि ज़ाइद अज़ ज़रूरत ह़लाल अश्या में मश्ग़ूलिय्यत और इनहिमाक भी रफ़्ता रफ़्ता गुनाह व ह़राम में मुब्तला होने का बाइ़स बन जाता है और वोह इस त़रह़ कि ज़ाइद अज़ ज़रूरत ह़लाल अश्या के इस्ति'माल से और इन की आ़दत डालने से नफ़्स की ह़िर्स, उस की सरकशी और शहवात ज़ोर पकड़ जाती हैं और बन्दा गुनाह में मुब्तला हो जाता है, तो जो शख़्स अपने दीन को मुकम्मल त़ौर पर मह़फ़ूज़ करना चाहता हो, उस के लिये ज़रूरी है कि ह़राम और फ़ुज़ूले ह़लाल से भी इजतिनाब करे ताकि फ़ुज़ूले ह़लाल से ह़राम तक न पहुंच जाए। इसी अम्र को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस इरशादे मुबारक में बयान फ़रमाया :

تَرْكُهُمْ مَا لَا بَأْسَ بِهِ حَذَرًا عَمَّا بِهِ بَأْسٌ (1) फ़ुज़ूले ह़लाल से भी परहेज़ करते हैं ताकि ह़राम में न पड़ जाएं।

(1)......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة...الخ،باب ماجاء فی صفة الحوض، ٤/ ٢٠٤، حدیث:٢٤٥٩،بتغیر۔

तो तक़्वा की जामेअ़ तरीन ता'रीफ़ येह हुई कि "दीन में हर नुक़्सान देह चीज़ से इजतिनाब व परहेज़ करना।" येह है तक़्वा की ह़क़ीक़त व माहिय्यत का **मुफ़स्सल**[1] बयान। وَالْحَمْدُ لِلّٰه

और इल्मे सिर्र के ए'तिबार से तक़्वा की ह़क़ीक़त येह है कि "हर उस बुराई से दिल को दूर रखना जिस की मिस्ल बन्दे ने पहले बुराई न की हो।" ताकि गुनाहों से दूर रहने का अ़ज़्म इन से ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ बन जाए।

फिर शर दो क़िस्म है :

एक शरे अस्ली, और येह वोह है जिस से शरअ़ ने **सराह़तन**[2] रोका हो, जैसे गुनाह और मआ़सी।

दूसरा शरे ग़ैर अस्ली, इस से वोह शर मुराद है जिस से शरअ़ ने तादीबन रोका हो। और वोह फ़ुज़ूल और ज़ाइद अज़ ज़रूरत ह़लाल है, जैसे आ़म मुबाह़ चीज़ें, जिन से शहवत को तक़्वियत मिलती है।

शरे अस्ली से बचना फ़र्ज़ है और न बचने की सूरत में मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब होगा। शरे ग़ैर अस्ली से इजतिनाब बेहतर व मुस्तह़ब है, और न इजतिनाब करने पर रोज़े क़ियामत ह़श्र में ह़िसाब के लिये रोका जाएगा और इस से हर शै का ह़िसाब लिया जाएगा और दुन्या में बिला ज़रूरत उमूर के इर्तिकाब पर इसे आ़र व नदामत दिलाई जाएगी।

शरे अस्ली से बचने वाले का तक़्वा कम दर्जे का है और येह त़ाअ़त पर इस्तिक़ामत का दरजा है और शरे ग़ैर अस्ली से बचने वालों का दर्जा बुलन्द है और येह तर्के मुबाह़ ज़ाइद अज़

---

1 तफ़्सीली। 2 वाज़ेह़ त़ौर पर।

ज़रूरत का दरजा है, और जो शख़्स दोनों क़िस्म का तक़्वा अपने अन्दर पैदा कर ले वोह कामिल मुत्तक़ी है और येही वोह शख़्स है जिस ने तक़्वा के पूरे हुक़ूक़ मल्हूज़ रखे, ऐसा शख़्स ही तक़्वा के पूरे फ़वाइद ह़ासिल करता है और इसी का नाम कामिल वरअ़ है जिस पर दीन के कमाल का दारो मदार है। दरबारे इलाही में ह़ाज़िरी के लिये जिन आदाब की ज़रूरत है वोह इसी तक़्वा से ह़ासिल होते हैं तक़्वा के इन मा'नों को ख़ूब समझो और फिर इन पर अ़मल करो।

सुवाल : येह बयान फ़रमाइये कि इस तक़्वा के हुसूल का क्या त़रीक़ा और क्या ज़रीआ़ है और हम अपने नफ़्स को इस का कैसे आ़मिल बना सकते हैं ताकि येह इ़ल्म हो जाए कि नफ़्स को इस तक़्वा से लगाम किस त़रह़ दी जाए ?

जवाब : इस की सूरत येह है कि नफ़्स को पूरे अ़ज़्म व सबात से हर मा'सियत से रोका जाए और हर त़रह़ के फ़ुज़ूले ह़लाल से दूर रखा जाए ऐसा करने से बदन के ज़ाहिरी व बात़िनी आ'ज़ा सिफ़ते तक़्वा से मौसूफ़ हो जाएंगे। आंख, कान, ज़बान, दिल, पेट, शर्मगाह और बाक़ी जुम्ला आ'ज़ा और अज्ज़ाए बदन में तक़्वा पैदा हो जाएगा और नफ़्स तक़्वा की लगाम में अच्छी त़रह़ आ जाएगा।

इस बाब की शर्ह़ बहुत त़वील है "**इह़याउ उ़लूमेदीन**" में हम ने इस की तफ़्सील की त़रफ़ इशारा किया है लेकिन जिस अम्र का बयान यहां ज़ियादा ज़रूरी है वोह येह है कि पांच आ'ज़ा की ख़ुसूसिय्यत से निगहदाश्त की जाए वोह आ'ज़ा येह हैं :

(1) आंख (2) कान (3) ज़बान (4) दिल और (5) शिकम।

दीन को ज़रर व नुक़्सान से बचाने के लिये इन मज़्कूरा आ'ज़ा को हर मा'सियत, हर ह़राम, हर फ़ुज़ूले ह़लाल और हर इसराफ़ से ह़िफ़ाज़त में रखना ज़रूरी है, जब इन पांच आ'ज़ा की ह़िफ़ाज़त हो गई तो उम्मीद है की बदन के बाक़ी आ'ज़ा भी मह़फ़ूज़ हो जाएंगे और बन्दा पूरे त़ौर पर तक़्वा की सिफ़त के साथ मौसूफ़ हो जाएगा।

हम पांच फ़स्लों में इन आ'ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर का बयान करते हैं और तुम्हें बताते हैं कि कौन कौन सी चीज़ इन के लिये ह़राम है जिन से इन को ह़िफ़ाज़त में रखना ज़रूरी है लेकिन यहां येह बयान इस किताब के ह़ज्म के मुत़ाबिक़ होगा या'नी मुख़्तसर।

फ़स्ले अव्वल : आंख के बयान में

फिर तुम पर अपनी आंख की ह़िफ़ाज़त भी लाज़िम है। (अल्लाह तआ़ला हमें और तुम्हें **ह़िफ़्ज़े नज़र**[1] की तौफ़ीक़ दे) क्यूंकि आंख ही हर फ़ितने और हर आफ़त का सबब है और मैं इस के मुतअ़ल्लिक़ तीन उसूल बयान करता हूं, जिन पर कारबन्द होने से नज़र की ह़िफ़ाज़त اِنْ شَآءَاللّٰه पूरी त़रह़ मयस्सर आ जाएगी :

पहला उसूल :

वोह जो क़ुरआने मजीद की इस दर्जे ज़ैल आयत में बयान किया गया है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ

ऐ ह़बीब ! अहले ईमान से कहो कि अपनी नज़र झुकाए रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत

1 आंखों की ह़िफ़ाज़त।

إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝[1]

पाकीज़ा बात है और (ऐ ईमान वालो !) तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह तआ़ला इस से बा ख़बर है।

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान कि इस मुख़्तसर सी आयत में ग़ौर करने से मुझे तीन अ़जीब व नादिर मआ़नी मा'लूम हुवे हैं या'नी इस आयत में तादीब, तम्बीह और तहदीद तीन अम्र जम्अ़ कर दिये गए हैं।

तादीब या'नी अदब सिखाना, तो इस आयत के इस जुम्ले में है : "قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ"[2] चूंकि इस आयत में लफ़्ज़ "يَغُضُّوْا" वारिद हुवा है जो **सीग़ए अम्र**[3] है, तो ग़ुलाम पर लाज़िम हो जाता है कि आक़ा के हुक्म की ता'मील करे और उस के बताए हुवे आदाब को बजा लाए वरना बे अदबों में शुमार होगा और बे अदब ग़ुलाम को आक़ा की मजलिस में ह़ाज़िर होने की इजाज़त नहीं मिलती और न वोह आक़ा के सामने आने के लाइक़ होता है। इस नुक्ते को ज़ेह्न नशीन कर लो और इस में ग़ौर करो क्यूंकि इस में बहुत कुछ है। और तम्बीह इन अल्फ़ाज़ में है [4]ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ

इस जुम्ले के दो मत़लब हो सकते हैं :

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उन के कामों की ख़बर है। (پ۱۸،النور:۳۰)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीचीं रखें। (پ۱۸،النور:۳۰) 3 हुक्म दिये जाने का सीग़ा।

4 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह उन के लिये बहुत सुथरा है। (پ۱۸،النور:۳۰)

एक येह कि नज़्रों को झुकाए रखना मोमिनों के दिलों को ज़ियादा पाक करने वाली शै है क्यूंकि ज़कात त़हारत के मा'ना में है और तज़्किय़ए ततहीर के हम मा'ना ।

दूसरा मत़लब येह हो सकता है कि नज़्रों को झुकाए रखना मोमिनों की नेकियों को बढ़ाने और ज़ियादा करने का बाइ़स है क्यूंकि ज़कात के मा'ना लुग़त में बढ़ने और ज़ियादा होने के भी आते हैं तो मत़लब येह हुवा कि नज़्र नीची रखना दिल को बहुत ज़ियादा पाक करता है और त़ाअ़त व ख़ैर में इज़ाफ़े का ज़रीआ़ है और येह इस लिये है कि अगर तुम नज़्र नीची न रखो बल्कि इसे आज़ादाना हर चीज़ पर डालो तो बसा अवक़ात तुम बे फ़ाइदा और फ़ुज़ूल भी इधर उधर देखना शुरूअ़ करोगे और फिर रफ़्ता रफ़्ता तुम्हारी नज़्र ह़राम पर भी पड़ना शुरूअ़ हो जाएगी ।

अब अगर क़सदन ह़राम पर नज़्र डालोगे तो येह बहुत बड़ा गुनाह है और बहुत मुमकिन है कि तुम्हारा दिल ह़राम शै पर फ़रेफ़्ता हो जाए और तुम तबाही का शिकार हो जाओ क्यूंकि रिवायात में वारिद है :

اِنَّ الْعَبْدَ يَنْظُرُ النَّظْرَةَ يَنْفَعِلُ فِيْهَا قَلْبُهٗ كَمَا يَنْفَعِلُ الْاَدِيْمُ فِى الدَّبَّاغِ

बा'ज़ अवक़ात बन्दा किसी शै पर नज़्र डालता है तो उस से इस त़रह़ असर क़बूल करता है जिस त़रह़ चमड़ा अ़मले दबाग़त से रंग को ।

और अगर इस त़रफ़ देखना ह़राम न हो बल्कि मुबाह़ हो, तो हो सकता है कि तुम्हारा दिल मश्ग़ूल हो जाए और इस के सबब तुम्हारे दिल में त़रह़ त़रह़ के वस्वसे और ख़त़रात आने शुरूअ़ हो

जाएं और शायद वस्वसे की चीज़ों तक अ़मली तौ़र पर न पहुंच सको और इस त़रह़ वस्वसों का शिकार हो कर नेकियों से रह जाओ लेकिन अगर तुम ने किसी त़रफ़ देखा ही नहीं तो हर फ़ितने, वस्वसे और ख़त़रे से मह़फ़ूज़ रहोगे और अपने अन्दर राह़त व नशात़ मह़सूस करोगे।

इस चीज़ को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इन अल्फ़ाज़ में अदा फ़रमाया है :

اِيَّاكُمْ وَ النَّظْرَةَ فَاِنَّهَا تَزْرَعُ فِى الْقَلْبِ الشَّهْوَةَ كَفٰى بِهَا لِصَاحِبِهَا فِتْنَةً

अपने आप को नज़रे ह़राम से पूरी एह़तियात़ से बचाओ क्यूंकि ऐसी बद नज़री दिल में शहवत की तुख़्म रैज़ी करती है और इस गुनाह का इर्तिकाब करने वाले को फ़ितने में मुब्तला कर देती है।

ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इरशाद है :

نِعْمَ حَاجِبُ الشَّهْوَاتِ غَضُّ الْاَبْصَارِ आंख को नज़रे ह़राम से रोकना शहवात से बचने का बेहतरीन त़रीक़ा है।

किसी शाइ़र ने क्या अच्छा कहा है :

وَ اَنْتَ اِذَا اَرْسَلْتَ طَرْفَكَ رَائِدًا　　لَعَلَّكَ يَوْمًا اَتْعَبَتْكَ الْمَنَاظِرُ

رَاَيْتَ الَّذِىْ مَا كُلُّهُ اَنْتَ قَادِرٌ　　عَلَيْهِ وَ لَا عَنْ بَعْضِهِ اَنْتَ صَابِرٌ

(1) अगर तुम अपनी आंख को खुला छोड़ दोगे तो रंगा रंग नज़्ज़ारे एक रोज़ तुम्हें मशक़्क़त में डाल देंगे।

(2) तुम वोह अश्या देखोगे कि न तो उन तमाम पर तुम को क़ुदरत होगी और न उन में बा'ज़ से सब्र हो सकेगा।

जब तुम हर वक़्त नज़र नीची रखोगे और उसे बे फ़ाइदा और लाया'नी चीज़ों पर नहीं डालोगे तो तुम्हारा सीना वसाविस से साफ़ रहेगा, दिल फ़ारिग़ होगा और ख़त़रात से राह़त में रहोगे, तुम्हारा नफ़्स आफ़ात से सलामती में रहेगा, और **कस्बे ह़सनात**(1) की त़रफ़ ज़ियादा तवज्जोह दे सकोगे, इस नुक्तए जामिआ़ को ख़ूब समझ लो । وَ اللّٰهُ تَعَالٰی اَلْمُوَفِّق

और तहदीद इस जुम्ले में है : (2) اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾

दूसरी जगह फ़रमाया :

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾ (3)

(अल्लाह तआ़ला) ख़ाइन आंखों को और सीनों में पोशीदा बातों को जानता है ।

ह़क़ त़आ़ला का ख़ौफ़ रखने वाले के लिये येह तम्बीह और तहदीद काफ़ी है

दूसरा उसूल :

इस सिलसिले में दूसरा उसूल वोह है जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

(4) اِنَّ النَّظَرَ اِلٰى مَحَاسِنِ الْمَرْاَةِ سَهْمٌ مَسْمُوْمٌ مِنْ سِهَامِ اِبْلِيْسَ فَمَنْ تَرَكَهَا اَذَاقَهُ اللّٰهُ طَعْمَ عِبَادَةٍ تَسُرُّهُ

---

1 नेकियां करने । 2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह को उन के कामों की ख़बर है । (پ۱۸،النور:۳۰) 3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है । (پ۲٤،المؤمن:۱۹)

4 ......نوادر الاصول ، الاصل الرابع و الاربعون و المائتان ، الجزء الثانی ، ص ۹۷۸، حدیث : ۱۲۸۷ ، بتغیر۔

ग़ैर मह़रम औ़रत के ह़ुस्नो जमाल पर नज़र डालना इब्लीस के ज़ह्‌र में बुझे हुवे तीरों में से एक है तो जो शख़्स ऐसा करना तर्क कर देगा, अल्लाह तआ़ला उसे सुरूर आमेज़ इबादत का मज़ा चखाएगा।

इबादत में ह़लावत और मुनाजात में लज़्ज़त आ़बिदीन के नज़दीक एक बहुत बड़ी चीज़ है, और येह उसूल एक तजरिबा शुदा उसूल है जो भी इस पर अ़मल करेगा उसे ख़ुद इस की तह़क़ीक़ हो जाएगा। बिला शुबा जब कोई शख़्स नज़र को लाया'नी (बे मा'ना) और बे फ़ाइदा उमूर से बाज़ रखेगा तो वोह इबादत में लज़्ज़त और ताअ़त में ह़लावत और दिल में सफ़ाई मह़सूस करेगा जिस से **क़ब्ल अज़ीं**[1] ख़ाली था।

तीसरा उसूल :

मुन्दरिजए बाला आ'ज़ा की निगहदाश्त व ह़िफ़ाज़त का तीसरा त़रीक़ा येह है कि इस पर ग़ौर किया जाए कि[2] इन आ'ज़ा से क्या काम लेना है और[3] इन्हें कौन से काम सर अन्जाम देने के लिये बनाया गया है ? अगर येह उस काम के क़ाबिल न रहे तो सख़्त ह़सरत व ख़सारा उठाना पड़ेगा। येह ख़याल दिल में **जा गुज़ीं**[4] हो जाने से भी इन की निगहदाश्त हो सकती है।

पाउं **फ़िरदौसे बरीं**[5] के बाग़ात व मह़ल्लात में चलने फिरने के लिये बनाए गए हैं और हाथ जन्नत में **शराबे त़हूर**[6] के

---

1 इस से पहले। 2 इस इ़बारत के बा'द येह अल्फ़ाज़ थे : "**क़ियामत के दिन**" जो कि अस्ल अ़रबी मतन के लिह़ाज़ से ज़ाइद और किताबत की ग़लती है, लिहाज़ा इन्हें ह़ज़्फ़ कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या) 3 इस इ़बारत के बा'द येह अल्फ़ाज़ थे : "**क़ियामत में इन से**" जो कि अस्ल अ़रबी मतन के लिह़ाज़ से ज़ाइद और किताबत की ग़लती है, लिहाज़ा इन्हें ह़ज़्फ़ कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या) 4 पुख़्ता। 5 जन्नत का आ'ला त़बक़ा। 6 इन्तिहाई पाकीज़ा शराब।

छलकते जाम पकड़ने और मेवाजात तोड़ने के लिये दिये गए हैं और आंख दीदारे इलाही से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के लिये अ़त़ा हुई है, (1) عَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس बाक़ी आ'ज़ा भी अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा कामों के लिये बनाए गए हैं और इन मज़्कूरा मक़ासिद से दोनों जहान में और कोई आ'ला और अफ़्ज़ल मक़सद नहीं हो सकता। लिहाज़ा जिन चीज़ों को आ'ला तरीन मक़ासिद के लिये तय्यार किया गया हो इन्हें लाज़िमन फ़ुज़ूल व नामुनासिब अफ़्आ़ल व ह़रकात से मह़फ़ूज़ रखना चाहिये।

अगर तुम इन मज़्कूरा तीन उसूलों पर कारबन्द हो जाओगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی हर फ़ुज़ूल व ह़राम चीज़ से बचे रहोगे।
وَاللّٰهُ وَلِيُّ التَّوْفِيْقِ وَ هُوَ حَسْبِي وَ نِعْمَ الْوَكِيْل

फ़स्ले दुवुम : कान के बयान में

कान को भी बुरी और फ़ुज़ूल बातों के सुनने से मह़फ़ूज़ रखना ज़रूरी है और इस का ज़रूरी होना दो वजह से है :

एक तो इस लिये कि रिवायत में आया है कि सुनने वाला भी कलाम करने वाले के साथ शरीक होता है।

किसी शाइ़र ने इस चीज़ को इन दर्जे ज़ैल अश्आ़र में बयान किया है :

(١) تَحَرَّ مِنَ الطُّرُقِ اَوْسَاطَهَا وَعَدِّ عَنِ الْجَانِبِ الْمُشْتَبِهِ
(٢) وَسَمْعُكَ صُنْ (2) عَنْ سَمَاعِ الْقَبِيْحِ كَصَوْنِ اللِّسَانِ عَنِ النُّطْقِ بِهِ
(٣) فَاِنَّكَ عِنْدَ سَمَاعِ الْقَبِيْحِ شَرِيْكٌ لِقَائِلِهِ فَانْتَبِهِ

---

(1) इसी पर मज़ीद का अन्दाज़ा फ़रमा लीजिये। (2) यहां लफ़्ज़ "صُنْ" (सुन) का इज़ाफ़ा किया गया है जो कि अस्ल अ़रबी मतन में है और तर्जमा भी इस का तक़ाज़ा करता है। (इ़ल्मिय्या)

(1) इफ़रात़ व तफ़्रीत़ से बच कर दरमियानी राह चलने की कोशिश करो और शुबे वाली जानिब से दूर रहो।

(2) अपने कान को बुरी बातें सुनने से रोके रखो जिस त़रह़ ज़बान को बुरी गुफ़्त्गू से।

(3) क्यूंकि अगर तुम ख़िलाफ़े शरअ़ बातें सुनोगे तो याद रखो कि तुम भी कहने वाले के साथ शरीक समझे जाओगे।

बुरी बातें सुनने से परहेज़ की दूसरी वजह येह है कि अगर तुम इन्हें सुनोगे तो दिल में वस्वसे और ख़यालात पैदा होंगे, इस त़रह़ तुम ख़यालात में मुस्तग्रक़ हो जाओगे और इस सूरत में लाज़िमन इ़बादत में ग़ैर मा'मूली रुकावट पैदा होगी।

फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान कि जो गुफ़्त्गू इन्सान के दिल और ज़बान तक पहुंचती है उस की ख़ासिय्यत ऐसी है जैसे पेट में त़आ़म और सब जानते हैं कि बा'ज़ खाने नुक़्सान देह और बा'ज़ नफ़्अ़ देने वाले होते हैं, बा'ज़ खाने जिस्म की गिज़ा बनते हैं और बा'ज़ ज़हर की मानिन्द बुरा असर करते हैं, ठीक इसी त़रह़ अच्छी और पाकीज़ा गुफ़्त्गू से ईमान ताज़ा होता है और बुरी गुफ़्त्गू से मुर्दा हो जाता है, बल्कि त़आ़म की निस्बत कलाम का असर ज़ियादा होता है और ज़ियादा देर बाक़ी रहता है, इस लिये कि नुक़्सान देह त़आ़म मे'दे से नींद वग़ैरा के ज़रीए़ ज़ाइल हो जाता है और बसा अवक़ात इस का असर कुछ वक़्त बाक़ी रहने के बा'द ख़त्म हो जाता है, अगर असर ज़ाइल न भी हो तो दवा के ज़रीए़ ज़ाइल किया जा सकता है लेकिन बा'ज़ बातें बसा अवक़ात इन्सान के दिल में इस त़रह़ जा गुज़ीं हो जाती हैं कि भूलती ही नहीं, अगर वोह ख़राब और ना

रवा हों तो इन्सान को हमेशा इन का तसव्वुर ख़राबी में डाले रखता है और इन की वजह से दिल वस्वसों की **आमाज गाह**[1] बना रहता है ह़ालांकि इन ख़यालात से दिल को पाक रखना ज़रूरी होता है, ऐसे वसाविस से दिल को मह़फ़ूज़ रखने के लिये ह़क़ तआ़ला की मदद त़लब करनी चाहिये क्यूंकि बसा अवक़ात येह वस्वसे किसी बला और आफ़त में मुब्तला कर देते हैं और इन्सान के एह़सासात को ख़्वाह मख़्वाह ह़रकत देते रहते हैं यहां तक कि बन्दा इन के सबब किसी बड़ी आफ़त में मुब्तला हो जाता है, लेकिन अगर इन्सान अपने कानों को फ़ुज़ूल व लाया'नी बातों के सुनने से मह़फ़ूज़ रखे तो बहुत सी आफ़ात से आराम में रहता है। अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि इस में ग़ौर करे। وَ بِاللّٰہِ التَّوۡفِیۡق

तीसरी फ़स्ल : ज़बान के बयान में

फिर ज़बान की ह़िफ़ाज़त व निगहदाश्त और फ़ुज़ूलियात व लग़वियात से इसे बाज़ रखना भी ज़रूरी है क्यूंकि ज़ियादा सरकशी व बे दरेग़ी और सब से ज़ियादा फ़साद व नुक़्सान इसी उ़ज़्व (ज़बान) से रूनुमा होता है। ह़ज़रते सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने एक दफ़्आ़ दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आप मेरे लिये सब से ज़ियादा ख़त़रनाक और नुक़्सान देह किस चीज़ को क़रार देते हैं ? तो ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी **ज़बान मुबारक** पकड़ कर इरशाद फ़रमाया कि "**इसे !**"[2]

1 मैदाने जंग।

2 ......سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۱۸۲/۴، حدیث:۲۴۱۸۔

हज़रते यूनुस बिन अ़ब्दुल्लाह قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं कि "मेरा नफ़्स बसरा जैसे गर्म शहर में सख़्त गर्मी के दिनों में रोज़ा रखने की ताक़त तो रखता है लेकिन फ़ुज़ूल गोई से ज़बान को रोकने की ताक़त नहीं रखता।"

तो मा'लूम हुवा कि ज़बान सब से ज़ियादा ज़रर रसां और ख़त़रनाक है, लिहाज़ा इस की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी और इस पर कन्ट्रोल करने के लिये बड़ी कोशिश व जिद्दो जहद की ज़रूरत है। हम यहां इस की हिफ़ाज़त के **पांच उसूल**[1] बयान करते हैं :

पहला उसूल :

वोह जो हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इन्सान रोज़ाना सुब्ह जब बेदार होता है तो तमाम आ'ज़ा ज़बान से मुख़ात़िब हो कर इस अम्र की इसे ताकीद करते हैं कि दिन को दुरुस्ती व सदाक़त पर क़ाइम रहना और बेहूदा व फ़ुज़ूल गोई से बचे रहना क्यूंकि अगर तू दुरुस्त और ठीक रहेगी तो हम भी दुरुस्त रहेंगे और अगर तू **कज-रवी** के रास्ते पर चलेगी तो हम भी **कज-रवी** के रास्ते पर चल पड़ेंगे।

मैं कहता हूं कि इस कलाम के मा'ना येह हैं कि ज़बान की अच्छी बुरी बातें इन्सान के[2] आ'ज़ा पर असर अन्दाज़ होती हैं, अच्छी बातें तो मज़ीद तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी के हुसूल का ज़रीआ़ बनती हैं और बुरी ज़िल्लत व ख़्वारी का बाइ़स, इस सिलसिले में

---

1 यहां "**तीन उसूल**" लिखा था येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में "पांच उसूल" लिखा है और आगे भी मुतरजिम ने पांच उसूल ही बयान किये हैं, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या) 2 इस इ़बारत के बा'द येह अल्फ़ाज़ थे : 'आ'ज़ा पर बाक़ी" जो कि अस्ल अ़रबी मतन के लिहाज़ से ज़ाइद और किताबत की ग़लत़ी है, लिहाज़ा इन्हें ह़ज़्फ़ कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से जो क़ौल मन्क़ूल है वोह भी इस मा'ना की ताईद करता है, आप (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं :

اِذَا رَاَیْتَ قَسَاوَۃً فِیْ قَلْبِکَ وَهْنًا فِیْ بَدَنِکَ وَ حِرْمَانًا فِیْ رِزْقِکَ فَاعْلَمْ اَنَّکَ تَکَلَّمْتَ فِیْمَا لَا یَعْنِیْکَ

जब तुम अपने दिल में क़सावत, बदन में सुस्ती और रिज़्क़ में तंगी मह़सूस करो तो समझ लो कि तुम से कहीं फ़ुज़ूल और लाया'नी कलिमे निकल गए हैं जिस का येह नतीजा है।

दूसरा उसूल :

वक़्त बहुत क़ीमती शै है इस की क़दर करना बहुत ज़रूरी है और ज़िक्रे इलाही के सिवा अकसर अवक़ात बन्दे से लग़्व और बेकार बातें हो जाती हैं और इन में पड़ कर वक़्त ज़ाएअ़ हो जाता है।

ह़ज़रते ह़स्सान बिन सिनान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि आप एक बालाख़ाने के पास से गुज़रे तो उस के मालिक से दरयाफ़्त किया : "येह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अ़र्सा गुज़रा है ?" येह सुवाल करने के बा'द आप (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) दिल में सख़्त नादिम हुवे और नफ़्स से मुख़ात़िब हो कर यूं फ़रमाया : "**ऐ मग़रूर नफ़्स** ! तू फ़ुज़ूल व ला या'नी सुवालात में वक़्ते अ़ज़ीज़ को ज़ाएअ़ करता है।" फिर इस फ़ुज़ूल सुवाल के **कफ़्फ़ारे**(1) में आप (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने एक साल रोज़े रखे।

वोह लोग किस क़दर ख़ुश नसीब हैं जो वक़्ते अ़ज़ीज़ की क़ीमत जान कर इस की क़द्र करते हैं और अपनी इस्लाहे़ नफ़्स में मसरूफ़ रहते हैं और कितने बद क़िस्मत और अह़मक़ हैं वोह लोग जिन्हों ने ज़बान की लगाम ढीली छोड़ रखी है और लग़्वियात में मश्ग़ूल रहते हैं, किसी शाइ़र ने क्या ही अच्छा कहा है :

---

1 .....बदले।

(١) وَ اغْتَنِمْ رَكْعَتَيْنِ فِى ظُلْمَةِ اللَّيْلِ   اِذَا كُنْتَ خَالِيًا مُسْتَرِيْحًا
(٢) وَ اِذَا مَا هَمَمْتَ بِاللَّغْوِ فِى الْبَا   طِلِ فَاجْعَلْ مَكَانَهُ تَسْبِيْحًا
(٣) وَلُزُوْمُ السُّكُوْتِ خَيْرٌ مِنَ النُّطْقِ   وَ اِنْ كُنْتَ فِى الْكَلَامِ فَصِيْحًا

(1) जब तुम्हारा दिल दुन्यवी तफ़क्कुरात से ख़ाली और राह़त में हो तो ऐसे वक़्त को ग़नीमत जानो और रात की तारीकी में नवाफ़िल में मसरूफ़ रहो।

(2) और अगर किसी वक़्त लग़्व व बात़िल सुख़न ज़बान से निकालने लगो तो ज़बान को इस से रोक लो और इस की जगह रब तआ़ला की तस्बीह़ व तक़्दीस ज़बान से अदा करो।

(3) क्यूंकि लग़्व व बात़िल गुफ़्त्गू से सुकूत व ख़ामोशी ज़रूरी है अगर्चे तुम कितने ही साफ़ ज़बान क्यूं न हो।

तीसरा उसूल :

ह़िफ़्ज़े ज़बान(1) से आ'माले सालिह़ा की ह़िफ़ाज़त होती है क्यूंकि जो शख़्स ज़बान की निगहदाश्त नहीं करता बल्कि हर वक़्त गुफ़्त्गू में मसरूफ़ रहता है तो ला मुह़ाला ऐसा शख़्स लोगों की ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है, मश्हूर फ़िक़्रा है :

مَنْ كَثُرَ لَغَطُهُ كَثُرَ غَلَطُهُ या'नी **ज़ियादा गो**(2) ज़ियादा ग़लत़ियां करता है।

और **ग़ीबत**(3) आ'माले सालिह़ा को इस त़रह़ तबाह करती है जिस त़रह़ आस्मानी बिजली और ग़ीबत करने वाले आदमी के

---

1 ज़बान की ह़िफ़ाज़त 2 ज़ियादा बोलने वाला। 3 ग़ीबत के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ "**ग़ीबत की तबाहकारियां**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

आ'माल इस त़रह़ ज़ाएअ़ होते हैं जिस त़रह़ वोह मिन्जिनीक़ (एक त़रह़ की तोप) में रख कर मशरिक़ व मग़रिब और जुनूब व शिमाल में फेंक दिये जाएं।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को किसी शख़्स ने कहा कि फ़ुलां शख़्स ने आप की ग़ीबत की है तो आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का एक थाल भर कर रवाना किया और साथ कहला भेजा कि सुना है तू ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या की हैं तो मैं ने इन का **मुआ़वज़ा**[1] देना बेहतर जाना।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सामने किसी ने ग़ीबत का ज़िक्र किया तो आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने फ़रमाया : अगर मैं किसी की ग़ीबत करना दुरुस्त जानता तो अपनी मां की ग़ीबत करता क्यूंकि सब से ज़ियादा मेरी नेकियों की मुस्तह़िक़ वोह है।

नक़्ल है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नमाज़े तहज्जुद फ़ौत हो गई तो आप की बीवी ने आप को इस पर आ़र दिलाई, आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने जवाब दिया कि गुज़श्ता शब एक जमाअ़त सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रही है और सुब्ह़ उन्हों ने मेरी ग़ीबत की है तो उन की उस रात की इ़बादत क़ियामत के रोज़ मेरे आ'माल के तराज़ू में रख दी जाएगी।

चौथा उसूल :

ज़बान की निगहदाश्त करने से इन्सान दुन्या की आफ़ात से सालिम रहता है,

---

1 .....बदला।

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का फ़रमान है कि ज़बान से ऐसी बात न निकालो जिसे सुन कर लोग तुम्हारे दांत तोड़ दें।

एक और बुज़ुर्ग (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) फ़रमाते हैं : अपनी ज़बान को बे लगाम न छोड़ो ताकि तुम्हें किसी फ़साद में मुब्तला न कर दे।

एक और बुज़ुर्ग (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه) फ़रमाते हैं :

اِحۡفَظۡ لِسَانَكَ لَاتَقُوۡلُ فَتُبۡتَلٰى   اِنَّ الۡبَلَاءَ مُوَكَّلٌ بِالۡمَنۡطِقِ

तर्जमा : अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो और बेजा बातें न करो क्यूंकि बसा अवक़ात गुफ़्त्गू आफ़त में पड़ने का बाइस बन जाती है।

अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं :

(١) اَلَا اِحۡفَظۡ لِسَانَكَ اِنَّ اللِّسَانَ   سَرِيۡعٌ اِلَى الۡمَرۡءِ فِيۡ قَتۡلِهٖ

(٢) وَ اِنَّ اللِّسَانَ دَلِيۡلُ الۡفُؤَادِ   يَدُلُّ الرِّجَالَ عَلٰى عَقۡلِهٖ

(1) पूरी एह़तियात़ से ज़बान की हिफ़ाज़त कर क्यूंकि येह मा'मूली सा उ़ज़्व बा'ज़ दफ़्आ़ बहुत जल्द इन्सान को हलाकत में डाल देता है।
(2) बिला शुबा ज़बान इन्सान के दिल पर दलील है जो गुफ़्त्गू करने वालों की अ़क़्ल का अन्दाज़ा बताती है।

इब्ने अबी मुत़ीअ़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं :

(١) لِسَانُ الۡمَرۡءِ لَيۡثٌ فِيۡ كَمِيۡنٍ (1)   اِذَا خَلّٰى اِلَيۡهِ لَهٗ اِغَارَهٗ

(٢) فَصُنۡهُ عَنِ الۡخَنَا بِلِجَامِ صَمۡتٍ   يَكُنۡ لَكَ مِنۡ بَلِيَّاتٍ سِتَارَهٗ

---

1 यहां लफ़्ज़ "مكين" (मकीन) था येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "كَمِيۡنٍ" (कमीनिन) है, लिहाज़ा इस की **तस्ह़ीह़** कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

(1) ज़बान (तबाह करने में) घात में छुपे हुवे शेर की मानिन्द है जो मौक़अ़ पाने पर ग़ारतगरी करता है।

(2) इस लिये इसे ख़ामोशी की लगाम दे कर लग़्वियात से बन्द रख, इस त़रह़ तू बहुत सी आफ़ात व बलिय्यात से बच जाएगा।

बहुत से कलिमात ऐसे होते हैं जो ज़बान से निकालने वाले को कहते हैं : हमें ज़बान से बाहर न निकाल। अल्लाह तआ़ला तमाम अहले ईमान को आफ़ाते लिसान से मह़फ़ूज़ रखे।

पांचवां उसूल :

ज़बान की ह़िफ़ाज़त न करने के बाइ़स आख़िरत में इन्सान अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाएगा, उस अ़ज़ाब का तसव्वुर ज़ेह्न में रखा जाए और जो आफ़ात वहां इस बिना पर पेश आएंगी उन्हें याद रखा जाए और इस सिलसिले में तुम येह नुक्ता याद रखो कि तुम जो गुफ़्त्गू करते हो वोह या तो ह़राम व नाजाइज़ होगी या फ़ुज़ूल व लाया'नी, अगर ह़राम व नाजाइज़ होगी तो ऐसी गुफ़्त्गू बिला शुबा अ़ज़ाबे दोज़ख़ का बाइ़स है जिसे बरदाश्त करने की त़ाक़त इन्सान में नहीं है, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीसे मुबारक है :

لَيْلَةَ اُسْرِىَ بِىْ رَاَيْتُ فِى النَّارِ قَوْمًا يَّاْكُلُوْنَ الْجِيَفَ فَقُلْتُ يَا جِبْرَئِيْلُ مَنْ هٰؤُلَاءِ؟
قَالَ هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ (1)

मे'राज की रात मैं ने एक क़ौम देखी जो मुर्दार खा रही थी, मैं ने जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) से पूछा येह कौन लोग हैं ? जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो दूसरों का गोश्त खाते थे या'नी उन की ग़ीबत करते थे।

(1)......مسند امام احمد، ۱/۵۵۳، حدیث: ۲۳۲٤، ملتقطًا و بتغیر۔

और एक दफ़्आ़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया :

"اِقْطَعْ لِسَانَكَ عَنْ حَمَلَةِ الْقُرْاٰنِ وَطُلَّابِ الْعِلْمِ وَلَا تُمَزِّقِ النَّاسَ بِلِسَانِكَ فَتُمَزِّقَكَ كِلَابُ النَّارِ" (1)

उ़लमा और त़ालिबे इ़ल्मों की ग़ीबत से ज़बान बन्द रखना और आ़म लोगों को ज़बान से न पीसना (या'नी ग़ीबत न करना) ताकि रोज़े क़ियामत दोज़ख़ के कुत्ते तुझे दांतों से न चबाएं।

हज़रते अबू किलाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :

اِنَّ الْغِيْبَةَ خَرَابُ الْقَلْبِ مِنَ الْهُدٰى ग़ीबत की वजह से इन्सान का दिल हिदायत से हट जाता है और वीराने में तब्दील हो जाता है।

نَسْاَلُ اللّٰهَ الْعِصْمَةَ مِنْ ذٰلِكَ بِفَضْلِهٖ

येह कलाम तो नाजाइज़ व ह़राम गुफ़्तगू से मुतअ़ल्लिक़ था, अब रही मुबाह़ या'नी ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तगू तो वोह भी चार वजह से ठीक नहीं :

पहली वजह :

येह है कि फ़ुज़ूल व लाया'नी गुफ़्तगू किरामन कातिबीन को लिखनी पड़ती है, तो इन्सान को चाहिये कि इन से ह़या करे और फ़ुज़ूल बातें लिखने की इन को तक्लीफ़ न दे, रब तआ़ला का इरशाद है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ (2)

बन्दा कोई लफ़्ज़ ज़बान से नहीं निकालता मगर इसे नोट करने के लिये एक निगहबान उस के पास तय्यार रहता है।

1 ......الترغيب والترهيب، المقدمة، الترهيب من الرياء...الخ، ۱/ ۵۰، حديث: ۵۹، بتغير۔

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो। (پ۲۶، ق:۱۸)

दूसरी वजह :

येह है कि येह अच्छी बात नहीं कि लग़्व और बेहूदा बातों से भरा हुवा आ'माल नामा रब तआ़ला के हुज़ूर में पेश हो, इस बिना पर बन्दे को चाहिये कि फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बचे, बा'ज़ किताबों में मज़्कूर है कि एक शख़्स ने किसी को फ़ुज़ूल गुफ़्तगू करते देखा तो कहा : तेरे लिये ख़राबी हो, तेरी येह सब बातें अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर पेश होंगी, तो देख ऐसी बातें क्यूं पेश कर रहा है।

तीसरी वजह :

येह है कि बन्दे को क़ियामत के रोज़ कहा जाएगा कि अपने आ'माल नामे को अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर तमाम मख़्लूक़ के रूबरू पढ़ कर सुनाए, उस वक़्त ह़श्र की ख़ौफ़नाक सख़्तियां उस के सामने होंगी, इन्सान प्यास की शिद्दत से मर रहा होगा, जिस्म पर कपड़ा नहीं होगा, भूक से कमर टूट रही होगी, जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राह़त उस पर बन्द कर दी गई होगी ऐसे ह़ाल में अपने ऐसे नामए आ'माल को पढ़ना जो फ़ुज़ूल व बेहूदा गुफ़्तगू से पुर हो किस क़दर तक्लीफ़ देह चीज़ होगी, इस लिये चाहिये कि ज़बान से सिवाए अच्छी बात के कुछ न निकाले।

चौथी वजह :

येह है कि बन्दे को फ़ुज़ूल और लाया'नी बातों पर मलामत की जाएगी और शर्म दिलाई जाएगी और बन्दे के पास इस का कोई जवाब नहीं होगा और अल्लाह तआ़ला के सामने शर्म व नदामत की वजह से इन्सान पानी पानी हो जाएगा।

बा'ज़ बुज़ुर्गों (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है : अपनी ज़बान को फ़ुज़ूलियात से रोक, क्यूंकि इन का ह़िसाब त़वील होगा।

जो शख़्स नसीह़त का आरज़ू मन्द है उस के लिये येह चार उसूल काफ़ी हैं और हम ने अपनी किताब "**असरारे मुआ़मलाते दीन**" में ऐसे उसूल पूरी शर्ह़ से लिखे हैं, अगर ज़ियादा तफ़्सील मत़लूब हो तो इस का मुत़ालआ़ करो, इस में तुम को हर शै का **शाफ़ी**[1] बयान मिलेगा।

चौथी फ़स्ल : दिल के बयान में

फिर तुम पर दिल की ह़िफ़ाज़त, इस की इस्लाह़ और इसे दुरुस्त रखने की कोशिश करना भी ज़रूरी है क्यूंकि दिल का मुआ़मला बाक़ी आ'ज़ा से ज़ियादा ख़त़रनाक है और इस का असर बाक़ी आ'ज़ा से ज़ियादा है, इस की दुरुस्ती ज़ियादा दिक़्क़त त़लब और इस की इस्लाह़ ज़ियादा मुश्किल है और इस का ह़ाल ज़ियादा मह़नत त़लब है। मैं इस्लाहे़ क़ल्ब के मुतअ़ल्लिक़ पांच जामेअ़ उसूल बयान करता हूं जिन पर अ़मल करने से दिल की इस्लाह़ اِنْ شَآءَاللّٰه पूरी त़रह़ हो जाएगी।

पहला उसूल :

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ ؀ (2)

अल्लाह तआ़ला ख़ाइन आंखों और दिल के पोशीदा राज़ों को जानता है।

---

1 ....तसल्ली बख़्श।

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है। (پ۲۴،المؤمن:۱۹)

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

(1) وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ — *जो कुछ तुम्हारे दिलों में है **अल्लाह** तआ़ला उस से बा ख़बर है।*

एक और जगह फ़रमाया :

(2) اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ — *बेशक **अल्लाह** तआ़ला सीने के राज़ जानता है।*

देखो ! **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद में कितनी दफ़्अ़ा इस बात को दोहराया और तकरार किया है, **अल्लाह** तआ़ला का सीने के असरार पर आगाह होना ही डरने और ख़ौफ़ करने के लिये काफ़ी है क्यूंकि **अ़ल्लामुल ग़ुयूब** के साथ मुआ़मला बहुत नाज़ुक है इस लिये तुम्हें ख़याल होना चाहिये कि तुम्हारे दिलों में किस त़रह़ के राज़ हैं जिन से **अल्लाह** तआ़ला बा ख़बर है अगर مَعَاذَ اللّٰه तुम्हारे ख़यालात व इरादे गन्दे हों तो तुम्हें शर्मो ह़या करना चाहिये।

दूसरा उसूल :

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

(3) اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَ اَبْشَارِكُمْ وَ اِنَّمَا يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ

या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरतों और खालों को नहीं देखता बल्कि वोह तुम्हारे दिलों को भी देखता है।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** जानता है जो तुम सब के दिलों में है। (پ۲۲،الاحزاب:۵۱)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह दिलों की बात जानता है। (پ۱۰،الانفال:۴۳)

3 صحيح مسلم، كتاب البر...الخ، باب تحريم ظلم...الخ،ص۱۳۸۷،حديث:۶۵۶۴،بتغير

इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम हुवा कि दिल रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है तो उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतिमाम करे, इसे धोए, मैल कुचेल से सुथरा रखे ताकि मख़्लूक़ उस के चेहरे के किसी ऐ़ब पर मुत्तलअ़ न हो मगर दिल का एहतिमाम न करे जो रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है, चाहिये तो येह था कि दिल को पाकीज़ा रखे, इसे आरास्ता करे और सुथरा रखे ताकि रब्बुल आ़लमीन इस में किसी ऐ़ब को न पाए लेकिन अफ़्सोस का मक़ाम है कि दिल गन्दगी, पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है मगर जिस पर मख़्लूक़ की नज़र पड़ती है उस के लिये कोशिश होती है कि इस में कोई ऐ़ब व क़बाह़त न पाई जाए।

तीसरा उसूल :

दिल एक बादशाह की मानिन्द है जिस की इता़अ़त की जाती है और बाक़ी आ'ज़ा रिआ़या की त़रह़ हैं कि सब इस की पैरवी करते हैं, तो अगर सरदार दुरुस्त हो तो उस के **ताबेअ़**[1] भी दुरुस्त होते हैं। इसी त़रह़ अगर बादशाह दुरुस्त हो तो रिआ़या भी दुरुस्त और ठीक होती है, इस बयान की वज़ाह़त हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की दर्जे ज़ैल ह़दीस से होती है, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इरशाद है :

اِنَّ فِی الْجَسَدِ مُضْغَةً اِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهٗ وَ اِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهٗ اَلَا وَ هِیَ الْقَلْبُ[2]

---

1 मा तह़्त।

2 .....صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فضل من استبرأ لدینه، ۱/۳۳، حدیث:۵۲۔

इन्सान के अन्दर गोश्त का एक **लोथड़ा**[1] है, अगर वोह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त होता है और अगर वोह ख़राब हो तो सारा जिस्म ख़राब होता है, सुन लो कि वोह दिल है।

जब तमाम जिस्म की इस्लाह़ क़ल्ब की इस्लाह़ पर **मौक़ूफ़**[2] है तो दिल की इस्लाह़ बहुत ज़रूरी है।

चौथा उसूल :

दिल बन्दे के नफ़ीस व आ'ला जवाहिर का ख़ज़ाना है इन आ'ला जोहरों में से एक जोहर आ'ला व उ़म्दा है, वोह मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी है जो दोनों जहान की सआ़दत का ज़रीआ़ है और वोह क़ल्बी बसीरत है जिस की वजह से दरबारे इलाही में इन्सान को वजाहत और बुज़ुर्गी ह़ासिल होती है फिर दिल से तअ़ल्लुक़ रखने वाली उ़म्दा चीज़ों में से एक उ़म्दा चीज़ इ़बादात व त़ाआ़त में निय्यते ख़ालिस है जिस के साथ सवाब और जज़ा का तअ़ल्लुक़ है, इस के इ़लावा दिल के मुतअ़ल्लिक़ात में से उ़लूम और ह़िक्मत की बातें हैं जो बन्दे के लिये शरफ़ का बाइ़स हैं और पाकीज़ा अख़्लाक़ और अच्छी आ़दतें हैं जिन से इन्सान को फ़ज़ीलत, अ़ज़मत और इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है, हम ने अपनी किताब "**असरारे मुआ़मलाते दीन**" में इस बात को पूरी शर्ह़ व तफ़्सील से लिखा है।

तो जब दिल ऐसे गिरां क़द्र और बेहतरीन जवाहिर का ख़ज़ाना है तो ऐसे ख़ज़ाने की हर क़िस्म की मैल कुचेल, हर

1 टुकड़ा। 2 मुन्ह़सिर।

आफ़त और चोरों व डाकूओं वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त व निगहदाश्त ज़रूरी है, येह ऐसा ख़ज़ाना है जिस की ह़िफ़ाज़त हर त़रह़ ज़रूरी है ताकि इस के गिरां क़द्र मोती ख़राब न हों और न कोई दुश्मन इन पर क़ब्ज़ा कर सके।

पांचवां उसूल :

मैं ने दिल के ह़ालात पर ग़ौर किया तो मुझे इस के पांच ह़ालात ऐसे मिले जो दूसरे किसी उ़ज़्व में नहीं पाए जाते :

﴾1﴿ येह कि दुश्मन हर वक़्त इस की त़रफ़ मुतवज्जेह है और इसे तबाह करने का क़स्द किये हुवे है क्यूंकि शैत़ान इन्सान के दिल के साथ हर वक़्त लगा रहता है तो क़ल्ब इल्हाम व वस्वसा दोनों की मन्ज़िल है, शैत़ान और फ़िरिश्ते दोनों इसे अपनी अपनी दा'वत देने में मसरूफ़ रहते हैं।

﴾2﴿ इस की दूसरी ह़ालत येह है कि क़ल्ब की मस्रूफ़िय्यत बहुत ज़ियादा है क्यूंकि अ़क़्ल और शहवत दोनों अपने अपने लश्कर इस में दौड़ाते रहते हैं, गोया येह अ़क़्ल व शहवत दोनों के लश्करों का **मैदाने कारज़ार**[1] है, इस तरह़ दिल दोनों की जंग और दोनों के मुक़ाबले का मक़ाम बना रहता है तो जो मक़ाम दोनों दुश्मनों के दरमियान ह़द की ह़ैसिय्यत रखता हो उस की निगहदाश्त बहुत ज़रूरी अम्र है।

﴾3﴿ इस की तीसरी ह़ालत येह है कि इस के अ़वारिज़ व लवाहिक़ात बहुत ज़ियादा हैं, इस लिये कि वस्वसे व ख़त़रात तीरों की मानिन्द हैं जो हमेशा इस पर बरसते रहते हैं या बारिश की त़रह़ हैं कि हमेशा इस पर गिरते रहते हैं कभी बन्द नहीं होते और इन्सान को येह

---

1 जंग का मैदान।

ता़क़त नहीं कि इन्हें रोक या बन्द कर सके और दिल कोई आंख की तरह़ तो है नहीं कि ख़त़रे के वक़्त इसे बन्द कर लिया जाए और ब वक़्ते अम्न खोल लिया जाए नीज़ येह क़ल्ब किसी तन्हा मक़ाम में भी नहीं और न येह कहीं रात की तारीकी में मख़्फ़ी है कि दुश्मन इसे न पा सकें और न येह ज़बान की मानिन्द दांतों और होंटों की ह़िफ़ाज़त में है कि तू इसे बचा सके और मह़फ़ूज़ रख सके बल्कि दिल तो ख़त़रात व वसाविस का निशाना है, और तुम में इन ख़त़रात व वसाविस को रोकने की पूरी क़ुव्वत नहीं कि सह़ीह़ मा'ना में इस की निगहदाश्त कर सको, लिहाज़ा ख़त़रात व वसाविस को मज़ीद तक़्वियत पहुंचाता रहता है। इस बिना पर क़ल्ब से तअ़ल्लुक़ रखने वाले ख़त़रात का मुक़ाबला सख़्त कोशिश और मह़नत चाहता है और इन ख़त़रात का दिफ़ाअ़ अ़ज़ीम जिद्दो जहद का **मुतक़ाज़ी**[1] है।

﴾4﴿ इस की चौथी ह़ालत येह है कि इस का इ़लाज इस बिना पर भी मुश्किल है कि येह इन्सान की नज़र से ग़ाइब है। इस बिना पर बहुत **बई़द**[2] है कि तुम इस की आफ़त और इस के लिये ज़रर रसां अश्या को भांप सको और इन पर इत्तिलाअ़ पा सको, इस लिये इस्लाह़े क़ल्ब के लिये त़वील मुजाहदों, कोशिशों और रियाज़तों की ज़रूरत है।

﴾5﴿ इस की पांचवीं ह़ालत येह है कि आफ़ात इस पर जल्दी ह़म्ला आवर होती हैं और येह हर वक़्त इन्क़िलाब व तब्दीली के लिये तय्यार रहता है, बा'ज़ लोगों ने कहा है कि दिल हन्डिया के उबलने से भी जल्दी इन्क़िलाब में आ जाता है, किसी शाइ़र ने कहा है :

---

1 चाहने वाला। 2 मुश्किल।

مَـا سُمِّـيَ الْقَـلْـبُ اِلَّا مِنْ تَقَلُّبِـهٖ   وَ الـرَّاْیُ یَضْـرِبُ بِـالْاِنْسَـانِ اَطْوَارًا

(**तर्जमा**) क़ल्ब का नाम इसी बिना पर क़ल्ब रखा गया है कि येह हर आन अदल बदल होता रहता है, और इस में मुख़्तलिफ़ राएं पैदा होती रहती हैं।

पस अगर दिल लग़्ज़िश खा जाए तो इस की लग़्ज़िश बहुत बड़ी लग़्ज़िश होगी और इस का बिगड़ जाना निहायत परेशान कुन अम्र होगा इस लिये कि दिल की लग़्ज़िश का अदना दरजा क़सावत और **ग़ैरुल्लाह**(1) की त़रफ़ मैलान है और इस की लग़्ज़िश का आख़िरी दरजा येह है कि इस पर कुफ़्र की मुहर लग जाती है, क्या तुम ने ह़क़ तआ़ला का येह इरशादे गिरामी नहीं सुना :

اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ﱪ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ (2)

इब्लीस ने सजदे से इन्कार कर दिया और तकब्बुर की राह इख़्तियार की और काफ़िरों में से हो गया।

उस के दिल में तकब्बुर था जिस के बाइ़स वोह हुक्मे रब्बी से मुन्किर और काफ़िर हो गया, दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

وَلٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ (3)

लेकिन वोह तो ज़मीन से चिमट गया और अपनी ख़्वाहिश का पैरू बन गया।

तो गुनाहों की त़रफ़ मैलान और ख़्वाहिशात की पैरवी चूंकि उस के दिल में थी इस के बाइ़स वोह एक मन्ह़ूस गुनाह पर आमादा हो गया, क़ुरआने मजीद में वारिद है :

---

(1) अल्लाह तआ़ला के इलावा।

(2) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया। (پ۱، البقرة:۳۴)

(3) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा। (پ۹،الاعراف:۱۷۶)

وَنُقَلِّبُ اَفۡـِٕدَتَهُمۡ وَاَبۡصَارَهُمۡ كَمَا لَمۡ يُؤۡمِنُوۡا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمۡ فِىۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ (1)

और हम उन के दिलों और आंखों को उलट देंगे तो जैसे इस कुरआन पर पहली बार ईमान न लाए इसी त़रह़ फिर भी ईमान नहीं लाएंगे, और हम उन को छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी में भटकते फिरें।

ऐ अ़ज़ीज़ ! ख़ासाने ह़क़ तआ़ला इसी बिना पर दिल के मुआ़मले में निहायत चोकन्ने रहते हैं और गिर्या व ज़ारी में मसरूफ़ रहते हैं और अपनी पूरी कोशिश इस की इस्लाह़ व दुरुस्ती में सर्फ़ कर देते हैं, कुरआने ह़कीम में वारिद है :

يَخَافُوۡنَ يَوۡمًا تَتَقَلَّبُ فِيۡهِ الۡقُلُوۡبُ وَالۡاَبۡصَارُ ﴿۳۷﴾ (2)

और वोह उस दिन से डरते हैं जिस दिन ख़ौफ़ व हिरास के बाइ़स दिल और आंखें उलट जाएंगी।

अल्लाह तआ़ला हम सब मुसलमानों को इ़ब्रत पकड़ने वालों, हिदायत याफ़्ता लोगों और इस्लाहे़ क़ल्ब की तगो दो करने वालों में शामिल फ़रमाए। وَهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ

सुवाल : बेशक दिल की इस्लाह़ का मुआ़मला निहायत ही अहम है, इस लिये हमें वोह उमूर बताइये जिन को इख़्तियार करने से इस की इस्लाह़ हो सकती है, और उन आफ़ात व मोहलिकात की भी निशान देही कर दीजिये जो ख़राबिये क़ल्ब

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को जैसा वोह पहली बार इस पर ईमान न लाए थे और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें। (پ۷،الانعام:۱۱۰)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे दिल और आंखें। (پ۱۸،النور:۳۷)

का बाइ़स हैं, मुमकिन है हमें भी अल्लाह तआ़ला इन पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ दे दे इस त़रह़ हम आप के बताए हुवे उसूलों की रोशनी में दिल की इस्लाह़ कर सकें ?

जवाब : इस्लाहे़ क़ल्ब के अस्बाब व ज़राएअ़ की तफ़्सील ख़ासी त़वील है, येह मुख़्तसर तालीफ़ इस पूरी तफ़्सील की मुतह़म्मिल नहीं। उ़लमाए आख़िरत (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने इस्लाहे़ क़ल्ब की तफ़्सीलात बयान करते हुवे एक जामेअ़ नुक्ते की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है और उन्हों ने दिल को दुरुस्त करने वाले नव्वे **ख़साइले ह़मीदा**[1] और इतनी ता'दाद में **ख़साइले रज़ीला**[2] बयान किये हैं जो फ़सादे क़ल्ब का बाइ़स हैं फिर इस्लाह़ से मुतअ़ल्लिक़ अफ़्आ़ल व उमूर और इस सिलसिले में कोशिश का त़रीक़ा और लाइके़ इजतिनाब उमूर को मुफ़स्सल त़ौर पर बयान किया है, अगर्चे क़ल्ब से तअ़ल्लुक़ रखने वाली अबह़ास ब ज़ाहिर त़वील मा'लूम होती हैं मगर ख़ुदा की क़सम ! जो शख़्स दीन की अहम्मिय्यत से वाक़िफ़ है ग़ाफ़िलों की त़रह़ ख़्वाबे ग़फ़्लत में नहीं पड़ा हुवा बल्कि बेदार है और अपनी भलाई के उमूर में ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है तो ऐसा शख़्स अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ व **इआ़नत**[3] से इन तमाम तफ़्सीलात को जानने और इन पर अ़मल पैरा होने को ज़ियादा तसव्वुर नहीं करेगा।

और हम ने इन तफ़्सीलात का कुछ थोड़ा ह़िस्सा अपनी किताब "**इह़याउल उ़लूम**" के बाब शर्ह़े अ़जाइबे क़ल्ब में बयान किया है, लेकिन पूरी तफ़्सील और कैफ़िय्यते इलाज वग़ैरा का बयान हम ने अपनी किताब "**अस्रारे मुआ़मलाते दीन**" में किया है और वोह एक मुस्तक़िल किताब है जो फ़वाइदे अ़ज़ीमा पर मुश्तमिल है

---

1 अच्छी आ़दात 2 बुरी आ़दात। 3 मदद।

लेकिन इन तफ़्सीलात से जय्यिद और रासिख़ उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ही कमा ह़क़्क़ुहू फ़ाइदा ह़ासिल कर सकते हैं और इस किताब "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" में हम ने वोह उसलूब बयान इख़्तियार किया है जिस से हर मुब्तदी, मुन्तही, क़वी और ज़ईफ़ नफ़अ़ ह़ासिल कर सके या'नी इस किताब में हम ज़ियादा गहराई और बारीकी में नहीं गए।

जब हम ने उन उसूलों पर ग़ौर किया जो इलाजे क़ल्ब के सिलसिले में काम आते हैं और जिन की बहुत ज़रूरत है और कोई भी शख़्स इन से बे नियाज़ नहीं हो सकता तो चार उसूल हमारे सामने आए, इसी त़रह़ फ़सादे क़ल्ब पैदा करने वाले भी चार उमूर सामने आए जो आ़बिदीन के लिये सख़्त पेचीदगी पैदा करने वाले और अहले मुजाहदा के लिये आफ़त हैं, दिलों के लिये फ़ितना, नफ़्स के लिये बला, इस्लाह़ में रुकावट पैदा करने वाले हैं, नीज़ दिलों को ऐ़बनाक और बरबाद करने वाले हैं और इन के मुक़ाबले में चार और हैं जिन से इ़बादत का मुआ़मला नज़्मो ज़ब्त़ इख़्तियार करता है और क़ुलूब इस्लाह़ पज़ीर होते हैं।

फ़सादे क़ल्ब का बाइ़स येह चार चीज़ें हैं :

﴾1﴿ दुन्या की उम्मीदें ﴾2﴿ इ़बादात में जल्दबाज़ी ﴾3﴿ ह़सद ﴾4﴿ तकब्बुर।

इस के मुक़ाबले में इस्लाह़ करने वाली येह चार चीज़ें हैं :

﴾1﴿ उम्मीदें कम करना ﴾2﴿ मुआ़मलात में तह़म्मुल व आहिस्तगी ﴾3﴿ मख़्लूक़ के साथ ख़ैर ख़्वाही ﴾4﴿ ख़ुशूअ़ और तवाज़ोअ़ से पेश आना।

येह हैं वोह आठ चीज़ें जिन के साथ क़ल्ब की इस्लाह़ या ख़राबी वाबस्ता है और इन्हीं पर सलाह़ व फ़साद का दारो मदार है, इस लिये अस्बाबे फ़साद से बचो, और मुफ़ीदे क़ल्ब बातों को इख़्तियार करो ताकि आख़िरत की मशक़्क़त से मह़फ़ूज़ रहो और अपने मक़्सूद को ह़ासिल कर सको, मैं तुम्हारे आगे मुख़्तसर मगर जामेअ़ त़रीक़े से इन आफ़ात की वज़ाह़त करता हूं :

तूले अमल का बयान

लम्बी उम्मीदें नेकी व त़ाअ़त की राह में रुकावट हैं नीज़ हर फ़ितने और शर का बाइस हैं। लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाना एक ला इलाज मरज़ है जो लोगों को और बहुत से मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तला करता है।

ऐ अ़ज़ीज़ ! जब तू लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाएगा तो इस से चार चीज़ों में इज़ाफ़ा होगा :

एक तर्के त़ाअ़त में ज़ियादती और इस की अदाएगी में सुस्ती में इज़ाफ़ा होगा, और इबादत व नेकी बजा लाने के वक़्त तुम अपने दिल में कहोगे अभी थोड़ी देर बा'द कर लूंगा, अभी काफ़ी वक़्त है, इबादत का मौक़अ़ फ़ौत नहीं होने दूंगा, ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बिल्कुल सच फ़रमाया है :

مَنْ خَافَ الْوَعِيْدَ قَرُبَ عَلَيْهِ الْبَعِيْدُ وَمَنْ طَالَ اَمَلُهٗ سَاءَ عَمَلُهٗ

जो अल्लाह तआ़ला की वईद से डरता है वोह दूर को भी नज़दीक ख़याल करता है और जो लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाता है वोह बद आ'माली का शिकार हो जाता है।

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه **ने फ़रमाया :**

اَلْاَمَلُ قَاطِعٌ عَنْ كُلِّ خَيْرٍ وَّ الطَّمَعُ مَانِعٌ مِّنْ كُلِّ حَقٍّ وَّ الصَّبْرُ صَائِرٌ اِلٰى كُلِّ خَيْرٍ وَّ النَّفْسُ دَاعِيَةٌ اِلٰى كُلِّ شَر

दुन्या की उम्मीदें इन्सान को हर नेक काम से काट देती हैं और त़म्अ़ व लालच हर ह़क़ से इन्सान को रोक देता है और सब्र हर भलाई की त़रफ़ रहनुमाई करता है और नफ़्से अम्मारा हर शर और बुराई की त़रफ़ बुलाता है।

दूसरी चीज़ जिस से तूले अमल में ज़ियादती होती है, तर्के तौबा है, तूले अमल की वजह से इन्सान तौबा करने से टाल मटोल शुरूअ़ कर देता है और दिल में कहता है अभी तौबा कर लूंगा, अभी काफ़ी वक़्त है, मैं अभी जवान हूं, मैं अभी कम उ़म्र हूं, तौबा हर वक़्त मेरे इख़्तियार में है, जब चाहूंगा कर लूंगा, इसी त़रह़ के बेहूदा ख़यालात में पड़ जाता है और इस्लाहे़ अह़वाल से पहले ही मौत अचानक आ कर उचक लेती है, और वोह [1] خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ط हो जाता है।

तीसरी चीज़ माल जम्अ़ करने की **ह़िर्स**[2] है जो तूले अमल से और बढ़ जाती है, इस ह़िर्स के नशे में इन्सान आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और **अश्ग़ाले दुन्या**[3] में डूब जाता है और ह़िर्स में मुब्तला हो कर अपने आप से यूं कहता है : "शायद मैं बुढ़ापे में जा कर मोह़ताज हो जाऊं, ज़ो'फ़े पीरी और कमज़ोरी के बाइ़स शायद ख़ुद न कमा सकूं, लिहाज़ा मेरे पास **फ़ाज़िल**[4] ज़ख़ीरा का होना ज़रूरी है ताकि बीमारी या बुढ़ापे या तंगदस्ती के वक़्त काम आ सके, इसी त़रह़ के हज़ारों ख़यालात इसे दुन्या की

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** दुन्या और आख़िरत दोनों का घाटा। (پ۱۷، الحج:۱۱)

2 ह़िर्स के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**ह़िर्स**" का मुत़ालआ़ कीजिये। 3 दुन्या के कामों। 4 ज़ियादा।

ह़िर्स की त़रफ़ और ज़ियादा राग़िब करते रहते हैं, ऐसा इन्सान खाने पीने की चीज़ों का बड़ा एहतिमाम करता है, कभी कहता है : मैं क्या खाऊं, कभी कहता है : क्या पियूं, कभी लिबास की फ़िक्र में होता है, कभी कहता है : गर्मी सर्दी सर पर है और मेरे पास कोई शै नहीं, कभी येह सोचता है शायद मेरी उ़म्र लम्बी हो और आख़िर उ़म्र में जा कर तंगदस्त हो जाऊं और पिछली उ़म्र में मोह़ताजी ज़ियादा ग़लबा करती है, ऐसे नाज़ुक वक़्त के लिये कुछ न कुछ पास होना ज़रूरी है ताकि उस वक़्त लोगों का **दस्तंगर**[1] न होना पड़े । येह और इसी क़िस्म के बीसियों **तवह्हुमात**[2] उस को त़लब व रग़बते दुन्या, मौजूद सामाने दुन्या में बुख़्ल करने और मज़ीद जम्अ़ करने पर उभारते रहते हैं, इन बेहूदा ख़यालात का कम अज़ कम असर येह होता है कि ऐसा इन्सान दुन्या की उम्मीदों में फंस जाता है, उस की क़ीमती उ़म्र और उस का वक़्ते अ़ज़ीज़ इन उम्मीदों की नज़्र हो जाता है, बे फ़ाइदा और लग़्व ग़म व तफ़क्कुरात लाह़िक़ हो जाते हैं, ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है :

قَتَلَنِی هَمٌّ يَوْمٍ لَمْ اُدْرِكْهُ قِيْلَ وَكَيْفَ ذٰلِكَ يَا اَبَا ذَرٍّ قَالَ اِنَّ اَمَلِیْ جَاوَزَ اَجَلِیْ

आने वाले दिन की फ़िक्र ने मुझे परेशान कर रखा है । किसी ने अ़र्ज़ किया : वोह कैसे ? तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया कि मेरी लम्बी उम्मीदें मेरी मौत से तजावुज़ कर चुकी हैं ।

चौथी चीज़ **क़सावाते क़ल्ब**[3] और ग़फ़्लते आख़िरत है जिस में तूले अमल से इज़ाफ़ा होता है क्यूंकि जब इन्सान के दिल में ऐ़शो इ़शरत की लम्बी उम्मीदें बस जाती हैं तो मौत भूल जाती है क़ब्र याद नहीं रहती, ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है :

1 ह़ाजत मन्द । 2 वहमी बातें । 3 दिल की सख़्ती ।

اَنْ اَخْوَفَ مَا اَخَافُ عَلَيْكُمْ اِثْنَتَانِ طُوْلُ الْاَمَلِ وَ اِتِّبَاعُ الْهَوٰى اَلَا وَ اِنَّ طُوْلَ الْاَمَلِ يُنْسِى الْاٰخِرَةَ وَ اِتِّبَاعُ الْهَوٰى يَصُدُّ عَنِ الْحَقِّ

तुम्हारे दो चीज़ों में मुब्तला हो जाने का मुझे बहुत ज़ियादा डर है, एक तूले अमल, दूसरी इत्तिबाए ख़्वाहिशात। तूले अमल तो आख़िरत को भुला देती है और ख़्वाहिशात की पैरवी इन्सान को ह़क़ से रोक देती है।

तूले अमल का शिकार होने के बा'द इन्सान के नज़दीक सब से अहम और इस की तवज्जोहात का मर्कज़ दुन्या और दुन्या में ऐ़शो इ़शरत के अस्बाब व ज़राएअ़ बन जाते हैं, लोगों से मेल जोल और ख़ल्त़ मल्त़ का ग़लबा हो जाता है और इस त़रह़ इन्सान के दिल पर क़सावत छा जाती है क्यूंकि रिक़्क़त और सफ़ाइये क़ल्ब तो मौत को याद रखने, क़ब्र की वह़शत व तन्हाई पेशे नज़र रहने, आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िर व वाक़िआ़त याद रखने से होती है और जब इन में से कोई बात भी न हो तो सफ़ाई कैसे पैदा हो ? **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ (1)

उन को ज़िन्दा रहते अ़र्सए दराज़ गुज़र गया तो उन के दिल सख़्त हो गए।

तो जूं जूं उम्मीदें लम्बी होती जाएंगी इत़ाअ़त का जज़्बा कम होता जाएगा, तौबा का ख़याल दिल से निकल जाएगा, गुनाहों की कसरत हो जाएगी, ह़िर्स बढ़ जाएगी, दिल सख़्त हो जाएगा

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई तो उन के दिल सख़्त हो गए। (پ ۲۷، الحديد: ۱٦)

और अपना अन्जाम बिल्कुल भूल जाएगा और अगर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत शामिले ह़ाल न हुई तो ऐसे शख़्स की आख़िरत बरबाद हो जाएगी तो इस से बदह़ाली और क्या होगी और इस से बड़ी आफ़त और बला और क्या होगी? और येह सब ख़राबी तूले अमल के बाइ़स पैदा हुई लिहाज़ा अपनी उम्मीदें **कोताह**[1] रखो, अपनी जान को मौत के क़रीब तसव्वुर करो, अपने अक़ारिब और साथियों का ह़ाल याद करो जिन्हें मौत ने ऐसे वक़्त आ दबोचा जब कि उन्हें कोई वहम व गुमान न था और शायद तुम्हारा भी ऐसा ही ह़ाल हो, और अपने नफ़्से मग़रूर को ख़ुदा तआ़ला के अ़ज़ाब से डराओ, और औ़फ़ बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का येह क़ौल याद करो :

كَمْ مِنْ مُسْتَقْبَلٍ يَوْمًا لَمْ يَسْتَكْمِلْهُ [2] وَ مُنْتَظِرٍ غَدًا لَمْ يُدْرِكْهُ

कितने ऐसे हैं जो सुब्ह़ को पाते हैं मगर शाम से क़ब्ल मौत की आग़ोश में चले जाते हैं और कितने ही आयिन्दा कल के इन्तिज़ार में होते हैं मगर वोह उन्हें नसीब नहीं होता।

अगर तुम्हें फ़िल वाक़ेअ़ मौत और इस के शदाइद का एह़सास होता तो तुम तूले अमल और इस की फ़रेबकारियों से ज़रूर नफ़रत करते। तुम ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क़ौल नहीं सुना? आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने फ़रमाया :

اَلدُّنْيَا ثَلَاثَةُ اَيَّامٍ اَمْسِ مَضٰى مَا بِيَدِكَ مِنْهُ شَيْءٌ وَ غَدًا [3] لَا تَدْرِى اَتُدْرِكُهُ

اَمْ لَا وَ يَوْمٌ اَنْتَ فِيْهِ فَاغْتَنِمْهُ

---

1 कम। 2 यहां लफ़्ज़ يَسْتَكْمِه (यस-तकमिह) था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ يَسْتَكْمِلْهُ (यस-तकमिल्हू) है, लिहाज़ा इस की तसह़ीह़ कर दी गई है। (**इल्मिय्या**)

3 यहां लफ़्ज़ "غد" (ग़द) था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "غَدًا"(ग़दन) है, लिहाज़ा इस की तसह़ीह़ कर दी गई है। (**इल्मिय्या**)

दुन्या तीन रोज़ है : एक वोह जो गुज़र गया उस का कुछ भी तेरे क़ब्ज़े में नहीं, एक आयिन्दा कल जिस के मुतअ़ल्लिक़ कोई इ़ल्म नहीं कि वोह तुझे नसीब हो या न हो, और एक आज का दिन जिस में तू मौजूद है, तो इस को ग़नीमत जान।

नीज़ क्या तुम ने ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह क़ौल नहीं सुना ? आप फ़रमाते हैं :

اَلدُّنیَا ثَلَاثُ سَاعَاتٍ سَاعَةٌ مَضَتْ وَ سَاعَةٌ اَنْتَ فِيهَا وَ سَاعَةٌ اَتُدْرِكُهَا اَمْ لَا

दुन्या सिर्फ़ तीन साअ़त है, एक वोह साअ़त जो गुज़र गई और एक वोह जिस में तुम अब हो और तीसरी वोह जो शायद तुम्हें नसीब हो या न हो।

तो ह़क़ीक़त में तुम्हारे पास सिर्फ़ एक ही घड़ी है, मेरे शैख़ قُدِّسَ سِرُّہٗ का इरशाद है : दुन्या तीन सांस है, एक जो गुज़र गया, तुम ने जो अ़मल उस में कर लिया कर लिया, एक वोह जो अब तुम ले रहे हो, और एक आयिन्दा जिस के पाने का कोई इ़ल्म नहीं। क्यूंकि कई ऐसे सांस लेने वाले हैं जिन को मौत ने दूसरे सांस की मोहलत न दी, तो दर ह़क़ीक़त इन्सान एक ही सांस का मालिक है, एक दिन या पूरी एक घड़ी का भी मालिक नहीं, लिहाज़ा इस एक सांस में त़ाअ़त व इ़बादत की बजा आवरी में कोताही नहीं करनी चाहिये, ऐसा न हो कि येह भी फ़ौत हो जाए और तौबा करने में भी जल्दी करो, ऐसा न हो कि वक़्त हाथ से निकल जाए और मौत आने वाले सांस की फ़ुरसत न दे। आने वाली घड़ी के लिये रिज़्क़ की फ़िक्र न करो, शायद अगली साअ़त तक ज़िन्दगी वफ़ा न करे और ख़्वाह म ख़्वाह फ़िक्रे मआ़श में मुब्तला हो कर येह वक़्त भी ज़ाएअ़ हो जाए और कोशिश **अ़बस**[1] जाए, लेकिन इन्सान रिज़्क़

1 बेकार।

की तगो दो में मसरूफ़ हो कर अपना वक़्त अ़ज़ीज़ ज़ाएअ़ कर देता है, क्या तुम्हें हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह इरशाद याद नहीं जो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

"اَمَا تَعْجَبُوْنَ مِنْ اُسَامَةَ الْمُشْتَرِىْ بِصَبْرِ شَهْرٍ اِنَّ اُسَامَةَ لَطَوِيْلُ الْاَمَلِ وَ اللّٰهِ مَا وَضَعْتُ قَدَمًا فَظَنَنْتُ اِنِّىْ اَرْفَعُهَا وَ لُقْمَةً فَظَنَنْتُ اِنِّىْ اُسِيْغُهَا [1] حَتّٰى يُدْرِكُنِىَ الْمَوْتُ وَ الَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ وَّ مَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ" [2]

ऐ लोगो ! तुम उसामा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) पर तअ़ज्जुब नहीं करते जो एक माह के लिये ख़रीद रहा है बेशक उसामा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) लम्बी उम्मीदों का शिकार हो गया है, ख़ुदा की क़सम मैं ने जब भी ज़मीन पर क़दम रखा तो मेरा येही गुमान था कि शायद उठाने से पहले मौत आ जाए और मैं ने जब भी मुंह में लुक़्मा डाला तो येही गुमान था कि शायद ह़ल्क़ से उतारना नसीब न हो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है बेशक जिन बातों का तुम से वा'दा किया जा रहा है वोह ज़रूर आ कर रहेंगी और तुम **अल्लाह** तआ़ला को आ़जिज़ व बे बस नहीं कर सकते।

ऐ अ़ज़ीज़ ! जब तू इन बातों को याद रखेगा और हमेशा येह बातें तेरे ज़ेह्न में मौजूद रहेंगी तो بِاِذْنِهٖ تَعَالٰى तेरी दुन्यवी उम्मीदें कोताह हो जाएंगी, उस वक़्त तेरा नफ़्स ताआ़त की त़रफ़ जल्द माइल होगा और तुझे जल्द तौबा करने का ख़याल पैदा होगा तौबा से गुनाह झड़ जाएंगे और तुझे दुन्या से नफ़रत हो जाएगी और

---

1 यहां लफ़्ज़ "اُسبِغُهَا" (उसिब-गुहा) था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "اُسِيْغُهَا" (उसीगुहा) है, लिहाज़ा इस की तसह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

2 ......موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب قصر الامل، ۳/۳۰٤، حديث:٦، بتغير۔

आख़िरत में हि़साब के अन्दर आसानी पैदा हो जाएगी और वहां पशेमानी नहीं होगी तेरा दिल आख़िरत और इस के ख़ौफ़नाक मनाज़िर के ध्यान में लगा रहेगा, तेरे नफ़्स की ह़ालत तब्दील हो जाएगी, इसी त़रह़ जब तुम एक एक कर के आख़िरत के ह़ालात का अपने ज़ेहन में मुआ़इना करते रहोगे तो तुम से क़सावते क़ल्बी दूर हो जाएगी, क़सावत की बजाए दिल में रिक़्क़त और सफ़ाई पैदा हो जाएगी और इस रिक़्क़त और सफ़ाई की बरकत से तुम्हारे दिल में **अल्लाह** तआ़ला की **ख़शिय्यत**[1] और उस का दर्द पैदा हो जाएगा और यूं इबादत में इस्तिक़ामत नसीब हो जाएगी और अपनी आ़फ़िय्यत और आख़िरत में कामयाबी की उम्मीद क़वी हो जाएगी, येह सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल और उम्मीदें कोताह (कम) करने से होगा।

रिवायत है कि किसी शख़्स ने ह़ज़रते ज़ुरारा बिन औफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा तो उन से पूछा : "ऐ बरज़ख़ में बसने वालो ! तुम्हारे नज़दीक कौन सा अ़मल बेहतर है ?" तो आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने जवाब दिया : "रिज़ाए इलाही का ह़ुसूल और उम्मीदों को कोताह (कम) रखना।"

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू भी अपने ह़ाल पर नज़र कर और येह बुलन्द मक़ाम ह़ासिल करने में पूरी कोशिश कर क्यूंकि तूले अमल से बचना बड़ी नेकी की बात है जिस से क़ल्ब और नफ़्स की इस्लाह़ होती है। وَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوْفِيْقِ بِفَضْلِهٖ وَ بِرَحْمَتِهٖ۔

---

1 ख़ौफ़।

दूसरी आफ़त "ह़सद" (1)

बेशक ह़सद नेकियों को तबाह करता है और गुनाहों पर रागि़ब करता है, येह बड़ा बुरा मरज़ है जिस में बड़े बड़े उ़लमा व कु़र्रा मुब्तला हैं, अ़वाम और जुहला का क्या ज़िक्र ! इस ह़सद ने लोगों को हलाक कर दिया और नारे दोज़ख़ में डाल दिया, क्या तुम ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم का येह इरशाद नहीं सुना, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया है :

سِتَّةٌ يَدْخُلُوْنَ النَّارَ بِسِتَّةٍ اَلْعَرَبُ بِالْعَصَبِيَّةِ وَ الْاُمَرَاءُ بِالْجَوْرِ وَ الدَّهَاقِيْنُ بِالْكِبْرِ

وَ التُّجَارُ بِالْخِيَانَةِ وَ اَهْلُ الرَّسَاتِيْقِ بِالْجَهْلِ وَ الْعُلَمَاءُ بِالْحَسَدِ

छे कि़स्म के लोग छे वजह से दोज़ख़ में जाएंगे अ़रब **अ़-सबिय्यत**(2) की वजह से, उमरा ज़ुल्म के बाइ़स, चोहदरी लोग तकब्बुर की वजह से, ताजिर लोग ख़ियानत और बद दियानती के बाइ़स, अहले दीहात जहालत के बाइ़स और उ़लमा **ह़सद** की वजह से।

बेशक जो आफ़त उ़लमा को भी दोज़ख़ में ले जाने का बाइ़स और सबब है उस से बचना बहुत ज़रूरी है।

ऐ अ़ज़ीज़ ! जान ले कि ह़सद से पांच ख़राबियां उभरती हैं :

(1) ता़आ़त में ख़राबी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

---

1 ह़सद के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**ह़सद**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 अपनों की बेजा ह़िमायत और दूसरों से नफ़रत।

اَلْحَسَدُ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ (1)

ह़सद नेकियों को इस त़रह़ बरबाद करता है जिस त़रह़ आग सूखी लकड़ियों को जला देती है।

ह़सद से ﴾2﴿ **दूसरी** चीज़ जो पैदा होती है वोह गुनाह और बुराइयां हैं, ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं :

ह़ासिद की तीन निशानियां हैं :

يَتَمَلَّقُ (2) اِذَا شَهِدَ وَ يَغْتَابُ اِذَا غَابَ وَيَشْمَتُ بِالْمُصِيْبَةِ اِذَا نَزَلَتْ

जब सामने आता है तो चापलूसी करता है, पुश्त पीछे ग़ीबत करता है और जब दूसरे पर मुसीबत आती है तो ख़ुश होता है।

मैं कहता हूं ह़सद की बुराई का सब से बड़ा सुबूत येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें ह़ासिद के शर से पनाह में रहने का हुक्म दिया है, जैसा कि ख़ुदावन्दे तआ़ला ने फ़रमाया है :

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ (3)

और ह़ासिद के शर से पनाह में रख जब वोह ह़सद करने पर उतर आए।

अल्लाह तआ़ला ने ह़सद के शर को शैत़ान और **साह़िर**(4) के साथ मिला कर बयान किया और फ़रमाया : इन सब से पनाह मांगो। तो ग़ौर कर लो कि ह़सद कितना बड़ा फ़ित्ना और इस का शर कितना बड़ा है? इसी लिये फ़रमाया कि इस से तह़फ़्फ़ुज़ के लिये मुझ से मदद त़लब करो और मेरी पनाह में आओ।

---

1 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب الحسد، ٤/٤٧٣، حديث: ٤٢١٠۔

2 यहां लफ़्ज़ "يَتَمَلَّكُ" (य-तमल्लकु) था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "يَتَمَلَّقُ" (य-तमल्लक़ु) है, लिहाज़ा इस की तसह़ीह़ कर दी गई है। (**इल्मिय्या**)

3 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले। (پ٣٠، الفلق:٥) 4 जादूगर।

ह़सद से ﴾3﴿ **तीसरी** चीज़ बेचैनी और बे मक़्सद ग़म व फ़िक्र का लाह़िक़ होना है, बल्कि ग़म व फ़िक्र के साथ त़बीअ़त पर बोझ और मा'सियत की रग़बत भी पैदा होती है, ह़ज़रते इब्ने सम्माक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है :

لَمْ اَرٰی ظَالِمًا اَشْبَہَ بِالْمَظْلُوْمِ مِنَ الْحَاسِدِ نَفْسٌ دَائِمٌ وَ عَقْلٌ ھَائِمٌ وَغَمٌّ لَازِمٌ

तर्जमा : मैं ने ह़ासिद के सिवा किसी ज़ालिम को मज़्लूम के साथ ज़ियादा मुशाबहत वाला नहीं देखा बेचारा हर वक़्त अफ़्सुर्दा त़बीअ़त रहता है, परेशान ख़याल रहता है और हर वक़्त ग़म में मुब्तला रहता है।

ह़सद से ﴾4﴿ **चौथी** ख़राबी येह पैदा होती है कि दिल अन्धा हो जाता है यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला के किसी हुक्म को समझने की सलाह़िय्यत ख़त्म हो जाती है। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हमेशा ख़ामोश रहना इख़्तियार कर कि इस से तेरे अन्दर **वरअ़**(1) पैदा होगा, लालची न बन ताकि फ़ित्नों से मह़फ़ूज़ रहे, नुक्ता चीन न बन ताकि लोगों के त़ा'न व तशनीअ़ से मह़फ़ूज़ रहे, ह़ासिद न बन ताकि तुझे फ़हम की तेज़ी नसीब हो।"

ह़सद से ﴾5﴿ **पांचवीं** ख़राबी येह पैदा होती है कि इन्सान ज़िल्लत और मह़रूमी की ला'नत में गिरिफ़्तार हो जाता है अपनी किसी मुराद में कामयाब नहीं होता और न अपने किसी दुश्मन पर ग़ालिब आ सकता है। ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है :

कीना परवर दीनदार नहीं होता, लोगों के ऐ़ब निकालने वाला इ़बादत गुज़ार नहीं हो सकता, चुग़ल ख़ोर को अम्न नसीब नहीं हो सकता और ह़ासिद शख़्स **नुसरते ख़ुदावन्दी**(2) से मह़रूम रहता है।

---

1 तक़्वा। 2 **अल्लाह** तआ़ला की मदद।

मैं कहता हूं : ह़ासिद शख़्स अपनी मुराद में कैसे कामयाब हो सकता है ? क्यूंकि उस की मुराद तो येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के तमाम बन्दों से ख़ुदा तआ़ला की दी हुई ने'मतें छिन जाएं और मुझे मिल जाएं और ह़ासिद आदमी अपने दुश्मनों पर कैसे ग़ालिब आ सकता है ? क्यूंकि उस के दुश्मन तो **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दे होते हैं। ह़ज़रते अबू या'क़ूब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

"ऐ **अल्लाह** ! तू ने अपने बन्दों पर जो ने'मतें की हैं हमें उन के ह़सद से मह़फ़ूज़ रख बल्कि उन के ह़ालात मज़ीद बेहतर कर।"

और ह़सद एक ऐसी बीमारी है जो इ़बादात के अज्रो सवाब को तबाह करती है, शर व मा'सियत की तुख़्म रेज़ी करती है, आराम और सुकून को ख़त्म कर देती है, दीन की समझ से मह़रूम करती है इस के होते हुवे इन्सान अपने दुश्मन पर ग़ालिब नहीं हो सकता, और न अपनी मुराद में इन्सान कामयाब हो सकता है। तो साबित हुवा कि ह़सद से ज़ियादा कोई ख़त़रनाक बीमारी ऐसी नहीं जिस के इ़लाज की फ़ौरी ज़रूरत हो, लिहाज़ा इस मरज़ के इ़लाज से ग़फ़्लत न करो बल्कि जल्द इस मरज़े ह़सद को दूर करने की फ़िक्र करो। وَاللّٰہُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ بِمَنِّہٖ وَکَرَمِہٖ

मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती कबीरा गुनाह है

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक किसी मुसलमान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 58 ब ह़वाला سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۷)

उ़जलत या'नी जल्दबाज़ी के नुक़्सानात[1]

जल्दबाज़ी नेक मक़ासिद को फ़ौत करती है और **मआ़सी**[2] में मुब्तला करती है, इस से चार ख़राबियां पैदा होती हैं :

पहली आफ़त और ख़राबी येह कि आ़बिद शख़्स जब ख़ैर और इस्तिक़ामत का मर्तबा ह़ासिल करने का क़स्द करता है और उसे ह़ासिल करने की कोशिश करता है तो बसा अवक़ात उस के ह़ुसूल में जल्दबाज़ी से काम लेता है ह़ालांकि अभी उस मर्तबे के ह़ासिल करने का वक़्त इ़ल्मे इलाही में नहीं होता तो फ़ौरी त़ौर पर वोह मर्तबे व मक़ाम ह़ासिल न होने के बाइ़स या तो वोह सुस्त व मायूस हो कर कोशिश व मुजाहदा तर्क कर देता है और इस त़रह़ उस मर्तबे से मह़रूम हो जाता है या रियाज़ात व मुजाहदा में **ग़ुलू**[3] करता है और इस **इफ़रात़**[4] के बाइ़स इस मर्तबे को ह़ासिल नहीं कर सकता और येह दोनों ख़राबियां जल्दबाज़ी का नतीजा हैं, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत है :

اِنَّ دِيْنَنَا هٰذَا مَتِيْنٌ فَاَوْغِلْ فِيْهِ بِرِفْقٍ فَاِنَّ الْمُنْبَتَّ لَا اَرْضًا قَطَعَ وَلَا ظَهْرًا اَبْقٰى [5]

"हमारा येह दीन बड़ा **मुस्तह़कम**[6] दीन है, इस को नर्मी और **मतानत**[7] से ह़ासिल करो जिस त़रह़ फ़स्ल ह़ासिल करने वाला किसान न तो ज़मीन को बिल्कुल उखैड़ ही देता है और न उस की ज़ाहिरी सत़्ह़ को ही पहली ह़ालत में बाक़ी रहने देता है"

---

1 .....जल्दबाज़ी के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**जल्दबाज़ी के नुक़्सानात**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।
2 .....गुनाहों । 3 .....बहुत ज़ियादा मुबालग़ा । 4 ..... ज़ियादती ।
5 ......الزهد لابن مبارك، ص ٤١٥، حديث: ١١٧٨، بتغير۔
6 ..... मज़बूत़ । 7 ..... सन्जीदगी ।

और अ़रबी की मशहूर **मसल**[1] है : اِنْ لَّمْ تَستَعجِلْ تَصِلْ अगर तुम जल्दबाज़ी नहीं करोगे तो अपनी मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंच जाओगे।

एक अ़रबी शाइ़र कहता है :

قَدْ يُدْرِكُ الْمُتَانِّي بَعْضَ حَاجَتِهِ   وَقَدْ يَكُوْنُ مَعَ الْمُسْتَعْجِلِ الزَّلَلُ

बुर्दबार शख़्स तो अपने मक़ासिद पा लेता है मगर जल्दबाज़ अकसर अवक़ात फिसल जाता है।

दूसरी ख़राबी और आफ़त येह है कि जब आ़बिद शख़्स को कोई ह़ाजत और ज़रूरत पेश आती है तो वोह **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर में दुआ़ व इल्तिजा करता है और दुआ़ में बहुत कोशिश करता है और बसा अवक़ात इस की क़बूलिय्यत में उ़जलत करता है, ह़ालांकि इ़ल्मे इलाही के अन्दर इस दुआ़ की क़बूलिय्यत में अभी कुछ देर होती है, तो फ़ौरन दुआ़ क़बूल न होने की वजह से वोह दिल बरदाश्ता हो जाता है कोशिश व सई तर्क कर देता है और दुआ़ करना छोड़ देता है और इस त़रह़ अपने मक़्सद और अपनी ह़ाजत को नहीं पा सकता।

उ़जलत की **तीसरी ख़राबी** और आफ़त येह है कि अगर कोई मुसलमान इस आ़बिद पर ज़ुल्म करता है तो येह ग़ज़ब नाक हो कर बद दुआ़ करता है तो वोह ज़ालिम मुसलमान इस बद दुआ़ के असर से हलाक हो जाता है और इस त़रह़ बद दुआ़ करने वाला आ़बिद ह़द से तजावुज़ कर जाता है और हलाकत व मा'सियत में पड़ जाता है, **अल्लाह** फ़रमाता है :

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝۱۱ (2)

(ब वक़्ते मुसीबत) इन्सान बद दुआ़ शुरूअ़ कर देता है जिस त़रह़ आराम के वक़्त नेक दुआ़एं, और इन्सान बड़ा जल्दबाज़ है।

1..... कहावत। 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आदमी बुराई की दुआ़ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है। (پ ۱۵، بنی اسراءیل:۱۱)

उ़जलत की **चौथी ख़राबी** और आफ़त येह है कि इ़बादत का अस्ल और उस का दारो मदार **वरअ़**[1] पर है और वरअ़ हर शै की तह तक पहुंचने से पैदा होता है और हर चीज़ मसलन खाने, पीने, गुफ़्त्गू करने की ह़क़ीक़त के इन्किशाफ़ के बा'द नसीब होता है और जब इन्सान जल्दबाज़ हो, बुर्दबार न हो, और न मुतह़म्मिल मिज़ाज हो तो वोह किसी काम के अन्दर तवक़्क़ुफ़, तह़म्मुल, बुर्दबारी, ज़रूरी ग़ौरो फ़िक्र से काम नहीं लेगा बल्कि हर काम की अन्जाम देही में जल्दबाज़ी का इर्तिकाब करेगा, तो इस त़रह़ ज़रूर **लग़्ज़िश**[2] खाएगा और खाने पीने के मुआ़मले में भी येही जल्दबाज़ी का **वत़ीरा**[3] इख़्तियार करेगा, इस त़रह़ बा'ज़ अवक़ात ह़राम ग़िज़ा भी पेट में डाल लेगा तो इस जल्दबाज़ी और उ़जलत के बाइ़स उस का वरअ़ फ़ौत हो जाएगा और उस इ़बादत व बन्दगी में कोई ख़ूबी नहीं जिस में वरअ़ मल्ह़ूज़ न हो, तो जिस आफ़त के बाइ़स इन्सान मरातिब व मनाज़िले ख़ैर से रह जाए, अपनी ज़रूरी ह़ाजात के ह़ासिल करने में मह़रूम रहे, अपने आप और दूसरे मुसलमानों की हलाकत का बाइ़स बने और फिर वरअ़ के फ़ौत होने का भी ख़त़रा हो जो मक़्सूदे इ़बादत है तो ऐसी आफ़त का इज़ाला और इज़ाले के बा'द इस्लाहे़ नफ़्स निहायत ज़रूरी है। وَاللّٰهُ وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ بِمَنِّهٖ وَفَضْلِهٖ

किब्र का बयान[4]

किब्र ऐक ऐसी आफ़त है जो नेकी का नामो निशान ही मिटा देती है, क्या तुम ने **अल्लाह** तआ़ला का येह क़ौल नहीं सुना :

---

1 .....परहेज़गारी। 2 .....ख़त़ा। 3 .....अन्दाज़ 4 **तकब्बुर** के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**तकब्बुर**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ٭ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ (1)

(इब्लीस ने) इन्कार और तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया।

आ'माल और फ़ुरूआ़ते दीनिय्या को नुक़्सान देने वाली तमाम आफ़ात इतनी मुज़िर और ख़राब नहीं जितना किब्र है क्यूंकि येह तो अस्ल बुन्याद (दीन) और ए'तिक़ाद में ख़लल अन्दाज़ होता है और जब येह मरज़े किब्र बढ़ जाता है तो इस का इलाज मुश्किल हो जाता है और फिर इस से और हज़ारों त़रह़ की बीमारियां पैदा हो जाती हैं, चार ख़राबियां तो ज़रूर पैदा होती हैं : **एक** ह़क़ से मह़रूम हो जाना, दिल का **अल्लाह** तआ़ला की आयाते मा'रिफ़त से अन्धा हो जाना और अह़कामे ख़ुदावन्दी के फ़हम के मुतअ़ल्लिक़ ज़ेहन का कुन्द हो जाना है, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ (2)

मैं अ़न क़रीब अपनी आयात के फ़हम से उन लोगों को फेर दूंगा जो नाह़क़ तकब्बुर करते हैं।

दूसरी जगह फ़रमाया :

كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ (3)

*इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला हर मुतकब्बिर और सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है।*

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया। (پ۱،البقرۃ:۳۴)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाह़क़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ۹،الاعراف:۱۴۶)

(3)....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** यूं ही मुहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर। (پ۲۴،المؤمن:۳۵)

तकब्बुर से दूसरी ख़राबी येह पैदा होती है कि **अल्लाह** तआ़ला तकब्बुर करने वाले पर ग़ज़ब फ़रमाता है और उस से नाराज़ हो जाता है, चुनान्चे, फ़रमाया :

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾[1] *बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुतकब्बिर लोगों को दोस्त नहीं रखता ।*

मरवी है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से दरयाफ़्त किया : ऐ ख़ुदाए क़ुद्दूस ! तू सब से ज़ियादा किस पर नाराज़ होता है ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

مَـنْ تَكَبَّرَ قَلْبُهٗ وَ غَلُظَ لِسَانُهٗ وَ صَفِقَ عَيْنُهٗ وَ بَخِلَتْ يَدُهٗ وَ سَاءَ خُلُقَهٗ

जिस के दिल में तकब्बुर हो, जिस की ज़बान **तुर्श**[2] हो, जिस की आंखों में ह़या न हो, जिस के हाथ बख़ील हों और जो बद अख़्लाक़ हो ।

तकब्बुर से पैदा होने वाली **तीसरी ख़राबी** दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लत व ख़्वारी है, ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है :

"اَجْتَنِبْ اَنْ يُّدْرِكَكَ الْمَوْتُ عَلٰى ثَلَاثَةٍ عَلَى الْكِبْرِ وَ الْحِرْصِ وَ الْخُيَلَاءِ فَاِنَّ الْمُتَكَبِّرَ لَا يُخْرِجُهُ اللّٰهُ مِنَ الدُّنْيَا حَتّٰى يُرِيَهُ الْهَوَانَ مِنْ اَرْذَلِ اَهْلِهٖ وَ خِدَمِهٖ وَ الْحَرِيْصُ لَا يُخْرِجُهُ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الدُّنْيَا حَتّٰى يُحْوِجَهٗ اِلٰى كِسْرَةٍ اَوْ شَرْبَةٍ وَ لَا يَجِدُ مَسَاغًا وَ الْمُخْتَالُ لَا يُخْرِجُهُ اللّٰهُ تَعَالٰى حَتّٰى يُمَرِّغَهٗ بِبَوْلِهٖ وَ قَذَرِهٖ"

तीन ह़ालतों पर मौत आने से बच, तकब्बुर पर, ह़िर्स पर, **शैख़ी**[3] पर, इस लिये कि मुतकब्बिर शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे अपने रज़ील अहलो इयाल और ख़ादिमों से ज़लीलो ख़्वार न कर ले और ह़रीस को उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे रोटी के एक टुकड़े और पानी के

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता । (پ۱۴، النحل:۲۳)

2.....कड़वी । 3....घमन्ड करने ।

एक घूंट के लिये न तरसा ले, और शैख़ी बघारने वाले को उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे उस के बोल व पेशाब में आलूदगी की ज़िल्लत न दिखाए।

रिवायात में येह भी आया है कि मुतकब्बिर को **अल्लाह** तआला ज़रूर ज़लीलो ख़्वार करता है। मुतकब्बिर शख़्स पर **चौथी मुसीबत** व आफ़त येह टूटती है कि वोह आख़िरत में दोज़ख़ की आग में जलेगा, एक ह़दीसे क़ुदसी में यूं वारिद हुवा है :

اَلْكِبْرِيَاءُ رِدَائِىْ وَ الْعَظَمَةُ اِزَارِىْ فَمَنْ نَازَعَنِىْ فِىْ وَاحِدٍ مِنْهُمَا اَدْخَلْتُهٗ نَارَ جَهَنَّمَ(1)

बड़ाई मेरी चादर है और अ़ज़मत मेरी इज़ार है, तो जो शख़्स इन दोनों में से कोई एक भी मुझ से लेने की कोशिश करेगा मैं उसे नारे दोज़ख़ में दाख़िल करूंगा।

मत़लब येह है कि बड़ाई और अ़ज़मत **अल्लाह** तआला की **सिफ़ाते मुख़्तस्सा**(2) में से हैं किसी दूसरे को लाइक़ नहीं तो जो चीज़ तुम से ख़ुदा तआला की मा'रिफ़त ज़ाइल करे, अह़कामे ख़ुदावन्दी के फ़ह्म से मह़रूम करे (जो तमाम नेकियों का अस्ल है) फिर जिस के बाइस **अल्लाह** तआला नाराज़ हो, दुन्या में ज़िल्लत व ख़्वारी और आख़िरत में अ़ज़ाबे दोज़ख़ हिस्से में आए, ऐसी ख़त़रनाक और मुहलिक आफ़त से बचना और दूर रहना निहायत ज़रूरी है, किसी अ़क़्लमन्द को ज़ैबा नहीं कि ऐसी नुक़्सान देह चीज़ से ग़फ़्लत बरते बल्कि इस से परहेज़ कर के और **अल्लाह** तआला की पनाह में आ कर इस से अपने आप को बचाए। وَاللّٰهُ تَعَالٰى وَلِىُّ الْعِصْمَةِ وَ التَّوْفِيْقِ بِمَنِّهٖ

---

1 ......مسند امام احمد،مسند ابی هريرة،٣/٣١٤،حديث:٨٩٠٣،دون لفظ"نار"۔

2 .....ऐसी सिफ़ात हैं जो उसी के साथ ख़ास हैं और उसी को ज़ैब देती हैं।

येह इन **आफ़ाते अरबआ़**[1] की तफ़्सील का कुछ हिस्सा है और अ़क़्लमन्द आदमी जो अपने क़ल्ब की इस्लाह़ की अहम्मिय्यत को जानता है उस के नज़्दीक तो इन आफ़ाते अरबआ़ में से हर एक आफ़त भी निहायत निहायत ख़त़रनाक है। وَ اللّٰهُ الْمُوَفِّق

सुवाल : जब आफ़ात व अमराज़े क़ल्ब की नज़ाकत और ख़त़रे का येह आ़लम है और जब इन से बचना इस क़दर ज़रूरी है, और जब हमारे लिये इन आफ़ात की ह़क़ीक़त व माहिय्यत से वाक़िफ़ होना निहायत ज़रूरी है तो अज़ राहे मेहरबानी इन की ह़क़ीक़त और तफ़्सील बयान कीजिये और वोह तदाबीर और रास्ते भी बताइये जिन को इख़्तियार कर के हम इन से मह़फ़ूज़ रह सकें।

जवाब : इन आफ़ात व अमराज़ का पूरा बयान बड़ी त़वील व अ़रीज़ तफ़्सील चाहता है, हम ने इन की पूरी तफ़्सीलात "**इह़्याउल उ़लूम**" और "**असरारे मुआ़मलाते दीन**" में लिख दी हैं और इस किताब में हम सिर्फ़ ज़रूरी गुफ़्त्गू पर ही किफ़ायत करेंगे। وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِيْق

अमल[2] की ह़क़ीक़त का बयान[3]

हमारे अकसर उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है कि अमल इस पुख़्ता ख़याल का नाम है कि मैं तादेर ज़िन्दा रहूंगा और अगर ऐसा न हो बल्कि दिल में येह बात जा गुज़ीं हो कि मेरी ज़िन्दगी और ह़यात **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत व इ़ल्म के साथ वाबस्ता है और इस दुन्या में मुझे नेक काम करने के लिये

---

1 .....चार आफ़तों। 2 .....लम्बी उम्मीदों। 3 .....दुन्यवी उम्मीदों से बे रग़बती के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**दुन्या से बे रग़बती और उ़म्मीदों की कमी**" का मुत़ालआ़ भी कीजिये।

रहना चाहिये तो इस त़रह़ की निय्यत और अ़ज़्म व इरादे का नाम क़स्रे अमल है या'नी उम्मीदों को **कोताह**[1] रखना, तो जो शख़्स येह अ़क़ीदा रखे कि मुझे इस सांस के बा'द दूसरे सांस का ज़रूर मौक़अ़ मिलेगा, या आने वाली घड़ी तक मैं ज़रूर ज़िन्दा रहूंगा तो ऐसे शख़्स को आमिल कहेंगे या'नी लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार। ऐसा अ़क़ीदा और ख़याल गुनाह है क्यूंकि येह एक पोशीदा मुआ़मले पर हुक्म लगाना है लेकिन अगर कोई **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म और उस की मशिय्यत से मुक़य्यद करे और यूं कहे कि मैं إِنْ شَآءَ الله ज़िन्दा रहूंगा, या **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म में अगर मेरी ज़िन्दगी बाक़ी है तो मैं ज़िन्दा रहूंगा, तो ऐसे शख़्स को आमिल नहीं कहते बल्कि ऐसे शख़्स को **तारिके अमल**[2] कहा जाएगा, यूं ही अगर कोई नेक इरादों के साथ ऐसी उम्मीद रखे तो उसे तूले अमल में गिरिफ़्तार नहीं कहेंगे बल्कि ऐसा शख़्स क़ासिरुल अमल (उम्मीदें कोताह (कम) रखने वाला) कहलाएगा क्यूंकि ऐसा शख़्स किसी मुआ़मले में भी कोई क़त्ई फ़ैसला नहीं कर रहा। तुम भी येही रविश इख़्तियार करो और हर वक़्त तूले अमल के नताइज व **अ़वाक़िबे बद**[3] को पेशे नज़र रखो, और दिल को उम्मीदें कोताह रखने पर मज़बूत़ और क़ाइम रखो।

फिर उम्मीद दो क़िस्म है :

(1) आ़म लोगों की उम्मीदें और (2) ख़ास लोगों की उम्मीदें।

आ़म लोगों की उम्मीदें येह हैं : सामाने दुन्या जम्अ़ करने के लिये ज़िन्दगी की आरज़ू, और यहां त़वील उ़म्र तक ज़िन्दा रहने का इरादा और प्रोग्राम, इस त़रह़ की उम्मीदें सरासर गुनाह हैं इस के बर अ़क्स सवाब येह है कि इन्सान दुन्या से मुतअ़ल्लिक़ मुआ़मलात में अपनी उम्मीदें कोताह करे, **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

---

1 .....कम। 2 .....उम्मीदों को तर्क करने वाला। 3 .....बुरे नताइज।

ذَرۡهُمۡ یَاۡكُلُوۡا وَ یَتَمَتَّعُوۡا وَ یُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ فَسَوۡفَ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳﴾ (1)

आप उन ग़ाफ़िल लोगों को उन के ह़ाल पर रहने दें कि खाएं, सामाने ज़ीस्त से नफ़्अ़ उठाएं और दुन्यवी आरज़ूओं और उम्मीदों की ग़फ़्लत में पड़े रहें तो उन्हें अ़न क़रीब अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त मा'लूम हो जाएगी।

और ख़ास क़िस्म की उम्मीद येह है कि इन्सान ऐसे नेक कामों की बजा आवरी के लिये दुन्या में रहने की आस व उम्मीद लगाए जिन में ख़त़रे का अन्देशा हो और दुरुस्ती की उम्मीद कम हो, बसा अवक़ात ऐसा होता है कि एक मुअ़य्यन नेकी उस के सामने होती है लेकिन इसे बजा लाने की उस में सलाह़िय्यत और इस्ति'दाद नहीं होती वोह इस त़रह़ कि उसे अ़मल में लाने की सूरत में इन्सान उ़जब या रिया में पड़ जाता है और इस नेकी का अज्रो सवाब मह़फ़ूज़ नहीं रख सकता। इसी लिये येह दुरुस्त नहीं कि जब इन्सान नमाज़ या रोज़ा या कोई और नेक काम शुरूअ़ करे तो वोह दिल में येह यक़ीन और ए'तिक़ाद रखे कि मैं उसे ज़रूर पूरा करूंगा क्यूंकि येह एक पोशीदा चीज़ पर हुक्म लगाना है जो दुरुस्त नहीं इस क़िस्म का कोई क़त़ई इरादा कर लेना बन्दे के लिये रवा नहीं बल्कि दुरुस्त बात येह है कि हर नेक काम शुरूअ़ करते वक़्त येह ख़याल करे कि अगर येह काम मेरे लाइक़ और मेरे ह़क़ में बेहतर हो तो ख़ुदा तआ़ला मुझे इसे करने की तौफ़ीक़ व हिम्मत दे या मैं इस काम को اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی पूरा करूंगा या येह ए'तिक़ाद रखे कि

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन्हें छोड़ो कि खाएं और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं। (پ۱۴، الحجر:۳)

में इस काम को इसी सूरत में पूरा कर सकता हूं, अगर **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत हो, येह क़ुयूदो शराइत़ इस लिये मल्हूज़ रखे ताकि दराज़िये उम्मीद के ऐ़ब से बच सके, **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में अपने ह़बीबे पाक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म दिया :

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ (1)

*इस त़रह़ हरगिज़ न कहना कि येह काम मैं कल ज़रूर करूंगा बल्कि यूं कहो अगर **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा तो मैं येह काम करूंगा ।*

उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया है कि तूले अमल के मुक़ाबले में मजाज़ी त़ौर पर **निय्यते मह़मूदा**[2] को क़रार दिया गया है । क्यूंकि निय्यते मह़मूदा वाला इन्सान उ़मूमन **तूले अमल**[3] से बचा होता है, चूंकि निय्यते मह़मूदा की बहुत ज़रूरत है और इस की मा'रिफ़त और पहचान के बिग़ैर चारा नहीं इस लिये उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस की एक जामेअ़ और मुनासिब ता'रीफ़ बयान की है और वोह ता'रीफ़ येह है :

किसी नेक काम को शुरूअ़ करने का पुख़्ता इरादा करना और साथ येह ए'तिक़ाद भी रखना कि इस का इतमाम व इख़्तिताम **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी और मशिय्यत से है ।

सुवाल : काम शुरूअ़ करने का इरादा तो पुख़्ता किया जाए मगर फिर इस के इख़्तिताम व इतमाम को ख़ुदा तआ़ला की मशिय्यत व मरज़ी पर मौक़ूफ़ करना क्यूं ज़रूरी है ? जब कि इस का इतमाम ख़ुदा तआ़ला की मशिय्यत व मरज़ी पर मौक़ूफ़ है तो चाहिये कि

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह करूंगा मगर येह कि **अल्लाह** चाहे । (پ۱۵،الکهف:۲۳۔۲٤)

2.....अच्छी निय्यत । 3.....लम्बी उम्मीदें ।

आग़ाज़े काम के वक़्त भी ख़ुदा की मशिय्यत ही मल्हूज़ रहे न कि अपनी त़रफ़ से पुख़्ता इरादा कर लिया जाए।

जवाब : आग़ाज़े काम में पुख़्ता इरादा कर लेना इस लिये दुरुस्त और रवा है कि उस वक़्त काम वुजूद में नहीं आया होता लिहाज़ा इब्तिदा में रिया और उ़जब वग़ैरा का ख़त़रा नहीं मगर इतमाम व इख़्तिताम के वक़्त चूंकि काम और फे़'ल का वुजूद है इस लिये इस वक़्त दो ख़तरे हैं एक येह कि शायद येह काम मुझ से इतमाम व इख़्तिताम के आख़िरी नुक़्ते तक पहुंचता है या नहीं, दूसरा येह कि दरमियान में रिया और उ़जब लाहि़क़ हो जाए और वोह अ़मल बरबाद हो जाए, इस लिये इस के अच्छे इतमाम के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه कहना और अल्लाह तआ़ला के ह़वाले करना ज़रूरी है, اِنْ شَآءَاللّٰه तो इस लिये कि येह काम मन्ज़िले तक्मील तक पहुंचे और अल्लाह के ह़वाले इसे इस लिये करे ताकि रिया व उ़जब वग़ैरा आफ़ात से मह़फ़ूज़ रह सके, हर अ़मले ख़ैर के लिये इस क़िस्म के इरादे का नाम निय्यते मह़मूदा है, इस मज़मून को ख़ूब ग़ौर से समझो।

ऐ अ़ज़ीज़ ! जान ले कि उम्मीदें कोताह रखने का क़ल्आ़ मौत की याद है और मौत को याद रखने का ज़रीआ़ अचानक मौत आ जाने का ख़याल है नीज़ येह ख़याल रखना कि मौत कहीं गफ़्लत, बे ख़बरी और ग़ुरूर की ह़ालत में न आ जाए इस बयान का ज़ेह्न नशीन रहना बहुत ज़रूरी है ताकि तुम्हारा वक़्ते अ़ज़ीज़ फ़ुज़ूल क़ील व क़ाल और **गपबाज़ी**[1] में न गुज़रे और लोगों से बे मक़्सद मेल व मुलाक़ात की वजह से ज़ाएअ़ न हो।

وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ بِفَضْلِهٖ

---

1 .....फ़ुज़ूल बातों।

ह़सद की ह़क़ीक़त का बयान[1]

अपने मुसलमान भाई से ऐसी ने'मत छिन जाने के इरादे का नाम ह़सद है जिस में उस मुसलमान के लिये बेहतरी और भलाई हो, और अगर छीन जाने का इरादा न हो बल्कि येह इरादा हो कि ऐसी ही ने'मत मुझे भी मिल जाए तो येह ह़सद नहीं बल्कि इसे **गि़ब्त़ा**[2] कहते हैं और हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस क़ौल में कि "ह़सद जाइज़ नहीं मगर दो चीज़ों में।"[3] ह़सद से मुराद गि़ब्त़ा है, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मजाज़न गि़ब्त़ा को ह़सद से ता'बीर कर दिया क्यूंकि दोनों मा'ना के लिहा़ज़ से क़रीब हैं।

और अगर ऐसी ने'मत के ज़वाल का इरादा हो जिस में मुसलमान के लिये बेहतरी न हो तो ऐसे इरादे का नाम "ग़ैरत" है, ह़सद, गि़ब्त़ा और ग़ैरत में येही फ़र्क़ है जो हम ने बयान कर दिया है।

ह़सद के मुक़ाबले में "**नसीह़त**" है। मुसलमान के लिये ऐसी ने'मत के बाक़ी रहने के ख़याल का नाम नसीह़त है।

सुवाल : हम कैसे जान सकते हैं कि मुसलमान के लिये इस ने'मत में भलाई है? ताकि इस से नसीह़त का इज़्हार करें या ह़सद करें।

---

1 .....ह़सद के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़्बूआ़ किताब "**ह़सद**" का मुत़ालआ़ भी कीजिये।

2 .....दूसरे को जो ने'मत मिली वैसी मुझे भी मिल जाए और येह आरज़ू न हो कि उसे न मिलती या उस से जाती रहे और ह़सद में येह आरज़ू होती है, इसी वजह से ह़सद मज़्मूम है और गि़ब्त़ा मज़्मूम नहीं। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा. 16, 3/541)

3 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب الاغتباط فی العلم والحکمۃ، ۱/۴۳، حدیث:۷۳۔

जवाब : बसा अवक़ात हमें ज़न्ने ग़ालिब होता है कि इस काम में मुसलमान के लिये भलाई है, ऐसी सूरत में नसीह़त पर अ़मल करना चाहिये और ह़सद से बचना चाहिये और अगर उस ने'मत की भलाई और बेहतरी मुश्तबा हो तो उस के ज़वाल या बक़ा का इरादा नहीं करना चाहिये बल्कि उसे अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म और उस की मशिय्यत के सिपुर्द करना चाहिये ताकि ह़सद से परहेज़ और नसीह़त पर अ़मल हो सके।

ह़सद से दूर रखने वाली चीज़ (नसीह़त और ख़ैरख़्वाही) के जज़्बे को बरक़रार रखने की सूरत येह है कि इन्सान मुसलमानों के साथ दोस्ती और **मवालात**[1] की ताकीदात को याद करे जो इस मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से वारिद हो चुकी हैं, और इस याद को पुख़्ता करने वाली चीज़ येह है कि इन्सान मोमिन भाई के ह़ुक़ूक़ का तसव्वुर करे, इस के मर्तबे की बुलन्दी और इस के माल की ह़ुरमत जो अल्लाह तआ़ला के हां है निगाह में रखे और मोमिन की उन बुज़ुर्गियों और अ़ज़मतों का तसव्वुर करे जो आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उस को अ़त़ा करेगा और इस बात का ख़याल करे कि मुझे दुन्या में मोअमिनीन के साथ तआ़वुन, उन की मदद, और उन के साथ जुमुआ़ व जमाअ़ात में शिर्कत के अन्दर क्या क्या अ़ज़ीम फ़ाइदे हैं फिर अहले ईमान के साथ तआ़वुन और उन की इमदाद का एक फ़ाइदा येह है कि वोह आख़िरत में तुम्हारी शफ़ाअ़त करेंगे।

तो इस क़िस्म के ख़यालात व तसव्वुरात इन्सान को अपने दूसरे मुसलमान भाइयों के साथ ख़ैर ख़्वाही पर उभारते हैं और ह़सद से बचाते हैं। (وَاللّٰهُ وَلِيُّ التَّوْفِيْقِ بِفَضْلِهٖ)

---

1 .....मेल जोल।

उ़जलत या'नी जल्दबाज़ी की ह़क़ीक़त

उ़जलत दर अस्ल दिल में एक मौजूद क़ाइम मा'ना का नाम है जो इन्सान को बे सोचे समझे और बिला ग़ौरो फ़िक्र काम करने पर आमादा करता है और अ़मल में जल्दबाज़ी का बाइ़स बनता है और इस उ़जलत के मुक़ाबिल वस्फ़ अनाअत है या'नी तह़म्मुल व बुर्दबारी से काम करना, और अनाअत दिल में मौजूद एक ऐसे मा'ना का नाम है जो बन्दे के कामों में एह़तियात़, ग़ौरो फ़िक्र और तह़म्मुल व बुर्दबारी पैदा करता है, और तवक़्क़ुफ़ की ज़िद और मुक़ाबिल वस्फ़ तअ़स्सुफ़ है या'नी बे सोचे समझे काम शुरूअ़ कर देना।

मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तवक़्क़ुफ़ व अनाअत में येह फ़र्क़ बताया है कि काम शुरूअ़ करने से क़ब्ल इस के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र और सोच व बिचार करने को तवक़्क़ुफ़ कहते हैं और काम शुरूअ़ कर के इस में आहिस्तगी इख़्तियार करने को ताकि काम बेहतर त़रीक़े से अन्जाम को पहुंचे अनाअत कहते हैं।

फिर अनाअत और तह़म्मुल पैदा होने का येह त़रीक़ा है कि इन्सान जल्दबाज़ी की आफ़ात और नुक़्सानात व ख़राबियों को ख़याल में ह़ाज़िर करे और तअ़स्सुफ़ या'नी बे सोचे काम करने और जल्दबाज़ी करने से जो नदामत व मलामत होगी उसे ज़ेह्न में लाए इस त़रह़ करने से ज़रूर اِنْ شَآءَالله बन्दे में तवक़्क़ुफ़ व तह़म्मुल की सिफ़त पैदा होगी नीज़ तअ़स्सुफ़ व उ़जलत से भी नजात ह़ासिल होगी। وَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ الْعِصْمَةِ

किब्र की ह़क़ीक़त

नफ़्स की बुलन्दी व अ़ज़मत के ख़याल को किब्र कहते हैं, इस ख़याल से तकब्बुर पैदा होता है और अपने आप को ह़क़ीर व

कमतर ख़याल करने का नाम फ़र्वतनी है और फ़र्वतनी से तवाज़ोअ़ पैदा होती है फिर तवाज़ोअ़ व तकब्बुर हर एक की दो दो क़िस्मे हैं :

﴾1﴿ तवाज़ोए़ आ़म ﴾2﴿ तवाज़ोए़ ख़ास

﴾1﴿ तकब्बुरे आ़म ﴾2﴿ तकब्बुरे ख़ास

तवाज़ोए़ आ़म तो येह है कि बन्दा मा'मूली है़सिय्यत के लिबास, मक़ामे रिहाइश और सुवारी पर इक्तिफ़ा करे और तकब्बुरे आ़म येह है कि इन्सान मा'मूली नौइय्यत के लिबास मकान और सुवारी वगै़रा पर इक्तिफ़ा न करे बल्कि इस में बुलन्द व अरफ़अ़ है़सिय्यत का त़लबगार हो, और तवाज़ोए़ ख़ास येह है कि हर दरजे का इन्सान अपने नफ़्स को ह़क़ के ताबेअ़ करने की कोशिश करे और तकब्बुरे ख़ास येह है कि इस त़रह़ की कोशिश न करे ऐसा तकब्बुर गुनाहे कबीरा व मा'सियत है।

और तवाज़ोए़ आ़म को अपने अन्दर मज़्बूत़ व मुस्तह़्कम करने का त़रीक़ा येह है कि बन्दा अपनी इब्तिदाई ह़ालत, पैदाइश, मौत और इस मौजूदा वक़्त की परेशानियों और आलूदगियों को याद करे, एक बुज़ुर्ग (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का इरशाद है :

"اَوَّلُكَ نُطْفَةٌ مَذِرَةٌ وَ اٰخِرُكَ جِيْفَةٌ قَذِرَةٌ وَ اَنْتَ فِيْمَا بَيْنَهُمَا حَامِلُ الْعَذِرَةِ"

तेरी इब्तिदा तो रेह़्म में पड़ा हुवा क़त़रा है और तेरी इन्तिहा नापाक मुरदार है और इस वक़्त तू इन दो ह़ालतों के दरमियान अपने पेट में पाखाने का बोझ उठाए फिरता है।

तवाज़ोए़ ख़ास को मुस्तह़्कम करने का त़रीक़ा येह है कि बन्दा ह़क़ से उ़दूल करने और बात़िन में मुन्हमिक होने वाले शख़्स के अन्जाम और इस के अ़ज़ाब व सज़ा को याद करे, एक साह़िबे बसीरत इन्सान के लिये आफ़ाते क़ल्ब पर मुत्त़लअ़ होने के लिये इस क़दर वज़ाह़त और बयान काफ़ी है। وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ وَلِیُّ التَّوْفِيْقِ

पांचवीं फ़स्ल : शिकम[1] की हि़फ़ाज़त के बयान में

ऐ ता़लिबे इ़बादत ! तुझ पर अपने शिकम की हि़फ़ाज़त भी लाज़िम व ज़रूरी है, पेट की इस्लाह़ और हि़फ़ाज़त एक निहायत अम्रे मुश्किल है । लिहाज़ा इस की इस्लाह़ व हि़फ़ाज़त के लिये ज़ि़यादा मेह़नत व मशक़्क़त की ज़रूरत है इस के बिगाड़ का असर बहुत गहरा और इस की ख़राबी का नुक़्सान बहुत ज़ि़यादा है क्यूंकि येह तमाम जिस्मानी क़ुव्वतों का मम्बअ़ और **मा'दिन**[2] है, इसी शिकम से ही जिस्म में कमज़ोरी या क़ुव्वत, इ़फ़्फ़त या सरकशी वग़ैरा का ज़ुहूर होता है, इस लिये अगर तुम सह़ीह़ और बा मक़्सद इ़बादत का अ़ज़्म व इरादा अपने अन्दर पैदा करना चाहते हो तो तुम पर ह़राम ग़िज़ा, शुबे के खाने और फ़ुज़ूले ह़लाल से अपने पेट की हि़फ़ाज़त निहायत ज़रूरी है ।

ह़राम और शुबे की चीज़ों से तीन वजह से बचना ज़रूरी है :

अव्वल : दोज़ख़ की आग से मह़फ़ूज़ रहने के लिये है । **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًاؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا۠(۱۰) (3)

जो लोग यतीमों का माल ज़ुल्म के त़रीक़ों से खाते हैं ऐसे लोग बेशक अपने शिकमों में आग झोंक रहे हैं और अ़न क़रीब भड़कती हुई आग (नारे दोज़ख़) में दाख़िल होंगे ।

---

[1]....पेट । भूक के मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دامت بركاتهم العاليه की मायानाज़ तालीफ़ "**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" का मुत़ालआ़ कीजिये । [2].....सरचश्मा ।

[3].....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जाएंगे । (پ۴،النساء:۱۰)

हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

كُلُّ لَحْمٍ نَبَتَ مِنْ سُحْتٍ فَالنَّارُ اَوْلٰى بِهٖ [1] जो गोश्त गिज़ाए ह़राम से तय्यार हुवा हो उस के लिये आग में जलना ही बेहतर है।

दुवुम : वजह येह है कि ह़राम और शुबे की गिज़ा खाने वाला मर्दूदे बारगाहे खुदावन्दी है, ऐसे शख़्स को रब तआ़ला की सह़ीह़ और कारआमद इ़बादत की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती क्यूंकि एक पाक और त़ाहिर इन्सान ही **अल्लाह** तआ़ला की **ख़िदमत**[2] के लाइक़ और सज़ावार है, मैं कहता हूं : क्या **अल्लाह** तआ़ला ने एक **जुम्बी**[3] इन्सान को अपने घर या'नी मस्जिद में दाख़िल होने और बे वुज़ू शख़्स को कुरआने मजीद को छूने और हाथ लगाने से मन्अ़ नहीं किया ? ज़रूर मन्अ़ किया है जैसा कि कुरआने मजीद में फ़रमाया :

وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِیْ سَبِیْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا (4)

मजबूरन रास्ता उ़बूर करने वाले शख़्स के इ़लावा किसी जुम्बी शख़्स को नहाए बिग़ैर मस्जिद में क़दम रखने की इजाज़त नहीं।

दूसरी जगह फ़रमाया :

لَّا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (5)

इस मुक़द्दस किताब (कुरआन) को हाथ न लगाएं मगर बा वुज़ू लोग।

1.....المعجم الاوسط، ۳/۲٤٦، حديث: ٤٤٨٠ ـ

2.....इ़बादत। 3.....जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो। 4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और न नापाकी की ह़ालत में बे नहाए मगर मुसाफ़री में। (پ٥، النساء:٤٣)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुज़ू। (پ٢٧، الواقعة:٧٩)

जुम्बी और बे वुज़ू होना शरअ़न मुबाह़ है, तो ग़ौर करो जब एक मुबाह़ अम्र की वजह से मस्जिद में क़दम रखना या कुरआने करीम को हाथ लगाना मन्अ़ और ना रवा है तो वोह शख़्स मस्जिद में कैसे आ सकता है जो ह़राम और शुबे की नजासत से आलूदा है और ऐसा शख़्स किस त़रह़ रब तआ़ला की **ख़िदमत गुज़ारी**[1] का दा'वा कर सकता है, या उस के ज़िक्र और उस की याद से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकता है ऐसे शख़्स को येह तौफ़ीक़ नसीब नहीं हो सकती।

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि

اَلطَّاعَةُ مَخْزُوْنَةٌ مِنْ خَزَائِنِ اللّٰهِ تَعَالٰی وَ مِفْتَاحُهَا الدُّعَاءُ وَ اَسْنَانُهُ الْحَلَالُ فَاِذَا لَمْ يَكُنْ لِلْمِفْتَاحِ اَسْنَانٌ فَلَا يَنْفَتِحُ الْبَابُ وَ اِذَا لَمْ يَنْفَتِحْ بَابُ الْخَزَانَةِ كَيْفَ يَصِلُ اِلٰی مَا فِيْهَا مِنَ الطَّاعَةِ

इत़ाअ़त **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और इस ख़ज़ाने की चाबी दुआ़ है और चाबी के दन्दाने रिज़्क़े ह़लाल है तो जब चाबी के दन्दाने न हों तो दरवाज़ा नहीं खुल सकता और जब तक दरवाज़ा न खुले ख़ज़ाने तक पहुंचना नामुमकिन है।

सिवुम : वजह येह है कि ह़राम और शुबे की ग़िज़ा खाने वाला शख़्स नेक काम करने से मह़रूम होता है और अगर इत्तिफ़ाक़न कोई कारे ख़ैर उस से हो जाए तो वोह **इन्दल्लाह**[2] मक़्बूल व मन्ज़ूर नहीं होता बल्कि रद्द कर दिया जाता है तो ऐसा शख़्स नेक काम की अन्जाम देही में जो वक़्त और कुव्वत सर्फ़ करता है इस से बे फ़ाइदा मशक़्क़त, फ़ुज़ूल रन्जो मेह़नत और वक़्त ज़ाएअ़ करने के सिवा इस को कुछ ह़ासिल नहीं होता, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इरशादे गिरामी है :

1.....इबादत गुज़ारी। 2.....**अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक।

كَمْ مِنْ قَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ قِيَامِهِ اِلَّا السَّهْرُ وَ كَمْ مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ صِيَامِهِ اِلَّا الْجُوْعُ وَ الظَّمَأُ(1)

बहुत से रात इबादत में काटने वाले ऐसे होते हैं जिन को बेदारी की मशक़्क़त के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता और बहुत से रोज़ा दार ऐसे होते हैं जिन को दिन भर के रोज़े से सिवा भूक और प्यास के कुछ ह़ासिल नहीं होता।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है :

"لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ صَلٰوةَ امْرَءٍ فِيْ جَوْفِهٖ حَرَامٌ" **अल्लाह** तआ़ला ऐसे शख़्स की नमाज़ क़बूल नहीं करता जिस के शिकम में **ग़िज़ाए ह़राम** पड़ी हो।

बाक़ी रहा फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़ाइद ह़लाल तो इस का इस्ति'माल भी बन्दों के लिये आफ़त और अहले मुजाहदा के लिये बला है। मुझे इस में ग़ौर करने से दस आफ़तें मा'लूम हुई हैं जिन को उसूल की ह़ैसिय्यत दी जा सकती है :

पहली आफ़त :

ह़लाल त़आ़म ज़ियादा खाने से **क़सावते क़ल्बी**(2) पैदा होती है और नूर ज़ाइल हो जाता है, नबिय्ये करीम عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ اَلْفُ اَلْفِ صَلٰوةٍ وَّ تَسْلِيْمٍ से मरवी है कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

لَا تُمِيْتُوا الْقَلْبَ بِكَثْرَةِ الطَّعَامِ وَ الشَّرَابِ فَاِنَّ الْقَلْبَ يَمُوْتُ كَالزَّرْعِ اِذَا كَثُرَ عَلَيْهِ الْمَاءُ(3)

ह़ाजत और ज़रूरत से ज़ियादा खाने पीने से गुरैज़ करो क्यूंकि इस से दिल मुर्दा हो जाता है, जिस त़रह़ ज़रूरत से ज़ियादा पानी से खेती तबाह हो जाती है।

---

1 ...... سنن الدارمی ، کتاب الرقاق ، باب فی المحافظة علی الصوم، ۲ / ۳۹۰ ، حدیث: ۲۷۲۰، بتقدم وتأخر وبدون لفظ "الجوع"۔

2 .....दिल की सख़्ती

3 ......عمدة القاری، کتاب الاطعمة،باب وقول اللّٰہ تعالٰی: كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ، ۳۸۵/۱۴، تحت الحدیث: ۵۳۷۴، بتغیر۔

बा'ज़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ने इस की मिसाल यूं दी है कि मे'दा दिल के नीचे एक उबलती हुई हन्डिया की त़रह़ है तो मे'दे से बुख़ारात दिल को चढ़ते हैं और इन की वजह से दिल मैला और ख़राब हो जाता है।

दूसरी आफ़त :

येह है कि ज़ियादा खाने से आ'ज़ा में फ़ितना पैदा होता है, फ़साद बरपा करने और बेहूदा कामों की रग़बत पैदा होती है क्यूंकि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाता है तो उस के जिस्म में तकब्बुर और आंखों में बद नज़्री की ख़्वाहिश पैदा होती है, कान बुरी बातें सुनने के **मुश्ताक़**[1] होते हैं, ज़बान **बेहूदा गोई**[2] पर आमादा होती है, शर्मगाह शहवत रानी का तक़ाज़ा करती है और पाउं नाजाइज़ मक़ामात की त़रफ़ ह़रकत करने के लिये बेक़रार होते हैं इस के बर अ़क्स अगर इन्सान पेट ग़िज़ा से पुर न करे बल्कि भूक बाक़ी रहने दे तो तमाम आ'ज़ा सुकून व आराम इख़्तियार करेंगे, न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न बुराई को देख कर मसरूर और ख़ुश होंगे, उस्ताद अबू जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

إِنَّ الْبَطْنَ عُضْوٌ إِنْ جَاعَ هُوَ شَبِعَ سَائِرُ الْاَعْضَاءِ يَعْنِي تَسْكُنُ فَلَا تُطَالِبُكَ
بِشَيْءٍ وَ إِنْ شَبِعَ هُوَ جَاعَ سَائِرُ الْاَعْضَاءِ

शिकम एक ऐसा उ़ज़्व है कि अगर वोह भूका हो तो जिस्म के बाक़ी आ'ज़ा सैर होते हैं या'नी सुकून पज़ीर होते हैं किसी शै का मुत़ालबा नहीं करते और अगर शिकम सैर हो तो दूसरे आ'ज़ा भूके होते हैं या'नी मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।

---

1 .....ख़्वाहिश मन्द 2 .....बुरी बातों।

खुलासा येह है कि इन्सान के अफ़्आ़ल व अक़्वाल व आ'माल की अच्छाई बुराई का इन्ह़िसार गि़ज़ा पर है कि अगर पेट में ह़राम गि़ज़ा जाएगी तो ह़राम कामों की सूरत में ही बरआमद होगी और अगर फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़ियादा गि़ज़ा पेट में दाखि़ल होगी तो वोह फ़ुज़ूलियात के इर्तिकाब की सूरत में ही बरआमद होगी, गि़ज़ा गोया **तुख़्म**[1] है और अफ़्आ़ल व अक़्वाल इस तुख़्म का **पौदा** हैं जो तुख़्म के मुताबिक़ उगता है।

तीसरी आफ़त :

येह है कि ज़रूरत से ज़ियादा खाने से इ़ल्म व फ़हम में कमी वाक़ेअ़ होती है क्यूंकि **शिकम पुरी**[2] दानाई और **ज़ीरकी**[3] को ख़त्म कर देती है, ह़ज़रते दारानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया है कि अगर तू दुन्या और आखि़रत की ह़ाजत व ज़रूरत पूरा करने का ख़्वाहिश मन्द है तो ख़ाली पेट उसे पूरा करने की कोशिश कर पेट भर कर खा लेने के बा'द अ़क़्ल और फ़हम में **फ़ुतूर**[4] पैदा हो जाएगा येह बात हर तजरिबा कार पर ज़ाहिर व वाज़ेह़ है।

चौथी आफ़त :

पेट भर कर खाने से इ़बादत में कमी वाक़ेअ़ होती है क्यूंकि इन्सान जब ख़ूब सैर हो कर खा लेता है तो उस का बदन बोझल हो जाता है, आंखों में नींद भर जाती है और आ'ज़ा सुस्त पड़ जाते हैं, कोशिश के बा वुजूद कोई काम नहीं कर सकता, हर वक़्त ज़मीन पर मुर्दार की त़रह़ पड़ा रहता है, कहा गया है :

"اِذَا كُنْتَ بَطِيْنًا فَعُدَّ نَفْسَكَ زَمِيْنًا" जब तू पेटू बन जाए तो फिर अपने आप को **पाबह ज़न्जीर**[5] समझ।

---

1 .....बीज। 2 .....पेट भर कर खाना। 3 ..... अ़क़्ल मन्दी। 4 .....ख़राबी।
5 .....ज़न्जीर से पाउं बन्धा हुवा।

मरवी है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام ने इब्लीस को देखा कि बहुत से जाल उठाए हुवे है, आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने उन की त़रफ़ इशारा कर के पूछा कि येह क्या है? इब्लीस ने जवाब दिया : येह शहवात के जाल हैं जिन से मैं बनी आदम को शिकार करता हूं, आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने पूछा : क्या मुझे फांसने के लिये भी इन में से कोई जाल है? तो उस ने कहा : नहीं सिर्फ़ एक रात आप ने पेट भर कर खाना खाया तो मैं ने उस रात आप पर नमाज़ को भारी कर दिया, यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام ने येह सुन कर फ़रमाया : "क़सम ख़ुदा की ! आयिन्दा मैं कभी पेट भर कर नहीं खाऊंगा।" तो इब्लीस ने कहा : "मैं भी आयिन्दा कभी किसी को ऐसी बात नहीं बताऊंगा।"

येह उस हस्ती का ह़ाल है जिस ने सारी उ़म्र में एक दफ़्आ़ सैर हो कर खाया, तो उस का क्या ह़ाल होगा जिस ने सारी उ़म्र में सिर्फ़ एक दफ़्आ़ शिकम को भूका रखा? क्या ऐसा शख़्स इ़बादत की उम्मीद कर सकता है?

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :

اَلْعِبَادَۃُ حِرْفَۃٌ وَ حَانُوْتُھَا اَلْخَلْوَۃُ وَ اٰلَتُھَا اَلْمَجَاعَۃُ इ़बादत एक फ़न है जिस के सीखने की जगह तन्हाई और ख़ल्वत है और इस का हथयार भूक है।

पांचवीं आफ़त :

पेट भर कर खाने से इ़बादत की ह़लावत **मफ़्क़ूद**[1] हो जाती है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

"مَا شَبِعْتُ مُنْذُ اَسْلَمْتُ لِاَجِدَ حَلَاوَۃَ عِبَادَۃِ رَبِّیْ وَ مَا رَوِیْتُ مُنْذُ اَسْلَمْتُ اِشْتِیَاقًا اِلٰی لِقَاءِ رَبِّیْ"

1.....ख़त्म।

जब से मुसलमान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया ताकि इ़बादत की ह़लावत नसीब हो और जब से मैं मुसलमान हुवा हूं कभी सैर हो कर नहीं पिया, रब तआ़ला की मुलाक़ात के शौक़ से।

और येह सिफ़ात अहले कश्फ़ की हैं, ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुकाशिफ़ीन में से थे इसी मुकाशफ़े की त़रफ़ हु़ज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने इस क़ौल में इशारा फ़रमाया है :

مَا فَضَلَكُمْ اَبُوْ بَكْرٍ بِفَضْلِ صَوْمٍ وَ لَا صَلٰوةٍ وَّ اِنَّمَا هُوَ شَيْءٌ وَّقَرَ فِيْ نَفْسِهٖ (1)

अबू बक्र नमाज़, रोज़े की बिना पर तुम से अफ़्ज़ल नहीं बल्कि इन के अन्दर एक शै है जो इन की अफ़्ज़लिय्यत का बाइ़स है।

ह़ज़रते दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है कि

اَحْلٰى مَا تَكُوْنُ الْعِبَادَةُ اِذَا الْتَزَقَ بَطْنِيْ بِظَهْرِيْ

मैं इ़बादत में ह़लावत सब से ज़ियादा उस वक़्त मह़सूस करता हूं जब भूक की वजह से मेरा पेट पीठ से लगा हुवा हो।

छटी आफ़त :

ख़ूब पेट भर कर खाने में ह़राम या शुब्हे के त़आ़म में पड़ने का ख़त़रा है क्यूंकि ह़लाल इतना **वाफ़िर**(2) नहीं मिलता बल्कि मा'मूली गुज़ारे के मुवाफ़क़त मिलता है।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

اِنَّ الْـحَلَالَ لَا يَـاْتِيْكَ اِلَّا قُوْتًا وَ الْحَرَامُ يَاْتِيْكَ جُزَافًا جُزَافًا

1 ......كشف الخفاء، حرف الميم، ٢/١٧٠، حديث: ٢٢٢٦ ـ

2 .....ज़ियादा।

ह़लाल गि़ज़ा तुझे नहीं मिलेगी मगर मा'मूली गुज़ारे के मुवाफ़िक़ और ह़राम तेरे पास बे तह़ाशा आएगा।

सातवीं आफ़त :

फ़ुज़ूल ह़लाल को जम्अ़ करने, फिर इसे तय्यार करने और फिर खाने में दिल और बदन मश्ग़ूल रहता है, फिर इस से फ़ारिग़ होने और ख़लासी पाने में मसरूफ़ रहता है फिर इस से पैदा होने वाली ख़राबियों से सलामती की कोशिश करता है क्यूंकि ज़ियादा खाने से बदन में ख़राबी पैदा होती है बल्कि दीनी लिह़ाज़ से तो इस से हज़ारों ख़राबियां और आफ़ात पैदा होती हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है : اَصْلُ كُلِّ دَاءٍ اَلْبَرَدَةُ وَ اَصْلُ كُلِّ دَوَاءٍ اَلْاَزْمَةُ(1) हर बीमारी की अस्ल बद हज़्मी है और हर इलाज की अस्ल भूक और कम ख़ूराक है।

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) फ़रमाया करते थे :

"يَا هٰؤُلَاءِ لَقَدِ اخْتَلَفْتُ اِلَى الْخَلَاءِ حَتّٰى اسْتَحْيَيْتُ رَبِّيْ بِسَبَبِ كَثْرَةِ الْاَكْلِ يَا لَيْتَ اَنَّ اللّٰهَ جَعَلَ رِزْقِيْ فِيْ حَصَاةٍ اَمُصُّهَا حَتّٰى اَمُوْتَ"

ऐ लोगो ! मुझे बैतुल ख़ला की त़रफ़ ज़ियादा आना जाना पड़ता है, यहां तक कि ज़ियादा खाने से मुझे अपने रब से शर्म आई, काश ! अल्लाह तआ़ला मेरी रोज़ी कंकरियों में कर देता कि मैं इन्हें चूस लिया करता यहां तक कि मुझे मौत आ जाती।

फिर इस मरज़ की रू से दुन्या की त़लब करनी पड़ती है, लोगों से त़म्अ़ और लालच करना पड़ता है और इसी **ख़ुर्दो नोश**(2) की फ़िक्र में वक़्ते अ़ज़ीज़ ज़ाएअ़ हो जाता है।

---

1 ......الجامع الصغير، ص ٧١، حديث: ١٠٨٧ و المدخل ، طب الابدان و الرقى الواردة، ٢/٣٢٤، ملتقطًا۔

2 .....खाने पीने।

आठवीं आफ़त :

आखि़रत में हि़साबो किताब की हौलनाकियों और **सकराते मौत**[1] की शिद्दत का बाइ़स भी पेट भर कर खाना है, रिवायात में आया है ।

اِنَّ شِدَّةَ سَكَرَاتِ الْمَوْتِ عَلٰى قَدرِ لَذَّاتِ الدُّنيَا فَمَنْ اَكْثَرَ مِنْ هٰذِهٖ اَكْثَرَ لَهٗ مِنْ تِلْكَ

बेशक सकराते मौत की शिद्दत दुन्या की लज़्ज़तों के मुत़ाबिक़ है, तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्अ़ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी ।

नवीं आफ़त :

इस से आखि़रत के सवाब में कमी वाके़अ़ होती है, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿۲۰﴾ [2]

तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में ह़ासिल कर चुके और उन को ख़ूब बरत चुके, सो आज तुम को ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम दुन्या में नाह़क़ तकब्बुर किया करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानियां किया करते थे ।

---

1 .....नज़्अ़ की ह़ालत । 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उस की, कि तुम ज़मीन में नाह़क़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उस की, कि हुक्म उ़दूली करते थे ।

(پ۲٦،الاحقاف:۲۰)

तो जिस क़दर तुम दुन्या की लज़्ज़ते ह़ासिल कर लोगे इतना ह़िस्सा आख़िरत से कम हो जाएगा, इसी लिये जब रब तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक عَلَيْهِ السَّلَام पर दुन्या पेश की तो फ़रमाया : अगर तू इस की लज़्ज़त उठा ले तो इस के इवज़ तेरी लज़्ज़तें आख़िरत में कम नहीं करूंगा।

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि येह हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की खुसूसिय्यत थी दूसरे अगर यहां लज़्ज़तें ह़ासिल करेंगे तो इस के इवज़ उन का आख़िरत का ह़िस्सा काट लिया जाएगा, हां **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल हो जाए तो दूसरी बात है।

मरवी है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की दा'वत की, जब आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) खाने लगे तो खाने को देख कर फ़रमाया : येह तो हमारे लिये है, उन फ़ुक़रा मुहाजिरीन के लिये क्या है जो फ़ौत हो चुके और जव की रोटी से भी सैर न हुवे? ह़ज़रते ख़ालिद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने अ़र्ज़ किया कि उन के लिये जन्नते फ़िरदौस है, ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने फ़रमाया : अगर वोह जन्नत पाने में कामयाब हो गए हैं और हम ने इस के इवज़ अपना ह़िस्सा यहां दुन्या में ले लिया है तो उन के और हमारे मर्तबे में बहुत फ़र्क़ है।

मन्क़ूल है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को प्यास मह़सूस हुई, आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने एक शख़्स से पानी मांगा, उस शख़्स ने आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) को एक बरतन दिया जिस में खजूरों का पानी था, जब आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने उस से मुंह लगाया तो उसे ठन्डा और मीठा पाया, आप रुक गए और आह खींची, उस शख़्स ने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैं ने इसे मीठा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी, तो आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने फ़रमाया : इसी

मिठास ने ही तो मुझे इस के पीने से बाज़ रखा, अगर आख़िरत का ख़याल न होता तो हम भी तुम्हारी इस ऐ़शो इ़शरत में शरीक होते।

दसवीं आफ़त :

ज़रूरत से ज़ियादा ग़िज़ा इस्ति'माल कर के जो तर्के अदब का इर्तिकाब होता है इस पर **रोज़े ह़श्र मौक़िफ़**[1] में रोका जाएगा, पूरी त़रह़ ह़िसाब लिया जाएगा और ज़रूरत से ज़ाइद ग़िज़ा इस्ति'माल करने पर शर्म व आ़र दिलाई जाएगी और मलामत की जाएगी और शहवात की त़लब पर कोसा जाएगा, दुन्या की ह़लाल चीज़ों के इस्ति'माल का ह़िसाब और इत्तिबाए़ शहवात पर ज़ज्र व तौबीख़ की जाएगी और ह़राम पर अ़ज़ाब और इस की ज़ीनत इख़्तियार करने पर हलाकत व बरबादी पेश आएगी।

येह दस आफ़ात हैं जिन में से अहले नज़र के लिये **मज़र्रत**[2] में सिर्फ़ एक भी काफ़ी है।

ऐ इ़बादत में कोशिश करने वाले ! तुझ पर ह़राम और शुबे की ग़िज़ा से परहेज़ करना ज़रूरी है और रिज़्क़ के मुआ़मले में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है ताकि दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात रहे, इसी त़रह़ ज़रूरत से ज़ियादा ह़लाल के इस्ति'माल से भी इजतिनाब लाज़िम है ताकि बन्दा किसी शर और बुराई में मुब्तला न हो और ताकि क़ियामत के दिन ह़िसाब के लिये मह़शर में रोक न लिया जाए। وَاللّٰهُ وَلِیُّ التَّوْفِیْق

सुवाल : जब ह़राम और शुबे से बचना इतना ज़रूरी है तो हमें ह़राम व शुबे के हुक्म और इस की ह़क़ीक़त से भी पूरे त़ौर पर आगाह कीजिये।

---

1 .....मैदाने मह़शर। 2 .....नुक़्सान पहुंचाने।

जवाब : मैं कहता हूं : (**अल्लाह** तआ़ला तेरी उ़म्र दराज़ करे) कि मैं ने ह़राम व शुबे की तफ़्सीलात पूरे त़ौर पर अपनी किताब "**असरारे मुआ़मलाते दीन**" में बयान कर दी हैं और किताब "**इह़याउल उ़लूम**" में भी इन तफ़्सीलात में एक मुस्तक़िल बाब लिखा है लेकिन इस किताब "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" में हम चन्द ज़रूरी कलिमात लिखते हैं जिन को **मुब्तदी**[1] और **ज़ईफ़ुल अ़मल**[2] शख़्स आसानी से ज़ेह्न में बिठा सके क्यूंकि इस मुख़्तसर किताब से हमारा मक़्सूद येही है कि मुब्तदी को ख़ास त़ौर पर फ़ाइदा हो और इसी त़रह़ हर त़ालिबे राहे आख़िरत इस से इस्तिफ़ादा कर सके।

बा'ज़ हुकमा ने ह़राम के मुतअ़ल्लिक़ येह कहा है कि

كُلُّ مَا تَيَقَّنْتَ كَوْنَهُ مِلْكًا لِّلْغَيْرِ مَنْهِيًّا عَنْهُ فِي الشَّرْعِ فَهُوَ حَرَامٌ

हर वोह शै जिस के मुतअ़ल्लिक़ तुझे यक़ीन हो कि येह ग़ैर की मिल्क है और बिग़ैर इजाज़ते शरअ़ इस में तसर्रुफ़ नाजाइज़ है तो ऐसी चीज़ ह़राम है लेकिन अगर इस का यक़ीन न हो बल्कि **ज़न्ने ग़ालिब**[3] हो कि येह ग़ैर की मिल्क है तो ऐसी चीज़ शुब्हे वाली चीज़ है।

और बा'ज़ ने ह़राम के मुतअ़ल्लिक़ येह कहा है कि "हर वोह शै जिस के मुतअ़ल्लिक़ यक़ीन हो या ज़न्ने ग़ालिब हो कि येह ग़ैर की है तो इस का इस्ति'माल ह़राम है क्यूंकि शरअ़ ने बहुत अह़काम में ज़न्ने ग़ालिब को भी यक़ीन के क़ाइम मक़ाम किया है और अगर किसी शै के ह़राम या ह़लाल होने में शक हो और इस के जवाज़ या अ़दमे जवाज़ की दोनों जानिब बराबर हों यहां तक कि तुम इस ह़द तक शक में पड़ जाओ कि **ह़िल्लत** व **ह़ुरमत** किसी त़रफ़ को तरजीह़ न दे सको तो येह शुब्हे की ग़िज़ा है क्यूंकि इस में येह भी शुबा है कि ह़राम हो, लिहाज़ा ऐसी ग़िज़ा का मुआ़मला

---

1 .....तसव्वुफ़ की इब्तिदा करने वाला। 2 .....अ़मली ए'तिबार से कमज़ोर।
3 .....ग़ालिब गुमान।

मुश्तबा और इस का ह़ाल ग़ैर वाज़ेह़ है, फिर जिस की ह़ुरमत वाज़ेह़ है उस से इजतिनाब फ़र्ज़ है और जिस की ह़ुरमत में शुबा हो उस से परहेज़ करना वरअ़ और तक़्वा है, हमारे नज़्दीक इन दोनों अक़्वाल में से इस दूसरे क़ौल को फ़ौक़िय्यत ह़ासिल है।

सुवाल : इस ज़माने के बादशाहों के इन्आ़मात व तह़ाइफ़ क़बूल करने का क्या ह़ुक्म है ?

जवाब : इस मस्अले में उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) का इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ कहते हैं कि जिस माल का ह़राम होना यक़ीनी नहीं उस के लेने और क़बूल करने में ह़रज नहीं।

इस के बर अ़क्स बा'ज़ दूसरे उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) येह फ़रमाते हैं : जिस माल का ह़लाल होना वाज़ेह़ और यक़ीनी न हो उसे लेना और क़बूल करना दुरुस्त नहीं क्यूंकि इस ज़माने के **सलात़ीन**[1] के पास **अग़लब**[2] ह़राम माल होता है इन के पास माले ह़लाल या तो बिल्कुल नायाब है या बिल्कुल नादिर है।

और उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की तीसरी जमाअ़त येह कहती है कि सलात़ीने वक़्त का माल ग़नी और फ़क़ीर सब के लिये क़बूल करना दुरुस्त है जब कि इस के ह़राम होने का यक़ीन न हो, अगर इस माल में कोई ख़राबी होगी तो इस का गुनाह देने वाले के सर है, इन की दलील येह है कि

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ाकिमे इस्कन्दरिय्या मुक़ौक़िस का हदिय्या क़बूल फ़रमाया।[3] ह़ालांकि वोह ग़ैर मुस्लिम था।

नीज़ ह़ुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने यहूदे मदीना से क़र्ज़ माल लिया।[4]

---

1 .....ह़ुक्मरानों। 2 .....ज़ियादा तर।

3 ......المعجم الكبير، ١٢/٤، حديث: ٣٤٩٧

4 ......سنن النسائی، کتاب البیوع،الرجل یشتری...الخ،ص ٧٤١،حدیث:٤٦١٨

ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने करीम में यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ (1) *या'नी यहूदे मदीना इन्तिहाई दरजे के ह़राम ख़ोर हैं।*

इन ह़ज़रात की येह दलील भी है कि बहुत सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) ने ज़ालिम हुक्काम का ज़माना पाया और उन से हदिय्ये तोह़फ़े वग़ैरा क़बूल करते रहे, इस सिलसिले में ह़ज़रते अबू हुरैरा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) **वग़ैरहुम**(2) का नाम पेश किया जा सकता है।

इस के बर अ़क्स दूसरे उ़लमा (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) येह कहते हैं कि ज़ालिम हुक्काम से माल क़बूल करना किसी ग़नी व फ़क़ीर को दुरुस्त व रवा नहीं क्यूंकि इर्तिकाबे ज़ुल्म की वजह से ही इन का नाम ज़ालिम पड़ चुका है और इन का माल ग़ालिबन ह़राम ही होता है और ए'तिबार अम्रे ग़ालिब का होता है लिहाज़ा इन के माल से इजतिनाब ज़रूरी है।

बा'ज़ दूसरे येह कहते हैं कि जिस माल की हुरमत यक़ीनी न हो उस का इस्ति'माल फ़क़ीर के लिये दुरुस्त है, ग़नी के लिये दुरुस्त नहीं, हां इस सूरत में फ़क़ीर के लिये लेना भी दुरुस्त नहीं जब कि यक़ीन हो कि येह **ग़सब शुदा**(3) माल है, सिर्फ़ इस निय्यत से येह माल लेना दुरुस्त है कि इस से ले कर मालिक को दे।

इन उ़लमा (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) ने येह भी कहा है कि फ़क़ीर के लिये सलात़ीने वक़्त का माल क़बूल करना और इस्ति'माल में

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बड़े ह़राम ख़ोर। (پ٦، المائدۃ:٤٢)

2.....और इन के इलावा अस्ह़ाब। 3.....ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा किया गया।

लाना दुरुस्त और रवा है क्यूंकि वोह माल या तो सुल्त़ान का अपना ज़ाती होगा तो उस के क़बूल करने में ह़रज नहीं, और अगर माले **फ़ई**[1] **या ख़राज**[2] या **उ़श्र**[3] का हो तो इस में भी शरअ़न फ़क़ीर का ह़क़ है, यूं ही अहले इल्म भी सलात़ीने वक़्त का दिया हुवा माल अपने तसर्रुफ़ में ला सकते हैं।

ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهٗ फ़रमाते हैं :

जो शख़्स इस्लाम में ब ख़ुशी दाख़िल हुवा, फिर क़ुरआने करीम की तिलावत अ़लानिय्या करता हो वोह मुसलमानों के **बैतुल माल**[4] से सालाना दो सो दिरहम लेने का ह़क़दार है।

एक रिवायत में दो सो दीनार आए हैं, अगर दुन्या में उसे नहीं मिलेगा तो आख़िरत में लेगा।

और जब मुआ़मला येह है तो फ़क़ीर और आ़लिम ऐसे माल के ह़क़दार हैं तो वोह अपना ह़िस्सा ले सकते हैं।

बा'ज़[5] ने येह भी कहा है कि अगर किसी का माल ग़सब के माल से इस त़रह़ **रल मिल**[6] चुका हो कि तमीज़ मुश्किल हो, या किसी सुल्त़ान के पास ग़सब का ऐसा माल हो जिस के मालिक और मालिक की अवलाद मर चुकी हो और वापस करने की कोई

---

1 .....वोह माल जो कुफ़्फ़ार से बिग़ैर जंग के ह़ासिल हो। (الموسوعة الفقهية، ١٩/٥٣)

2 .....ज़मीन का टेक्स जो ज़िम्मियों से लिया जाता था। (الموسوعة الفقهية، ١٩/٥٢)

3 .....ज़मीन से नफ़्अ़ ह़ासिल करने की ग़रज़ से उगाई जाने वाली शै की पैदावार पर जो ज़कात अदा की जाती है उसे **उ़श्र** कहते हैं। (الفتاوى الهندية، كتاب الزكوٰة، ١/١٨٥، ملخصًا)

4 .....वोह मकान जिस में ऐसा माल रखा जाए जिस के मुस्तह़िक़ तमाम मुसलमान हों कोई ख़ास फ़र्द उस का मालिक न हो। (الموسوعة الفقهية، ٨/٢٤٢)

5 .....तर्जमा में यहां ''अ़त़ा ने येह भी कहा'' था ह़ालांकि अ़रबी नुस्ख़ों में इस के बजाए ''قالوا'' है जिस का मा'ना ''बा'ज़ ने येह भी कहा'' बनता है, लिहाज़ा इसे तब्दील कर दिया है। (इल्मिय्या) 6 ..... घुलमिल।

सूरत न हो तो सुल्त़ान ऐसे माल से उसी सूरत में ख़लासी पा सकता है कि उसे सदक़ा कर दे, तो इस सूरत में येह नहीं कि **अल्लाह** इस सुल्त़ान को सदके़ का हुक्म दे और फ़क़ीर को इस के क़बूल करने से मन्अ़ करे या फ़क़ीर को वोह माल क़बूल करने की इजाज़त न दे ह़ालांकि वोह माल उस के लिये ह़राम हो तो ऐसे माल में फ़क़ीर को लेने या न लेने का इख़्तियार है।

मगर ऐसे मसाइल में उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) को तमाम **शुक़ूक़**[1] बयान किये बिग़ैर और पूरी तफ़्सील बयान किये बिग़ैर फ़त्वा देना जाइज़ नहीं। अगर हम इस किताब में यहां इसी मस्अले की तफ़्सील बयान करना शुरूअ़ कर दें तो हम अपने मक़्सद से दूर जा पड़ेंगे, जो शख़्स इस की पूरी तफ़्सीलात मा'लूम करने का ख़्वाहिश मन्द हो वोह हमारी किताब "**इह़याउल उ़लूम**" के बाब ह़लालो ह़राम का मुत़ालआ़ करे उस में इस मस्अले की पूरी वज़ाह़त मिल जाएगी।

सुवाल : उमरा और ताजिरों के तोह़्फ़ा तह़ाइफ़ का क्या हुक्म है? फ़ुक़रा और उ़लमा को इन के हदिय्ये व तोह़्फ़े क़बूल करने जाइज़ हैं या नहीं? बा वुजूद येह कि येह लोग हुसूले माल में बे एह़तियाती और इस की ह़िल्लत व हुरमत में पूरी ग़ौरो एह़तियात़ से काम नहीं लेते और इसी त़रह़ आ़म दोस्तों के तोह़्फ़े तह़ाइफ़ का लेना दुरुस्त है या नहीं?

जवाब : जब किसी इन्सान का ज़ाहिर ह़ाल ठीक हो और उस में कोई शरई ख़राबी मा'लूम न हो तो ऐसे शख़्स का अ़तिय्या या सदक़ा क़बूल करने में कोई ह़रज नहीं और इस त़रह़ की खोद कुरीद शरई त़ौर पर लाज़िम नहीं कि ज़माना बिगड़ चुका है और लोगों में ह़लालो ह़राम

---

1 .....जुज़इय्यात।

का फ़र्क़ उठ गया है इस लिये शायद येह सदक़ा भी ह़राम माल से हो क्यूंकि ऐसा ख़याल सदक़ा देने वाले के ह़क़ में **सूए ज़न्नी**[1] है जो दुरुस्त नहीं बल्कि मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ नेक गुमान रखने का हुक्म है। फिर अ़त्तिय्यात व सदक़ात के बारे में उसूली चीज़ येह है कि हर चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ एक शरई हुक्म और ज़ाहिरे शरीअ़त का फ़ैसला होता है दूसरा तक़्वा का हुक्म और उस का ह़क़।

शरई हुक्म तो येह है कि हर वोह सदक़ा या अ़तिय्या क़बूल कर लिया जाए जिस का ज़ाहिर दुरुस्त हो और इस के बा'द कोई तफ़्तीश न की जाए, हां ! अगर इस माल के ह़राम या ग़सब होने का यक़ीन हो तो फिर लेना जाइज़ नहीं।

मगर तक़्वा येह है कि पूरी तह़क़ीक़ व तफ़्तीश के बिग़ैर किसी से क़त़्अ़न कोई चीज़ न ली जाए अगर उस में ज़र्रा भी शुबे का गुमान हो तो रद्द कर दिया जाए इस लिये कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि

اِنَّ غُلَامًا لَّهٗ اَتَاهُ بِلَبَنٍ فَشَرِبَهٗ فَقَالَ الْغُلَامُ كُنْتُ اِذَا جِئْتُ بِشَیْءٍ تَسْاَلُنِی عَنْهُ وَ لَمْ تَسْاَلْنِی عَنْ هٰذَا اللَّبَنِ فَقَالَ وَ مَا قِصَّتُهٗ فَقَالَ رَقَیْتُ قَوْمًا فِی الْجَاهِلِیَّةِ فَاَعْطَوْنِیْ هٰذَا فَتَقَیَّاهُ اَبُوْ بَكْرٍ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ وَ قَالَ اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ قُدْرَتِیْ فَمَا بَقِیَ فِی الْعُرُوْقِ فَاَنْتَ حَسْبُهٗ

एक दफ़्अ़ा आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का ग़ुलाम आप की ख़िदमत में दूध लाया तो आप ने उसे पी लिया, ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : मैं पहले जब भी कोई चीज़ आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास लाता था तो आप उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया करते थे लेकिन इस दूध के मुतअ़ल्लिक़ आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कोई इस्तिफ़्सार नहीं फ़रमाया :

1 .....बद गुमानी।

तो उस वक़्त आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने पूछा : येह दूध कैसा है ? गुलाम ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बीमार आदमी पर मन्तर फूंका था जिस के मुआ़वज़े में येह दूध आज उन्हों ने दिया है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने येह सुन कर अपने ह़ल्क़ में उंगली डाली और उसे "क़ै" कर दिया, "क़ै" के बा'द आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने निहायत आ़जिज़ी से दरबारे इलाही में अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे मौला ! जिस पर मैं क़ादिर था वोह मैं ने कर दिया, इस का थोड़ा बहुत ह़िस्सा जो रगों में रह गया है वोह मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

येह रिवायत इस बात की क़वी दलील है कि तक़्वा पर नज़र रखने वाले हर शख़्स के लिये ज़रूरी है कि ग़िज़ा की पूरी त़रह छान बीन करे और फिर उसे इस्ति'माल में लाए।

सुवाल : तुम्हारे इस बयान से साबित होता है कि तक़्वा हुक्मे शरअ़ के ख़िलाफ़ है !

जवाब : जानना चाहिये कि ज़ाहिर शरअ़ आसानी व सहूलत पर मब्नी है इसी लिये नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"بُعِثْتُ بِالْحَنِيفِيَّةِ السَّمْحَةِ"(1) मैं आसान और हर बात़िल से जुदा मज़हब दे कर भेजा गया हूं।

और तक़्वा शिद्दत व एह़तियात़ पर मब्नी है, कहा गया है कि मुत्तक़ी का मुआ़मला दूसरी हज़ारों पेचीदगियों में फंसने से ज़ियादा सख़्त है, फिर येह ख़याल न करो कि तक़्वा शरअ़ से कोई अ़लाहि़दा चीज़ है बल्कि अस्ल में दोनों एक हैं लेकिन शरअ़ के हुक्म दो हैं, एक जवाज़ का हुक्म और एक एह़तियात़ व अफ़्ज़लिय्यत का हुक्म, जाइज़ हुक्म को हुक्मे शरअ़ और अफ़्ज़ल व ज़ियादा बा एह़तियात़ हुक्म का नाम तक़्वा है, तो येह दोनों हुक्म एक दूसरे से जुदा होने के बा वुजूद अस्ल में एक हैं, इस फ़र्क़ को अच्छी त़रह ज़ेह्न नशीन कर लें।

---

1 ......مسند امام احمد، ۳۰۳/۸، حدیث : ۲۲۳۵٤ ۔

सुवाल : जब हर शै की तफ़्तीश और छान बीन ज़रूरी है तो इस ज़माने में किसी चीज़ को भी इस्ति'माल करना साहि़बे तक़्वा के लिये मुश्किल और फ़साद से ख़ाली नहीं ह़ालांकि ज़रूरी चीज़ों का इस्ति'माल उस के लिये लाज़िम है।

जवाब : जानना चाहिये कि तक़्वा एक सख़्त रास्ता है जो शख़्स इस पर चलने का इरादा करे उस के लिये ज़रूरी है कि अपने नफ़्स और दिल को मसाइब व मुश्किलात बरदाश्त करने पर मज़बूत़ करे, वरना वोह तक़्वा का रास्ता तै़ नहीं कर सकता। इसी दिक़्क़त के बाइस बहुत से अहले तक़्वा और **मुतक़द्दिमीन सूफ़िया**[1] (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِم) शहरों व आबादियों को छोड़ कर **कोहे लुबनान**[2] पर चले गए और सारी उ़म्र घास और जंगली फल वग़ैरा खा कर गुज़ारी जिन में किसी क़िस्म का शुबा नहीं, तो तक़्वा का मर्तबा ह़ासिल करने की जिस में हिम्मत हो उसे चाहिये कि मुश्किलात व मसाइब और ह़वादिस को बरदाश्त करे और आफ़ात के पेश आने पर सब्र करे और इन मुन्दरिजए बाला ह़ज़रात का त़रीक़ा इख़्तियार करे लेकिन जो लोगों में रहने और वोही चीज़ें इस्ति'माल करने पर मजबूर हो जो वोह इस्ति'माल करते हैं तो उसे चाहिये कि इतना क़लील इस्ति'माल करे जितना सख़्त ज़रूरत के वक़्त मुर्दार इस्ति'माल करने की इजाज़त है सिर्फ़ इसी क़दर पर इक्तिफ़ा करे जिस से अल्लाह तआ़ला की इ़बादत क़ाइम रख सके इस क़दर इस्ति'माल पर उसे **मा'ज़ूर**[3] समझा जाएगा और येह अन्दाज़ा उस के लिये मुज़िर नहीं होगा अगर्चे उस में किसी क़िस्म का शुबा हो, इस लिये ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि

1.....पहले के सुफ़्याए किराम رَحِمَهُمُاللّٰهُ السَّلَام 2.....लुबनान के पहाड़।
3.....मजबूर।

فَسَدَ السُّوقُ فَعَلَيْكُمْ بِالْقُوتِ (**तर्जमा :**) चूंकि बाज़ारों में ह़रामो ह़लाल में तमीज़ उठ चुकी है इस लिये सिर्फ़ ज़रूरी रोज़ी पर इक्तिफ़ा करना लाज़िम है।

मैं ने सुना है कि ह़ज़रते वहब बिन वर्द (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه) एक एक या दो दो या तीन तीन दिन भूके रहते थे फिर एक रोटी लेते थे और दुआ़ करते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ وَ اَنِّیْ لَا اَقْوٰی عَلَی الْعِبَادَةِ وَ اَخْشَی الضُّعْفَ وَ اِلَّا لَمْ اٰكُلْهُ

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ فِيْهِ شَیْءٌ مِنْ خَبَثٍ اَوْ حَرَامٍ فَلَا تُؤَاخِذْ نِیْ بِهٖ ثُمَّ يَبُلُّ رَغِيْفَهٗ بِالْمَاءِ ثُمَّ يَاْكُلُهٗ

ऐ **अल्लाह** तू जानता है कि मैं बिग़ैर ग़िज़ा के तेरी इ़बादत की त़ाक़त नहीं रखता और मुझे कमज़ोरी का डर है अगर ऐसा न होता तो मैं येह भी न खाता। ऐ **अल्लाह** ! अगर इस रोटी में कोई ख़राबी या ह़राम हो तो मुझे इस खाने पर न पकड़ना। येह दुआ़ करने के बा'द आप (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه) रोटी को पानी में भिगोते थे और खाते थे।

मैं कहता हूं कि येह दो त़रीक़े अहले तक़्वा में सब से बुलन्द तक़्वा वालों के हैं लेकिन जो लोग इन से तक़्वा में कम हैं उन के लिये अपनी वुस्अ़त के मुत़ाबिक़ एह़तियात़ ज़रूरी है, जितनी उन में एह़तियात़ होगी इसी क़दर उन्हें तक़्वा से ह़िस्सा मिलेगा। मश्हूर मिसाल है कि तुम जितनी मेह़नत व कोशिश करोगे उतनी ही तुम्हें अपनी मुराद में कामयाबी होगी और **अल्लाह** तआ़ला किसी नेक अ़मल करने वाले के अ़मल को ज़ाएअ़ नहीं करता और लोग जो कुछ भी करते हैं वोह सब कुछ जानता है।

सुवाल : मुन्दरिजए बाला बयान तो ह़राम चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ था, ज़रा ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ भी बयान कर दीजिये कि किस ह़द तक इस का इस्ति'माल फ़ुज़ूल में दाख़िल नहीं और किस ह़द पर जा कर वोह फ़ुज़ूल के हुक्म में दाख़िल होता है जिस के बाइ़स रोज़े क़ियामत बन्दे को ह़िसाब के लिये रोका जाएगा और ह़िसाब

लिया जाएगा, और ह़लाल के इस्ति'माल की मुस्तह़ब और मुनासिब मिक़्दार क्या है जो फ़ुज़ूल में दाख़िल नहीं और जिस का ह़िसाब वग़ैरा नहीं होगा ?

जवाब : मुबाह़ तीन क़िस्म है :

एक वोह जो फ़ख़्र, **मुबाहात**[1] बड़ाई और नुमाइश के तौ़र पर इस्ति'माल किया जाए ऐसे इस्ति'माल का ज़रूर क़ियामत के दिन ह़िसाब होगा और उस के ह़िसाब के लिये ज़रूर वहां रोका जाएगा और इस्ति'माल करने वाले को मलामत और शर्म दिलाई जाएगी, ऐसा इस्ति'माल ख़ुदा तआ़ला को नापसन्द और बुरा है और ऐसा इस्ति'माल बन्दे के दिल में बुराई पैदा करता है या'नी फ़ख़्र और बड़ाई वग़ैरा जो अ़ज़ाबे दोज़ख़ का बाइ़स है और इस त़रह़ के इस्ति'माल का इरादा मा'सिय्यत और गुनाह है क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में एक जगह फ़रमाया है :

اَنَّمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِیْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَیْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِی الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِؕ (2)

दुन्या की ज़िन्दगी तो मह़ज़ खेल कूद, ज़ीनत व ज़ैबाइश, माल व अवलाद में फ़ख़्र व ग़ुरूर और इस में कसरत चाहने का नाम है।

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है :

مَنْ طَلَبَ الدُّنْیَا حَلَالًا مُبَاهِیًا مُكَاثِرًا مُفَاخِرًا مُرَائِیًا لَقِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَ هُوَ عَلَیْهِ غَضْبَانُ (3)

जो मुबाहात, बड़ाई, फ़ख़्र और नुमाइश की ग़रज़ से ह़लाल की त़लब करेगा वोह क़ियामत के दिन ख़ुदा को अपने

---

1 .....शानो शौकत। 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और अवलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना। (پ ٢٧، الحديد : ٢٠)

3 ..... شعب الایمان،باب فی الزھد وقصرالامل،٢٩٨/٧،حدیث:١٠٣٧٤،بد ون لفظ"مباھیا"

ऊपर ग़ज़ब नाक[1] पाएगा।

तो मुन्दरिजए बाला आयत व ह़दीस में ऐसे मक़्सद व इरादे पर वईद सुनाई गई है।

मुबाह़ की **दूसरी क़िस्म** वोह है जिस का इस्ति'माल मह़्ज़ शहवत के त़ौर पर हो, ऐसा इस्ति'माल भी बुरा है जिस पर रोज़े क़ियामत **ह़ब्स**[2] व ह़िसाब होगा क्यूंकि रब तआ़ला का फ़रमान है :

ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ یَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِیۡمِ ۝(3)

फिर तुम से ज़रूर ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा।

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : "وَ حَلَالُهَا حِسَابٌ"(4) और ह़लाल के इस्ति'माल पर रोज़े क़ियामत ह़िसाब होगा।

ह़लाल व मुबाह़ की **तीसरी क़िस्म** येह है कि मजबूरन क़दरे ज़रूरत शै इस्ति'माल की जाए, जिस से रब तआ़ला की इ़बादत बजा लाई जा सके, इतना अन्दाज़ा ही बेहतर, मुस्तह़ब और मुनासिब है, इतने इस्ति'माल पर कोई ह़िसाबो अ़ज़ाब वग़ैरा नहीं होगा बल्कि इतना क़लील इस्ति'माल सवाब और **मद्ह़**[5] का बाइ़स है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

(6) اُولٰٓئِکَ لَهُمۡ نَصِیۡبٌ مِّمَّا کَسَبُوۡا ؕ

उन लोगों के लिये ह़िस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया।

---

1 .....यहां **अल्लाह** तआ़ला के लिये लफ़्ज़ "**ग़ुस्सा**" इस्ति'माल हुवा था, फ़तावा रज़विय्या, जिल्द **26**, सफ़ह़ा **457** पर इसे मन्अ़ लिखा है लिहाज़ा इसे ह़ज़्फ़ कर दिया है। (इ़ल्मिय्या)

2 .....ह़ब्स येह है कि ह़िसाब लेने के लिये जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया जाएगा।

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी। (پ٣٠،التکاثر:٨)

4 .....مسند الفردوس ، باب المیم ، ٢/٢٩٧ ، حدیث : ٦٢٣٩۔

5 .....ता'रीफ़।

6 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसों को उन की कमाई से भाग (ह़िस्सा) है।

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا اِسْتِعْفَافًا عَنِ الْمَسْئَلَةِ وَ تَعَطُّفًا عَلٰى جَارِهٖ وَ سَعْيًا عَلٰى عِيَالِهٖ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَ وَجْهُهٗ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ (1)

जिस ने सुवाल से बचने के लिये और अपने हमसाए की इमदाद के लिये और अपने इ़याल की परवरिश के लिये ह़लाल दुन्या त़लब की क़ियामत के रोज़ उस का चेहरा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ चमक रहा होगा।

ऐसे बन्दे की येह शान व फ़ज़ीलत इस लिये है कि उस का क़स्द व इरादा नेक और ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये होता है।

सुवाल : वोह क्या शराइत़ हैं जिन के मल्हूज़ रखने से मुबाह़ का इस्ति'माल ख़ैर और नेकी बन जाता है ?

जवाब : मुबाह़ और ह़लाल अश्या का इस्ति'माल दो शर्तों से नेकी और ख़ैर बनता है : ﴾1﴿ एक ह़ाल ﴾2﴿ दूसरा क़स्द व इरादा।

ह़ाल से मुराद येह है कि ह़लाल व मुबाह़ को ब वक़्ते उ़ज़्र व मजबूरी इस्ति'माल किया जाए, उ़ज़्र और मजबूरी की सूरत येह है कि ऐसा मौक़अ़ हो कि अगर ह़लाल को इस्ति'माल में न लाया जाए तो शरअ़न गिरिफ़्त हो वोह इस त़रह़ कि मुबाह़ शै के इस्ति'माल न करने के बाइ़स बदन इतना लाग़र हो जाए कि फ़र्ज़, सुन्नत या नफ़्ल अदा न कर सके, तो ऐसी सूरत में मुबाह़ का इस्ति'माल तर्के मुबाह़ से अफ़्ज़ल है, अगर्चे दुन्या के मुबाह़ात को भी इस्ति'माल में न लाना बेहतर और अफ़्ज़ल है मगर उ़ज़्र की सूरत में इस्ति'माल ही बेहतर व अफ़्ज़ल है।

मक़्सद व इरादे से मुराद येह है कि ह़लाल के इस्ति'माल से मक़्सूद सफ़रे आख़िरत का तौशा तय्यार करना और इ़बादते

---

(1)......شعب الایمان،باب فی الزہد و قصر الامل،۲۹۸/۷،حدیث:۱۰۳۷٤۔

खुदावन्दी की कुव्वत व इस्तिता़अ़त हो, इस त़रह़ कि इस्ति'माल के वक्त दिल में येह बात लाए कि अगर मेरा मक्सूद खुदा तआ़ला की इ़बादत न होता तो मैं इस को इस्ति'माल न करता, येह इस के इस्ति'माल की दूसरी वजह है तो जिस मुबाह़ के इस्ति'माल में येह दोनों अम्र पाए जाएंगे ऐसा इस्ति'माल मुस्तह़ब, नेकी और ख़ैर शुमार होगा और अगर किसी मक़ाम पर ह़ालते उ़ज़्र तो हो मगर मुन्दरिजए बाला क़स्द व इरादा न हो, या क़स्द व इरादा तो हो मगर ह़ालते उ़ज़्र न हो तो वहां मुबाह़ का इस्ति'माल नेकी या मुस्तह़ब में शुमार नहीं होगा।

फिर इस नेकी व दरजए इस्तिह़बाब पर इस्तिक़ामत के लिये बसीरत और नेक इरादे की ज़रूरत है या'नी जब भी ह़लाल या मुबाह़ शै को इस्ति'माल में लाने लगे तो येह क़स्द कर ले कि मैं इ़बादत की कुव्वत की ग़रज़ से इस को इस्ति'माल करने लगा हूं, अगर कहीं खुदा न ख़्वास्ता इस क़स्द से **सह़्व**[1] हो जाए तो याद आने पर कर ले। हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि यहां तीन उमूर हो गए जिन का ए'तिबार करना ज़रूरी है, दो तो इस इस्ति'माल को नेकी में दाख़िल करने के लिये या'नी इरादा और ह़ालते उ़ज़्र और तीसरा हमेशा इस क़स्द व इरादे को इस्तिक़ामत के लिये मल्ह़ूज़ रखना। इस को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न में बिठा लो।

सुवाल : ह़लाल का वोह इस्ति'माल जो शोहरत की ग़रज़ से हो क्या मा'सियत और बाइ़से अ़ज़ाब है या नहीं? और क्या ह़ालते उ़ज़्र में मुबाह़ शै का इस्ति'माल फ़र्ज़ व ज़रूरी है या नहीं?

जवाब : ह़ालते उ़ज़्र में अम्रे मुबाह़ का इस्ति'माल अफ़्ज़ल, ख़ैर और मुस्तह़ब है, फ़र्ज़ और वाजिब नहीं और मह़ज़ नफ़्सानी ख़्वाहिश की ग़रज़ से जो इस्ति'माल हो वोह बुरा और ना पसन्दीदा

1 .....भूल।

है और इस से मुमानअ़त **ज़ज्र**[1] व **इस्तिह़बाब**[2] के त़ौर पर है, येह मा'सियत या अ़ज़ाब का बाइ़स नहीं, हां रोज़े क़ियामत इस के ह़िसाब के लिये बन्दे को रोका जाएगा और उसे मलामत की जाएगी और शर्म दिलाई जाएगी।

सुवाल : येह ह़ब्स व ह़िसाब क्या चीज़ें हैं जिन का बन्दे को सामना करना पड़ेगा ?

जवाब : ह़िसाब येह है कि क़ियामत के दिन तुम से पूछा जाएगा कि तुम ने येह शै किस त़रह़ ह़ासिल की और इसे कहा ख़र्च किया और किस निय्यत से ख़र्च किया ? और **ह़ब्स** येह है कि ह़िसाब लेने के लिये जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया जाएगा और येह ह़ब्स मैदाने मह़शर में होगा जब तमाम मख़्लूक़ पर दहशत छाई होगी और लोग तंगी और प्यास की ह़ालत में खड़े होंगे और येह बहुत बड़ी आज़माइश का वक़्त होगा।

सुवाल : जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल के इस्ति'माल की हमें इजाज़त दी है तो येह मलामत और शर्म दिलाना क्यूं होगा ?

जवाब : येह मलामत और आ़र दिलाना तर्के अदब की वजह से होगा, जैसे वोह शख़्स जो बादशाह के दस्तरख़्वान पर बैठे और अदब को मल्ह़ूज़ न रखे तो उसे मलामत की जाती है और शर्म दिलाई जाती है, अगर्चे वोह त़आ़म उस के लिये मुबाह़ और जाइज़ होता है। मुख़्तसर येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दे को इ़बादत और बन्दगी के लिये पैदा फ़रमाया है इस लिये बन्दे पर लाज़िम है कि हर ए'तिबार से उस का बन्दा और **ख़ादिम**[3] रहे और हर फ़े'ल को ख़ुदा की मरज़ी के मुत़ाबिक़ करे, अगर वोह इ़बादत या उस की रिज़ा का ख़याल न रखे बल्कि अपनी शहवत की पैरवी करे और अपने रब की इ़बादत व बन्दगी से **रूगर्दान**[4] हो जाए ह़ालांकि

1.....तम्बीह। 2.....बेहतर होने। 3.....इत़ाअ़त करने वाला। 4.....मुंह फेरने वाला।

इस में रब की बन्दगी व इबादत की ताक़त भी मौजूद हो, कोई उ़ज्र मानेअ़ न हो, और येह दुन्या है भी इबादत और **ख़िदमत**(1) की जगह तो जो शख़्स इन तमाम चीज़ों के होते हुवे शहवत की पैरवी करे वोह ज़रूर अपने मालिको मौला की त़रफ़ से मलामत व आ़र का सज़ा वार होता है। وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

येही था वोह मज़्मून जो हम ने इस किताब में इस्लाहे़ नफ़्स के मुतअ़ल्लिक़ बयान करना था इस लिये इस मज़्मून को अपने ज़ेह्नों में मह़फ़ूज़ करो और इस पर अ़मल करो اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی दोनों जहान में ख़ैरे कसीर के मालिक बन जाओगे। فَاللّٰهُ وَلِيُّ الْعِصْمَةِ وَ التَّوْفِيْقِ بِفَضْلِه

फ़स्ल

तो ऐ अ़ज़ीज़ ! तुझ पर लाज़िम है कि इस त़वील और सख़्त घाटी को उ़बूर करने में पूरी कोशिश सर्फ़ करे क्यूंकि इसे उ़बूर करना ज़ियादा मुश्किल और मेह़नत त़लब है, और येह घाटी फ़ितनों से लबरैज़ है क्यूंकि जो भी राहे ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ हो कर हलाक व तबाह हुवा है वोह दुन्या या मख़्लूक़ से मैल जोल या नफ़्स या शैत़ान की वजह से ही हुवा है और हम ने अपनी कुतुब "**इह़याउल उ़लूम**", "**किताबुल असरार**" और "**अलकुर्बतु इलल्लाह**" वग़ैरा में इस क़िस्म के वाक़िआ़त व मसाइल तह़रीर किये हैं जो इस घाटी को उ़बूर करने में काफ़ी मदद देते हैं।

और इस किताब में मेरा मक़्सूद येह था कि अल्लाह तआ़ला मुझे **मुआ़लजए नफ़्स**(2) के राज़ और मेरी इस्लाह़ और मेरे ज़रीए़ इस्लाह़ के त़रीक़ों से आगाह कर दे इस लिये मैं ने इस किताब में मुख़्तसर मगर तमाम मआ़नी के जामेअ़ नुक्तों पर ही इक्तिफ़ा किया है, जो शख़्स भी इन में ग़ौर करेगा वोह इन्हें काफ़ी पाएगा और येह नफ़ीस नुक्ते اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی ज़रूर उसे राहे ह़क़ की त़रफ़ रहनुमाई करेंगे।

---

1 .....इत़ाअ़त। 2 .....नफ़्स के इलाज।

और येह फ़स्ल दुन्या, मख़्लूक़, नफ़्स और शैत़ान से ख़लासी देने वाले नुक्तों के साथ मख़्सूस है, तो ऐ अ़ज़ीज़ ! **अ़लाइक़े दुन्या**[1] से **हिज्र करना**[2] और ज़ोहद इख़्तियार करना तुझ पर लाज़िम और ज़रूरी है क्यूंकि तू तीन ह़ाल से ख़ाली नहीं :

﴾1﴿ या तो तू साह़िबे बसीरत और साह़िबे अ़क़्ल है तो तेरे लिये येही काफ़ी है कि दुन्या **अल्लाह** तआ़ला की दुश्मन है और **अल्लाह** तेरा दोस्त और ह़बीब है और येह कि दुन्या तेरी अ़क़्ल को मुन्तशिर करने वाली है ह़ालांकि अ़क़्ल ही इन्सान का अस्ल **जौहर**[3] है।

﴾2﴿ और या तो साह़िबे हिम्मत और इ़बादत में कोशिश करने वाले लोगों में से है तो तेरे लिये येही काफ़ी है कि दुन्या अपनी नहूसत में इस ह़द तक पहुंच चुकी है कि वोह इ़बादत के इरादे से बाज़ रखती है और इस की फ़िक्र तुझे बन्दगी व आ'माले ख़ैर से रोकती है, जब दुन्या की फ़िक्र बाइ़से रुकावट है तो ख़ुद दुन्या किस क़दर रुकावट का बाइ़स होगी।

﴾3﴿ और या तू अहले ग़फ़्लत में से है या'नी तुझ में ह़क़ाइक़ को देखने की बसीरत नहीं और न तुझ में आ'माले ख़ैर बजा लाने की हिम्मत है, इस सूरत में तेरे लिये येही काफ़ी है कि तुझे एक दिन इस दुन्या से जुदा होना पड़ेगा, या येह दुन्या तुझ से अचानक जुदा हो जाएगी, जैसा कि ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है :

اِنْ بَقِيَتْ لَكَ الدُّنْيَا لَمْ تَبْقَ لَهَا فَاَيُّ فَائِدَةٍ اِذَا لَكَ فِیْ طَلَبِهَا وَ اِنْفَاقِ الْعُمُرِ الْعَزِيْزِ عَلَيْهَا

अगर दुन्या तेरे लिये बाक़ी रहेगी, तू उस के लिये बाक़ी नहीं रहेगा, इस लिये त़लबे दुन्या में क्या फ़ाइदा या अपनी उ़म्रे अ़ज़ीज़ इस की त़लब में ज़ाएअ़ करने से क्या ह़ासिल ?

1.....दुन्या से तअ़ल्लुक़ रखने वाली चीज़ों। 2.....बचना। 3.....ख़ूबी।

एक अ़रबी शाइ़र ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

(١) هَبِ الدُّنْيَا تُسَاقُ اِلَيْكَ عَفْوًا ۔ اَلَيْسَ مَصِيْرُ ذَاكَ اِلٰى زَوَالٍ
(٢) فَمَا تَرْجُوْا بِعَيْشٍ لَيْسَ يَبْقٰى ۔ وَ شِيْكًا قَدْ تُغَيِّرُهُ اللَّيَالِىْ
(٣) وَ مَا دُنْيَاكَ اِلَّا مِثْلَ ظِلٍّ ۔ اَظَلَّكَ ثُمَّ اٰذَنَ بِارْتِحَالِ

(1) मान लिया कि दुन्या **वाफ़िर**[1] मिक़्दार में तेरी त़रफ़ खींची चली आ रही है लेकिन क्या येह एक दिन फ़ना नहीं होगी ?
(2) तुझे उस ऐ़श से ह़क़ीक़ी ख़ुशी की उम्मीद क्या हो सकती है, जो चन्द दिन के बा'द फ़ना हो जाएगी और जिस का आराम अ़न क़रीब तक्लीफ़ और रंज में तब्दील हो जाएगा।
(3) इस दुन्या की मिसाल बिल्कुल साए जैसी है जिस में तू ज़रा आराम करता है और फिर वोह साया वहां से ज़ाइल हो जाता है।

तो अ़क़्ल मन्द को हरगिज़ मुनासिब नहीं कि इस दुन्या के धोके में आए, एक अ़रबी शाइ़र ने बिल्कुल दुरुस्त कहा है :

اَضْغَاثُ نَوْمٍ اَوْ كَظِلٍّ زَائِلٍ ۔ اِنَّ اللَّبِيْبَ بِمِثْلِهَا لَا يُخْدَعُ

तर्जमा : दुन्या ख़्वाब की त़रह़ है, या ज़ाइल और फ़ना हो जाने वाले साए की त़रह़ और बेशक अ़क़्ल मन्द ऐसी नापाईदार और फ़ानी शै से धोका नहीं खाता।

इब्लीस के शर से बचना ज़रूरी है

बाक़ी रहा शैत़ान, तो उस के शर से अपने आप को मह़फ़ूज़ रखने के लिये सिर्फ़ येही दलील काफ़ी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया :

1 .....बहुत ज़ियादा।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۹۷﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿۹۸﴾ (1)

(ऐ मेरे नबी ! दुआ़ के त़ौर पर) यूं कह : ऐ मेरे रब ! मैं शयात़ीन के वसाविस से तेरे पास ही पनाह लेता हूं और ऐ मेरे रब ! मैं इस बात से भी तेरे पास ही पनाह लेता हूं कि शयात़ीन मेरे पास आएं ।

तो हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जो सब से बेहतर, सब से ज़ियादा आ़लिम, सब से ज़ियादा अ़क्ल मन्द और **अल्लाह** तआ़ला के हां सब से ज़ियादा बुलन्द रुत्बा वाले हैं और इस चीज़ के मोह़ताज हैं कि शैत़ान से पनाह मांगें । तो तू जो जहालत, उ़यूब और ग़फ़्लत का मजमूआ़ है शैत़ान से पनाह मांगने का मोह़ताज नहीं ? ज़रूर मोह़ताज है और सख़्त मोह़ताज है ।

लोगों से मेल जोल की मज़म्मत

लेकिन लोगों से मेल जोल का मुआ़मला, तो इस की **क़बाह़त**(2) के सुबूत को सिर्फ़ येही काफ़ी है कि अगर तू उन से मेल जोल करेगा और उन की ख़्वाहिशात की पैरवी करेगा तो गुनाहगार हो जाएगा और अपनी आख़िरत के मुआ़मले को ख़राब कर देगा और अगर उन की ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करेगा तो इन की अज़िय्यतों और ज़ियादतियों से रन्जीदा होगा, और तेरी दुन्या की ज़िन्दगी **मुकद्दर**(3) हो जाएगी फिर उन से येह भी बई़द नहीं कि

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयात़ीन के वस्वसों से और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वोह मेरे पास आएं । (پ۱۸،المؤمنون:۹۷۔۹۸)

2.....ख़राबी । 3....ख़राब ।

वोह तेरे जानी दुश्मन बन जाएं और इस त़रह़ तू उन के फ़ितने में मुब्तला हो जाए और अगर तू उन से मेल जोल अच्छा रखेगा तो वोह तेरी मदह़ और ता'ज़ीम करेंगे और कोई बई़द नहीं कि इस त़रह़ तू **उ़जब**[1] और **ख़ुद सिताई**[2] के फ़ितने में मुब्तला हो जाए और अगर वोह तेरी मज़म्मत और बुराई करेंगे और तुझे ह़क़ीर व ज़लील ख़याल करेंगे तो इस सूरत में तू कभी ग़मनाक होगा और कभी नाजाइज़ ग़ुस्सा करेगा और येह **मदह़**[3] या मज़म्मत दोनों हलाक करने वाली आफ़तें हैं।

फिर तू ज़रा येह तो याद कर कि जब तुझे क़ब्र में दफ़्न हुवे सिर्फ़ तीन यौम होंगे तो तुझे बिल्कुल भुला देंगे वहां सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला की ज़ात ही मौजूद होगी तो क्या येह वाज़ेह़ नुक़्सान नहीं कि तू ऐसे लोगों के साथ बैठ कर अपने अ़ज़ीज़ वक़्त को ज़ाएअ़ कर दे जिन से न तुझे वफ़ा की उम्मीद है और जिन के साथ न ज़ियादा देर तूने रहना है और अपने प्यारे रब की **ख़िदमत**[4] व त़ाअ़त को तर्क कर दे जिस की त़रफ़ आख़िर तू ने रुजूअ़ करना है मरने के बा'द सिर्फ़ वोही हमेशा के लिये तेरा साथ देगा और ह़क़ीक़त में सब का वोही ह़ाजत रवा है और हर बात में सिर्फ़ उसी पर भरोसा होना चाहिये और हर ह़ाल में हर शिद्दत व मुश्किल के वक़्त उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना चाहिये वोह अकेला है कोई उस का शरीक नहीं।

ऐ आ़जिज़ इन्सान ! मेरी इन बातों और नसीह़तों को ग़ौर से सुन, शायद तुझे अल्लाह तआ़ला अपनी मेहरबानी से राहे हिदायत दिखा दे और अल्लाह तआ़ला ही हिदायत का मालिक है।

1....ख़ुद पसन्दी। 2....अपनी ता'रीफ़ ख़ुद करने। 3....ता'रीफ़ 4....इ़बादत।

मज़म्मते नफ़्स का बयान

नफ़्स के बुरा होने का येही सुबूत काफ़ी है कि जो तू शबो रोज़ इस के ह़ालात इस के बुरे इरादे और इस के ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर के इर्तिकाब का मुशाहदा कर रहा है, येह नफ़्स शहवत के वक़्त हैवान जैसे अफ़आ़ल करता है, ग़ुस्से के वक़्त दरिन्दा बन जाता है और मुसीबत व तक्लीफ़ के वक़्त छोटे बच्चे की त़रह़ आहोज़ारी करता है और आराम व आसाइश के वक़्त फ़िरऔ़न बन जाता है, जब भूका होता है तो पागल हो जाता है और जब सैर होता है तो सरकश बन जाता है, अगर तू इसे सैर करे तो सरकशी करता है और अगर भूका रखे तो चीख़ता है और बे सब्री का मुज़ाहरा करता है येह बिऐ़निही इसी त़रह़ है जैसा कि एक शाइ़र ने कहा है :

كَحِمَارِ السُّوْءِ اِنْ اَشْبَعْتَهٗ　رَمَحَ النَّاسَ وَ اِنْ جَاعَ نَهَقْ

(येह नफ़्स मन्ह़ूस गधे की मानिन्द है जो सैरी की ह़ालत में ख़रमस्ती में आ कर लोगों को पामाल करता है और जब भूका होता है तो हांकता है।)

बा'ज़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ने बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया है कि

"اِنَّ مِنْ رَدَاءَةِ هٰذِهِ النَّفْسِ وَ جَهْلِهَا بِحَيْثُ اِذَا هَمَّتْ بِمَعْصِيَةٍ اَوِ انْبَعَثَتْ لِشَهْوَةٍ فَنَهِيْتَهَا اَوْ تَشَفَّعْتَ اِلَيْهَا بِاللّٰهِ سُبْحَانَهٗ ثُمَّ بِرَسُوْلِهٖ عَلَيْهِ السَّلَامِ وَ بِجَمِيْعِ اَنْبِيَائِهٖ وَ بِكِتَابِهٖ وَ بِجَمِيْعِ السَّلَفِ الصَّالِحِ مِنْ عِبَادِهٖ وَ تَعْرِضُ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ الْقَبْرَ وَ الْقِيَامَةَ وَ الْجَنَّةَ وَ النَّارَ لَا تُعْطِى الْاِنْقِيَادَ وَ لَا تَتْرُكُ الشَّهْوَةَ ثُمَّ اِنِ اسْتَقْبَلْتَهَا بِمَنْعِ رَغِيْفٍ تَسْكُنُ وَ تَتْرُكُ شَهْوَتَهَا لَتَعْلَمُ خِسَّتَهَا وَ جَهْلَهَا"

इस नफ़्से ख़बीस की **ख़िस्सत**[1] और जहालत का येह आ़लम है कि जब किसी गुनाह का क़स्द करे या शहवत पर उठ खड़ा हो तो तू इसे रोकने की कोशिश करे या ख़ुदा, रसूल, तमाम अम्बिया (عَلَیْهِمُ السَّلَام), कलामे मजीद या तमाम सलफ़े सालिह़ीन का वासित़ा पेश करे या इस के सामने मौत, क़ब्र, क़ियामत, जन्नत और दोज़ख़ तक पेश करे तब भी गुनाह से बाज़ नहीं आएगा और अपनी शहवत को तर्क नहीं करेगा फिर अगर एक रोटी खा कर दूसरी से उसे रोके ताकि येह ठहरे और त़आ़म की ह़िर्स को छोड़ दे तो तुझे इस की कमीनगी और जहालत का अन्दाज़ा हो जाएगा।

इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! इस से ग़फ़्लत न करना क्यूंकि इस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है जो इस की ह़क़ीक़त सब से बेहतर जानता है :

اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ (2) *बेशक नफ़्स हमेशा बुराई का हुक्म देता है।*

ह़ज़रते अह़मद बिन अरक़म बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि एक दफ़्आ़ मेरे नफ़्स ने जिहाद में शरीक होने पर मुझे मजबूर किया। मैं ने दिल में कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه क़ुरआन में तो आया है कि नफ़्स बुराई की तरग़ीब देता है और मेरा नफ़्स मुझे नेक काम की तरग़ीब दे ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता बल्कि इस का अस्ल मक़्सद येह है कि लोगों से मेल जोल कर के तन्हाई और गोशा नशीनी की वह़शत को दूर करे और लोगों से ख़ल्त़ मल्त़ हो कर राह़त ह़ासिल करे और इन के सामने अपनी गोशा नशीनी और बुज़ुर्गी का चर्चा कर के अपनी ता'ज़ीम और अपना एह़तिराम व इकराम कराए चुनान्चे, मैं ने नफ़्स को जवाब दिया कि मैं हरगिज़ तुझे आबादी में

1 .....कमीनगी। 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है। (پ۱۳، یوسف:۵۳)

नहीं ले जाऊंगा और किसी जान पहचान की जगह तुझे नहीं ले जाऊंगा तो वोह इस जवाब पर राज़ी हो गया लेकिन मुझे फिर **ज़न**[(1)] हुवा कि येह अपने ख़िलाफ़ बात पर कैसे रिज़ामन्द हो सकता है और मैं ने अपने दिल में कहा कि ख़ुदा का कलाम सच्चा है (कि नफ़्स बुराई की त़रफ़ ही जाता है) तो मैं ने उसे कहा : "मैं दुश्मन से जिहाद व क़िताल करने को तय्यार हूं लेकिन मेरा अव्वलीन दुश्मन तू है इस लिये पहले मुक़ाबला और **मुक़ातला**[(2)] तुझ से होगा मेरे इस जवाब पर भी नफ़्स ने बुरा न मनाया, मैं ने चन्द अश्या और शुमार कीं जो उस के ख़िलाफ़ थी लेकिन वोह इस पर भी **बर अफ़रुख़्ता**[(3)] न हुवा, मैं दिल में हैरान हुवा और **दरबारे ईज़दी**[(4)] में **मुल्तजी**[(5)] हुवा कि ऐ बारी तआ़ला ! मैं नफ़्स को बहर ह़ाल झूटा समझता हूं और तुझे सच्चा, मुझे इस की अस्ल ह़क़ीक़त बता, तो **मुकाशफ़ा**[(6)] में मैं ने सुना कि नफ़्स कह रहा था :

"**ऐ अह़मद** ! तू मुझे हर रोज़ शहवतों से रोक कर क़त्ल करता है और हर बात में मेरी मुख़ालफ़त कर के तू मुझे तंग और परेशान करता है और मेरे इस क़त्ल और तक्लीफ़ का किसी को पता नहीं होता, अगर तू जिहाद में शिर्कत करेगा तो सिर्फ़ एक बार ही मुझे क़त्ल करेगा बा'द में मुझे तुझ से हमेशा के लिये नजात मिल जाएगी और मैं लोगों में इस बात का चर्चा करूंगा कि अह़मद ने शहादत का दरजा पाया इस त़रह़ मेरा चर्चा होगा और मुझे ही शरफ़ ह़ासिल होगा।"

इमाम अह़मद बिन अरक़म (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) फ़रमाते हैं कि उस के इस जवाब से मैं ने **तहिय्या**[(7)] कर लिया कि हरगिज़ जिहाद में शिर्कत नहीं करूंगा चुनान्चे, मैं ने उस साल जिहाद में शिर्कत न की।

1.....गुमान। 2.....लड़ना। 3.....गुस्सा। 4.....ख़ुदा की बारगाह। 5.....दुआ़ गो। 6.....ह़ालते कश्फ़। 7.....पुख़्ता इरादा।

ऐ अ़ज़ीज़ ! ज़रा ग़ौर कर कि नफ़्स कितना धोके बाज़ और मक्कार है कि **बा'दल मौत**[1] भी तेरे आ'माले ह़सना को रिया के ज़रीए़ ज़ाएअ़ करता है, एक अ़रबी शाइ़र ने बहुत ही अच्छा कहा है :

تَـوَقَّ نَفْسَكَ لَا تَـأْمَـنْ غَـوَائِلَهَـا فَـالنَّـفْـسُ اَخْبَـثُ مِنْ سَبْعِيْنَ شَيْطَانَا

तर्जमा : अपने नफ़्स की अ़य्यारियों से बच और इस की धोके बाज़ियों से बे ख़ौफ़ न हो क्यूंकि नफ़्स की ख़बासत सत्तर शैत़ानों की ख़बासत से भी ज़ियादा है।

इस लिये इस धोके बाज़, गुनाहों में मुब्तला करने वाले नफ़्से ख़बीस से चोकन्ना रह और हर वक़्त और हर ह़ाल में अपने दिल को इस की मुख़ालफ़त पर मज़बूत़ रख اِنْ شَآءَ اللّٰه تعَالٰی ऐसा करने से तू इस की आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहेगा और तुझे **राहे सवाब**[2] नसीब होगा। फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! तुझ पर लाज़िम है कि इसे शहवात व गुनाहों से बाज़ रखने के लिये तक़्वा की लगाम दे इस लगाम के सिवा इस का कोई इ़लाज नहीं।

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान कि मैं नफ़्स को गुनाहों से बाज़ रखने का एक नफ़ीस क़ाइदा बयान करता हूं वोह येह है कि

इ़बादत दो क़िस्म है : एक मामूरात (या'नी जिन के करने का हुक्म है), दूसरे मन्हिय्यात (या'नी वोह चीज़ें जिन से बचना ज़रूरी है) और मामूरात के बजा लाने और मन्हिय्यात से इजतिनाब के मजमूए़ का नाम तक़्वा है।

लेकिन मन्हिय्यात से बचना हर ह़ाल में बन्दे के लिये अफ़्ज़ल, ज़ियादा बाइ़से ह़िफ़ाज़त, ज़ियादा बेहतर और आ'ला है,

1.....मौत के बाद। 2.....दुरुस्त रास्ता।

मामूरात के मुक़ाबले में इस पहलू की अहम्मिय्यत ज़ियादा है इसी लिये मुजाहदा व रियाज़त के मुब्तदी शुरूअ़ शुरूअ़ में मामूरात पर ज़ियादा ज़ोर देते हैं वोह दिन को रोज़े से होते हैं और रात को नवाफ़िल में खड़े रहते हैं। وَغَيْرُ ذٰلِكَ[1]

और **मुन्तही**[2] व अहले बसीरत ह़ज़रात मन्हिय्यात से इजतिनाब की ज़ियादा पाबन्दी करते हैं चुनान्चे, वोह अपने दिलों को ग़ैरुल्लाह के ख़याल से मह़फ़ूज़ रखने की कोशिश करते हैं, अपने शिकमों को ज़रूरत से ज़ाइद ख़ूराक से मह़फ़ूज़ रखते हैं, अपनी ज़बानों को लग़्वियात और बेहूदा गुफ़्तगू से बचाते हैं और अपनी नज़रों को लाया'नी चीज़ों से बचाते हैं इसी लिये आ़बिद सानी ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) यूनुस आ़बिद (عَلَيْهِ السَّلَام) को कहा (और इन आ़बिदों की कुल ता'दाद सात थी) कि

"ऐ यूनुस (عَلَيْهِ السَّلَام) बा'ज़ लोग वोह हैं जिन को सब से ज़ियादा प्यार नमाज़ों से है, चुनान्चे, वोह नमाज़ पर किसी और अ़मल को तरजीह़ नहीं देते, वोह इबादत के सुतून हैं, वोह पूरी त़रह़ सिद्क़ व तवक्कुल पर क़ाइम रहते हैं और हर वक़्त दरबारे ख़ुदावन्दी में **तज़र्रुअ़**[3] व दुआ़ में मश्ग़ूल रहते हैं और बा'ज़ वोह हैं जिन्हें सब से ज़ियादा रोज़े से मह़ब्बत है चुनान्चे, वोह रोज़े पर किसी और अ़मल को तरजीह़ नहीं देते और बा'ज़ वोह हैं जो सदक़ा को सब से ज़ियादा अ़ज़ीज़ ख़याल करते हैं, ऐ यूनुस ! मैं तुझे इन तीनों : नमाज़, रोज़ा और सदक़ा की तफ़्सीर बताता हूं कि इन से मुराद क्या है ?

1.....और इस के इलावा। 2.....कामिल। 3.....गिर्या व ज़ारी।

तो नमाज़ से मुराद येह है कि तू हमेशा तकालीफ़ व मसाइब पेश आने पर सब्र की नमाज़ अदा करता रहे और हमेशा अह़कामे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी में क़ाइम रहे।

रोज़े से मुराद येह है कि तू हर बुराई से अपने आप को रोके रखे और सदक़े से मुराद येह है कि तेरी त़रफ़ से किसी को अज़िय्यत और तक्लीफ़ न पहुंचे क्यूंकि तू इस से आ'ला शै का सदक़ा नहीं कर सकता, किसी को अज़िय्यत न देना ही बहुत बड़ा सदक़ा है और सब से ज़ियादा पाकीज़ा फ़े'ल है।

मुन्दरिजए बाला बयान से जब तुझ पर रोशन हो गया कि **मन्हिय्यात**[1] से बचना ज़ियादा अहम और इस की रिआयत और कोशिश ज़ियादा औला व मुनासिब है तो अगर तुझे दोनों क़िस्म की इबादत (**अवामीर**[2] की बजा आवरी और मन्हिय्यात से इजतिनाब) ह़ासिल हो जाए और तू दोनों का पाबन्द हो जाए तो तू इबादत के मुआमले में कमाल तक पहुंच गया और तेरी मुराद ह़ासिल हो गई और आफ़ात से मह़फ़ूज़ हो गया और अस्ल ग़नीमत तेरे हाथ आ गई।

और अगर दोनों क़िस्म की इबादत तुझे ह़ासिल न हो सके तो चाहिये कि तू **जानिबे इज्तिनाब**[3] को इख़्तियार करे येह जानिब इख़्तियार करने से तू मआसी और गुनाह से तो सालिम और मह़फ़ूज़ रहेगा और अगर तू येह जानिब इख़्तियार न करे और गुनाहों व बुराइयों से न बचे तो सारी रात नवाफ़िल अदा करने दिन को रोज़ा रखने और दीगर मुस्तह़ब उमूर में मश्ग़ूल होने से तुझ को कोई फ़ाइदा नहीं पहुंचेगा, तेरी येह शब बेदारी की मशक़्क़तें बे सूद होंगी क्यूंकि गुनाहों और बुराइयों से इजतिनाब न करने की वजह

1 .....जिन उमूर से मन्अ़ किया गया है। 2 .....जिन उमूर को करने का कहा गया है। 3 .....गुनाहों से बचने की जानिब।

से तेरी नेकियां साथ साथ बरबाद और ज़ाएअ़ होती जाएंगी और दिन को रोज़ा रख कर जब तू ग़ीबत, **किज़्ब**[1] और दूसरी बेहूदा गुफ़्त्गू से परहेज़ न करेगा तो तेरे इस रोज़े का क्या फ़ाइदा पहुंचेगा।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से किसी ने पूछा कि इन दो आदमियों में अफ़्ज़ल कौन है एक वोह जो नेकियां भी ज़ियादा करे और गुनाह भी ज़ियादा करे, दूसरा वोह जो नेकियां भी कम करे और गुनाह भी कम करे ? आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने जवाब दिया कि दोनों बराबर हैं।

हम ने येह जो कहा है कि ज़ियादा नेकियां करने के बजाए गुनाहों से बचना ज़ियादा ज़रूरी और अहम है तो इस की मिसाल मरीज़ की सी है कि इस के इलाज के दो पहलू हैं : एक पहलू मरीज़ को दवा देना, दूसरा पहलू मरीज़ का मुज़िर चीज़ों से परहेज़ करना, तो अगर दोनों चीज़े मरीज़ के लिये ह़ासिल हो जाएं तो बीमार जल्द सिह़्ह़त मन्द और तन्दुरुस्त हो जाएगा और अगर दोनों पहलू मौजूद न हों तो जानिबे परहेज़ औला व अफ़्ज़ल है और ऐसी दवा क़त़्अ़न कोई फ़ाइदा नहीं देती जिस के साथ बद परहेज़ी को भी रवा रखा जाए लेकिन दवा न हो मगर परहेज़ हो तो येह ज़रूर मुफ़ीद है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "اَصْلُ کُلِّ دَاءٍ اَلْحِمْیَۃُ"[2] हर बीमारी के इलाज की अस्ल परहेज़ है।

हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इरशाद का मत़लब येह है कि परहेज़ बजाए ख़ुद एक बेहतरीन इलाज है इस के होते हुवे किसी और इलाज की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, इसी लिये सुना गया है कि हिन्दुस्तान के लोगों के नज़्दीक बीमार का सब से बड़ा और आ'ला इलाज बीमार को खाने पीने और काम काज से परहेज़ कराना है,

1 .....झूट।

2 .....المدخل، طب الابدان والرقی الوارة، ٢/٣٢٤

इन के हां सिर्फ़ परहेज़ से ही उ़मूमन मरीज़ तन्दुरुस्त और सिह़्ह़त याब हो जाता है ।

हमारे इस मुन्दरिजए बाला बयान से तुझ पर रोशन और वाज़ेह़ हो गया कि तक़्वा ही अस्ल जोहर और नजाते आख़िरत का ज़रीआ़ है, इन्सानों में मुत्तक़ी लोगों का दरजा ही सब से ऊंचा और बुलन्द है, इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! तुझ पर लाज़िम है कि अपने अन्दर तक़्वा पैदा करने के लिये पूरी कोशिश और मुकम्मल जिद्दो जहद करे । وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَلِیُّ التَّوْفِيْقِ بِرَحْمَةٍ

गैहूं का दाना तोड़ने का उख़रवी नुक़्सान

मन्क़ूल है कि एक शख़्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : ما فعل اللّٰہ بک؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया लेकिन ह़िसाबो किताब हुवा यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछ गछ हुई जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़्तार का वक़्त हुवा तो मैं ने गैहूं की एक बोरी में से गैहूं का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एह़सास हुवा कि येह दाना मेरा नहीं चुनान्चे मैं ने उसे जहां से उठाया था फ़ौरन उसी जगह डाल दिया और उस का भी ह़िसाब लिया गया यहां तक कि उस पराए गैहूं के तोड़े जाने के नुक़्सान के बक़दर मेरी नेकियां मुझ से ली गईं । (ग़ीबत की तबाह कारियां, स.124 ब ह़वाला مرقاۃ المفاتیح، کتاب الادب، باب الرفق والحیاء...الخ، ۸/۸۱۱، تحت الحدیث:۵۰۸۳)

फ़स्ल

फिर तुझ पर चार आ'ज़ा की निगहदाश्त भी लाज़िम और ज़रूरी है क्यूंकि जिस्म में येही चार उ़ज़्व बड़े और अस्ल हैं :

आंख की हि़फ़ाज़त

अव्वल आंख, इस की निगहदाश्त इस लिये ज़रूरी और लाज़िमी है कि दीनो दुन्या के कामों का दारो मदार दिल पर है और दिल की ख़राबी और इस में वस्वसे वग़ैरा अकसरो बेशतर आंख की वजह ही से पैदा होते हैं इसी लिये ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया है कि :

जो शख़्स अपनी आंख की हि़फ़ाज़त नहीं करता उस का दिल बे क़ीमत होता है या'नी उस में कोई कमाल या नूर वग़ैरा नहीं आ सकता।

ज़बान की हि़फ़ाज़त

दूसरा उ़ज़्व ज़बान, इस की हि़फ़ाज़त और निगहदाश्त इस लिये ज़रूरी और अहम है कि तुम्हारी इ़बादत व त़ाअ़त का नफ़्अ़, फल और सिला इसी की निगहदाश्त से वाबस्ता है और इ़बादत में वस्वसे इ़बादत का ज़ाएअ़ और ख़राब होना भी अकसर इसी ज़बान के बाइ़स होता है क्यूंकि बनावट और सजा कर गुफ़्तगू और ग़ीबत वग़ैरा अगर्चे एक लफ़्ज़ ही हो तेरी साल की बल्कि पन्दरह साल की इ़बादत व रियाज़त को तबाह और बरबाद कर देती है, इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गों (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है कि

مَا شَیْءٌ اَحَقَّ بِطُوْلِ السِّجْنِ مِنَ اللِّسَان (1) सब से ज़ियादा जिस चीज़ को क़ैदो बन्द में रखना ज़रूरी है वोह ज़बान है।

1 ......شعب الايمان، الباب الرابع و الثلاثون فی حفظ اللسان، ٤/٢٥٩، رقم: ٥٠٠٣۔

मरवी है कि सात आ़बिदों में से एक आ़बिद ने कहा : ऐ यूनुस (عَلَيْهِ السَّلَام) जो लोग पूरी मेह़नत और कोशिश से इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं उन को इ़बादत पर जो इस्तिक़ामत नसीब होती है वोह ज़बान की पूरी त़रह़ निगहदाश्त का नतीजा है । फिर उस आ़बिद ने कहा : **ह़िफ़्ज़े ज़बान**(1) से ज़ियादा पसन्दीदा तेरे नज़्दीक कोई चीज़ नहीं होनी चाहिये क्यूंकि दिल को हर क़िस्म के वस्वसों से पाक रखने का ज़रीआ़ येही है ।

फिर तू ज़रा ज़िन्दगी के वोह क़ीमती लम्ह़ात तो याद कर जो तू ने बेहूदा और लग़्व गुफ़्त्गू में ज़ाएअ़ किये हैं अगर तू उन अ़ज़ीज़ लम्ह़ात में तौबा व इस्तिग़्फ़ार करता तो शायद किसी नेक घड़ी में तेरी तौबा क़बूल हो जाती और तेरे गुनाह बख़्श दिये जाते और तुझे नफ़्अ़ होता, या उन लम्ह़ात में لَا اِلٰـــهَ اِلَّااللّٰـــهُ का विर्द करता रहता तो तुझे बे ह़िसाब अज्रो सवाब मिलता, या उन लम्ह़ात में येह दुआ़ करता : "ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से आ़फ़िय्यत और सलामती का सुवाल करता हूं ।" शायद किसी मुबारक साअ़त में येह अल्फ़ाज़ तेरे मुंह से निकलते और तेरी दुआ़ क़बूल हो जाती, इस त़रह़ तू दुन्या व आख़िरत की आफ़ात से नजात पा जाता, तो क्या लग़्व और बेहूदा कलाम में लम्ह़ाते ज़िन्दगी को ज़ाएअ़ करना वाज़ेह़ और **बय्यन**(2) ख़सारा नहीं ? इन अवक़ात में अगर ज़बान को अवरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रखता तो बड़े बड़े फ़ाइदे ह़ासिल होते और अपने नफ़्स और वक़्त को फ़ुज़ूल कामों में न लगा, ताकि रोज़े क़ियामत तुझे मलामत न हो और मैदाने मह़शर में ह़िसाब के लिये ज़ियादा देर न रुकना पड़े, इस मज़्मून को एक शाइ़र ने अच्छे पैराए में अदा किया है :

---

(1) .....ज़बान की ह़िफ़ाज़त । (2) .....ज़ाहिर ।

وَاِذَا مَا هَمَمْتَ بِالنُّطْقِ فِى الْبَاطِلِ فَاجْعَلْ مَكَانَهُ تَسْبِيْحًا

जब तू ज़बान से कोई बातिल बात कहने का क़स्द करे तो उस बातिल से ज़बान को रोक और इस की जगह ख़ुदा की तस्बीह़ कर।

पेट की हिफ़ाज़त

तीसरा उ़ज़्व जिस की हिफ़ाज़त और निगहदाश्त ज़रूरी है वोह पेट है, इस की निगहदाश्त इस वासिते ज़रूरी है कि बन्दा दुन्या में इ़बादत के लिये आया है और गिज़ा अ़मल के लिये ब मन्ज़िले बीज और पानी के है जैसा तुख़्म और जिस तनासुब से इसे पानी दिया जाएगा वैसा ही बीज उगेगा और जब तुख़्म ख़राब हो तो उस से खेती अच्छी नहीं होगी बल्कि ऐसे बीज से येह ख़त़रा है कि शायद वोह तेरी ज़मीन ही हमेशा के लिये ख़राब कर दे और आयिन्दा ज़राअ़त के क़ाबिल न रहे इसी लिये ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है :

"اِذَا صُمْتَ فَانْظُرْ عَلٰى اَيِّ شَيْءٍ تُفْطِرُ وَ عِنْدَ مَنْ تُفْطِرُ وَ طَعَامِ مَنْ تَاكُلُ فَكَمْ مَنْ يَاكُلُ اَكْلَةً فَيَنْقَلِبُ قَلْبُهُ عَمَّا كَانَ عَلَيْهِ فَلَا يَعُوْدُ اِلٰى حَالِهٖ اَبَدًا وَ كَمْ مِنْ اَكْلَةٍ حَرَمَتْ قِيَامَ لَيْلَةٍ وَ كَمْ مِنْ نَظْرَةٍ مَنَعَتْ قِرَاءَةَ سُوْرَةٍ وَ اِنَّ الْعَبْدَ لَيَاكُلُ اَكْلَةً فَيُحْرَمُ بِهَا قِيَامَ سَنَةٍ"

जब तू रोज़े रखे तो इस बात का ख़याल रख कि किस चीज़ से उसे इफ़्त़ार करता है और किस के पास इफ़्त़ार करता है और किस के खाने से इफ़्त़ार करता है क्यूंकि बहुत दफ़्अ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मे से दिल की कैफ़िय्यत ख़राब हो जाती है और फिर सारी उ़म्र वोह अपनी अस्ली ह़ालत पर नहीं आ सकता और बहुत दफ़्अ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मा पेट में जाने से एक

साल तक नमाजे़ तहज्जुद अदा करने से इन्सान मह़रूम हो जाता है और बहुत दफ़्अ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक दफ़्अ़ा बद नज़र देखने से बन्दा एक अ़र्से तक तिलावते कु़रआने पाक से मह़रूम हो जाता है, और बन्दा कभी ऐसा लुक़्मा खा लेता है कि जिस के सबब एक साल तक इ़बादत से मह़रूम हो जाता है।

इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! अगर तू इस्लाहे़ क़ल्ब और तौफ़ीक़े इ़बादत चाहता है तो तुझ पर लाज़िम है कि अपनी गि़ज़ा के बारे में सख़्त एह़तियात़ करे, येह अस्ल गि़ज़ा के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म है फिर इस में दरजए इस्तिह़बाब पर निगाह रखना भी ज़रूरी है वरना तू गि़ज़ा उठाने वाला टट्टू बन जाएगा और **इब्नुल वक़्त**(1) हो जाएगा क्यूंकि हमें यक़ीन है बल्कि हम ने कई बार मुशाहदा किया है पेट भर कर खाने से इ़बादत क़त़्अ़न नहीं हो सकती और अगर नफ़्स को मजबूर कर के और ह़ीले बहाने से इ़बादत की त़रफ़ लगाया भी जाए तो ऐसी इ़बादत में बिल्कुल लज़्ज़त व ह़लावत नहीं होती इसी लिये बा'ज़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ने फ़रमाया है :

”لَا تَطْمَعْ فِیْ حَلَاوَۃِ الْعِبَادَۃِ مَعَ کَثْرَۃِ الْاَکْلِ وَ اَیُّ نُوْرٍ فِیْ نَفْسٍ بِلَا عِبَادَۃٍ وَ فِیْ عِبَادَۃٍ بِلَا لَذَّۃٍ وَ حَلَاوَۃٍ“

अगर तू पेट भर के खाने का आ़दी है तो ह़लावते इ़बादत की उम्मीद न रख और दिल में बिग़ैर इ़बादत नूर कैसे आ सकता है या उस इ़बादत से भी कैसे नूर आ सकता है जो बे लज़्ज़त और बे ज़ौक़ है।

इसी लिये ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है कि मैं कोहे लुब्नान में बहुत से अहलुल्लाह की सोह़बत

(1) .....ज़माने का ग़ुलाम।

में रहा हूं। उन में से हर एक मुझे येही वसिय्यत किया करता था कि ऐ इब्राहीम ! जब तू अहले दुन्या के पास जाए तो उन को इन चार बातों की नसीहत करना :

﴾1﴿ जो पेट भर कर खाएगा उसे इबादत में लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।

﴾2﴿ जो ज़ियादा सोएगा उस की उ़म्र में बरकत नहीं होगी।

﴾3﴿ जो लोगों की ख़ुशनूदी चाहे वोह **अल्लाह** की ख़ुशनूदी से ना उम्मीद हो जाए।

﴾4﴿ जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

हज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है कि तमाम नेकियां इन्ही चार बातों में बन्द हैं :

﴾1﴿ शिकम को ख़ाली रखना ﴾2﴿ ख़ामोशी ﴾3﴿ मख़्लूक़ से किनारा कशी और ﴾4﴿ शब बेदारी।

बा'ज़ सालिहीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) ने फ़रमाया है कि "اَلْجُوْعُ رَاْسُ مَالِنَا" भूक हमारा सरमाया है।

इस क़ौल के मा'ना येह हैं कि हमें जो फ़राग़त, सलामती, इबादत, ह़लावत, इ़ल्म और अ़मले नाफ़ेअ़ वग़ैरा नसीब होता है वोह सब भूक के सबब और सब्र की बरकत से होता है।

दिल की ह़िफ़ाज़त

चौथा उ़ज़्व जिस की ह़िफ़ाज़त और निगहदाश्त अज़ह़द ज़रूरी है वोह दिल है क्यूंकि येह तमाम जिस्म का अस्ल है, चुनान्चे, अगर तेरा दिल ख़राब हो तो तेरे तमाम आ'ज़ा ख़राब होंगे

और अगर तू इस की इस्लाह़ कर ले तो बाक़ी सब आ'ज़ा की इस्लाह़ हो जाएगी क्यूंकि दिल दरख़्त के तने की मानिन्द है और बाक़ी आ'ज़ा शाख़ों की त़रह़ और शाख़ों की इस्लाह़ या ख़राबी दरख़्त के तने पर मौक़ूफ़ है तो अगर तेरी आंख, ज़बान, पेट वग़ैरा दुरुस्त हों तो इस का मत़लब येह है कि तेरा दिल दुरुस्त और इस्लाह़ याफ़्ता है और अगर आंख, ज़बान, शिकम वग़ैरा गुनाहों की त़रफ़ राग़िब हों तो समझ ले कि तेरा दिल ख़राब है।

फिर तुझे यक़ीन करना चाहिये कि दिल का फ़साद ज़ियादा और संगीन है इस लिये इस्लाहे़ क़ल्ब की त़रफ़ पूरी तवज्जोह दे ताकि तमाम आ'ज़ा की इस्लाह़ हो जाए और ताकि तू रूह़ानी राह़त मह़सूस करे।

फिर क़ल्ब की इस्लाह़ निहायत मुश्किल और दुश्वार है क्यूंकि इस की ख़राबी ख़त़रात व वसाविस पर मब्नी है जिन का पैदा होना बन्दे के इख़्तियार में नहीं, इस लिये इस की इस्लाह़ में पूरी होशयारी, बेदारी और बहुत ज़ियादा जिद्दो जहद की ज़रूरत है, इन्ही वुजुहात की बिना पर अस्ह़ाबे मुजाहदा व रियाज़त इस्लाहे़ क़ल्ब को ज़ियादा दुश्वार ख़याल करते हैं और अरबाबे बसीरत इस की इस्लाह़ का ज़ियादा एहतिमाम करते हैं, चुनान्चे, ह़ज़रते बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया :

”عَالَجْتُ قَلْبِیْ عَشْرًا وَّ لِسَانِیْ عَشْرًا وَّ نَفْسِیْ عَشْرًا فَکَانَ قَلْبِیْ اَصْعَبَ الثَّلَاثَۃِ“

मैं ने अपने दिल, ज़बान और नफ़्स की इस्लाह़ पर दस दस बरस सर्फ़ किये, इन में दिल की इस्लाह़ मुझे सब से ज़ियादा दुश्वार मा'लूम हुई।

फिर इस्लाहे़ क़ल्ब के सिलसिले में चार उमूर जो हम पीछे ज़िक्र कर आए हैं या'नी लम्बी उम्मीदों, आ'माल में जल्दबाज़ी, ह़सद और तकब्बुर से बचना और **एह़तिराज़**(1) करना लाज़िम है।

इस मक़ाम पर इन चार उमूर से इज्तिनाब करने की तख़्सीस हम ने इस लिये की है कि अगर्चे आ़म लोग भी इन उमूर में मुब्तला हैं मगर इ़बादत गुज़ार लोग ख़ास त़ौर पर इन में मुब्तला हैं इस लिये येह चार उमूर ज़ियादा क़बीह़ और बुरे हैं, ऐसा आ़म होता है कि इ़बादत करने वाला किसी लम्बी उम्मीद में मुब्तला रहता है और वोह इसे एक अच्छी निय्यत ख़याल कर रहा होता है और आख़िरुल अम्र वोह इस के बाइ़स अ़मल में सुस्ती और काहिली में गिरिफ़्तार हो जाता है और कभी ऐसा होता है कि वोह बुलन्द रुत्बा ह़ासिल करने में जल्दबाज़ी से काम लेता है और जल्द ह़ासिल न होने के बाइ़स हमेशा के लिये उस का दिल सर्द पड़ जाता है और बा'ज़ दफ़्आ़ किसी बुज़ुर्ग से दुआ़ कराता है मगर जल्द क़बूल न होने के बाइ़स उस से भी **मलूल**(2) होता है या बा'ज़ दफ़्आ़ किसी के ह़क़ में बद दुआ़ करता है और बा'द में पशेमान रहता है और बा'ज़ दफ़्आ़ अपने हम उ़म्रों से माल अवलाद वग़ैरा पर ह़सद करता है और बा'ज़ अवक़ात आफ़ते ह़सद में गिरिफ़्तार हो कर ऐसे ऐसे क़बीह़ और बुरे अफ़्आ़ल कर गुज़रता है जिन के करने की एक फ़ासिक़ो फ़ाजिर आदमी को भी जुरअत नहीं होती, इसी बिना पर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है कि

(1).....किनारा कशी। (2).....ग़मगीन।

"मुझे अपनी जान के मुतअ़ल्लिक़ सब से ज़ियादा ख़त़रा उ़लमा और इ़बादत गुज़ार लोगों से है ।" लोगों ने आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) की इस बात का बुरा मनाया, तो आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने जवाब दिया : "येह बात मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं कही बल्कि येह ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है ।"(1)

और ह़ज़रते अ़त़ा (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) से मरवी है कि एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे कहा : इ़बादत गुज़ार लोगों से ख़त़रे में रहो और उन की त़रह़ मुझ से भी ख़त़रे में रहो, क्यूंकि बसा अवक़ात मैं एक अनार के मुतअ़ल्लिक़ कहूंगा येह मीठा है, दूसरा कहेगा नहीं येह **तुर्श**(2) है, इसी मा'मूली बात से हमारा तकरार बढ़ जाएगा और कोई बई़द नहीं कि एक दूसरे के क़त्ल तक नौबत पहुंच जाए ।(3)

और ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं इ़बादत गुज़ार लोगों की गवाही दूसरों के ह़क़ में तो क़बूल करने को तय्यार हूं लेकिन इन के अपने अन्दर एक दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ इन की शहादत क़बूल करने को तय्यार नहीं हूं क्यूंकि मैं ने इन्हें एक दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ ह़सद से भरा हुवा पाया है ।(4)

मज़्कूर है कि ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने लड़के को फ़रमाया कि मुझे इ़बादत गुज़ार और रस्मी सूफ़ियों से दूर कोई मकान ख़रीद दे क्यूंकि मुझे उस क़ौम में रहने से क्या फ़ाइदा जो

---

1 ......فیض القدیر للمناوی، حرف الھمزۃ،۲/۱۰۳۔

2 .....खट्टा ।

3 ......فیض القدیر للمناوی، حرف الھمزۃ،۲/۱۰۳۔

4 ......المجالسة و جواھر العلم،الجزء الحادی و العشرون،۳/۹۵،رقم:۲۹۶۸۔

मेरी लग्ज़िश देख कर उस का चर्चा करें और मुझे आराम व आसाइश में देख कर ह़सद करें।[1]

तुम ने खुद भी देखा होगा कि खुश्क आ़बिद और रस्मी सूफ़ी तकब्बुर से पेश आते हैं, दूसरों को ह़क़ीर ख़याल करते हैं, तकब्बुर की वजह से अपने रुख़्सार को टेढ़ा रखते हैं और लोगों से मुंह बेसूरे रखते हैं, गोया कि दो रक्अ़त नमाज़ ज़ियादा पढ़ कर लोगों पर एह़सान करते हैं या शायद इन्हें दोज़ख़ से नजात और जन्नत के दाख़िले का सर्टीफ़िकेट मिल चुका है, या इन को यक़ीन हो चुका है कि सिर्फ़ हम ही नेक बख़्त हैं, बाक़ी सब लोग बद बख़्त और शक़ी हैं फिर वोह इन तमाम बुराइयों के होते हुवे लिबास आ़जिज़ और मुतवाज़ेअ़ लोगों जैसा पहनते हैं जैसे सौफ़ वग़ैरा और बनावट से ख़मोशी और कमज़ोरी का इज़्हार करते हैं ह़ालांकि ऐसे लिबास और ख़मोशी वग़ैरा का तकब्बुर और ग़ुरूर से क्या तअ़ल्लुक़ बल्कि येह चीज़ें तो तकब्बुर और ग़ुरूर के मुनाफ़ी हैं लेकिन इन अन्धों को समझ नहीं।

मज़्कूर है कि एक दफ़्अ़ा फ़र्क़द सन्जी ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया वोह उस वक़्त एक दुर्वेशाना गोदड़ी पहने हुवे था और ह़ज़रत नया जोड़ा पहने हुवे थे, वोह बार बार ह़ज़रते ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के कपड़ों को देखता था और हाथ लगाता था, आप ने फ़रमाया : तू बार बार मेरे लिबास को क्या देखता है ? सुन ले ! मेरा लिबास अहले जन्नत का लिबास है और तेरा लिबास दोज़ख़ियों का लिबास है। ह़ज़रते ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : मुझ तक बात पहुंची है कि अकसर अहले दोज़ख़ गोदड़ी

1 ......فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ۲/۱۰۳۔

पहने होंगे फिर ह़ज़रते ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया : इन लोगों ने कपड़ों में तो ज़ोह्द इख़्तियार किया है मगर सीनों में तकब्बुर और गुरूर को जगह दे रखी है, क़सम ख़ुदा की **ख़ुश पोश**(1) मगर साफ़ दिल लोग रसमी गोदड़ी पहनने वालों से हज़ार दरजे बेहतर है।(2)

ह़ज़रते जुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुन्दरिजए ज़ैल अश्आ़र भी इसी मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हैं :

(١) تَصَوَّفَ فَازْدَهٰى بِالصُّوفِ جَهْلًا   وَ بَعْضُ النَّاسِ يَلْبَسُهُ مَجَانَه

(٢) يُرِيكَ مَهَانَةً وَ يُرِيكَ كِبْرًا   وَ لَيْسَ الْكِبْرُ مِنْ شَكْلِ الْمَهَانَه

(٣) تَصَوَّفَ كَيْ يُقَالَ لَهٗ اَمِينٌ   وَ مَا مَعْنٰى تَصَوُّفِهِ الْاَمَانَه

(٤) وَ لَمْ يُرِدِ الْاِلٰهَ بِهٖ وَ لٰكِنْ   اَرَادَ بِهِ الطَّرِيْقَ اِلَى الْخِيَانَه

तर्जमा : (1) बा'ज़ लोग सूफ़ियों का सा लिबास पहनते हैं और अज़राहे जहालत दूसरों को नज़रे ह़क़ारत से देखते हैं और बा'ज़ लोग तो फ़ुज़ूल ही सौफ़ का लिबास पहनते हैं।

(2) ऐसे जाहिल सूफ़ी दूसरों के सामने अपने आप को कमज़ोर व नातुवां ज़ाहिर करते हैं और दूसरों को तकब्बुर से देखते हैं ह़ालांकि आ़जिज़ी करने वालों में तकब्बुर नहीं होता।

(3) ऐसे सूफ़ी येह लिबास सिर्फ़ इस ग़रज़ से पहनते हैं ताकि अ़वाम इन्हें अमीन और नेक ख़याल करें मगर दर ह़क़ीक़त इन की इस सूफ़ियाई का मक़्सद नेकी और शराफ़त नहीं होता।

(4) दर्वेशाना लिबास से उन्हें ख़ुशनूदिये ख़ुदा मक़्सूद नहीं होती बल्कि वोह इस त़रह़ अ़वाम को धोका देही और उन के साथ ख़यानत की राह हमवार करते हैं।

---

1 .....अच्छे कपड़े पहने हुवे।

2 ......فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ۱۰۳/۲

तो ऐ अ़ज़ीज़ ! तू इन चार मोहलिकात से बच ख़ास कर तकब्बुर से। इस लिये कि दूसरी तीन आफ़तें तो ऐसी आफ़तें हैं जिन से तू सिर्फ़ गुनाह और नाफ़रमानी में मुब्तला होगा मगर तकब्बुर ऐसा ख़तरनाक मरज़ है जो बसा अवक़ात इन्सान को कुफ़्र और गुमराही तक पहुंचा देता है।

तकब्बुर के सिलसिले में तू इब्लीस और उस की गुमराही को हरगिज़ न भूल, उस की गुमराही का आग़ाज़ इसी से हुवा कि उस ने तकब्बुर किया और ख़ुदा के हुक्म का इन्कार किया, और **अल्लाह** ही की दरगाहे बेकस पनाह में दुआ करनी चाहिये कि हमें अपने फ़ज़्ल से हर गुमराही और लग़ज़िश से बचाए।

फ़स्ल

ख़ुलासा येह है कि जब तू अ़क्ल व दानिश से देखेगा तो तुझे मा'लूम हो जाएगा कि दुन्या फ़ानी है और इस में मश्ग़ूल होने का नुक़्सान नफ़्अ़ से ज़ियादा है और दुन्या में पेश आने वाली परेशानियां इस की राह़त से ज़ियादा हैं, जैसे ह़ुसूले दुन्या के लिये जिस्म को थका डालना और दिल का उमूरे दुन्या में गिरिफ़्तार रहना और फिर आख़िरत में हर हर चीज़ का ह़िसाब और ऐसा दर्दनाक अ़ज़ाब जिस के बरदाश्त की तुझ में हरगिज़ त़ाक़त नहीं।

तो जब तुझे अच्छी त़रह़ मा'लूम हो गया कि दुन्या और सामाने दुन्या में ख़सारा ही ख़सारा है तो तुझ पर लाज़िम है कि इस की चीज़ें सिर्फ़ इसी क़दर इस्ति'माल में लाए जिस से ख़ुदा तआ़ला की इबादत बजा लाता रहे और ने'मतें और लज़्ज़तें ह़ासिल करने के लिये हमेशा रहने वाली जन्नत का इन्तिज़ार करता रहे जहां ख़ुदावन्दे तआ़ला का क़ुर्ब भी ह़ासिल होगा।

और जब तुझे येह भी अच्छी त़रह़ मा'लूम हो गया कि मख़्लूक़ में वफ़ादारी नहीं और इस की त़रफ़ से इमदाद व इआ़नत

के बजाए तक्लीफ़ और दुख ज़ियादा पहुंचता है तो तुझे चाहिये कि लोगों से सिवाए सख़्त ज़रूरत के मेल जोल न करे, नेक बातों में उन से नफ़्अ़ ह़ासिल कर मगर नुक़्सान देह चीज़ों में उन से इजतिनाब कर और उस ख़ुदा से दोस्ती लगा जिस की दोस्ती हर क़िस्म के ख़सारे से पाक है और उस ख़ुदा की त़ाअ़त कर जिस की त़ाअ़त से तुझे पशेमानी नहीं होगी और उस किताबे मुक़द्दस को अपनी मशअ़ले राह बना ले और उस के अह़काम को पूरी पाबन्दी से बजा लाता रह, ऐसा करने से ज़रूर वोह तेरी हर ह़ाल में दस्तगीरी करेगा, तुझ पर तेरे वहम व गुमान से ज़ियादा इन्आ़मो इकराम की बारिश करेगा और दुन्या व आख़िरत में हर मुश्किल वक़्त में तेरी फ़रयाद रसी करेगा, जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इरशादे गिरामी है : "اِحْفَظِ اللّٰهَ تَجِدْهُ حَيْثُ اتَّجَهْتَ"[1] हमेशा ख़ुदा की ही याद में **मुस्तग़्रक़**[2] रह ताकि जिधर तू मुतवज्जेह हो उधर ही तुझे उस के जल्वे नज़र आएं।

और जब कि तुझे येह भी अच्छी त़रह़ मा'लूम हो गया कि शैत़ान ख़बीस है और तेरी अ़दावत पर हर वक़्त कमर बस्ता है तो उस लईन कुत्ते से बचने के लिये हर वक़्त ख़ुदा से पनाह मांगता रह और किसी वक़्त भी उस की मक्कारियों और अ़य्यारियों से ग़ाफ़िल न हो बल्कि ख़ुदा तआ़ला के ज़िक्र से उस कुत्ते को भगा दे, जब तू मर्दाने ख़ुदा जैसा अ़ज़्मो यक़ीन अपने अन्दर पैदा कर लेगा तो ब फ़ज़्ले ख़ुदा उस लईन के दाव तुझे कुछ **ज़रर**[3] नहीं पहुंचा सकेंगे, जैसा कि रब तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया है :

1 ......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة...الخ، ٥٩_باب، ٤/٢٣١، حدیث: ٢٥٢٤_

2 .....डूबा। 3 .....नुक़्सान।

اِنَّهٗ لَیۡسَ لَهٗ سُلۡطٰنٌ عَلَى الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَلٰى رَبِّهِمۡ یَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۹۹﴾ (1)

बेशक शैतान का कोई बस कामिल बन्दों और रब तआला पर तवक्कुल करने वालों पर नहीं चल सकता।

अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया है कि दुन्या की ह़क़ीक़त तो येह है कि जो गुज़र गई वोह गोया एक ख़्वाब था और जो बाक़ी है वोह नफ़्सानी ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो रही है और शैतान की ह़क़ीक़त येह है कि जब तक वोह ख़ुदा का मुत़ीअ़ रहा तो उस से ख़ुदा का नफ़्अ़ न हुवा और जब नाफ़रमान हुवा तो उस का कुछ बिगाड़ न सका।

और जब तू ने जान लिया कि येह नफ़्स इन्तिहाई नादान है और नुक़्सान देह व हलाक कुन चीज़ों पर फ़रेफ़्ता है और तू ने अ़क़्लमन्द और नताइज पर नज़र रखने वाले उ़लमा की त़रह़ नफ़्स के ह़ालात पर ग़ौर किया, उन लोगों की त़रह़ उस की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ न की जो जाहिल हैं और सिर्फ़ ज़मानए ह़ाल पर ही नज़र रखते हैं, इस के अमराज़ और उ़यूब को नहीं देखते, और ज़ोहदो तक़्वा की कड़वी दवा से भागते हैं, तो जब तू ने नफ़्स को तक़्वा की लगाम दे दी इस त़रह़ कि फ़ुज़ूल चीज़ों से इसे रोका जैसे फ़ुज़ूल कलाम, नाजाइज़ नज़र, ज़रूरत से ज़ाइद त़आ़म और इसे उन क़बीह़ चीज़ों से रोका जिन में येह गिरिफ़्तार है जैसे लम्बी उम्मीदें, जल्दबाज़ी, मुसलमान के साथ ह़सद, तकब्बुर और शहवत व ह़िर्स के त़ौर पर खाना और सिर्फ़ वोही चीज़ें उसे दें जो ज़रूरी हैं, बेकार बातों से उसे बचाया क्यूंकि जब इन्सान ज़ोहदो तक़्वा की ज़िन्दगी इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** तआ़ला अपने मक़्बूल बन्दों की

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक इस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं। (پ ۱۴، النحل:۹۹)

तऱह उस इन्सान को भी अपनी रह़मत और अपने फ़ज़्ल से उस के ईमान को नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ से मह़फ़ूज़ कर लेता है, जब खुदा ज़ोहदो तक़्वा इख़्तियार करने से इन्सान के कामों का खुद कफ़ील बन जाता है तो फ़ुज़ूल और बेकार चीज़ों में मश्ग़ूल होने की क्या ह़ाजत है ?

बा'ज़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है : मेरे लिये तक़्वा आसान है क्यूंकि जब मुझे किसी चीज़ के जाइज़ व नाजाइज़ होने में शक होता है तो मैं उसे तर्क कर देता हूं क्यूंकि मेरा नफ़्स मेरा मुत़ीअ़ हो चुका है और जो आ़दत मैं उसे डालूं वोह उस का आ़दी बन जाता है और बेशक नफ़्स की ह़ालत येही है जो एक अ़रबी शाइ़र ने इस शे'र में बयान की :

فَـالـنَّـفْـسُ رَاغِبَةٌ اِذَا رَغَّبْتَهَـا   وَ اِذَا تُـرَدُّ اِلٰـى قَـلِيْـلٍ تَـقْـنَـعُ

तर्जमा : नफ़्स को जब तू किसी त़रफ़ राग़िब करे तो राग़िब हो जाता है और जब थोड़ी शै पर किफ़ायत करने का उसे आ़दी बना ले तो वोह उसी पर साबिर हो जाता है।

एक और शख़्स ने कहा है :

"هِيَ النَّفْسُ مَا حَمَّلْتَهَا تَتَحَمَّلُ" इस नफ़्स को तू जिस चीज़ का आ़दी बनाएगा वोह उसी का आ़दी बन जाएगा।

एक शाइ़र ने यूं कहा है :

(١) صَبَرْتُ عَنِ اللَّذَّاتِ حَتّٰى تَوَلَّتِ   وَاَلْزَمْتُ نَفْسِىْ صَبْرَهَا فَاسْتَمَرَّتِ

(٢) وَمَا النَّفْسُ اِلَّا حَيْثُ يَجْعَلُهَا الْفَتٰى   فَـاِنْ اُطْـعِـمَـتْ تَـاقَـتْ وَاِلَّا تَسَلَّـتِ

तर्जमा : (1) मैं ने दुन्यवी लज़्ज़तों से अपने आप को रोका यहां तक कि वोह मुझ से अ़लाह़िदा हो गई और मैं ने नफ़्स को सब्र का आ़दी बनाया तो वोह उस का आ़दी बन गया।

(2) नफ़्स वोही ह़ालत इख़्तियार करता है जिस पर इन्सान उसे रखे, अगर उसे ख़ूब खिलाया जाए तो उस की शहवतें जोश में आती हैं और अगर बक़दरे किफ़ायत उसे ग़िज़ा दी जाए तो उसी पर मुत़मइन हो जाता है।

तो जब तुझे वोह तमाम बातें मा'लूम हो गईं और तू इन का आ़मिल भी बन गया जो हम ने बयान की हैं तो बेशक तू ज़ाहिदों में शामिल हो गया और आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह होने वाले लोगों में से हो गया।

ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान ले जिस पर ज़ाहिद का लफ़्ज़ बोलना दुरुस्त हो गया गोया वोह हज़ार अच्छी सिफ़तों से मुत्तसिफ़ हो गया, इसी त़रह़ जब तू ज़ाहिदों में शामिल हो गया तो तू भी मख़्लूक़ से किनार कशी करने वाले और सब से रिश्तए मह़ब्बत जोड़ने वाले और उस की सच्ची त़ाअ़त करने वाले लोगों में शामिल हो गया और तू भी उन लोगों में से हो जाएगा जिन की **सिफ़त**[1] एक अ़रबी शाइर ने मुन्दरिजए ज़ैल अश्आ़र में की है :

(١)تَشَاغَلَ قَوْمٌ بِدُنْيَاهُمْ وَقَوْمٌ تَخَلَّوْا لِمَوْلَاهُمْ

(٢) فَاَلْزَمَهُمْ بَابَ مَرْضَاتِهِ وَعَنْ سَائِرِ الْخَلْقِ اَغْنَاهُمْ

(٣)يَصُفُّوْنَ بِاللَّيْلِ اَقْدَامَهُمْ وَعَيْنُ الْمُهَيْمِنِ تَرْعَاهُمْ

(٤)فَطُوْبٰى لَهُمْ ثُمَّ طُوْبٰى لَهُمْ اِذَا بِالتَّحِيَّةِ حَيَاهُمْ

तर्जमा : (1) एक क़ौम वोह है, जो दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत में **मह़्व**[2] है और एक वोह ख़ालिस बन्दे हैं जो सब से अ़लाह़िदा हो कर सिर्फ़ अपने मौला के हो गए हैं।
(2) ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें अपने आस्तानए रिज़ा पर जगह दे दी है और तमाम मख़्लूक़ से उन्हें बे परवाह कर दिया है।

---

1 .....ता'रीफ़। 2 .....मसरूफ़।

(3) रात को सफ़ें बनाए अपने मौला के दरबार में इ़बादत की ह़ालत में खड़े रहते हैं और रब तआ़ला की नज़्रे इनायत उन की निगहबानी करती रहती है ।

(4) उन्हें उस वक़्त की मुबारक हो जब उन का मौला उन्हें अपने इन्आ़मो इकराम से नवाज़ेगा ।

तो जब तू हमारे बयान कर्दा ज़ोह्दो तक़्वा के तमाम **मुक़्तज़ियात**[1] पर पूरी त़रह़ अ़मल पैरा हो जाएगा तो तू ख़ुदा की राह में नफ़्स से जिहाद करने वाले ज़ाहिदीन और ख़ुदा के उन ख़ास बन्दों में से हो जाएगा जिन की सिफ़त में रब तआ़ला ने यूं इरशाद फ़रमाया है ।

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ (2)

ऐ इब्लीस ! मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा कोई बस नहीं चल सकता ।

और अब तेरा उन परहेज़गार लोगों में नाम दर्ज हो जाएगा जिन को सआ़दते दारैन ह़ासिल है और अब तू बहुत से मलाइकए मुक़र्रबीन से भी अफ़्ज़ल व आ'ला हो जाएगा क्यूंकि मलाइका शहवात और नफ़्से ख़बीस से पाक हैं (इस लिये उन का गुनाहों से बचे रहना ज़ियादा कमाल नहीं ।)

और जब तू हमारे बयान कर्दा हिदायात का आ़मिल हो गया तो तू ने येह तीसरी लम्बी और मुश्किल घाटी भी उ़बूर कर ली और तू तमाम रुकावटों से आगे निकल कर अपने अस्ल मक़्सूद के क़रीब हो गया और जब ख़ुदा तआ़ला की इमदाद व इआ़नत शामिले ह़ाल हो तो फिर कोई मुश्किल मुश्किल नहीं ।

---

1 .....तक़ाज़ों । 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं । (پ١٤، الحجر:٤٢)

हम ख़ुदा ही से सुवाल करते हैं वोह बेहतर حَلِّ الْمُشْكِلات[1] है कि वोह हमें और तुम्हें अपनी मदद और तौफ़ीक़ के क़ल्ए़ में मह़फ़ूज़ कर ले क्यूंकि वोह हर मुश्किल में आसानी अ़त़ा फ़रमाने के लिये काफ़ी है और हर मुश्किल में दर ह़क़ीक़त उसी से इमदाद त़लब करनी चाहिये क्यूंकि वोही हर शै का ख़ालिक़ है और उसी के दस्ते क़ुदरत में ह़क़ीक़तन इख़्तियार है और वोह सब कुछ कर सकता है। इस तीसरे बाब में जो ज़रूरी उमूर हम ने बयान करने थे वोह येही थे। وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

चौथा बाब

चौथी घाटी में

और येह घाटी "अ़क़्बतुल अ़वारिज़" के नाम से मौसूम है

फिर ऐ त़ालिबे इ़बादत ! (तुझे अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे) इन अ़वारिज़ से बचना और इन के रास्ते बन्द करना भी तुझ पर लाज़िम और ज़रूरी है ताकि तुझे अस्ल मक़्सूद से न रोकें और हम पहले बयान कर चुके हैं कि वोह अ़वारिज़ चार हैं :

अव्वल आ़रिज़ा :

रिज़्क़ : और नफ़्स का रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ मुत़ालबा

इस आ़रिज़े से नजात की येह सूरत है कि तू रिज़्क़ के बारे में ख़ुदाए तआ़ला पर तवक्कुल और भरोसा करे येह तवक्कुल दो वजह से लाज़िम और ज़रूरी है :

---

1 .....मुश्किलात को ह़ल करने वाला।

पहली वजह तो येह है कि ताकि तू इ़बादत के वासिते़ फ़ारिग़ हो सके और कमा ह़क़्क़ुहू नेक काम कर सके इस लिये कि जो शख़्स रिज़्क़ के बारे में ख़ुदा तआ़ला पर **मुतवक्किल**(1) न हो वोह ज़रूर ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत छोड़ कर तलाशे रोज़ी, मआ़शी ह़ाजात और **मसालेह़े रिज़्क़**(2) में मश्ग़ूल होगा, या तो ज़ाहिरी जिस्म से मश्ग़ूल होगा या ख़याालात के तौ़र पर।

ज़ाहिरी जिस्म के ए'तिबार से तो इस त़रह़ कि तलाशे रोज़ी मे मारा मारा फिरेगा और बदन से मेह़नत मज़दूरी कर के कमाने की कोशिश करेगा जैसे आ़म लोगों का ह़ाल है।

और ख़यालात के तौ़र पर इस त़रह़ कि तलाशे रिज़्क़ की तदबीरें सोचेगा त़रह़ त़रह़ के इरादे करेगा और मुख़्तलिफ़ नौइय्यतों के वस्वसे उस के दिल में आएंगे जैसे वोह लोग जो रिज़्क़ की तदबीरें सोचने में गिरिफ़्तार हैं।

और इ़बादत कमा ह़क़्क़ुहू उस वक़्त हो सकती है जब दिल और बदन पूरी त़रह़ इस के लिये फ़ारिग़ हों और ऐसी फ़राग़त सिर्फ़ मुतवक्किलीन को ही मयस्सर आ सकती है बल्कि मैं कहता हूं कि बहुत से ज़ई़फ़ुल ए'तिक़ाद लोग उस वक़्त तक मुत़मइन नहीं होते जब तक उन्हें रिज़्क़ या कुछ रूपया पैसा हाथ न आ जाए तो ऐसे ज़ई़फ़ुल ए'तिक़ाद लोग दुन्या व आख़िरत में अपने अस्ल मक़्सूद से रह जाते हैं।

मैं ने बारहा अपने शैख़ अबू मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सुना कि आप फ़रमाया करते थे :

"जहान में दो शख़्स ही कामयाब होते हैं, एक बा जुरअत आदमी और दूसरा मुतवक्किल।"

---

1 .....भरोसा करने वाला। 2 .....रिज़्क़ के ह़ुसूल के ज़राएअ़।

मैं कहता हूं कि येह एक जामेअ़ फ़िक़रह है क्यूंकि बा जुरअत शख़्स अपनी क़ुव्वते इरादी और जुरअते क़ल्ब से जिस काम का इरादा करता है उसे कर गुज़रता है और कोई चीज़ उस के रास्ते में रुकावट नहीं बनती और मुतवक्किल शख़्स इस लिये कामयाब है कि वोह वा'दए ख़ुदावन्दी पर अपनी बसीरत और यक़ीने कामिल से ए'तिमाद रखता है और हर काम करते वक़्त उसे ख़ुदाए तआ़ला पर कामिल भरोसा होता है वोह अपना इरादा पूरा करने में किसी इन्सान से नहीं डरता और न शैत़ानी वस्वसे उस के लिये रुकावट बन सकते हैं इस लिये वोह अपने मक़ासिद व मत़ालिब में कामयाब हो जाता है ।

लेकिन ज़ईफ़ुत्तब्अ़ और ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद आदमी हमेशा ख़ुदा तआ़ला पर तवक्कुल और भरोसा करने में मुतरद्दिद रहता है और हमेशा उस के दिमाग़ में फ़ुतूर और त़बीअ़त पर परेशानी मुसल्लत़ रहती है और बन्धे हुवे गधे या **क़फ़स**[1] में बन्द परन्दे की त़रह़ मुन्तज़िर रहता है, इसी **परा गन्दा ख़याली**[2] में उस की उ़म्र गुज़र जाती है ऐसा शख़्स कोई बड़ा क़ाबिले सताइश और मुअ़ज़्ज़ज़ काम नहीं कर सकता अगर कहीं करने का इरादा भी करे तो उस में नाकाम रहता है और उसे पूरा नहीं कर सकता, तुम देखते नहीं कि दुन्यवी बुलन्द मरातिब ह़ासिल करने वाले भी बड़ी पोस्ट और बुलन्द रुत्बा उस वक़्त तक ह़ासिल नहीं कर सकते जब तक अपनी जान, अपने माल और अपने अहलो इ़याल से तवज्जोह हटा कर अपने मक़्सद की त़रफ़ मुतवज्जेह न हों ।

मसलन वोह लोग जो किसी ख़ित़्त़ए ज़मीन के बादशाह बनते हैं उन्हें इस के लिये जंगो जिदाल करने पडते हैं, दुश्मनों को

---

1 .....पिंजरे । 2 .....बुरे ख़यालात ।

कुचलना पड़ता है या'नी या तो दुश्मनों को हलाक करना पड़ता है या अपना मुत़ीअ़ बनाना पड़ता है तब जा कर वोह बादशाह बनते हैं या इक्तिदार ह़ासिल करते हैं।

मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे सिफ्फ़ीन के दिन अपने और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सफ़ों को एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़े देखा तो फ़रमाया :

"जो बड़ी चीज़ का इरादा करता है उसे बड़ी बड़ी मुश्किलात पेश आती हैं।'

और ताजिर लोग ख़ुश्की और तरी के निहायत ख़त़रनाक सफ़र इख़्तियार करते हैं, अपनी जानों और अपने मालों को मशरिक़ से मग़रिब और मग़रिब से मशरिक़ तक ले जाते हैं और दिलों को नफ़्अ़ या नुक़्सान पर क़ाइम करते हैं, तब जा कर बड़े मनाफ़ेअ़, बहुत माल और बड़ी बड़ी आ'ला और क़ीमती अश्या के मालिक बनते हैं।

बाक़ी रहे छोटे दरजे के आ़म दूकानदार जो दिल के कमज़ोर और अ़ज़्म के कच्चे हैं वोह इतनी जुरअत नहीं करते कि दूर दराज़ के सफ़र इख़्तियार करें बल्कि ह़क़ीर माल के साथ ही दिल लगाए रखते हैं ऐसे लोग सारी उ़म्र मकान से दूकान तक और दूकान से मकान तक ही मह़दूद रहते हैं इसी बिना पर वोह बादशाहों जैसे बड़े मर्तबे पर नहीं पहुंच सकते और न ही वोह बड़े ताजिरों की त़रह़ काफ़ी सरमाया ह़ासिल कर सकते हैं ऐसे आदमियों को शाम को अगर एक दिरहम ही नफ़्अ़ हो तो उसे काफ़ी समझते हैं येह लोग इतने क़लील नफ़्अ़ पर इस लिये ख़ुश हो जाते हैं कि इन की हिम्मत और वुस्अ़ते नज़र ही इतनी होती है, येह तो दुन्या और अहले दुन्या का ह़ाल है लेकिन वोह मुक़द्दस लोग जो आख़िरत की नजात चाहते हैं उन का अस्ल सरमाया येही तवक्कुल और दिल को ख़ुदा के सिवा दूसरी चीज़ों से हटा लेना है।

जब येह लोग तवक्कुल की सिफ़त कमा ह़क़्क़ुहू अपने अन्दर ह़ासिल कर लेते हैं और इस पर मज़्बूती से क़ाइम हो जाते हैं तो वोह खुदा की इ़बादत में हर चीज़ से फ़ारिग़ हो कर मश्ग़ूल हो जाते हैं, **ख़ल्क़**[1] से किनार कशी को अपना दस्तूर बना लेते हैं, **लक़ो दक़**[2] सह़राओं में, पहाड़ों की चोटियों पर और ख़त़रनाक घाटियों में ज़िन्दगी बसर करना उन के लिये आसान हो जाता है तो ऐसे लोग सब से त़ाक़तवर और बा हिम्मत हो जाते हैं। दर ह़क़ीक़त येही बा हिम्मत लोग दीन के सुतून, तमाम से मुअ़ज़्ज़ज़ और खुदाई ज़मीन के बादशाह कहलाने के ह़क़दार होते हैं क्यूंकि येह लोग जहां चाहते हैं जाते हैं जहां चाहते हैं क़ियाम करते हैं और इ़ल्मो अ़मल की मुश्किल तरीन मन्ज़िलों को त़ै करते हैं कोई चीज़ इन के मक़्सद में रुकावट या ह़ाइल नहीं हो सकती सारी ज़मीन इन के सामने होती है और माज़ी, ह़ाल व मुस्तक़्बिल इन के लिये एक होता है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुन्दरिजए ज़ैल इरशाद में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया है । चुनान्चे, आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

”مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّکُوْنَ اَقْوَی النَّاسِ فَلْیَتَوَکَّلْ عَلَی اللّٰہِ وَ مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّکُوْنَ اَکْرَمَ النَّاسِ فَلْیَتَّقِ اللّٰہَ وَ مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّکُوْنَ اَغْنَی النَّاسَ فَلْیَکُنْ بِمَا فِیْ یَدِ اللّٰہِ اَوْثَقَ مِنْہُ بِمَا فِیْ یَدِہٖ“[3]

जो शख़्स येह चाहे कि सब से क़वी हो जाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** पर तवक्कुल करे और जो चाहे कि सब से बा इ़ज़्ज़त हो जाए

---

1 .....मख़्लूक़। 2 .....वीरान।

3 .....الزھد للامام احمد بن حنبل،اخبار عمر بن عبد العزیز،ص۳۰۲،رقم:۱۷۰۷۔

तो उसे चाहिये कि तक़्वा इख़्तियार करे और जो चाहे कि सब लोगों से ज़ियादा दौलतमन्द हो तो उसे चाहिये कि अपने पास मौजूद शै से ज़ियादा उस शै पर ए'तिमाद करे जो ख़ुदा के दस्ते क़ुदरत में है।

हज़रते सुलैमानुल ख़व्वास (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स सिद्क़ निय्यत से **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی पर तवक्कुल करे तो उमरा और ग़ैर उमरा सब उस के मोहताज हो जाएंगे और वोह किसी का मोहताज नहीं होगा क्यूंकि उस का मालिक तमाम ज़मीनो आस्मान के ख़ज़ानों का मालिक है।

हज़रते इब्राहीम अल ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ मैं ने एक जंगल में एक ख़ूब सूरत तरीन ग़ुलाम देखा तो मैं ने उसे कहा : ऐ ग़ुलाम ! तू कहां जा रहा है ? उस ने जवाब दिया : "मक्के"। मैं ने कहा : बिग़ैर सफ़रे ख़र्च और बिग़ैर सुवारी के ? तो उस ने कहा : "ऐ ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद ! वोह ज़ात जो सात आस्मानों और सात ज़मीनों की मुहाफ़िज़ है उसे येह ताक़त नहीं कि मुझे बिग़ैर **ज़ाद**[1] और बिग़ैर सुवारी के मक्के पहुंचा दे ?"

हज़रते इब्राहीम ख़व्वास (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) फ़रमाते हैं कि मैं जब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुवा तो देखा कि वोह ग़ुलाम तवाफ़ कर रहा है और येह अश्आर पढ़ रहा है :

يَا نَفْسُ سِيْحِى اَبَدًا   وَلَا تُحِبِّىْ اَحَدًا
اِلَّا الْجَلِيْلَ الصَّمَدَا   يَا نَفْسُ مُوْتِىْ كَمَدًا

तर्जमा : ऐ मेरी जान ! हमेशा सैरो सियाहत में रह और ख़ुदा के सिवा किसी को अपना दोस्त न बना, और ऐ नफ़्स ! ग़मे आख़िरत में अपनी जान दे।

---

1 .....सामाने सफ़र।

जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ शैख़ ! तू अभी तक ज़ईफ़ुल ए'तिक़ादी में गिरिफ़्तार है।"

ह़ज़रते अबू मुत़ीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को फ़रमाया कि मैं ने सुना है कि आप निहायत ख़ौफ़नाक जंगलों में बिग़ैर ख़र्च के सिर्फ़ ख़ुदा के तवक्कुल पर फिरते रहते हैं और तै करते रहते हैं। तो ह़ज़रते ह़ातिमे असम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने फ़रमाया : "मेरा ज़ादे सफ़र चार चीज़ें हैं।" ह़ज़रते अबू मुत़ीअ़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने पूछा : वोह कौन सी हैं ? तो ह़ज़रते ह़ातिमे असम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने जवाब दिया :

﴿1﴾ एक येह कि मुझे यक़ीन है कि दुन्या व आख़िरत ख़ुदा की मिल्क हैं

﴿2﴾ दूसरी येह कि तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा की मुत़ीअ़ और फ़रमां बरदार है

﴿3﴾ तीसरी येह कि रिज़्क़ और रिज़्क़ के तमाम अस्बाब ख़ुदा तआ़ला के हाथ में हैं

﴿4﴾ चौथी येह कि ख़ुदा की क़ज़ा तमाम दुन्या में नाफ़िज़ है।

एक शाइ़र ने बहुत अच्छा कहा है :

(١)اَرَی الزُّهَّادَ فِی رَوْحٍ وَ رَاحَه   قُلُوْبُهُمْ عَنِ الدُّنْيَا مُزَاحَه

(٢)اِذَا اَبْصَرْتَهُمْ اَبْصَرْتَ قَوْمًا   مُلُوكَ الْاَرْضِ سِيْمَتُهُمْ سَمَاحَه

तर्जमा : (1) मैं देखता हूं कि ज़ाहिद लोग आराम व राह़त में हैं, उन के दिल दुन्या की मह़ब्बत से हट चुके हैं।

(2) जब मैं उन्हें देखता हूं तो एक ऐसी क़ौम को देखता हूं जो ज़मीन की बादशाह है उन की निशानी सख़ावत है।

तवक्कुल करने की दूसरी वजह येह है कि इस के तर्क करने में बड़ा ख़त्रा और बहुत नुक़्सान है, मैं कहता हूं क्या ख़ुदा तआ़ला ने पैदाइशे इन्सान के साथ **मुत्तसिल**(1) इस के रिज़्क़ का ज़िक्र नहीं किया ? या'नी किया है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ (2)

ख़ुदा ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया।

इस से मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ वोह ख़ालिक़ है राज़िक़ भी है, फिर सिर्फ़ इसी क़दर पर किफ़ायत न की बल्कि सरीह़ त़ौर पर रिज़्क़ का वा'दा फ़रमाया, चुनान्चे, फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ (3)

बेशक अल्लाह ही हर एक का राज़िक़ है।

फिर सिर्फ़ इस वा'दे पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि साफ़ त़ौर पर रिज़्क़ का ज़िम्मा अपने पर लिया और फ़रमाया :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (4)

ज़मीन में कोई जानदार नहीं मगर उस का रिज़्क़ ख़ुदा तआ़ला के ज़िम्मे है।

फिर सिर्फ़ ज़िम्मे पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि इस पर क़सम खाई, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ (5)

तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम ! बेशक येह ह़क़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो।

---

(1) साथ। (2) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी। (پ ۲۱، الروم:٤٠) (3) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला। (پ ۲۷، الذریت:٥٨) (4) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो। (پ ۱۲، ھود:٦) (5) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक येह क़ुरआन ह़क़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो। (پ ۲٦، الذریت:۲۳)

फिर सिर्फ़ क़सम पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि निहायत वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में तवक्कुल का हुक्म दिया और तवक्कुल करने की तम्बीह फ़रमाई, चुनान्चे फ़रमाया :

وَ تَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ[1] *उस ह़य्य व क़य्यूम ज़ात पर तवक्कुल कर जिस पर फ़ना नहीं आ सकती।*

दूसरी जगह फ़रमाया :

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۳﴾[2] *और ख़ुदा ही पर तवक्कुल करो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो।*

तो जो शख़्स ख़ुदा के क़ौल पर ए'तिबार न करे, उस के वा'दे को काफ़ी न समझे और उस के ज़िम्मा लेने पर मुत़्मइन न हो फिर उस के वा'दे, वईद और हुक्म की कोई परवाह न करे, तो ऐसे शख़्स के मन्ह़ूस और बुरे होने में क्या शक हो सकता है ? और ऐसा शख़्स जिन मआ़शी परेशानियों में गिरिफ़्तार होता है वोह किस से पोशीदा हैं, येह एक बहुत सख़्त बात है जिस से आ़म दुन्या ग़ाफ़िल है।

एक दफ़्अ़ा सरकारे दो आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से फ़रमाया :

"كَيْفَ اَنْتَ اِذَا لَقِيْتَ بَيْنَ قَوْمٍ يُّخَبِئُوْنَ رِزْقَ سَنَتِهِمْ لِضُعْفِ الْيَقِيْنِ"[3]

ऐ इब्ने उ़मर ! तेरा उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब तू ऐसी क़ौम में होगा जो ज़ो'फ़े यक़ीन के बाइ़स क़ह़त़ साली के ख़ौफ़ से रिज़्क़ का ज़ख़ीरा बनाएगी।

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा। (پ۱۹،الفرقان:۵۸)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है। (پ٦،المائدة:٢٣)

3 ......ابن عساکر، ٤/١٢٧۔

हज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ला'नत हो उस क़ौम पर जिसे खुदा की क़समों पर भी ए'तिबार न आया। जब आयत فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ...الخ[(1)] नाज़िल हुई तो मलाइका ने कहा : हलाकत हो इब्ने आदम के लिये कि उस ने रब को नाराज़ किया यहां तक कि उस ने रिज़्क़ देने पर क़सम खाई।

हज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

"لَوْ عَبَدْتَ اللّٰهَ عِبَادَةَ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَا يُقْبَلُ مِنْكَ حَتّٰى تُصَدِّقَهُ قِيْلَ وَ كَيْفَ تُصَدِّقُهُ؟ قَالَ تَكُوْنُ اٰمِنًا بِمَا تَكَفَّلَ اللّٰهُ لَكَ مِنْ اَمْرِ رِزْقِكَ وَ تَرٰى جَسَدَكَ فَارِغًا لِعِبَادَتِهٖ"

अगर तू खुदा की इतनी इ़बादत करे जितनी ज़मीनो आस्मान की तमाम मख़्लूक़, तो भी वोह तेरी इ़बादत क़बूल नहीं करेगा जब तक कि तू उस की तस्दीक़ न करे। किसी ने सुवाल किया : तस्दीक़ से क्या मुराद है? तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जवाब दिया कि तू उस के **मुरब्बी**[(2)] राज़िक़ और कफ़ील होने पर मुत़्मइन हो जाए और जिस्म को उस की बन्दगी के लिये फ़ारिग़ कर दे।

जब हरिम बिन **ह़य्यान**[(3)] (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की मुलाक़ात हज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई तो हज़रते हरिम (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने पूछा :

"मैं कहां इक़ामत इख़्तियार करूं?" तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने हाथ से शाम की त़रफ़ इशारा फ़रमाया। तो हज़रते हरिम (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने कहा :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम...الخ (پ٢٦،الذريت:٢٣) 2.....पालने वाला। 3.....यहां लफ़्ज़ "ह़ब्बान"("حبان") था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "ह़य्यान"("حيان") है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

"शाम में गुज़र अवक़ात किस त़रह़ होगी ?" तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जवाब दिया : "अफ़्सोस उन पर जो शक में मुब्लता हो गए हैं, अब उन्हें कोई नसीह़त फ़ाइदा नहीं देती।"

मन्क़ूल है कि एक कफ़न चोर ने ह़ज़रते बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ पर तौबा की, ह़ज़रते बायज़ीद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने क़ुबूर के मुतअ़ल्लिक़ उस से सुवाल किया तो उस ने जवाब दिया : "मैं ने तक़रीबन हज़ार क़ब्रों से कफ़न चुराए लेकिन सिवाए दो मुर्दों के बाक़ी तमाम के मुंह क़िब्ले की जानिब से फिरे हुवे थे।" तो आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने फ़रमाया : उन लोगों को रिज़्क़ के बारे में ख़ुदा पर तवक्कुल नहीं था इस लिये क़ब्र में उन के चेहरे क़िब्ले से फिरे हुवे थे।

मेरे एक दोस्त ने मुझ से ज़िक्र किया कि मेरी एक नेक आदमी से मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा : क्या ह़ाल है ? उस ने जवाब दिया : ह़ाल तो उन का है जिन का ईमान मह़फ़ूज़ है और वोह सिर्फ़ मुतवक्किलीन ही हैं जिन का ईमान मह़फ़ूज़ है। हम दुआ़ करते हैं कि ख़ुदा तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमारे और तुम्हारे ह़ाल की इस्लाह़ फ़रमाए और हमारे बुरे आ'माल की सज़ा में हमें न पकड़े बल्कि हमारे साथ रोज़े ह़श्र वोह सुलूक करे जो उस की रह़मत और शान के लाइक़ है, वोह सब से बेहतर रह़्मो करम करने वाला है।

सुवाल : अगर तुम कहो कि तवक्कुल की ह़क़ीक़त और इस का हुक्म क्या है और रिज़्क़ के बारे में किस ह़द तक तवक्कुल लाज़िम व ज़रूरी है ?

जवाब : तो इस सुवाल का जवाब समझने के लिये चार चीज़ों का समझना ज़रूरी है :

अव्वल : लफ़्ज़े तवक्कुल के मा'ना।
दुवुम : तवक्कुल के इस्ति'माल का मक़ाम।
सिवुम : तवक्कुल की ता'रीफ़।
चहारुम : तवक्कुल पैदा करने के अस्बाब व ज़राएअ़।

लफ़्ज़े तवक्कुल "तफ़अ़ुल" के वज़्न पर मस्दर है, जिस का मादा "वकालतुन" है, तो मुतवक्किल उसे कहते हैं जो किसी दूसरे को ब मन्ज़िल वकील के तसव्वुर करे जो उस की त़रफ़ से उस के काम काज को सर अन्जाम दे और जो उस के मुआ़मलात की दुरुस्ती का ज़ामिन हो और जो बिग़ैर तकल्लुफ़ और बिग़ैर एहतिमाम उस की मुश्किलात के लिये काफ़ी हो।

इस लफ़्ज़ का इस्ति'माल तीन मक़ाम पर किया जाता है, एक तो क़िस्मत पर, क़िस्मत पर तवक्कुल करने के मा'ना येह है कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम्हारी क़िस्मत में जो कुछ लिख दिया है उस पर इत़्मीनान किया जाए क्यूंकि उस का हुक्म तब्दील नहीं हो सकता और शरअ़ की त़रफ़ से येह इत़्मीनान लाज़िम और ज़रूरी है।

इस लफ़्ज़ के इस्ति'माल का दूसरा मक़ाम नुसरत है, नुसरत (मदद) में तवक्कुल करने के येह मा'ना हैं कि अल्लाह तआ़ला की इमदाद पर ए'तिमाद और यक़ीन किया जाए क्यूंकि जब तुम उस के दीन की मदद और उस की नश्रो इशाअ़त में कोशिश करोगे तो वोह भी ज़रूर तुम्हारी इमदाद करेगा क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है :

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ(1) *जब तू कोई काम करने का इरादा करे तो ख़ुदा की इमदाद पर ही भरोसा कर।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। (پ٤،اٰل عمرٰن:١٥٩)

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ (1) *अगर तुम ख़ुदा के दीन की ख़िदमत करोगे तो वोह तुम्हारी इमदाद करेगा।*

एक और जगह फ़रमाया :

وَكَانَ حَقًّا عَلَیْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِیْنَ (2) *और मोमिनों की इमदाद करना हमारा ह़क़ है।*

तो इमदाद के सिलसिले में भी **अल्लाह** तआ़ला के वा'दे के मुत़ाबिक़ उस पर तवक्कुल व भरोसा ज़रूरी है।

और तीसरा मक़ाम जहां तवक्कुल करना चाहिये वोह रिज़्क़ और रोज़ मर्रा की ह़ाजात हैं क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला उस चीज़ का ज़ामिन और कफ़ील है जिस से तुम्हारा जिस्म क़ाइम रहे और जिस के ज़रीए़ तुम उस की इबादत पर क़ादिर रहो क्यूंकि ख़ुदा तआ़ला का इरशाद है :

وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (3) *और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये काफ़ी है।*

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

لَوْ تَوَكَّلْتَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ رَزَقَكُمْ كَمَا يُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْا خِمَاصًا وَ تَرُوْحُ بِطَانًا (4)

अगर तुम ख़ुदा पर कमा ह़क़्क़ुहू तवक्कुल करते तो वोह तुम्हें परन्दों

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे **अल्लाह** तुम्हारी मदद करेगा। (پ۲٦،محمد:۷)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना। (پ۲۱،الروم:٤۷)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है। (پ۲۸،الطلاق:۳)

4 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب التوكل واليقين، ٤/٤٥٢، حديث: ٤١٦٤۔

की त़रह़ रिज़्क़ देता जो सुब्ह़ ख़ाली पेट घोंसलों से जाते हैं और शाम को पेट भर के वापस आते हैं।

और रिज़्क़ के सिलसिले में अ़क़्लन व शरअ़न ख़ुदा पर तवक्कुल करना लाज़िम है और रिज़्क़ के सिलसिले में ही ख़ुदा पर तवक्कुल करना सूफ़िया (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के नज़्दीक आ़म त़ौर पर लफ़्ज़ तवक्कुल से मुराद होता है और इस किताब में इसी तवक्कुल की बह़स मक़्सूद है लेकिन रिज़्क़ के बारे में ख़ुदा पर तवक्कुल करने के मफ़्हूम की उस वक़्त वज़ाह़त होगी जब रिज़्क़ के तमाम अक़्साम बयान किये जाएंगे।

तू जान ले कि रिज़्क़ चार क़िस्म है :

﴿1﴾ रिज़्क़े मज़्मून ﴿2﴾ रिज़्क़े मक़्सूम
﴿3﴾ रिज़्क़े ममलूक ﴿4﴾ रिज़्क़े मौऊ़द।

क़िस्मे अव्वल : रिज़्क़े मज़्मून से मुराद वोह ग़िज़ा और वोह अश्या हैं जिन से इन्सान का बदन क़ाइम रहे, तमाम अस्बाबे दुन्यवी मुराद नहीं और येह तवक्कुल शरअ़न व अ़क़्लन वाजिब है क्यूंकि जब ख़ुदा ने हमें उस की ख़िदमत व इ़बादत का मुकल्लफ़ बनाया तो ज़रूर वोह हमारी उन चीज़ों का कफ़ील व ज़ामिन होगा जिन के ज़रीए़ हमारे बदन क़ाइम रहें और हम उस की इ़बादत बजा ला सकें और बा'ज़ मशाइख़े कर्रामिय्या ने अपने मस्लक के मुत़ाबिक़ इस तवक्कुल के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी गुफ़्तगू की है चुनान्चे, उन्हों ने कहा है कि ख़ुदा तआ़ला का बन्दों के रिज़्क़ का ज़ामिन होना तीन वजह से ज़रूरी है :

एक इस लिये कि हम उस के ग़ुलाम हैं और वोह हमारा आक़ा व मालिक है, तो जिस त़रह़ ग़ुलामों पर आक़ा की ख़िदमत व इत़ाअ़त लाज़िम है इसी त़रह़ आक़ा पर लाज़िम है कि ग़ुलामों के रिज़्क़ और उन की दीगर ज़रूरी ह़ाजात का कफ़ील हो।

दूसरे इस लिये कि ख़ुदा तआ़ला ने बन्दों को रिज़्क़ का मोह़ताज पैदा किया है लेकिन उन्हें तलाशे रिज़्क़ का कोई यक़ीनी ज़रीआ़ नहीं बताया, क्यूंकि बन्दे नहीं जानते कि उन का रिज़्क़ कौन शै है ? और कहां है ? और कब मयस्सर आएगा ? इस लिये रब तआ़ला पर लाज़िम है कि वोह उन के रिज़्क़ का कफ़ील हो और उन के लिये रिज़्क़ मुहय्या करे ।

तीसरे इस लिये कि ख़ुदा ने बन्दों को हुक्म दिया है कि वोह उस की इ़बादत व त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें, तो अगर वोह तलाशे रिज़्क़ में सरगर्दां रहें तो वोह उस की इ़बादत के वासित़े फ़ारिग़ नहीं हो सकते, इस वजह से भी चाहिये कि रब तआ़ला उन के रिज़्क़ का कफ़ील बने ताकि फ़राग़त से वोह उस की इ़बादत व त़ाअ़त बजा ला सकें ।

लेकिन कर्रामिय्या का येह मस्लक दुरुस्त नहीं इस लिये कि येह कहना कि बन्दों को रिज़्क़ देना ख़ुदा पर वाजिब है ग़लत़ है और ऐसी गुफ़्त्गू असरारे रबूबिय्यत से नावाक़िफ़िय्यत की वजह से है और हम ने इ़ल्मे कलाम की किताबों में ऐसे मज़्हब की निहायत मुदल्लल त़रीक़े से तरदीद कर दी है ।

हम ने अभी बयान किया है कि रिज़्क़ चार क़िस्म है : अव्वल रिज़्क़े मज़्मून, इस की मुख़्तसर तशरीह़ तुम सुन चुके हो ।

क़िस्मे दुवुम : रिज़्क़े मक़्सूम है, इस से मुराद वोह रिज़्क़ है जो ख़ुदा ने बन्दों की क़िस्मत में कर दिया हुवा है और लौह़े मह़फ़ूज़ में लिख दिया हुवा है कि बन्दा येह खाएगा, येह पियेगा, येह पहनेगा, इस रिज़्क़े मक़्सूम की मिक़्दार और इस का वक़्त मुअ़य्यन है, इस में

कमी बेशी नहीं हो सकती और न इस में तक़्दीम व ताख़ीर हो सकती है जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

"اَلرِّزْقُ مَقْسُوْمٌ مَفْرُوْغٌ مِنْهُ لَيْسَ تَقْوٰى تَقِيٍّ بِزَائِدِهٖ وَلَا فُجُوْرُ فَاجِرٍ بِنَاقِصِهٖ" (1)

रिज़्क़ रोज़े अव्वल से तक़्सीम कर दिया गया है और क़लमे क़ुदरत उसे तह़रीर कर के फ़ारिग़ हो चुका है, अब किसी परहेज़गार की परहेज़गारी उसे ज़ाइद नहीं कर सकती और न किसी फ़ाजिर के फ़िस्क़ो फ़ुजूर से वोह कम हो सकता है।

तीसरी क़िस्म : रिज़्क़े ममलूक है, इस से मुराद वोह रिज़्क़ और वोह माल व अस्बाब है जिस का बन्दा बिल फ़े'ल दुन्या में मालिक होता है और जो उस के क़ब्ज़े में होता है और क़ुरआने मजीद की मुन्दरिजए ज़ैल आयत में येही रिज़्क़ मुराद है :

اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ (2) *और इस रिज़्क़ से राहे ख़ुदा में ख़र्च करो जो हम ने तुम्हें दिया है।*

इस आयत में लफ़्ज़ "مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ" के मा'ना हैं : "مِمَّا مَلَّكْنَا كُمْ" या'नी जिस का हम ने तुम्हें मालिक बनाया है।

चौथी क़िस्म : रिज़्क़े मौऊ़द है, इस से मुराद वोह रिज़्क़े ह़लाल है जिस का ख़ुदा तआ़ला ने परहेज़गार लोगों से वा'दा फ़रमाया है कि वोह उन्हें बिग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त के दिया जाएगा, जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

---

1 ......المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، ص ١٢١، تحت الحديث: ٢٢٤، بالفاظ زائدة۔

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो। (پ٣، البقرة: ٢٥٤)

وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ یَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ ؕ(1)

*और जो शख़्स ख़ुदा से डरता है और परहेज़गारी इख़्तियार करता है तो उस के लिये **अल्लाह** तआला राह निकाल देता है और उसे वहां से रिज़्क़ देता है जहां का बन्दे को गुमान तक नहीं होता ।*

येह हैं रिज़्क़ की चार अक़्साम, इन में से क़िस्मे अव्वल में तवक्कुल वाजिब है ।

तवक्कुल की ता'रीफ़

तवक्कुल की ता'रीफ़ में मशाइख़े तरीक़त (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) का इख़्तिलाफ़ है, आम मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) तो कहते हैं कि सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा करने और मख़्लूक़ से हर क़िस्म की उम्मीदें मुन्क़तअ़ करने का नाम तवक्कुल है और बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) कहते हैं कि ग़ैर से तअ़ल्लुक़ मुन्क़तअ़ कर के दिल को सिर्फ़ ख़ुदा की हिफ़ाज़त में देने का नाम तवक्कुल है ।

और इमाम अबू उ़मर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि ख़ुदा के सिवा हर शै से तर्के तअ़ल्लुक़ का नाम तवक्कुल है और तर्के तअ़ल्लुक़ से इमाम मौसूफ़ येह मुराद लेते हैं कि बन्दा अपने बदन के **क़िवाम**[2] और तंगी व तक्लीफ़ का ख़ुदा के सिवा किसी से ज़िक्र तक न करे ।

और मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि अपनी हर तंगी और तक्लीफ़ का ज़िक्र सिर्फ़ ख़ुदा से करने का नाम तवक्कुल है और मख़्लूक़ से तंगी व तक्लीफ़ का ज़िक्र करना ग़ैर से तअ़ल्लुक़ रखना है ।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो । (پ ۲۸، الطلاق: ۲-۳) 2 .....निज़ाम

मेरे नज़दीक मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के अक़्वाल का ख़ुलासा येह है कि तवक्कुल उस का नाम है कि बन्दे को इस अम्र का यक़ीन हो जाए और उस का दिल इस पर मज़बूती से क़ाइम हो जाए कि मेरे जिस्म और ढांचे को बाक़ी रखना, मेरी ह़ाजात को पूरा करना और हर तंगी व तक्लीफ़ से बचाना सिर्फ़ ख़ुदा के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है किसी दूसरे के हाथों में नहीं और न ही अस्बाब व वसाइले दुन्या के सबब से है, ख़ुदा अगर चाहे तो मेरे जिस्म की बक़ा और दीगर ह़ाजात के लिये किसी मख़्लूक़ को वसीला बना देता है या दुन्या की किसी और शै को ज़रीआ़ बना देता है और अगर वोह चाहे तो बिग़ैर ज़ाहिरी अस्बाबे दुन्या और बिग़ैर किसी मख़्लूक़ के आसरे के मुझे ज़िन्दा रख सकता है, वोह अस्बाब व ज़राएअ़ का मोह़ताज नहीं ।

जब तेरा ए'तिक़ाद तवक्कुल के इस मफ़्हूम पर हो जाए और तेरा दिल इस अ़क़ीदे पर मज़बूती से क़ाइम हो जाए और तेरा दिल मख़्लूक़ और अस्बाबे दुन्या से बे नियाज़ हो जाए तो समझ ले कि कमा ह़क़्क़ुहू तुझे वस्फ़े तवक्कुल ह़ासिल हो गई और तू मुतवक्किलीन में शामिल हो गया ।

तवक्कुल पैदा करने का त़रीक़ा

तवक्कुल इस त़रह़ पैदा होता है कि बन्दा रिज़्क़ और दीगर ज़रूरियात के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदा तआ़ला के ज़ामिन और कफ़ील होने का तसव्वुर रखे और ख़ुदा के कमाले इ़ल्म, उस की कमाले क़ुदरत का तसव्वुर करे और इस बात पर यक़ीन रखे कि ख़ुदा तआ़ला ख़िलाफ़े वा'दा भूल, इ़ज्ज़ और हर नक़्स से मुनज़्ज़ा और पाक है, जब हमेशा ऐसा तसव्वुर ज़ेहन में रखेगा तो ज़रूर उसे रिज़्क़ के बारे में रब तआ़ला पर तवक्कुल की सआ़दत नसीब हो जाएगी ।

सुवाल : क्या बन्दे पर तलाशे रिज़्क़ लाज़िम है या नहीं ?

जवाब : रिज़्के मज़्मून की तलाश बन्दा नहीं कर सकता क्यूंकि इस से मुराद है जिस्म की तर्बिय्यत और उस की नश्व नुमा देना, और येह खुदा का फ़े'ल है, जिस त़रह़ मौत और ज़िन्दगी अ़त़ा करना रब तआ़ला का फ़े'ल है और ज़ाहिर है कि इन्सान उन अफ़्आ़ल पर क़ादिर नहीं है जो खुदा की सिफ़ात हैं।

और रिज़्के मक़्सूम की तलाश भी इन्सान को लाज़िम नहीं क्यूंकि वोह तो रिज़्के मज़्मून का मोह़ताज है और रिज़्के मज़्मून का ज़ामिन और कफ़ील खुदा है और खुदा तआ़ला ने येह जो फ़रमाया है : وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ (1) तो इस से मुराद तलाशे रिज़्क़ नहीं बल्कि त़लबे इ़ल्म और त़लबे सवाब मुराद है और अगर येह कहा जाए कि रिज़्के मज़्मून अस्बाब के साथ वाबस्ता है तो क्या अस्बाब की तलाश भी लाज़िम है या नहीं ? तो इस का जवाब येह है कि अस्बाब की तलाश भी लाज़िम नहीं क्यूंकि खुदा तआ़ला जब रिज़्क़ मुक़र्रर सबब के साथ या बिग़ैर सबब के मुहय्या कर सकता है तो तलाशे अस्बाब की क्या ह़ाजत है ? फिर खुदा तआ़ला ने मुत़लक़न फ़रमाया है कि हम रिज़्क़ के ज़ामिन हैं येह क़ैद नहीं लगाई कि नफ़्से रिज़्क़ के हम ज़ामिन हैं और इस के अस्बाब व ज़राएअ़ फ़राहम करना बन्दों के ज़िम्मे है चुनान्चे, फ़रमाया :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (2)

और ज़मीन में कोई जानदार नहीं मगर उस का रिज़्क़ खुदा के ज़िम्मए करम पर है।

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो। (پ۲۸،الجمعۃ:۱۰)

2 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो। (پ۱۲،ھود:٦)

फिर इन्सान वोह शै तलाश भी कैसे कर सकता है जिस की जगह का उसे पता न हो, क्यूंकि यक़ीन से इन्सान को येह मा'लूम नहीं कि इस ज़रीए़ से रिज़्क़ ह़ासिल होगा, या येह शै मेरी गि़ज़ा है और इस से मेरी नश्व नुमा है। कोई फ़र्दे बशर येह नहीं जानता कि मेरा रिज़्क़ यक़ीनन इस ज़रीए़ से ह़ासिल होगा।

इस सिलसिले में तेरे इत़मीनान के लिये येही काफ़ी है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) रिज़्क़ के मुआ़मले में ख़ुदा पर तवक्कुल करते थे और बहुत कम ही रिज़्क़ की तलाश करते थे बल्कि अपने बदन को ख़ुदा की इ़बादत के लिये फ़ारिग़ रखते थे और इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि उन्हों ने तलाशे रिज़्क़ को तर्क कर के ख़ुदा तआ़ला के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं की और न ही वोह किसी हुक्मे ख़ुदावन्दी के तारिक हुवे, तो इस बयान से वाज़ेह़ हो गया कि रिज़्क़ और अस्बाबे रिज़्क़ की तलाश कोई ज़रूरी नहीं।

सुवाल : तलाश से रिज़्क़ ज़ियादा और तलाश न करने से रिज़्क़ कम होता है या नहीं ?

जवाब : लौह़े मह़फ़ूज़ में रिज़्क़ की मिक़्दार और इस का वक़्त मुअ़य्यन त़ौर पर लिखा हुवा है और ख़ुदा के हुक्म में कोई तब्दीली नहीं हो सकती और न उस की तक़्सीम में कोई तग़य्युर हो सकता है और येही उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक सह़ीह़ है। सिर्फ़ ह़ातिम और शफ़ीक़ के पैरूकार इस के ख़िलाफ़ हैं, वोह येह कहते हैं कि रिज़्क़ तो तलाश व अ़दमे तलाश से ज़ियादा कम नहीं हो सकता मगर माल में तलाश व अ़दमे तलाश से ज़ियादती या कमी हो सकती है और येह फ़ासिद है जिस त़रह़ रिज़्क़ में कमी ज़ियादती

नहीं हो सकती इसी त़रह़ माल में भी नहीं हो सकती क्यूंकि दोनों की दलील एक है, खुदा तआ़ला ने मुन्दरिजए ज़ैल आयत में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया है :

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ(1)

ताकि जो हाथ से निकल गया है उस पर ग़म न करो और जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में आया है उस पर खुशी न मनाओ।

अगर तलाश से रिज़्क़ में ज़ियादती होती और अ़दमे तलाश से कमी तो अलबत्ता ग़मी या खुशी का मक़ाम होता क्यूंकि सुस्ती और ला परवाई से जब कोई शै ज़ाएअ़ हो जाए तो इस पर इन्सान ग़मनाक होता है और कोशिश व कमर बस्ता होने से जब कोई शै ह़ासिल हो तो इस पर इन्सान को फ़रह़त होती है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक साइल को फ़रमाया :

"هَاكَ لَوْ لَمْ تَأْتِهَا لَأَتَتْكَ"(2) सुन ले ! तू अगर रोज़ी की तलाश न भी करता तो भी जो तेरे मुक़द्दर में है वोह तुझे मिल जाती।

सुवाल : सवाब और अ़ज़ाब भी तो लौह़े मह़फ़ूज़ में लिखा हुवा है फिर भी हमें हुक्म है कि त़लबे सवाब की जाए और जो अश्या अ़ज़ाब का बाइ़स बनती हैं उन से इजतिनाब किया जाए, तो क्या त़लब से सवाब ज़ियादा हो सकता है या अ़ज़ाब का **मूजिब**(3) बनने वाली अश्या से इजतिनाब करना अ़ज़ाब में कमी का बाइ़स बन सकता है।

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस लिये कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए और खुश न हो उस पर जो तुम को दिया। (پ۲۷،الحدید:۲۳)

(2)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی الحرص...الخ، ذکر العلۃ...الخ، الجزء الخامس، ۴/۹۸، حدیث:۳۲۲۹۔

(3).....सबब।

जवाब : जान ले कि खुदा तआ़ला ने त़लबे सवाब का हुक्म क़त़ई और वाज़ेह त़ौर पर हमें दिया है और इस के तर्क करने पर अ़ज़ाब का डर सुनाया है और खुदा ने येह ज़िम्मा नहीं लिया कि बन्दा नेक आ'माल न करे तब भी वोह उसे अच्छा अज्र देगा, इस लिये अ़ज़ाब व सवाब की ज़ियादती बन्दे के फ़े'ल पर मब्नी है और रिज़्क़ व सवाब व अ़ज़ाब में फ़र्क़ है जो बा'ज़ उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) ने बयान किया है वोह येह कि रिज़्क़ और मौत के मुतअ़ल्लिक़ लौहे मह़फ़ूज़ में बिग़ैर किसी **शर्त़** व **ता'लीक़ के**[1] एक क़त़ई फ़ैसला लिखा हुवा है, तुम ने कुरआने मजीद में देखा नहीं ? कि खुदा ने किस त़रह़ रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ **ग़ैर मशरूत़ त़ौर पर**[2] फ़रमाया है, इरशाद है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ رِزْقُهَا[3]

और ज़मीन में कोई जानदार नहीं मगर उस का रिज़्क़ खुदा के ज़िम्मा करम पर है।

और मौत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا یَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾[4]

जब मौत का वक़्त आ जाता है तो एक साअ़त आगे पीछे नहीं हो सकता।

और हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : اَرْبَعَةٌ قَدْ فَرَغَ مِنْهُنَّ الْخَلْقُ وَالْخُلُقُ وَ الرِّزْقُ وَ الْاَجَلُ[5] चार चीज़ों से फ़राग़त हो

---

1 ....बिग़ैर किसी शर्त़ और किसी दूसरी चीज़ पर मुअ़ल्लक़ किये। 2 ....बिग़ैर किसी शर्त़ के। 3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो। (پ۱۲، ھود:٦)
4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जब उन का वा'दा आएगा, एक घड़ी न पीछे हो न आगे। (پ۸،الاعراف:٣٤)
5 ......المعجم الاوسط، ٥/٢٧٨،حدیث:٧٣٢٥ والمعجم الکبیر،٩/١٩٣،حدیث:٨٩٥٢۔

चुकी हुई है, इन्सान के ढांचे की बनावट से, उस की आ़दत व त़बीअ़त से, उस की मौत और उस के रिज़्क़ से।

और अ़ज़ाब व सवाब की तह़रीर लौहे मह़फ़ूज़ में बन्दे के फ़े'ल के साथ मुअ़ल्लक़ व मशरूत़ है या'नी अगर बन्दा नेकी करेगा तो सवाब पाएगा और गुनाह करेगा तो अ़ज़ाब का सज़ावार होगा, जैसा कि क़ुरआने मजीद की मुन्दरिजए ज़ैल आयत में मज़्कूर है :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾ [1]

अगर अहले किताब ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार करते तो ज़रूर हम उन के गुनाह मुआ़फ़ कर देते और उन्हें ने'मत वाले बाग़ात में दाख़िल करते।

सुवाल : हम ने देखा है कि जो लोग रिज़्क़ की तलाश और सई करते हैं उन के पास रिज़्क़ और माल वाफ़िर होता है और जो तलाश और सई नहीं करते वोह कंगाल और मोह़ताज होते हैं।

जवाब : ऐसा नहीं बल्कि देखा गया है कि बा'ज़ तलाश और सई करने वाले रिज़्क़ से मह़रूम होते हैं और बा'ज़ तलाश न करने वाले दौलत मन्द और बा ने'मत होते हैं, हां अकसर येह है कि सई करने वाले फ़क़ीर व **क़ल्लाश**[2] नहीं होते और सई न करने वाले अकसरो बेशतर फ़क़ीर होते हैं, येह इस लिये ताकि तुम्हें मा'लूम हो कि इ़ज़्ज़त

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते। (پ۶، المائدة:۶۵)

2 .....मुफ़्लिस।

व हि़क्मत वाले ख़ुदा की तदबीर व तक़्दीर इसी त़रह़ जारी है। अबू बक्र मुह़म्मद बिन साबिक़ सक़ल्ली वाइज़े शाम ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

(١) كَمْ مِنْ قَوِيٍّ قَوِيٍّ فِيْ تَقَلُّبِهٖ مُهَذَّبِ الرَّأْيِ عَنْهُ الرِّزْقُ مُنْحَرِفُ

(٢) وَ كَمْ ضَعِيفٍ ضَعِيفٍ فِيْ تَقَلُّبِهٖ كَاَنَّهُ مِنْ خَلِيْجِ الْبَحْرِ يَغْتَرِفُ

(٣) هٰذَا دَلِيْلٌ عَلٰى اَنَّ الْاِلٰهَ لَهُ فِي الْخَلْقِ سِرٌّ خَفِيٌّ لَّيْسَ يَنْكَشِفُ

तर्जमा : (1) बहुत से क़वी लोग जो तदबीर में बहुत होशयार व चालाक होते हैं रिज़्क़ से मह़रूम होते हैं।

(2) और बहुत से ज़ईफ़ुल बदन तदबीर में निकम्मे दुन्या उन के पास इस त़रह़ आती है जैसे वोह समन्दर की तह से दोनों हाथों से हीरे और जवाहिरात निकाल रहे हैं।

(3) येह इस बात की दलील है कि रिज़्क़ के बारे में मख़्लूक़ के साथ ख़ुदाए तआ़ला का एक मख़्फ़ी तअ़ल्लुक़ है जिसे समझने से इन्सानी दिमाग़ क़ासिर है।

सुवाल : क्या किसी सह़रा में बिग़ैर ज़ादे राह के दाख़िल होना दुरुस्त है? और बिग़ैर किसी साज़ो सामान के इसे तै करने का इरादा ठीक है?

जवाब : जान ले कि अगर तेरा दिल तवक्कुल में **मोह़कम**[1] हो और तुझे ख़ुदा के वा'दे पर मुकम्मल यक़ीन हो तो तेरे लिये बे ज़ादे राह **सह़रा नुर्दी**[2] दुरुस्त है वरना अ़वाम की त़रह़ तू भी ज़ादे राह ले कर चल।

और मैं ने इमाम अबुल मआ़ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सुना कि आप फ़रमाते थे : "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के साथ उसी

---

1 .....मज़्बूत़। 2 .....बयाबानों में फिरना।

दस्तूर से पेश आए जो उस का लोगों के साथ है तो खुदा भी उस के साथ उसी त़रह़ पेश आता है जिस त़रह़ लोग उस से पेश आते हैं।"

आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का येह इरशाद बहुत दुरुस्त है और ग़ौर करने वाले को इस से बहुत फ़ाइदे ह़ासिल हो सकते हैं।

सुवाल : तुम्हारा येह कहना कि बिग़ैर ज़ादे राह मह़ज़ तवक्कुले खुदा पर सफ़र इख़्तियार करना दुरुस्त है ठीक नहीं क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में हुक्म दिया है :

وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ؗ(1)

और ज़ादे राह ले कर सफ़र में निकलो और बेहतर ज़ाद तक़्वा है।

जवाब : इस आयत की तफ़्सीर में दो क़ौल हैं :

एक येह कि ज़ाद से मुराद ज़ादे आख़िरत है इसी लिये इस के साथ फ़रमाया : (2)"خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى" न की दुन्यवी अस्बाब और मा'मूली सफ़रे ख़र्च वग़ैरा।

दूसरा क़ौल येह है कि जब बा'ज़ लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में ह़ज को रवाना होते थे तो बिग़ैर सफ़रे ख़र्च रवाना होते थे, रास्ते में लोगों से मांगते थे और अपनी मोह़ताजी का शिक्वा शिकायत करते थे, लोगों को तंग करते थे और इसरार के साथ उन से मांगते थे, तो ऐसे लोगों को हुक्म दिया गया कि ज़ादे राह ले कर ह़ज को जाएं और उन्हें तम्बीह की गई कि खुद कमाए हुवे माल के साथ ह़ज

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तौशा (सफ़र का ख़र्च) साथ लो कि सब से बेहतर तौशा परहेज़गारी है। (پ٢،البقرة:١٩٧)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सब से बेहतर तौशा परहेज़गारी है। (پ٢،البقرة:١٩٧)

करना ही अस्ल ह़ज है, लोगों के सहारे पर घर से निकल खड़ा होना और रास्ते में हर एक से ह़ज का ज़िक्र कर के मांगते फिरना और फिर इस ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ ह़ज करना बे फ़ाइदा है।

सुवाल : क्या मुतवक्किल शख़्स भी सफ़र में ज़ादे राह ले कर चलता है ?

जवाब : बसा अवक़ात मुतवक्किल आदमी भी ज़ादे राह अपने हमराह ले कर रवाना होता है लेकिन उस का दिल इस बात पर मोह़कम नहीं होता कि येही मेरा रिज़्क़ है और सफ़र में इसी पर मेरा सहारा है बल्कि उस का दिल ख़ुदा के साथ मोह़कम होता है और उस का भरोसा ख़ुदा पर होता है और वोह दिल में कह रहा होता है कि मेरा रिज़्क़ रोज़े अज़ल से मेरे ह़िस्से में लिखा जा चुका है और फ़िरिश्ते मेरे ह़िस्से का रिज़्क़ लिख कर फ़ारिग़ हो चुके हुवे हैं और अल्लाह तआ़ला अगर चाहे तो इस रिज़्क़ के ज़रीए़ मेरे बदन को क़ाइम रखे या सफ़र में कोई और ज़रीआ़ पैदा कर दे।

और बसा अवक़ात मुतवक्किल शख़्स अपने हमराह ज़ादे राह इस निय्यत से भी ले लेता है कि इस से किसी मुसलमान की इआ़नत करेगा या किसी और शै को फ़ाइदा पहुंचाएगा।

लेकिन दर ह़क़ीक़त ज़ादे राह ले कर चलने में अस्ल चीज़ दिल की ह़ालत है, तेरे दिल में येह बात होनी चाहिये कि ख़ुदा ने हर ह़ाल में मुझे रिज़्क़ देने का वा'दा फ़रमाया है और वोह मेरा कफ़ील और ज़ामिन है, इस लिये कि बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो ख़र्च तो ले कर चलते हैं मगर उन का तवक्कुल मुकम्मल तौ़र पर ख़ुदा पर होता है न कि उस ख़र्च पर और बहुत से ज़ाहिरन ख़र्च ले कर तो नहीं चलते लेकिन उन का दिल इसी में गिरिफ़्तार होता

है खुदा पर उन्हें कोई भरोसा नहीं होता, तो मा'लूम हुवा कि अस्ल बात दिल की है। इस उसूल को अच्छी त़रह़ ज़ेहन नशीन कर ले क्यूंकि येह बहुत मुफ़ीद है।

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) और **सलफ़े सालिह़ीन**[1] (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) हमेशा ज़ादे राह ले कर सफ़र करते थे, तुम कैसे कहते हो कि ज़ादे राह की ज़रूरत नहीं ?

जवाब : हम ने कब कहा है कि सफ़र में ज़रूरी सामाने खुर्दो नोश ले कर चलना ह़राम है बल्कि ह़राम येह चीज़ है कि मुसाफ़िर इस ह़क़ीर सामान को ही अपना सहारा समझे और खुदा तआ़ला पर तवक्कुल न करे, फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में क्या ख़याल है ? खुदा ने कुरआने मजीद में आप को हुक्म दिया :

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ (2) *ऐ ह़बीब ! तू अपने रब पर ही भरोसा रख।*

क्या आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जो खाना या पानी या दिरहम या दीनार साथ ले कर सफ़र इख़्तियार करते थे तो अपने खुदा के इस मज़्कूरा हुक्म की नाफ़रमानी की ? حَاشَا وَ كَلَّا(3) आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से क़त़्अ़न नाफ़रमानी सादिर नहीं हुई, बल्कि दिरहमो दीनार के होते हुवे भी यक़ीनन आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का दिल खुदा के साथ था और यक़ीनन आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का तवक्कुल खुदा पर ही था, जैसा कि उन के रब ने उन्हें हुक्म दिया

1....पहले के बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن। 2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा। (پ۱۹،الفرقان:۵۸) 3.....हरगिज़ नहीं।

था क्यूंकि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही वोह बे मिस्ल ज़ात हैं जिस ने दुन्या की किसी चीज़ की त़रफ़ क़तअ़न इल्तिफ़ात नहीं फ़रमाया, और तमाम ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियों की त़रफ़ जब कि आप को पेश की गईं नज़र उठा कर नहीं देखा बल्कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का और सलफ़े सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) का सफ़रे ख़र्च ले कर चलना दूसरों की इआ़नत व दस्तगीरी की निय्यत से था, इस लिये नहीं था कि वोह ज़ादे राह को ही مَعَاذَ اللّٰه अपना सहारा समझते थे और ख़ुदा पर उन्हें कोई भरोसा नहीं था।

तो मा'लूम हुवा कि अस्ल ए'तिबार इरादे और क़स्द का है इस को ख़ूब ज़ेहन नशीन कर और ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो और बात को पूरी त़रह़ ज़ेहन में बिठा, ताकि ख़ुदा तुझे नेकी की राह दिखाए।

सुवाल : क्या ज़ादे राह ले कर चलना अफ़्ज़ल है या न ले कर।

जवाब : ज़ादे राह सफ़र में ले कर चलना या न ले कर चलना ह़ालात व अश्ख़ास की बिना पर मुख़्तलिफ़ है, अगर एक **मुक़्तदाए क़ौम**[1] ज़ादे राह इस इरादे से ले कर चले कि लोगों पर इस का **जवाज़** व **इबाह़त**[2] रोशन व वाज़ेह़ हो, या सफ़र में दूसरे मुसलमान भाई की इआ़नत की निय्यत हो, या किसी ख़स्ता ह़ाल की फ़रयाद रसी मत़लूब हो, या इसी क़िस्म का कोई और नेक इरादा हो तो ज़ादे राह ले कर चलना अफ़्ज़ल है और अगर कोई शख़्स अकेला सफ़र को रवाना हो जिस का तवक्कुल ख़ुदा तआ़ला पर क़वी और मज़बूत़ हो और उसे येह ख़दशा हो कि ज़ादे राह ख़ुदा से ग़ाफ़िल न कर दे तो ऐसे शख़्स के लिये तर्के ज़ाद बेहतर है। इस फ़र्क़ को अच्छी त़रह़ मा'लूम कर ले। ख़ुदा तुझे नेकी की तौफ़ीक़ इनायत करे।

1 .....क़ौम का रहनुमा। 2 .....जाइज़ होना।

दूसरा आ़रिज़ा :

सफ़र के ख़त़रात का तसव्वुर और ख़याल

इस आ़रिज़े से मह़फ़ूज़ रहने की सूरत येह है कि तू अपना मुआ़मला पूरे त़ौर पर ख़ुदाए तआ़ला के ह़वाले कर दे, और येह दो वजह से बेहतर है :

एक तो दिल को उसी वक़्त इत़मीनान और चैन नसीब हो जाएगा इस लिये कि वोह उमूर जो अहम हों और उन की अच्छाई या बुराई तुम पर वाज़ेह़ न हो तो ऐसे उमूर की फ़िक्र में मुज़्त़रिब और **शूरीदा ख़ात़िर**[1] रहोगे।

और जब तुम ने अपने हर मुआ़मले को ख़ुदा के ह़वाले कर दिया तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि اِنْ شَآءَ اللہ تعالٰی सलाह़ व ख़ैर ही नसीब होगी, तो अपने मुआ़मलात सिपुर्दे ख़ुदा करने में तुम ख़त़रे और हर क़िस्म की तश्वीश से मह़फ़ूज़ हो जाओगे और चैन व इत़मीनान मयस्सर आ जाएगा, और येह अम्न व राह़त और दिल का इत़मीनान बहुत बड़ी ने'मत है, मेरे शैख़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة अकसर दफ़्आ़ मजलिस में फ़रमाया करते थे :

"دَعِ التَّدْبِيْرَ اِلٰى مَنْ خَلَقَكَ تَسْتَرِحْ" अपनी तदबीर उस ज़ात के सिपुर्द कर दे जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया तू राह़त में हो जाएगा।

मेरे शैख़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने मुन्दरिजए ज़ैल तीन अश्आ़र भी इसी सिलसिले में कहे हैं, फ़रमाते हैं :

(۱) اِنَّ مَنْ كَانَ لَيْسَ يَدْرِىْ اَفِى الْمَحْبُوْبِ ... نَفْعٌ لَّهُ اَوِ الْمَكْرُوْهِ

(۲) لَحَرِىٌّ بِاَنْ يُّفَوِّضَ مَا يَعْجِزُ عَنْهُ ... اِلَى الَّذِىْ يَكْفِيْهِ

(۳) لِلْاِلٰهِ الْبَرِّ الَّذِىْ هُوَ بِالرَّاحَةِ ... اَحْنٰى مِنْ اُمِّهٖ وَ اَبِيْهِ

---

1 .....परेशान।

तर्जमा : (1) जो शख़्स येह न जानता हो कि मेरा नफ़्अ़ मेरी मह़बूब शै में है या उस में जो मुझे ना पसन्द है।
(2) तो चाहिये कि उस काम को जिसे वोह ह़ल करने से आ़जिज़ है उस ज़ात के ह़वाले करे जो हर ह़ाजत में काफ़ी है।
(3) या'नी ख़ुदा तआ़ला के सिपुर्द करे जो एह़सान फ़रमाने वाला है और मां-बाप से भी **ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला है।**[1]

तफ़्वीज़ इलल्लाह[2] का दूसरा फ़ाइदा येह है कि आयिन्दा भी तुम सलाह़ व ख़ैर में रहोगे और येह इस लिये कि मुआ़मलात व ह़ालात नताइज व अ़वाक़िब के ए'तिबार से मुब्हम और **मख़्फ़ी** हैं क्यूंकि बहुत बुराइयां ऐसी हैं जो सूरतन ख़ैर मा'लूम होती हैं और बहुत से ऐसे नुक़्सान देह उमूर हैं जो बज़ाहिर ज़ेवरे नफ़्अ़ से आरास्ता दिखाई देते हैं और बहुत ऐसे हैं जो देखने में शहद मा'लूम होते हैं और तुम असरार व अ़वाक़िब से बे ख़बर हो, तो जब तुम किसी अम्र को अ़ज़्म से और अपने इख़्तियार से शुरूअ़ करोगे तो बहुत जल्द हलाकत व तबाही में पड़ जाओगे और तुम्हें शुऊ़र तक नहीं होगा।

ह़िकायत

एक आ़बिद के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि वोह रब तआ़ला से येह सुवाल किया करता था कि उसे इब्लीसे लईन दिखाया जाए, **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से येही जवाब मिलता था कि इस ख़याल को छोड़ और आ़फ़िय्यत व अम्न की दुआ़ किया कर, मगर वोह अपने इसी ख़याल पर मुसिर्र था। आख़िर एक रोज़ **अल्लाह** तआ़ला ने इब्लीस को उस आ़बिद पर ज़ाहिर

---

1 .....इस तीसरे मिस्रे के तर्जमे के कुछ अल्फ़ाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान न थे लिहाज़ा इस में कुछ तरमीम व इज़ाफ़ा किया गया है। (इल्मिय्या)
2 .....अपने मुआ़मलात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करने।

कर दिया। जब आ़बिद ने इब्लीस को देखा तो उसे मारने का इरादा किया। इब्लीस ने कहा : अगर तू ने सो साल ज़िन्दा न रहना होता तो मैं तुझे हलाक कर देता और तुझे सख़्त सज़ा देता। आ़बिद अपनी उ़म्र सो साल सुन कर मग़रूर हो गया और दिल में कहने लगा : मेरी उ़म्र बहुत है, अभी आज़ादी से गुनाह करता हूं, आख़िर वक़्त पर तौबा कर लूंगा, चुनान्चे वोह फ़िस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तला हो गया इ़बादत तर्क कर दी और हलाक हो गया।

ऐ मुख़ात़ब ! तेरे लिये इस ह़िकायत में इस अम्र पर तम्बीह है कि तू अपने इरादे की पैरवी न करे और अपने मत़लूबे नफ़्सानी के हुसूल में इसरार से काम न ले और इस ह़िकायत से तुझे येह सबक़ भी मिलता है कि **तूले अमल**(1) से बचे क्यूंकि तूले अमल अ़ज़ीम तरीन आफ़त है, एक शाइ़र ने क्या अच्छा कहा है :

وَ اِيَّـــاكَ الْـــمَـــطَـــامِـعَ وَ الْاَمَـــانِـىْ فَـــكَـــمْ اُمْـنِـيَّةٍ جَـلَـبَـتْ مَـنِـيَّـــهْ

तर्जमा : त़म्अ़ की चीज़ों और लम्बी उम्मीदों से बचो क्यूंकि बहुत उम्मीदें ऐसी होती हैं जिन के पीछे इन्सान लुक़्मए मौत बन जाता है।

लेकिन जब तुम अपना मुआ़मला **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى के सिपुर्द कर दोगे और उस से सुवाल करोगे कि वोह तुम्हारे लिये ऐसी शै का इन्तिख़ाब करे जिस में तुम्हारी बेहतरी हो तो ज़रूर तुम्हें ख़ैर और दुरुस्ती ही नसीब होगी और तुम नेक काम से ही हमकिनार होगे। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने एक सालेह़ बन्दे (ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام) के अल्फ़ाज़ नक़्ल करते हुवे फ़रमाया :

1.....लम्बी उम्मीदें।

وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿ۚ۴۵﴾ (1)

मैं अपना मुआ़मला अल्लाह के ह़वाले करता हूं बेशक वोह बन्दों को देखता है, तो अल्लाह तआ़ला ने उसे उन की बुरी चालों से मह़फ़ूज़ रखा और फ़िरऔ़नियों को दुख देने वाले अ़ज़ाब ने घेरा।

तुम देखते नहीं कि रब तआ़ला ने किस वज़ाह़त से अपने मुआ़मलात उस के ह़वाले करने पर ह़िफ़ाज़त, दुश्मनों के ख़िलाफ़ इमदाद और बन्दे का अपनी मुराद में कामयाब होने का ज़िक्र फ़रमाया है? इस में ख़ूब ग़ौर करो। अल्लाह तआ़ला तुम्हें भलाई की तौफ़ीक़ बख़्शे।

सुवाल : तफ़्वीज़ का मा'ना और इस का हुक्म वाज़ेह़ फ़रमाया जाए।

जवाब : जानना चाहिये कि यहां दो चीज़ें हैं जिन के समझ लेने से बात वाज़ेह़ हो जाएगी : एक तो तफ़्वीज़ का मक़ाम और इस का हुक्म और दूसरी तफ़्वीज़ का मा'ना (इस की ता'रीफ़) और तफ़्वीज़ की ज़िद का बयान।

मक़ामे तफ़्वीज़ की तफ़्सील येह है कि मुरादें तीन क़िस्म हैं

एक वोह मुराद जिस को तुम यक़ीनन और क़त़्अ़न बुरी और ख़राब समझते हो, तुम्हें इस के बुरा होने में ज़रा शक नहीं होता जैसे जहन्नम और अ़ज़ाब और अफ़्आ़ल में कुफ़्र और बिदअ़त और मा'सिय्यत वग़ैरा। इन उमूरे मज़्कूरा का इरादा करने की तो क़त़्अ़न कोई गुन्जाइश और इजाज़त नहीं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपने काम अल्लाह को सोंपता हूं बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उन के मक्र की बुराइयों से और फ़िरऔ़न वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा। (پ۲٤،المؤمن:٤٤،٤٥)

दूसरी वोह मुराद जिस के अच्छा और बेहतर होने का तुम्हें मुकम्मल यक़ीन है जैसे जन्नत, ईमान और सुन्नत वग़ैरा इन उमूर का इरादा करना ज़रूरी और लाज़िम है यहां तफ़्वीज़ जाइज़ नहीं, इस लिये कि इन उमूर में कोई ख़त़रा नहीं और न ही इन के बेहतर और अच्छा होने में कोई शको शुबा है।

तीसरी वोह शै है जिस के मुतअ़ल्लिक़ तुम **ह़तमन**[1] नहीं जानते कि इस में तुम्हारे लिये भलाई है या ख़राबी, और फ़ाइदा है या नुक़्सान, जैसे नवाफ़िल और मुबाह़ उमूर, इन उमूर का तुम यक़ीनी और क़त़ई इरादा नहीं कर सकते तो ऐसे उमूर का इरादा करते वक़्त اِنْ شَآءَاللّٰہ ज़रूर कहा जाए, बिला اِنْ شَآءَاللّٰہ इन उमूर का इरादा दुरुस्त नहीं बिला اِنْ شَآءَاللّٰہ इन उमूर का इरादा मज़मूम होगा, जिस से शरअ़न रोका गया है तो इस तह़क़ीक़ की रू से **तफ़्वीज़** का मक़ाम हर वोह शै है जिस के अन्दर तुम्हारे लिये कोई ख़त़रा हो और तुम्हें इस के बेहतर होने का यक़ीने कामिल न हो।

तफ़्वीज़ के मा'ना

हमारे बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने तफ़्वीज़ के येह मा'ना किये हैं :

هُوَ تَرْكُ اِخْتِيَارِ مَا فِيهِ مُخَاطَرَةٌ اِلَى الْمُخْتَارِ الْمُدَبِّرِ الْعَالِمِ بِمَصْلِحَةِ الْخَلْقِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُو

तफ़्वीज़ के मा'ना हैं हर वोह शै जिस में ख़त़रा हो उस में अपने इरादे और इख़्तियार को तर्क कर देना और मुदब्बिरे काइनात मुख़्तारे मुत़लक़ और मख़्लूक़ के **मसालेह़**[2] जानने वाले **अल्लाह** तआ़ला के सिपुर्द कर देना।

और शैख़ अबू मुह़म्मद **सिजज़ी**[3] رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तफ़्वीज़ के येह मा'ना किये हैं :

---

(1).....यक़ीनी। (2)..... फ़ाइदे। (3).....यहां लफ़्ज़ "سنجری" (संजरी) था येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "سِجْزِی" (सिजज़ी) है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

"هُوَ تَرْكُ اِخْتِيَارِكَ الْمُخَاطَرَةِ عَلَى الْمُخْتَارِ لِيَخْتَارَ لَكَ مَا هُوَ خَيْرٌ لَّكَ"

तफ़्वीज़ तेरा ख़त़रे की शै में अपने इख़्तियार को तर्क कर देना और मुख़्तारे मुत़लक़ के ह़वाले कर देना है ताकि वोह मुख़्तारे मुत़लक़ तेरे लिये ऐसी चीज़ पसन्द फ़रमाए जिस में तेरी भलाई और बेहतरी हो।

और शैख़ **अबू उ़मर**[1] رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तफ़्वीज़ की येह ता'रीफ़ की है :

هُـوَ تَرْكُ الطَّمَعِ وَ الطَّمَعُ هُوَ اِرَادَةُ الشَّيْءِ الْمُخَاطِرِ بِالْحُكْمِ

या'नी तफ़्वीज़ तर्के त़म्अ़ का नाम है और त़म्अ़ ऐसी शै के इरादे का नाम है जिस में ख़त़रा हो।

तफ़्वीज़ के मा'ना में येह **मशाइख़े किराम** (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) की इबारात थीं जो नक़्ल की गईं और हमारे नज़्दीक तफ़्वीज़ के येह मा'ना हैं :

اِرَادَةُ اَنْ يَّحْفَظَ اللّٰهُ عَلَيْكَ مَصَالِحَكَ فِيْمَا لَا تَاْمَنُ فِيْهِ الْخَطَرَ

जिन उमूर में तुम को ख़त़रे का ख़ौफ़ हो ऐसे उमूर में येह इरादा कर लेना कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी मस्लह़तों और बेहतरियों की ह़िफ़ाज़त और निगहदाश्त करे, ऐसे इरादे का नाम तफ़्वीज़ है।

और तफ़्वीज़ की ज़िद त़म्अ़[2] है

और त़म्अ़ दो त़रह़ का है एक वोह जो रजा के मा'ना में है या'नी ऐसी शै का इरादा करना जिस में कोई ख़त़रा न हो या ख़त़रा हो मगर اِنْ شَآءَ الله कह लिया जाए।

येह त़म्अ़ जो रजा के मा'ना में है, **ममदूह़**[3] और ग़ैरे मज़्मूम

1.....यहां लफ़्ज़ "अबू अ़म्र" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "अबू उ़मर" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या) 2.....लालच। 3.....अच्छा।

है, जैसा कि परवर दगारे आ़लम جَلَّ وَ عَلَا ने त़म्अ़ को इस मा'ना में कुरआने मजीद में इस्ति'माल फ़रमाया है, इरशाद होता है :

وَالَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓــٴَـتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِؕ(۸۲) (1)

और वोह ज़ात जिस से मुझे उम्मीद है कि रोज़े क़ियामत वोह मेरी तमाम ख़त़ाएं बख़्श देगा।

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰیٰنَاۤ (2)

हमें पूरी उम्मीद है कि हमारा परवर दगार हमारी तमाम ख़त़ाएं मुआ़फ़ कर देगा।

और हम यहां इस **त़म्ए़ मह़मूद**(3) में बात नहीं करते।

दूसरा त़म्अ़ मज़मूम है जिस के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है :

"اِیَّاکُمْ وَ الطَّمَعَ فَاِنَّہٗ فَقْرٌ حَاضِرٌ"(4) अपने आप को त़म्अ़ से बचाओ क्यूंकि वोह एक बिल फे'ल मोह़ताजी और तंगदस्ती है।

और कहा गया है कि

"ھَلَاکُ الدِّیْنِ وَ فَسَادُہُ الطَّمَعُ وَ مَلَاکُہُ الْوَرَعُ" या'नी दीन की हलाकत और इस का फ़साद त़म्अ़ में है और दीन की ह़िफ़ाज़त और पुख़्तगी वरअ़ और तक़्वा में है। और हमारे शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है कि

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिस की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़त़ाएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा। (پ۱۹، الشعراء:۸۲) 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हमें त़म्अ़ है कि हमारा रब हमारी ख़त़ाएं बख़्श दे। (پ۱۹، الشعراء:۵۱)

3 .....अच्छी त़म्अ़।

4 ......المعجم الاوسط، ۵/۴۰۳، حدیث: ۷۷۵۳، بتغیر۔

तम्ए़ मज़्मूम दो चीज़ें हैं :

سُکُوْنُ الْقَلْبِ اِلٰی مَنْفَعَةٍ مَّشْکُوْکَةٍ وَّ الثَّانِیْ اِرَادَةُ الشَّیْءِ مُخَاطَرَةً بِالْحُکْمِ

एक ऐसी शै से सुकूने क़ल्ब ह़ासिल करना जिस का नफ़्अ़ मशकूक हो, दूसरी ऐसी चीज़ का इरादा करना जिस में ख़त़रा हो।

और याद रखो ! कि त़म्ए़ मज़्मूम में जो इरादा पाया जाता है येही तफ़्वीज़ के मुतज़ाद और मुख़ालिफ़ है।

उन उमूर का बयान जिन का तसव्वुर **"तफ़्वीज़ इलल्लाह"** का **मूजिब**(1) है :

﴾1﴿ उमूर और मुआ़मलात में ख़त़रा।

﴾2﴿ हलाकत का इमकान।

﴾3﴿ फ़साद और ख़राबी का ख़ौफ़।

﴾4﴿ इन्सान का ख़त़रे की चीज़ों से मह़फ़ूज़ रहने से आ़जिज़ होना।

﴾5﴿ इन्सान की ग़फ़्लत और नादानी के बाइ़स ख़त़रे की चीज़ों से न बच सकना।

अगर तुम इन पांच उमूर को सन्जीदगी से ज़ेह्न में ह़ाज़िर करोगे तो तुम्हारे दिल में ख़्वाह मख़्वाह इरादा पैदा होगा कि अपने तमाम उमूर व मुआ़मलात **अह़्-कमुल ह़ाकिमीन** के ह़वाले कर देने चाहिये और बिला اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی कहे इन का इरादा नहीं करना चाहिये, हां अगर इन उमूर में ख़ैरो सलाह़ का यक़ीने कामिल हो तो फिर बिला तश्वीश इरादा करने में कोई ह़रज नहीं। وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق

सुवाल : तुम जिस ख़त़रे का बार बार ज़िक्र करते हो कि इस की वजह से **"तफ़्वीज़ुल उमूरि इलल्लाह"**(2) ज़रूरी है आख़िर वोह ख़त़रा क्या है ?

1.....सबब। 2.....तमाम उमूर अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द करना।

जवाब : जान लो कि ख़त़रा दो त़रह़ का है :

एक तो ख़त़रए शक, कि शायद येह काम होगा या नहीं और शायद मैं इस तक पहुंच सकूं या न, इसी ख़त़रए शक के बाइ़स اِنْ شَآءَاللّٰه कहना ज़रूरी है।

दूसरा ख़त़रए फ़साद, कि तुम्हें येह यक़ीन न हो कि इस में तुम्हारे लिये सलाह़ और बेहतरी है, इस ख़त़रे की बिना पर तफ़्वीज़ ज़रूरी है।

फिर ख़त़रे की ता'रीफ़ में अइम्मए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की इ़बारात मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ अइम्मए किराम ने येह ता'रीफ़ की है कि

"ख़त़रा वोह शै है जिस के ग़ैर में नजात हो और इस के करने से इर्तिकाबे गुनाह का इमकान हो।"

इस मा'ना की रू से ईमान, इस्तिक़ामत और सुन्नत में कोई ख़त़रा या ख़दशा नहीं क्यूंकि इन के बिग़ैर नजात नामुमकिन है और येह भी ज़ाहिर है कि "**इस्तिक़ामतु अ़लश्शरअ़**"[1] किसी इर्तिकाबे गुनाह का बाइ़स नहीं लिहाज़ा ईमान, इस्तिक़ामत और सुन्नत का इरादा यक़ीनन होना चाहिये।

हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "**ख़त़र फ़िल फ़े'ल**" की येह तशरीह़ फ़रमाई है कि

"ख़त़रा वोह शै और वोह अम्रे आ़रिज़ है जिसे बा'ज़ अवक़ात अस्ल फ़े'ल तर्क कर के अदा करना पड़े और उस वक़्त अस्ल फ़े'ल की बजाए उस अम्रे आ़रिज़ को अदा करना ज़ियादा बेहतर हो।"

ख़त़रे की येह ता'रीफ़ मुबाह़ात, सुनन और फ़राइज़ को भी शामिल है। इस **इजमाल**[2] की तफ़्सील यूं समझो कि एक शख़्स का वक़्ते नमाज़ तंग हो चुका हो और उस ने उसे अदा करने का

---

1 .....शरीअ़त पर इस्तिक़ामत। 2 .....मुख़्तसर।

इरादा कर लिया हो, ऐ़न उस वक़्त वोह शख़्स कहीं जलती आग या दरया में गिर पड़ा, तो ऐसी सूरत में उस का क़स्दे नमाज़ के बजाए अपने आप को बचाना ज़रूरी और **लाबुद्दय**(1) है। इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ जब ख़त़रे का तअ़ल्लुक़ मुबाह़ात, सुनन और फ़राइज़ से भी हो गया तो इन का भी **क़त़ई**(2) इरादा करना दुरुस्त नहीं बल्कि साथ اِنْ شَآءَاللّٰه कहना चाहिये।

सुवाल : येह कैसे हो सकता है कि रब तआ़ला बन्दे पर एक काम फ़र्ज़ करे और उस के तर्क पर वई़द फ़रमाए फिर उस बन्दे के लिये उस फ़े'ल में कोई भलाई और बेहतरी न हो ?

जवाब : हमारे शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया है कि

"**अल्लाह** तआ़ला बन्दे पर जो चीज़ लाज़िम और फ़र्ज़ करता है बन्दे के लिये ज़रूर उस में भलाई और बेहतरी होती है जब कि वोह अ़वारिज़ और रुकावटों से ख़ाली हो, हां **अल्लाह** तआ़ला किसी लाज़िम और ज़रूरी फ़े'ल में इस त़रह़ तंगी नहीं फ़रमाता कि उस से किसी और त़रफ़ **उ़दूल**(3) न हो सके और ज़रूर हर फ़र्ज़ और लाज़िम फ़े'ल में बन्दे के लिये सलाह़ और बेहतरी **मुज़्मर**(4) है बहुत दफ़्आ़ ऐसा होता है कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इस फ़र्ज़ और लाज़िम फ़े'ल से उ़दूल के अस्बाब पैदा हो जाते हैं और ऐसे ह़ालात में एक वाजिब को तर्क कर के दूसरे वाजिब को इख़्तियार करना बेहतर और औला हो जाता है।

जैसा कि हम ज़िक्र कर आए हैं, ऐसे अस्बाब के पेश आने पर बन्दा तर्के फ़र्ज़ पर **माख़ूज़**(5) नहीं होगा बल्कि अज्रो सवाब मिलेगा, येह अज्रो सवाब तर्के फ़र्ज़ से नहीं बल्कि दूसरा वाजिब अदा करने की वजह से है।

1.....ज़रूरी। 2.....यक़ीनी। 3.....रूगर्दानी। 4.....पोशीदा। 5.....बाज़ पुर्स में मुब्तला।

और मैं ने अपने शैख़ और इमाम को कहते सुना है कि तमाम फ़राइज़ जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किये हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात वग़ैरा इन में यक़ीनन बन्दे के लिये सलाह़ और ख़ैर है, इस लिये इन की बजा आवरी के इरादे के वक़्त اِنْ شَآءَاللّٰہ कहने की ज़रूरत नहीं बल्कि इन का यक़ीनन और क़त़्अ़न इरादा होना चाहिये और हमारे शैख़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि आख़िरे कार तमाम मशाइख़ (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) का इस पर इत्तिफ़ाक़ हो चुका है, इस ए'तिबार से जब **फ़राइज़** व वाजिबात ख़त़्रे के हुक्म से ख़ारिज हो गए तो सिर्फ़ मुबाह़ात व नवाफ़िल ही इस **मह़ल्ले ख़त़्रा**[1] में रहे। हमारी येह बह़्स इस बाब में मुश्किल तरीन बह़्स है। وَبِاللّٰہِ التَّوْفِیْق

सुवाल : क्या अपने जुमला उमूर को ह़वालए ख़ुदा करने वाला हलाकत और फ़साद वग़ैरा उमूर से मामून व मह़फ़ूज़ हो जाता है? ह़ालांकि दुन्या **दारुल मसाइब व आलाम**[2] है!

जवाब : अग़्लब[3] येही है कि ऐसा शख़्स इन ख़त़्रात से मह़फ़ूज़ रहता है, हां ! नादिर और क़लील त़ौर पर कभी इस के ख़िलाफ़ भी हो जाता है जिस से वोह **ख़ुज़्लान व अब्तरी**[4] में मुब्तला हो जाता है और **दरजए तफ़्वीज़** से गिर जाता है **शैख़ अबू ड़मर**[5] رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने यूं ही फ़रमाया है।

और कहा गया है कि ऐसे शख़्स को उन उमूर में जो उस ने ह़वालए ख़ुदा किये हुवे हैं भलाई और दुरुस्ती ही पेश आती है, नादिर त़ौर पर भी वो ज़िल्लत व रुस्वाई वग़ैरा में मुब्तला नहीं

1.....ख़त़्रे की जगह। 2.....मुश्किलात और तकालीफ़ का घर। 3.....ज़ियादा ग़ालिब। 4.....ज़िल्लत व पस्ती। 5.....यहां लफ़्ज़ "अबू अ़म्र" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "अबू ड़मर" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

होता। हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नज़दीक येह क़ौल ज़ियादा पसन्दीदा है इस लिये कि अगर तफ़्वीज़ के ज़रीए महालिक और मफ़ासिद से मह़फ़ूज़ रहने की उम्मीद न हो तो तफ़्वीज़ (या'नी अपने उमूर को ह़वालए ख़ुदा करने) से फ़ाइदा ही क्या !

सुवाल : क्या ख़ुदा तआ़ला पर वाजिब है कि **मुफ़व्विज़**[1] के लिये अफ़्ज़ल चीज़ ही मुहय्या करे ?

जवाब : येह अम्र **मुत्तफ़क़ुन अ़लय**[2] है कि बारी तआ़ला पर किसी शै का **ईजाब**[3] मुह़ाल और नामुमकिन है और बन्दों के लिये **अल्लाह** तआ़ला पर कोई शै वाजिब और लाज़िम नहीं, कभी ऐसा होता है कि **अल्लाह** तआ़ला ब तक़ाज़ाए ह़िक्मत ऐसी चीज़ मुक़द्दर कर देता है जो ह़क़ीक़त में बेहतर और **अस्लह़**[4] होती है मगर बज़ाहिर बन्दे की नज़र में वोह अफ़्ज़ल और आ'ला नहीं होती, देखिये !

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किबार (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) के लिये **लैलतुत्ता'रीस**[5] में दिन चढ़ आने तक नींद मुक़र्रर कर दी यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) की रात की नमाज़ (तहज्जुद) और नमाज़े फ़ज्र फ़ौत हो गई, ह़ालांकि नींद के बजाए नमाज़ की अदाएगी अफ़्ज़ल और बेहतर थी। इसी त़रह़ बसा अवक़ात **अल्लाह**

1.....अपने उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करने वाले। 2.....सब का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है। 3 .....वाजिब होना। 4 .....ज़ियादा अच्छी। 5.....ग़ज़्वए ख़ैबर से वापसी पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने एक मक़ाम पर पड़ाव किया जहां येह वाक़िआ़ पेश आया। येह वाक़िआ़ पेश आने वाली रात को ''लैलतुत्ता'रीस'' कहते हैं।

(صحيح مسلم، كتاب المساجد...الخ، باب قضاء الصلوة الفائتة...الخ،ص ٣٤٢،حديث:٣٠٩)

तआ़ला एक बन्दे के लिये दौलत और ने'मत मुक़र्रर कर देता है, ह़ालांकि दर ह़क़ीक़त **फ़क्र**[1] इस के ह़क़ में अफ़्ज़ल होता है।

इसी त़रह़ बसा अवक़ात रब तआ़ला बन्दे के लिये बीवियां और अवलाद मुक़द्दर कर देता है ह़ालांकि दर ह़क़ीक़त उस के लिये ज़िक्रे इलाही और इबादत ज़ियादा बेहतर और अफ़्ज़ल होते हैं।

इस की मिसाल यूं समझो कि एक **ह़ाज़िक़**[2] और ख़ैर ख़्वाह त़बीब मरीज़ के लिये जव का पानी पसन्द करता है, अगर्चे मरीज़ गन्ने का निचोड़ और इस का पानी अफ़्ज़ल और उ़म्दा ख़याल करता हो, क्यूंकि उस त़बीब को मा'लूम है कि मरीज़ की इसी में इस्लाह़ है और बन्दे का मक़्सूद भी तो हलाकत से नजात है, फ़साद व हलाकत के साथ साथ मह़्ज़ ज़ाहिरी फ़ज़्लो शरफ़ और अच्छाई ह़ासिल करना मक़्सूद नहीं होता।

सुवाल : क्या **मुफ़व्विज़** (अपने जुमला उमूर ह़वालए ख़ुदा करने वाला) तफ़्वीज़ के बा वुजूद भी **मुख़्तार मुतसव्वर होगा** ?[3]

जवाब : उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक सह़ीह़ येही है कि तफ़्वीज़ से उस का इख़्तियार बात़िल और ज़ाइल नहीं होता बल्कि वोह मुख़्तार ही शुमार होगा।

तीसरा आ़रिज़ा :

क़ज़ा और इस की मुख़्तलिफ़ अक़्साम का इन्सान पर वारिद होना है

इस का इलाज सिर्फ़ येह है कि इन्सान क़ज़ाए इलाही पर राज़ी हो जाए। इस लिये तुम पर दो वजह से क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रहना ज़रूरी है :

1.....फ़क़ीर होना। 2.....माहिर। 3.....इख़्तियार दिया गया समझा जाएगा।

अव्वल : इ़बादत के लिये फ़रागत

और येह फ़रागत यूं हासिल होगी कि अगर तुम क़ज़ाए इलाही पर राज़ी न हो तो तुम्हारा क़ल्ब हमेशा **मग़मूम**[(1)] और मश्ग़ूल रहेगा कि येह बात इस त़रह़ क्यूं हुई है ? और येह काम इस त़रह़ क्यूं हो ? जब इस त़रह़ के **तफ़क्कुरात**[(2)] में तुम्हारा क़ल्ब हर वक़्त मश्ग़ूल रहेगा तो इ़बादत के लिये फ़रागत कब नसीब होगी ? इस लिये कि तुम्हारे पहलू में दिल तो सिर्फ़ एक ही है और इसे तुम ने तफ़क्कुरात व वसाविस से भर दिया हुवा है जब तुम्हारे दिल के तमाम गोशे दुन्यवी ख़यालात से पुर होंगे तो यादे ख़ुदा, उस की इ़बादत और फ़िक्रे आख़िरत के लिये कौन सा गोशा है ? जो ख़ाली होगा !

ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

“اِنَّ حَسْرَةَ الْاُمُوْرِ الْمَاضِيَةِ وَ تَدْبِيْرَ الْاٰتِيَةِ قَدْ ذَهَبَتْ بِبَرَكَةِ سَاعَتِكَ هٰذِهٖ”

तुम्हारी गुज़श्ता वाक़िआ़त पर ह़सरत और आयिन्दा की तदबीर के ख़यालात ने इस मौजूदा साअ़त की बरकत को तबाह कर दिया है ।

कामिल मुसलमान की ता'रीफ़

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ या'नी मुसलमान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 59 ब ह़वाला صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم...الخ، ۱/۱۵، حدیث:۱۰)

---

1 .....ग़मगीन । 2 .....फ़िक्रों ।

क़ज़ाए इलाही पर राज़ी होने की दूसरी वजह

क़ज़ाए इलाही पर इज़्हारे नाराज़ी से ग़ज़बे ख़ुदावन्दी का ख़त्रा है, रिवायात और अख़्बार में मज़्कूर है कि किसी नबी (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अपनी किसी तक्लीफ़ का रब तआला के दरबार में शिक्वा किया तो रब तआला की तरफ़ से वही आई कि क्या तू मेरा शिक्वा करता है ? हांलाकि मैं मज़म्मत और शिक्वा का मुस्तहिक़ नहीं हूं क्या तू ऐसी नामुनासिब बात का इज़्हार कर रहा है ? तू मेरी क़ज़ा पर नाराज़ी का इज़्हार क्यूं कर रहा है ? क्या तू येह चाहता है कि मैं तेरी ख़ातिर दुन्या बदल दूं या तेरी ख़ातिर लौहे महफ़ूज़ में तब्दीली करूं और ऐसी चीज़ तेरे वासिते **मुक़द्दर** करूं जिसे तू चाहे अगर्चे मैं उस को न चाहूं ? और ऐसी चीज़ तेरे लिये मुहय्या करूं जो तुझे पसन्द हो, मुझे पसन्द न हो ? मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर तेरे सीने में आयिन्दा कभी इस क़िस्म का ख़त्रा और वस्वसा गुज़रा तो मैं ज़रूर तुझ से नबुव्वत का मुक़द्दस लिबास उतार लूंगा और तुझे नारे दोज़ख़ में डाल दूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं।

मैं कहता हूं अक़्लमन्द शख़्स को गोशे होश से सुनना चाहिये कि रब तआला किस तरह अपने नबियों और बरगुज़ीदा बन्दों से ऐसी गुफ़्तगू फ़रमा कर **तम्बीह फ़रमा रहा**(1) है, जब वोह अपने बरगुज़ीदा और पाक बन्दों को ऐसे कलिमात कह सकता है तो ग़ैरे अम्बिया के साथ ब **तरीक़े औला**(2) ऐसी गुफ़्तगू कर सकता है।

फिर रब तआला का येह इरशाद बहुत क़ाबिले ग़ौर है कि "अगर तेरे दिल में दोबारा इस क़िस्म का ख़याल आया तो तेरी नबुव्वत छीन ली जाएगी।" जब महज़ इरादे और ख़याल पर इस क़दर सख़्त वईद और **तम्बीह**(3) फ़रमाई तो उस शख़्स पर

---

(1).....यहां लफ़्ज़ "डांट रहा" को "तम्बीह फ़रमा रहा" से तब्दील कर दिया है। (इल्मिय्या) (2).....इस से बढ़ कर। (3).....हाशिया एक ही मुलाहज़ा कीजिये।

उस के **ग़ज़ब**[1] का क्या आ़लम होगा जो बे सब्री से चीखे़ और चिल्लाए और बार बार फ़रयाद रसी के लिये बुलाए, शिक्वा करे और रब को अपनी तबाही और बरबादी के लिये आ़म लोगों के सामने पुकारे, सिर्फ़ अकेला न पुकारे बल्कि इस में अपने साथी और दोस्त भी शामिल कर ले, फिर येह उस को **तम्बीह**[2] है जिस ने सारी उ़म्र में सिर्फ़ एक बार शिक्वा किया, तो जिस की सारी उ़म्र ही रब तआ़ला के शिक्वों और शिकायतों में गुज़री हो उस का क्या अन्जाम होगा ?

फिर इस क़िस्म की तल्ख़ गुफ़्त्गू उस के साथ है जिस ने उस के दरबार में शिक्वा किया, तो जो शख़्स ग़ैरों के आगे अल्लाह तआ़ला का शिक्वा करे वोह तो सख़्त तरीन सज़ा का मुस्तह़िक़ है।

نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا وَ نَسْأَلُهٗ اَنْ يَّعْفُوَ عَنَّا وَ يَغْفِرَلَنَا

سُوْءَ اَدَبِنَا وَ يُصْلِحَنَا بِحُسْنِ نَظَرِهٖ اِنَّهٗ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ

सुवाल : क़ज़ा पर राज़ी होने के क्या मा'ना हैं और इस की ह़क़ीक़त और हुक्म क्या है ?

जवाब : हमारे उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया है :

रिज़ा गुस्सा तर्क कर देने का नाम है और गुस्सा ऐसी चीज़ को औला और बेहतर कहने का नाम है जो क़ज़ाए इलाही के ख़िलाफ़ हो और जिस का बुरा या अच्छा होना यक़ीनी न हो **सुख़्त**[3] और गुस्से में ऐसा ज़िक्र और ख़याल ज़रूरी है, तब गुस्सा **मुतह़क़्क़क़**[4] होगा।

सुवाल : क्या शुरूर व **मआ़सी**[5] अल्लाह तआ़ला की क़ज़ा व क़दर से नहीं हैं ? तो अल्लाह तआ़ला बन्दे से शर पर कैसे राज़ी होगा और उस पर शर कैसे लाज़िम करेगा ?

1.....यहां अल्लाह तआ़ला के लिए लफ़्ज़ "गुस्सा" इस्ति'माल हुवा था, फ़तावा रज़विय्या जिल्द 26, सफ़्ह़ा 457 पर इसे मन्अ़ लिखा है लिहाज़ा इसे "ग़ज़ब" से बदल दिया है। (इल्मिय्या) 2....यहां लफ़्ज़ "डांट" को "तम्बीह" से तब्दील कर दिया है। (इल्मिय्या) 3.....नाराज़ी 4.....साबित। 5..... गुनाह।

जवाब : रिज़ा का तअ़ल्लुक़ क़ज़ा से है और क़ज़ाए शर बुरा नहीं बल्कि वोह शै बुरी है जिस के साथ क़ज़ा मुतअ़ल्लिक़ होती है लिहाज़ा रिज़ा बिश्शर न पाई गई, हमारे मशाइख़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया है : जिन उमूर से क़ज़ा मुतअ़ल्लिक़ होती है वोह चार क़िस्म हैं :

﴾1﴿ ने'मत ﴾2﴿ शिद्दत ﴾3﴿ ख़ैर ﴾4﴿ शर ।

﴾1﴿ **ने'मत में क़ाज़ी** या'नी ख़ुदा तआ़ला, क़ज़ा और मक़्ज़ी (या'नी ने'मत) इन सब पर राज़ी होना वाजिब है और इस के ने'मत होने के ए'तिबार से इस का शुक्र भी वाजिब है और इस तौर पर इज़्हारे ने'मत भी ज़रूरी है जिस से ने'मत के असर का इज़्हार हो ।

﴾2﴿ **शिद्दत या'नी मुसीबत और तक्लीफ़ :** इस में भी क़ाज़ी या'नी **अल्लाह** तआ़ला उस की क़ज़ा और मक़्ज़ी या'नी इस मुसीबत और तक्लीफ़ तीनों पर राज़ी होना ज़रूरी और लाज़िमी है और इस के सख़्ती और तक्लीफ़ होने के ए'तिबार से इस पर सब्र भी वाजिब है ।

﴾3﴿ **ख़ैर या'नी भलाई और नेकी :** इस में भी मज़्कूरा तीनों अश्या पर रिज़ामन्द होना लाज़िम है और इस में परवर दगार के एह़सान का ए'तिराफ़ करना कि उस ने ख़ैर की तौफ़ीक़ दी, येह भी ज़रूरी है ।

﴾4﴿ **शर या'नी बुराई :** इस में भी क़ाज़ी या'नी ख़ुदा और क़ज़ा और मक़्ज़ी या'नी इस बुराई पर इस ए'तिबार से कि इस के साथ **अल्लाह** तआ़ला की क़ज़ा का तअ़ल्लुक़ है, रिज़ामन्द होना ज़रूरी है, हां इस ए'तिबार से उस के साथ रिज़ा का तअ़ल्लुक़ नहीं हो सकता कि वोह शर और बुराई है और उस शर का फ़ैसला शुदा और क़ज़ा शुदा होना अस्ल में **अल्लाह** तआ़ला के क़ाज़ी होने और उस की क़ज़ा की जानिब ही रुजूअ़ करता है ।

इस को यूं समझो कि मसलन तुम किसी बुरे मज़्हब पर रिज़ा का इज़्हार करो, इस ए'तिबार से कि मुझे इस का इ़ल्म और

इस की पहचान हो जाए, न इस ए'तिबार से कि वोह तुम्हारा मज़्हब हो जाए, तो इस मज़्हब का मा'लूम होना दर अस्ल तुम्हारे इल्म की त़रफ़ ही रुजूअ़ करता है तो रिज़ा और मह़ब्बत दर ह़क़ीक़त उस मज़्हबे बात़िल से नहीं बल्कि उस के इल्म के साथ है। इसी त़रह़ यहां शर पर रिज़ामन्द होने का मत़लब इस की बुराई पर रिज़ामन्द होना नहीं बल्कि उस पर रिज़ामन्द होना है कि येह भी ख़ुदा तआ़ला के मुक़द्दर करने से है।

सुवाल : क्या **राज़ी ब क़ज़ा**(1) शख़्स को ज़ियादती का त़ालिब होना दुरुस्त है?

जवाब : हां, इस निय्यत से कि मेरे लिये सलाह़ और ख़ैर में इज़ाफ़ा हो, ज़ियादा का त़ालिब होना दुरुस्त है और येह **रिज़ा बिल क़ज़ा** के ख़िलाफ़ नहीं क्यूंकि इस निय्यत के साथ ज़ियादती का त़ालिब होना, इस अम्र की दलील है कि वोह इस पर **कुल्ली**(2) त़ौर से राज़ी हो, इन्सान उसी वक़्त ज़ियादती का त़ालिब होता है जब कि वोह इस पर ख़ुश हो, लिहाज़ा वोह ज़ियादा का त़ालिब हो सकता है।

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि जब आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सामने दूध पेश किया जाता तो फ़रमाते :

"اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَ زِدْنَا مِنْهُ"(3) ऐ **अल्लाह** ! हमें इस में बरकत दे और इस में इज़ाफ़ा फ़रमा।

और अगर कोई और शै पेश होती तो फ़रमाते :

"وَزِدْنَا خَيْرًا مِنْهُ"(4) हमारे लिये इस से बेहतर में इज़ाफ़ा फ़रमा।

1.....तक़्दीर पर राज़ी रहने वाले। 2.....मुकम्मल।

3.....سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ،باب مایقول اذا شرب اللبن،٣/٤٧٥،حدیث:٣٧٣٠۔

4.....سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ،باب مایقول اذا شرب اللبن،٣/٤٧٥،حدیث:٣٧٣٠،بتغیر۔

और इन दोनों मक़ामों में कहीं भी ज़ाहिर नहीं होता कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** तआ़ला की मुक़द्दर शुदा चीज़ पर राज़ी नहीं थे।

सुवाल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह तो मन्क़ूल नहीं कि ब निय्यते ख़ैर व सलाह़ ज़ियादती चाहे, जैसा कि आप ने कहा है?

जवाब : इस त़रह़ के उमूर का तअ़ल्लुक़ क़ल्ब से होता है इस लिये उ़मूमन उन्हें ज़बान पर नहीं लाया जाता मगर वोह मुराद ज़रूर होते हैं।

चौथा आ़रिज़ा :

मसाइब और तकालीफ़

इन में कामयाबी की वाहि़द सूरत सब्र है, इस लिये ऐसे तमाम मक़ामात पर सब्र बहुत ज़रूरी है और येह दो वजह से ज़रूरी है :

﴾1﴿ ताकि इन्सान इ़बादत तक पहुंच सके और अपना मक़्सूद ह़ासिल कर सके। इस लिये कि इ़बादत का दारो मदार सब्र और मशक़्क़त बरदाश्त करने पर है, तो जो शख़्स साबिर नहीं होगा, उस से **फ़िल ह़क़ीक़त**(1) कोई नेकी अन्जाम को नहीं पहुंच सकती। येह इस लिये कि जो शख़्स ख़ुलूसे क़ल्ब से इ़बादत करेगा उसे कई त़रह़ की मशक़्क़तें, मुसीबतें और **शदाइद**(2) पेश आएंगी।

एक तो इस बिना पर कि ऐसी कोई इ़बादत नहीं जिस में मशक़्क़त न हो क्यूंकि जब तक ख़्वाहिश का **क़ल्अ़ क़म्अ़**(3) और नफ़्स पर सख़्ती न की जाए इ़बादत का कोई फ़े'ल सादिर नहीं हो सकता, इस लिये कि ख़्वाहिश और नफ़्स दोनों इन्सान को इ़बादत से रोकते हैं और नफ़्स और ख़्वाहिश पर क़ाबू पाना इन्सान के लिये मुश्किल तरीन अम्र है।

1.....ह़क़ीक़त में। 2.....तकालीफ़। 3.....ख़ातिमा।

दूसरे इस लिये कि इन्सान जब कोई नेक काम करता है तो उस में एह़तियात़ ज़रूरी है और एह़तियात़ मशक़्क़त के बिग़ैर नहीं हो सकती और किसी काम को एह़तियात़ व दुरुस्ती के साथ अन्जाम देना भी मुश्किल काम है।

तीसरे इस लिये कि दुन्या **दारे मेह़नत**[1] है, तो जो शख़्स इस में होगा उसे ज़रूर त़रह़ त़रह़ की मुश्किलात, मसाइब और तकालीफ़ पेश आएंगी, येह मसाइब कई त़रह़ के हैं :

﴾1﴿ अहलो इ़याल, रिश्तेदारों, भाइयों और दोस्तों का मरना या इन का गुम हो जाना या इन से जुदाई।

﴾2﴿ उस की अपनी ज़ात का **गूना गूं**[2] **अमराज़े मोहलिका**[3] में मुब्तला होना।

﴾3﴿ लोगों का उसे क़त्ल कर के उस की इ़ज़्ज़त बरबाद करना और उस के **ज़न व फ़रज़न्द**[4] पर **दस्त दराज़ी**[5] करना, उसे ह़क़ीर जानना, उस की ग़ीबत करना, उस पर इल्ज़ाम तराशियां करना।

﴾4﴿ माल का ज़ाएअ़ और तबाह होना।

और येह मज़्कूरा मसाइब व तकालीफ़ अपने अपने मे'यार और दरजे के मुत़ाबिक़ इन्सान को ज़ख़्मी करती हैं और इस के दिल को जलाती हैं तो इन सब तकालीफ़ में ला मुह़ाला सब्र की ज़रूरत है, वरना ग़म व अफ़्सोस और बे सब्री इन्सान को इ़बादत से बाज़ रखेगी।

चौथे येह कि त़ालिबे आख़िरत सख़्त आज़्माया जाता है और उसे शदीद मेह़नत में मुब्तला किया जाता है, जो शख़्स

---

1 .....मशक़्क़त का घर। 2 .....त़रह़ त़रह़ के। 3 .....ख़त़रनाक बीमारियों।
4 .....बीवी बच्चों। 5 .....ज़ुल्मो सितम।

अल्लाह तआ़ला के जितना क़रीब होगा उतना ही उसे मसाइब भी दुन्या में ज़ियादा दरपेश आएंगे । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है :

"اَشَدُّ النَّاسِ بَلاءً اَلْاَنْبِيَاءُ ثُمَّ الْعُلَمَاءُ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَالْاَمْثَلُ" (1)

लोगों में सब से ज़ियादा अम्बिया आज़माइश में डाले जाते हैं फिर उ़लमा फिर जो उन के क़रीब हैं फिर जो उन के क़रीब हैं ।

जो शख़्स भी नेकी का क़स्द करेगा और राहे आख़िरत इख़्तियार करेगा वोह ज़रूर इन मेह़नतों और मशक़्क़तों में मुब्तला होगा, तो जो शख़्स इन पर सब्र न कर सका और इन्हें बरदाश्त न कर सका वोह रास्ते में ही रह जाएगा और इ़बादत से मह़रूम रह जाएगा, तो इ़बादत में से कुछ ह़ासिल नहीं कर सकेगा और ख़ुदावन्दे तआ़ला ने हम को बिल्कुल वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में बताया है कि हम ज़रूर तुम को मसाइब और तकालीफ़ में आज़माइश के त़ौर पर मुब्तला करेंगे, चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

لَتُبْلَوُنَّ فِیْۤ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ۫ وَ لَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِیْرًاؕ (2)

तुम्हारी ज़रूर आज़माइश होगी तुम्हारे मालों में और तुम्हारी जानों में और तुम ज़रूर सुनोगे यहूदो नसारा और मुशरिकीन से अज़िय्यत देने वाली बातें ।

फिर फ़रमाया :

---

1 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة،٢٢١٧ـ محنة ابى ذر، ٤/٤١١، حديث:٥٥١٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक ज़रूर तम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुशरिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे । (پ٤،ال عمرٰن:١٨٦)

وَ اِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَ تَتَّقُوۡا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۱۸۶﴾ (1)

तो अगर तुम सब्र करोगे और तक़्वा इख़्तियार करोगे तो येह बहुत हिम्मत के काम हैं।

तो गोया **अल्लाह** तआ़ला इन आयात में येह फ़रमा रहा है कि अपनी जानों को मसाइब व तकालीफ़ बरदाश्त करने का **ख़ूगर**(2) बना लो, तो अगर तुम इन मसाइब में सब्र करोगे तो वाक़ेई तुम अपनी मर्दानगी का सुबूत दोगे और वाक़ेई तुम्हारे इरादे मर्दों वाले होंगे, पस जो शख़्स भी इ़बादत का अ़ज़्म करेगा उस के लिये ज़रूरी है कि पहले सब्रे अ़ज़ीम का इरादा करे और नफ़्स को मुसलसल बड़ी मुश्किलात बरदाश्त करने का आ़दी बनाए यहां तक कि मौत आ जाए वरना वोह एक ऐसी चीज़ का इरादा कर रहा है जिस का उस के पास हथयार नहीं और जिस ज़रीए़ से वोह काम अन्जाम को पहुंच सकता है वोह उस के **अ़क्स**(3) करने का क़स्द कर रहा है।

हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि जो शख़्स **त़रीक़े आख़िरत**(4) तै करने का अ़ज़्म करे वोह अपने अन्दर पहले मौत के चार रंग पैदा करे :

﴿1﴾ सफ़ेद ﴿2﴾ सुर्ख़ ﴿3﴾ सियाह ﴿4﴾ सब्ज़।

मौत का सफ़ेद रंग तो भूक है और सियाह लोगों की मज़म्मत और सुर्ख़ मुख़ालफ़ते शैत़ान और सब्ज़ **ह़वादिसे अय्याम**(5) पर सब्र करना और सब्र करने का दूसरा फ़ाइदा येह है कि इस से

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो येह बड़ी हिम्मत का काम है। (پ۴،ال عمرٰن:۱۸۶) 2.....आ़दी। 3.....ख़िलाफ़। 4 .....आख़िरत का रास्ता। 5.....रोज़ मर्रा पेश आने वाली मुश्किलात / ज़माने की मुसीबतों।

दुन्या व आख़िरत की भलाई नसीब होती है और नजात व कामयाबी से इन्सान हम किनार होता है, इरशाद है :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ (1)

जो शख़्स तक़्वा इख़्तियार करेगा अल्लाह तआ़ला उस के लिये ज़रीआ़ पैदा कर देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहां का उसे वहम व गुमान नहीं होगा।

इस आयत के मा'ना येह हैं : जो शख़्स सब्र के ज़रीए़ अल्लाह तआ़ला से डरेगा। अल्लाह तआ़ला उसे शदाइद से नजात देगा।

﴾2﴿ सब्र के ज़रीए़ इन्सान दुश्मनों पर फ़त्ह़मन्द होता है, अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

فَاصْبِرْ ؕۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾ؑ (2)

आप सब्र करें बेशक नेक अन्जाम मुत्तक़ीन का ही है।

﴾3﴿ सब्र के ज़रीए़ इन्सान अपनी मुराद पा लेता है, (3) قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ (4)

अल्लाह तआ़ला के नेक कलिमात बनी इस्राईल पर इन के सब्र की वजह से पूरे हुवे।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो। (پ۲۸،الطلاق:۲-۳)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो सब्र करो बेशक भला अन्जाम परहेज़गारों का। (پ۱۲،هود:٤۹)

3 .....अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया।

4 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तेरे रब का अच्छा वा'दा बनी इस्राईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का। (پ۹،الاعراف:۱۳۷)

कहा गया है कि जब या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **फ़िराक़**[1] के ग़म व **अन्दूह**[2] का तज़्किरा यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को लिखा तो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब में लिखा :

اِنَّ اٰبَاءَكَ صَبَرُوْا فَظَفَرُوْا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرُوْا تَظْفَرْ كَمَا ظَفَرُوْا

आप के आबाओ अजदाद ने सब्र किया तो कामयाब हुवे, आप भी सब्र करें जैसा उन्हों ने किया तो आप भी कामयाब होंगे जैसे वोह हुवे।

येह दो शे'र भी इसी सिलसिले में कहे गए हैं :

(١)لَا تَيْاَسَنَّ وَاِنْ طَالَتْ مُطَالَبَةٌ   اِذَا اسْتَعَنْتَ بِصَبْرٍ اَنْ تَرٰى فَرَجَا

(٢)اَخْلِقْ بِذِى الصَّبْرِ اَنْ يَحْظٰى بِحَاجَتِهٖ   وَ مُدْمِنُ الْقَرْعِ لِلْاَبْوَابِ اَنْ يَّلِجَا

तर्जमा : (1) मायूस हरगिज़ न हो, अगर्चे तुझे गुज़ारिश करते हुवे अ़र्सए दराज़ गुज़र जाए, जब कि तू ने सब्र से **इस्तिआनत**[3] ली हो क्यूंकि आख़िर तू ज़रूर वुस्अ़त व कुशादगी से हम किनार होगा।
(2) साबिर शख़्स कितनी बुलन्द अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा करता है यहां तक कि वोह अपने मक़्सद और ह़ाजत को पा लेता है, इसी त़रह़ **दरगाहे ईज़दी**[4] को मुसलसल दस्तक देने वाला, यहां तक कि उस की मुरादों का दरवाज़ा खुल जाता है।

﴾4﴿ सब्र का येह भी फ़ाइदा है कि इस से लोगों की पेशवाई और इन की इमामत का दरजा मिलता है, इरशादे रब्बानी है :

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ۟ (5)

और हम ने इन को इन के सब्र के बाइस लोगों का इमाम बनाया कि हमारे हुक्म से लोगों को हिदायत की तब्लीग़ करते थे।

1.....जुदाई। 2.....ग़म व अलम। 3.....मदद। 4.....ख़ुदा की बारगाह।
5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने इन में से कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बताते जब कि इन्हों ने सब्र किया। (پ٢١،السجدة:٢٤)

﴾5﴿ सब्र से इन्सान अल्लाह तआ़ला की सना का मुस्तह़िक़ होता है, इरशाद है :

اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًاؕ نِعْمَ الْعَبْدُؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ (1)

हम ने उसे साबिर पाया, वोह (अय्यूब) बहुत ही अच्छा बन्दा है और बहुत ही रुजूअ़ करने वाला है।

﴾6﴿ सब्र से जन्नत की बिशारत मिलती है और साबिर शख़्स अल्लाह तआ़ला की रह़मत और मेहरबानी का मुस्तह़िक़ होता है, फ़रमाया :

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ۙ (2)

सब्र करने वालों को जन्नत की बिशारत दो।

और फ़रमाया :

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ قف (3)

येही लोग हैं जिन पर इन के परवर दगार की सलावतें और रह़मतें नाज़िल होती हैं।

﴾7﴿ सब्र की वजह से अल्लाह तआ़ला इन्सान से मह़ब्बत करता है :

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ (4)

और अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों से मह़ब्बत करता है।

﴾8﴿ सब्र के ज़रीए़ जन्नत में दरजाते आ़लिया अ़ता़ होंगे, इरशाद होता है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है। (پ۲۳،ص:٤٤)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़ुशख़बरी सुना इन सब्र वालों को (پ۲،البقرة:١٥٥)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह लोग हैं जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत। (پ۲،البقرة:١٥٧)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र वाले अल्लाह को मह़बूब हैं। (پ٤،ال عمران:١٤٦)

أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا(1) इन लोगों को सब्र के सिले में जन्नत के अन्दर बालाख़ाने इनायत होंगे ।

﴾9﴿ सब्र के तुफ़ैल इन्सान **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से करामत और इ़ज़्ज़त का मुस्तह़िक़ होता है,(2) قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ (3) तुम्हारे सब्र करने के सिले में तुम्हारे रब का तुम को सलाम ।

﴾10﴿ सब्र के बाइ़स बन्दे को आख़िरत में बे ह़िसाब व बे शुमार सवाब अ़ता होगा जो लोगों के वह्म व गुमान से बहुत ही बालातर होगा, قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى

إِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾ (4) सब्र करने वालों को बे ह़िसाब सवाब मिलेगा ।

سُبْحَانَ اللّٰه उस बुज़ुर्ग और बरतर ज़ात ने इन्सान पर किस क़द्र करम फ़रमाया और सब्र के सिले में जो मज़्कूरा दस करामतें और फ़ज़ीलतें दुन्या व आख़िरत में परवर दगार इन्सान को अ़ता फ़रमाता है, येह मह़्ज़ एक लम्ह़ा भर सब्र के इ़वज़ में, तो तुम पर वाज़ेह़ हो गया कि दुन्या व आख़िरत की ख़ैर और भलाई सब्र में **मुज़्मर**(5) है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन को जन्नत का सब से ऊंचा बाला ख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का । (پ١٩،الفرقان:٧٥)

2.....**अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला । (پ١٣،الرعد:٢٤)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती । (پ٢٣،الزمر:١٠)

5 .....पोशीदा ।

"مَا اُعْطِیَ اَحَدٌ مِّنْ عَطَاءٍ خَیْرٍ اَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ"(1) सब्र जैसी कुशादा और वसीअ़ भलाई और ख़ैर और कोई इन्सान को अ़ता नहीं की गई।

हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "جَمِیْعُ خَیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ فِیْ صَبْرِ سَاعَةٍ" मोअमिनीन की हर क़िस्म की भलाई एक लम्हे भर के सब्र में है।

एक शाइ़र ने इस मज़्मून को ज़ैल के अश्आ़र में बहुत आ'ला पैराए में अदा किया है :

(١) اَلصَّبْرُ مِفْتَاحُ مَا یُرَجّٰی   وَ كُلُّ خَیْرٍ بِهٖ یَكُوْنُ

(٢) فَاصْبِرْ وَ اِنْ طَالَتِ اللَّیَالِیْ   فَرُبَّمَا اَمْكَنَ الْحَرُوْنُ

(٣) وَ رُبَّمَا نِیْلَ بِاصْطِبَارٍ   مَا قِیْلَ هَیْهَاتَ لَا یَكُوْنُ

तर्जमा : (**1**) सब्र हर उम्मीद की चाबी है और हर भलाई सब्र से ही ह़ासिल हो सकती है।

(**2**) तुम सब्र करो ! अगर्चे सब्र में अ़र्सए दराज़ गुज़र जाए क्यूंकि बहुत दफ़्अ़ा ऐसा होता है कि एक दुश्वार शै आख़िर को मुमकिन हो जाती है।

(**3**) और बहुत दफ़्अ़ा सब्र से ऐसे उमूर पर कामयाबी ह़ासिल कर ली गई है जिन के मुतअ़ल्लिक़ येह कहा जाता था कि इन का होना बहुत मुश्किल है।

एक शाइ़र इसी मज़्मून को यूं अदा करता है :

(١) صَبَرْتُ وَ كَانَ الصَّبْرُ مِنِّیْ سَجِیَّةً   وَ حَسْبُكَ اَنَّ اللّٰهَ اَثْنٰی عَلَی الصَّبْرِ

(٢) سَاَصْبِرُ حَتّٰی یَحْكُمَ اللّٰهُ بَیْنَنَا   فَاِمَّا اِلٰی یُسْرٍ وَّ اَمَّا اِلٰی عُسْرٍ

1 ...... صحيح البخارى ، كتاب الزكاة ، باب الاستعفاف عن المسألة ، ١ / ٤٩٦ ، حديث : ١٤٦٩ ، بتغير قليل ـ

तर्जमा : (1) मैं सब्र करता हूं और सब्र मेरी इबादत हो चुका है और तुम्हारे लिये सब्र की फ़ज़ीलत में येही काफ़ी है कि खुदा तआ़ला ने सब्र की ता'रीफ़ की है।

(2) मैं सब्र पर क़ाइम रहूंगा यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला हमारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे या आसानी का या तंगी का।

जब तुम मा'लूम कर चुके कि सब्र के येह फ़ज़ाइल हैं तो तुम पर लाज़िम है कि इस नफ़ीस और उ़म्दा ख़स्लत को अपने में पैदा करो और इस के हुसूल के लिये पूरी जिद्दो जहद करो, इस ख़स्लत के ह़ासिल हो जाने पर ज़रूर तुम कामयाब लोगों में से हो जाओगे और **अल्लाह** तआ़ला ही तौफ़ीक़ का मालिक है।

सुवाल : सब्र की ह़क़ीक़त और इस का हुक्म बयान कीजिये ?

जवाब : लुग़त में सब्र के मा'ना रोकने के हैं, जैसे कि क़ुरआन में येह लफ़्ज़ रोकने के मा'ना में इस्ति'माल हुवा है قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ (1)

अपनी ज़ात को उन लोगों के साथ रोके रखिये जो दिन रात रब की याद में मश्ग़ूल रहते हैं।

अल्लाह तआ़ला को भी साबिर इस वजह से कहा जाता है कि वोह मुजरिमीन से अ़ज़ाब रोके रखता है और जल्दी उन पर अ़ज़ाब नाज़िल नहीं करता और इस्तिलाह़न सब्र दिल की कोशिशों में से एक कोशिश का नाम है क्यूंकि सब्र नफ़्स को जज़अ़ से रोकने का नाम है और जज़अ़ की उ़लमा ने येह ता'रीफ़ की है :

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ो शाम अपने रब को पुकारते हैं। (پ۱۵،الکھف:۲۸)

ذِکْرُ اِضْطِرَابِكَ فِی الشِّدَّةِ "तक्लीफ़ के वक़्त अपनी परेशानी और इज़्तिराब का ज़िक्र करना।"

और बा'ज़ ने जज़्अ़ के येह मा'ना किये हैं कि अपने ज़ोर से तंगी से निकलने का क़स्द करना और सब्र इस जज़्अ़ के तर्क का नाम है।

सब्र किस त़रह़ पैदा किया जाए ?

इस का त़रीक़ा येह है कि आदमी शिद्दत और इस के वक़्त को याद करे और येह ख़याल करे कि न तो मेरी बे सब्री से इस में इज़ाफ़ा होगा और न कमी और न इस में तक़्दीम होगी और न ताख़ीर, तो फिर जज़्अ़ और बे सब्री से क्या फ़ाइदा ? बल्कि इस में बजाए फ़ाइदा के नुक़्सान और ख़त़रा है और अपने अन्दर सब्र का वस्फ़ पैदा करने की सब से आ'ला चीज़ येह है कि आदमी सब्र के उस इ़वज़ का तसव्वुर करे जिस का परवर दगार ने वा'दा फ़रमाया है। وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِيْق

फ़स्ल

इ़बादत के लिये फ़रागत़ ह़ासिल करने की ख़ात़िर तुम पर लाज़िम है कि इन अ़वारिज़ और इन के अस्बाब व **इ़लल**(1) को अपने रास्ते से हटा कर इस अहम और सख़्त घाटी को उ़बूर करो ! अगर तुम इन अ़वारिज़ व मवानेअ़ मज़्कूरा में मुब्तला रहे तो तुम्हें अपना मक़्सूद याद करने की मोहलत भी नहीं मिलेगी, चे जाएकि तुम मक़्सूद को पाओ और इस को ह़ासिल करो और इन अ़वारिज़ में से हर एक आ़रिज़ा जुदा नोइ़य्यत की मश्ग़ूलिय्यत व मसरूफ़िय्यत रखता है बा'ज़ बहुत जल्द इन्सान को मश्ग़ूल कर लेते हैं और बा'ज़ देर से।

(1).....वुजूहात।

फिर इन चार में से सब से बड़ा और सब से सख़्त तरीन रिज़्क़ का मुआ़मला है और इस की तदबीर है क्यूंकि मख़्लूक़ के लिये सब से अ़ज़ीम मुसीबत येह रिज़्क़ ही है जिस की तगोदो ने मख़्लूक़ात को **दरमान्दा**(1) और आ़जिज़ कर दिया है और दिलों को इबादत से ग़ाफ़िल कर रखा है और लोगों को बे पनाह तफ़क्कुरात और परेशानियों में मुब्तला कर दिया है और उ़म्रों को ज़ाएअ़ कर दिया है और येह रिज़्क़ ही लोगों के लिये बड़े बड़े गुनाहों और मआ़सी के इर्तिकाब का बाइ़स बना है और येह रिज़्क़ का मुआ़मला ही लोगों को **ख़िदमते परवर दगार**(2) से हटा कर ख़िदमते दुन्या और ख़िदमते मख़्लूक़ात का बाइ़स बना है, तो लोग इस रिज़्क़ के धन्दे में फंस कर यादे ह़क़ से ग़फ़्लत और गुनाहों की तारीकी में डूब जाते हैं और रिज़्क़ की तलाश में सर गर्दानी, परेशानी और ज़िल्लत व ख़्वारी में उ़म्रे अ़ज़ीज़ को बरबाद कर देते हैं और अल्लाह तआ़ला के दरबार में आ'माल से मुफ़्लिस और क़ल्लाश हो कर पेश होते हैं और अगर ख़ुदा तआ़ला की रह़मत इन के शामिले ह़ाल न हो तो परेशान कुन ह़िसाब और **जांकाह**(3) अ़ज़ाब में मुब्तला होते हैं।

देखिये ! इस रिज़्क़ के मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला ने किस कसरत के साथ आयात नाज़िल फ़रमाई हैं और अल्लाह तआ़ला ने किस क़दर वा'दे किये हैं और रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी के मुतअ़ल्लिक़ तवक्कुल की तल्क़ीन करते आए हैं और लोगों के लिये सह़ीह़ राह की वज़ाह़त करते आए हैं और उ़लमा ने इस सिलसिले में सेंकड़ों तसानीफ़ की हैं और त़रह़ त़रह़ की मिसालें दे कर समझाते रहते हैं और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व मुआख़ज़े से डराते रहते हैं लेकिन अफ़्सोस कि लोग इस के बा वुजूद राहे

---

(1).....मुसीबत में मुब्तला। (2).....अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त। (3).....तक्लीफ़ देह।

हिदायत पर नहीं चलते और तक़्वा इख़्तियार नहीं करते और रिज़्क़ के बारे में मुत़मइन नहीं होते बल्कि वोह रिज़्क़ की तलाश में बेहोशी की ह़द तक पहुंच चुके हैं हमेशा इस बात से डरते हैं कि कहीं सुब्ह़ या शाम का खाना फ़ौत न हो जाए और इस ग़फ़्लत की अस्ल और बड़ी वजह आयाते क़ुरआनी में **क़िल्लते तदब्बुर**[1] और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतों में क़िल्लते फ़िक्र और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस कलाम से नसीह़त पज़ीर न होना और **सलफ़**[2] के इरशादात में ग़ौरो फ़िक्र न करना है और इस के साथ साथ लोग वसाविसे शैत़ानी का शिकार हो चुके हैं और जुहला के कलाम से मानूस हो चुके हैं और अहले ग़फ़्लत की आ़दात से मुत्तसिफ़ हो चुके हैं यहां तक कि इब्लीसे लईन इन पर मुकम्मल त़ौर पर मुसल्लत़ हो चुका है और ग़लत़ आ़दात इन में घर कर चुकी हैं, इस त़रह़ लोग ज़ो'फ़े ए'तिक़ाद और ज़ो'फ़े यक़ीन के मरज़ में मुब्तला हो गए हैं।

लेकिन अस्ह़ाबे बसीरत और अरबाबे रियाज़त और मुजाहदा जो रब तआ़ला के बरगुज़ीदा बन्दे हैं वोह ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी हैं, इस लिये वोह अस्बाबे दुन्यविय्या को ख़ात़िर में नहीं लाते, उन्हों ने ख़ुदा तआ़ला की रस्सी (दीन) को मज़बूत़ी से थाम लिया है और मख़्लूक़ से कुल्ली त़ौर पर बे नियाज़ हो गए हैं, उन्हें रब तआ़ला की आयात पर यक़ीने कामिल है, वोह उस के बताए हुवे सिरात़े मुस्तक़ीम को (पर) ही निगाह रखते हैं, रिज़्क़ के सिलसिले में वसाविसे शैत़ानी, मख़्लूक़ की त़रह़ त़रह़ की बातों और नफ़्से ख़बीस के फ़रेब में नहीं आते और जब इस सिलसिले में शैत़ान या कोई इन्सान या उन का नफ़्स वस्वसा **अन्दाज़ी**[3] की कोशिश

---

1 .....ग़ौरो फ़िक्र की कमी। 2 .....पहले के बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن 3 .....वस्वसा डालने।

करता है तो वोह पूरी त़रह़ मुक़ाबला करते हैं और मुकम्मल त़ौर से मुदाफ़अ़त और मुख़ालफ़त करते हैं यहां तक कि मख़्लूक़ इन से मुंह फेर लेती है और शैत़ान इन से जुदा हो जाता है और नफ़्स इन का मुत़ीअ़ हो जाता है और इन्हें सिराते़ मुस्तक़ीम पर इस्तिह़्काम और ज़ियादा नसीब हो जाता है।

इस सिलसिले में ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ येह ह़िकायत मन्क़ूल है कि जब आप ने ज़ादे राह के बिग़ैर एक जंगल उ़बूर करने का इरादा किया तो इब्लीस ने आ कर आप को यूं ख़ाइफ़ करने की कोशिश की, कि "येह एक ख़त़रनाक जंगल है और आप के पास न तो ज़ादे राह है और न ही इसे तै़ करने का कोई और ज़रीआ़ है।" शैत़ान की त़रफ़ से येह ख़ौफ़ दिलाने पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं ज़रूर येह ख़ौफ़नाक जंगल ज़ादे राह के बिग़ैर ही तै़ करूंगा और सिर्फ़ बिग़ैर ज़ादे राह ही तै़ नहीं करूंगा बल्कि हर मील पर एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल भी अदा करूंगा। चुनान्चे, आप ने जो इरादा फ़रमाया वोह पूरा कर दिखाया और आप बारह बरस उस जंगल में रहे यहां तक कि जब हारून रशीद उस जंगल से ह़ज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से गुज़रा तो उस ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक जगह नवाफ़िल में मश्ग़ूल हैं, लोगों ने उसे बताया कि येह नमाज़ पढ़ने वाले बुज़ुर्ग ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! आप इस ह़ाल में अपने आप को कैसा पाते हैं ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस के जवाब में येह दो शे'र पढ़े :

(١) نُرَقِّعُ دُنْيَانَا بِتَمْزِيْقِ دِيْنِنَا فَلَا دِيْنُنَا يَبْقٰى وَلَا مَا نُرَقِّعُ

(٢) فَطُوْبٰى لِعَبْدٍ اٰثَرَ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَجَادَ بِدُنْيَاهُ لِمَا يَتَوَقَّعُ

तर्जमा : (1) हम अपने दीन को बरबाद कर के दुन्या संवारने की कोशिश करते हैं तो न हमारा दीन रहता है और न ही दुन्या संवरती है। (2) तो वोह शख़्स किस क़दर मुबारक और ख़ुश क़िस्मत है जिस ने हर मुआ़मले में अपने रब की रिज़ा को ही तरजीह़ दी और आख़िरत की नजात की उम्मीद पर दुन्या को क़ुरबान कर दिया।

बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि वोह किसी जंगल में थे कि इब्लीस उन के पास आया और इस त़रह़ वस्वसा अन्दाज़ी करने लगा कि आप इस वीराने में ज़ादे राह से **तही दस्त**[1] हैं और येह ऐसा जंगल है जिस में हलाक कुन अश्या बकसरत हैं और इस में न तो कहीं आबादी का निशान है और न ही इस में किसी इन्सान का गुज़र है, तो उस बुज़ुर्ग ने उस शैत़ानी वस्वसे को मह़सूस कर के अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि मैं ज़ादे राह के बिग़ैर ही इस को तै़ करूंगा और मैं इस में चलता रहूंगा और न तो किसी से कोई शै लूंगा और न उस वक़्त तक कुछ खाऊंगा जब तक कि मेरे मुंह में जबरन घी और शहद वग़ैरा न डाला जाए।

येह इरादा कर के आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस जंगल के बिल्कुल ही उजाड़ हि़स्से की त़रफ़ अपना रुख़ कर लिया और इस की सियाह़त में मश्ग़ूल हो गए। वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं उस में घूमता रहा यहां तक कि एक रोज़ मैं ने देखा कि एक क़ाफ़िला रास्ता भूल कर मेरी त़रफ़ को आ रहा है, मैं उन्हें देखते ही ज़मीन पर लैट गया, ताकि वोह मुझे न देख पाएं लेकिन ख़ुदा की शान कि वोह मेरी त़रफ़ ही सीधे चलते रहे यहां तक कि मेरे सर पर आ खड़े हुवे, मैं ने आंखे बन्द कर लीं तो वोह मेरे बिल्कुल ही क़रीब खड़े हो कर एक दूसरे से कहने लगे कि मा'लूम होता है कि

1 .....ख़ा़ली हाथ।

इस शख़्स का सफ़रे ख़र्च ख़त्म हो चुका है और भूक प्यास की वजह से ग़श खा कर गिरा हुवा है इस लिये घी और शहद लाओ कि इस के ह़ल्क़ में डालें ताकि येह होश में आए चुनान्चे, वोह घी और शहद लाए। मैं ने अपना मुंह मज़बूती से बन्द कर लिया तो उन्हों ने छुरी मंगवा कर मेरा मुंह ज़बरदस्ती से खोल लिया तो मैं हंस पड़ा और मैं ने मुंह खोल दिया। मेरी हंसी को देख कर वोह कहने लगे : "तुम तो कोई पागल हो !" तो मैं ने जवाब दिया : "ख़ुदा की क़सम ! मैं मजनून या पागल हरगिज़ नहीं हूं" और मैं ने शैत़ान के आने और उस की वस्वसा अन्दाज़ी के वाक़िए से उन्हें आगाह किया जिसे सुन कर वोह बहुत मुतअ़ज्जिब हुवे।

एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि त़ालिबे इ़ल्मी के ज़माने में सफ़र के दौरान मैं ने एक ऐसी मस्जिद में क़ियाम किया जो आबादी से काफ़ी फ़ासिले पर थी और मैं अपने मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى) की **सुन्नत**[1] के मुत़ाबिक़ सफ़रे ख़र्च से ख़ाली हाथ था। इब्लीस ने आ कर वस्वसा अन्दाज़ी शुरूअ़ की, कि येह मस्जिद आबादी से बहुत दूर है, इस मस्जिद में क़ियाम के बजाए अगर तू किसी ऐसी मस्जिद में क़ियाम करे जो आबादी में वाक़ेअ़ हो तो वहां तेरे **ख़ुर्दो नोश**[2] का इन्तिज़ाम हो सकेगा। मैं ने उस के जवाब में कहा कि मैं यहीं रहूंगा और ख़ुदा की क़सम ! मैं ह़ल्वे के सिवा और कोई शै खाऊंगा भी नहीं और ह़ल्वा भी उस वक़्त तक नहीं खाऊंगा जब तक एक एक लुक़्मा कर के मेरे मुंह में न डाला जाए। चुनान्चे, मैं ने वहां नमाज़े इ़शा अदा की और मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर दिया, जब रात का इब्तिदाई ह़िस्सा गुज़र गया तो अचानक किसी शख़्स ने जिस के हाथ में शम्अ़ थी मस्जिद का

---

1 .....त़रीक़ए कार। 2 .....खाने पीने।

दरवाज़ा खट खटाया, जब उस ने काफ़ी ज़ोर ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाना शुरूअ़ किया तो मैं ने उठ कर दरवाज़ा खोला, मैं ने देखा कि एक बुढ़िया है जिस के साथ एक नौजवान है, बुढ़िया दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुई और मेरे सामने ह़ल्वे से भरा हुवा एक थाल रख दिया और कहने लगी : येह नौजवान मेरा लड़का है मैं ने येह ह़ल्वा इस के लिये तय्यार किया था और गुफ़्त्गू के दौरान इस ने क़सम खा ली कि मैं येह ह़ल्वा अकेला नहीं खाऊंगा बल्कि किसी मुसाफ़िर के साथ खाऊंगा या उस मुसाफ़िर के साथ जो इस मस्जिद में है, इस लिये तू इसे खा, **अल्लाह** तआ़ला तुझ पर रह़्म करे, इस के बा'द बुढ़िया ने लुक़्मे बना कर एक मेरे मुंह में और एक अपने लड़के के मुंह में देना शुरूअ़ किया यहां तक कि हम दोनों ने सैर हो कर खाया फिर वोह नौजवान और बुढ़िया वापस चले गए और मैं ने मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर लिया। इस वाक़िए पर मैं दिल ही दिल में देर तक मुतअ़ज्जिब होता रहा।

ऐ मुख़ात़ब ! येह और इस त़रह़ के हज़ारों वाक़िआत हैं जो सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) से मुजाहदे और मुख़ालफ़ते शैत़ान के त़ौर पर वुक़ूअ़ पज़ीर हुवे हैं इस त़रह़ के वाक़िआत से तुम्हें तीन त़रह़ के फ़ाइदे ह़ासिल होते हैं :

﴾1﴿ **अव्वल :** येह कि तुम जान लो कि जो रिज़्क़ मुक़द्दर हो चुका है वोह बहर ह़ाल इन्सान को मिलेगा।

﴾2﴿ **दुवुम :** येह कि तुम्हें मा'लूम हो जाए कि रिज़्क़ और इस में तवक्कुल एक अहम शै है और येह कि रिज़्क़ के मुआ़मले में शैत़ान के फ़रेब और वस्वसे निहायत हौलनाक और अ़ज़ीम हैं ह़त्ताकि मुन्दरिजए बाला क़िस्म के ज़ाहिदीन, अइम्मए किराम और बुज़ुर्गाने दीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) भी इन वसाविस से मह़फ़ूज़ न रह सके और इन के इस क़दर मुजाहदात और रियाज़ाते शाक़्क़ा के बा वुजूद

इब्लीस इन्हें गुमराह करने से मायूस न हुवा यहां तक कि इन अइम्मए किराम को इन वसाविस से मह़फ़ूज़ रहने के लिये ऐसे ऐसे **मुह़य्यरुल उ़क़ूल**[1] ज़राएअ़ इख़्तियार करने पड़े और ख़ुदा की क़सम ! जो शख़्स सत्तर बरस से मुजाहदात व रियाज़ात में मसरूफ़ हो, वोह भी शैत़ानी वस्वसों से मामून व मह़फ़ूज़ नहीं हो सकता। जिस त़रह़ मुब्तदी और ग़ाफ़िल लोग इस के वसाविस व ख़त़रात से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकते और अगर नफ़्सो शैत़ान का ज़रा भी दाव चले तो वोह इसे हलाक कर के रख दें, जिस त़रह़ वोह ग़ाफ़िल और ग़ुरूर में मुब्तला शख़्स को हलाक कर देते हैं। وَ فِیْ ذٰلِكَ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَبْصَار۔[2]

﴾3﴿ अइम्मए किराम और बुज़ुर्गाने दीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के इस त़रह़ के वाक़िआ़त से तीसरा फ़ाइदा येह ह़ासिल होता है कि इन से पता चलता है कि रिज़्क़ के सिलसिले में तवक्कुल की मन्ज़िल कोशिशे शदीद और **मुजाहदए बलीग़**[3] के बिग़ैर तै नहीं हो सकती और वोह अइम्मए किराम अगर्चे तुम्हारी त़रह़ गोश्त, ख़ून, बदन और रूह़ का मजमूआ़ थे बल्कि उन के बदन तुम से ज़ियादा लाग़र और उन के आ'ज़ा तुम से ज़ियादा ज़ईफ़ और उन की हड्डियां तुम से ज़ियादा पतली थीं लेकिन उन में क़ुव्वते इ़ल्म थी, नूरे यक़ीन था और दीन के मुआ़मले में उन की हिम्मत क़वी थी, इस लिये वोह इस क़दर सख़्त मुजाहदे करते रहे यहां तक कि इन बुलन्द मक़ामात पर फ़ाइज़ हुवे। उन बुज़ुर्गाने दीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن) की ज़िन्दगियों के मुक़ाबले में ज़रा अपनी त़रफ़ भी ग़ौर करो ! तुम्हें चाहिये कि इस ला इलाज बीमारी की दवा करो, ताकि आख़िरत में फ़लाह़ पा सको।

---

1 .....अ़क़्लों को ह़ैरान कर देने वाले। 2 .....और इस में अ़क़्लमन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है। 3 .....बहुत ज़ियादा रियाज़त।

फ़स्ल

अब मैं इस सिलसिले में तुम्हें चन्द ऐसे नुक्ते बताता हूं जो मेरे इल्म में आए हैं और जो पूरा ध्यान रख कर सुनने से तुम्हारे क़ल्ब में जा गुज़ीं हो जाएंगे और **तवक्कुल फ़िर्रिज़्क़**[1] के मस्अले में ज़ियादा कश्मकश से बच जाओगे और इन पर अ़मल करने और इन में ग़ौरो तअम्मुल करने से तुम्हें वाज़ेह़ त़ौर पर राहे ह़क़ की त़रफ़ राहनुमाई नसीब हो जाएगी। وَ اللّٰهُ سُبۡحَانَهٗ الۡمُوَفِّق

पहला नुक्ता

तुम्हें येह यक़ीन होना चाहिये कि ख़ुदा तआ़ला ने अपनी मुक़द्दस किताब में तुम्हारे रिज़्क़ की ज़मानत व कफ़ालत का ज़िम्मा उठा लिया है, इस चीज़ को तुम यूं समझो कि कोई दुन्यवी बादशाह तुम से येह वा'दा करे कि आज शाम तुम्हारी मेरे हां मेहमानी है और तुम्हें इस के मुतअ़ल्लिक़ येह ह़ुस्ने ज़न भी हो कि येह अपनी गुफ़्त्गू में सच्चा है झूठा नहीं और वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता बल्कि अगर एक बाज़ारी या कोई यहूदी या नसरानी या कोई **आतिश परस्त**[2] जिस का ज़ाहिर ह़ाल अच्छा हो, वोह तुम से इस त़रह़ का कोई वा'दा करे तो तुम ज़रूर उस की बात पर ए'तिमाद करोगे और तुम उस की बात पर मुत़मइन हो जाओगे और रात के **त़आ़म**[3] के सिलसिले में उस की बात पर भरोसा कर के बे फ़िक्र हो जाओगे।

जब तुम इन मुन्दरिजए बाला अश्ख़ास के मह़ज़ ज़ाहिर ह़ाल और अपने ह़ुस्ने ज़न्न के बाइ़स इन पर फ़ौरन ए'तिमाद कर लेते हो तो अफ़्सोस है कि अपने परवर दगार की बात पर ए'तिमाद

---

1 .....रिज़्क़ के बारे में अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करने। 2 .....आग की इ़बादत करने वाला। 3 .....खाने।

नहीं करते जिस ने रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ निहायत **सरीह़**[1] अल्फ़ाज़ में ज़मानत व कफ़ालत का वा'दा फ़रमाया है, सिर्फ़ वा'दा ही नहीं फ़रमाया बल्कि कुरआने मजीद में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर इस वा'दए रिज़्क़ पर क़समें खाई हैं, अफ़्सोस कि **अल्लाह** तआ़ला के इन ताकीदी वा'दों के बा वुजूद रिज़्क़ के मुआ़मले में तुम्हारा दिल मुत़्मइन नहीं होता और **अल्लाह** तआ़ला की कफ़ालत व ज़मानत पर सुकून पज़ीर नहीं होता और तुम **अल्लाह** तआ़ला की तक़्सीमे अज़ली पर नज़र नहीं करते बल्कि तुम्हारा क़ल्ब **मुशव्वश**[2] और मुज़्त़रिब रहता है। काश कि **अल्लाह** तआ़ला के इन ताकीदी वा'दों पर अ़दमे ए'तिमाद के वबाल का इन्किशाफ़ तुम पर वाज़ेह़ हो जाए और इस की बुराई और मुसीबत का अन्दाज़ा हो जाए। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस सिलसिले में फ़रमाते हैं :

(١) اَتَطْلُبُ رِزْقَ اللّٰهِ مِنْ عِنْدِ غَيْرِهٖ   وَ تُصْبِحُ مِنْ خَوْفِ الْعَوَاقِبِ اٰمِنَا

(٢) وَتَرْضٰى بِصَرَّافٍ وَ لَوْ كَانَ مُشْرِكًا   ضَمِيْنًا وَ لَا تَرْضٰى بِرَبِّكَ ضَامِنَا

(٣) كَاَنَّكَ لَمْ تَقْنَعْ بِمَا فِيْ كِتَابِهٖ   فَاَصْبَحْتَ مَنْحُوْلَ الْيَقِيْنِ مُبَايِنَا

तर्जमा : (1) क्या तुम रब तआ़ला के सिवा दूसरों से रिज़्क़ त़लब करते फिरते हो ? और इस त़रह़ तुम ज़माने के अ़वाक़िब व मसाइब से मामून व मह़फ़ूज़ होने के **ख़ाम ख़याल**[3] में मुब्तला हो।

(2) अफ़्सोस कि तुम एक मुशरिक **सर्राफ़**[4] के ज़ामिन बनने पर रिज़ामन्द हो जाते हो मगर अपने परवर दगार की ज़मानत पर तुम्हें ए'तिमाद नहीं।

---

1 .....वाज़ेह़। 2 .....तशवीश में मुब्तला। 3 .....फ़ुज़ूल ख़याल।
4 .....सोने का कारोबार करने वाला।

(3) गोया तुम ने रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ आयाते ख़ुदावन्दी को पढ़ा ही नहीं इस लिये तुम राहे ह़क़ से जुदा और यक़ीन से **बरगश्ता**[1] मा'लूम होते हो।

रिज़्क़ के मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला पर अ़दमे ए'तिमाद एक ऐसी तबाह कुन चीज़ है जो इन्सान को शको शुबा में मुब्तला कर देती है और ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ ख़त़रा है कि इस से उस का दीन और दीन की मा'रिफ़त सल्ब न हो जाए। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰه इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में फ़रमाया :

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾[2] *और अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा करो अगर तुम ईमानदार हो।*

और फ़रमाया :

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾[3] *और मोमिनों को सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।*

दीन का सह़ीह़ एह़सास रखने वाले ईमानदार के लिये सिर्फ़ येही एक नुक्ता काफ़ी है। وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

दूसरा नुक्ता

कुरआनी आयात और इरशादाते नबवी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से निहायत सिह़्ह़त के साथ येह अम्र साबित है कि हर एक का रिज़्क़ अज़ल से तक़्सीम हो चुका है, इस लिये तुम्हें इस तक़्सीमे ख़ुदावन्दी पर यक़ीन होना चाहिये और इस अम्र का भी ए'तिक़ाद

1.....फिरे हुवे। 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है। (پ٦،المائدۃ:٢٣)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये। (پ٢٨،المجادلۃ:١٠)

होना चाहिये कि उस की तक़्सीम में तग़य्युर व तबद्दुल और तरमीम वग़ैरा ना मुमकिन है, तो अगर तुम इन दलाइल के बा वुजूद तक़्सीमे अज़ली का इन्कार करो, या इस में रद्दो बदल को जाइज़ ख़याल करो **तो येह दरवाज़ए कुफ़्र पर दस्तक देना है।**[1] نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْہُ[2] और जब तुम्हें इस अम्र का यक़ीन हो चुका कि इस में रद्दो बदल नामुमकिन है तो इस सिलसिले में एहतिमाम और त़लब व जुस्त्जू से क्या फ़ाइदा। इस अ़क़ीदे के होते हुवे फिर तलाश व जुस्त्जू दुन्या में ज़िल्लत और ख़्वारी और आख़िरत में तंगी और **ख़ुसरान**[3] का बाइ़स है। इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

"مَکْتُوْبٌ عَلٰی ظَھْرِ الْحُوْتِ وَ الثَّوْرِ رِزْقُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ فَلَا یَزْدَادُ الْحَرِیْصُ اِلَّا جُھْدًا"[4]

मछली और बेल की पुश्त पर लिखा हुवा है कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां का रिज़्क़ है तो रिज़्क़ के मुआ़मले में ह़रीस शख़्स को बेजा मशक़्क़त के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता।

मेरे शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

"اِنَّ مَا قُدِّرَ لِمَا ضَغِیْكَ اَنْ یَمْضَغَاہُ فَلَا یَمْضُغُہُ غَیْرُكَ فَكُلْ رِزْقَكَ وَیْحَكَ بِالْعِزِّ وَ لَا تَاْكُلْ بِالذُّلِّ"

बेशक जिन लुक़्मों का चबाना तेरे मुक़द्दर में हो चुका है उन्हें कोई दूसरा नहीं चबा सकता, तू अपने ह़िस्से के रिज़्क़ को इ़ज़्ज़त के साथ खा, ज़िल्लत व ख़्वारी से न खा।

दानिशमन्द शख़्स के लिये येह दूसरा नुक्ता भी एक जामेअ़ नुक्ता है।

1...यहां येह जुम्ला था "येह सरीह़ कुफ़्र है" मगर अ़रबी मतन के लिहाज़ से तर्जमा यूं बनता है "तो येह दरवाज़ए कुफ़्र पर दस्तक देना है।" लिहाज़ा तब्दील कर दिया है। (इ़ल्मिय्या) 2...इस बात से हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। 3...ख़सारे (नुक़्सान)।

4......فردوس الاخبار، باب المیم، ۲/۳۲۵، حدیث: ۶۰۴۸، بتغیر و بدون قولہ: فلا یزداد...الخ

तीसरा नुक्ता

येह नुक्ता मैं ने अपने शैख़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सुना है जिसे इन्हों ने अपने किसी उस्ताज़ رَحِمَهُ الله से नक़्ल फ़रमाया है कि

मेरे शैख़ के उस्ताज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : रिज़्क़ के मुआ़मले में जिस चीज़ से मुझे सुकून हुवा वोह येह है कि मैं ने अपने नफ़्स से कहा कि "येह रिज़्क़ ज़िन्दा इन्सानों के लिये ही तो है, मुर्दों को रिज़्क़ से क्या तअ़ल्लुक़ और जिस त़रह़ इन्सानी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने और उस के दस्ते क़ुदरत में है इसी त़रह़ रिज़्क़ भी उसी के दस्ते क़ुदरत में है चाहे मुझे दे और चाहे न दे, इस सिलसिले में **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत मेरे इल्म से पोशीदा है, वोही जिसे चाहता हैं तदबीर करता है और मुझे अपने नफ़्स को सुकून व क़रार में रखना चाहिये। अहले तह़क़ीक़ के लिये येह नुक्ता भी बहुत मुफ़ीद है।

चौथा नुक्ता

अल्लाह तआ़ला हमारे रिज़्क़ का ज़ामिन और कफ़ील है मगर उस ह़द तक जो ग़िज़ा और तर्बिय्यत में काम दे सके, ज़ियादा का नहीं, बाक़ी रहा खाना पीना, तो जब बन्दा इबादते इलाही के लिये लोगों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार कर ले और **अल्लाह** तआ़ला पर पूरी त़रह़ भरोसा करे, तो बसा अवक़ात ख़ुर्दो नोश के ज़ाहिरी अस्बाब इस से रोक लिये जाते हैं और ज़ाहिरी अस्बाब के रुक जाने पर न तो बन्दे को **मलूल**(1) होना चाहिये और न ही इस की कुछ परवाह करनी चाहिये, इस लिये कि जब ह़क़ीक़ते अम्र इस पर **मुन्कशिफ़**(2) है कि अगर मेरी ज़िन्दगी बाक़ी है तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे बदन को क़ाइम रखने का वा'दा किया हुवा है और "**तवक्कुल अ़लल्लाह**"(3)

1.....ग़मगीन। 2.....ज़ाहिर। 3.....**अल्लाह** पर तवक्कुल करने।

से मक़्सूद भी सिर्फ़ इसी क़दर है कि वोह हलाक न हो और उस का जिस्म क़ाइम रहे और अल्लाह तआ़ला ज़रूर उस की ग़ैबी इमदाद फ़रमाएगा ताकि जब तक उस की ज़िन्दगी है इ़बादत और **ख़िदमते ह़क़**[1] में वोह बन्दा पूरी तवज्जोह से मश्ग़ूल रहे और मक़्सूद भी येही है कि किसी न किसी त़रह़ इन्सान का जिस्म क़ाइम रहे ताकि वोह रब तआ़ला की याद में मसरूफ़ रहे और ख़ुदा तआ़ला को क़ुदरत है कि जब तक चाहे किसी बन्दे का बदन क़ाइम रखे चाहे ग़िज़ा खाने और पानी पीने के ज़रीए़ बाक़ी रखे या गारे या मिट्टी या तस्बीह़ व तहलील के ज़रीए़ बाक़ी रखे, जैसे मलाइका तस्बीह़ व तहलील से ज़िन्दा हैं, और चाहे तो बिग़ैर किसी सबब के बाक़ी रखे और मक़्सूद तो इ़बादत और ख़िदमते ह़क़ की ख़ात़िर **बक़ाए बदन**[2] है चाहे जिस त़रह़ भी बाक़ी रहे, बन्दे को **अक्ल व शुर्ब**[3] **शहवत-रानी**[4] और लज़्ज़ाते दुन्यविय्या के लिये तो पैदा नहीं किया गया कि ख़्वाह मख़्वाह इस के लिये मुरग़्ग़न ग़िज़ाएं ही ज़रूरी हैं।

हमारे इस मज़्कूरा बयान से वाज़ेह़ हो गया कि ऐसे ह़ालात में अस्बाबे ज़ाहिरी का **चन्दां**[5] ए'तिबार नहीं चूंकि येह चीज़ बुज़ुर्गाने दीन और ज़ाहिदीने उम्मत के क़ुलूब में पूरी त़रह़ जा गुज़ीं थी इस लिये वोह तूले त़वील मुसाफ़्तें कई कई रातें और दिन खाए पिये बिग़ैर काट लेते थे, चुनान्चे, इन में से बा'ज़ दस दस रोज़ तक नहीं खाते थे और बा'ज़ एक एक माह और बा'ज़ दो दो माह बिग़ैर कुछ खाए पिये गुज़ार लेते थे और इस के बा वुजूद इन की बदनी क़ुव्वत बह़ाल रहती थी।

---

1 .....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त। 2 .....जिस्म का सलामत रखना। 3 .....खाने पीने। 4 .....शहवत को पूरा करने। 5 .....बिल्कुल।

और बा'ज़ ऐसे भी थे जो सिर्फ़ रैत फांक लेते थे और वोही इन को गि़ज़ा का काम दे जाती थी जैसा कि ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ मन्कू़ल है कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप का ख़र्च ख़त्म हो गया तो आप मुसलसल पन्दरह रोज़ रैत पर गुज़ारा करते रहे।

अबू मुआ़वियतुल अस्वद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि **मैं ने देखा**[1] ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुसलसल बीस रोज़, गारे पर गुज़ार दिये।

और ह़ज़रते आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्कू़ल है कि मुझे एक दफ़्आ़ ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मिले और कहने लगे :

एक माह से मैं ने कुछ नहीं खाया पिया बल्कि दो माह से और इस दो माह के अ़र्से में सिर्फ़ एक दफ़्आ़ एक शख़्स ने खुदा की क़सम दे कर कुछ थोड़े से अंगूर खिला दिये और इस बात पर मैं अब तक अपने शिकम का शाकी हूं।

मैं कहता हूं ऐ मुख़ात़ब ! तुझे ऐसी ह़िकायात और बुज़ुर्गाने सलफ़ (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) के ऐसे वाक़िआ़त सुन कर मुतअ़ज्जिब नहीं होना चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला हर शै पर क़ादिर है और इस सिलसिले में तुम्हारा वह्म यूं दूर किया जा सकता है कि बा'ज़ मरीज़ एक एक माह और दो दो माह कुछ खाए पिये बिग़ैर ज़िन्दा रहते हैं ह़ालांकि बीमार जिस्मानी त़ौर पर तन्दुरुस्त आदमी से ज़ियादा कमज़ोर और नह़ीफ़ होता है और जो शख़्स ऐसे तवक्कुल में भूक

---

1 .....यहां "**मैं ने और ह़ज़रते इब्राहिम बिन अदहम ने**" लिखा था जब कि अकसर अ़रबी नुस्ख़ों के मुत़ाबिक़ "मैं ने देखा : ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम" होना चाहिये था, लिहाज़ा येही कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

से हलाक हो जाए तो इस का मत़लब येह है कि इस की ज़िन्दगी सिर्फ़ इतनी ही थी न येह कि खुदा पर तवक्कुल करने से इस पर मौत वारिद हो गई, जिस त़रह़ बा'ज़ लोग खूब सैर हो कर खा लेने की वजह से मर जाते हैं और मुझ तक ह़ज़रते अबू सईद ख़र्राज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह बात पहुंची है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया :

गि़ज़ा के सिलसिले में मेरा दस्तूर था कि हर तीसरे रोज़ **अल्लाह** तआ़ला कहीं न कहीं से इन्तिज़ाम कर देता था, एक दफ़्आ़ मुझे एक जंगल उ़बूर करना पड़ा, इस दौरान पूरे तीन रोज़ गुज़रने पर खाने पीने की कोई सूरत मुहय्या न हो सकी आख़िर चौथे रोज़ मैं ने कुछ कमज़ोरी मह़सूस की और एक जगह ज़रा आराम के लिये बैठ गया तो अचानक ग़ैब से आवाज़ सुनाई दी : ऐ अबू सईद ! क्या तू येह चाहता है कि ज़रूर तेरे लिये ख़ुराक ही मुहय्या हो या तुझे सिर्फ़ इस क़दर काफ़ी है कि तुझे चलने फिर ने की क़ुव्वत दे दी जाए ? मैं ने अ़र्ज़ किया : मुझे सिर्फ़ क़ुव्वत काफ़ी है, चुनान्चे, इस के **मुत्तसिल**[1] ही कमज़ोरी जाती रही और मैं मुसलसल बारह रोज़ कुछ खाए पिये बिग़ैर सफ़र करता रहा और मुझे कुछ तक्लीफ़ मह़सूस न हुई ।

तो जब बन्दा देखे कि खुर्दो नोश के ज़ाहिरी अस्बाब में रुकावट हो रही है और इस का खुदा तआ़ला पर तवक्कुल भी हो तो इसे यक़ीन रखना चाहिये कि **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى ज़रूर ग़ैबी क़ुव्वत से इमदाद फ़रमाएगा, तो बन्दिशे अस्बाब पर **मलूले ख़ात़िर**[2] न हो बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की ज़ाते करीम का इस बात पर कसरत से शुक्रिया अदा करना चाहिये कि उस ने अपने ख़ुसूसी एह़सान, करम नवाज़ी और मेहरबानी से मशक़्क़त से बचा कर **नुसरते ग़ैबी**[3] से सरफ़राज़ फ़रमाया और मक़्सूदे अस्ली तक

---

1 .....साथ । 2 .....परेशान । 3 .....ग़ैबी मदद ।

पहुंचाया और खुर्दो नोश के अस्बाबे ज़ाहिरी की परेशानी और बोझ से नजात अ़ता फ़रमाई और ख़र्क़े आ़दत के तौ़र पर इसे कुव्वत मर्ह़मत फ़रमाई और खाए पिये बिग़ैर अपनी याद की कुदरत नसीब फ़रमाई और इस के ह़ाल को मलाइकए किराम के ह़ाल के मुशाबेह कर दिया, और **बहाइम**[1] और **आ़म्मतुन्नास**[2] के ह़ाल से बुलन्द कर लिया और इसे अपने कुर्ब की इ़ज़्ज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

हमारे इस बयान में सन्जिदगी से ग़ौर करो, ताकि तुम्हें नफ़्ए़ कसीर ह़ासिल हो। اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی

मैं कहता हूं शायद तू येह कहे कि रिज़्क़ के मौज़ूअ़ पर तुम ने गुफ़्तगू का सिलसिला ख़िलाफ़े मा'मूल बहुत दराज़ कर दिया है ह़ालांकि तुम कह चुके हो कि इस किताब में **इख़्तिसार**[3] का दामन हाथ से नहीं छूटेगा ! तो मैं कहता हूं कि खुदा की क़सम ! रिज़्क़ का मुआ़मला जिस क़दर अहम और नाज़ुक है, इस की निस्बत येह बयान बहुत ही क़लील और मुख़्तसर है क्यूंकि रिज़्क़ एक ऐसी चीज़ है जिस पर दुन्या व दीन के तमाम उमूर का दारोमदार है तो इ़बादते खुदावन्दी के लिये जिस की हिम्मत क़वी हो, उसे चाहिये कि हमारी बयान कर्दा बातों पर मज़बूती से अ़मल पैरा हो और इस के मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी अह़काम की पूरी रिआ़यत मल्ह़ूज़ रखे और अगर वोह ऐसा नहीं कर सकता तो वोह मक़्सूद से बहुत ही दूर है और वोह चीज़ जिस से तुम पर इस अम्र का इन्किशाफ़ हो कि रिज़्क़ के मुआ़मले में उ़लमाए ह़क़्क़ानी और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی किस क़दर बसीरते कामिला के मालिक थे, येह है कि उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी की **बिना**[4] ही **तवक्कुल अ़लल्लाह**[5], इ़बादत की त़रफ़ पूरी तवज्जोह और मख़्लूक़ से तअ़ल्लुक़ात

1.....जानवरों। 2.....आ़म लोगों। 3.....मुख़्तसर करने। 4.....बुन्याद। 5 .....अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल।

मुन्क़त़अ़ करने पर रखी थी। उन्हों ने इस मौज़ूअ़ पर किस कसरत से कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं और विसाल के वक़्त इस मुआ़मले में क्या क्या वसिय्यत करते रहे और **अल्लाह** तआ़ला ने दीन में उन के लिये कैसे मुख़्लिस मुआ़विनीन और दोस्त मुहय्या कर दिये थे कि ख़िलाफ़े अहले सुन्नत व जमाअ़त के ए'तिक़ाद वाले आ़बिदों और ज़ाहिदों वग़ैरा को उन में एक **शम्मा**[1] भी नसीब नहीं हुवा, जैसे कर्रामिय्या वग़ैरा, इस लिये कि इन के अ़क़ाइद की बुन्याद ही उसूले ह़क़्क़ा के ख़िलाफ़ पर थी और हम अहले सुन्नत व जमाअ़त जब तक अपने अइम्मए दीन और बुज़ुर्गाने उ़ज़्ज़ाम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की सीरत और इन के नक़्शे क़दम पर चलते रहे तो ख़ुदा और मख़्लूक़ की नज़रों में मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म रहे और मदारिसे इस्लामिय्या और अपनी इ़बादत गाहों से इ़ल्म व अख़्लाक़ के पैकर बन कर निकलते रहे।

चुनान्चे, इ़ल्म में उस्ताज़ अबू इस्ह़ाक़, अबू ह़ामिद, अबुत्त़य्यिब, इब्ने फ़ौरक (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) और मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जैसे **मुतबह़्ह़िर लोग**[2] हमारे इमाम और पेश्वा हैं और इ़बादत में अबू इस्ह़ाक़ शीराज़ी, अबू सईद अस्सूफ़ी और अबू नस्र मक़्दिसी (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) जैसे पाकीज़ा ह़ज़रात हमारे रहबर हैं, येह लोग इ़ल्म व ज़ोह्द में फ़ाइक़ तरीन लोग थे, अफ़्सोस कि हमारे क़ुलूब इन ह़ज़रात की **मुताबअ़त**[3] से कमज़ोर व ज़ईफ़ हो गए और हम ऐसे **अ़लाइक़**[4] में मुब्तला हो गए जिन का ज़रर नफ़्अ़ से कहीं ज़ियादा है इस का नतीजा येह हुवा कि हमें दीन के मुआ़मले में **रजअ़त वाक़ेअ़ हो गई**[5] हिम्मत पस्त हो गई, बरकात उड़ गईं और इ़बादत की लज़्ज़तें और ह़लावतें चली गईं। अब येह उम्मीद

---

1 .....थोड़ा सा ह़िस्सा। 2 .....माहिर उ़लमा। 3 .....पैरवी। 4 ....मुआ़मलात। 5 .....पस्ती में चले गए।

मुश्किल ही से की जा सकती है कि इ़बादत में किसी का ह़ाल फिर दुरुस्त हो जाए और उसे सह़ीह़ इ़ल्म नसीब हो जाए, और जिस जिस में इस वक़्त दीन व मा'रिफ़त की मा'मूली रोशनी मौजूद है वोह सिर्फ़ ह़ारिस मुह़ासिबी, मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई, मुज़्नी और ह़रमला वगै़रा अइम्मए मुतक़द्दिमीन की इक़्तिदा और पैरवी का सदक़ा है, رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعالٰی اَجْمَعِیْن जैसा कि एक शाइ़र ने **अस्लाफ़**(1) की इन अश्आ़र में **सिफ़त**(2) बयान की है :

(۱)وَ مَا صَحِبُوا الْاَیَّامَ اِلَّا تَعَفُّفًا وَ مَا وَجَدُوْا مِنْ حُبِّ سَیِّدِھِمْ بُدًّا

(۲)اَفَاضِلُ صِدِّیْقُوْنَ اَھْلُ وِلَایَةٍ اِلٰی سَیِّدِ السَّادَاتِ قَدْ جَعَلُوا الْقَصْدَا

(۳)تَحَلَّلَ عَقْدُ الصَّبْرِ مِنْ كُلِّ صَابِرٍ وَ مَا حَلَّتِ الْاَیَّامُ مِنْ صَبْرِھِمْ عَقْدَا

तर्जमा : (1) वोह ज़माने में निहायत इ़फ़्फ़त और पाकीज़गी के साथ रहे और उन के लिये **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत के सिवा कोई चीज़ भी बाइ़से इत़्मीनान और सुकून न बनी।

(2) बड़े बड़े फ़ाज़िल और सिद्दीक़ अस्लाफ़ जो अहले विलायत थे हमेशा इन की तवज्जोह सय्यिदुस्सादात या'नी रब तआ़ला की त़रफ़ ही रही।

(3) ज़माने के मसाइब और ह़वादिस ने बड़े बड़ों के सब्र की गिरहें खोल डालीं मगर इन मुक़द्दस नुफ़ूस के सब्र की एक गिरह भी न खोल सके।

हम (अहले इस्लाम) **सदरे अव्वल**(3) में दीने इस्लाम की पैरवी के बाइ़स बादशाह थे लेकिन इस से रूगर्दानी की वजह से अब हमारी पोज़ीशन एक बाज़ारी शख़्स से ज़ियादा नहीं, हम दीनी व दुन्यवी कमालात के मैदान के शहसुवार थे मगर अब पैदलों से भी गए गुज़रे हैं और अब ख़त़रा है कि कहीं रास्ते ही से भटक न जाएं, **अल्लाह** तआ़ला ही मसाइब पर हमारा मददगार है और उसी से ख़ुलूसे क़ल्ब के साथ

1.....गुज़श्ता बुज़ुर्गों। 2.....ता'रीफ़। 3.....इस्लाम के इब्तिदाई ज़माने।

इल्तिजा है कि दीन की जो मा'मूली **रमक़**[1] हम में बाक़ी है वोह सल्ब न कर ले। اِنَّہ جَوَّادٌ کَرِیْمٌ مَّنَّانٌ رَّحِیْمٌ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم

तफ़्वीज़ का बयान

तफ़्वीज़ के मा'ना हैं जुमला उमूर खुदा तआला के ह़वाले कर देना, तफ़्वीज़ की पूरी ह़क़ीक़त और तफ़्सील समझने के लिये दो चीज़ों का समझना ज़रूरी है :

एक येह कि किसी चीज़ के पसन्द या ना पसन्द का इम्तियाज़ वोही कर सकता है जो हर मुआमले को हर जिहत से जानता हो और उस के ज़ाहिर, बातिन, ह़ाल और अन्जाम से पूरी त़रह़ आगाह हो जिस शख़्स को इस इम्तियाज़ का इल्म न हो, वोह अच्छी बुरी चीज़ और ग़लत़ सह़ीह़ में इम्तियाज़ नहीं कर सकता, किसी बदवी या देहाती या चरवाहे को आप कभी नहीं कहेंगे कि येह दिरहम देखना खोटे हैं या खरे ? क्यूंकि वोह इस वस्फ़ से ख़ाली है, इसी त़रह़ आप किसी शहरी से भी येह बात नहीं कहेंगे जो **सर्राफ़**[2] न हो क्यूंकि वोह भी येह काम मुश्किल ही से सर अन्जाम दे सकता है, लिहाज़ा तुम इस काम के लिये उसी शख़्स की त़रफ़ रुजूअ़ करोगे जो **माहिर सर्राफ़** हो और सोने चांदी के अस्रार व ख़वास से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ हो और **हर शै के मुतअ़ल्लिक़ इस त़रह़ का इल्मे मुह़ीत़**[3] हर जिहत से सिर्फ़ ज़ाते रब्बुल आलमीन को ही ह़ासिल है, तो **अल्लाह** तआला के सिवा किसी को लाइक़ नहीं कि उमूर की तदबीर और किसी अम्र के पसन्द या ना पसन्द का फ़ैसला खुद ही अपने तौ़र पर कर ले बल्कि तदबीर व इख़्तियार का येह **जामेअ़ वस्फ़**[4] **अल्लाह** وَحْدَہٗ لَا شَرِیْک के साथ ही मुख़्तस[5] है। इसी लिये **अल्लाह** तआला अपने मुक़द्दस कलाम में फ़रमाता है :

1...रही सही कुव्वत। 2...सोना चांदी परखने वाला/सोने का कारोबार करने वाला। 3.....हर चीज़ का इल्म। 4...कामिल तरीन सिफ़त। 5...ख़ास।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ (1)

और तेरा रब ही जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है पसन्द करता है, लोगों को पसन्द व नापसन्द का कोई इख़्तियार नहीं।

फिर दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ (2)

और तेरा रब ही जानता है जिसे लोग अपने सीनों में छुपाए रखते हैं और जिसे ज़ाहिर करते हैं।

नक़्ल है कि किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़ुदा की त़रफ़ से इशारा हुवा : "आप जो चाहें मुझ से मांगें, आप को अ़त़ा किया जाएगा।" और वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **मुस्तजाबुद्दुआ़**(3) थे, तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन अ़र्ज़ किया : "سُبْحٰنَ الله वोह ज़ात जो **जमीअ़ उ़लूम**(4) पर ह़ावी है, एक ऐसे जाहिल से फ़रमाती है मांग जो मांगना चाहता है, मुझे क्या मा'लूम कि मेरे लिये फ़ुलां शै बेहतर है और फ़ुलां बेहतर नहीं बल्कि जो तुझे पसन्द है वोही मुझे पसन्द है।"

तफ़्वीज़ के लिये दूसरी इस चीज़ को भी ज़ेह्न में रखना ज़रूरी है कि अगर एक शख़्स तुझ से येह कहे कि तेरे सब उमूर में

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है, इन का कुछ इख़्तियार नहीं। (پ۲۰،القصص:۶۸)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा रब जानता है जो इन के सीनों में छुपा है और जो ज़ाहिर करते हैं। (پ۲۰،القصص:۶۹)

3.....जिन की हर दुआ़ क़बूल होती है।

4.....तमाम उ़लूम।

अन्जाम देता हूं और तेरी तमाम ह़ाजात की **तदबीर**[1] मैं करता हूं इस लिये तू अपने जुम्ला उमूर मेरे ह़वाले कर दे और तू अपने किसी अहम काम को सर अन्जाम देने में मश्ग़ूल रह और येह कहने वाला शख़्स तेरे नज़्दीक वाक़ेई तमाम उमूर से वाक़िफ़ हो और बेहतरीन क़ुव्वते ह़ाकिमा का मालिक भी हो और अपने इरादे को पूरा करने की क़ुव्वत रखता हो और वोह तुझ पर रह़ीमो करीम भी हो । इस के साथ साथ वोह शख़्स मुत्तक़ी और परहेज़गार और **सादिक़ुल क़ौल**[2] भी हो, तो क्या तू उस शख़्स की इस अ़ज़ीम पेशकश को अपने ह़क़ में अ़ज़ीम तरीन ग़नीमत नहीं समझेगा ? और बहुत बड़ी ने'मत ख़याल नहीं करेगा ? और उस की इन्तिहाई एह़सान मन्दी का मो'तक़िद नहीं होगा ? और उस के शुक्रिया और सिफ़तो **सना**[3] में इन्तिहा नहीं कर देगा ? यक़ीनन ज़रूर करेगा ।

फिर जब वोह कोई शै तेरे लिये पसन्द करेगा जिस की अच्छाई तुझ पर वाज़ेह़ न हो, तो तू उस की इस पसन्दीदगी पर हरगिज़ मलूल और **कबीदा ख़ातिर**[4] नहीं होगा बल्कि तुझे उस पर पूरा ए'तिमाद होगा और तेरा दिल कामिल तौर पर मुत़्मइन होगा और तुझे यक़ीन होगा कि वोह शख़्स वोही चीज़ मेरे लिये मुन्तख़ब करेगा जो मेरे लिये मुफ़ीद और मेरे ह़क़ में बेहतर हो, अगर्चे बा'द में इस का अन्जाम कुछ ही हो लेकिन तुम को उस पर कामिल ए'तिमाद होगा ।

जब तुम एक इन्सान पर इस त़रह़ का ए'तिमाद कर सकते हो तो तुम्हें क्या है कि अपने जुम्ला उमूर अपने परवर दगार جَلَّ وَعَلَا के ह़वाले नहीं करते ? ह़ालांकि वोही है जो ज़मीनो आस्मान के निज़ाम की तदबीर करता है और वोह हर आ़लिम से ज़ियादा आ़लिम है और हर क़ादिर से ज़ियादा क़ादिर है और हर रह़्म करने वाले से ज़ियादा रह़ीम है और हर ग़नी से ज़ियादा ग़नी है । वोह

---

1 ...इन्तिज़ाम । 2 ...बात का सच्चा । 3 ...ता'रीफ़ । 4 .....रन्जीदा दिल ।

अपने कामिल इल्म और हुस्ने तदबीर से वोह शै तुम्हारे लिये मुन्तख़ब करेगा जिस तक तुम्हारा वह्म व गुमान नहीं जा सकता।

तो जब ख़ुदा तआ़ला ही तेरे जुम्ला उमूर का कफ़ील और ज़ामिन है तो तुझे चाहिये कि तमाम तअ़ल्लुक़ात से मुन्क़तअ़ हो कर हमातन अपनी आख़िरत की इस्लाह़ में मश्ग़ूल हो जाए और जो जो चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला तेरे सामने लाता रहें उन पर राज़ी रहे अगर्चे उस का **हुस्न व क़ुब्ह़**[1] तुझ पर मुन्कसिफ़ न हो क्यूंकि ख़ुदा की त़रफ़ से जो चीज़ होगी वोह तेरे ह़क़ में बेहतर और ख़ैर ही होगी। وَ بِاللّٰهِ التَّوۡفِيۡق

रिज़ा बिल क़ज़ा[2] का बयान

रिज़ा बिलक़ज़ा के सिलसिले में भी दो अम्र ज़ेह्न नशीन करने ज़रूरी हैं ताकि ह़क़ीक़ते ह़ाल की वज़ाह़त हो जाए : एक तो येह कि रिज़ा बिलक़ज़ा का ह़ाल और **मआल**[3] में क्या फ़ाइदा है ?

फ़िलह़ाल तो इस का फ़ाइदा येह है कि फ़रागते क़ल्ब और बेकार फ़िक्रो तश्वीश से नजात ह़ासिल होती है, बा'ज़ **ज़ुह्हाद**[4] ने इसी लिये फ़रमाया है कि जब क़ज़ा व क़दर ह़क़ है तो मुआ़मलाते ज़िन्दगी में ग़म व फ़िक्र बे मा'ना है और इस की अस्ल वोह ह़दीस शरीफ़ है जो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मन्क़ूल है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया :

“لِيَقِلَّ هَمُّكَ وَ مَا قُدِّرَ يَكُنْ وَ مَا لَمْ يُقَدَّرْ لَمْ يَاْتِكَ”[5] (ऐ इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) तुझे किसी मुआ़मले में फ़िक्र व तश्वीश नहीं होनी चाहिये, इस लिये कि जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वोह आ कर रहेगा और जो तेरे लिये मुक़द्दर नहीं है वोह हरगिज़ तुझ पर वारिद नहीं होगा।

1.....अच्छा होना या बुरा होना। 2.....तक़्दीर पर राज़ी रहने। 3.....अन्जाम। 4.....ज़ाहिदों।

5.....شعب الايمان ، باب فى التوكل...الخ ، ٦٨/٢ ، حديث : ١١٨٨ ، بتغير۔

येह कलाम नबिय्ये अकरम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का कलामे मुबारक है जो निहायत जामेअ़ और **बलीग़**[1] है कि अल्फ़ाज़ बिल्कुल मुख़्तसर हैं मगर बे शुमार मआ़नी पर मुश्तमिल है और रिज़ा बिल क़ज़ा का अन्जाम के ए'तिबार से येह फ़ाइदा है कि क़ज़ा पर राज़ी होने वाले इन्सान को **अल्लाह** तआ़ला अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाएगा और ऐसे शख़्स को अपने रब की रिज़ा और ख़ुश्नूदी भी ह़ासिल होगी, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ ط(2)

अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हुवा और वोह अल्लाह तआ़ला से ।

इस के बर अ़क्स ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की नाराज़ी इस दुन्या में तो फ़िक्र, ग़म और परेशानी वग़ैरा पैदा करती है और आख़िरत में भी ख़्वाह मख़्वाह बोझ और अ़ज़ाब का सबब बनेगी क्यूंकि क़ज़ाए इलाही तो बहर ह़ाल नाफ़िज़ हो कर रहेगी, तेरी नाराज़ी और तेरे इरादे से वोह बदल नहीं सकती, जैसा कि ज़ैल के अश्आ़र में कहा गया है :

(۱) مَا قَدْ قُضِیَ یَا نَفْسُ فَاصْطَبِرِیْ لَہٗ وَ لَکِ الْاَمَانُ مِنَ الَّذِیْ لَمْ یُقْدَرِ

(۲) وَ تَحَقَّقِیْ اَنَّ الْمُقَدَّرَ کَائِنٌ حَتْمًا عَلَیْکِ صَبَرْتِ اَمْ لَمْ تَصْبِرِیْ (3)

(1) ऐ नफ़्स ! तेरे लिये जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है उस पर सब्र कर और जो कुछ तेरे लिये मुक़द्दर नहीं उस से ख़ाइफ़ होने की ज़रूरत नहीं क्यूंकि वोह तुझ पर वारिद नहीं हो सकता ।

(2) और इस बात पर यक़ीन रख कि जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वोह ज़रूर मिल कर रहेगा चाहे तू सब्र करे या बे सब्री का मुज़ाहरा करे ।

1.....कामिल । 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी । (پ۷،المائدۃ:۱۱۹) 3....यहां लफ़्ज़ "لَمْ تَصْبِرْ" था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "لَمْ تَصْبِرِیْ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है । (इल्मिय्या)

और अ़क्लमन्द इन्सान राह़ते क़ल्ब और सवाबे जन्नत को छोड़ कर उस चीज़ को इख़्तियार नहीं करता जो आख़िरत में बोझ और अ़ज़ाब का बाइ़स बने और जिस से बे फ़ाइदा फ़िक्र और तश्वीश लाह़िक़ रहे। दूसरी उसूली बात येह है कि ख़ुदा तआ़ला की नाराज़ी में नुक़्सान का अन्देशा और अ़ज़ीम ख़त़रा **मुज़्मर**[1] है और ख़ुदा तआ़ला मेहरबान न हो तो उसे अपने पर नाराज़ करने वाला इन्सान बा'ज़ अवक़ात कुफ़्र व निफ़ाक़ में मुब्तला हो जाता है, **अल्लाह** तआ़ला के इस कलाम में ग़ौर करो :

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۶۵﴾ (2)

ऐ ह़बीब ! हमें तेरे रब की क़सम ! येह लोग उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकते जब तक आप को अपने तमाम तनाज़ुआ़त में अपना ह़ाकिमे मुत़लक़ तस्लीम न करें फिर आप के फ़ैसले के ख़िलाफ़ अपने क़ुलूब में ज़र्रा बराबर रन्जिश भी मह़सूस न करें बल्कि दिलो जान और रिज़ा व रग़बत से उसे तस्लीम करें।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयए करीमा में उस शख़्स के ईमान की ही नफ़ी कर दी और नफ़िए ईमान पर क़सम खाई है जो फ़ैसलए रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पसन्द न करे और नबी का फ़ैसला सुन कर दिल में तंगी और बे चैनी मह़सूस करे, तो जो शख़्स फ़ैसलए ख़ुदावन्दी को तस्लीम न करे बल्कि उलटा उस से नाराज़

1.....पोशीदा 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ मह़बूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें। (پ٥،النساء:٦٥)

हो वोह कैसे मोमिन हो सकता है? हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ التَّسْلِيْم से एक **कुदसी हदीस**[1] मरवी है जिस के अल्फ़ाज़ येह हैं :

مَنْ لَمْ يَرْضَ بِقَضَائِيْ وَ لَمْ يَصْبِرْ عَلٰى بَلَائِيْ وَ لَمْ يَشْكُرْ عَلٰى نَعْمَائِيْ فَلْيَتَّخِذْ اِلٰهًا سِوَائِيْ[2]

जो शख़्स मेरी तक्दीर पर राज़ी न हो और मेरी जानिब से आने वाली मुसीबतों पर साबिर न हो और मेरी अ़ता कर्दा ने'मतों का शुक्र न अदा करे तो ऐसा शख़्स मेरे बजाए किसी और को रब बना ले।

इस हदीस में **अल्लाह** तआला गोया यूं फ़रमाता है कि येह शख़्स जब मुझ से राज़ी नहीं, क्यूंकि तक्दीर पर नाक मुंह चढ़ाता है तो फिर येह अपना रब कोई और बना ले जो इस को अच्छा लगे, अ़क्लमन्द जानता है कि येह इन्तिहाई ज़ज्र और डांट के अल्फ़ाज़ हैं, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से जब उ़बूदिय्यत और रबूबिय्यत का मा'ना दरयाफ़्त किया गया, तो उस ने क्या ही अच्छा जवाब दिया। चुनान्चे, फ़रमाया :

"रबूबिय्यत येह है कि रब तआला जो चाहे हुक्म करे और उ़बूदिय्यत येह है कि बन्दा उस के हर हुक्म और क़ज़ा को बिला चूनो चरा तस्लीम करे, जब **अल्लाह** तआला कोई हुक्म दे और बन्दा न तो उस की ता'मील करे और न उस को पसन्द करे तो वहां उ़बूदिय्यत और रबूबिय्यत कुछ भी नहीं।"

इस में ग़ौर करो और अपने हाल को उ़बूदिय्यत के मुताबिक़ करो, ताकि तुम्हें **अल्लाह** तआला की मदद तौफ़ीक़ से सलामती नसीब हो।

1.....वोह हदीस जिस के रावी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों और निस्बत **अल्लाह** तआला की तरफ़ हो। (نصابِ اصولِ حدیث، ص۷۷)

2.....فیض القدیر، ۶۱۷/۴، تحت الحدیث:۹۰۰۶ و المعجم الکبیر، ۳۲۰/۲۲، حدیث:۸۰۷۔

सब्र का बयान

सब्र एक कड़वी दवा है और ना ख़ुशगवार शरबत है मगर निहायत बा बरकत और हर त़रह़ की मन्फ़अ़त का मूजिब और ज़रीआ़ है और हर त़रह़ की मज़र्रत को दफ़्अ़ करता है, जब दवा ऐसी बा बरकत और नाफ़ेअ़ हो तो अ़क़्लमन्द इन्सान त़बीअ़त पर जब्र कर के भी ऐसी दवा इस्ति'माल करता है और घूंट घूंट कर के अपने पेट में डाल लेता है और इस की तल्ख़ी और तेज़ी को बरदाश्त करता है और यूं कहता है कि इस दवा की तल्ख़ी तो एक घड़ी भर के लिये है मगर इस का नफ़्अ़ सालहा साल तक बाक़ी रहने वाला है ।

अब हम उन मनाफ़ेअ़ की तफ़्सील बयान करते हैं जो सब्र से ह़ासिल होते हैं, जान लो कि सब्र चार त़रह़ का है :

﴾1﴿ सब्र अ़लत्ताअ़त ﴾2﴿ सब्र अ़निल मा'सियत ﴾3﴿ सब्र अ़न फ़ुज़ूलिद्दुन्या ﴾4﴿ दुन्या के मसाइब व आलाम पर सब्र ।

जब कोई शख़्स सब्र की तल्ख़ी बरदाश्त करे और मज़्कूरा चारों क़िस्म के सब्र पर कारबन्द हो जाए तो उसे त़ाअ़त और त़ाअ़त पर इस्तिक़ामत की ने'मते उ़ज़्मा नसीब होती है, आख़िरत में सवाबे अ़ज़ीम का मुस्तह़िक़ बनता है और ऐसे शख़्स को दुन्या में गुनाहों और गुनाहों के नताइजे बद से ह़िफ़ाज़त नसीब हो जाती है और आख़िरत में गुनाहों के वबाल में मुब्तला होने से भी बच जाता है नीज़ ऐसा शख़्स त़लबे दुन्या को तर्क कर देता है और इस पांच रोज़ा ज़िन्दगी में मशाग़िले दुन्यवी से अलग रहता है, ऐसा शख़्स اِنْ شَآءَاللّٰہ تعالٰی अ़ज़ाबे उख़रवी से भी मह़फ़ूज़ रहेगा, उस के आ'माले ख़ैर भी ज़ाएअ़ नहीं होते और दुन्यवी इब्तिला व आज़माइश

में साबित क़दम रहता है और आसाइशे दुन्या ह़ासिल न होने पर **रन्जीदा ख़ात़िर**[1] नहीं होता, तो इस सब्र से इन्सान को त़ाअ़त, इस के दरजाते आ़लिय्या, त़ाअ़त का सवाब, तक़्वा, ज़ोह्द और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अच्छा बदला, अच्छी जज़ा और सवाबे कसीर ह़ासिल होता है और फ़वाइदे सब्र की पूरी तफ़्सील दर ह़क़ीक़त ख़ुदा तआ़ला ही जानता है।

सब्र ज़रर रसां चीज़ों को दूर कर देता है

सब्र की वजह से एक तो इन्सान बे सब्री से पैदा होने वाली जज़्अ़ फ़ज़्अ़ की मशक़्क़त से बच जाता है और दुन्या में बे सब्री का रन्ज बरदाश्त करने से मह़फ़ूज़ रहता है फिर आख़िरत में तर्के सब्र पर दिये जाने वाले अ़ज़ाब से ह़िफ़ाज़त में रहता है लेकिन अगर इन्सान बे सब्री करे, गिला शिक्वा की ज़बान दराज़ करे तो उस की हर मन्फ़अ़त फ़ौत हो जाती है और वोह अन्वाओ़ अक़्साम की **मज़र्रात**[2] व तकालीफ़ में फंस जाता है क्यूंकि जब वोह अल्लाह तआ़ला की त़ाअ़त व बन्दगी बजा लाने की मशक़्क़त पर सब्र नहीं करेगा तो त़ाअ़त और बन्दगी मौला तआ़ला की ने'मत से मह़रूम रहेगा और त़ाअ़त पर कारबन्द न हो सकेगा या बे सब्री के बाइ़स त़ाअ़त पर उसे दवाम नसीब नहीं होगा, तो मर्तबए इस्तिक़ामत नहीं पा सकेगा जो एक आ'ला मर्तबा है या **फ़ुक़्दाने सब्र**[3] के बाइ़स फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्विय्याते दुन्या से नहीं बचेगा और गुनाह व मा'सिय्यत में पड़ जाएगा या फ़ुक़्दाने सब्र की बिना पर दुन्यवी तक्लीफ़ व मुसीबत के वक़्त शिक्वा शिकायत की

1...ग़मगीन दिल। 2...नुक़्सान देह चीज़ों। 3...सब्र की कमी।

ज़बान दराज़ करेगा और इस त़रह़ सब्र के सवाब से मह़रूम रहेगा और बसा अवक़ात ज़ियादा बे सब्री दिखाने पर आख़िरत के सवाब के इलावा सब्र करने पर दुन्या में जो ने'मत मिलने वाली थी वोह भी उस के हाथ से निकल जाती है और बे सब्री का मुज़ाहरा कर के एक मुसीबत के बजाए कई मुसीबतें मौल ले लेता है कि दुन्या की ने'मतें भी हाथ से निकल जाती हैं और आख़िरत का सवाब भी फ़ौत हो जाता है, कई उलझनें पैदा हो जाती हैं, सब्र जैसी उ़म्दा ने'मत से मह़रूम हो जाता है, बा'ज़ बुज़ुर्गों (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) का क़ौल है :

"حِرْمَانُ الصَّبْرِ عَلَى الْمُصِيبَةِ اَشَدُّ مِنَ الْمُصِيبَةِ" मुसीबत के वक़्त सब्र न करना मुसीबत से ज़ियादा बदतर मुसीबत है।

लिहाज़ा उस चीज़ को इख़्तियार करने का क्या फ़ाइदा जो ह़ासिल शुदा शै को भी फ़ौत कर दे और गुम शुदा शै को वापस न ला सके। लिहाज़ा कोशिश करो कि अगर एक शै (ने'मते दुन्यवी) फ़ौत हो जाए तो दूसरी तो फ़ौत न हो या'नी **सब्र**। फ़ज़ीलते सब्र के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से एक निहायत जामेअ़ क़ौल मन्क़ूल है, आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने एक शख़्स को सब्र की तल्क़ीन करते हुवे फ़रमाया :

اِنْ صَبَرْتَ جَرَتْ عَلَيْكَ الْمَقَادِيْرُ وَ اَنْتَ مَاْجُوْرٌ وَ اِنْ جَزِعْتَ جَرَتْ عَلَيْكَ الْمَقَادِيْرُ وَ اَنْتَ مَاْزُوْرٌ

तुझ पर तक़्दीरे इलाही ज़रूर जारी हो कर रहेगी, हां अगर तू सब्र करेगा तो अज्रो सवाब पाएगा और अगर बे सब्री का शेवा इख़्तियार करेगा तो गुनहगार होगा।

फिर मैं कहता हूं कि अगर्चे **अल्लाह** तआ़ला की ज़ाते बरह़क़ पर तवक्कुल व भरोसा करते हुवे दिल को उस की चाहत

की चीज़ों से अलग करना, नफ़्से अम्मारा को उस की बुरी आ़दात से रोकना, दुन्यवी मुआ़मलात की तदाबीर व तजावीज़ को तर्क कर देना, अपने मुतअ़ल्लिक़ नफ़्अ़ व नुक़्सान की चीज़ों से **ए'राज़ करते हुवे**(1) अपना सारा मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला के सिपुर्द करना, नफ़्से अम्मारा की निगरानी करना, किसी अम्र के फ़ौत हो जाने पर नफ़्स को बे सब्री से रोकना, जब कि ऐसे मौक़अ़ पर बे सब्री करना इस की **फ़ितरत** व **सिरिश्त**(2) में दाख़िल है नीज़ नफ़्स को रिज़ा की लगाम देना और नफ़रत के बा वुजूद नफ़्स को सब्र के तल्ख़ और कड़वे घूंट पिलाना, येह सब मुन्दरिजए बाला उमूर ना क़ाबिले बरदाश्त हैं और येह निहायत भारी बोझ और मुश्किल तरीन त़रीक़े इलाज है लेकिन अपनी इस्लाह़ और दुरुस्ती की सह़ीह़ तदबीर भी सिर्फ़ येही है और येही सिराते़ मुस्तक़ीम है और इसी सिराते़ मुस्तक़ीम पर चलने का अन्जाम अच्छा है और सआ़दत व नेक बख़्ती के ह़ालात इसी से पैदा हो सकते हैं।

तुम उस मालदार बाप के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हो जो अपने बीमार बेटे को खजूर और सेब वग़ैरा फल खाने को नहीं देता और फल फ्रूट की ने'मतें देने के बजाए उस को एक सख़्त त़बीअ़त **मुअ़ल्लिम**(3) के ह़वाले कर देता है जो सारा दिन ता'लीम के लिये इसे अपने पास रोके रखता है और इसे डांटता रहता है और इस का बाप इस को **सींघी लगाने**(4) के लिये **ह़ज्जाम**(5) के पास ले जाता

---

1 .....तवज्जोह न करते हुवे। 2...मिज़ाज। 3...उस्ताद। 4...जानवर के सींग को ह़ज्जाम जिस्म पर रख कर चूसते हैं ताकि ख़ून एक जगह जम्अ़ हो जाए फिर उस मक़ाम पर उस्तरा मार कर ख़राब ख़ून निकालते हैं। (اردو لغت، ۳۸۲/۱۲ملخصًا)
5 .....सींघी लगाने वाले।

है, जो इसे अपने अ़मले जर्राह़ी से और तक्लीफ़ देता है क्या तुम येह ख़याल कर सकते हो कि उस का बाप इसे बुख़्ल व कन्जूसी की बिना पर खाने को फल नहीं देता जब कि उस का बाप अजनबी लोगों के साथ भी **फ़य्याज़ी**[1] से पेश आता है और हर त़रह़ माली तआ़वुन करता है ऐसा शख़्स अपनी अवलाद के ह़क़ में कैसे बख़ील हो सकता है और अपनी अवलाद से अपना मालो दौलत क्यूंकर रोक सकता है ह़ालांकि उस के पास जो कुछ है उस की अवलाद के लिये ही है।

नीज़ सख़्त त़बीअ़त मुअ़ल्लिम के ह़वाले कर के क्या वोह इसे दुख और तक्लीफ़ देना चाहता है? हरगिज़ नहीं क्यूंकि उस का बेटा तो उस की आंखों की ठन्डक है और उस के दिल का चैन है बल्कि बेटे को अगर हवा भी लग जाए तो बाप बेचैन हो जाता है, दर ह़क़ीक़त वोह अपने बेटे के साथ ऐसा सुलूक इस लिये करता है कि वोह जानता है कि इस में इस की बेहतरी है और ता'लीम व तर्बिय्यत की इस थोड़ी सी मशक़्क़त व तक्लीफ़ से उस का बेटा अ़ज़ीम कमालात और आ'ला सिफ़ात का मालिक बन जाएगा।

नीज़ उस ख़ैर ख़्वाह, मुख़्लिस और माहिर त़बीब के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है जो एक लाग़र और नाज़ुक ह़ाल मरीज़ को पानी पीने से रोक देता है ह़ालांकि उस मरीज़ को शदीद प्यास लग रही होती है और शिद्दते प्यास के बाइ़स उस का कलेजा जल रहा होता है लेकिन वोह त़बीब उसे कड़वी दवा देता है जो उस मरीज़ की त़बीअ़त और नफ़्स पर गिरां होती है तो क्या तुम येह ख़याल कर सकते हो कि वोह त़बीब मरीज़ से दुश्मनी और अ़दावत और उसे अज़िय्यत देने के लिये ऐसी दवा दे रहा है? हरगिज़ नहीं बल्कि इस में उस मरीज़ के साथ सरासर ख़ैर ख़्वाही

1 .....सख़ावत।

और एह़सान है क्यूंकि त़बीब जानता है कि मरीज़ ब तक़ाज़ाए शहवत जो कुछ त़लब करता है इस में उस की हलाकत और मौत है और उसे इस से रोकने और बाज़ रखने में ही उस की शिफ़ा और बक़ा है।

तो तम्हें इन मिसालों से अन्दाज़ा लगाना चाहिये कि अगर **अल्लाह** तआ़ला किसी वक़्त एक रोटी या एक दिरहम तुम्हें अ़त़ा नहीं करता तो तुम्हें यक़ीन रखना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला इस पर क़ादिर है कि जो कुछ तुम चाहते हो वोह सब कुछ तुम्हें अ़त़ा कर दे क्यूंकि वोह फ़ज़्ल व जूद का मालिक है, तुम्हारी तंगदस्ती से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ है, उस से कोई शै मख़्फ़ी और पोशीदा नहीं, इस के बा वुजूद अगर वोह अह़कमुल ह़ाकिमीन तुम्हें तुम्हारी चाहत की चीज़ अ़त़ा नहीं कर रहा तो इस का येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि مَعَاذَ الله वोह शै उस के पास नहीं या वोह आ़जिज़ है या उसे तुम्हारी ह़ालत का पता नहीं या वोह बख़ील है। वोह तो इन तमाम उ़यूब व नक़ाइस से पाक और मुनज़्ज़ा है। वोह तमाम ग़नियों से बड़ा ग़नी, तमाम क़ुदरत वालों से बड़ा क़ादिर, तमाम इ़ल्म वालों से बढ़ कर आ़लिम और तमाम अस्ख़िया से बढ़ कर **जवाद**[1] और करीम है लिहाज़ा तुम्हें यक़ीन होना चाहिये कि तुम्हारी चाहत की चीज़ें बसा अवक़ात वोह तुम्हें इस लिये अ़त़ा नहीं करता कि इस में तुम्हारी इस्लाह़ और बेहतरी मुज़्मर[2] होती है, अ़त़ा न करने की वजह इ़ज्ज़ या बुख़्ल नहीं बल्कि वोह तो क़ुरआने मजीद में यूं इरशाद फ़रमाता है :

خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا[3] *ज़मीन में जो कुछ है वोह सब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे लिये पैदा किया है।*

---

1 .....यहां लफ़्ज़ "सख़ी" तह़रीर था, जिसे लफ़्ज़ "**जवाद**" से बदल दिया है, क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़ "सख़ी" इस्ति'माल करने को फ़तावा रज़विय्या, जि. 27 स.165 पर मन्अ़ किया गया है। (इ़ल्मिय्या) 2 .....पोशीदा।
3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस ने तुम्हारे लिये बनाया, जो कुछ ज़मीन में है। (پ۱، البقرة:۲۹)

और **अल्लाह** तआ़ला की जानिब बुख़्ल की निस्बत कैसे हो सकती है जब कि उस ने तुम्हें अपनी मा'रिफ़त जैसी ने'मतें उ़ज़्मा अ़ता की जिस के सामने तमाम ने'मतें हैच हैं, एक मश्हूर ह़दीस में वारिद है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اِنِّی لَاَذُوْدُ اَوْلِیَائِیْ عَنْ نَعِیْمِ الدُّنْیَا کَمَا یَذُوْدُ الرَّاعِی الشَّفِیْقُ اِبِلَهٗ عَنْ مَبَارِكِ الْعِرَّةِ(1)

मैं अपने दोस्तों को दुन्या की ने'मतों से इस त़रह़ दूर रखता हूं जिस त़रह़ मेहरबान चरवाहा अपने ऊंटों को ख़ारिश ज़दा ऊंटों से अलग रखता है।

और जब तुझे **अल्लाह** तआ़ला दुन्यावी शदाइद व मसाइब में रखे तो इस बात पर यक़ीन रख कि वोह तेरा इम्तिह़ान लेने और तेरी आज़्माइश करने से बे नियाज़ है, वोह तेरे ह़ाल से वाक़िफ़ है, तेरे ज़ो'फ़ और कमज़ोरी को भी जानता है और वोह तुझ पर रऊफ़ व रह़ीम भी है, क्या तू ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह क़ौले मुबारक नहीं सुना ? आप (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

"لَلّٰهُ تَعَالٰی اَرْحَمُ بِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنَ الْوَالِدَةِ الشَّفِيْقَةِ بِوَلَدِهَا"(2)

बेशक **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दए मोमिन पर, अपने बच्चे पर शफ़ीक़ मां से भी ज़ियादा **मेहरबान**(3) है।

जब तू ने येह बात जान ली तो फिर तुझे इस बात पर यक़ीन रखना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला तेरी इस्लाह़ के लिये तुझे तक्लीफ़ और मुसीबत में डालता है, **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म में तेरी इस्लाह़ मन्ज़ूर है मगर तू इस से बे ख़बर है। इसी इस्लाह़ और तरक़्क़िये दरजात के लिये **अल्लाह** तआ़ला अपने दोस्तों और मक़्बूल बन्दों

---

1 ......الزھد لامام احمد بن حنبل ، ص ۹۹ ، حدیث : ۳۴۱ ، ۳۴۲ ، بتغیر ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب ،باب رحمۃ الولد وتقبیلہ ومعانقتہ ، ۴/۱۰۰،
حدیث : ۵۹۹۹ ، بتغیر ۔

3 ...यहां लफ़्ज़ "**शफ़ीक़**" को ह़ज़्फ़ किया गया है, क्यूंकि इस नाम का इत़्लाक़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मन्अ़ है। (इ़ल्मिय्या)

को इब्तिला व आज़्माइश में कसरत से डाले रखता है ह़ालांकि येह त़बक़ा उस की दरगाह में निहायत बा इ़ज़्ज़त त़बक़ा है यहां तक कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मौक़अ़ पर फ़रमाया :

"اِذَا اَحَبَّ اللّٰهُ قَوْمًا اِبْتَلَاهُمْ"(1) जब **अल्लाह** तआ़ला किसी क़ौम को अपना दोस्त बनाता है तो उस को मुख़्तलिफ़ आज़्माइशों में डालता है ।

दूसरे मौक़अ़ पर फ़रमाया :

"اِنَّ اَشَدَّ النَّاسِ بَلَاءً اَلْاَنْبِيَاءُ ثُمَّ الشُّهَدَاءُ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَالْاَمْثَلُ"(2)

बेशक सब से ज़ियादा अम्बिया (عَلَیْہِمُ السَّلَام) इम्तिह़ान और आज़्माइश में डाले जाते हैं फिर शहीद लोग फिर वोह जो उन के नज़्दीक हैं और फिर वोह जो उन के नज़्दीक ।

तो जब तू येह देखे कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ से दुन्या की ने'मतों को रोक रखा है या तेरे लिये कसरत से मसाइब व मुश्किलात पैदा कर रहा है तो यक़ीन रख कि येह बात **अल्लाह** तआ़ला की दरगाह में तेरे बा इ़ज़्ज़त और साहि़बे मर्तबा होने की अ़लामत है और वोह तुझे अपने औलिया (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) के रास्ते पर चलाना चाहता है, बेशक वोह परवर दगार तेरे तमाम ह़ालात से वाक़िफ़ है और किसी बात में तेरा मोह़ताज नहीं (बल्कि इन बातों से उसे तेरी इस्लाह़ मन्ज़ूर है)

अल्लाह तआ़ला क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है :

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا(3)

और अपने रब के हुक्म के मुत़ाबिक़ सब्र से काम लो, बेशक तुम हमारी ह़िफ़ाज़त और निगाह में हो ।

1 ......مسند احمد ، حديث محمود بن لبيد ، ۱۶۳/۹ ، حديث:۲۳۷۰۲ ، ملتقطاً۔

2 ......المعجم الكبير ، ۲٤٥/۲٤ ، حديث : ٦٢٩ ، بتغير ۔

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब तुम अपने रब के हुक्म पर ठहरे रहो कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो । (پ ۲۷ ، الطور: ٤٨)

लिहाज़ा मसाइब व मुश्किलात के वक़्त तुझे **अल्लाह** तआला का एह्सान मन्द होना चाहिये कि वोह तुझे दुन्यवी **लज़ाइज़**[1] से दूर रख कर गुनाहों से मह्फ़ूज़ रखना चाहता है, तेरी इस्लाह् करना चाहता है, तुझे ज़ियादा अज्रो सवाब अ़ता करना चाहता है और आख़िरत में **अबरार**[2] व मुक़र्रबीन के **मदारिज**[3] पर फ़ाइज़ करना चाहता है लिहाज़ा बन्दए मोमिन के ह़क़ में मसाइब व मुश्किलात का नतीजा निहायत ही अच्छा है और रूह़ानी अ़ताओं का सर चश्मा है। وَ اللّٰهُ وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ بِمَنِّهٖ وَ فَضْلِهٖ

फ़स्ल

ख़ुलासा येह कि जब तुझे यक़ीन से येह बात मा'लूम हो गई कि **अल्लाह** तआला तेरे लिये इस क़दर रोज़ी का ज़ामिन हो चुका है जिस से तेरी ह़याते दुन्या की बक़ा वाबस्ता है और जिस से इबादत बजा ला सके और वोह अपने इरादे के मुवाफ़िक़ हर चीज़ को जैसे चाहे वुजूद में लाने पर क़ुदरत रखता है और वोह तेरे हर वक़्त और हर घड़ी और ह़ालत की ह़ाजत व ज़रूरत से भी वाक़िफ़ है, तो तुझे **अल्लाह** तआला की ज़िम्मेदारी और कफ़ालत पर भरोसा करना चाहिये और उस के वा'दे को सच्चा जानना चाहिये। **अल्लाह** तआला पर इस ए'तिमाद और भरोसे से तुम्हारे दिल को सुकून व इत्मीनान नसीब होगा और तुम्हारी त़बीअ़त अ़लाइक़ व अस्बाबे दुन्यवी से अलग हो जाएगी और दिल का तअ़ल्लुक़ इन अस्बाब व अ़लाइक़ से कट जाएगा।

ह़क़ीक़त येह है कि तअ़ल्लुक़ात और अस्बाबे दुन्यवी भी उस वक़्त ही मुफ़ीद और किफ़ायत करते हैं जब ख़ुदा तआला की मशिय्यत हो, ग़िज़ा खाने और इस के हज़्म में आसानी और सहूलत, इसी त़रह़ पीने की चीज़ों के इस्ति'माल में सहूलत, फिर

1...दुन्या की लज़्ज़तों। 2...नेक बन्दों। 3...दरजों।

खाने पीने की अश्या में त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ व खुश गवार होने की सिफ़त अल्लाह तआ़ला ही इन में पैदा करता है फिर इन अश्या से बदन में कुव्वत और नफ़्अ़ भी अल्लाह तआ़ला ही इन में रखता है नीज़ इन खुर्दो नोश की अश्या से त़बीअ़त पर गिरानी और इन के नुक़्सान को अल्लाह तआ़ला ही अपने इरादे और मशिय्यत से दूर करता है तो दर ह़क़ीक़त नाफ़ेअ़ उसी की ज़ाते बा बरकात है और वोही दर ह़क़ीक़त[1] "كَافِيُ الْمُهِمَّات" है, तो हर त़रह़ का इख़्तियार सिर्फ़ उसी की ज़ात وَحْدَهٗ لَاشَرِيْک को है लिहाज़ा उसी पर तवक्कुल और भरोसा करो और अपने मुआ़मलात में अपनी तदाबीर को अहम्मिय्यत न दो बल्कि उस ज़ात की तदाबीर व इन्तिज़ाम पर किफ़ायत व इन्ह़िसार करो जो मुदब्बिरे ज़मीनो आस्मान है और अपने आप को आयिन्दा के प्रोग्रामों में ग़ौरो फ़िक्र से भी नजात दो और यूं न सोचो कि येह काम कल मुझे किस त़रह़ अन्जाम देना चाहिये और येह काम कल होगा या नहीं और येह काम अन्जाम देने के लिये क्या सूरत इख़्तियार करनी चाहिये, मत़लब येह है कि "शायद" और "**अगर-मगर**" के चक्कर में न पड़ो क्यूंकि इस से **तज़यीए़ वक़्त**[2] और मसरूफ़िय्यते दिल के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता मुमकिन है कि कल ऐसे ह़ालात सामने आ जाएं जिन का तुम्हें वहम व गुमान भी न था और जो बातें और प्रोग्राम तुम बना रहे थे और जिन मुआ़मलात में तुम ग़ौरो खोज़ कर रहे थे इन में से कोई न हो सके और सोचो बिचार में बे फ़ाइदा वक़्त ज़ाएअ़ चला जाए, बल्कि दिल की मसरूफ़िय्यत और उ़म्र बरबाद जाने पर ख़सारा और पशेमानी उठानी पड़े। किसी ज़ाहिद ने कहा है :

1...मुश्किलात में कारसाज़। 2...वक़्त ज़ाएअ़ होने।

سَبَقَتْ مَقَادِيْرُ الْإِلٰـهِ وَ حُكْمُهُ فَـاَرِحْ فُؤَادَكَ مِنْ لَعَلَّ وَ مِنْ لَوْ

तर्जमा : तक़्दीरे ख़ुदावन्दी में हर शै का फ़ैसला हो चुका है, लिहाज़ा तफ़क्कुरात को ख़्वाह मख़्वाह अपने ऊपर मुसल्लत़ न करो, और "शायद" व "अगर मगर" के चक्कर से अपने आप को अम्न में रखो।

एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(١)سَيَكُوْنُ مَا هُوَ كَائِنٌ فِيْ وَقْتِهِ وَ اَخُو الْجَهَالَةِ مُتْعَبٌ وَّ مَحْزُوْنُ

(٢)فَلَعَلَّ مَا تَخْشَاهُ لَيْسَ بِكَائِنٍ وَ لَعَلَّ مَا تَرْجُوْهُ لَيْسَ يَكُوْنُ

तर्जमा : (1) जो कुछ होना है वोह अपने वक़्त में ज़रूर हो कर रहेगा और जाहिल व बे ख़बर इन्सान ख़्वाह मख़्वाह अपने आप को मशक़्क़त और ग़म में डाले रखता है।

(2) तो मुमकिन है जिस का तुझे ख़त़रा है वोह न हो और जिस की तुझे उम्मीद है वोह भी न हो।

"ऐ नफ़्स ! हमारे ह़िस्से में सिर्फ़ वोही चीज़ आएगी जो **अल्लाह** तआ़ला ने हमारे लिये मुक़द्दर कर दी है वोह हमारा मौला है और वोही हमें काफ़ी और हमारा कारसाज़ है।"

वोह ऐसा क़दीर है कि उस की क़ुदरत की इन्तिहा नहीं और वोह ऐसा ह़कीम है कि उस की ह़िक्मतों की ह़द नहीं और ऐसा रह़ीम है कि उस की रह़मतों की इन्तिहा नहीं और जो इन सिफ़ात का मालिक है वोही इस बात का अहल है कि उसी पर भरोसा और तवक्कुल किया जाए और अपने तमाम काम उस के ह़वाले किये जाएं लिहाज़ा सिफ़ते तफ़्वीज़ पर क़ाइम रहो और येह अ़क़ीदा भी रखो कि **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म में मेरे लिये जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होगा सब मेरे **मुवाफ़िक़े ह़ाल**[1] और बेहतर है अगर्चे मेरा इ़ल्म उस की कैफ़िय्यात और तफ़्सीलात को नहीं जानता।

---

1 ...मेरी ह़ालत के मुत़ाबिक़।

अपने नफ़्स को यूं भी तल्क़ीन करो : "ऐ नफ़्स ! **नविश्तए तक़्दीर**[1] ज़रूर मिल कर रहेगा, गुस्सा और बेचैनी बे फ़ाइदा है और बेहतरी तो उस में है जो **अल्लाह** तआला करे, लिहाज़ा गुस्से और नाराज़ी की कोई वजह नहीं।"

ऐ नफ़्स ! जब तू **अल्लाह** तआला के रब होने पर राज़ी है तो उस के हुक्म और तक़्दीर पर क्यूं राज़ी नहीं हालांकि क़ज़ा व क़दर रबूबिय्यत की सिफ़ात और उस के लवाज़िमात में से हैं लिहाज़ा उस की रिज़ा को इख़्तियार करो।

इसी तरह अगर तुम किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार हो जाओ या कोई ना गवार मुआमला पेश आ जाए तो अपने नफ़्स को तहम्मुल व ज़ब्त में रखो और अपने दिल पर भी क़ाबू रखो, येह न हो कि जज़अ़ फ़ज़अ़, बेचैनी और गिला, शिकायत का इज़्हार करने लगो, ख़ास कर अव्वल सदमे के वक़्त क्यूंकि इब्तिदाए मुसीबत के वक़्त सब्र व तहम्मुल एक दुश्वार अम्र है और पहले सदमे के वक़्त नफ़्स पर क़ाबू रखना बहुत मुश्किल है, ऐसे वक़्त में अपने नफ़्स से यूं कहो :

"ऐ नफ़्स ! येह मुसीबत तो सर पर पड़ चुकी है इसे दूर करने की अब सूरत और तदबीर नहीं और **अल्लाह** तआला इस से भी बड़े बड़े मसाइब से तुझे नजात दे चुका है क्यूंकि आफ़ात व बलिय्यात की बे शुमार अक़्साम हैं। इस मुसीबत और तक्लीफ़ को भी **अल्लाह** तआला दूर कर देगा और मुसीबत का येह बादल अ़न क़रीब छट जाएगा। तो ऐ नफ़्स ! थोड़ी देर के लिये सब्र के दामन को मज़बूती से पकड़े रख, तुझे इस के बदले **दाइमी सुरूर**[2] और सवाबे अ़ज़ीम अ़ता होगा।"

1...क़िस्मत में लिखा। 2...हमेशा रहने वाली ख़ुशी।

फिर येह भी है कि बे सब्री से नाज़िल शुदा आफ़ात दूर नहीं हो सकती तो जज़अ़ फ़ज़अ़ बेकार है। ह़क़ीक़त येह है कि सब्र व तह़म्मुल के होते हुवे मुसीबत का बरदाश्त करना मुश्किल नहीं रहता। तो नुज़ूले मुसीबत के वक़्त ज़बान से اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ का विर्द करो और दिल में उस अज्रो सवाब का तसव्वुर करो जो इस पर **अल्लाह** तआ़ला अ़ता फ़रमाएगा और ऐसे वक़्त में बड़े बड़े मसाइब पर **उलूल अ़ज़्म**(1) अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) और औलियाए उ़ज़्ज़ाम (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم) के सब्र व तह़म्मुल को याद करो जो **अल्लाह** तआ़ला की दरगाह में इ़ज़्ज़त व वजाहत का मक़ाम रखते हैं और अगर किसी वक़्त तुम्हारा परवर दगार तुम से दुन्या को रोक ले तो अपने नफ़्स से यूं कहो : ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** तआ़ला तेरे ह़ाल से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ है तुझ पर करम करने वाला मेहरबान भी है। वोह **ख़सीस**(2) कुत्ते को रोज़ी देता है बल्कि काफ़िर को भी रोज़ी देता है जो उस का सरासर दुश्मन और बाग़ी है और मैं तो उस का बन्दा, उस को पहचानने वाला और उस को एक मानता हूं, क्या मुझे वोह एक रोटी भी नहीं दे सकता ? येह तो एक **मुह़ाल**(3) बात है बल्कि वोह ज़रूर दे सकता है, इस के बा वुजूद अगर उस ने दुन्या को मुझ से रोक लिया है तो ज़रूर इस में कोई नफ़्ए़ अ़ज़ीम पोशीदा है और हर तंगी के बा'द सहूलत है, तो ऐ नफ़्स ! थोड़ी देर के लिय सब्र से काम ले तो इस के बदले **अल्लाह** तआ़ला के लुत़्फ़ो करम से अ़जीब अ़जीब और उ़म्दा उ़म्दा चीज़ें देखेगा,

किसी कहने वाले ने क्या अच्छा कहा है :

تَوَقَّعْ مَنْحَ رَبِّكَ سَوْفَ يَاْتِيْ ۔۔۔ بِمَا تَهْوَاهُ مِنْ فَرَجٍ قَرِيْبٍ

अपने रब के लुत़्फ़ो करम से उम्मीद वाबस्ता रखो, अ़न क़रीब वोह कुशादगी और सहूलत तुम्हें मिल जाएगी जिसे तुम चाहते हो।

1... हिम्मत वाले। 2...कमतर। 3...नामुमकिन।

وَ لَا تَيْأَسْ اِذَا مَا نَابَ خَطْبٌ　　فَكَمْ فِي الْغَيْبِ مِنْ عَجَبٍ عَجِيْبِ

और मुसीबत और तक्लीफ़ के वक़्त मायूसी का शिकार न हो जाओ क्यूंकि पर्दए ग़ैब में बड़े बड़े अ़जाइब व ग़राइब मौजूद हैं।

एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(۱)اَلَا يَا اَيُّهَا الْمَرْءُ　　اَلَّذِي الْهَمُّ بِهٖ بَرَّحْ

(۲)اِذَا اشْتَدَّتْ بِكَ الْعُسْرٰى　　فَفَكِّرْ فِي اَلَمْ نَشْرَحْ

(۳)فَعُسْرٌ بَيْنَ يُسْرَيْنِ　　اِذَا كَرَّرْتَهٗ فَافْرَحْ

तर्जमा : (1) ऐ वोह शख़्स जिस पर ग़म व फ़िक्र मुसल्लत़ हो चुका है।

(2) जब तेरा ग़म व फ़िक्र शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो सूरए "اَلَمْ نَشْرَح" का मज़्मून ज़ेहन में ला।

(3) इस सूरत में वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमाया गया है कि एक तंगी दो आसानियों के दरमियान है तो इस मज़्मून के तकरार से फ़रह़त ह़ासिल कर।

तो जब तुम इस त़रह़ के अज़्कार और बातें अपने तसव्वुर में लाते रहोगे और इन की मश्क़ करते रहोगे तो तुम्हारा येह मुआ़मला आसान हो जाएगा बशर्ते़ कि कुछ वक़्त तक हिम्मत और कोशिश से काम लो।

जब तुम इस मक़ाम पर पहुंच गए तो तुम ने इन मज़्कूरा **अ़वारिज़े अरबअ़** को अपने नफ़्स से दूर कर लिया और इस की मशक़्क़त तुम ने उठा ली। **अल्लाह** तआ़ला के हां तुम **मुतवक्किलीन**[1] में शामिल हो गए, उन लोगों का मक़ाम पा लिया जो अपना हर काम **अल्लाह** तआ़ला के ह़वाले करते हैं और उस की तक़्दीर पर राज़ी रहते हैं और तुम ने साबिरीन का दरजा ह़ासिल कर लिया और दुन्या में तो तुम्हें राह़ते क़ल्ब व बदन

1... तवक्कुल करने वालों।

हा़सिल हो गई और आख़िरत में अज्रे अ़ज़ीम और ज़ख़ीरए सवाब जम्अ़ कर लिया और रब तआ़ला की दरगाह में तुम्हें बुलन्द मर्तबा हा़सिल हो गया और ख़ुदा तआ़ला ने तुम को अपना मह़बूब व दोस्त बना लिया। इस त़रह़ तुम ने **ख़ैरिय्यते दारैन**(1) हा़सिल कर ली और इ़बादत का राहे **मुस्तक़ीम**(2) पा लिया।

क्यूंकि अब न तो सामने कोई रुकावट है और न दिल को इधर उधर मसरूफ़ करने वाली कोई चीज़ मौजूद है और इस वक़्त तुम ने इस मुश्किल घाटी को उ़बूर कर लिया।

अल्लाह तआ़ला के हु़ज़ूर में दुआ़ है कि वोह हु़स्ने तौफ़ीक़ से तेरी भी और हमारी भी मदद फ़रमाए क्यूंकि हर चीज़ का मालिको मुख़्तार वोही है।

وَ هُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

कब ज़िक्रुल्लाह करना ह़राम है!

याद रखिये! ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइ़से अज्रो सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में ममनूअ़ भी। मसलन: "मक्तबतुल मदीना" की मत़बूआ़ "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 533 पर है: गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस ग़रज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ना या "سُبْحٰنَ اللّٰہ" कहना कि उस चीज़ की उ़मदगी ख़रीदार पर ज़ाहिर करे, नाजाइज़ है। यूं ही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना कि लोगों को इस के आने की ख़बर हो जाए ताकि इस की ता'ज़ीम को उठें और जगह छोड़ दें नाजाइज़ है। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स.131 ब ह़वाला ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، فصل فی بیان تألیف الصلاۃ...الخ، مطلب: ہل نفع الصلاۃ عائد للمصلی...الخ، ۲/۲۸۱)

---

(1) .....दोनों जहां की भलाई। (2) .....सीधा रास्ता।

पांचवां बाब
पांचवीं घाटी के बयान में
येह घाटी अ़क़्बतुल बवाइ़स के नाम से मौसूम है

ऐ बरादरे अ़ज़ीज़ ! जब त़रीक़े इ़बादत दुरुस्त मा'लूम हो गया। इस राहे इ़बादत पर चलने में सहूलत और आसानी ह़ासिल हो गई और मवानेअ़ और रुकावटें दूर हो गईं तो अब तुझे इस राह पर चलना ज़रूरी है लेकिन इस पर चलना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं जब तक तू अपने अन्दर ख़ौफ़ व रजा की सिफ़त पैदा न करे और इन का शुऊ़र ह़ासिल न करे और इन दोनों को कमा ह़क़्क़ुहू न अपनाए।

ख़ौफ़ का **इल्तिज़ाम**[1] दो वजह से ज़रूरी है :

एक तो इस लिये कि ख़ौफ़ के ज़रीए़ ही इन्सान गुनाहों से बच सकता है क्यूंकि नफ़्से सरकश शर और बुराई का इन्तिहाई दिलदादह है और फ़ितने की बातों का बहुत शाइक़ है येह उस वक़्त तक बाज़ नहीं आ सकता जब तक अपने अन्दर ज़बरदस्त ख़ौफ़ न पैदा किया जाए और इन्तिहाई ज़ज्र व तम्बीह का त़रीक़ा इख़्तियार न किया जाए क्यूंकि **नफ़्से अम्मारा**[2] **त़बअ़न**[3] सिफ़ते वफ़ा और ह़या से ख़ाली है जैसे किसी ने कहा है :

اَلْعَبْدُ يُقْرَعُ بِالْعَصَا　　وَالْحُرُّ تَكْفِيْهِ الْمَلَامَهْ

(ग़ुलाम लाठी से दुरुस्त होता है लेकिन दाना और शरीफ़ इन्सान को थोड़ी सी मलामत और तम्बीह काफ़ी होती है।)

1.... ख़ौफ़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लेना। 2...बुराई की त़रफ़ राग़िब करने वाला नफ़्स। 3...फ़ित़रतन।

लिहाज़ा इस नफ़्से अम्मारा को राहे इ़बादत पर चलाने की येह तदबीर है कि तू क़ौल, फ़े'ल और फ़िक्र, ग़रज़ हर त़रह़ से इस पर ख़ौफ़ का कोड़ा मुसल्लत़ रखे जैसा कि किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि उन के नफ़्स में किसी गुनाह की रग़बत और चाहत पैदा हुई तो वोह बाहर सह़रा की त़रफ़ चल पड़े, वहां जा कर कपड़े उतारे और तपती रैत पर लौटना शुरूअ़ किया और नफ़्स से मुख़ात़िब हो कर कहा :

ऐ रात के वक़्त मुर्दार की त़रह़ चार पाई पर पड़े रहने वाले और दिन **लग़्विय्यात**[1] में ज़ाएअ़ करने वाले नफ़्स ! इस तपिश और ह़रारत को चख ले। जहन्नम की आग तो इस से कहीं ज़ियादा गर्म है, जब तेरे लिये येह ह़रारत ना क़ाबिले बरदाश्त है तो दोज़ख़ की आग की गर्मी किस त़रह़ बरदाश्त करेगा ?

दूसरे इस लिये ख़ौफ़ ज़रूरी है ताकि बन्दे का नफ़्स उ़ज्ब और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला न हो बल्कि राहे इ़बादत में पेश आने वाले ख़त़रात व शदाइद को मल्ह़ूज़ रखते हुवे अपने नफ़्स को **मज़मूम**[2] जाने, इस को ऐ़बनाक तसव्वुर करे और नाक़िस जाने और इस त़रह़ नफ़्स से उ़ज्ब और ख़ुद पसन्दी के माद्दे की **बैख़ कनी करे**[3] और येह बात ख़ौफ़ ही से पैदा हो सकती है जैसा कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल है कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

"لَوْ اِنِّیْ وَ عِیْسٰی اُوْخِذْنَا بِمَا اكْتَسَبَتْ هَاتَانِ لَعُذِّبْنَا عَذَابًا لَمْ يُعَذِّبْهُ اَحَدٌ مِّنَ الْعَالَمِيْنَ وَ اَشَارَ بِاُصْبُعَيْهِ"[4]

अगर मैं और ईसा (عَلَیْہِمَا السَّلَام) उन आ'माल की वजह से पकड़े जाते जो हम से सादिर हो चुके हैं तो हम को ऐसे अ़ज़ाब में डाला

---

1 .....फ़ुज़ूलिय्यात। 2 .....बुरा। 3 .....जड़ से उखाड़े।

4 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، ۲/۲۷، حدیث: ٦٥٦ ، بتغير قليل۔

जाता जो सब से सख़्त होता ।(1) ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया : "हम में से कोई शख़्स इस बात से बे ख़ौफ़ नहीं हो सकता कि उस ने अपनी ज़िन्दगी में किसी ऐसे गुनाह का इर्तिकाब किया हो जिस की वजह से बख़्शिश और मग़्फ़िरत का दरवाज़ा बन्द हो चुका हो और इस के बा'द के नेक आ'माल किसी शुमार में न आ रहे हों ।"

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने नफ़्स को यूं **इताब**(2) करते थे :

"تَقُوْلِیْنَ قَوْلَ الزَّاهِدِیْنَ وَ تَعْمَلِیْنَ عَمَلَ الْمُنَافِقِیْنَ وَ فِی الْجَنَّةِ تَطْمَعِیْنَ هَیْهَاتَ
هَیْهَاتَ اِنَّ لِلْجَنَّةِ قَوْمًا اٰخَرِیْنَ وَ لَهُمْ اَعْمَالٌ غَیْرُ مَا تَعْمَلِیْنَ"

ऐ नफ़्स ! तू बातें तो दुर्वेशों और ज़ाहिदों की करता है लेकिन तेरे आ'माल मुनाफ़िक़ों जैसे हैं, इस पर तू जन्नत की उम्मीद लगाए हुवे है, इस ह़ाल में जन्नत की उम्मीद एक बईद बात है, दर ह़क़ीक़त जन्नती और लोग हैं और उन के आ'माल तेरे आ'माल से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हैं ।

1...हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद अपनी उम्मत को ख़ौफ़ और डर की ता'लीम के तौर पर है या हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तवाज़ोअ़न व इन्किसारन फ़रमाया, या बड़े दरजे की नेकी छोड़ कर छोटे दरजे की इख़्तियार करने को अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام की शाने रफ़ीअ़ के मुताबिक़ गुनाह और मा'सियत पर महमूल करते हुवे अपनी और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ अ़ज़ाब की निस्बत कर दी क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस पर भी इताब हो सकता है । हुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام के इस इरशाद का येह मत़लब हरगिज़ हरगिज़ नहीं कि مَعَاذَ اللّٰه हुज़ूर से या ह़ज़रते ईसा (عَلَیْهِمَا السَّلَام) से गुनाह या मा'सियत का सुदूर हुवा है क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिल इजमाअ़ क़ब्ले नबुव्वत और बा'दे नबुव्वत सग़ाइर और कबाइर (सग़ीरा और कबीरा गुनाहों) से मा'सूम और पाक होते हैं । واللّٰہ تعالٰی اعلم मुतर्जिम عُفِیَ عَنْہُ

2...मलामत ।

तो इस त़रह़ के वाक़िआ़त ज़ेहन में दोहराते रहो, ताकि इबादत के दौरान नफ़्से अम्मारा उ़ज्ब और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला न हो और मुसीबत व नाफ़रमानी का इर्तिकाब न कर बैठे। وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِيْق

रजा[1] का बयान

रजा का तसव्वुर व शुऊ़र दो वजह से ज़रूरी है :

एक तो इस लिये कि त़ाआ़त और नेक कामों का जज़्बा पैदा हो, क्यूंकि नेक अ़मल की अन्जाम देही नफ़्स पर गिरां[2] होती है, शैत़ान भी नेकी की त़रफ़ रुख़ नहीं करने देता और नफ़्सानी ख़्वाहिशात बदी की त़रफ़ खींचती हैं और इन्सान अहले ग़फ़्लत के ह़ालात का ज़ियादा असर क़बूल करता है जो नेक कामों को बिल्कुल तर्क कर के सरासर दुन्या की परस्तिश में मसरूफ़ हैं, और आख़िरत में नेकियों पर जो सवाब अ़त़ा होगा वोह इस वक़्त आंखों से पोशीदा है और इस सवाब को पा लेने का मुआ़मला बई़द है, जब सूरते ह़ाल येह हो तो नेक कामों की त़रफ़ नफ़्स का मुतवज्जेह होना और पूरी त़रह़ राग़िब होना और ह़रकत करना एक मुश्किल अम्र है तो ऐसी शै का साथ होना ज़रूरी है जो इन **मवानेअ़**[3] का मुक़ाबला कर सके, इन की **मुदाफ़अ़त**[4] कर सके, बल्कि नेकियों से रोकने वाली चीज़ों की निस्बत नेकियों की त़रफ़ राग़िब करने वाली चीज़ की क़ुव्वत ज़ियादा होनी चाहिये और वोह शै रजा है या'नी रह़मते ख़ुदावन्दी की क़वी उम्मीद, **ह़ुस्ने सवाब**[5] की त़रफ़ पूरी रग़बत और अज्रे इलाही का पूरा यक़ीन।

1...उम्मीद। 2...भारी। 3 ...रुकावटें। 4...दिफ़ाअ़। 5...बेहतरीन अज्र।

हमारे पीरो मुर्शिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया :

اَلْحُزْنُ يَمْنَعُ عَنِ الطَّعَامِ وَ الْخَوفُ يَمْنَعُ عَنِ الذُّنُوبِ وَ الرَّجَاءُ يُقَوِّي عَلَى الطَّاعَاتِ وَ ذِكْرُ الْمَوْتِ يُزَهِّدُ فِي الْفُضُوْلِ

ग़म व फ़िक्र खाने की रग़बत ख़त्म कर देता है, ख़ौफ़े इलाही गुनाहों से रोक देता है और रह़मते ख़ुदावन्दी की उम्मीद नेक कामों की रग़बत पैदा करती है और मौत की याद फ़ुज़ूल और लग़्व कामों से **मुतनफ़्फ़िर**[1] कर देती है।

दूसरे इस लिये रजा ज़रूरी है कि इस से इ़बादत की मशक़्क़त और **सुऊ़बत**[2] आसान हो जाती है।

मा'लूम होना चाहिये कि जो शख़्स अपनी मत़लूबा शै की अहम्मिय्यत व ज़रूरत पहचान लेता है उस पर उस शै के ह़ुसूल के लिये अपनी हर चीज़ क़ुरबान कर देना आसान हो जाता है, और जिसे कोई चीज़ पसन्द आ जाती है और दिलो जान से उस की चाहत व रग़बत रखता है वोह उस की शिद्दत व मशक़्क़त को बरदाश्त कर लेता है।

और उस के ह़ुसूल में जो मेह़नत व मशक़्क़त उसे उठानी पड़ती है वोह इस की परवाह नहीं करता और जिसे किसी चीज़ से पूरे त़ौर पर प्यार हो जाता है तो वोह उस के लिये हर मुश्किल व दुश्वारी बरदाश्त करने पर आमादा हो जाता है बल्कि अपनी मह़बूब शै की ख़ात़िर मुश्किलात व तकालीफ़ बरदाश्त करने में कई त़रह़ की लज़्ज़त व फ़रह़त मह़सूस करता है, तुम देखते नहीं कि शहद फ़रोख़्त करने वाला नफ़्अ़ की ख़ात़िर मख्खियों के डसने की तक्लीफ़ को मह़सूस नहीं करता और मज़्दूर इन्सान गर्मियों के लम्बे लम्बे दिनों में कड़ाके की धूप के अन्दर सारा सारा दिन दो

---

1 ...नफ़रत करने वाला। 2 ...मुश्किल।

दिरहम की ख़ातिर भारी बोझ सर पर उठा कर बड़ी ऊंची ऊंची सीढ़ियों पर चढ़ता रहता है इसी त़रह़ किसान अनाज कमाने की ख़ातिर गर्मी और सर्दी की तक्लीफ़ और सारा साल मशक़्क़त व मेह़नत उठाने को आसान जानता है।

इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के उन साहिबे कोशिश बन्दों ने जब जन्नत में ह़ासिल होने वाले आराम व आसाइश, खाने पीने, हूर व **कुसूर**[1] खुश्नुमा ज़ेवरो लिबास और **अल्लाह** तआ़ला की इन तमाम बयान कर्दा ने'मतों पर यक़ीन किया और इन की याद ज़ेह्न में रखी तो इन पर ह़क़ तआ़ला की इ़बादत व त़ाअ़त में पेश आने वाली मशक़्क़तें आसान हो गईं और दुन्या की लज़्ज़तें और ने'मतें फ़ौत हो जाने पर इन्हें रन्ज और कोफ़्त मह़सूस न हुई और जन्नत की ख़ातिर दुन्या में हर त़रह़ के **ज़रर**[2] ख़स्ता ह़ाली, बे चैनी और मशक़्क़त को इन्हों ने खुशी खुशी बरदाश्त किया।

ह़िकायत

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथियों ने आप के ख़ौफ़े इलाही, इ़बादत में इन्तिहा दरजे की कोशिश व मेह़नत और आख़िरत के डर की वजह से आप की परेशान ह़ाली को देख कर अ़र्ज़ किया : 'ऐ उस्ताज़े मोह़तरम ! आप इस से कम दरजे की कोशिश के ज़रीए़ भी اِنْ شَآءَاللّٰہ अपनी मुराद पा लेंगे।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया :

"मैं क्यूं कोशिश न करूं हालांकि मुझे येह बात पहुंची है कि अहले जन्नत अपने मनाज़िल व मकानात में तशरीफ़ फ़रमा

---

1 .....मह़ल्लात। 2 .....नुक़्सान।

होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिस से आठों जन्नतें जगमगा उठेंगी, जन्नती गुमान करेंगे, येह अल्लाह तआ़ला की ज़ात का नूर है तो सजदे में गिर पड़ेंगे, उन्हें निदा होगी अपने सर सजदे से उठा लो, येह वोह नहीं है जिस का तुम्हें गुमान हुवा है येह तो जन्नती औ़रत के **तबस्सुम**(1) का नूर है जो उस ने अपने ख़ावन्द के सामने किया है।"

फिर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह अश्आ़र पढ़े :

مَا ضَرَّ مَنْ كَانَتِ الْفِرْدَوْسُ مَسْكَنَهُ   مَاذَا تَحَمَّلَ مِنْ بُؤْسٍ وَّ اِقْتَارِ

تَرَاهُ يَمْشِي كَئِيبًا خَائِفًا وَجِلًا   اِلَى الْمَسَاجِدِ يَمْشِي بَيْنَ اَطْمَارِ

يَا نَفْسُ مَالَكِ مِنْ صَبْرٍ عَلَى لَهَبٍ   قَدْ حَانَ اَنْ تُقْبِلِي مِنْ بَعْدِ اِدْبَارِ

तर्जमा : (1) मशक़्क़त व तंगदस्ती बरदाश्त करना उसे कोई मुज़िर व नुक़्सान देह नहीं जिस का **मस्कन**(2) और **जाए क़रार**(3) जन्नते फ़िरदौस है।

(2) ऐसा शख़्स दुन्या में ग़मनाक, ख़ाइफ़ और आख़िरत में पेश आने वाले मुआ़मले से डरता रहता है, **इज्ज़ो मस्कनत**(4) का लिबास ज़ैबे तन किये अदाए नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ उस की आमदो रफ़्त जारी रहती है।

(3) ऐ नफ़्स ! तुझे आतशे दोज़ख़ के शो'ले बरदाश्त करने की हिम्मत नहीं है और आ'माले बद की वजह से क़रीब है कि **बा'द अज़ सद ज़िल्लतो ख़्वारी**(5) तुझे वोह अ़ज़ाब बरदाश्त करना पड़े।

मैं कहता हूं जब **मदारे उ़बूदिय्यत**(6) दो चीज़ों पर है : अव्वल त़ाअ़त की बजा आवरी, दुवुम गुनाह और मा'सियत से

1...मुस्कुराने। 2...ठिकाना। 3...रहने की जगह। 4...आ़जिज़ी। 5...बहुत ज़ियादा रुस्वाई के बा'द। 6.....बन्दगी की बुन्याद।

इजतिनाब, और मक़्सद इस नफ़्से अम्मारा की मौजूदगी में सिर्फ़ उसी वक़्त ह़ासिल हो सकता है जब इसे **तरग़ीब व तरहीब**[1] और उम्मीद व ख़ौफ़ के ज़रीए़ इस त़रफ़ मुतवज्जेह रखा जाए क्यूंकि सरकश हैवान उसी वक़्त क़ाबू में रहता है जब एक आगे से खींचने वाला हो और एक पीछे से हांकने वाला हो, येह हैवान जब अपनी पसन्द का चारा चरने लगता है और तू इसे एक डन्डा रसीद करता है और रोकता है इतने में दूसरी जानिब सब्ज़ चारा नज़र आता है तो वोह उधर मुतवज्जेह हो जाता है यहां तक कि तू पूरी होशयारी और एह़तियात़ से इसे रोकता है तब जा कर येह रुकता है और सरकश बच्चा ता'लीम की त़रफ़ सिर्फ़ उस सूरत में तवज्जोह करता है कि इस के वालिदैन इसे कई त़रह़ का लालच दें और **मुअ़ल्लिम**[2] अपने रो'ब और दबदबे के नीचे रखे।

बिऐ़निही येही ह़ालत इस नफ़्से अम्मारा की है कि येह भी एक सरकश हैवान है जो अपनी शहवात की चरागाह में रहने का सख़्त **मुश्ताक़**[3] है, ख़ौफ़ इस के लिये डन्डा और हांकने वाले का काम देता है और उम्मीदे सवाब व नजात इस के लिये सब्ज़ जव हैं जिस से इत़ाअ़त की त़रफ़ राग़िब होता है नीज़ येह नफ़्से अम्मारा सरकश बच्चे की मानिन्द है जिसे इ़बादत व तक़्वा की किताब पढ़ानी मक़्सूद है, आतिशे दोज़ख़ और अ़ज़ाब का ज़िक्र तो इस में डर पैदा करता है और जन्नत और सवाबे आ'माल इस में उम्मीद व रग़बत पैदा करते हैं ठीक इसी त़रह़ रियाज़त व इ़बादत के लिये ज़रूरी है कि नफ़्स में ख़ौफ़ व रजा का शुऊ़र पैदा करे वरना येह उम्मीद नहीं की जा सकती कि येह नफ़्स तक़्वा व इ़बादत की किताब पढ़ने पर आमादा हो जाए और तुम से मुवाफ़क़त इख़्तियार कर ले, त़ालिबे इ़बादत में येही शुऊ़र पैदा करने के लिये क़ुरआने

1...रग़बत दिलाने और डराने। 2...उस्ताद। 3..बहुत ज़ियादा चाहने वाला।

मजीद में बार बार और मुबालगे़ की ह़द तक वा'दा वई़द और तरग़ीब व तरहीब का ज़िक्र किया गया है, सवाब का इस पैराए में ज़िक्र किया कि ख़्वाह मख़्वाह कशिश पैदा होती है और **अ़ज़ाबे अलीम**(1) का इस तफ़्सील से ज़िक्र किया कि इस के बरदाश्त की इन्सान में त़ाक़त और हिम्मत नहीं, लिहाज़ा तुम पर ज़रूर है कि ख़ौफ़ व रजा को पेशे नज़र रखो, ताकि इ़बादत की बजा आवरी की मुराद ह़ासिल हो सके और इस राह में मशक़्क़त व तक्लीफ़ बरदाश्त करने में आसानी हो। وَاللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوفِيْقِ بِفَضْلِهٖ وَ رَحْمَتِهٖ

सुवाल : ख़ौफ़ व रजा की ह़क़ीक़त व **माहिय्यत**(2) और इन का हुक्म व नतीजा क्या है ?

जवाब : ख़ौफ़ व रजा हमारे उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक **क़बीलए ख़वातिर**(3) में से हैं, बन्दे की क़ुदरत में सिर्फ़ येही है कि वोह ख़ौफ़ व रजा के **मुक़द्दमात**(4) को अ़मल में लाए चुनान्चे, ख़ौफ़ की ता'रीफ़ येह की गई है :

"اَلْخَوفُ رَعْدَةٌ تَحْدُثُ فِي الْقَلْبِ عَنْ ظَنِّ مَكْرُوهٍ يَّنَالُهُ" ख़ौफ़ उस डर और लर्ज़े का नाम है जो किसी बुरी चीज़ के पहुंचने के गुमान से दिल में पैदा होता है।

ख़शिय्यत भी ख़ौफ़ जैसी कैफ़िय्यत का नाम है लेकिन ख़शिय्यत के मफ़्हूम में जिस से ख़ौफ़ होता है उस की हैबत और अ़ज़मत का तसव्वुर भी शामिल है, ख़ौफ़ के मुक़ाबिल जुरअत है, बा'ज़ दफ़्अ़ा ख़ौफ़ के मुक़ाबले में अम्न भी आता है, जैसे कहते हैं कि "خَائِفٌ وَ اٰمِنٌ" या'नी ख़ौफ़ व अम्न क्यूंकि आमिन या'नी बे ख़ौफ़ वोह शख़्स होता है जो **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम के मुतअ़ल्लिक़

---

1 .....दर्दनाक अ़ज़ाब। 2 .....अस्ल कैफ़िय्यत। 3 .....दिल में आने वाले ख़यालात की अक़्साम। 4 .....इन की त़रफ़ ले जाने वाली चीज़ों।

ला परवाही और बे बाकी का मुज़ाहरा करे लेकिन ह़क़ीक़तन ख़ौफ़ के मुक़ाबिल जुरअत ही है।

अपने अन्दर ख़ौफ़ पैदा करने के चार मुक़द्दमात और अस्बाब हैं :

﴾1﴿ अपने गुज़श्ता गुनाहों को याद करना।

﴾2﴿ **अल्लाह** तआ़ला की उस शिद्दत व सख़्ती को याद करना जिसे बरदाश्त करने की तुम में सकत नहीं।

﴾3﴿ **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब के आगे अपने ज़ो'फ़ व नातुवानी और अपनी कमज़ोरी को याद करना।

﴾4﴿ **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व त़ाक़त को याद रखना कि वोह जब चाहे, जैसे चाहे गिरिफ़्त कर सकता है।

रजा की ता'रीफ़ येह की गई है :

هُوَ اِبْتِهَاجُ الْقَلْبِ بِمَعْرِفَةِ فَضْلِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ وَ اسْتِرْوَاحُهٗ اِلٰى سَعَةِ رَحْمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى

या'नी **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम को पहचान कर दिल में ख़ुशी मह़सूस करना और उस की रह़मत के दामन में राह़त ह़ासिल करने का तसव्वुर।

रजा का येह मफ़्हूम व मा'ना ख़वात़िर में से है और बन्दे की क़ुदरत से बाहर है हां रजा **बई मा'ना**[1] :

"هُوَتَذَكُّرُ فَضْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَسَعَةِ رَحْمَتِهٖ" **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल और उस की वुस्अ़ते रह़मत को याद करना, बन्दे की क़ुदरत में है।

ख़त़रात व ह़वादिस के मुतअ़ल्लिक़ येह इरादा और अ़क़ीदा रखना कि बे मशिय्यते इलाही इन से ज़रर व नुक़्सान नहीं पहुंच

---

1 .....इस मा'ना के ए'तिबार से।

सकता इस को रजा कहा गया है, रजा के इस बयान में हमारे नज़दीक पहला मा'ना मुराद है या'नी **अल्लाह** तआला के फ़ज़्लो रहमत को याद कर के मसर्रत व राहत महसूस करना।

रजा की ज़िद "यास" (ना उम्मीदी) है, ना उम्मीदी और यास की येह ता'रीफ़ की गई है :

"هُوَ تَذَكُّرُ فَوَاتِ رَحْمَةِ اللّٰهِ وَ فَضْلِهٖ وَ قَطْعُ الْقَلْبِ عَنْ ذٰلِكَ"

इस ख़याल को कि मुझे खुदा की रहमत और उस का फ़ज़्ल नहीं पहुंचेगा, नीज़ दिल को रब तआला के फ़ज़्लो रहमत की उम्मीद से अलग कर लेने को "**यास**" कहते हैं।

इस तरह की ना उम्मीदी महज़ गुनाह है और जब रजा का तसव्वुर पुख़्ता करने के बिग़ैर नाउम्मीदी और यास का **क़ल्अ क़म्अ**(1) करना दुश्वार हो तो ऐसी सूरत में रजा फ़र्ज़ है और अगर ऐसी सूरते हाल न हो तो रजा नफ़्ल है, जब कि इजमाली तौर पर **अल्लाह** तआला के फ़ज़्लो करम और वुस्अते रहमत का अक़ीदा दिल में मज़बूत और पुख़्ता हो।

रजा चार चीज़ों से पैदा होती है :

﴾1﴿ बन्दे की तरफ़ से बिग़ैर किसी **सिफ़ारिश कुनिन्दा**(2) और बिग़ैर किसी रग़बत व तलब के बन्दे पर **अल्लाह** तआला की तरफ़ से किये गए इन्आमात व एहसानाते साबिक़ा को याद करना।

﴾2﴿ **अल्लाह** तआला ने अपनी शाने रहीमी व करीमी के मुताबिक़ अज़ीम इज़्ज़तों और बड़े अज्रो सवाब के जो वा'दे किये हैं उन को ज़ेह्न में रखना, उस अज्रो सवाब को ज़ेह्न में न रखना जिस के तुम अपने आ'माल के इवज़ मुस्तहिक़ हो सकते हो, क्यूंकि अज्रो

(1) ...ख़त्म। (2) .....सिफ़ारिश करने वाले।

सवाब अगर बन्दे के अफ़्आ़ल व आ'माल की हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मिले तो वोह बिल्कुल क़लील व ह़क़ीर होगा।

﴾3﴿ इस्तिह़्क़ाक़ के बिग़ैर और बे मांगे दीनो दुन्या के हर शो'बे में **अल्लाह** तआ़ला जो **मुख़्तलिफ़ुल अक़्साम**(1) ने'मतें **फ़िलह़ाल**(2) अ़त़ा कर रहा है इन को याद करना।

﴾4﴿ येह तसव्वुर कि **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत व मेहरबानी उस के ग़ज़ब और उस की गिरिफ़्त पर ग़ालिब है, और येह तसव्वुर कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस रह़मान, रह़ीम, ग़नी, करीम और अपने बन्दए मोमिन पर निहायत **मेहरबान**(3) है, जब तुम ख़ौफ़ व उम्मीद दोनों के मुत़ाबिक़ तसव्वुरात व ख़यालात को ज़ेह्न में रखोगे तो तुम में हर वक़्त ख़ौफ़ व रजा की कैफ़िय्यात बेदार रहेंगी। وَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ بِمَنِّهٖ وَ فَضْلِهٖ

फ़स्ल

तो ऐ बन्दे ! तुझ पर पूरी एह़तियात़, पूरे ध्यान और पूरी रिआ़यत के साथ ख़ौफ़ व रजा की इस घाटी को त़ै करना ज़रूरी है। एह़तियात़ की इस लिये ज़रूरत है कि येह घाटी निहायत दुश्वार गुज़ार है इस में त़रह़ त़रह़ के ख़त़रात हैं, क्यूंकि ख़ौफ़ व रजा की इस घाटी का रास्ता दो मोहलिक और ख़ौफ़नाक रास्तों के दरमियान से गुज़रता है, एक तो **अल्लाह** तआ़ला से बिल्कुल बे ख़ौफ़ हो जाने का रास्ता और दूसरा उस से बिल्कुल मायूस हो जाने का रास्ता, इन दोनों टेढ़ी राहों के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता है, अगर रजा इस क़दर ग़ालिब हो गई कि ख़ुदा तआ़ला का ख़ौफ़ बिल्कुल न रहा तो येह भी ग़लत़ राह है क्यूंकि

1.....मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की। 2.....मौजूदा ह़ालत में।

3.....यहां से लफ़्ज़ "शफ़ीक़" को ह़ज़्फ़ कर के "मेहरबान" कर दिया है क्यूंकि इस नाम का इत़्लाक़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मन्अ़ है। (इल्मिय्या)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾ (1)

अल्लाह तआ़ला की तदाबीर गिरिफ़्त से सिर्फ़ ख़सारा उठाने वाले लोग ही बे ख़ौफ़ और बे डर होते हैं।

और अगर ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि दिल से उम्मीदे रह़मत व बख़्शिश का नामो निशान मिट गया तो येह ना उम्मीदी और मायूसी का रास्ता है और येह भी ग़लत़ है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ (2)

अल्लाह तआ़ला की रह़मत से सिर्फ़ वोही लोग मायूस होते हैं जो काफ़िर हैं।

लेकिन अगर तुम ख़ौफ़ व रजा के दरमियान चले और दोनों का दामन पकड़ा तो येही वोह **सिराते मुस्तक़ीम**(3) है जो उस के उन औलिया व अस्फ़िया का रास्ता है जिन की उस ने अपनी किताब में यूं **सिफ़त**(4) फ़रमाई है :

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿۹۰﴾ (5)

बेशक वोह नेक कामों की बजा आवरी में जल्दी करते थे और ख़ौफ़ व डर की ह़ालत में हमें पूजते थे और हमारे सामने झुके रहते थे।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले। (پ۹،الاعراف:۹۹) 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (پ۱۳،یوسف:۸۷)
3.....सीधा रास्ता। 4.....ता'रीफ़। 5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे ह़ुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं। (پ۱۷،الانبیاء:۹۰)

जब तुम्हें मा'लूम हो गया कि इस घाटी में तीन मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं :

﴾1﴿ रास्तए अम्न व बे बाकी (मुकम्मल बे ख़ौफ़ी)।

﴾2﴿ नाउम्मीदी और मायूसी का रास्ता।

﴾3﴿ इन दोनों राहों के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता।

तो अगर तुम ज़रा भी दाएं या बाएं हुवे तो दो मोहलिक रास्तों में जा पड़ोगे और हलाक होने वालों के साथ हलाक हो जाओगे।

फिर सूरते ह़ाल येह है कि बे ख़ौफ़ी और मायूसी के दोनों रास्ते दरमियाने रास्ते की निस्बत ज़ियादा कुशादा हैं और इन की त़रफ़ बुलाने वालों की कसरत है, और दरमियानी रास्ते की निस्बत इन दो पर चलना ज़ियादा सहल और आसान है क्यूंकि अगर तुम जानिबे अम्न (बे ख़ौफ़ी) की त़रफ़ नज़र दौड़ाओगे तो तुम्हें अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ रह़मत, उस के बे पायां फ़ज़्लो करम और उस की बख़्शिश और जूद के वोह समन्दर नज़र आएंगे कि ख़ौफ़ व डर का शाइबा भी दिल में बाक़ी नहीं रहेगा, तो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल पर भरोसा कर के बे ख़ौफ़ हो कर बैठ जाओगे।

और अगर **जानिबे ख़ौफ़ की त़रफ़** देखोगे तो तुम्हें ख़ुदा तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुदरत **ग़ालिब सियासत**[1] कसरते हैबत, मुआ़मलए ह़िसाबो किताब की नज़ाकत, अपने वलियों और बरगुज़ीदा बन्दों की बत़ौरे इताब गिरिफ़्त के वोह लरज़ा ख़ैज़ वाक़िआ़त व ह़ालात सामने आएंगे कि रजा बाक़ी नहीं रहेगी, तो मायूसी और नाउम्मीदी का शिकार हो जाओगे।

1 .....ह़िक्मते अ़मली।

लिहाज़ा ऐसी सूरते ह़ाल के पेशे नज़र तुम पर येह भी ज़रूरी है कि मह़ज़ **अल्लाह** तआ़ला की वुस्अ़ते रह़मत पर ही इन्ह़िसार न करो ताकि उस की रह़मत पर भरोसा कर के बिल्कुल बेख़ौफ़ न हो जाओ कि येह भी ग़लत़ है और न उस की अ़ज़ीम हैबत और आख़िरत में सख़्त **खूद कुरैद**[(1)] पर ही नज़र रखो क्यूंकि इस त़रह़ तुम **कुनूत़िय्यत**[(2)] और मायूसी का शिकार हो जाओगे बल्कि दोनों पहलूओं को पेशे नज़र रखो, कुछ ह़िस्सा ख़ौफ़ का लो और कुछ रजा का फिर इन दोनों के कन्धे पर सुवार हो कर इस बारीक राह पर चलो ताकि भटकने से मह़फ़ूज़ रहो, क्यूंकि सिर्फ़ रजा का रास्ता बहुत आसान और सह्ल है और बड़ा वसीअ़ और कुशादा है लेकिन इस की मन्ज़िल और इन्तिहा अ़ज़ाबे खुदा से बिल्कुल बे ख़ौफ़ी और ख़सारा है, इसी त़रह़ सिर्फ़ ख़ौफ़ का रास्ता भी अगर्चे बड़ा वसीअ़ व अ़रीज़ है लेकिन इस का अन्जाम ज़लालत व गुमराही है, और ए'तिदाल का रास्ता ख़ौफ़ और रजा के दरमियान है और येह दरमियानी रास्ता अगर्चे दुश्वार गुज़ार है लेकिन हर ख़त़रे से मह़फ़ूज़ और बिल्कुल वाज़ेह़ और साफ़ है। जो **ग़ुफ़रान**[(3)] और एह़सान और जन्नत व रिज़्वान और **लिक़ाए इलाही**[(4)] तक ले जाता है, क्या तुम ने ख़ौफ़ व रजा के रास्ते पर चलने वालों के मुतअ़ल्लिक़ खुदा तआ़ला का येह इरशादे मुबारक नहीं सुना ?

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ (5) — *वोह अपने परवर दगार को ख़ौफ़ व उम्मीद की ह़ालत में पुकारते हैं।*

फिर इन की जज़ा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

---

(1).....छान बीन। (2).....नाउम्मीदी। (3).....मग़्फ़िरत। (4).....कुर्बे इलाही।
(5).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते। (پ۲۱،السجدة:۱۶)

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ (1)

कोई इन्सान नहीं जान सकता आंखों की उस ठन्डक को जो ख़ौफ़ व रजा की राह पर चलने वालों के लिये उन की जज़ा के तौर पर (आख़िरत में) पोशीदा रखी हुई है।

इस जुम्लए क़ुरआनी पर पूरी त़रह़ ग़ौर करो फिर इस राह पर चलने के लिये पूरी त़रह़ **मुस्तईद**(2) और बेदार हो जाओ क्यूंकि ख़ौफ़ व रजा का मक़ाम ह़ासिल करना आसान नहीं, फिर येह मा'लूम होना भी ज़रूरी है कि इस राह पर चलना और सुस्त और सरकश नफ़्स को इस की मह़बूब चीज़ों से हटा कर त़ाअ़ात और अ़अ़माले सालिह़ा में लगाना जो इसे बड़ा नागवार है, उस वक़्त तक ह़ासिल नहीं हो सकता जब तक तीन उसूल ज़ेह्न में न रखे जाएं और जब तक ग़फ़्लत और सुस्ती के बिग़ैर लगातार **दाइमन**(3) इन उसूलों की ह़िफ़ाज़त व निगहदाश्त न की जाए, वोह तीन उसूल येह हैं :

﴾1﴿ तरग़ीब व तरहीब के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदा तआ़ला के इरशादात।

﴾2﴿ गिरिफ़्त या मुआ़फ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला का दस्तूर।

﴾3﴿ आख़िरत में नेक लोगों के सवाब और बुरे लोगों के सज़ा व अ़ज़ाब को याद रखना।

इन तीन उसूलों की कमाह़क़्क़ुहू तफ़्सील के लिये तो दफ़्तर दरकार हैं। हम ने इस बाब में एक मुस्तक़िल किताब "**तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन**" तस्नीफ़ की है और इस मुख़्तसर किताब में हम सिर्फ़ उन कलिमात की त़रफ़ इशारा करते हैं जिन को ज़ेह्न नशीन कर लेने के बा'द मक़्सूद से اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی वाक़िफ़ हो जाओगे। وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِیْق

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का। (پ۲۱، السجدة:۱۷)

2 .....तय्यार। 3 .....हमेशा।

अस्ले अव्वल

तरग़ीब व तरहीब के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदा तआ़ला के इरशादात

ऐ बरादरे अ़ज़ीज़ ! तुझे उन आयात में ज़रूर तदब्बुर और ग़ौर करना चाहिये जिन में ख़ुदा तआ़ला ने तरग़ीब व तरहीब और ख़ौफ़ व रजा का ज़िक्र फ़रमाया है, चुनान्चे, रजा के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने मजीद में फ़रमाया :

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ (1)

अल्लाह तआ़ला की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम गुनाह बख़्श देगा।

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪ۙ (2)

अल्लाह तआ़ला के सिवा और कौन गुनाह बख़्शने वाला है ?

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ (3)

अल्लाह तआ़ला गुनाह बख़्शता है और तौबा क़बूल करता है।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ (4)

वोही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और उन की ग़लतियां मुआ़फ़ करता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है। (پ۲٤،الزمر:٥٣)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के। (پ٤،ال عمرٰن:١٣٥)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला। (پ۲٤،المؤمن:٣)

4....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है। (پ۲٥،الشورٰی:۲٥)

كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ(1)

तुम्हारे परवर दगार ने रह़मत व बख़्शिश अपने ज़िम्मे ले रखी है।

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ (2)

मेरी रह़मत हर शै को वसीअ़ है मैं अ़न क़रीब अपनी रह़मत उन लोगों के लिये मख़्सूस कर दूंगा जो मुत्तक़ी हैं।

اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾(3)

बेशक **अल्लाह** तआ़ला लोगों पर निहायत मेहरबान रह़म वाला(4) है।

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾(5)

वो मोमिनों पर मेहरबान है।

इन मज़्कूरा आयात और इस त़रह़ की दीगर बहुत सी आयात में रजा का बयान है।

ख़ौफ़ और हैबत की आयात

يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾(6)

ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से डरो।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है। (پ۷،الانعام:۵۴)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते हैं। (پ۹،الاعراف:۱۵۶)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत मेहरबान महर (रह़म) वाला है। (پ۲،البقرۃ:۱۴۳)

4 .....यहां से लफ़्ज़ "शफ़ीक़" को ह़ज़्फ़ कर के "निहायत मेहरबान रह़म वाला" कर दिया है क्यूंकि इस नाम का इत़्लाक़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मन्अ़ है। (इ़ल्मिय्या)

5 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है। (پ۲۲،الاحزاب:۴۳)

6 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे बन्दो ! तुम मुझ से डरो। (پ۲۳،الزمر:۱۶)

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ (1)

क्या तुम्हारा येह गुमान है कि हम ने तुम को बेकार पैदा किया है और तुम हमारी त़रफ़ लौटाए नहीं जाओगे ?

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾ (2)

क्या इन्सान येह गुमान किये बैठा है कि उस की बाज़पुर्स नहीं होगी ?

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتٰبِ (3)

आख़िरत में नजात का मुआ़मला तुम्हारी और अहले किताब की उम्मीदों के मातह़त नहीं ।

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ (4)

जो शख़्स भी बुराई करेगा तो इस का बदला पाएगा और उसे अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई ह़िमायती और मददगार नहीं मिलेगा ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं । (پ۱۸،المؤمنون:۱۱۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या आदमी इस घमन्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा ? (پ۲۹،القیامۃ:۳٦)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर । (پ۵،النساء:۱۲۳)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना ह़िमायती पाएगा न मददगार । (پ۵،النساء:۱۲۳)

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾(1)

और इन का गुमान येह है कि वोह बहुत ही अच्छे काम कर रहे हैं।

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾(2)

और उन के सामने अल्लाह की त़रफ़ से अ़ज़ाब का वोह नुमूना ज़ाहिर होगा जिस का उन को वहम व गुमान भी न था।

وَقَدِمْنَاۤ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾(3)

क़ियामत में हम उन के आ'माल की त़रफ़ आएंगे तो इन्हें क़बूल करने के बजाए ज़र्रात बना कर उड़ा देंगे और बिल्कुल नेस्तो नाबूद कर देंगे।

हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि वोह हमें अपने दामने रह़मत में जगह दे और बद आ'मालियों से बचाए।

चन्द वोह आयाते मुबारका जिन में ख़ौफ़ व रजा दोनों का बयान है :

نَبِّئْ عِبَادِیْۤ اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۴۹﴾(4)

मेरे बन्दों को बता दो कि मैं ही ग़फ़ूर व रह़ीम हूं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं। (پ۱۶،الکھف:۱۰۴)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी। (پ۲۴،الزمر:۴۷)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुवे ज़र्रे कर दिया कि रौज़न (रोशनदान) की धूप में नज़र आते हैं। (پ۱۹،الفرقان:۲۳)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ख़बर दो मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान। (پ۱۴،الحجر:۴۹)

इस के मुत्तसिल बा'द फ़रमाया :

وَاَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِیْمُ ﴿۵۰﴾ (1) *बेशक मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त अ़ज़ाब है।*

अ़ज़ाब का ज़िक्र साथ ही इस लिये फ़रमाया ताकि बन्दे पर सिर्फ़ रजा का ही ग़लबा न हो जाए, इसी त़रह़ कुरआने मजीद में एक जगह जहां येह फ़रमाया :

شَدِیْدِ الْعِقَابِ ۙ (2) *वोह सख़्त गिरिफ़्त करेगा।*

वहां इस के मुत्तसिल बा'द येह भी फ़रमाया :

ذِی الطَّوْلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ (3) *वोह बड़ा ज़ोर आवर है उस के सिवा कोई हस्ती लाइक़े इ़बादत नहीं।*

ताकि बिल्कुल ख़ौफ़ का ग़लबा ही न हो जाए, इस सिलसिले में **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی का अ़जीब तरीन क़ौल येह है कि पहले फ़रमाया :

وَیُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ (4) ***अल्लाह** तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है।*

फिर इस के साथ ही फ़रमा दिया :

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾ (5) *और **अल्लाह** बन्दों पर (6) मेहरबान भी है।*

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है। (پ۱۴،الحجر:۵۰)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सख़्त अ़ज़ाब करने वाला। (پ۲۴،المؤمن:۳)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बड़े इन्आ़म वाला उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। (پ۲۴،المؤمن:۳)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है। (پ۳،ال عمرٰن:۳۰)

5 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है। (پ۳،ال عمرٰن:۳۰)

6 .....यहां से लफ़्ज़ "शफ़ीक़" को ह़ज़्फ़ कर दिया है, क्यूंकि इस नाम का इत़लाक़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मन्अ़ है। (इल्मिय्या)

और इस से भी अ़जीब तर येह क़ौल है :

مَنۡ خَشِیَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَیۡبِ (1) *जो शख़्स रह़मान को बे देखे उस से डरता रहा।*

कि ख़शिय्यत के साथ अपना ज़िक्र इस्मे जब्बार या मुन्तक़िम या मुतकब्बिर से न किया जो ख़शिय्यत के लिहाज़ से मौक़अ़ के मुनासिब था बल्कि ख़शिय्यत को रह़मान से मुअ़ल्लक़ फ़रमाया ताकि ख़शिय्यत और रह़मत का ज़िक्र हो जाए कि दिल सिर्फ़ ज़िक्रे ख़शिय्यत से फ़ना ही न हो जाए, लिहाज़ा डराने के साथ साथ अम्न देने का तज़्किरा किया और तह़रीक के साथ साथ तस्कीन का ज़िक्र भी कर दिया।

इस आयत के मज़्मून की मिसाल यूं है कि तुम किसी को कहो : "तुम अपनी मेहरबान मां से क्यूं नहीं डरते ? " या "तुम अपने मुशिफ़क़ बाप से क्यूं ख़ौफ़ नहीं खाते ?" या "तुम रह़्म दिल ह़ाकिम से क्यूं नहीं डरते ?"

इस क़िस्म की गुफ़्तगू से मक़्सद येह होता है कि ख़ौफ़ व अम्न का दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना चाहिये और बिल्कुल मायूसी या बिल्कुल बे ख़ौफ़ी से दूर रहना चाहिये, अल्लाह तआ़ला अपनी रह़मत व करम से हमें और तुम्हें इस ज़िक्रे ह़कीम में **तदब्बुर**(2) और इस पर अ़मल करने वालों से करे, बेशक वोह बड़ा **जवाद**(3) और करीम है। وَ لَا حَوۡلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الۡعَلِیِّ الۡعَظِیۡم

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो रह़मान से बे देखे डरता है। (پ۲٦، ق:۳۳)

2...ग़ौरो फ़िक्र। 3...यहां से लफ़्ज़ "सख़ी" को ह़ज़्फ़ कर दिया है क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़ "सख़ी" इस्ति'माल करने को "फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 27, सफ़ह़ा, 165 पर मन्अ़ किया गया है। (इ़ल्मिय्या)

अस्ले दुवुम :

अल्लाह तआ़ला के अफ़्आ़ल व मुआ़मलात के बयान में

ऐ अ़ज़ीज़ ! मुन्दरिजए ज़ैल वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ ख़ौफ़ पैदा करने के लिये काफ़ी है :

﴾1﴿ इब्लीस ने **अल्लाह** तआ़ला की अस्सी हज़ार बरस इबादत की और एक क़दम की मिक़्दार भी उस ने ऐसी जगह बाक़ी न छोड़ी जिस पर उस ने सजदा न किया हो, फिर उस ने सिर्फ़ एक हुक्म की नाफ़रमानी की तो उस को अपनी दरगाह से मर्दूद कर दिया और उस की अस्सी हज़ार बरस की इबादत उस के मुंह पर मार दी और क़ियामत तक उस के गले में **तौक़े ला'नत**(1) डाल दिया और उस के लिये **अबदुल आबाद**(2) तक अ़ज़ाबे अलीम में जलना मुक़र्रर कर दिया । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है :

आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जिब्राईल عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को देखा कि इब्लीस के ह़ाल से **इ़ब्रत गीर हो कर**(3) का'बा शरीफ़ के पर्दे से लिपट कर निहायत गिर्या व ज़ारी के साथ **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर में येह दुआ़ कर रहे हैं :

اِلٰهِیْ وَ سَیِّدِیْ لَا تُغَیِّرْ اِسْمِیْ وَ لَا تُبَدِّلْ جِسْمِیْ ऐ मेरे इलाहा ! और ऐ मेरे मालिक ! कहीं मेरा नाम नेकों की लिस्ट से मिटा कर बदों की लिस्ट में न कर देना और कहीं मेरा जिस्म अहले अ़त़ा के ज़ुमरे से निकाल कर **अहले इ़क़ाब**(4) के गुरौह में न कर देना ।

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुदा तआ़ला के वोह बरगुज़ीदा नबी हैं जिन को **अल्लाह** ने बराहे रास्त अपने

1...ला'नत का फन्दा । 2...हमेशा हमेशा । 3...इ़ब्रत ह़ासिल करते हुवे । 4...अ़ज़ाब वालों ।

दस्ते कुदरत से बनाया फिर उन का ए'ज़ाज़ ज़ाहिर करने के लिये अपने तमाम मलाइका को उन्हें सजदा करने का हुक्म दिया फिर उन को मलाइका की गर्दनों पर उठा कर अपने **जवारे रह़मत**(1) में अपनी वसीअ़ और आराम देह जन्नत में जगह अ़ता की फिर सिर्फ़ एक दाना चखने से उन से वहां रहने की ने'मत छीन ली और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आवाज़ आई :

"اَلَا لَا يُجَاوِرُنِيْ مَنْ عَصَانِيْ" सुन ले ! वोह शख़्स मेरे **जवारे रह़मत**(2) में रहने के लाइक़ नहीं जो मेरी नाफ़रमानी का मुर्तकिब हुवा है।

और जो मलाइका आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को नूरी तख़्त पर बिठा कर जन्नत में लाए थे उन्ही को हुक्म दिया कि आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) को ऊपर के आस्मान से नीचे के आस्मान की त़रफ़ **उतार दो**(3) और इसी त़रह़ इन को ज़मीन पर ले जाओ यहां तक कि उन्हीं मलाइका ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को ज़मीन पर **पहुंचा दिया**(4) फिर आप (عَلَيْهِ السَّلَام) की तौबा क़बूल नहीं होती थी, यहां तक कि आप (عَلَيْهِ السَّلَام) मुसलसल दो सो बरस रोते रहे और इस सिलसिले में आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को बे इन्तिहा मशक़्क़त और तकलीफ़ झेलनी पड़ी फिर इस मशक़्क़त और रन्ज के असरात आप (عَلَيْهِ السَّلَام) की अवलाद में हमेशा हमेशा के लिये बाक़ी रह गए।

﴾3﴿ ह़ज़रते नूह़ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो शैख़ुल अम्बिया हैं, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने **अल्लाह** तआ़ला के दीन की तब्लीग़ के सिलसिले में किस क़दर शदीद मशक़्क़तें और तकालीफ़ बरदाश्त कीं, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) के मुंह से जब सिर्फ़ एक कलिमा **अल्लाह** तआ़ला की

1...यहां लफ़्ज़ "पड़ोस" को "जवारे रह़मत" से बदल दिया है। (इ़ल्मिय्या) 2...ह़ाशिया एक ही मुलाह़ज़ा कीजिये। (इ़ल्मिय्या) 3...यहां ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के लिये "धकेल दो" का जुम्ला तह़रीर था जो कि शाने नबुव्वत के लाइक़ नहीं लिहाज़ा इसे "उतार दो" से तब्दील कर दिया है। (इ़ल्मिय्या) 4...यहां ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के लिये "ला डाला" का जुम्ला तह़रीर था जो कि शाने नबुव्वत के लाइक़ नहीं लिहाज़ा इसे "पहुंचा दिया" से तब्दील कर दिया है। (इ़ल्मिय्या)

मशिय्यत के ख़िलाफ़ निकला, तो खुदा तआ़ला ने फ़ौरन फ़रमाया :

فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ۝۴۶ (1)

आप मुझ से ऐसी बात की हरगिज़ दरख़्वास्त न करें जिस का आप को पता नहीं, मैं आप को नसीह़त करता हूं कि आप नादान लोगों में से न हों।

रिवायात में आया है कि इस के बा'द शर्मो ह़या के बाइ़स चालीस साल आप (عَلَیْهِ السَّلَام) ने आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर न देखा।

﴾4﴿ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عَلَیْهِ السَّلَام) से सिर्फ़ एक नामुनासिब कलिमा सादिर हुवा तो इस के बाइ़स आप को किस क़दर ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा ! और किस क़दर इ़ज्ज़ व **तज़र्रुअ़**(2) से काम लिया, चुनान्चे, यूं कहा :

وَالَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓــٴَـتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ ۝۸۲ (3)

*वोह ज़ात जिस से मुझे उम्मीद है कि वोह मेरी **ख़त़ा** (4) बख़्श देगा।*

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तू मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इ़ल्म नहीं, मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि नादान न बन। (پ۱۲،ھود:۴۶)

2 ...आ़जिज़ी और गिर्या व ज़ारी।

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिस की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़त़ाएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा। (پ۱۹،الشعراء:۸۲)

4 ...एक क़ौल येह है कि ख़त़ा से मुराद "اِنِّیْ سَقِیْمٌ ، بَلْ فَعَلَهٗ كَبِیْرُهُمْ، هٰذَا رَبِّیْ" और बीवी को "هِیَ اُخْتِیْ" के अल्फ़ाज़ हैं लेकिन दर ह़क़ीक़त येह अल्फ़ाज़ आप ने तोरिये (तोरिया येह है कि मुतकल्लिम अपने कलाम के ज़ाहिरी मा'ना के बर ख़िलाफ़ मा'ना मुराद ले। (التعریفات للجرجانی،ص۵۱)) और ता'रीज़ (ता'रीज़ येह है कि मुख़ात़ब (जिस से कलाम किया जा रहा है) कलाम को बिग़ैर सराह़त के न समझ सके। (التعریفات للجرجانی، ص۴۵)) के त़ौर पर कहे जो ख़त़ा में दाख़िल नहीं बल्कि जाइज़ और दुरुस्त हैं इन पर त़लबे मग़्फ़िरत की ज़रूरत नहीं अस्ल बात येह है कि अम्बियाए किराम (عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) का **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत त़लब करना ता'लीमे उम्मत और तवाज़ोअ़ व इन्किसारी के त़ौर पर होता है। मुतर्जिम।

(مدارك، ج۳، ص۱۸۷،اسی آیت کے تحت) ((تفسیر المدارك،سورة الشعراء،تحت الآیة:۸۲،ص۸۲۳)

रिवायात में यहां तक आया है कि आप (عَلَیْہِ السَّلَام) इस क़दर रोए थे कि **अल्लाह** तआ़ला तसल्ली देने के लिये ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को आप के पास भेजता था। ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से येह पैग़ाम लाते थे।

"یَا اِبْرَاهِیْمُ هَلْ رَاَیْتَ خَلِیْلًا یُعَذِّبُ خَلِیْلَهٗ بِالنَّار" ऐ इब्राहीम! (عَلَیْہِ السَّلَام) तू ने कभी ऐसा दोस्त देखा है जो अपने दोस्त को आग के अ़ज़ाब में डाले?

लेकिन ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) ह़ज़रते जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) को जवाब में कहते थे:

"یَا جِبْرِیْلُ اِذَا ذَکَرْتُ خَطِیْئَتِیْ نَسِیْتُ خُلَّتَهٗ" ऐ जिब्रील! (عَلَیْہِ السَّلَام) जब मुझे अपनी ख़त़ा याद आती है तो ख़ौफ़ के बाइ़स **अल्लाह** के साथ रिश्तए दोस्ती भूल जाता है।

﴾5﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से सिर्फ़ इतना हुवा कि आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने तम्बीह के त़ौर पर एक काफ़िर क़िब्त़ी को **चपेड़ मार दी**[1] लेकिन इस फ़े'ल पर आप (عَلَیْہِ السَّلَام) के दिल में ख़ुदा तआ़ला का किस क़दर ख़ौफ़ व डर पैदा हुवा और आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने किस क़दर गिर्या व ज़ारी और इस्तिग़फ़ार से काम लिया, चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में वारिद है कि आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने जनाबे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया:

رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ (2)

ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तू मुझे बख़्श दे।

---

1 ...थप्पड़ या घूंसा मारा।

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:** ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर ज़ियादती की, तू मुझे बख़्श दे। (پ ۲۰، القصص:۱۶)

﴾6﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने के एक शख़्स बलअ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़ भी याद करो।

गुमराह होने से पहले उस की ह़ालत येह थी कि जब वोह आस्मान की त़रफ़ देखता था तो उस की नज़र अ़र्शे अ़ज़ीम तक पहुंचती थी, **अल्लाह** तआ़ला ने दर्जे ज़ैल आयत में इसी का तज़किरा किया है :

وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا (1)

इन को उस शख़्स का वाक़िआ़ सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयात अ़त़ा की थीं तो वोह इन से निकल गया (इन के ख़िलाफ़ चल पड़ा)

और येह गुमराही व ज़लालत उस पर सिर्फ़ इस वजह से मुसल्लत़ हो गई कि वोह दुन्या और अहले दुन्या की त़रफ़ झुक गया और सिर्फ़ एक मौक़अ़ पर **अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों में से एक दोस्त की इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत क़ाइम न रखी तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस से अपनी मा'रिफ़त छीन ली, और उसे धुतकारे हुवे कुत्ते की त़रह़ कर दिया, चुनान्चे, उस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ (2)

तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ हो गया कि अगर तू उस पर ह़म्ला आवर हो तो ज़बान निकाल ले।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब ! इन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह इन से साफ़ निकल गया। (پ۹،الاعراف:۱۷۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले। (پ۹،الاعراف: ۱۷۶)

तो सिर्फ़ एक बार **अल्लाह** तआ़ला के दोस्त की बे अदबी करने और एक बार दुन्या की त़रफ़ झुकने की पादाश में उसे हलाकत और ज़लालत के समन्दर में हमेशा के लिये ग़रक़ाब कर दिया गया।

मैं ने बा'ज़ उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से सुना है कि गुमराह होने से क़ब्ल बलअ़म बिन बाऊ़रा कि मजलिसे इ़ल्म में सिर्फ़ एक वक़्त में बारह बारह हज़ार दीनी त़ालिबे इ़ल्म होते थे, जो हाथों में क़लम दवात लिये उस के मा'रिफ़त से लबरैज़ मल्फ़ूज़ात क़लम बन्द करते थे, फिर गुमराही के बा'द वोह इस ह़ालत को पहुंचा कि इन्कारे ख़ुदा के मस्अले पर सब से पहले उस ने किताब तस्नीफ़ की।

हम **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब, उस की नाराज़ी उस के अ़ज़ाबे अलीम और उस की त़रफ़ से मुसल्लत़ होने वाली ज़िल्लत व ख़्वारी से बार बार पनाह पकड़ते हैं।

तो तुम ग़ौर कर लो कि दुन्या की ख़यानत और नुहूसत अ़वाम तो कुजा बड़े बड़े उ़लमा को ज़लालत व गुमराही के गहरे ग़ार में कहां तक धकेल कर ले जाती है ! लिहाज़ा बेदार और होशयार बनो, क्यूंकि मुआ़मला बड़ा ख़त़रनाक है और उ़म्र मुख़्तसर है और आ'माल ख़ामियों से लबरैज़ हैं और आ'माल को जांचने वाला बड़ा साहि़बे बसीरत है, अगर वोह अच्छे आ'माल पर हमें **ख़ातिमा**(1) नसीब फ़रमाए और हमारी लग़्ज़िशों को मुआ़फ़ कर दे तो उसे कोई मुश्किल और दुश्वार नहीं।

---

1 .....मौत।

﴾7﴿ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام से जो ज़मीन में ख़ुदा तआ़ला के नाइब और ख़लीफ़ा थे, सिर्फ़ एक लग़्ज़िश का सुदूर हुवा तो ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोए कि उन के आंसूओं से ज़मीन से सब्ज़ा उग आया, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं अ़र्ज़ करते थे :

"اِلٰهی تَرَحَّمْ بُكَائِیْ وَتَضَرُّعِیْ" ऐ **अल्लाह** ! मेरी इस गिर्या व ज़ारी को देख और मुझ पर रह़्म फ़रमा।

अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से जवाब आया :

"يَا دَاوٗدُ نَسِيْتَ ذَنْبَكَ وَ ذَكَرْتَ بُكَائَكَ" ऐ दावूद ! तुझे अपनी लग़्ज़िश तो भूल चुकी है मगर तुझे अपना रोना याद है।

मन्क़ूल है कि चालीस रोज़ तक और बा'ज़ रिवायत के मुत़ाबिक़ चालीस साल तक आप (عَلَيْهِ السَّلَام) की तौबा क़बूल न हुई।

﴾8﴿ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सिर्फ़ इतनी बात सादिर हो गई कि आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) एक दफ़्आ़ बे मह़ल ग़ुस्से में आ गए तो समन्दर की गहराइयों में चालीस रोज़ तक मछली के पेट में क़ैद कर दिये गए, वहां आप (عَلَيْهِ السَّلَام) येह तस्बीह़ पढ़ते और ख़ुदा को निदा करते थे :

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾ (1) — *नहीं कोई मा'बूद मगर तू ही, पाक है तू, बेशक मैं ज़ालिमों से था।*

---

❶.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझ को, बेशक मुझ से बेजा हुवा। (پ۱۷، الانبیاء: ۸۷)

फ़िरिश्तों ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) की आवाज़ सुनी और अ़र्ज़ किया : "ऐ इलाहल आ़लमीन ! आवाज़ तो पहचानी जाती है मगर इस का मक़ाम और इस की जगह मा'लूम नहीं होती, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

येह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ व पुकार है इस पर फ़िरिश्तों ने सिफ़ारिश की मगर इन तमाम बातों के बा वुजूद **अल्लाह** तआ़ला ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) का नामे मुबारक "**यूनुस**" लेने की बजाए "**ज़ुन्नून**" के नाम से आप (عَلَيْهِ السَّلَام) का ज़िक्र किया।(1) और इस क़िस्से को यूं बयान फ़रमाया :

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ (2)

तो यूनुस को मछली ने निगल लिया, आप उस वक़्त अपने आप को कोसते थे तो अगर आप उस वक़्त तस्बीह़ में मसरूफ़ न होते तो क़ियामत तक मछली के पेट में ही बन्द रहते, बाहर न आ सकते।

इस बयान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام पर अपनी ने'मत और अपने एह़सान का ज़िक्र यूं फ़रमाया है :

---

1 وَذَاالنُّوْنِ(پ ۱۷، الانبیاء: ۸۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और ज़ुन्नून को (याद करो)।

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था तो अगर वोह तस्बीह़ करने वाला न होता ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे। (پ ۲۳، الصفت: ۱۴۲ ـ ۱۴۴)

لَوْلَاۤ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ۝۴۹ (1)

अगर उस के रब की ने'मत उस के शामिल न होती तो उसे मछली के पेट से एक चटयल जगह में फेंक दिया जाता और मक़ामे मदह़ से दूर कर दिया जाता।

लिहाज़ा ऐ अ़ज़ीज़ ! ख़ुदा तआ़ला के इस त़रीक़े कार को ग़ौर से देख (और उस से डर)।

﴿9﴾ फिर रब तआ़ला ने ख़ुद उस हस्ती को जिसे तमाम अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) पर **सियादत**(2) व फ़ज़ीलत और उस की अपनी दरगाह में सब से ज़ियादा मुकर्रम व मोह़तरम होने का मक़ाम ह़ासिल है यूं ख़ित़ाब फ़रमाया :

فَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝۱۱۲ (3)

ऐ नबी ! तू भी हमारे अह़कामात की बजा आवरी में इस्तिक़ामत दिखा और वोह भी जो तेरे साथ हमारी त़रफ़ रुजूअ़ कर चुके हैं (अहले ईमान) और सरकशी के रास्ते पर मत चलो बेशक वोह तुम्हारे तमाम आ'माल को देख रहा है।

इस हुक्मे ख़ुदावन्दी के नुज़ूल के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे :

---

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर उस के रब की ने'मत उस की ख़बर को न पहुंच जाती तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुवा। (پ۲۹، القلم:۴۹) (2) .....बुज़ुर्गी। (3) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क़ाइम रहो जैसा तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रुजूअ़ लाया है और ऐ लोगो सरकशी न करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है। (پ۱۲، هود:۱۱۲)

"شَيَّبَتۡنِي"(1) मुझे **"सूरए हूद"** और इस की "هُوۡدٌ وَّ اَخَوَاتُهَا"(2) तरह दूसरी सूरतों ने बुढ़ा कर दिया है।

उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं : हुज़ूर عَلَيۡهِ السَّلَام की इस से येह आयत और इसी त़रह़ की दूसरी आयात मुराद हैं, कुरआने मजीद में खुदा तआ़ला ने आप (عَلَيۡهِ السَّلَام) को येह हुक्म भी दिया :

وَّاسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۡۢبِكَ (3)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनों के गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहो।* (پ٢٤،المؤمن:٥٥)

इस हुक्म के मुत़ाबिक़ हुज़ूर عَلَيۡهِ السَّلَام मुसलसल इस्तिग़फ़ार करते रहे यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से येह आयत नाज़िल हुई :

وَ وَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۙ﴿۳﴾ (4)

और हम ने आप से वोह बोझ उतार दिया जिस ने आप की कमर तोड़ दी थी।

नीज़ येह आयत भी नाज़िल हुई :

لِّيَغۡفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنۡ ذَنۡۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ (5)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ताकि **अल्लाह** तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के।* (پ٢٦،الفتح:٢)

1...यहां लफ़्ज़ "شیبتی" था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मख़्त़ूत़ा और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "شَيَّبَتۡنِي" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

2......المعجم الكبير، ١٧/٢٨٦،حديث:٧٩٠

3...इस आयते मुबारका का तर्जमा **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान"** से दर्ज किया गया है। (इल्मिय्या) 4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी। (پ٣٠،الم نشرح:٢-٣)

5...इस आयते मुबारका का तर्जमा **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान"** से दर्ज किया गया है। (इल्मिय्या)

इस त़रह़ की आयात के नुज़ूल के बा'द हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह ह़ालत थी कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) सोते नहीं थे बल्कि सारी सारी रात इ़बादत में मसरूफ़ रहते थे यहां तक कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के क़दम मुबारक वरम कर आए। सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) तअ़ज्जुब व ह़ैरत से सुवाल करते थे :

اَتَفْعَلُ هٰذَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ قَدْ غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ

या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आप इतनी ज़ियादा इ़बादत करते हैं ? ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की गुज़श्ता और आयिन्दा हर त़रह़ की लग़्ज़िशें (अगर इन का वुजूद फ़र्ज़ कर लिया जाए) दर गुज़र फ़रमा दी हैं। तो आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) जवाब में फ़रमाते थे : "اَفَلَا اَكُوْنَ عَبْدًا شَكُوْرًا؟"[1] क्या मैं **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?

हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अंगूठे और शहादत की उंगली से इशारा करते हुवे येह भी फ़रमाया करते थे :

لَوْ اَنِّیْ وَ عِيْسٰی اُوْخِذْنَا بِمَا كَسَبَتْ هَاتَانِ لَعُذِّبْنَا عَذَابًا لَّمْ يُعَذَّبْهُ اَحَدٌ مِّنَ الْعَالَمِيْنَ[2]

मेरी और ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام की अगर इतनी सी भी लग़्ज़िश पर पकड़ होती[3] तो हम ऐसे अ़ज़ाब में डाले जाते जो सब से ज़ियादा सख़्त होता।

आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) सारी सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते थे और रोते रहते थे और ज़बाने मुबारक से येह दुआ़ करते थे :

---

1 ......الدر المنثور، ٥١٣/٧ وابن عساكر، باب ذكر تقلله...الخ، ١٤١/٤ـ

2 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ٢٧/٢، حديث: ٦٥٦ ، بتغير قليل ـ

3 .....सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान की रिवायत को पेशे नज़र रखते हुवे यहां ह़दीसे पाक के तर्जमे में कुछ तब्दीली की गई है। (इ़ल्मिय्या)

اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِىْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ(1)

ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरे अ़ज़ाब से तेरी मुआ़फ़ी की पनाह में आता हूं और तेरे ग़ज़ब से तेरी रिज़ा की पनाह में आता हूं और तुझ से तेरी पनाह में आता हूं, मैं तेरी सना हरगिज़ नहीं कर सकता, तू उसी त़रह़ है जिस त़रह़ तू ने ख़ुद अपनी सना की है।

फिर सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) से जिन का ज़माना बा'द के ज़मानों से बेहतर था और जो तमाम उम्मत से अफ़्ज़ल थे, आपस में सिर्फ़ एक दफ़्आ़ कहीं हंसी मज़ाक़ का वाक़िआ़ रू नुमा हो गया तो फ़ौरन येह आयत नाज़िल हुई :

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ... الآية (2)

क्या अहले ईमान के लिये अभी तक वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल पूरे ख़ुशूअ़ के साथ ज़िक्रे इलाही की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाएं।

फिर **अल्लाह** तआ़ला ने इस उम्मत के मर्ह़ूमा होने के बा वुजूद जराइम का इर्तिकाब करने वालों की तम्बीह व तादीब के लिये सज़ाएं और तदाबीर मुक़र्रर कर दी हैं।

ह़ज़रते यूनुस इब्ने उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहा करते थे कि अगर यहां किसी के पांच दिरहम चोरी करने से तुम्हारा बेहतरीन उ़ज़्व (हाथ) कट सकता है तो वहां आख़िरत में तुम को अ़ज़ाब से भी बे फ़िक्र नहीं होना चाहिये।

1......شعب الايمان للبيهقی ، باب فی الصيام،٣/٣٨٥،حديث:٣٨٣٧۔

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)। (پ٢٧،الحديد:١٦)

हम अल्लाह तआ़ला से हर वक़्त इल्तिजा करते हैं कि वोह हमारे साथ अपने करम व फ़ज़्ल के मुताबिक़ सुलूक करे। اِنَّهٗ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

रजा से मुतअ़ल्लिक़ चन्द वाक़िआ़त

मक़ामे रजा के हुसूल के लिये अल्लाह तआ़ला की रह़मते वसीअ़ को ध्यान में रखना चाहिये। रह़मते ख़ुदावन्दी का तज़्किरा करना एक अच्छी बात है, इस में कोई ह़रज और मुज़ायक़ा नहीं। अल्लाह तआ़ला की रह़मत का बयान और उस की निहायत व ग़ायत इस से ज़ाहिर व इ़यां है कि वोह एक घड़ी के ईमान से सत्तर बरस के कुफ़्र को उड़ा देता है, क़ुरआने मजीद में फ़रमाया गया :

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ (1)

ऐ नबी ! कुफ़्फ़ार से कह दे कि अगर येह लोग अब भी बाज़ आ जाएं तो इन के गुज़श्ता तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

तुम फ़िरऔ़न के जादूगरों के वाक़िए़ को नहीं देखते जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ जंग और मुनाज़रा करने के लिये आए थे और ख़ुदा के दुश्मन फ़िरऔ़न की इ़ज़्ज़त की क़सम खाई थी और मुक़ाबले पर तुल गए थे, इन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सिर्फ़ एक मो'जिज़ा देखा तो इ़रफ़ाने ह़क़ नसीब हो गया और बोल उठे :

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ (2)

हम रब्बुल आ़लमीन पर ईमान ले आए।

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा। (پ۹،الانفال:۳۸)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ईमान लाए जहान के रब पर। (پ۹،الاعراف:۱۲۱)

इन जादूगरों के मुतअ़ल्लिक़ येह ज़िक्र कहीं नहीं आया कि इन्हों ने ईमान के इ़लावा नेक आ'माल भी किये थे, मह़्ज़ ईमान क़बूल करने की वजह से **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कलामे मजीद में बार बार मदह़ और सना के तौ़र पर इन का ज़िक्र किया है और इन के साबिक़ा **सग़ाइर व कबाइर**(1) एक घड़ी भर बल्कि एक लह़्ज़ा भर के ईमान की बरकत से मुआ़फ़ कर दिये। इन्हों ने सिद्क़े दिल से सिर्फ़ इतना कहा था कि "**हम रब्बुल आ़लमीन पर ईमान ले आए**!" इख़्लास के साथ सिर्फ़ इतने अल्फ़ाज़ कहने से **अल्लाह** तआ़ला ने इन की रूह़ानिय्यत में इन्क़िलाब पैदा कर दिया, और इन पर अपनी बे शुमार ने'मतों की बारिश कर दी और क़ियामत में हमेशा के लिये इन को शुहदा का सरदार बना दिया, येह **अल्लाह** तआ़ला की इन लोगों पर करम नवाज़ी का ह़ाल है जिन्हें सिर्फ़ एक लह़्ज़ा के लिये उस के इरफ़ान और उस की तौह़ीद पर क़ाइम रहने का मौक़अ़ मिला, ह़ालांकि इन की साबिक़ा ज़िन्दगी जादूगरी, कुफ़्र, गुमराही और शर व फ़साद में गुज़री थी। तो उन लोगों पर ख़ुदा तआ़ला की इनायात किस क़दर होंगी जिन की ज़िन्दगी तौह़ीद पर इस्तिक़ामत और इ़बादत में गुज़र गई और दोनों जहान में अपने तमाम मुआ़मलात उसी से वाबस्ता रखे।

अस्ह़ाबे कह्फ़ के वाक़िए़ पर ग़ौर करो कि अ़र्सए दराज़ तक येह लोग ह़ालते कुफ़्र में रहे फिर इन को यकायक तौह़ीद व ईमान की तौफ़ीक़ नसीब हो गई, क़ुरआने मजीद में है :

---

1 .....सग़ीरा और कबीरा गुनाह।

اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا (1)

जब वोह लोग खड़े हुवे तो कहने लगे हमारा रब वोह है जो आस्मानों और ज़मीनों का रब है हम उस के सिवा किसी और मा'बूद की हरगिज़ इबादत नहीं करेंगे।

और फिर जब वोह ह़क़ तआ़ला की त़रफ़ मुल्तजी हुवे तो उस ने उन को फ़ौरन मक़्बूल बन्दों का मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया और उन्हें रूह़ानी ने'मतों के साथ नवाज़ा फिर उन का निहायत ए'ज़ाज़ व इकराम फ़रमाया, चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में वारिद है :

وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ (2)

हम ख़ुद उन की दाईं बाईं करवटें बदलते हैं।

नीज़ ख़ुदा तआ़ला ने उन की इ़ज़्ज़त व हु़रमत क़ाइम और मह़फ़ूज़ रखने के लिये उन को दहशत और हैबत का लिबास पहना दिया कि कोई उन तक पहुंच न सके यहां तक कि उन के रो'ब व हैबत के मुतअ़ल्लिक़ अकरमुल ख़ल्क़ या'नी हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام को फ़रमाया :

لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۱۸ (3)

अगर आप उन को झांक कर देख लें तो दहशत के बाइ़स भाग पड़ें और आप का दिल रो'ब और दहशत से भर जाए।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे। (پ۱۵،الکھف:۱٤)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम उन की दाहिनी बाईं करवटें बदलते हैं। (پ۱۵،الکھف:۱۸)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फेर कर भागे और उन से हैबत में भर जाए। (پ۱۵،الکھف:۱۸)

बल्कि खुदा तआला ने उन के कुत्ते का ए'ज़ाज़ व इकराम फ़रमाया यहां तक कि अपनी किताबे मुक़द्दस में मुतअद्दिद बार इस का ज़िक्र फ़रमाया फिर दुन्या में इस को उन का साथी कर दिया और आख़िरत में उन के ए'ज़ाज़ के तौर पर इस कुत्ते को जन्नत में दाख़िल होने की सआदत अ़ता करेगा।

येह उस का एक कुत्ते पर फ़ज़्लो करम है जो बिला ख़िदमत और बिला इबादत सिर्फ़ चन्द दिन और चन्द क़दम अहले तौहीद व इरफ़ान के साथ चला तो **अल्लाह** तआला का उस बन्दए मोमिन पर किस क़दर फ़ज़्लो करम होगा जो सत्तर बरस तक उस की **ख़िदमत**(1) में मसरूफ़ रहा और नशए तौहीद से **मख़्मूर**(2) रहा और उस की बन्दगी में **मुस्तग़्रक़**(3) रहा, बल्कि सत्तर साल तो **कुजा**(4) अगर येह बन्दए मोमिन सत्तर हज़ार बरस ज़िन्दा रहता तो भी उस की बन्दगी में ही मश्ग़ूल रहता।

क्या तुम्हें पता नहीं कि **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर किस त़रह़ इताब फ़रमाया जब कि आप ने मुजरिम लोगों के तबाहो बरबाद होने की बद दुआ की थी।

और फिर **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर क़ारून के बारे में कैसा इताब फ़रमाया और आप से यूं कहा : "ऐ मूसा ! उस ने तुझ से मदद चाही मगर तू ने उस की मदद न की मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! अगर वोह मुझ से फ़रयाद करता तो मैं ज़रूर उस को बचा लेता और उस को मुआ़फ़ कर देता।

इसी त़रह़ ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام से उन की क़ौम के बारे में किस त़रह़ इताबाना गुफ़्त्गू की, कि "ऐ यूनुस ! तुझे कद्दू के एक दरख़्त के ख़ुश्क हो जाने का तो ग़म है जिसे मैं ने एक घड़ी

1.....इबादत। 2.....ग़म। 3.....डूबा। 4.....कहां।

में उगाया और दूसरी घड़ी में ख़ुश्क कर दिया लेकिन "नैनवा" शहर के एक लाख या लाख से ज़ाइद बाशिन्दगान का तुझे कोई ग़म लाहि़क़ न हुवा ?"

फिर उस पर भी नज़र करो कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की क़ौम का कितना जल्दी उ़ज़्र क़बूल कर लिया और उन से अ़ज़ाबे अ़ज़ीम उठा लिया हा़लांकि पहले उन को **ब तक़ाज़ाए अ़द्ल**(1) गुमराही में डाल रखा था।

फिर उस वाक़िए़ पर भी ग़ौर करो कि **अल्लाह** तआ़ला ने हु़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी इ़ताबाना गुफ़्तगू फ़रमाई, जब कि एक दफ़्आ़ आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) बाबे बनी शैबा से अन्दर तशरीफ़ लाए तो कुछ लोगों को देखा कि हंस रहे हैं तो फ़रमाया : "क्यूं हंसते हो, आयिन्दा मैं तुम को हंसता हुवा न देखूं।" येह बात कह कर आप जब ह़जरे अस्वद के पास पहुंचे तो वहां से उलटे पाउं फ़ौरन वापस लौटे और आ कर उन लोगों से फ़रमाने लगे कि अभी अभी मेरे पास जिब्रीले अमीन आए और ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से येह पैग़ाम लाए हैं कि ऐ मेरे ह़बीब ! तू मेरे बन्दों को मेरी रह़मत से क्यूं मायूस करता है, मेरे बन्दों को बता दो कि मैं ग़फ़ूरो रह़ीम हूं।

हु़ज़ूर (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) का एक इरशादे मुबारक है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दए मोमिन पर मेहरबान मां के अपने बच्चे पर शफ़ीक़ होने से भी ज़ियादा मेहरबान है।(2)

---

(1)......अ़द्ल की बिना पर।

(2)......صحيح البخاری، کتاب الادب، باب رحمة الولد...الخ، ٤/ ١٠٠، حديث ٥٩٩٩، بتغير قليل۔

और एक मश्हूर ह़दीस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वारिद है कि आप (عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने फ़रमाया :

"اِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى مِائَةَ رَحْمَةٍ فَوَاحِدَةٌ مِنهَا قَسَّمَهَا بَيْنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ وَ الْبَهَائِمِ فَبِهَا يَتَعَاطَفُوْنَ وَ بِهَا يَتَرَاحَمُوْنَ وَ ادَّخَرَ مِنهَا تِسْعَةً وَّ تِسْعِيْنَ لِنَفْسِهٖ لِيَرْحَمَ بِهَا عِبَادَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَه"(1)

बेशक **अल्लाह** तआ़ला के पास सो रह़मतें थीं तो उस ने इन में से सिर्फ़ एक रह़मत को जिन्नों, इन्सानों और हैवानात के दरमियान तक़्सीम किया तो हर **मुतनफ़्फ़िस**(2) सिर्फ़ उस की एक रह़मत से एक दूसरे से नर्मी और शफ़्क़त से पेश आता है, बाक़ी एक कम सो रह़मतें उस ने अपनी ज़ात के लिये मख़्सूस कर रखी हैं जिन्हें वोह क़ियामत के रोज़ अपने बन्दों के दरमियान तक़्सीम करेगा।

जब उस ने अपनी रह़मत के सो ह़िस्सों में से सिर्फ़ एक ह़िस्से से दुन्या में तुझ पर इस क़दर ने'मतें कीं, कि तुझे अपनी मा'रिफ़त अ़ता की, इस उम्मते मर्ह़ूमा में पैदा किया और त़रीक़ए अहले सुन्नत व जमाअ़त की पहचान नसीब की। इस के इ़लावा बे शुमार ज़ाहिरी और बात़िनी ने'मतें अ़ता कीं, तो उस के फ़ज़्ले अ़ज़ीम से इस बात की भी उम्मीद है कि वोह अपनी ने'मतें तुझ पर मुकम्मल कर दे क्यूंकि जो एह़सान की इब्तिदा करता है उस के ज़िम्मे होता है कि उस को मुकम्मल भी करे और बक़िय्या एक कम सो रह़मतों से ह़िस्सए **वाफ़िर**(3) अ़ता करे। हम **अल्लाह** तआ़ला से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें अपने फ़ज़्ले अ़ज़ीम से नामुराद न करे, बेशक वोह बड़ा साह़िबे करम व एह़सान मालिक है और बड़ा रह़ीम और जवाद है।

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب في سعة رحمة الله ... الخ، ص ١٤٧٢، حديث : ٢٧٥٢، بتغير قليل ـ

2 .....जानदार। 3 .....बहुत ज़ियादा।

तीसरी अस्ल :

आख़िरत के वा'दा व वईद के बयान में

हम इस सिलसिले में पांच क़िस्म के हालात का ज़िक्र करते हैं : ﴾1﴿ मौत ﴾2﴿ क़ब्र ﴾3﴿ क़ियामत ﴾4﴿ जन्नत ﴾5﴿ दोज़ख़ ।

और हर मक़ाम के मुनासिब उन ख़त्राते अज़ीमा का तज़किरा जो नेकूकार, नाफ़रमानों, नेक काम में कोताही करने वालों और नेकी में पूरी कोशिश करने वालों को पेश आएंगे ।

मौत का बयान

इस बाब में दो आदमियों का हाल ज़ेहन में रखो, एक तो वोह जो इब्ने शुबरुमा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है, वोह बयान करते हैं कि एक दफ़्आ मैं और शा'बी (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) एक मरीज़ की इयादत को गए, उस पर नज़्अ की हालत तारी हो चुकी थी और उस के पास बैठा हुवा एक शख़्स उस को कलिमा لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ की तल्क़ीन कर रहा था । हज़रते शा'बी (رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने उस शख़्स से कहा : मरीज़ से नर्मी और शफ़्क़त से पेश आओ, इतने में मरीज़ बोल उठा और कहने लगा : तू मुझे कलिमए तय्यिबा की तल्क़ीन करे या न करे, मैं येह ज़रूर पढूंगा, फिर उस मरीज़ ने कुरआने करीम के येह अल्फ़ाज़ पढ़े :

وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَاؕ (1)

अल्लाह तआला ने कलिमए तक़्वा उन के लिये लाज़िम कर दिया और वोह इस के बहुत हक़दार और अहल थे ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे । (پ ٢٦، الفتح: ٢٦)

तो शा'बी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने कहा :

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ نَجَا صَاحِبُنَا" उस खुदा की ह़म्दो सना जिस ने हमारे दोस्त को नजात अ़ता फ़रमाई ।

दूसरा वाक़िआ़ वोह है जो ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि आप अपने एक शागिर्द के पास पहुंचे जो मर रहा था, आप उस के सर के पास बैठ गए और "**सूरए यासीन**" पढ़ने लगे। तो उस ने कहा : "**सूरए यासीन**" पढ़नी बन्द कर दें, फिर आप ने उसे कलिमा "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" की तल्क़ीन की, मगर उस ने कहा : मैं येह कलिमा बिल्कुल नहीं पढूंगा, मैं इस से बेज़ार हूं और इन अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई, ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा, और चालीस रोज़ तक अपने घर से बाहर न निकले, अन्दर ही बैठ कर रोते रहे, चालीस दिन के बा'द ख़्वाब में देखा कि उस शागिर्द को फ़िरिश्ते दोज़ख़ में घसीट रहे हैं, आप ने उस से दरयाफ़्त किया : किस वजह से **अल्लाह** तआ़ला ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब कर ली हालांकि तू मेरे साहिबे इल्म और लाइक़ तरीन **तलामिज़ा**(1) में से था ? तो उस ने जवाब दिया : तीन **उ़यूब**(2) की वजह से, **एक** तो मेरे अन्दर चुग़ल ख़ोरी का ऐ़ब था कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप को इस के ख़िलाफ़, और **दूसरा** ऐ़ब येह था कि मैं अपने साथियों से ह़सद करता था, और **तीसरा** ऐ़ब येह था कि मुझे एक बीमारी थी मैं ने उस बीमारी का ह़कीम से इलाज पूछा तो उस ने कहा : साल में एक दफ़्आ़ एक गिलास शराब पिया कर तब सिह़्ह़तयाब होगा वरना येह बीमारी तुझे नहीं छोड़ेगी तो हर साल मैं एक गिलास शराब पीता था ।

---

1 .....शागिर्दों । 2 .....ख़राबियों ।

अल्लाह तआला हमें अपनी नाराज़ी से बचाए जिस के हम मुतहम्मिल नहीं हो सकते फिर दो और आदमियों के हाल पर गौर करो :

एक तो हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं कि जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का आख़िर वक़्त आया तो नज़र आस्मान की तरफ़ उठाई और हंसे और ज़बान से :

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ (1) *अमल करने वालों को ऐसे ही अमल करने चाहिये।*

के अल्फ़ाज़ पढ़े और विसाल कर गए।

और मैं ने अपने उस्ताज़ हज़रते इमामुल हरमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से सुना है कि वोह अपने उस्ताज़ हज़रते अबू बक्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बानी येह हिकायत बयान करते थे कि ज़मानए ता'लीम में मेरा एक साथी था जो इब्तिदाई किताबें पढ़ता था, ता'लीम में निहायत मेहनती और परहेज़गार और इबादत गुज़ार था लेकिन मेहनत व **कोशिशे बिस्यार**(2) के बा वुजूद ता'लीम में बहुत कम आगे बढ़ता था, हमें उस के हाल पर तअज्जुब होता था, वोह तालिबे इल्म अचानक बीमार हो गया और वहां औलियाउल्लाह की एक ख़ानक़ाह में पड़ गया। हस्पताल में दाख़िल न हुवा, लेकिन सख़्त बीमारी की हालत में भी उस ने पढ़ने की कोशिश जारी रखी यहां तक कि उस की हालत ज़ियादा नाज़ुक हो गई, उस वक़्त मैं उस के पास था, अचानक उस ने अपनी नज़र आस्मान की तरफ़ उठाई और फिर मुझ से कहा : ऐ इब्ने फ़ौरक!

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۶۱) 2.....बहुत ज़ियादा कोशिश।

لِمِثۡلِ هٰذَا فَلۡيَعۡمَلِ الۡعٰمِلُوۡنَ ﴿۶۱﴾ [1] *(या'नी काम करने वाले इसी मिस्ल के लिये ऐसा काम करते हैं।)*

येह अल्फ़ाज़ कहे और फ़ौत हो गया। رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

दूसरा वाक़िआ वोह है जो ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं मेरा एक पड़ोसी था, मैं ब वक़्ते मौत उस के पास गया, उस वक़्त उस पर सकराते मौत त़ारी थे, मुझे देख कर कहने लगा : ऐ मालिक ! इस वक़्त मुझे अपने सामने आग के दो पहाड़ नज़र आते हैं और कहा जाता है कि इन पर चढ़ो। मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मैं ने उस के घर वालों से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उन्हों ने कहा : इस शख़्स ने ग़ल्ले के लिये दो पैमाने रखे हुवे हैं, एक ग़ल्ला लेने का और दूसरा देने का, मैं ने वोह दोनों पैमाने मंगवाए और एक दूसरे पर मार कर तोड़ दिये, फिर मैं ने उस से दरयाफ़्त किया अब कैसा ह़ाल है ? उस ने कहा : मुआ़मला तो और ही ज़ियादा नाज़ुक और ख़राब हो रहा है।

क़ब्र और बा'दल मौत का ह़ाल

इस बाब में भी दो आदमियों का क़िस्सा ख़ास त़ौर पर याद रखने के लाइक़ है, एक तो वोह जो किसी बुज़ुर्ग ने फ़रमाया है कि मैं ने ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उन के विसाल शरीफ़ के बा'द ख़्वाब में देखा, तो मैं ने कहा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! तुम किस ह़ाल में हो ? तो आप ने मुझ से ए'राज़ फ़रमाया, और

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۶۱)

फ़रमाया : "येह कुन्यत से बुलाने का वक़्त नहीं।" फिर मैं ने कहा : "ऐ सुफ़्यान ! किस ह़ाल में हो ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाब में येह अश्आ़र पढ़े :

(١)نَظَرْتُ اِلٰی رَبِّیْ عِیَانًا فَقَالَ لِیْ ... هَنِیْئًا رِضَائِیْ عَنْكَ یَابْنَ سَعِیْدِ

(٢)لَقَدْ كُنْتَ قَوَّامًا اِذَا اللَّیْلُ قَدْ دَجَا ... بِعَبْرَةٍ[1] مُشْتَاقٍ وَ قَلْبِ عَمِیْدِ

(٣)فَدُوْنَكَ فَاخْتَرْ اَیَّ قَصْرٍ تُرِیْدُهُ ... وَ زُرْنِیْ فَاِنِّیْ عَنْكَ غَیْرُ بَعِیْدِ

(1) **बा'द अज़ मौत**[2] मैं ने अपने परवर दगार को बिल्कुल सामने देखा, मेरे परवर दगार ने मुझे फ़रमाया : ऐ इब्ने सईद ! तुझे मेरी रिज़ामन्दी मुबारक हो।

(2) तू तारीक रातों में मेरी याद के अन्दर खड़ा रहता था उस वक़्त तेरी आंखों से ज़ौक़ व शौक़ के आंसू जारी होते थे और तेरा दिल पूरी त़रह़ मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता था।

(3) अब जन्नतुल फ़िरदौस के मह़ल्लात तेरे सामने हैं, तू जिस को चाहता है, ले ले और हर वक़्त मेरी ज़ियारत से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो, क्यूंकि मैं अब तेरे सामने और तेरे क़रीब ही रहूंगा।

दूसरा वाक़िआ़ उस शख़्स का है जिसे बा'ज़ लोगों ने ख़्वाब में देखा कि उस का रंग बदला हुवा है और दोनों हाथ गर्दन से बन्धे हुवे हैं, उस से दरयाफ़्त किया गया : "ऐ शख़्स अल्लाह तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़मला किया है ?"

---

1 .....यहां लफ़्ज़ "بِبَصْرَةٍ" था येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "بِعَبْرَةٍ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या) 2 .....मौत के बा'द।

तो उस ने जवाब में येह शे'र पढ़ा :

تَــوَلّٰــی زَمَــانٌ لَـعِبْـنَــا بِــهٖ   وَهٰـــذَا زَمَـــانٌ بِــنَــا يَـلْـعَـبُ

वोह ज़माना बीत गया जिस से हम खेलते थे, अब येह वोह ज़माना है जो हम से खेल रहा है।

नीज़ इस बाब में दो और आदमियों का ह़ाल भी ज़ेह्न में रखने के क़ाबिल है, एक तो येह कि किसी बुज़ुर्ग का लड़का शहीद हो गया, वोह अपने बाप को कभी ख़्वाब में नज़र न आया। सिर्फ़ उस दिन ख़्वाब में बाप से मिला जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने विसाल फ़रमाया। बाप ने देख कर फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! क्या तुझ पर मौत नहीं वाक़ेअ़ हो चुकी ? तो उस ने जवाब दिया : मैं मुर्दा नहीं हूं बल्कि मुझे शहादत नसीब हुई है और मैं **अल्लाह** तआ़ला के क़ुर्ब में ज़िन्दा हूं और मुझे अन्वाओ़ अक़्साम की रोज़ी मिलती है। बाप ने कहा : आज तू कैसे इधर आ गया ? तो उस ने कहा : आज तमाम आस्मान वालों को आवाज़ दी गई कि आज कोई नबी, सिद्दीक़ और शहीद उधर न रहे, सब उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के जनाज़े में शरीक हों, तो मैं भी इन की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये इधर आया था फिर मैं नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ हो कर तुम्हें सलाम कहने आ गया हूं।

और दूसरा वाक़िआ़ वोह है जो ह़ज़रते हश्शाम बिन ह़स्सान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से मन्क़ूल है, वोह कहते हैं कि मेरा एक छोटी उ़म्र का बच्चा फ़ौत हो गया। बा'द अज़ मौत मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि बुड्ढा हो चुका है। मैं ने पूछा : ऐ बच्चे ! तू बुड्ढा किस त़रह़ हो गया ? तो उस ने जवाब दिया : जब फ़ुलां शख़्स दुन्या से हमारे पास पहुंचा तो दोज़ख़ ने उसे देख कर ग़ुस्से से एक सांस ली जिस के ख़ौफ़ से हम सब एक ही घड़ी में बुड्ढे हो गए। نَعُوْذُ بِاللّٰهِ الرَّحِيْمِ مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ

रोजे़ क़ियामत

रोजे़ क़ियामत में लोगों की कैफ़िय्यत इस आयत में बयान की गई है :

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۙ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ (1)

उस दिन हम परहेज़गार लोगों को रह़मान की बारगाह में सुवार कर के ले जाएंगे और मुजरिमीन को दोज़ख़ की त़रफ़ प्यासा हांकेंगे ।

एक शख़्स क़ब्र से उठेगा तो उस की सुवारी के लिये क़ब्र पर बुर्राक़ तय्यार होगा, तो क़ब्र से निकलते ही उस के सर पर नूरी ताज रखा जाएगा, आ'ला लिबास पहनाया जाएगा और बुर्राक़ पर बिठा कर जन्नत की त़रफ़ ले जाया जाएगा, उस के ए'ज़ाज़ व इकराम की ख़ात़िर उस को पैदल नहीं चलने दिया जाएगा ।

और एक दूसरा शख़्स क़ब्र से उठेगा तो दोज़ख़ के फ़िरिश्ते, दोज़ख़ की ज़न्जीर और अन्वाओ़ अक़्साम के अ़ज़ाब उसे दोज़ख़ की त़रफ़ पैदल चलने की फ़ुरसत भी नहीं देंगे बल्कि क़ब्र से निकलते ही उसे चेहरे के बल घसीट कर फ़िरिश्ते उसे दोज़ख़ में डाल देंगे । نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ غَضَبِهٖ

मैं ने बा'ज़ उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से येह ह़दीसे मुबारक सुनी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِذَا كَانَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنْ قُبُوْرِهِمْ لَهُمْ نُجُبٌ يَرْكَبُوْنَهَا لَهَا اَجْنِحَةٌ خُضْرٌ فَتَطِيْرُ بِهِمْ فِىْ عَرَصَاتِ الْقِيَامَةِ حَتّٰى اِذَا اَتَوْا عَلٰى حِيْطَانِ الْجَنَّةِ فَاِذَا رَاَتْهُمْ

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम परहेज़गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे । (پ۱۶،مریم:۸۵۔۸۶)

اَلْـمَلَائِـكَةُ قَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ مَنْ هٰؤُلَاءِ فَيَقُوْلُوْنَ مَا نَدْرِىْ لَعَلَّهُمْ مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰـهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم فَيَاْتِيهِمْ بَعْضُ الْمَلَائِكَةُ فَيَقُوْلُ مَنْ اَنْتُمْ وَ مِنْ اَيِّ الْاُمَمِ اَنْتُمْ فَيَـقُـوْلُـوْنَ نَحْنُ مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم فَتَقُوْلُ لَهُمُ الْمَلٰئِكَةُ هَلْ حُـوْسِبْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ لَا فَتَقُوْلُ الْمَلٰئِكَةُ هَلْ وُزِنْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ لَا فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ هَلْ قَـرَاْتُـمْ كُتُبَكُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ لَا فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ اِرْجِعُوْا فَكُلُّ ذٰلِكَ وَرَائَكُمْ فَيَقُوْلُوْنَ هَلْ اَعْـطَيْتُمُوْنَا شَيْئًا فَنُحَاسَبَ عَلَيْهِ وَ فِىْ خَبَرٍ اٰخَرَ مَا مَلَّكْتَنَا شَيْئًا فَنَعْدِلَ اَوْ نَجُوْرَ وَ لٰكِنْ عَبَـدْنَـا رَبَّنَا حَتّٰى دَعَانَا فَاَجَبْنَاهُ فَيُنَادِىْ مُنَادٍ صَدَقَ عِبَادِىْ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ"

"क़ियामत के दिन एक क़ौम क़ब्रों से निकलेगी, उन के लिये सब्ज़ परों वाली निहायत उ़म्दा सुवारियां उन की क़ब्रों पर तय्यार खड़ी होंगी, वोह उन पर सुवार हो जाएंगे तो वोह उन्हें उड़ा कर मैदाने मह़शर से आगे ले जाएंगी, चुनान्चे, वोह उन सुवारियों पर जन्नत की दिवारों तक पहुंच आएंगे, जन्नत की दीवारों पर मुहा़फ़िज़ फ़िरिश्ते उन्हें देख कर आपस में कहेंगे येह कौन लोग हैं ? बा'ज़ जवाब देंगे : शायद येह लोग ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से हैं तो चन्द फ़िरिश्ते उन के पास आएंगे और पूछेंगे : तुम कौन हो और किस उम्मत से हो ? तो वोह जवाब देंगे : हम ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में से हैं। तो फ़िरिश्ते उन से पूछेंगे : क्या तुम्हारा ह़िसाबो किताब हो चुका ? वोह जवाब देंगे : हमारा कोई ह़िसाब नहीं हुवा। फिर फ़िरिश्ते दरयाफ़्त करेंगे : क्या तुम्हारे आ'माल तोले जा चुके हैं ? वोह उस का भी नफ़ी में जवाब देंगे। फिर फ़िरिश्ते उन से दरयाफ़्त करेंगे : क्या तुम ने अपने आ'माल नामे पढ़ लिये हैं ? वोह कहेंगे : नहीं। तो फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : वापस चलो क्यूंकि येह

सब कार रवाई पीछे रह गई है। तो वोह लोग जवाब देंगे क्या तुम ने हम को कोई चीज़ दी थी जिस का हम से ह़िसाब लिया जाए। दूसरी ह़दीस में है वोह जवाब देंगे : दुन्या में हम किसी शै के मालिक नहीं थे कि हम अ़द्लो इन्साफ़ करते या ज़ुल्म का इर्तिकाब करते, हम तो दुन्या में अपने रब की बन्दगी और इ़बादत में मसरूफ़ रहे। यहां तक कि आज उस ने हम को यहां बुलाया तो हम आ गए। इतने में कोई आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा : मेरे बन्दों ने ठीक बयान किया है, इख़्लास से नेकी में ज़िन्दगी गुज़ार कर आने वालों से कोई **पुरसिशे आ'माल**(1) नहीं, और अल्लाह तआ़ला ग़फ़ूरुर्रह़ीम है।"

ऐ मुख़ात़ब ! क्या तू ने ख़ुदा तआ़ला का येह फ़रमाने मुबारक नहीं सुना :

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِىْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ (2)

तो क्या जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाएगा वोह अच्छा है या वोह शख़्स जो अम्न व आ़फ़िय्यत के साथ जन्नत में चला जाएगा।

तो वोह शख़्स किस क़दर **अ़ज़ीमुल मर्तबत**(3) होगा जो क़ियामत के उन ख़ौफ़नाक मनाज़िर, हैबत नाक ज़लज़लों और डराने वाले वाक़िआ़त को देखेगा मगर उस के दिल को कोई ख़ौफ़, घबराहट और बोझ मह़सूस नहीं होगा बल्कि वोह ख़ुदा की मेहरबानी से **अ़रसाते क़ियामत**(4) में से सुकून व अम्न के साथ गुज़र कर जन्नत की त़रफ़ चला जाएगा। हम अल्लाह तआ़ला से दरख़्वास्त करते हैं कि हमें और तुम्हें सब को इन नेक बख़्तों में दाख़िल करे और येह अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ के लिये कोई मुश्किल नहीं।

1.....आ'माल के बारे में पूछ गछ। 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या जो आग में डाला जाएगा वोह भला या जो क़ियामत में अमान से आएगा। (پ۲٤،حم السجدة:٤٠) 3.....बड़े मक़ाम वाला। 4.....क़ियामत की मुद्दत।

जन्नत व दोज़ख़ का बयान[1]

इस बाब में कुरआने मजीद की इन दो आयात पर ग़ौर करो, एक आयत येह है :

وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿۲۱﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۲۲﴾ (2)

अल्लाह तआ़ला उन्हें शराबे तुहूर के जाम पिलाएगा और उन से कहा जाएगा येह है तुम्हारे आ'माल की जज़ा और तुम्हारी कोशिश मक़्बूल हुई।

और दूसरी आयत वोह है जिस में अल्लाह तआ़ला ने अहले दोज़ख़ का हाल इस त़रह़ नक़्ल किया है :

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾ (3)

अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे परवर दगार हमें इस दोज़ख़ से निकाल अगर हम ने दोबारा तेरी नाफ़रमानी की तो बेशक हम ज़ालिम होंगे, अल्लाह तआ़ला जवाब में फ़रमाएगा इसी में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ पड़े रहो और मुझ से बात भी न करो।

1.....जन्नत या दोज़ख़ में ले जाने वाले आ'माल के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **"मक्तबतुल मदीना"** की मत़बूआ़ दो किताबें **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** व **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** का मुत़ालआ़ कीजिये।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई, उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी। (پ۲۹،الدھر:۲۱۔۲۲)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं रब फ़रमाएगा दुतकारे (ज़लील हो कर) पड़े रहो इस में और मुझ से बात न करो। (پ۱۸،المؤمنون:۱۰۷۔۱۰۸)

रिवायत में है कि इस के बा'द उन की शक्लें कुत्तों की त़रह़ हो जाएंगी और वोह उस में कुत्तों की त़रह़ भोंकते फिरेंगे। نَعُوْذُ بِاللّٰہِ الرَّءُوْفِ الرَّحِیْمِ مِنْ عَذَابِہِ الْاَلِیْم

तो मुआ़मला ऐसा ही है जैसा ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है कि

"हम नहीं जानते कि दो मुसीबतों में से बड़ी मुसीबत कौन सी है, जन्नत को हाथ से देना या दोज़ख़ में जाना, जन्नत से सब्र की कोई गुन्जाइश नहीं और अ़ज़ाबे दोज़ख़ को बरदाश्त करने की कोई सूरत नहीं लेकिन बहर सूरत ने'मत का फ़ौत होना अ़ज़ाबे दोज़ख़ बरदाश्त करने से निस्बतन आसान है फिर दोज़ख़ में हमेशा रहना ह़ादिसए कुब्रा और **मुसीबते उ़ज़्मा**(1) है। इस लिये कि अगर अ़ज़ाब किसी वक़्त ख़त्म हो जाने वाला होता तो फिर भी क़दरे सहुलत थी लेकिन वोह तो **अबदुल आबाद**(2) तक रहेगा वोह किसी इन्तिहा पर जा कर इख़्तिताम पज़ीर न होगा तो किस दिल में ऐसा अ़ज़ाब बरदाश्त करने की त़ाक़त है और किस की जान इस पर सब्र कर सकती है, इसी लिये ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

"**अ़ज़ाबे दाइमी**(3) का तज़्किरा डरने वालों के दिलों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।"

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने जब उस शख़्स का ज़िक्र किया गया जो सब से आख़िर दोज़ख़ से निकलेगा जिस का नाम "**हन्नाद**" होगा, उस को एक हज़ार साल अ़ज़ाब हुवा होगा वोह "या ह़न्नान" "या मन्नान" पुकारते हुवे दोज़ख़ से बाहर आएगा, तो उस का ह़ाल सुन कर रो पड़े और फ़रमाने लगे : "काश ! हन्नाद" मैं होता।

---

(1).....बड़ी मुसीबत। (2).....हमेशा हमेशा। (3).....हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब।

लोगों को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस क़ौल पर तअ़ज्जुब हुवा, आप ने फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस ! कि बात नहीं समझते, वोह एक न एक दिन अ़ज़ाब से निकल तो आएगा ! ! !

मैं कहता हूं कि ख़ौफ़ व डर का येह सारा मुआ़मला एक उसूली बात की त़रफ़ लौटता है और वोही एक नुक्ता है जो **पुश्तों**[1] को तोड़ता है और चेहरों को ज़र्द करता है, जिस के तसव्वुर से जिगर पिगल जाते हैं, दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं और रोने वालों की आंखें ख़ून के आंसू बरसाती हैं, वोह नुक्ता है मा'रिफ़ते इलाही का छीन जाना, येही वोह अस्ल बात है जिस का ख़ौफ़ डरने वालों को हर वक़्त लगा रहता है और जिस पर रोने वालों की आंखें हर वक़्त आंसू बहाती रहती हैं।

बा'ज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है ग़म तीन त़रह़ के हैं : ﴾1﴿ ताअ़त और नेकी का ग़म कि शायद वोह क़बूल न हो ﴾2﴿ गुनाह और मा'सियत का ग़म कि शायद इस की मग़फ़िरत न हो, और ﴾3﴿ मा'रिफ़त का ग़म कि वोह किसी वक़्त छीन न जाए।

बा'ज़ अहले इख़्लास ने कहा है कि ग़म दर ह़क़ीक़त एक ही है और वोह **सल्बे मा'रिफ़त**[2] का ग़म है बाक़ी हर ग़म इस से कम दरजे का है क्यूंकि वोह किसी वक़्त ख़त्म हो सकता है लेकिन सल्बे मा'रिफ़त का ग़म कभी दूर नहीं हो सकता।

हमें यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से येह बात पहुंची है कि एक दफ़्अ़ा आप ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास तशरीफ़ ले गए, यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मैं ने देखा कि ह़ज़रते सुफ़्यान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सारी रात रोते रहे, मैं ने दरयाफ़्त किया : क्या आप अपने गुनाहों के ख़ौफ़ से रोते हैं ? तो

---

1 .....पीठों। 2 .....ईमान छीन ले जाने।

हज़रते सुफ़्यान رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक तिन्का उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो **अल्लाह** तआला के सामने इस से भी कम हैसिय्यत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि **अल्लाह** तआला दौलते इस्लाम न छीन ले। हम एहसान करने वाले **अल्लाह** سُبْحَانَہٗ से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें किसी मुसीबत में मुब्तला न करे और अपने फ़ज़्ल से हम पर अपनी ने'मतों की तक्मील करे और मिल्लते इस्लाम पर हमें मौत नसीब करे। वोह "अरहमुर्राहिमीन" है। हम **सूए ख़ातिमा**[1] का सबब और मा'ना "**इह्याउल उलूम**" में बयान कर चुके हैं, वहां देख लो, यहां इस बहस को छेड़ना एक बड़ी तवील बहस का दरवाज़ा खोलना है जिस की येह किताब मुतहम्मिल नहीं, तुम इसी मुख़्तसर बात को सन्जीदगी से समझो क्यूंकि बसा अवक़ात तफ़्सील व तशरीह से ख़िलाफ़े मक़्सूद **अवहाम**[2] पैदा हो जाते हैं लिहाज़ा मुख़्तसर बयान पर ही किफ़ायत करो, शायद तुम्हें **अल्लाह** तआला की मदद व तौफ़ीक़ से फ़लाह व कामयाबी नसीब हो जाए।

सुवाल : तुम अगर येह सुवाल करो कि "फिर हमें कौन सा रास्ता इख़्तियार करना चाहिये ? ख़ौफ़ का रास्ता या रजा का रास्ता ?

जवाब : तो इस का जवाब येह है कि तुम्हें इन दोनों के दरमियान का रास्ता इख़्तियार करना चाहिये क्यूंकि कहा गया है कि जिस पर रजा का ग़लबा हो गया वोह **मुर्जिआ**[3] बन जाता है और उस के मुतअ़ल्लिक़ अकसर येह ख़तरा रहता है कि येह शख़्स **ख़ुर्रमिय्युल अ़क़ाइद**[4] बन जाए और जिस पर ख़ौफ़ का ग़लबा हो गया वोह

1.....बुरे ख़ातिमे। 2.....ख़यालात। 3.....एक बद मज़हब फ़िर्क़ा। 4.....एक बद मज़हब फ़िर्क़ा। यहां "हरम्मियुल अ़क़ाइद" लिखा था, जो कि किताबत की ग़लती है जिस की तस्हीह कर दी गई है। (इल्मिय्या)

ख़वारिज[1] में से हो गया। इस मक़ूले का मत़लब भी येही है कि सिर्फ़ एक पहलू इख़्तियार न करे और ह़क़ीक़त भी येह है कि रजाए ह़क़ीक़ी ख़ौफ़े ह़क़ीक़ी से अलग नहीं हो सकती और ख़ौफ़े ह़क़ीक़ी रजाए ह़क़ीक़ी से जुदा नहीं हो सकता, इसी बिना पर कहा गया है कि रजा सब का सब अहले ख़ौफ़ के लिये है अम्न से इन्हें कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और ख़ौफ़ सब का सब अहले रजा के लिये है, यास और नाउम्मीदी से इन्हें कोई वासित़ा नहीं।

सुवाल : क्या अवक़ात और ह़ालात के ए'तिबार से इन में से किसी एक को तरजीह़ और ज़ियादती ह़ासिल हो सकती है या हर ह़ाल में दोनों के दरमियान रास्ते पर ही क़ाइम रहना ज़रूरी है ?

जवाब : मा'लूम होना चाहिये कि जब इन्सान तन्दुरुस्त और क़वी हो तो ऐसी ह़ालत में ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिये और जब बीमार पड़ जाए और ज़ो'फ़ व लाग़री का शिकार हो जाए ख़ास कर जब कि आख़िरत की त़रफ़ रख़्ते सफ़र बांधने का वक़्त आ जाए तो उस वक़्त रजा का ग़लबा होना चाहिये मैं ने उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से यूं ही सुना है, मैं कहता हूं इस की एक दलील भी है, मरवी है कि अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰی फ़रमाता है :

"मैं उन लोगों के पास होता हूं जिन के दिल मेरे ख़ौफ़ से चूर हो चुके हैं।"[2]

तो ऐसे वक़्त में उस के लिये रजा औला और बेहतर होती है क्यूंकि सिह़ह़त, क़ुव्वत और क़ुदरत के ज़माने में उस पर ख़ौफ़ ग़ालिब रहा होता है इस लिये इन से कहा जाता है :

---

1 .....एक गुमराह फ़िर्क़ा।

2 ......حلية الاولياء، وهب بن منبة، ٤ / ٣٤، رقم: ٤٦٦٤ ـ

ﺍَﻟَّﺎ ﺗَﺨَﺎﻓُﻮۡﺍ ﻭَﻟَﺎ ﺗَﺤۡﺰَﻧُﻮۡﺍ (1) *कि किसी क़िस्म का ख़ौफ़ न करो और न कोई ग़म करो।*

सुवाल : क्या बहुत सी अख़्बार और अह़ादीस इस सिलसिले में वारिद नहीं हुई कि **अल्लाह** तआ़ला से **हुस्ने ज़न**(2) रखना चाहिये और इस हुस्ने ज़न की तरग़ीब में भी बहुत रिवायात वारिद हैं।

जवाब : मा'लूम होना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला से हुस्ने ज़न येह है कि बन्दा उस की नाफ़रमानी से बचे, उस के अ़ज़ाब और **मुआख़ज़े**(3) से डरे और उस की ख़िदमत और बन्दगी में कोशिश करे।

मा'लूम होना चाहिये कि यहां एक मज़बूत़ अस्ल और अहम नुक्ता है जिस में अकसर लोग ग़लती का शिकार हैं और वोह येह है कि रजा और उमनिय्यत (आरज़ू) में फ़र्क़ है क्यूंकि रजा तो दलील और अस्ल से वाबस्ता होती है मगर उमनिय्यत (आरज़ू) एक बे अस्ल और बे दलील चीज़ है, इन दोनों की मिसाल यूं है कि एक शख़्स बीज डाले फिर इस की देख भाल में कोशिश और मेह़नत करे फिर फ़स्ल काट कर **खलयान**(4) में रखे, फिर येह कहे मुझे उम्मीद है कि सो बोरी फ़स्ल हो जाएगी, तो येह रजा और उम्मीद है इस के बर अ़क्स एक दूसरा शख़्स हो जिस ने मौक़अ़ पर न बीज डाला और खेती बाड़ी का एक दिन भी काम न किया घर पर ही सोया रहा और सारा साल ग़फ़्लत में गुज़ार दे और फ़स्ल उठाने के वक़्त कहना शुरूअ़ कर दे कि उम्मीद है कि सो बोरी ग़ल्ला ह़ासिल हो जाए। तो ऐसे शख़्स से कहा जाएगा कि तेरी येह उम्मीद ह़क़ीक़त

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि न डरो और न ग़म करो। (پ۲٤،حم السجدة:۳۰)

2...अच्छा गुमान। 3...बाज़ पुर्स। 4...वोह जगह जहां अनाज का ढेर लगाते हैं।

में उम्मीद नहीं बल्कि येह तो मह्ज़ उमनिय्यत और आरज़ू है। बिल्कुल इसी त़रह़ बन्दा जब नेक आ'माल में कोशिश करे और मा'सियत व नाफ़रमानी से बचे तो येह कह सकता है कि मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** तआ़ला इस ह़क़ीर की ख़िदमत को क़बूल फ़रमाए और कमी को पूरा करे और इस पर बड़ा सवाब इनायत करे और **लग़्ज़िशों**[1] को मुआ़फ़ करे और मुझे **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात से हुस्ने ज़न है। तो बन्दे की इस त़रह़ की उम्मीद रजा कहलाती है जो शरअ़ में **मह़मूद**[2] है लेकिन एक शख़्स अगर ग़ाफ़िल और ला परवाह रहे, नेक कामों को हाथ न लगाए, मा'सियत और नाफ़रमानी का इर्तिकाब करे। **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब और नाराज़ी की कोई परवाह न करे और **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और उस के वा'दा वई़द को ख़ात़िर में न लाए फिर यूं कहता फिरे कि मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे जन्नत अ़त़ा करेगा और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाएगा तो येह उमनिय्यत और आरज़ू है, रजा और उम्मीद नहीं और येह एक ला ह़ासिल शै है उस ने इस को रजा और हुस्ने ज़न का नाम दे दिया, वोह इस सिलसिले में भटका हुवा है और ख़त़ा और ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला है, एक शाइर ने येह मज़्मून यूं अदा किया है :

تَرْجُو النَّجَاةَ وَ لَمْ تَسْلُكْ مَسَالِكَهَا　　اِنَّ السَّفِيْنَةَ لَا تَجْرِىْ عَلَى الْيَبَسِ

तर्जमा : तुम नजात की उम्मीद रखते हो लेकिन नजात के रास्ते इख़्तियार नहीं करते, कश्ती ख़ुश्की पर नहीं चल सकती।

मैं कहता हूं इस अस्ल और क़ाइदे की ताईद जिस से होती है वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह ह़दीस है कि आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

1.....गुनाहों। 2.....पसन्दीदा।

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَ تَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ الْاَمَانِيُّ (1)

दाना वोह है जो अपने नफ़्स को दीन और शरअ़ के ताबेअ़ करे और मा बा'दल मौत के लिये ज़ख़ीरए आ'माल जम्अ़ करे और अह़मक़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और **अल्लाह** तआ़ला से नजात और जन्नत की उम्मीदें लगाए रखे।

इस बारे में ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह क़ौल है : कुछ लोग वोह होते हैं जो दुन्या में बख़्शिश और मग़फ़िरत की उम्मीदों में रहते हैं, नेक अ़मल कुछ नहीं करते, दुन्या से आख़िरत की त़रफ़ मुफ़्लिस और क़ल्लाश जाते हैं इन के पास कोई नेकी नहीं होती और कहते येह हैं कि हमें अपने रब से हुस्ने ज़न है (कि वोह हम से बेहतर सुलूक करेगा) लेकिन ऐसे लोग झूठे हैं क्यूंकि अगर इन्हें **अल्लाह** तआ़ला से हुस्ने ज़न होता तो इन के आ'माल भी अच्छे होते। फिर क़ुरआने मजीद की येह आयत पढ़ी :

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا (الآية) (2)

*तो जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो उसे चाहिये कि आ'माले सालिह़ा इख़्तियार करे।*

दूसरी आयत येह पढ़ी :

1 ......سنن ابن ماجه ، كتاب الزهد ، باب ذكر الموت...الخ ، ٤/ ٤٩٦ ، حديث: ٤٢٦٠ و الجامع الصغير ، ص ٤٠٢ ، حديث : ٦٤٦٨ ـ

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे। (پ١٦،الكهف:١١٠)

وَ ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ(۲۳) (1)

येह था तुम्हारा गुमान तुम्हारे रब के मुतअ़ल्लिक़ जिस ने तुम्हें हलाक कर दिया तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो गए।

ह़ज़रते जा'फ़र ज़बुई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

"मैं ने एक दफ़्आ़ ह़ज़रते अबू मैसरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़बिद को देखा कि इ़बादत व बन्दगी में कोशिश व मेह़नत और कसरते मुजाहदात के बाइ़स उन की पस्लियां निकली हुई थी, मैं ने कहा : **अल्लाह** आप पर रह़म करे, **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत तो बड़ी वसीअ़ है। आप येह अल्फ़ाज़ सुन कर ग़ुस्से में आ गए और फ़रमाया : तू ने मेरे अन्दर ऐसी चीज़ देखी है जिस से येह ज़ाहिर हो कि मैं **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से मायूस और ना उम्मीद हूं ? **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत तो नेकूकार लोगों के बिल्कुल क़रीब है। जा'फ़र ज़बुई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मुझे आप की येह बात सुन कर रोना आ गया कि जब अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) और तमाम औलिया और अब्दाल (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) इ़बादत में कोशिश व मेह़नत और गुनाह और मा'सियत से पूरी त़रह़ परहेज़ और इजतिनाब के बा वुजूद हर वक़्त ख़ौफ़ व ख़शिय्यत से लबरैज़ रहे तो तुम्हारा क्या ख़याल है कि उन्हें **अल्लाह** तआ़ल से ह़ुस्ने ज़न नहीं ह़ालांकि उन्हें उस की रह़मते **वासिअ़**(2) पर बड़ा यक़ीन था और इन्हें **अल्लाह** तआ़ला के जूदो करम से बड़ा ह़ुस्ने ज़न था। दर ह़क़ीक़त वोह जानते थे कि

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया तो अब रह गए हारे हुवों में। (پ۲٤،حم السجدۃ:۲۳) (2).....वसीअ़ रह़मत।

ता़अ़त में कोशिश और मेह़नत के बिग़ैर ख़ाली हुस्ने ज़न, हुस्ने ज़न नही बल्कि झूटी आरज़ू और धोका और ग़ुरूर है। इस नुक्ते से इ़ब्रत पकड़ो और सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के ह़ालात पर ग़ौर करो और ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ। وَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوۡفِیۡق

फ़स्ल

ख़ुलासए गुफ़्तगू येह हुवा कि जब तुम **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का तसव्वुर करोगे जो उस के ग़ज़ब पर ग़ालिब है और जो तमाम अश्याए मौजूदात को मुह़ीत़ है फिर इस का भी तसव्वुर करो कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम को इस उम्मते मर्ह़ूमा मुकर्रमा में पैदा किया फिर उस के फ़ज़्ले अ़ज़ीम और उस के कमाले जूदो करम का भी तसव्वुर करो, फिर इस अम्र का भी तसव्वुर करो कि जो किताब उस ने तेरी हिदायत के लिये नाज़िल फ़रमाई इस को "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" से शुरूअ़ किया या'नी "بِسۡمِ اللّٰهِ" के अन्दर ही अपनी "**रह़मानिय्यत**" और "**रह़ीमिय्यत**" का ज़िक्र फ़रमाया। फिर इस का भी तसव्वुर करो कि उस ज़ाते करीम ने तुम्हारी त़रफ़ से किसी सिफ़ारिशी और किसी साबिक़ **ख़िदमत**[1] के बिग़ैर मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से तुम्हें बे शुमार ज़ाहिरी व बात़िनी मेहरबानियों और इन्आ़मात से नवाज़ा। दूसरी त़रफ़ उस के कमाले जलाल, उस की अ़ज़मत, उस की अ़ज़ीम क़ुदरत व हैबत नीज़ उस के शदीद ग़ज़ब व नाराज़ी का भी तसव्वुर करो जिस के आगे आस्मान और ज़मीन भी नहीं ठहर सकते। फिर तुम आख़िरत के मुआ़मले की नज़ाकत और ख़त़रे के साथ अपनी इन्तिहाई ग़फ़्लत अपने ला ता'दाद गुनाह और अपनी संगदिली का भी तसव्वुर करो, फिर इस बात का

1 .....इ़बादत।

तसव्वुर करो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी तमाम ह़रकात व सकनात, तुम्हारे तमाम उ़यूब और पोशीदा बातों से भी पूरी त़रह़ वाक़िफ़ और आगाह है, फिर तुम उस के हुस्ने वा'दा और उस सवाब को भी ज़ेह्न में लाओ जिस की **कुन्ह**[1] और ह़क़ीक़ते इन्सानी वह्म व गुमान से बहुत बुलन्द है, फिर उस की शदीद वई़दों और उस के अ़ज़ाबे अलीम को भी ख़याल में लाओ जिस के क़ुलूबे इन्सानी मुतह़म्मिल नहीं हो सकते नीज़ तुम उस के फ़ज़्लो करम, इस के मुक़ाबले में उस के अ़ज़ाब फिर उस की रह़मत और शफ़्क़त फिर अपने नफ़्स की ज़ियादती और बे राहरवी और जराइम और मआ़सी को भी ज़ेह्न में रखोगे तो येह तमाम बातें तुम्हारे अन्दर ख़ौफ़ व रजा की सिफ़त पैदा कर देंगी और तुम दरमियानी राह पर चल पड़ोगे और तुम बे ख़ौफ़ी और नाउम्मीदी के दोनों हलाक कुन रास्तों और बे ख़ौफ़ी और नाउम्मीदी की वादियों में ह़ैरान फिरने वालों से अलग हो जाओगे और हलाक व बरबाद होने वालों से किनाराकश हो जाओगे और ख़ौफ़ व रजा की मो'तदिल शराब से सरशार हो जाओगे फिर न तो सिर्फ़ रजा की ठन्डक से हलाक होंगे और न मह़्ज़ ख़ौफ़ की आतिश में जलोगे और अब तुम अपने मक़्सूद से हम किनार हो गए और दोनों मोहलिक अमराज़ से बच गए अब तुम अपने नफ़्स को त़ाअ़त व बन्दगी पर आमादा पाओगे और वोह ग़फ़्लत और सुस्ती के बिग़ैर दिन रात ख़िदमत में मसरूफ़ हो जाएगा और इस त़रह़ तुम गुनाहों और ज़लील ह़रकतों से पूरी त़रह़ मह़फ़ूज़ हो जाओगे और बुराइयों से पूरी त़रह़ किनाराकशी ह़ासिल हो जाएगी।

1 .....बारीकी।

ह़ज़रते नौफ़ बिकाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नौफ़ जब जन्नत का ज़िक्र करता है तो इस के दिल में जन्नत का शौक़ पैदा हो जाता है और जब इसे आतिशे दोज़ख़ याद आती है तो मारे ख़ौफ़ के इस की नींद उड़ जाती है।

ख़ौफ़ व रजा की येह सह़ीह़ कैफ़िय्यत पैदा हो जाने के बा'द तुम **अल्लाह** तआ़ला के बरगुज़ीदा और ख़वास आ़बिदीन में से हो जाओगे जिन का **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में ज़िक्र किया है :

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝۹۰ (1)

बेशक येह लोग नेक काम करने में जल्दी करते थे और ख़ौफ़ व रग़बत की ह़ालत में हमारी बन्दगी करते थे और हमारे आगे झुके रहते थे।

और अब तुम ने **अल्लाह** तआ़ला के इज़्न और उस के हुस्ने तौफ़ीक़ से इस ख़त़रनाक घाटी को उ़बूर कर लिया, अब तुम्हें दुन्या में बहुत सफ़ाई और ह़लावत नसीब हो गई और तुम ने **उ़क़्बा**(2) के लिये ज़ख़ीरए अ़ज़ीम और अज्रे कसीर ह़ासिल कर लिया। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि वोह हमारी और तुम्हारी अपनी तौफ़ीक़ और दुरुस्ती से मदद फ़रमाए, बेशक वोह अरह़मुर्राह़िमीन और तमाम सख़ियों से बढ़ कर **नवाज़ने वाला**(3) है। وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं। (پ۱۷،الانبیاء:۹۰)

2...आख़िरत। 3..... यहां लफ़्ज़ "सख़ी" तह़रीर था, जिसे लफ़्ज़ "बढ़ कर नवाज़ने वाला" से बदल दिया है क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़े "सख़ी" इस्ति'माल करने को "फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 27, सफ़ह़ा 165 पर मन्अ़ किया गया है। (इ़ल्मिय्या)

छटा बाब

छटी घाटी में और येह अ़क़बतुल क़वादिह़ से मौसूम[1] है

फिर ऐ बरादर ! [2](اَيَّدَكَ اللّٰهُ وَاِيَّانَا بِحُسْنِ تَوفِيقِهٖ) तुझ पर इस रास्ते की पहचान और मा'रिफ़त और इस रास्ते पर चलने में इस्तिक़ामत के बा'द इबादत और बन्दगी को ख़राब और बरबाद करने वाली चीज़ों से अलग रखना और बचना भी लाज़िम और ज़रूरी है। और येह बात इख़्लास को क़ाइम करने, अल्लाह तआ़ला के एह़सानात याद करने और ना रवा उमूर से इजतिनाब के बा'द ही से ह़ासिल हो सकती है। और येह बात दो वजह से लाज़िम और ज़रूरी है। एक तो इस लिये कि इख़्लास से अल्लाह तआ़ला के हु़ज़ूर में अ़मल को हुस्ने क़ुबूल का मक़ाम ह़ासिल होता है और सवाब ह़ासिल करने में कामयाबी नसीब होती है वरना इख़्लास मफ़्क़ूद होने की सूरत में आ'माल मर्दूद हो जाते हैं और इन का सवाब या तो बिल्कुल ही या कुछ न कुछ ज़ाएअ़ और बरबाद हो जाता है। क्यूंकि मश्हूर ह़दीस में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है, इस में अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى फ़रमाता है :

"اَنَا اَغْنَى الْاَغْنِيَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلًا فَاَشْرَكَ فِيهِ غَيْرِى فَنَصِيبِى لَهٗ فَاِنِّى لَا اَقْبَلُ اِلَّا مَا كَانَ لِى خَالِصًا"(3)

मैं शिर्क से बिल्कुल बे नियाज़ हूं, जो शख़्स अ़मल में मेरे ग़ैर को शरीक करे, तो मेरा हि़स्सा भी उस शरीक को ही पहुंचा, मैं सिर्फ़ उस को क़बूल करता हूं जो ख़ालिस मेरे लिये किया गया हो।

1.....नाम रखा गया। 2.....तर्जमा : अल्लाह तआ़ला अच्छी तौफ़ीक़ के साथ तुम्हारी और हमारी मदद फ़रमाए।

3.....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب رياء والسمعة، ٤/٤٦٩، حديث: ٤٢٠٢ بتغير۔

मरवी है कि क़ियामत के रोज़ जब बन्दा **अल्लाह** तआ़ला से अपने आ'माल पर सवाब त़लब करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : क्या तुझे मजालिस व महा़फ़िल में वुस्अ़त नहीं दी गई थी ? क्या वहां तुझे सरदारी नहीं दी गई थी ? क्या तुझे दुन्या में तेरे कारोबार, तिजारत में तरक़्क़ी और सहूलत और हर क़िस्म की **अरज़ानी**[1] अ़त़ा नहीं की गई थी ? क्या तुझे इसी तरह़ के बे शुमार ए'ज़ाज़ात व इन्आ़मात नहीं दिये गए थे ? और तुझे अन्वाओ़ अक़्साम के ख़त़रात व **मज़र्रात**[2] से मह़फ़ूज़ नहीं रखा गया था ? या'नी येह सब कुछ **जज़ाए आ'माल**[3] के त़ौर पर दुन्या में तुझे दे दिया गया था।

मैं कहता हूं **रिया**[4] के ख़त़रात में से कम अज़ कम दो क़िस्म की तो नदामत इन्सान को लाह़िक़ होती है और दो मुसीबतें इस पर मुसल्लत़ होती हैं, एक नदामत तो पोशीदा क़िस्म की है वोह तमाम मलाइका के सामने शर्मिन्दगी और नदामत है, जैसा कि रिवायत में है कि मलाइका एक बन्दे के आ'माल ख़ुशी ख़ुशी ऊपर ले जाते हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हुक्म होता है कि येह आ'माल **सिज्जीन**[5] में फेंक दो क्यूंकि इस ने येह आ'माल मेरी रिज़ा और ख़ुशनूदी के लिये नहीं किये थे।[6]

तो उस वक़्त उस बन्दे और उस के अ़मल को मलाइका के सामने नदामत लाह़िक़ होती है, दूसरी नदामत और शर्मिन्दगी अ़लानिय्या उस को लाह़िक़ होगी जो क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने नदामत और रुस्वाई लाह़िक़ होगी,

---

1...कसरत। 2...नुक़्सानात। 3...आ'माल के बदले। 4...रियाकारी के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ किताब "**रियाकारी**" का मुत़ालआ़ कीजिये। 5...जहन्नम की एक वादी।

6......حلية الاولياء، ۲۱۰ ـ يحيى بن ابى كثير، ۳/ ۸۲، حديث: ۳۲۵۵ ـ

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि

اِنَّ الْمُرَائِیْ یُنَادٰی یَوْمَ الْقِیَامَةِ بِاَرْبَعَةِ اَسْمَاءٍ یَا کَافِرُ، یَا فَاجِرُ،یَا غَادِرُ، یَاخَاسِرُ، ضَلَّ سَعْیُكَ وَبَطَلَ عَمَلُكَ فَلَا خَلَاقَ لَكَ الْیَوْمَ اِلْتَمِسِ الْاَجْرَ مِمَّنْ كُنْتَ تَعْمَلُ لَهٗ یَا مُخَادِعُ. (1)

रियाकारी को क़ियामत के दिन चार नामों से पुकारा जाएगा : ऐ काफ़िर ! ऐ फ़ाजिर ! ऐ ग़द्दार ! ऐ ख़सारा उठाने वाले ! तेरी कोशिश बेकार चली गई ? तेरे आ'माल बेकार हो चुके हैं, यहां आख़िरत में तेरा कोई ह़िस्सा नहीं, ऐ धोके बाज़ ! अपने आ'माल का अज्रो सवाब उस से जा कर ले जिस को दिखाने के लिये तू अ़मल करता था ।

एक रिवायत येह भी है कि

یُنَادِیْ مُنَادٍ یَوْمَ الْقِیَامَةِ یُسْمِعُ الْخَلَائِقَ، اَیْنَ الَّذِیْنَ کَانُوْا یَعْبُدُوْنَ النَّاسَ؟ قُوْمُوْا خُذُوْا اُجُوْرَکُمْ مِمَّنْ عَمِلْتُمْ لَهٗ، فَاِنِّیْ لَا اَقْبَلُ عَمَلًا خَالَطَهٗ شَیْءٌ. (2)

क़ियामत के रोज़ एक निदा करने वाला निदा करेगा जिसे तमाम मख़्लूक़ात सुनेगी, कहां हैं वोह जो ख़ुदा के बजाए लोगों की इ़बादत करते थे, जाओ अपने आ'माल का बदला उन से लो जिन के लिये करते थे, मैं उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में रिया और नुमाइश की मिलावट हो ।

और रिया से आने वाली दो मुसीबतों में एक मुसीबत जन्नत से मह़रूमी है, क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है कि

"اِنَّ الْجَنَّةَ تَكَلَّمَتْ وَقَالَتْ اَنَا حَرَامٌ عَلٰی كُلِّ بَخِیْلٍ وَّ مُرَاءٍ" (3) जन्नत ने गुफ़्त्गू की और कहा : मैं बख़ील और रियाकार पर ह़राम हूं ।

---

1 ……فردوس الاخبار، ۲/۳۵٦، حدیث: ٦۹۰۱۔

2 ……جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة، ۱/۳۳٦، حدیث: ۲٤۷٦، بتغیر۔

3 ……تاریخ مدینة دمشق، ٦۱۳۳۔ محمد بن بشر، ۵۲/۱۵۱۔

इस ह़दीस शरीफ़ के दो मा'ना हो सकते हैं : एक येह कि इस बख़ील से वोह बख़ील मुराद है जो सब से बेहतर कलिमे को ज़बान पर लाने से बुख़्ल करता है, या'नी لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **तस्दीक़े क़ल्बी**[1] के साथ नहीं पढ़ता और इस रियाकार से वोह मुराद है जो बदतरीन क़िस्म की रियाकारी का मुज़ाहरा करता है, या'नी मुनाफ़िक़ जो अपनी तौह़ीद और अपने ईमान में रियाकारी करता है, ह़दीस के इस मा'ना में उम्मीद की त़रफ़ इशारा है कि अगर सिद्क़ और इख़्लास पैदा हो जाए तो इस का मुआ़मला दुरुस्त हो सकता है, ह़दीस का दूसरा मा'ना येह हो सकता है कि जो शख़्स बुख़्ल और रियाकारी से बाज़ न आए और अपनी परवा और रिआ़यत न करे तो ऐसी सूरत में दो ख़त़रे हैं एक तो येह कि मुमकिन है इस बुख़्ल और रियाकारी की नुहूसत उस पर आ पड़े और वोह कुफ़्र के गढ़े में जा गिरे और इस त़रह़ जन्नत से बिल्कुल मह़रूम हो जाए। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ مِنْهُ

दूसरा ख़त़रा येह है कि उस बुख़्ल व रियाकारी के बाइ़स ईमान ही **सल्ब हो**[2] जाए और दोज़ख़ का मुस्तह़िक़ हो जाए। हम **अल्लाह** की नाराज़ी और शदीद ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं।

और दूसरी मुसीबत दोज़ख़ में जाना है, क्यूंकि अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَوَّلُ مَنْ يُدْعٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ قَدْ جَمَعَ الْقُرْاٰنَ وَرَجُلٌ قَدْ قَاتَلَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَرَجُلٌ كَثِيْرُ الْمَالِ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى لِلْقَارِىْ اَلَمْ اُعَلِّمْكَ مَا نَزَلْتُ عَلَى الرَّسُوْلِ

1.....दिल की तस्दीक़। 2.....छीन लिया।

فَيَقُولُ بَلٰى يَا رَبِّ، فَيَقُولُ مَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا عَلِمْتَ فَيَقُولُ يَا رَبِّ قُمْتُ بِهٖ اٰنَاءَ اللَّيْلِ وَاَطْرَافِ النَّهَارِ فَيَقُولُ اللّٰهُ كَذَبْتَ وَتَقُولُ الْمَلَائِكَةُ كَذَبْتَ فَيَقُولُ اللّٰهُ سُبْحَانَهٗ بَلْ اَرَدْتَ اَنْ يُقَالَ فُلَانٌ قَارِيءٌ فَقَدْ قِيلَ ذٰلِكَ وَيُؤْتٰى بِصَاحِبِ الْمَالِ فَيَقُولُ لَهٗ اَلَمْ اُوَسِّعْ عَلَيْكَ حَتّٰى لَمْ اَدَعْكَ تَحْتَاجُ اِلٰى اَحَدٍ فَيَقُولُ بَلٰى يَا رَبِّ فَيَقُولُ مَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا اٰتَيْتُكَ فَيَقُولُ كُنْتُ اَصِلُ الرَّحِمَ وَاَتَصَدَّقُ فَيَقُولُ اللّٰهُ كَذَبْتَ وَتَقُولُ الْمَلَائِكَةُ كَذَبْتَ فَيَقُولُ اللّٰهُ سُبْحَانَهٗ بَلْ اَرَدْتَ اَنْ يُقَالَ اَنَّكَ جَوَادٌ فَقَدْ قِيلَ ذٰلِكَ وَيُؤْتٰى بِالَّذِي قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ فَيَقُولُ اللّٰهُ مَا فَعَلْتَ فَيَقُولُ اُمِرْتُ بِالْجِهَادِ فِي سَبِيلِكَ فَقَاتَلْتُ حَتّٰى قُتِلْتُ فَيَقُولُ اللّٰهُ تَعَالٰى كَذَبْتَ وَ تَقُولُ الْمَلَائِكَةُ كَذَبْتَ وَيَقُولُ اللّٰهُ بَلْ اَرَدْتَ اَنْ يُقَالَ فُلَانٌ جَرِيءٌ وَشُجَاعٌ فَقَدْ قِيلَ ذٰلِكَ ثُمَّ ضَرَبَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهٖ عَلٰى رُكْبَتِي وَقَالَ يَا اَبَا هُرَيْرَةَ اُولٰئِكَ اَوَّلُ خَلْقِ اللّٰهِ يُسَعَّرُ بِهِمْ نَارُ جَهَنَّمَ"[1]

क़ियामत के रोज़ सब से पहले ह़िसाब के लिये जिस शख़्स को बुलाया जाएगा वोह **ह़ाफ़िज़** और **क़ारिये कु़रआन** होगा, और एक वोह जिस ने **राहे ख़ुदा में जान दी होगी** और एक **मालदार शख़्स** को ।

तो **अल्लाह** तआ़ला **क़ारी** से फ़रमाएगा : क्या मैं ने तुझे वोह किताब नहीं सिखाई थी जो मैं ने अपने रसूल पर नाज़िल की थी, वोह जवाब देगा : हां या रब ! तो **अल्लाह** तआ़ला पूछेगा : तो इ़ल्म के मुत़ाबिक़ तू ने अ़मल किया ? क़ारी जवाब देगा : मैं तेरी ख़ुशनूदी के लिये सारी सारी रात और दिन के **अवक़ाते मुख़्तलिफ़ा**[2] में आयाते कु़रआनी की तिलावत में मश्ग़ूल व मसरूफ़ रहा, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : तू झूट बोलता है और फ़िरिश्ते भी कहेंगे : तू झूट बोलता है, फिर **अल्लाह** तआ़ला

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الریاء والسمعة، ٤/١٦٩، حدیث: ٢٣٨٩۔

2 .....मुख़्तलिफ़ अवक़ात ।

फ़रमाएगा : तिलावते आयात से तेरा इरादा येह था कि लोग कहें : फ़ुलां शख़्स क़ारी है और येह बात तुझे ह़ासिल हो गई थी।

फिर साहि़बे माल शख़्स को बुलाया जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला उस से पूछेगा : क्या मैं ने तुझे रिज़्क़ में फ़राख़ी और वुस्अ़त अ़ता नहीं की थी ? यहां तक कि मैं ने तुझे किसी इन्सान का मोह़ताज नहीं रखा था। वोह कहेगा : हां या रब तआ़ला ! तो उस से पूछेगा : मेरे दिये हुवे माल को तू ने किस अ़मल में सर्फ़ किया, वोह कहेगा : मैं ने इस माल के साथ सिलए रेह़्मी क़ाइम की और तेरी राह में सदक़ा और ख़ैरात किया। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : तू झूटा है। फ़िरिश्ते भी कहेंगे : तू झूटा है, **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰی फ़रमाएगा बल्कि तेरी निय्यत तो येह थी कि दुन्या तुझे सख़ी और फ़य्याज़ के नाम से पुकारे और येह चीज़ दुन्या में तुझे ह़ासिल हो गई।

और उस शख़्स को दरबारे ख़ुदावन्दी में लाया जाएगा जिस ने **अल्लाह** की राह में जान दी होगी **अल्लाह** तआ़ला उस से पूछेगा : तू ने दुन्या में क्या नेक काम किये ? अ़र्ज़ करेगा : मुझे तेरी राह में जिहाद का हुक्म मिला तो मैं जिहाद में मसरूफ़ हो गया ह़त्ता की तेरे रास्ते में **जान कटा दी**[1] और **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : तू झूट बोलता है, मलाइका भी कहेंगे तू झूट बोल रहा है, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : बल्कि तेरा तो येह मक़्सद था कि लोग तुझे दिलेर और **शुजाअ़**[2] कहें और येह बात तुझे दुन्या में ह़ासिल हो गई।

फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक मेरे घुटने पर मारा और फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! येही वोह लोग हैं जिन को सब से अव्वल दोज़ख़ में फेंक कर **अल्लाह** तआ़ला दोज़ख़ की आग भड़काएगा।

1.....जान दे दी। 2.....बहादुर।

एक दूसरी ह़दीस ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है वोह फ़रमाते हैं :

سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَقُوْلُ اِنَّ النَّارَ وَ اَهْلَهَا يَعُجُّوْنَ مِنْ اَهْلِ الرِّيَاءِ قِيْلَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَكَيْفَ تَعُجُّ النَّارُ؟ قَالَ مِنْ حَرِّ النَّارِ الَّتِي يُعَذَّبُوْنَ بِهَا

मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि आप फ़रमाते थे दोज़ख़ और अहले दोज़ख़ रियाकारों से चीख़ उठेंगे। कहा गया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोज़ख़ क्यूं चीख़ेगी । आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : उस आग की तपिश से जिस से रियाकारों को अ़ज़ाब दिया जा रहा होगा।

क़ियामत के रोज़ लाह़िक़ होने वाली शर्मिन्दगियों और नदामतों में अहले बसीरत के लिये दर्से इ़ब्रत है। واللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَلِيُّ الْهِدَايَةِ بِفَضْلِهٖ

सुवाल : आप हमें इख़्लास और रिया की ह़क़ीक़त और इन के नतीजे से आगाह फ़रमाएं, नीज़ इन से इन्सान के आ'माल में किस क़िस्म का असर रूनुमा होता है इस पर भी रोशनी डालें ?

जवाब : हमारे उ़लमाए अहले सुन्नत (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) के नज़दीक इख़्लास की दो क़िस्में हैं :

﴾1﴿ अ़मल में इख़्लास ﴾2﴿ त़लबे सवाब में इख़्लास।

اِخْلَاصٌ فِی الْعَمَل(1) तो येह है कि बन्दा अपने अ़मल से **तक़र्रुबे ह़क़ तआ़ला**,(2) उस के हुक्म की ता'ज़ीम और उस के **फ़रमूदात**(3) की बजा आवरी का इरादा करे और येह इख़्लास ए'तिक़ादे सह़ीह़ से नसीब होता है। इस इख़्लास की ज़िद निफ़ाक़ है, जिस में ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब मक़्सूद होता है।

हमारे शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : निफ़ाक़ उस ए'तिक़ादे फ़ासिद का नाम है जो अल्लाह तआ़ला के बारे में मुनाफ़िक़ के

1..अ़मल में इख़्लास। 2...अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब। 3...अह़कामात।

दिल में पाया जाता है। और येह ए'तिक़ाद इरादे के **क़बीले**(1) में से नहीं है। जैसा कि हम दूसरे मक़ाम पर ज़िक्र कर चुके हैं।

लेकिन तलबे सवाब में इख़्लास की हक़ीक़त येह है कि बन्दा नेक अ़मल से नफ़्ए आख़िरत का इरादा करे, हमारे शैख़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की हक़ीक़त येह बयान करते थे :

"ऐसे नेक काम पर नफ़्ए आख़िरत का इरादा करना जिसे शरअ़न रद्द करना दुश्वार हो और रद्द कर देने की सूरत में आख़िरत में नफ़्अ़ की उम्मीद बाक़ी न रहे।"

हम इख़्लास की इस ता'रीफ़ में मल्हूज़ क़ैदों की शर्ह दूसरे मक़ाम पर कर चुके हैं।

एक दफ़्आ़ हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हवारियों ने आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से दरयाफ़्त किया : "इख़्लास क्या है ?" आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने जवाब दिया : "इख़्लास येह है कि बन्दा **अल्लाह** तआ़ला के लिये नेक काम करे और दिल में इस की चाहत न रखे कि इस पर उस की ह़म्दो सना की जाए।"

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस क़ौल मुबारक का मत़लब भी येही है कि बन्दा रिया को नज़दीक न आने दे और ह़म्दो सना की ख़ुसूसिय्यत से नफ़ी इस वासित़े फ़रमाई कि येह रिया के **अक़्वा**(2) अस्बाब हैं जो इख़्लास को तबाहो बरबाद करते हैं।

हज़रते जुनैद बग़दादी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "रियाकारी वग़ैरा के मैल कुचैल से आ'माल को पाक व साफ़ रखने का नाम इख़्लास है।"

1...क़सम। 2...क़वी तरीन।

हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "तमाम नफ़्सानी और बशरी तक़ाज़ों को भूल जाने और **अल्लाह** तआ़ला की ज़ाते पाक के साथ **दवामे रब्त़**[1] और **दवामे मुराक़बा**[2] का नाम इख़्लास है।"

येह इख़्लास का मुकम्मल बयान है। इख़्लास की ता'रीफ़ में और भी बहुत से अक़्वाल हैं लेकिन **इन्किशाफ़े ह़क़ाइक़**[3] के बा'द नक़्ले अक़्वाल में कोई फ़ाइदा नहीं।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जब इख़्लास की ह़क़ीक़त दरयाफ़्त की गई है तो आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "تَقُوْلُ رَبِّیَ اللّٰہُ ثُمَّ تَسْتَقِیْمُ کَمَا اُمِرْتَ" इख़्लास येह है कि तू कहे : मेरा रब **अल्लाह** है, और फिर जो तुझे हुक्म है उस पर क़ाइम और मज़बूत़ हो जाए।

या'नी तू अपने नफ़्स और ख़्वाहिशात की इबादत छोड़ दे, बल्कि सिर्फ़ रब तआ़ला की पूजा और बन्दगी करे और उस के हुक्म के मुताबिक़ उस की इबादत और बन्दगी में **मुस्तक़ीम**[4] रहे। हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام के इस इरशाद में दर अस्ल इस त़रफ़ इशारा है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा हर शै से तअ़ल्लुक़ मुन्क़त़ेअ़ कर ले और उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ अपनी नज़र से हटा दे, इख़्लासे ह़क़ीक़ी इसी का नाम है। इख़्लास के मुक़ाबले में रिया है, और रिया की ता'रीफ़ है : अ़मले आख़िरत के इवज़ दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा करना। फिर रिया दो क़िस्म है : ﴾1﴿ रियाए मह़ज़ ﴾2﴿ रियाए मख़्लूत़।

रियाए मह़ज़ तो येह है कि सिर्फ़ दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा किया जाए। और रियाए मख़्लूत़ येह है कि अ़मले आख़िरत से दुन्यवी और उख़रवी दोनों क़िस्म के नफ़्अ़ का इरादा किया जाए।

1.....हमेशा **अल्लाह** तआ़ला के साथ लौ लगाए रखना। 2.....हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद में रहना। 3...ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो जाने। 4...क़ाइम।

येह तो थी इख़्लास और रिया दोनों की ह़क़ीक़त और माहिय्यत बाक़ी रही इन दोनों की तासीर तो इख़्लास से तो तुम अपने फ़े'ल को क़ुर्बत और नज़्दीकी का सबब बना लोगे और त़लबे सवाब में इख़्लास से तुम्हारा अ़मल बड़े सवाब और अ़ज़्मत का मुस्तह़िक़ हो जाएगा। इस के **बर अ़क्स**[1] निफ़ाक़ अ़मले ख़ैर को ज़ाएअ़ कर देता है और इस अ़मल से नज़्दीकी और क़ुर्बत की ह़ैसिय्यत सल्ब कर लेता है। **अल्लाह** तआ़ला ने नेक अ़मल पर सवाब का जो वा'दा किया है निफ़ाक़ से वोह अ़मल इस वा'दे का मुस्तह़िक़ नहीं रहता।

बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक रियाए मह़्ज़ का सुदूर आ़रिफ़ से नहीं हो सकता हां रिया की आमेज़िश हो सकती है। जिस से निस्फ़ सवाब बात़िल और ज़ाएअ़ हो सकता है और बा'ज़ दूसरे उ़लमा के नज़्दीक आ़रिफ़ से रियाए मह़्ज़ का सुदूर भी हो सकता है और इस से दुगने का निस्फ़ सवाब ज़ाएअ़ होता है और रियाए मख़्लूत़ से दुगने का चौथाई सवाब बरबाद होता है और हमारे शैख़ قُدِّسَ سِرُّهٗ के नज़्दीक सह़ीह़ बात येह है कि आ़रिफ़ से आख़िरत का तसव्वुर होते हुवे रियाए मह़्ज़ का सुदूर नहीं हो सकता, हां आख़िरत से सह्व की सूरत में रियाए मह़्ज़ का सुदूर मुमकिन है।

मुख़्तार और पसन्दीदा बात येह है कि रिया की तासीर से अ़मल की क़बूलिय्यत ख़त्म हो जाती है और सवाब में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है बाक़ी येह अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि निस्फ़ सवाब ज़ाएअ़ होता है या चौथाई सवाब और इन मसाइल की शर्ह़ बड़ी त़वील है, हम इन की मुकम्मल और पूरी शर्ह़ व तफ़्सील किताब "**इह़्याउल उ़लूम**" और "**असरारे मुआ़मलाते दीन**" में कर चुके हैं।

1.....ख़िलाफ़।

सुवाल : अगर तुम येह सुवाल करो कि इख़्लास का मौक़अ़ महल कौन सा है और किस ता़अ़त में येह पाया जाता है और कहां वाजिब व ज़रूरी है ?

जवाब : तो इस का जवाब येह है कि बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक आ'माल तीन क़िस्म हैं :

एक क़िस्म वोह है जिस में दोनों क़िस्म का इख़्लास पाया जाता है और वोह इ़बादाते ज़ाहिरा अस्लिय्या हैं। दूसरी क़िस्म इ़बादात की वोह है जिस में दोनों क़िस्म का इख़्लास नहीं पाया जाता, वोह इ़बादाते बाति़निय्या अस्लिय्या हैं। और आ'माल की तीसरी क़िस्म वोह है जिस में त़लबे अज्रो सवाब का इख़्लास तो पाया जाता है लेकिन **इख़्लासुल अ़मल**(1) नहीं पाया जाता और येह वोह मुबाह़ात हैं जो सामाने आख़िरत के तौ़र पर इन्सान अपने पास रखता है।

हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है : वोह इ़बादाते अस्लिय्या जो ग़ैरुल्लाह के लिये भी हो सकती हैं उन में इख़्लासे अ़मल पाया जाता है, तो अकसर इ़बादाते बाति़निय्या में इख़्लासे अ़मल मुतह़क़्क़क़ होता है। लेकिन त़लबे अज्र में इख़्लास तो येह अकसर मशाइख़े किरामिय्या के नज़्दीक इ़बादाते बाति़निय्या में नहीं पाया जाता क्यूंकि इन पर **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى के सिवा कोई मुत्त़लअ़ नहीं होता तो इन में रिया के अस्बाब व दवाई नहीं पाए जा सकते लिहाज़ा इन में त़लबे अज्र के इख़्लास की ह़ाजत और ज़रूरत नहीं पड़ती। हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कहना है कि जब एक बन्दए मुक़र्रब इ़बादाते बाति़निय्या से दुन्यवी नफ़्अ़ का क़स्द करे तो येह भी रिया में दाख़िल है। मैं कहता हूं इस सूरत में कोई बईद नहीं कि बहुत सी इ़बादाते बाति़निय्या में दोनों क़िस्म का इख़्लास पाया जाए। इसी त़रह़ नवाफ़िल शुरूअ़ करते वक़्त दोनों क़िस्म का इख़्लास होना ज़रूरी है लेकिन वोह मुबाह़ात जो तय्यारिये आख़िरत

1 .....अ़मल का इख़्लास।

की ग़रज़ से इन्सान ने अपने पास रखे हुवे हैं इन में त़लबे सवाब का इख़्लास तो पाया जाता है मगर इख़्लासे अ़मल नहीं पाया जाता क्यूंकि येह मुबाह़ात बज़ाते खुद इ़बादत व कु़र्बत नहीं हैं बल्कि कु़र्बत व बन्दगी का ज़रीआ़ और **मूजिब**[1] हैं।

सुवाल : अगर तुम कहो कि येह जो बयान किया गया है येह दोनों क़िस्म के इख़्लास के मौक़अ़ व मह़ल का बयान था इन दोनों का वक़्त भी बताएं।

जवाब : इख़्लासे अ़मल तो फ़े'ल के साथ ही होता है इस से **मुतअख़्ख़िर**[2] नहीं हो सकता लेकिन इख़्लास त़लबे अज्र अ़मल से मुतअख़्ख़िर हो सकता है और बा'ज़ उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)अ़मल से फ़राग़त के वक़्त का ए'तिबार करते हैं या'नी अ़मल से फ़राग़त इख़्लास की कैफ़िय्यत पर होती है तो इख़्लास का ए'तिबार होगा और अगर रिया पर होती हो तो रिया का ए'तिबार होगा और चूंकि अ़मल से फ़राग़त हो चुकी है, इस लिये अब इस का **तदारुक**[3] मुमकिन नहीं और मशाइख़े किरामिय्या के नज़्दीक जब तक अ़मल से कोई दुन्यवी **मनफ़अ़त**[4] न उठा ली हो और इख़्लास का इरादा कर लिया जाए तो इख़्लास मो'तबर हो जाएगा लेकिन अगर दुन्यवी मनफ़अ़त ह़ासिल कर ली हो तो फिर इख़्लास का ए'तिबार नहीं किया जा सकता और बा'ज़ उ़लमा का ख़याल है कि फ़राइज़ में मौत तक इख़्लास का पैदा कर लेना मुमकिन है लेकिन नवाफ़िल में नहीं और इन्हों ने फ़राइज़ और नवाफ़िल में फ़र्क़ की येह वजह बयान की है कि फ़राइज़ में अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बन्दा दाख़िल होता है, तो इस में अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और उस की त़रफ़ से आसानी की उम्मीद होती है लेकिन नवाफ़िल में येह सूरते ह़ाल नहीं क्यूंकि नवाफ़िल बन्दा अपनी मरज़ी और चाहत से

1.....सबब। 2.....बा'द में। 3.....तलाफ़ी। 4.....फ़ाइदा।

शुरूअ़ करता है। लिहाज़ा इन में से मुत़ालबा किया जाता है कि वोह इन्हें कमा ह़क़्क़ुहू अदा करे और इन में ज़रा सी कोताही न आने दे। मैं कहता हूं कि इस मस्अले में एक फ़ाइदा है वोह येह कि जिस शख़्स से रिया का सुदूर हो चुका हो, या तर्के इख़्लास का इर्तिकाब हो चुका हो तो उस के लिये मज़्कूरा वुजूह की रोशनी में तलाफ़ी और तदारुक की गुन्जाइश है। इन बारीक और दक़ीक़ मसाइल में लोगों के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब नक़्ल करने से एक मक़्सद तो येह है कि येह बात मा'लूम हो जाए कि फ़ी ज़माना सह़ीह़ अ़मल करने वाले बहुत कम हैं और इस राहे तसव्वुफ़ व फ़क्र पर चलने वालों की रग़बत और इन का शौक़ ख़त्म हो चुका है। इस लिये वोह इन दक़ाइक़ व ह़क़ाइक़ को जानने की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं। नक़्ले मज़ाहिब से दूसरा मक़्सद येह है कि इस रास्ते के **मुब्तदी**(1) को इबादात में और क़रीब लाया जाए और इस को अपनी बीमारियों का इलाज एक मज़्हब में न मिले तो दूसरे मज़्हब में पा ले क्यूंकि इन्सानी अमराज़, अग़राज़, आ'माल की ख़राबियां और इन की आफ़ात मुख़्तलिफ़ हैं। اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی तुम येह बातें अच्छी त़रह़ समझ लोगे।

सुवाल : क्या हर अ़मल में इख़्लासे मुफ़रद ही सिर्फ़ काफ़ी हो सकता है या हर अ़मल के हर जुज़्व के लिये अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा इख़्लासे जदीद की ज़रूरत है।

जवाब : इस में उ़लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ तो येह कहते हैं कि सारे अ़मल के लिये एक ही इख़्लास की ज़रूरत है, और बा'ज़ येह कहते हैं कि कुछ आ'माल ऐसे हैं जिन में एक इख़्लास ही किफ़ायत करता है जैसे वोह आ'माल जो मुख़्तलिफ़ अरकान से **मुरक्कब**(2) हैं लेकिन (3)مِنْ حَيْثُ الْمَجْمُوْع दुरुस्ती और फ़साद के लिह़ाज़ से एक शै की ह़ैसिय्यत रखते हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा।

1...आग़ाज़ करने वाले। 2...मिल कर बने। 3...मजमूई ए'तिबार से।

सुवाल : एक शख़्स अपने अ़मले ख़ैर से **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और ख़ुश्नूदी नहीं बल्कि अपने नफ़्अ़ और फ़ाइदे का इरादा करता है। लोगों से कोई इरादा नहीं रखता या'नी उस के दिल में येह बात नहीं कि इस अ़मले ख़ैर पर लोग मेरी ह़म्दो सना करें या मेरे अ़मल को देखें या मुझे कोई नफ़्अ़ पहुंचाएं। तो क्या इस क़िस्म का अ़मल भी रियाकारी में दाख़िल है ?

जवाब : इस क़िस्म का अ़मल ख़ालिस रियाकाराना अ़मल है, उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं कि अ़मल में मुराद का ए'तिबार होता है इस का ए'तिबार नहीं होता जिस से मुराद त़लब की जा रही हो। लिहाज़ा अ़मल से तेरी मुराद अगर दुन्यवी नफ़्अ़ और फ़ाइदा हो तो बहर ह़ाल येह रिया है चाहे ख़ुदा तआ़ला से येह मुराद त़लब की जा रही हो या लोगों से। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾ (1)

जो शख़्स आख़िरत की खेती का इरादा रखता हो तो हम उस की इस खेती में इज़ाफ़ा करेंगे और जो दुन्या की खेती चाहता हो तो हम उसे कुछ दे देते हैं लेकिन आख़िरत में उसे कुछ ह़िस्सा नहीं मिलेगा।

और लफ़्ज़े रिया का ए'तिबार नहीं बल्कि निय्यत और मुराद का ए'तिबार है और येह लफ़्ज़ "रूयतुन" से **मुश्तक़**[2] है, इस से **इश्तिक़ाक़**[3] की वजह येह है कि येह इरादा फ़ासिदा अकसरो बेशतर लोगों की त़रफ़ से और इन के देखने की वजह से पैदा होता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं। (پ۲۵،الشورٰی:۲۰) 2.....वोह लफ़्ज़ जो किसी दूसरे लफ़्ज़ से निकला। 3.....एक लफ़्ज़ से दूसरे लफ़्ज़ बनाने।

सुवाल : अगर एक शख़्स अल्लाह तआ़ला से दुन्या इस लिये त़लब करे कि वोह लोगों के सामने दस्ते ह़ाजत दराज़ करने से बचे और अल्लाह तआ़ला की बन्दगी और इ़बादत में दिल जमई से मसरूफ़ व मश्ग़ूल रह सके तो क्या ऐसा क़स्द व इरादा भी रिया में दाख़िल है।

जवाब : लोगों के सामने दस्ते ह़ाजत दराज़ करने से बचना कसरते माल व जाह और सामाने दुन्या की ज़ियादती से नहीं होता। बल्कि येह चीज़ तो क़नाअ़त और ख़ुदा तआ़ला पर कामिल भरोसे और तवक्कुल से होती है लेकिन अगर त़लबे दुन्या से इस का मक़्सद यक्सूई से इ़बादत में मसरूफ़ होना हो तो इस त़रह़ का मक़्सद व इरादा रिया में दाख़िल नहीं लेकिन इस से वोही चीज़ें मुराद होगी जो आख़िरत और अस्बाबे आख़िरत से तअ़ल्लुक़ रखती हैं और इस का क़स्द भी क़त़अ़न आख़िरत की तय्यारी से ही मुतअ़ल्लिक़ हो। अगर किसी अ़मले ख़ैर से इस क़िस्म का इरादा हो तो वोह रिया नहीं क्यूंकि दुन्यवी उमूर इस इरादे से ख़ैर बन जाते हैं, या आ'माले आख़िरत के हुक्म के तह़्त आ जाते हैं और ख़ैर का इरादा रिया नहीं हो सकता। यूं ही अगर तुम येह इरादा करो कि लोगों में तुम्हारी इ़ज़्ज़त हो और मशाइख़ और मज़हबी रहनुमा तुम से मह़ब्बत करें। लेकिन इस से तुम्हारा मक़्सूद येह हो कि तुम्हें अहले ह़क़ के मज़हब की ताईद व तक़्वियत की क़ुदरत ह़ासिल हो या इस त़रह़ मुअस्सिर त़ौर त़रीक़े पर अहले बिदअ़त का रद्द कर सको, ताकि इस त़रह़ ठोस त़रीक़े से इ़ल्मे दीन की इशाअ़त कर सको और लोगों को इ़बादत की तह़रीस व तरग़ीब दे सको। अपने नफ़्स की अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी और हुसूले दुन्या की निय्यत न हो तो दीन से मुतअ़ल्लिक़ इस त़रह़ के तमाम मज़बूत़ इरादे और अच्छी निय्यतें रिया में दाख़िल नहीं क्यूंकि दर ह़क़ीक़त इन से मक़्सूद आख़िरत है।

मैं ने बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से पूछा कि कई औलियाउल्लाह (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की आ़दत है कि वोह उ़सरत व तंगी के अय्याम में सूरए वाक़िआ़ पढ़ते हैं, क्या उन की निय्यत येह नहीं होती कि इस से **अल्लाह** तआ़ला उन की इस उ़सरत और तंगी को दूर करे और उन्हें रिज़्क़ के मुआ़मले में फ़राख़ी और वुस्अ़त अ़ता करे, क्या अ़मले आख़िरत से हुसूले दुन्या का इरादा करना दुरुस्त है ?

बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की त़रफ़ से इस का जो जवाब मुझे मिला इस का मफ़्हूम येह था कि औलियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की मुराद व निय्यत इस से येह होती है कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें क़नाअ़त अ़ता करे और इतनी मिक़्दार में रोज़ी अ़ता करे जिस से वोह इबादते इलाही बजा लाते रहें और दर्स व तदरीस की क़ुव्वत बह़ाल रहे और इस त़रह़ का इरादा नेक इरादा है दुन्या का इरादा नहीं ।

जानना चाहिये कि उ़सरत व तंगी के वक़्त **फ़राख़िये रिज़्क़**(1) के लिये इस सूरत को पढ़ने का मा'मूल बनाना खुद हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मरवी है यहां तक कि ह़ज़रते **इब्ने मसऊ़द**(2) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ब वक़्ते वफ़ात सब माल ख़ैरात कर दिया और अपनी अवलाद के लिये कुछ न छोड़ा तो इस फ़े'ल पर जब उन को डांटा गया तो उन्हों ने जवाब दिया : मैं अपनी अवलाद के लिये सूरए वाक़िआ़ छोड़ कर जा रहा हूं ।(3)

---

(1).....रिज़्क़ की कुशादगी । (2).....यहां लफ़्ज़ "अबू मसऊ़द" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "इब्ने मसऊ़द" है लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है । (इ़ल्मिय्या)

(3).....شعب الایمان،باب فی تعظیم القران،فصل فی فضائل سوروالآیات، حدیث:۲۴۹۷،۲/۴۹۱،بتغیر۔

सुन्नत के इसी उसूल के मुत़ाबिक़ हमारे उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस क़िस्म की बातें इख़्तियार कीं। वरना بِحَمْدِهٖ تَعَالٰی उन्हें दुन्या की उ़सरत और फ़राख़ी की कोई परवाह नहीं थी बल्कि वोह तो अस्बाबे दुन्या की तंगी और उ़सरत को ग़नीमत जानते थे और इस में एक दूसरे पर फ़ौक़िय्यत ले जाने की कोशिश करते थे और माली तंगदस्ती को **अल्लाह** तआ़ला का एह़साने अ़ज़ीम तसव्वुर करते थे और जब अपने आप को साज़ो सामाने दुन्यवी की वुस्अ़त व कुशादगी में देखते तो सख़्त डरते थे ह़ालांकि अकसर लोग दुन्यवी माल व ने'मत को **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्लो करम ख़याल करते हैं बा वुजूद येह कि येह वुस्अ़ते मालो दौलत उन के लिये **इस्तिदराज**(1) और मुसीबत होता है।

अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे उ़सरत और तंगदस्ती को क्यूं **अल्लाह** तआ़ला का एह़सान तसव्वुर न करें जब कि उन की अन्दरूनी ह़ालत येह होती है कि वोह उ़मूमन भूक की ह़ालत में होते हैं। **मुतक़द्दिमीन सूफ़िया**(2) (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) कहा करते थे : भूक हमारा सरमाया है। इस बारे में अहले तसव्वुफ़ का मज़हब येह है और मेरा और मेरे मशाइख़ का मज़हब भी येही है और हमारे अस्लाफ़ की सीरत भी येही थी। बाक़ी रहा इस सिलसिले में बा'ज़ **मुतअख़्ख़िरीन**(3) का कोताही करना तो इस का कोई ए'तिबार नहीं।

रिज़्क़ की वुस्अ़त और तंगी के मुतअ़ल्लिक़ इन का नुक्त़ए नज़र मैं ने इस लिये बयान किया है ताकि मुख़ालिफ़ जहालत की वजह से इन को ह़क़ीर और मजबूर ख़याल न करे या सह़ीहुल अ़क़ीदा **मुब्तदी**(4) इन के मुतअ़ल्लिक़ ग़लती में मुब्तला न हो।

1.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दे को ढील देना। 2.....गुज़श्ता ज़माने के सूफ़ियाए किराम। 3.....बा'द में आने वालों। 4.....वोह जो अभी राहे तसव्वुफ़ के इब्तिदाई मराह़िल में हो।

सुवाल : अहले इल्म, **अस्हा़बे तजर्रुद व ज़ोह्द**[1] और **अरबाबे सब्र व क़नाअ़त**[2] को येह कब लाइक़ है कि वोह हुसूले दुन्या के लिये वज़ीफ़े करते फिरें ?

जवाब : जब कि मक़्सूद हुसूले क़नाअ़त और तय्यारिये आख़िरत हो तो फिर [3]قُوۡتِ لَا يَمُوۡت के लिये कोई वज़ीफ़ा पढ़ना या कुरआन की सूरह पढ़ना सुन्नत से साबित है। हां ह़िर्स व शहवत की पैरवी के लिये ऐसा करना दुरुस्त नहीं, नीज़ उ़सरत और तंगदस्ती से परेशान हो कर येह रास्ता इख़्तियार करना भी ठीक नहीं।

और जब मक़्सूद तय्यारिये आख़िरत हो तो इस के पीछे अकसरो बेशतर तू अपने दिल में क़नाअ़त मह़सूस करेगा और भूक और **ज़ो'फ़ व लाग़री**[4] को भी मफ़्क़ूद पाएगा। नीज़ त़आ़म से बे नियाज़ी और **अ़दमे ह़ाजत**[5] भी मह़सूस करेगा जिन लोगों ने इस का तजरिबा किया है उन को इस का अच्छी त़रह़ इ़ल्म है **अल्लाह** तआ़ला तुझे तौफ़ीक़ दे और इस तह़क़ीक़ को ज़ेह्न में रख।

उ़ज्ब

दूसरा **अम्रे क़ादिह़**[6] उ़ज्ब है, इस से बचना दो वजह से ज़रूरी है : एक तो येह है कि उ़ज्ब के बाइ़स इन्सान **तौफ़ीक़ व ताईदे ईज़दी**[7] से मह़रूम हो जाता है, उ़ज्ब में गिरिफ़्तार इन्सान **अन्जामे कार**[8] ज़लीलो ख़्वार होता है, जब इन्सान तौफ़ीक़ व ताईदे ख़ुदावन्दी से मह़रूम हो जाता है तो हलाकत व बरबादी का जल्द शिकार होता

1...इ़बादत के लिये मख़्लूक़ से अ़लाहि़दगी इख़्तियार करने वाले परहेज़गार लोगों। 2...सब्र करने और थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी रहने वालों। 3...इस क़दर ख़ूराक जिस से ज़िन्दगी क़ाइम रहे। 4...कमज़ोरी। 5...ह़ाजत का न होना। 6...आ'माल बरबाद करने वाली बुराई। 7...**अल्लाह** तआ़ला की जानिब से मिलने वाली तौफ़ीक़ व ह़िमायत। 8...आख़िरे कार।

है, इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन्सान को तीन चीज़ें हलाक करती हैं : बुख़्ल जिस की पैरवी की जाए, ख़्वाहिशे नफ़्सानी जिस का इन्सान **मुत्तबेअ़**(1) बन जाए। और आदमी का अपने आप को अच्छा जानना।(2)

दूसरी वजह येह है कि उ़ज्ब अ़मले सालेह़ को तबाह व बरबाद कर देता है इसी लिये ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **ह़वारिय्यीन**(3) से फ़रमाया : बहुत से चराग़ हैं जिन को हवा ने बुझा दिया और बहुत से आ़बिद हैं जिन को उ़ज्ब ने तबाह कर दिया, जब इन्सानी ज़िन्दगी से मक़्सूद और ग़रज़ व ग़ायत इ़बादत व बन्दगी है और येह **ख़स्लत**(4) इन्सान को इस मक़्सूद से मह़रूम कर देती है कि इन्सान किसी ख़ैर को ह़ासिल नहीं कर सकता और अगर कुछ थोड़ी बहुत नेकी ह़ासिल भी करे तो येह उ़ज्ब इस को भी तबाह कर देता है, और इस के हाथ में कुछ भी नहीं रहता तो बहुत ज़रूरी है कि इन्सान इस से बचे और मह़फ़ूज़ रहे। وَاللّٰهُ وَلِيُّ التَّوْفِيْقِ وَالْعِصْمَةِ

उ़ज्ब की ह़क़ीक़त और इस का मा'ना

अगर तुम येह दरयाफ़्त करो कि उ़ज्ब की ह़क़ीक़त और इस का मा'ना क्या है ? नीज़ इस की तासीर और इस का हुक्म और नतीजा क्या है ? इस की वज़ाह़त होनी चाहिये तो तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि उ़ज्ब की ह़क़ीक़त येह है :

1.....पैरवी करने वाला।

2.....شعب الايمان، باب في الخوف من الله تعالٰى، ١/٤٧١، حديث:٧٤٥ والمعجم الاوسط، ٤/١٢٩، حديث: ٥٤٥٢ـ

3.....अपने अस्ह़ाब। 4.....आ़दत।

"اَلْعُجْبُ اِسْتِعْظَامُ الْعَمَلِ الصَّالِح" अपने **आ'माले सालेह़ा**[1] को अ़ज़ीम ख़याल करने का नाम उ़ज्ब है।

हमारे उ़लमाए किराम عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة के नज़दीक उ़ज्ब की तफ़्सील येह है कि बन्दा येह ज़िक्र व इज़्हार करे कि **अ़मले सालेह़**[2] की फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी फ़ुलां शै से या मख़्लूक़ या नफ़्स से हुई है न कि ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से इस का ह़ुसूल हुवा है। उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) का बयान है कि बा'ज़ अवक़ात उ़ज्ब में मुब्तला इन्सान तीनों चीज़ों का ज़िक्र करता है बा'ज़ अवक़ात दो का ज़िक्र करता है और बा'ज़ अवक़ात सिर्फ़ एक का ज़िक्र करता है, और उ़ज्ब की ज़िद एह़सान और मिन्नत है। एह़सान व मिन्नत से येह मुराद है कि इन्सान येह ज़ाहिर करे कि येह सब बुज़ुर्गी व फ़ज़ीलत ख़ुदावन्दे तआ़ला سُبْحَانَهٗ की ताईद व तौफ़ीक़ से है और मुझे येह ह़ासिल शुदा शरफ़ व बुज़ुर्गी और मर्तबा व मक़ाम अ़त़ा करने वाला रब तआ़ला है। उ़ज्ब के अस्बाब व अ़लामात के ज़ुहूर के वक़्त ख़ुदा तआ़ला के एह़सान का ज़िक्र करना फ़र्ज़ हो जाता है और आ़म अवक़ात व ह़ालात में इस एह़साने ख़ुदावन्दी का तज़्किरा मुस्तह़ब व बेहतर है।

बाक़ी रही उ़ज्ब व ख़ुद सिताई की अ़मले सालेह़ में तासीर तो इस के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ उ़लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं कि उ़ज्ब वाले इन्सान के आ'माल को ज़ाएअ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ इन्तिज़ार की जाती है अगर वोह मौत से पहले तौबा कर ले तो उस के आ'माल ज़ाएअ़ होने से बच जाते हैं वरना ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं। मशाइख़े कर्रामिय्या में से मुह़म्मद बिन साबिर का येही मज़्हब है,

1.....नेक आ'माल। 2.....नेक अ़मल।

मुह़म्मद बिन साबिर के नज़्दीक आ'माल के ज़ाएअ़ होने का मत़लब येह है कि अ़मले सालेह़ हर क़िस्म की अच्छाई से ख़ाली हो जाए कि अज्रो सवाब और **मद्ह़**[1] तक का इस्तिह़क़ाक़ ख़त्म हो जाए। मुह़म्मद बिन साबिर के इ़लावा दूसरों के नज़्दीक आ'माल ज़ाएअ़ होने का मत़लब येह है कि अ़मले सालेह़ पर दुगना तिगना सवाब जो मिलना था वोह ज़ाएअ़ हो जाता है अ़मल का अस्ल सवाब बाक़ी रहता है।

सुवाल : आ़रिफ़ शख़्स पर येह बात कैसे पोशीदा रह सकती है कि अ़मले सालेह़ की तौफ़ीक़ देने वाला **अल्लाह** तआ़ला ही है और वोही अपने फ़ज़्ल व एह़सान से बुलन्द मर्तबा और कसीर सवाब अ़ता करता है।

जवाब : दर अस्ल यहां एक उ़म्दा ज़ख़ीरा और लत़ीफ़ नुक्ता है जिस को ज़ेह्न नशीन कर लेना जवाब के तमाम पहलू वाज़ेह़ कर देता है और वोह येह है कि उ़ज्ब के मुआ़मले में लोग तीन क़िस्म हैं : एक वोह हैं जो हर ह़ाल में उ़ज्ब व ख़ुद सिताई का शिकार हैं और येह मो'तज़िला और क़दरिय्या का गुरौह है जो अपने अफ़्आ़ल का ख़ुद अपने आप को ख़ालिक़ जानता है और इस मुआ़मले में **अल्लाह** तआ़ला का अपने ऊपर कोई एह़सान तस्लीम नहीं करता और उस की मदद व नुसरत और तौफ़ीक़ और लुत़्फ़े ख़ास का मुन्किर है और येह ख़राबी इन्हें इस शुबे की बिना पर लाह़िक़ होती है जिस ने इन को मुतअस्सिर किया हुवा है।

दूसरा गुरौह वोह **मुस्तक़ीमुल ह़ाल कामिलीन**[2] हैं जो हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला के एह़सान को ही याद करते हैं उन को अपने किसी भी अ़मल में उ़ज्ब लाह़िक़ नहीं होता और येह उस बसीरत के बाइ़स है जो उन को अ़त़ा होती है और उस ताईद की वजह से है जो उन्हीं के साथ ख़ास है।

1.....ता'रीफ़। 2..... दुरुस्त ह़ाल कामिल लोग।

तीसरा गुरौह आम अहले सुन्नत व जमाअ़त हैं जो जब बेदार होते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला का ही एह़सान मानते हैं और जब इन पर ग़फ़्लत त़ारी होती है तो उ़ज्ब और ख़ुद सिताई का शिकार हो जाते हैं और येह आ़रिज़ी ग़फ़्लत, सुस्ती और कमिये बसीरत की वजह से होता है।

सुवाल : क़दरिय्या और मो'तज़िला के अफ़्आ़ल व आ'माल की सूरते ह़ाल क्या है? क्या इस उ़ज्ब की वजह से इन के सब आ'माल ज़ाएअ़ और बरबाद हैं?

जवाब : इस में बहुत इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ का क़ौल है कि इन के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ और बेकार हैं क्यूंकि इन का अ़क़ीदा ही ख़राब है और बा'ज़ कहते हैं : अगर एक शख़्स **फ़िलजुम्ला**[1] इस्लामी अ़क़ीदे रखता हो तो थोड़ी बहुत ए'तिक़ादी ग़लती से इस के आ'माल ज़ाएअ़ नहीं होते जब तक हर अ़मल में उ़ज्ब मौजूद न हो, जिस त़रह़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत होते हुवे येह ज़रूरी नहीं कि उ़ज्ब से मह़फ़ूज़ रहे जब तक ख़ुसूसिय्यत से **अल्लाह** तआ़ला के एह़सान का इज़्हार न करे।

सुवाल : क्या रिया और उ़ज्ब के इ़लावा भी कोई चीज़ आ'माल को नुक़्सान देती है?

जवाब : इन के इ़लावा भी बहुत ऐसी चीज़ें हैं जो आ'माल को ख़राब करती हैं, हम ने इन दो का ख़ुसूसिय्यत से इस लिये ज़िक्र किया है कि बरबादिये आ'माल में अस्ल और बुन्याद की ह़ैसिय्यत रखते हैं वरना बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) का क़ौल है कि बन्दे पर लाज़िम है कि अपने अ़मल को दस चीज़ों से मह़फ़ूज़ रखे : (1) निफ़ाक़ से (2) रिया से (3) लोगों से मेल जोल से (4) एह़सान

1.....मजमूई त़ौर पर।

जतलाने से (5) अज़िय्यत देने से (6) नदामत से (7) उ़ज्ब से (8) ह़सरत से (9) सुस्ती और काहिली से (10) मलामत के ख़ौफ़ से। या'नी अगर मैं ने फ़ुलां से नेक काम किया तो लोग मलामत करेंगे। फिर हमारे शैख़े मुकर्रम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने इन में से हर एक की ज़िद और इन से आ'माल को जो **ज़रर**[1] पहुंचता है सब बयान किया है, चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : निफ़ाक़ की ज़िद इख़्लासे अ़मल है और रिया की ज़िद त़लबे सवाब में इख़्लास पैदा करना है और लोगों से मेल जोल की ज़िद अ़लाह़िदगी और **तजरीद व तफ़रीद**[2] है और एह़सान जतलाने की ज़िद अपने अ़मल को ख़ुदा तआ़ला के सिपुर्द करना है और अज़िय्यत देने की ज़िद अपने अ़मल की ह़िफ़ाज़त है। नदामत की ज़िद नफ़्स को मज़्बूत़ और क़ाइम करना है, और उ़ज्ब की ज़िद **अल्लाह** तआ़ला के एह़सान का इज़्हार है। ह़सरत की ज़िद नेकी और ख़ैर को ग़नीमत जानना है। सुस्ती की ज़िद तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी की ता'ज़ीम करना है। ख़ौफ़े मलामत की ज़िद **अल्लाह** तआ़ला की ख़शिय्यत और उस का डर है।

निफ़ाक़ से अ़मल ज़ाएअ़ और बरबाद होता है। रिया अ़मल को मर्दूद बनाता है। एह़सान जतलाना और अज़िय्यत देना सदक़े के सवाब को बरबाद करते हैं।

और बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) के नज़दीक **मन व अज़ा**[3] से अस्ल अ़मल का सवाब ज़ाएअ़ नहीं होता। अलबत्ता दुगना तिगना सवाब जो मिलना था वोह ज़ाएअ़ हो जाता है। लेकिन नेक अ़मल पर नदामत भी बिल इत्तिफ़ाक़ अ़मल को बेकार करती है। उ़ज्ब से आ'माल का ज़ाइद सवाब ज़ाएअ़ होता है और

1....नुक़्सान। 2...तन्हाई। 3...एह़सान जतलाने और अज़िय्यत देने।

ह़सरत और सुस्ती और ख़ौफ़े मलामत से अ़मल का सवाब कम होता है और अ़मल की क़द्रो क़ीमत नाक़िस हो जाती है।

मैं कहता हूं आ'माल का मक़्बूल होना या मर्दूद होना **अस्ह़ाबे तह़सील**[1] के नज़्दीक मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अ़ज़्मतों और नुक़्सानात की त़रफ़ रुजूअ़ करता है और आ'माल के ह़ब्त़ व ज़ाएअ़ होने की भी मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। बा'ज़ अवक़ात तो बिल फ़े'ल आ'माल का नफ़्अ़ बरबाद होता है और बा'ज़ अवक़ात आ'माल में रिया वग़ैरा की ख़राबी अ़मल के बेकार हो जाने का सबब बन जाती है। बा'ज़ अवक़ात आ'माल पर सवाब नहीं मिलता और बा'ज़ दफ़्आ़ आ'माल का ज़ाइद सवाब नहीं मिलता। सवाब तो अ़मल का अस्ल नफ़्अ़ है जो अ़क़्लन इन्सान को मिलना चाहिये और अ़मल की ह़ालत सवाब की **मुतक़ाज़ी**[2] और इस का क़रीना होती है और सवाब का दुगना तिगना हो जाना अस्ल सवाब पर इज़ाफ़ा और ज़ियादती जो **अल्लाह** तआ़ला इन्सान को अ़त़ा करता है और आ'माल की क़द्रो क़ीमत में इज़ाफ़ा और ख़ारिजी क़िस्म के ह़ालात व क़राइन से अ़मल में पैदा होता है। मसलन नेक लोगों से ह़ुस्ने सुलूक करना भी बड़े सवाब की चीज़ है। मगर वालिदैन से ह़ुस्ने सुलूक से पेश आने में इस से भी ज़ियादा सवाब है। फिर एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام से ह़ुस्ने सुलूक से पेश आना बहुत ही ज़ियादा सवाब का बाइ़स है। तो बा'ज़ अवक़ात एक अ़मल की क़द्रो क़ीमत तो ज़ियादा होती है। मगर इस का सवाब दुगना तिगना नहीं मिलता येह गुफ़्त्गू ख़ुलासा है उस का जो इस बाब में मेरे ज़ेह्न में आई है। इस को अच्छी त़रह़ समझो। وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيق

1 .....अहले इ़ल्म ह़ज़रात। 2 .....तक़ाज़ा करने वाली।

फ़स्ल

उ़ज्ब और रिया से बचने के उसूल

तुम पर उ़ज्ब व रिया जैसी ख़ौफ़नाक शै का उ़बूर और क़त्अ़ करना भी ज़रूरी है जो कई त़रह़ की हलाकतों और रहज़नी की वारदात को अपने अन्दर लिये हुवे है, लिहाज़ा इस में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है, त़ाआ़त और नेकियों का सरमाया रखने वाले के लिये इन घाटियों से गुज़रना पड़ता है और इस रास्ते की तमाम मशक़्क़तें बरदाश्त करना पड़ती हैं और इन घाटियों को उ़बूर करने से ही आ़बिद को दर ह़क़ीक़त इ़बादत का मुअ़ज़्ज़ज़ और उ़म्दा सरमाया हाथ आता है और इस सरमाये का ज़ाएअ़ होने का ज़ियादा तर ख़त़रा इसी घाटी में पेश आता है क्यूंकि इस घाटी में रहज़न शैत़ान के ऐसे ऐसे मक़ामात और आ'माल की तबाही व बरबादी के ऐसे ऐसे **मवाज़ेअ़**[1] मौजूद हैं जिन में इस सरमाये के छीन जाने के ज़बरदस्त ख़त़रात पाए जाते हैं और ऐसी ऐसी आफ़ात नुमूदार होती हैं जो बन्दे की इ़बादत व त़ाअ़त को बेकार कर के रख देती हैं। सब से **ज़ियादा कसीरुल वुक़ूअ़**[2] सब से अ़ज़ीम येह दो रहज़न हैं : एक रिया, दूसरा उ़ज्ब, लिहाज़ा हम यहां इन दोनों से बचाव के चन्द ज़रूरी और जामेअ़ उसूल ज़िक्र करते हैं। इन को ज़ेह्न नशीन करने से اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی तू इन के नुक़्सानात से बचा रहेगा।

पहला उसूल :

रिया के बारे में सब से पहले मैं ख़ुदा तआ़ला का येह इरशाद नक़्ल करता हूं :

1.....मक़ामात। 2.....बहुत ज़ियादा पेश आने वाले।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ۬ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾ (1)

अल्लाह तआला वोह क़ादिर ज़ात है जिस ने सात आस्मान पैदा किये और इन्ही की मिक़्दार में ज़मीनें पैदा कीं ज़मीनो आस्मान के दरमियान हुक्म नाज़िल होता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है और उस के इल्म ने हर शै का इहाता किया हुवा है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने गोया यूं फ़रमाया है : मैं ने आस्मान पैदा किये और ज़मीनें पैदा कीं और इन दोनों के दरमियान अपनी **सन्नाअ**(2) के अजीबो ग़रीब नुमूने भी पैदा किये येह सब कुछ पैदा कर के तेरी नज़रे इब्रत के हवाले कर दिया ताकि तू खुद मुशाहदे से जान ले कि मैं क़ादिर भी हूं, आलिम भी हूं। और ऐ इन्सान तेरे नक़्स और ज़ो'फ़ का येह हाल है कि दो रक्अत नमाज़ पढ़ता है मगर इस में भी तुझ से कई तरह की कोताही वाक़ेअ हो जाती है और कई क़िस्म के उ़यूब व नक़ाइस रह जाते हैं। मैं चूंकि क़ादिर होने के साथ साथ आलिम भी हूं इस लिये तेरी इन दो रक्अतों को अच्छी तरह देख रहा हूं मगर तू अपनी इस हक़ीर सी इबादत के बारे में मेरी नज़र, मेरे इल्म, मेरी मद्ह व सना और मेरी क़द्रदानी पर किफ़ायत नहीं करता बल्कि तू इस का तालिब होता है कि लोगों को तेरी इस इबादत का हाल मा'लूम हो ताकि लोग तेरी मद्हो सना करें, क्या

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह है जिस ने सात आसमान बनाए और इन्ही के बराबर ज़मीनें, हुक्म इन के दरमियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है। (پ ۲۸، الطلاق:۱۲)

2.....कुदरत

तेरा येह रविय्या वफ़ादारी का रविय्या है ? क्या येह दानिशमन्दी की बात है ? ऐसा रविय्या कोई अ़क्लमन्द अपने लिये इख़्तियार नहीं करता। तुझ पर अफ़्सोस ! तू बड़ी बे समझी का मुज़ाहरा करता है।

दूसरा उसूल :

जिस शख़्स के पास एक **नफ़ीस**[1] शै हो जिसे बेच कर वोह लाखों दीनार वुसूल कर सकता हो फिर वोह एक पैसे के इवज़ फ़रोख़्त कर दे तो क्या येह अ़ज़ीम ख़सारा नहीं कहलाएगा ? और येह इन्तिहाई दरजे का नुक़्सान नहीं होगा ? और उस का येह फ़े'ल उस की पस्त हिम्मती और **कुसूरे इल्म**[2] की दलील नहीं होगी ? और येह उस की कमज़ोरिये राए और बे अ़क्ली का सुबूत नहीं ? ज़रूर उस की कम अ़क्ली का सुबूत है। **बिऐ़निही**[3] येही ह़ालत उस बन्दे की है जो अपने अ़मल से ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा उस की क़द्रदानी, उस की मदह़ व सताइश और उस के सवाब को छोड़ कर मख़्लूक़ात की **मदह़ व सताइश**[4] और कमीनी दुन्या का त़लबगार हो। **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व सवाब के मुक़ाबले में मख़्लूक़ की मदह़ो सना और दुन्या की त़लबगारी लाखों दीनार के मुक़ाबले में एक पैसे से भी कम हैसिय्यत रखती है बल्कि तमाम **दुन्या व माफ़ीहा**[5] बल्कि एक दुन्या नहीं इस त़रह़ की बीसियों दुन्या भी ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा के सामने हेच और बे हैसिय्यत हैं। क्या येह **ख़ुसराने मुबीन**[6] नहीं कि अपने नफ़्स को **आ'माले सालिह़ा**[7] के इवज़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मिलने वाली **इनायाते अ़ज़ीमा शरीफ़ा**[8] को छोड़ कर इन ह़क़ीर और कमीनी चीज़ों को चाहे और क़बूल करे। फिर अगर कमीनी दुन्या की चाहत और कम

1.....बेहतरीन। 2.....कम इल्मी। 3.....बिल्कुल इसी त़रह़। 4.....ता'रीफ़ व तौसीफ़। 5.....दुन्या और जो कुछ इस में है। 6.....वाज़ेह़ नुक़्सान। 7.....अच्छे आ'माल। 8.....बहुत बड़े बड़े इन्आ़मात।

हिम्मती का मुज़ाहरा करने से बाज़ नहीं आ सकते तो फिर भी आख़िरत ही को चाहो दुन्या उस के साथ ख़ुद ब ख़ुद मिल जाएगी बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा और ख़ुश्नूदी के ही त़लबगार बनो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें दारैन की ने'मतों से माला माल कर देगा क्यूंकि वोह दुन्या व आख़िरत सब का मालिक है, इसी चीज़ को **अल्लाह** तआ़ला इस आयत में बयान फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ (1)

जो शख़्स दुन्या का त़ालिब हो तो उस को दुन्या भी ख़ुदा ही से त़लब करनी चाहिये क्यूंकि दुन्या व आख़िरत दोनों की ने'मतें ***अल्लाह*** *तआ़ला ही के पास हैं।*

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰهَ لَيُعْطِى الدُّنْيَا بِعَمَلِ الْاٰخِرَةِ وَلَا يُعْطِى الْاٰخِرَةَ بِعَمَلِ الدُّنْيَا(2)

अल्लाह तआ़ला नेक आ'माल के तुफ़ैल दुन्या भी अ़त़ा कर देता है, मगर आ'माले दुन्यवी के साथ आख़िरत अ़त़ा नहीं करता।

तो जब तुम निय्यत ख़ालिस कर लो और आख़िरत के लिये दुन्यवी **अफ़्कार**(3) से **हिम्मत ख़ाली कर लो**(4) तो तुम्हें दुन्या व आख़िरत मिल जाएंगी। लेकिन अगर तुम ने सिर्फ़ दुन्या को ही चाहा तो आख़िरत तुम्हारे हाथ से निकल जाएगी और बसा अवक़ात उतनी दुन्या भी तुम को न मिलेगी जितनी तुम चाहते थे और **हस्बे मन्शा**(5) दुन्या तुम को मिल भी गई तो फिर भी वोह चन्द दिन की बहार है, तो त़ालिबे दुन्या बन कर तुम ने दुन्या व आख़िरत दोनों का ख़सारा मोल ले लिया, लिहाज़ा दानिशमन्दी का सुबूत दो।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो दुन्या का इन्आ़म चाहे तो **अल्लाह** ही के पास दुन्या व आख़िरत दोनों का इन्आ़म है। (پ٥، النساء،١٣٤)

2......الزهد لابن مبارك،باب هوان الدنيا على الله،ص١٩٣،حديث:٥٤٩،بتغير قليل۔

3...दुन्या के ख़यालात। 4...तवज्जोह ख़त्म कर दो। 5...ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़।

तीसरा उसूल :

वोह मख़्लूक़ जिस के लिये तुम काम करोगे और जिस की रिज़ा के त़ालिब बनोगे अगर उसे मा'लूम हो जाए कि तुम उस की रिज़ा के लिये येह काम कर रहे हो तो वोह तुम्हें बुरा जानेगी और तुम पर नाराज़ होगी और तुम्हें ज़लील और हलका जानेगी। तो एक अ़क़्लमन्द आदमी उस के लिये कोई काम करने को तय्यार नहीं हो सकता जिस को अगर पता चल जाए कि वोह मेरी रिज़ा के लिये काम कर रहा है तो उस पर नाराज़ हो और उस को ज़लील जाने लिहाज़ा ऐ मिस्कीन बन्दे ! उस की रिज़ा व ख़ुश्नूदी के लिये काम कर और उस को अपना मक़्सूद और अपनी कोशिशों का मर्कज़ बना जो तुझ से महब्बत करे जो तुझे ने'मत अ़त़ा करे अपनी रह़मत तुझ पर निछावर करे, तेरी इ़ज़्ज़त करे यहां तक कि तुझे अज्रो सवाब दे कर ख़ुश और राज़ी करे और तुझे सब से बे नियाज़ कर दे। अगर तू अ़क़्लमन्द है तो इस नुक्ते को ज़ेहन में बिठा।

चौथा उसूल :

जिस शख़्स के पास कोशिश व सई का ऐसा सरमाया मौजूद हो जिस के ज़रीए़ वोह दुन्या में सब से बड़े बादशाह की रिज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल कर सकता हो, लेकिन वोह उस से बादशाहों की ख़ुशनूदी तो ह़ासिल न करे बल्कि उस से एक **जारूब कश**[1] की रिज़ा व ख़ुशनूदी का ख़्वाहां बने तो उस की येह ह़रकत इस बात की दलील है कि येह शख़्स बे वुक़ूफ़ और अह़मक़ है **साइबुर्राए**[2] नहीं, बद बख़्त और बद क़िस्मत है। सब लोग इसे कहेंगे : जब अ़ज़ीम बादशाह की ख़ुशनूदी ह़ासिल करना तेरे लिये मुमकिन था तो तू ने उसे तर्क कर के एक जारूब कश की ख़ुश्नूदी ह़ासिल करने में क्या बेहतरी मह़सूस की ? ख़ास कर जब कि बादशाह की नाराज़ी

1.....झाड़ू लगाने वाले। 2.....अ़क़्लमन्द।

की वजह से वोह जारूब कश भी तुझ से नाराज़ होगा। तो इस त़रह़ दोनों की खुशनूदी से तू हाथ धो बैठा। बिऐ़निही येही ह़ाल रियाकार इन्सान का है। जब कि इन्सान **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की जो इन्सान की तमाम मुहिम्मात व मुश्किलात के लिये काफ़ी है, रिज़ा और खुशनूदी ह़ासिल कर सकता है तो ह़क़ीर, ज़ईफ़, बे वुक़्अ़त मख़्लूक़ की रिज़ाजूई की क्या ज़रूरत व ह़ाजत है ? फिर अगर तुम्हारी हिम्मत कमज़ोर हो और तुम बसीरत से ख़ाली हो कि **ला मुह़ाला**[1] रिज़ाए मख़्लूक़ के ही त़ालिब हो तो ऐसी सूरत में भी तुम्हें अपना इरादा ग़ैर की रिज़ा से ख़ाली करना चाहिये और अपनी सई व कोशिश ख़ालिस खुदा तआ़ला के लिये होनी चाहिये क्यूंकि लोगों के कुलूब और इन की पेशानियां उसी के क़ब्ज़े में हैं, वोह दिलों को तेरी त़रफ़ झुका देगा और **नुफ़ूसे इन्सानी**[2] को तेरा **गरवीदा**[3] बना देगा और लोगों के सीने तेरी मह़ब्बत व उल्फ़त से लबरैज़ कर देगा। तो इस त़रह़ तुम्हें वोह कुछ मिलेगा जो तुम अपनी कोशिश और क़स्द व इरादे से ह़ासिल नहीं कर सकते थे लेकिन अगर तुम अपनी कोशिशों को खुदा तआ़ला के लिये ख़ालिस न करो बल्कि रिज़ाए मख़्लूक़ात के ही त़ालिब बनो तो ऐसी सूरत में **अल्लाह** तआ़ला लोगों के दिल तुम से फेर देगा और लोगों के दिलों में तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ नफ़रत डाल देगा और मख़्लूक़ को तुम पर नाराज़ कर देगा। तो तुम्हारे इस रविय्ये से खुदा तआ़ला भी नाराज़ हो गया और मख़्लूक़ भी नाराज़ हो गई तो ऐसे शख़्स के ख़सारे और मह़रूमी का क्या ठिकाना !

1.....ज़रूर। 2.....लोगों। 3.....मह़ब्बत करने वाला।

हि़कायत

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि एक शख़्स कहा करता था : खुदा की क़सम ! मैं ऐसी इ़बादत करूंगा जिस से लोगों में मेरा चर्चा हो, येह शख़्स नमाज़ के लिये सब से पहले मस्जिद में दाखि़ल होता और सब से आखि़र मस्जिद से निकलता। अवक़ाते नमाज़ में हर वक़्त नमाज़ पढ़ता ही नज़र आता, हमेशा रोज़ादार रहता, मजालिसे ज़िक्र में पाबन्दी से शरीक होता, सात माह का अ़र्सा वोह इसी त़रह़ करता रहा लेकिन इस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों का रविय्या येह था कि जब भी कहीं से गुज़रता तो सब लोग येही कहते : **अल्लाह** तआ़ला इस रियाकार को ले और संभाले, आखि़र उस ने अपने आप पर मलामत की और कहा कि मेरी इ़बादत और बन्दगी तो ज़ाएअ़ गई और इस का कुछ नतीजा नहीं निकला। आयिन्दा के लिये मैं बन्दगी व इ़बादत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये करूंगा। उस ने इ़बादत में पहले की निस्बत मज़ीद इज़ाफ़ा न किया। बल्कि उतनी ही मिक्दार में करता रहा, जितनी मिक्दार में पहले करता था। उस ने सिर्फ़ निय्यत में तब्दीली की और इस में इख़्लास पैदा किया। इस के बा'द जहां से भी वोह गुज़रता सब येही कहते **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां शख़्स पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए, येह हि़कायत बयान करने के बा'द ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह आयत पढ़ी।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾ (1)

*जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये **अल्लाह** तआ़ला अ़न क़रीब उन के लिये दोस्ती और **मुवद्दत**[2] पैदा कर देगा।*[3]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रह़्मान मह़ब्बत कर देगा। (پ۱٦،مریم:۹٦)

2 .....मह़ब्बत।

3 ......تفسیر ابن کثیر، مریم، تحت الآیة: ۹٦، ۵/ ۲۳۸۔

या'नी **अल्लाह** तआ़ला ख़ुद भी उन से दोस्ती करेगा और लोगों के दिलों में भी उन की दोस्ती और मुवद्दत डाल देगा। किसी ने बहुत ठीक कहा है :

(١) يَا مُبْتَغِيَ الْحَمْدَ وَ الثَّوَابَا   فِيْ عَمَلٍ تَبْتَغِيْ مُحَالَا

(٢) قَدْ خَيَّبَ اللّٰهُ ذَا رِيَاءِ   وَ اَبْطَلَ السَّعْيَ وَالْكَلَالَا

(٣) مَنْ كَانَ يَرْجُوْ لِقَاءَ رَبِّ   اَخْلَصَ مِنْ خَوْفِهِ الْفَعَالَا

(٤) اَلْخُلْدُ وَ النَّارُ فِيْ يَدَيْهِ   فَرَائِهُ يُعْطِكَ النَّوَالَا

(٥) وَالنَّاسُ لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْئًا   فَكَيْفَ رَاَيْتَهُمْ ضَلَالَا

तर्जमए अश्आ़र : (1) ऐ लोगों से ह़म्दो सवाब के त़ालिब तू अपने अ़मल से एक **अम्रे मुह़ाल**[(1)] का क़स्द कर रहा है।

(2) **अल्लाह** तआ़ला रियाकार को नाकाम व नामुराद करता है, उस की **सई**[(2)] और मशक़्क़त को बेकार कर देता है।

(3) जो मुलाक़ाते रब तआ़ला का उम्मीदवार हो वोह उस के डर से अपने अफ़्आ़ल में इख़्लास पैदा करता है।

(4) जन्नत और दोज़ख़ उस के हाथ में हैं इस लिये अपने आ'माल उसी को दिखा वोह तुझे अपनी अ़त़ाओं से मालामाल कर देगा।

(5) लोगों के क़ब्ज़ए इख़्तियार में कुछ नहीं, तू बे समझी के बाइ़स उन के लिये रियाकारी क्यूं करता है ?

उ़ज्ब का बयान

हम इस से बचाव के लिये भी चन्द ज़रूरी और जामेअ़ उसूल बयान करते हैं :

---

1 .....नामुमकिन काम। 2 .....कोशिश।

पहला उसूल येह है कि बिला शुबा बन्दे का फ़े'ल उसी वक़्त मुफ़ीद और क़ाबिले ए'तिबार होता है जब कि उसे मह्ज़ हुसूले रिज़ाए इलाही के लिये किया जाए वरना इस की मिसाल उस मज़्दूर की त़रह़ होगी जो कि सारा दिन दो दिरहमों के लिये मारा मारा फिरता है, और उस चोकीदार की त़रह़ होगी जो सिर्फ़ दो पैसों के लिये तमाम रात जागते अपनी आंखों से निकाल देता है और ऐसे जैसा कि कारोबारी लोग मह्ज़ चन्द टिकों के लिये शबो रोज़ अपने **अवक़ाते अ़ज़ीज़ा**(1) को ज़ाएअ़ करते रहते हैं। तो फिर जब बन्दा मसलन मह्ज़ **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिये एक रोज़ा रखता है तो यूं समझना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुश्नूदी की वजह से इस रोज़े की जज़ा की मिसाल नहीं जैसा कि रब तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया है :

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (2)

मुश्किलात पर सब्र करने वालों को बे शुमार अज्र दिया जाएगा।

इसी ह़दीस शरीफ़ में वारिद है :

اَعْدَدْتُ لِعِبَادِیَ الصَّائِمِیْنَ مَا لَا عَیْنٌ رَاَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَ لَا خَطَرَ عَلٰی قَلْبِ بَشَرٍ (3)

मैं ने अपने रोज़ादार बन्दों के लिये ऐसा अज्र मुतअ़य्यन कर रखा है जिस को किसी आंख ने देखा तक नहीं और न ही किसी कान ने उसे सुना और न ही किसी के दिल पर उस का खटका तक गुज़रा।

बहर सूरत बन्दा जब **अल्लाह** तआ़ला के लिये एक रोज़ रोज़ा रखता है तो इस रोज़े की क़ीमत और अज्र **बे अन्दाज़**(4) हो जाता है इसी त़रह़ अगर बन्दा किसी रात मह्ज़ हुसूले रिज़ाए इलाही

---

1 .....क़ीमती वक़्त। 2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती। (پ۲۳،الزمر:۱۰)

3 ......الکامل فی ضعفاء الرجال ، یوسف بن السفر ، ۸ / ۵۰۰۔

4 .....बहुत ज़ियादा।

की ख़ाति़र क़ियाम करता है तो इस ए'तिबार से येह क़ियाम बेशुमार ए'ज़ाज़ और एहतिमाम का **मुस्तह़िक़**[1] हो जाता है जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ۝۱۷ (2)

किसी नफ़्स को इल्म नहीं कि उस के आ'माल का बदला उस की आंखों के लिये किस क़दर ठन्डक का मूजिब होगा।

बहर पहुंच[3] येह मा'मूली सी इ़बादत जिस की क़ीमत दो दिरहम या रूपया थी, जब कि **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये की जाए तो इस की **बे बहा**[4] क़ीमत हो जाती है बल्कि यूं समझिये कि अगर किसी एक घड़ी में मह़ज़ रिज़ाए इलाही के दो रकअ़तें पढ़ी जाएं बल्कि एक सांस जिस में "لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ" **अल्लाह** तआ़ला को ख़ुश करने के लिये पढ़ा जाए जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है :

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ یُرْزَقُوْنَ فِیْهَا بِغَیْرِ حِسَابٍ۝۴۰ (5)

जो शख़्स नेक अ़मल करे मर्द हो या औ़रत जब कि वोह ईमानदार हो तो वोह जन्नत में दाख़िल होंगे जहां उन्हें बिला ह़िसाबो किताब खाने को रिज़्क़ दिया जाएगा।

1...ह़क़दार। 2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का। (پ۲۱، السجدة:۱۷)

3...बहर ह़ाल। 4...बहुत ज़ियादा। 5...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औ़रत और हो मुसलमान तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पाएंगे। (پ۲٤، المؤمن:٤٠)

ह़िसाब

येह एक सांस जिस की दुन्यादारों के हां कोई इ़ज़्ज़त व क़ीमत नहीं जब कि इस को रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये इस्ति'माल किया जाए तो तू कितने ग़ैर मा'मूली ए'ज़ाज़ का मुस्तह़िक़ हो जाता है तो बन्दे को देखना चाहिये कि वोह शबो रोज़ अपने इन अवक़ाते अ़ज़ीज़ा को फ़ुज़ूल और बेहूदा कारोबार में ज़ाएअ़ करता हुवा नज़र आता है पस अ़क़्लमन्द को येह सोचना चाहिये कि वोह फ़े'ल जो कि बिला रिज़ाए इलाही कुछ क़ीमत नहीं रखता था वोही ह़ुसूले रिज़ाए इलाही के नज़रिये से किस क़दर शराफ़त और एह़तिराम का मुस्तह़िक़ हो जाता है। सिवा इस का हर फ़े'ल ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये होना लाज़िमी है ताकि दुन्या व आख़िरत में हर त़रह़ से मुफ़ीद साबित हो और इस की यूं एक मिसाल दी जा सकती है कि मसलन अंगूर का खोशा या **रैह़ान**[1] का **शिगूफ़ा**[2] जिस की बाज़ार में एक **दमड़ी**[3] या पैसा क़ीमत हो अगर कोई इस को बादशाह की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या पेश करे और वोह बादशाह इस ह़क़ीर से तोह़फ़े को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शे और ख़ुशी से एक हज़ार अशरफ़ी दे दे तो वोह ह़क़ीर शै ह़ुसूले रिज़ा की वजह से एक हज़ार दीनार की हो गई और अगर वोह इस को क़बूल न करे तो इस की क़ीमत वोही पैसा या दमड़ी पड़ेगी, इसी त़रह़ बन्दे के **जुम्ला आ'माल**[4] की कैफ़िय्यत है कि इन को देख कर इतराना और दूसरों के आ'माल की तह़क़ीर करना बन्दे के लिये एक **मोहलिक शै**[5] है बल्कि येह इल्तिजा करनी ज़रूरी है कि ऐ अल्लाह येह सब तेरा ही फ़ज़्लो करम है तेरी तौफ़ीक़ से सब कुछ होता है कि बन्दे के जुम्ला अक़्वाल व अफ़आ़ल दुन्या व आख़िरत में **मूजिबे अज्रो सवाब**[6] हों।

1...एक ख़ुश्बूदार पौदे। 2...कली। 3...पैसे का चौथा ह़िस्सा। 4...तमाम आ'माल। 5...हलाक कर देने वाली चीज़। 6...अज्रो सवाब का ज़रीआ़।

और दूसरा अस्ल येह है कि तुम्हें मा'लूम है कि दुन्या के बादशाह जब किसी आदमी को कोई खाना या मशरूब या लिबास या चन्द एक फ़ानी दिरहमो दीनार अ़ता करते हैं तो वोह आदमी दिन रात उस बादशाह की ख़िदमत बजा लाता है ह़ालांकि इस ख़िदमत में ज़िल्लत भी होती है वोह उस की ख़िदमत में इस त़रह़ खड़ा रहता है कि उस के पाऊ बे ह़िस हो जाते हैं और जब बादशाह अपनी सुवारी पर सुवार होता है तो वोह उस के साथ साथ दौड़ता है कभी सारी सारी रात उस के दरवाज़े पर पहरा देता है और कभी दुश्मन से मुक़ाबले की नौबत आती है तो अपनी वोह जान उस पर क़ुरबान कर देता है जो उसे फिर कभी न मिल सकेगी और येह तमाम ख़िदमत और तक्लीफ़ और ख़त़रात और नुक़्सान सिर्फ़ इस थोड़े से ह़क़ीर मनाफ़ेअ़ के लिये बरदाश्त कर जाता है ह़ालांकि ह़क़ीक़त में येह तमाम एह़सानात **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से होते हैं और बादशाह सिर्फ़ एक ज़ाहिरी सबब होता है। फिर तेरा वोह रब जिस ने तुझे पैदा किया जब कि तेरी कोई ह़क़ीक़त न थी फिर तेरी तर्बिय्यत की और बहुत अच्छी की फिर तुझ पर दीनी दुन्यावी और जानी ज़ाहिरी और बाति़नी मनाफ़ेअ़ की तुझ पर बारिश बरसा दी कि जिन को समझने से तेरी अ़क़्ल फ़ह्म और फ़िरासत क़ासिर है ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है :

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَاتُحْصُوْهَا (الآية)(1)

*अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात शुमार भी करने लगो तो न कर सको।*

फिर देख कि तू दो रकअ़त नमाज़ पढ़ता है जिन में कई एक क़ुसूर और कोताहियां होती हैं और फिर इस के बा वुजूद उस ने तुझ से आयिन्दा के लिये बेहतरीन जज़ा और **रंगारंग नवाज़िशात**(2)

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर **अल्लाह** की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे। (پ۱٤،النحل:۱۸) (2).....त़रह़ त़रह़ की मेहरबानियों।

का वा'दा फ़रमा रखा है और फिर तू इन रकआ़त को बहुत कुछ समझता है और इन पर मग़रूर होता है अगर तू ग़ौर करेगा तो तुझे मा'लूम होगा कि येह अ़क्लमन्दी का काम नहीं है। इसे याद रख।

और तीसरा अस्ल येह है कि ऐसा बादशाह जिस की ख़िदमत दुन्या के बादशाह और उमरा करते हों जिस की ख़िदमत में बड़े बड़े और सरदार लोग **दस्त बस्ता**[1] खड़े हों जिस की ख़िदमत पर **दानायाने ज़माना**[2] और **उ़क़लाए अ़स्र**[3] फ़ख़्र महसूस करते हों जिस की ता'रीफ़ उ़क़ला और उ़लमा करते हों जिस के आगे आगे **रुअसा**[4] और **अकाबिर**[5] दौड़ते हों वोह बादशाह अगर किसी बाज़ारी या देहाती आदमी को मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से अपने दरवाज़े पर ह़ाज़िर होने की इजाज़त बख़्श दे जिस के दरवाज़े पर बादशाहों, बड़े लोगों, सरदारों और उ़लमा व फ़ुज़ला की भीड़ लगी हो और फिर वोह बादशाह इस को एक मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम पर जगह दे और इस की ख़िदमत को **ब नज़रे पसन्द**[6] देखे ह़ालांकि इस में कई एक ऐ़ब भी हों तो क्या येह नहीं कहा जाएगा कि इस ह़क़ीर इन्सान पर बादशाह ने बहुत बड़ा करम फ़रमाया। फिर अगर येह ह़क़ीर अपनी नाकारा ख़िदमत की वजह से बादशाह पर अपना एह़सान जताने लगे और इस को बहुत कुछ समझे और इस पर मग़रूर हो तो क्या येह नहीं कहा जाएगा कि वोह ह़द दर्जे का बे वुक़ूफ़ और पागल आदमी है जिसे कोई किसी क़िस्म का होश नहीं है, जब येह बात साबित हो गई तो अब समझना चाहिये कि हमारा मा'बूदे बरह़क़ एक ऐसा बादशाह है जिस की तस्बीह़ात आस्मान ज़मीन और इन की **तमाम मौजूदात**[7] कर रही है।

1...हाथ बांधे आ़जिज़ी के साथ। 2...ज़माने के दानिशमन्द। 3...ज़माने के अ़क्लमन्द। 4...अमीर। 5...बड़े बड़े लोग। 6...पसन्दीदगी की नज़र से। 7...तमाम मख़्लूक़ात।

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ (الآية)[1] *कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उस की ह़म्द और तस्बीह़ न बयान करती हो ।*

और एक ऐसा मा'बूद है जिस के सामने तमाम आस्मान और ज़मीनें सजदा रैज़ हैं ख़्वाह ख़ुशी से या नाख़ुशी से और इस के अक्बा आलिया के ख़ुद्दाम में से हैं । जिब्रीले अमीन, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और अ़र्श उठाने वाले **फ़िरिश्ते करूबी**[2] और **रूहानी**[3] और तमाम मलाइकए मुक़र्रबीन कि जिन की ता'दाद को **अल्लाह** रब्बुल आलमीन के सिवा कोई भी नहीं जानता, बा वुजूद येह कि इन के मक़ामात बड़े बुलन्द हैं इन के नुफ़ूस पाक हैं इन की इ़बादत भी बहुत बड़ी और ज़ियादा है, और फिर इसी के बाबे आ़ली के ख़ादिम हैं नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام), इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام), मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم),जो तमाम काइनात का ख़ुलासा हैं और इन के इ़लावा दूसरे अम्बिया और रसूल भी ख़ुदा तआ़ला की इन पर रह़मतें और सलाम नाज़िल हों ह़ालांकि इन के मरातिब बड़े बुलन्द इन के मनाक़िब अ़ज़ीज़ और मक़ामात बुज़ुर्ग और आ़दात जलील हैं । फिर उ़लमा, अइम्मा, नेक लोग और ज़ाहिद भी अपने बुज़ुर्ग मरातिब और पाक अजसाम और इ़बादाते कसीरा ख़ालिसा के बा वुजूद भी उसी की चौखट के ग़ुलाम हैं।

और दुन्या के बादशाह और जाबिर लोग उस के दरवाज़े के एक अदना ख़ादिम हैं निहायत ज़िल्लत से उस के सामने सजदा रैज़ होते हैं, निहायत ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ से उस के सामने अपने चेहरे ख़ाक पर रखते हैं रो रो कर आ़जिज़ी के साथ अपनी ह़ाजतें उस के

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले । (پ۱۵، بنی اسرائیل:٤٤)

2 .....आ'ला दरजे के फ़िरिश्ते । 3 .....रह़मत के फ़िरिश्ते ।

सामने पेश करते हैं उस की खुदावन्दी और अपनी गुलामी का इक़रार सज्दए उ़बूदिय्यत से करते हैं फिर वोह कभी इन की त़रफ़ निगाह उठाता है अपने फ़ज़्लो करम से इन की ह़ाजतें पूरी करता है अपने करम से इन की **तक़्सीरात**[1] से दरगुज़र करता है और फिर उस ने अपनी उस अ़ज़्मत और जलाल और बादशाही और कमाल के तुझ को बा वुजूद तेरी ह़क़ारत तेरे उ़यूब और तेरी गन्दगी के अपने दरवाज़े पर ह़ाज़िर होने की इजाज़त बख़्श दी है ह़ालांकि तेरी ह़ैसिय्यत येह है कि अगर तू अपने शहर के सरदार से दाख़िले की इजाज़त मांगे तो तुझे इजाज़त न मिले अगर अपने मह़ल्ले के सरदार से गुफ़्तगू करना चाहे तो वोह तुझ से न बोले और अगर तू अपने शहर के ह़ाकिम के सामने सजदा रैज़ हो तो वोह तवज्जोह भी न करे।

और उस **अल्लाह** ने तुझे इजाज़त दे रखी है कि तू उस की इ़बादत करे उस की सना कहे उसे मुख़ात़ब कर सके बल्कि अपनी ह़ाजतें उस पर पेश करे। दिल खोल कर बातें करे अपनी ज़रूरियात उस से मांग ले और तेरी तमाम मुरादें पूरी करे। फिर वोह तेरी इन दो रक्अ़तों से खुश है ह़ालांकि इन में बहुत से उ़यूब हैं और फिर इन पर इतना सवाब अ़त़ा फ़रमाता है कि किसी इन्सान के दिल में इस का तसव्वुर भी नहीं आ सकता और फिर तू अपनी इन दो रकअ़तों पर मग़रूर है और इन को बहुत कुछ समझता है और बड़ा जानता है और इस मुआ़मले में **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात को नहीं समझता तू कितना बुरा गुलाम है और कितना जाहिल इन्सान है। **अल्लाह** तआ़ला ही से मदद की दरख़्वास्त है और इस जाहिल नफ़्स की शिकायात उसी की बारगाह में हैं और सिर्फ़ उसी पर भरोसा है। इस को याद रख।

---

1 .....ख़त़ाओं।

फ़स्ल

अब एक और त़रीके से देखो कि अगर कोई बहुत बड़ा बादशाह तह़ाइफ़ और हदाया नज़्र करने की इजाज़त बख़्शे और उस की बारगाह में उमरा, कुबरा, रुअसा, उ़क़ला और दौलतमन्द लोग क़ीमती हीरों, नफ़ीस ज़ख़ीरों **बे अन्दाज़**(1) मालो दौलत के तह़ाइफ़ पेश करने लगें फिर अगर कोई सब्ज़ी फ़रोश कोई मा'मूली सब्ज़ी या कोई देहाती अंगूर का गुच्छा पेश करे जिस की क़ीमत एक दमड़ी या **एक रत्ती**(2) भर हो और इन बड़े बड़े लोगों और दौलत मन्दों के गुरोह में घुस जाए जो बेहतरीन तह़ाइफ़ ले कर खड़े हों और फिर वोह बादशाह उस फ़क़ीर से उस का **हदिय्या**(3) क़बूल फ़रमा ले और उसे पसन्दीदगी और क़बूलिय्यत की निगाह से देखे और उस के लिये **ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा**(4) और इ़ज़्ज़त व एह़तिराम का हुक्म सादिर फ़रमाए तो क्या येह उस का इन्तिहाई फ़ज़्लो करम न होगा। फिर अगर येह फ़क़ीर बादशाह पर एह़सान जताने लगे और अपने हदिय्ये को बहुत कुछ समझे और बादशाह के एह़सान का तज़किरा करना भूल जाए तो क्या उसे दीवाना, बदह़वास या बे वुक़ूफ़ और बद तमीज़ और इन्तिहाई नादान न समझा जाएगा ?

अब तुझ पर लाज़िम है कि जब तू ख़ुदा तआ़ला के सामने खड़ा हो और दो रकअ़त अदा करे तो फ़ारिग़ होने पर ज़रा सोच कि इस रात में अल्लाह तआ़ला की बारगाह में कितने **ख़ादिम**(5) खड़े हुवे होंगे ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों में, जंगलों, समन्दरों, पहाड़ों और शहरों में कई एक इस्तिक़ामत वाले, सिद्दीक़, ख़ाइफ़, मुश्ताक़, मुज्तहिदीन और आ़जिज़ी करने वालों के गुरौह और ग़ौर

1...बहुत ज़ियादा। 2...वज़्न की मिक़्दार जो आठ चावल के दानों के बराबर होता है। 3...तोह़फ़ा। 4...इ़ज़्ज़त वाला लिबास। 5...इ़बादत गुज़ार।

कर कि इस घड़ी में ख़ुदावन्दे तआ़ला की बारगाह में कितनी ही ख़ालिस इबादत और **खोट**[1] से **मुबर्रा**[2] **ख़िदमत**[3] पेश हो रही होगी ? और वोह भी डरने वाले लोगों, पाक ज़बानों, रोने वाली आंखों, आबाद दिलों, पाक सीनों और परहेज़गार लोगों की त़रफ़ से और तेरी नमाज़ अगर्चे तू ने इस को अच्छी त़रह़ अदा करने में इस के इख़्लास और मज़बूती में अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ कोशिश की होगी लेकिन फिर भी उस बादशाहे अ़ज़ीम की बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहां है ! और इन इ़बादात के मुक़ाबले में उस की क्या है़सिय्यत है जो वहां पेश हो रही हैं क्यूंकि तू ने इसे ग़ाफ़िल दिल से अदा किया जिस में त़रह़ त़रह़ के उ़यूब शामिल थे, बदन गुनाहों की आलूदगी से नापाक था और ज़बान फ़ुज़ूल और गुनाह की बातों से लिथड़ी हुई थी फिर ऐसी नमाज़ उस की बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहां थी और रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में हदिय्या करने की इस में कौन सी सलाहि़य्यत थी ।

हमारे शैख़ رَحِمَهُ الله ने फ़रमाया : ऐ अ़क़्लमन्द ! ग़ौर कर आस्मान की त़रफ़ नमाज़ भेजने में तू ने कभी वोह तवज्जोह की है जो किसी अमीर आदमी के सामने खाना पेश करते वक़्त तू करता है।

अबू बक्र वर्राक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ होता हूं तो उस औ़रत से ज़ियादा शर्मिन्दगी मुझ पर मुसल्लत़ हो जाती है जो ज़िना से फ़ारिग़ हुई हो ।

फिर अल्लाह तआ़ला سُبْحَانَهٗ ने मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से इन दो रकअ़तों की क़द्र अफ़्ज़ाई की और इन पर बहुत बड़े सवाब का वा'दा फ़रमाया। ह़ालांकि तू उस का ग़ुलाम है, उस का दिया हुवा खाता है और फिर येह अ़मल भी उसी की तौफ़ीक़ और

1.....मिलावट। 2.....पाक व साफ़। 3.....इ़बादत।

इमदाद से तू ने किया है फिर बा वुजूद इन तमाम चीज़ों के तू इन पर मग़रूर है और अपने ऊपर **अल्लाह** तआ़ला के एह़सान को भूल रहा है। ख़ुदा की क़सम ! येह तमाम अ़जाइबात में से अ़जीब चीज़ है और इस का सुदूर ऐसे जाहिल ही से हो सकता है जिस में कोई अ़क़्ल न हो और ऐसे ग़ाफ़िल से जिस का कोई ज़ेहन न हो और या फिर किसी मुर्दा दिल से जिस में कोई भलाई न हो। इस को याद रख, हम **अल्लाह** तआ़ला ही से उस के फ़ज़्लो करम का वासित़ा दे कर बेहतरीन किफ़ायत का सुवाल करते हैं।

फ़स्ल

फिर इन गुज़ारिशात के बा'द कहूंगा कि ऐ इन्सान ! इस घाटी में अपनी ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो वरना ख़सारा उठाएगा, येह घाटी बड़ी सख़्त दुश्वार गुज़ार, निहायत कड़वी और नुक़्सान देह है जो तुझे इस राह में पेश आनी है क्यूंकि पिछली तमाम **खाइयों**[1] के **समरात**[2] यहीं आ कर **मुन्तही**[3] होते हैं अगर तू यहां से बच कर निकल गया तो ग़नीमत और फ़ाइदा ह़ासिल करेगा और अगर दूसरी त़रह़ का मुआ़मला हुवा तो तमाम मेह़नत **राइगां**[4] जाएगी, उम्मीदें ख़ाक में मिल जाएगी, उ़म्र ज़ाएअ़ हो जाएगी। फिर अब मुआ़मला येह है कि इस घाटी में तीन उमूर आ कर **मुज्तमअ़**[5] हो गए हैं।

पहला येह है कि मुआ़मला निहायत बारीक है और नुक़्सान बड़ा सख़्त और ख़त़रात बे अन्दाज़, मुआ़मले की बारीकी तो येह है कि आ'माल में रिया और उ़ज्ब की राहें निहायत बारीक हैं इन पर दीनी उमूर में बसीरत रखने वाला निहायत अ़क़्लमन्द, बेदार दिल और होशयार आदमी ही मुत्तलअ़ हो सकता है और

1...घाटियों। 2...नताइज। 3...ख़त्म। 4...ज़ाएअ़। 5...जम्अ़।

एक जाहिल, खन्डरा और ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा आदमी कहां इन को जान सकता है !

मैं ने अपने उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ الله से नैशापूर में सुना। बयान करते थे कि अ़ता सुलमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक कपड़ा निहायत अच्छा बुना, बड़ा ख़ूब सूरत कपड़ा तय्यार हुवा। आप उसे उठा कर बाज़ार ले गए और **बज़्ज़ाज़**[1] को जा कर दिखाया उस ने उस की क़ीमत बहुत थोड़ी लगाई और कहा कि इस में फ़ुलां फ़ुलां ऐ़ब हैं तो अ़ता (رَحِمَهُ الله) ने उस को वापस ले लिया और रोने लगे और बड़ा सख़्त रोए। बज़्ज़ाज़ को इस पर नदामत हुई और आप से मा'ज़ेरत करने लगा और अ़ता (رَحِمَهُ الله) की मांगी हुई क़ीमत देने पर तय्यार हो गया तो अ़ता (رَحِمَهُ الله) ने कहा : मैं इस लिये नहीं रोया, बल्कि रोने की वजह येह है कि मैं येह **सन्अ़त**[2] जानता हूं, मैं ने इस कपड़े की मज़्बूती और दुरुस्ती और ख़ूब सूरती में बहुत कोशिश की यहां तक कि मेरे दानिस्त में इस में कोई ऐ़ब न था, फिर जब इस के उ़यूब को जानने वाले पर पेश किया तो उस ने इस के उ़यूब ज़ाहिर कर दिये जिन से मैं बे ख़बर था फिर हमारे उन आ'माल का क्या ह़ाल होगा जब कि कल वोह ख़ुदावन्दे तआ़ला के हुज़ूर पेश किये जाएंगे मा'लूम नहीं इन में कितने उ़यूब और नुक़्सान ज़ाहिर होंगे जिन से आज हम बे ख़बर हैं।

बा'ज़ नेक लोगों से रिवायत है कि मैं एक रात सह़री के वक़्त **बर-लबे सड़क**[3] एक बाला ख़ाने पर सूरए "**त़ाहा**" पढ़ रहा था, जब मैं ने सूरह को ख़त्म कर लिया तो मुझे कुछ ऊंघ सी आ गई, मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी आस्मान से नाज़िल

1.....कपड़ा फ़रोख़्त करने वाले। 2.....काम। 3.....सड़क के किनारे।

हुवा उस के हाथ में एक सह़ीफ़ा था उस ने वोह मेरे सामने फैला कर रख दिया तो उस में वोही सूरए त़ाहा लिखी हुई थी और हर कलिमे के नीचे दस नेकियां लिखी हुई थीं, मगर एक कलिमा मैं ने देखा कि वोह मिटा हुवा है और उस के नीचे कुछ भी नहीं लिखा हुवा। मैं ने कहा : मैं ने येह कलिमा भी पढ़ा तो था और न उस का सवाब लिखा हुवा है न येह कलिमा ही लिखा हुवा है। तो उस आदमी ने कहा : तुम सह़ीह़ कहते हो तुम ने इसे पढ़ा था और हम ने लिखा भी था मगर हम ने आस्मान से एक आवाज़ देने वाले को सुना उस ने कहा कि इस कलिमे को मिटा दो और इस का सवाब भी ख़त्म कर दो तो हम ने इस को मिटा दिया। उस आदमी ने कहा कि मैं अपने ख़्वाब ही में रोने लगा और उन से पूछा कि तुम ने ऐसा क्यूं किया तो उस ने जवाब दिया कि "एक आदमी सड़क पर से गुज़रा तो उस को सुनाने के लिये तुम ने येह कलिमा बुलन्द आवाज़ से पढ़ा था तो इस का सवाब ख़त्म हो गया !" इस को याद रख।(1)

बाक़ी रही नुक़्सान की शिद्दत तो इस की वजह येह है कि रिया और उ़ज्ब एक बहुत बड़ी आफ़त है जो एक लह़्ज़ा में वाक़ेअ़ हो जाती है, और बसा अवक़ात सत्तर साल की इ़बादत को बिगाड़ कर रख देती है।

बयान किया जाता है कि एक आदमी ने सुफ़्यान सौरी رَحِمَهُ الله और उन के साथियों की ज़ियाफ़त की तो अपने घर वालों से कहा कि उस थाल में रोटी रख कर लाओ जो मैं दूसरे ह़ज के मौक़अ़ पर लाया था पहले ह़ज वाले थाल में रोटी न लाना तो सुफ़्यान (رَحِمَهُ الله) ने उस की त़रफ़ देखा और कहा कि इस मिस्कीन ने इतनी सी बात में अपने ह़ज को बात़िल कर दिया।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقران، ١/ ١١٢ ـ

और बा'ज़ ने नुक़्सान ज़ियादा होने की येह **तौजीह**[1] की है कि वोह थोड़ी सी इबादत जो रिया और उ़ज्ब से सलामत रहे उस इबादत की क़ीमत ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक **बे अन्दाज़**[2] है और ऐसी बहुत सी इबादत जिसे येह आफ़त पहुंच जाए उस की कोई क़ीमत नहीं रहती मगर येह कि अल्लाह तआ़ला उस को बचा ले जैसा कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया : मक़्बूल अ़मल कभी कम नहीं होता और मक़्बूल अ़मल कम हो भी कैसे सकता है ? [3]

इमाम नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि फ़ुलां फ़ुलां अ़मल का कितना सवाब है ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जब वोह क़बूल हो जाए तो उस के सवाब की कोई ह़द नहीं ।[4]

और वहब से रिवायत है कि पहले लोगों में एक आदमी था जिस ने सत्तर साल तक अल्लाह तआ़ला की इबादत की एक हफ़्ते के बा'द रोज़ा इफ़्त़ार किया करता था उस ने अल्लाह तआ़ला से एक ह़ाजत का सुवाल किया तो उस की वोह ह़ाजत पूरी न हुई । वोह अपने नफ़्स को मलामत करने लगा और कहने लगा : अगर तेरे पास कोई भलाई होती तो तेरी ह़ाजत पूरी कर दी जाती तो अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ते को नाज़िल फ़रमाया और कहा : ऐ आदम के बेटे ! तेरी वोह एक घड़ी जिस में तू ने अपने नफ़्स को बे ह़क़ीक़त समझा वोह तेरी पहली तमाम इबादत से बेहतर है ।[5]

1.....वजहे बयान । 2.....बहुत ज़ियादा ।

3.....فیض القدیر، ۱/۲۸۰،تحت الحدیث:۲۹۸۔

4.....فیض القدیر، ۱/۲۸۰،تحت الحدیث:۲۹۸۔

5.....الزھد لامام احمد بن حنبل، ص۳۷۰،الرقم:۲۱۹۵، بتغیر قلیل۔

मैं कहता हूं कि अक़्लमन्द को इस कलाम पर ग़ौर करना चाहिये क्या येह शदीद नुक़्सान नहीं है कि एक आदमी सत्तर साल तक तक्लीफ़ और मेहनत उठाए और दूसरा एक घड़ी सोच बिचार करे तो उस की एक एक घड़ी की फ़िक्र **अल्लाह** तआला के नज़्दीक सत्तर साल की इबादत से अफ़्ज़ल हो जाए। क्या येह अज़ीम नुक़्सान नहीं है कि सत्तर साल से एक घड़ी ज़ियादा बेहतर हो जाए और सत्तर साल की तमाम इबादत बेकार चली जाए। ख़ुदा की क़सम ! येह बहुत बड़ा नुक़्सान है और इस से बे ख़बर रहना इस से भी बड़ा नुक़्सान है और वोह **ख़स्लत**[1] जिस की येह क़ीमत हो और ऐसे ख़तरात हों ज़रूरी है कि इस से इजतिनाब और परहेज़ की जाए और इस मा'ना में अक़्लमन्द लोगों की निगाह ऐसी बारीकियों पर पड़ती है फिर वोह इन असरार को पहचानने का अव्वलन तो एहतिमाम करते हैं और बा'द में उस की रिआयत और हिफ़ाज़त का ख़याल रखते हैं, उन की निगाह आ'माल की ज़ाहिरी कसरत पर नहीं होती, वोह कहते हैं कि शान सफ़ाई में है कसरत में नहीं। वोह कहते हैं : एक हीरा **हज़ार कोड़ियों**[2] से बेहतर है, लेकिन जिन लोगों का इल्म कम होता है और जिन की निगाह इस बाब में **क़ासिर**[3] है वोह ऐसे मआनी से बेख़बर हैं, और वोह दिलों के उ़यूब से बे ख़बर हैं और अपने **नुफ़ूस**[4] को रुकूअ़ और सुजूद और खाने पीने से रोक कर थका देते हैं, उन को ता'दाद और कसरत ने धोका दे रखा है और वोह सफ़ाई और बुज़ुर्गी पर निगाह नहीं रखते और ऐसे अख़रोटों की कसरत कोई फ़ाइदा नहीं देती जिन में कोई गूदा न हो ऐसे मकानों की बुलन्द छतें कोई नफ़्अ़ नहीं देतीं जिन की बुन्यादें

1.....आदत। 2.....पुराने ज़माने में इस्ति'माल होने वाले बहुत कम दरजे के सिक्के। 3.....आ़जिज़। 4.....जानों।

मज़बूत़ न हों और इन ह़क़ाइक़ को सिर्फ़ आ़लिम लोग ही जान सकते हैं जिन पर ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से कश्फ़ हो और अल्लाह तआ़ला ही अपने फ़ज़्लो करम से हिदायत का वली है। और बाक़ी रहा ख़त़रात का बड़ा होना तो उस की कई एक वुजूहात हैं :

पहली येह है कि मा'बूद एक ऐसा बादशाह है कि जिस के जलाल और अ़ज़मत की कोई इन्तिहा नहीं और उस के तुझ पर एह़सानात इतने हैं जो ह़िसाब और शुमार से बाहर हैं और तेरा बदन पोशीदा उ़यूब से आलूदा है, बेशुमार आफ़ात से भरा हुवा है और मुआ़मला ख़त़रनाक है, अगर नफ़्स की जल्दी से तेरा पाउं फ़िसल गया तो फिर तू मोह़ताज होगा कि ऐ़बदार बदन और बुराई की त़रफ़ मैलान रखने वाले और बुराई का हुक्म देने वाले, नफ़्स से किसी ख़ालिस अ़मल का इस्तिख़राज करे ऐसे त़रीक़े पर कि वोह रब्बुल आ़लमीन के जलाल और अ़ज़मत के लाइक़ हो, और उस की ने'मतों और एह़सानात की कसरत का शुक्राना बन सके और उस की बारगाह में पसन्दीदगी और क़बूलिय्यत ह़ासिल कर सके वरना तुझ से वोह अ़ज़ीम फ़ाइदा फ़ौत हो जाएगा जिस के फ़ौत होने को कोई नफ़्स बरिज़ा व रग़बत क़बूल नहीं कर सकता और येह भी हो सकता है कि तुझे कोई ऐसी मुसीबत पहुंच जाए कि जिस की तुझे त़ाक़त न हो और ख़ुदा की क़सम ! येह एक अ़जीब ह़ालत है। और एक अ़ज़ीम कैफ़िय्यत है, बाक़ी रहा उस बादशाह के जलाल और अ़ज़मत का मुआ़मला इस त़रह़ कि मलाइकए मुक़र्रबीन हर वक़्त दिन रात उस की **ख़िदमत**[1] में खड़े हैं यहां तक कि बा'ज़ इन में से अपनी इब्तिदाए पैदाइश से ले कर क़ियाम में हैं और बा'ज़ इन ही से रुकूअ़ की ह़ालत में और बा'ज़ सजदे की कैफ़िय्यत में और

1 .....इ़बादत।

बा'ज़ इन में से तस्बीह़ व तहलील में मश्ग़ूल हैं, तो क़ियाम करने वाले का क़ियाम और रुकूअ़ करने वाले का रुकूअ़ और सजदा करने वाले का सजदा और तस्बीह़ कहने वाले की तस्बीह़ और لَاإِلٰـــهَ إِلَّااللّٰـــهُ कहने वाले की **तहलील**[1] सूर फूंकने तक बराबर चली जाएगी और फिर भी उन की इ़बादत पूरी न होगी। फिर भी जब वोह उस अ़ज़ीम **ख़िदमत**[2] से फ़ारिग़ होंगे तो सब के सब पुकार उठेंगे तू पाक है, जैसा तेरी इ़बादत का ह़क़ था हम उसे अदा नहीं कर सके।

और येह रसूलों के सरदार, काइनात का ख़ुलासा, तमाम मख़्लूक़ात से ज़ियादा इ़ल्म और फ़ज़ीलत रखने वाले ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जो फ़रमाते हैं कि मैं तेरी ऐसी सना बयान नहीं कर सकता जिस सना का तू मुस्तह़िक़ है, और कहते हैं कि मैं तेरी उस ता'रीफ़ को बयान करने से क़ासिर हूं जिस ता'रीफ़ का तू **मुस्तह़िक़ है**।[3] फिर उस इ़बादत का तसव्वुर भी कैसे किया जा सकता है जिस का तू अहल है।

और आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही तो हैं जिन्हों ने फ़रमाया कि कोई आदमी जन्नत में अपने अ़मल से दाख़िल नहीं हो सकता, सह़ाबा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) ने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या आप भी दाख़िल नहीं हो सकते ? तो आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : जब तक ख़ुदा तआ़ला की रह़मत मुझ को न ढांप ले मैं भी नहीं दाख़िल हो सकता ![4] बाक़ी रहे इन्आ़मात और एह़सानात तो जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है :

---

1 .....لَاإِلٰـــهَ إِلَّااللّٰـــهُ कहना। 2 .....इ़बादत।

3 ......صحيح مسلم، كتاب الصلاة،باب مايقال فى الركوع والسجود،ص٢٥٢،حديث:٤٨٦۔

4 ......صحيح البخارى، كتاب الرقاق،باب القصد والمداومة على العمل،٢٣٨/٤،حديث:٦٤٦٧۔

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ(1)

और अगर तुम अल्लाह तआ़ला के एह़सानात को शुमार करने लगो तो शुमार भी नहीं कर सकते।

और जैसा कि ह़दीस में है :

يُحْشَرُ النَّاسُ عَلٰى ثَلٰثَةِ دَوَاوِيْنَ دِيْوَانِ الْحَسَنَاتِ وَدِيْوَانِ السَّيِّاٰتِ وَدِيْوَانِ النِّعَمِ فَتُقَابَلُ الْحَسَنَاتُ بِالنِّعَمِ فَلَا يُؤْتٰى (2) بِحَسَنَةٍ اِلَّا اُتِىَ بِنِعْمَةٍ حَتّٰى تَغْمُرَ الْحَسَنَاتُ النِّعَمَ وَتَبْقَى السَّيِّاٰتُ وَالذُّنُوْبُ فَلِلّٰهِ تَعَالٰى فِيْهَا الْمَشِيْئَةُ. (3)

लोगों के आ'माल के तीन दफ़्तर होंगे एक नेकियों का दफ़्तर, एक बुराइयों का दफ़्तर और एक ख़ुदा तआ़ला की ने'मतों का दफ़्तर। नेकियों को ने'मतों के मुक़ाबिल लाया जाएगा जब कोई नेकी लाई जाएगी तो उस के मुक़ाबिल में ने'मत रख दी जाएगी यहां तक कि नेकियां ने'मतों में ख़त्म हो जाएंगी और गुनाह और बुराइयां बाक़ी रह जाएंगे तो फिर अल्लाह तआ़ला को उन में इख़्तियार है।

बाक़ी रहे नफ़्स के उ़यूब और उन की आफ़ात, पस हम पहले इस को इस के बाब में ज़िक्र कर चुके हैं और ख़त़रनाक मुआ़मला तो येह है कि आदमी इ़बादत में सत्तर साल तक मेह़नत करता है और तक्लीफ़ उठाता है और वोह उन के उ़यूब और आफ़ात से बे ख़बर होता है फिर कभी तो ऐसा होता है कि उन में से एक भी मक़्बूल नहीं होता और कभी वोह कई साल तक मेह़नत करता

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर अल्लाह की ने'मतें गिनो तो इन्हें शुमार न कर सकोगे। (پ۱٤،النحل:۱۸)

2...यहां लफ़्ज़ "فَلَا يُـؤْتَ" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "فَلَا يُؤْتٰى" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

3...यहां लफ़्ज़ "الـمشية" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "اَلْمَشِيْئَةُ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

है और एक घड़ी उसे बरबाद कर के रख देती है और इन तमाम ख़त़रात से बढ़ कर येह ख़त़रा है कि कभी **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को देखता है और वोह ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत और ख़िदमत लोगों को दिखाने के लिये करता है इस त़रह़ कि उस का ज़ाहिर तो **अल्लाह** तआ़ला के लिये होता है और बात़िन मख़्लूक़ के लिये, फिर वोह इस को इस त़रह़ मर्दूद क़रार देता है कि उसे कोई भी ख़ुदा के हां मक़्बूल नहीं बना सकता। इस से ख़ुदा की पनाह।

और बा'ज़ उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से सुना है कि वोह ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते थे कि उन की वफ़ात के बा'द उन को ख़्वाब में देखा गया तो उन से उन का ह़ाल पूछा गया, तो फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे अपने सामने खड़ा कर लिया और फ़रमाया : ऐ ह़सन ! क्या तुझे याद है कि एक दिन तू मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था लोगों ने तुझ को देखा तो तू ने अपनी नमाज़ अच्छी कर के पढ़ी अगर तेरी पहली नमाज़ मेरे लिये ख़ालिस न होती तो मैं तुझे आज अपने दरबार में से हांक देता और तुझ से अपने तअ़ल्लुक़ात **मुन्क़त़अ़**(1) कर लेता।

और जब मुआ़मला मुश्किल और बारीकी की वजह से इस अ़ज़ीम ह़द तक बढ़ा हुवा है तो अ़क़्लमन्द लोगों ने इस में ग़ौर किया और वोह अपनी जानों पर डरते रहे यहां तक कि बा'ज़ उन में से अपने उस अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करते थे जो लोगों पर ज़ाहिर हो जाए यहां तक कि राबिआ़ बसरिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهَا से बयान किया जाता है कि इन्हों ने फ़रमाया कि मेरा जो अ़मल ज़ाहिर हो जाए मैं उसे शुमार में नहीं लाती।

और किसी और ने कहा : अपनी नेकियों को इस त़रह़ छुपा जिस त़रह़ तू अपनी बुराइयों को छुपाता है और किसी और ने कहा :

(1).....ख़त्म।

अगर तुझे नेकियों को छुपा कर रखने की कोई जगह मिल सके तो ऐसा ही कर।

बयान किया जाता है कि राबिआ़ (رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْهَا) से सुवाल किया गया कि आप को अपने कौन से अ़मल पर सब से ज़ियाद उम्मीद है? तो इन्हों ने फ़रमाया : इस अ़मल पर कि मैं अपने आ'माल से मायूस हूं।

बयान किया जाता है कि मुह़म्मद बिन वासेअ़ और मालिक बिन दीनार رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعَالٰی दोनों की मुलाक़ात हुई तो मालिक (رَحِمَهُ الله) ने कहा : "या तो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत होगी या जहन्नम।" तो मुह़म्मद बिन वासेअ़ (رَحِمَهُ الله) ने कहा : "या अल्लाह तआ़ला की रह़मत होगी या जहन्नम।" तो मालिक (رَحِمَهُ الله) ने कहा : "मुझे तेरे जैसे उस्ताद की कितनी ज़रूरत है!"[(1)]

बायज़ीद बिस्त़ामी رَحِمَهُ الله से रिवायत है कि आप ने फ़रमाया : मैं ने तीस साल तक इ़बादत में मेह़नत की। फिर मैं ने एक कहने वाले को देखा कि जो मुझ से कहने लगा : ऐ बायज़ीद! उस के ख़ज़ाने इ़बादत से भरे हुवे हैं अगर तू उस की बारगाह तक पहुंचना चाहता है तो तुझे ज़िल्लत और मिस्कीनी इख़्तियार करनी चाहिये।[(2)]

और मैं ने उस्ताद अबुल ह़सन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से सुना वोह उस्ताद अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से बयान करते थे कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : मैं अच्छी त़रह़ जानता हूं कि मैं जो भी इ़बादत करता हूं वोह अल्लाह तआ़ला के दरबार में नाक़ाबिले क़बूल है। आप से इस मुआ़मले में गुफ़्तगू की गई तो आप ने जवाब दिया : किसी काम के मक़्बूल होने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत होती

---

1 ......فيض القدير، ٤/١٣٧، تحت الحديث: ٤٦٨٨ـ

2 ......فيض القدير، ٤/١٣٧، تحت الحديث: ٤٦٨٨ـ

है उन को मैं जानता हूं और मुझे येह भी मा'लूम है कि मैं उन को पूरा नहीं कर रहा हूं। तो मैं जानता हूं कि मेरे अ़मल ग़ैर मक़्बूल हैं। तो आप से कहा गया फिर आप अ़मल क्यूं करते हैं? फ़रमाया : हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला किसी दिन मुझ को दुरुस्त कर दे तो नफ़्स को अच्छे काम करने की आ़दत तो होगी और इब्तिदा से इसे आ़दत डालने की ज़रूरत न होगी। येह ह़ाल उन बड़े बड़े लोगों का है जो साह़िबे मुजाहदा और मुश्किलात को उ़बूर करने वाले और मज़बूत़ क़दम रखते थे। तेरी ह़ालत ऐसी है जैसा कि किसी शाइ़र ने कहा है :

(١)فَاطْلُبْ لِنَفْسِكَ صُحْبَةً مَعَ غَيْرِهِمْ   وَقَعَ الْاِيَاسُ وَخَابَتِ الْاٰمَالُ

(٢)هَيْهَاتَ تُدْرِكُ بِالتَّوَانِي سَادَةً   كَدُّوا النُّفُوْسَ وَ سَاعِدِ الْاِقْبَالُ [1]

फिर मुझे ख़याल हुवा कि मैं यहां वोह ह़दीस बयान कर दूं जो सादिक़ुल मस्दूक़ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मन्क़ूल है, और हम ने इस को कई किताबों में ज़िक्र किया है।

इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि इन्हों ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़र्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी ह़दीस सुनाओ जो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खुद सुनी हो और उस को याद किया हो, और उस की शिद्दत और बारीकी की वजह से आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उसी का तज़्किरा हर रोज़ करते हों, तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : हां बयान करता हूं।

1.....**तर्जमा :** (1) अपने नफ़्स के लिये ग़ैर लोगों की सोह़बत तलाश करो क्यूंकि मायूसी त़ारी हो गई है और उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं। (2) अफ़्सोस कि सुस्ती के बदले सरदारी की ख़्वाहिश करता है, नफ़्सों से कोशिश कराओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह करने में मदद करो।

फिर आप (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) बड़ी देर तक रोते रहे फिर कहने लगे : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की मुलाक़ात का शौक़ ह़द से बढ़ गया है।

फिर फ़रमाया : एक दफ़्आ़ मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास था आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवारी पर बैठे और मुझे भी अपने पीछे बिठा लिया। फिर हम चले। आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने अपनी निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाई फिर फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ उस **अल्लाह** के लिये है जो अपनी मख़्लूक़ में जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है। ऐ मुआ़ज़ ! मैं ने अ़र्ज़ किया : लब्बैक या सय्यिदल मुर्सलीन ! आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : मैं तुझ से ऐसी बात बयान कर रहा हूं कि अगर तू ने इस को याद रखा तो तुझे नफ़्अ़ देगी और अगर तू ने इस को ज़ाएअ़ कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तेरी हुज्जत ख़त्म हो जाएगी। ऐ मुआ़ज़ ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने ज़मीन और आस्मान की पैदाइश से पहले सात फ़िरिश्तों को आस्मानों के ख़ाज़िन और दरबान की ह़ैसिय्यत से पैदा किया।

और हर एक आस्मान के दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ते को ब ह़ैसिय्यते दरबान खड़ा कर दिया फिर किरामन कातिबीन बन्दे के आ'माल ले कर चढ़ते हैं। उन में रोशनी और चमक होती है जैसे सूरज की रोशनी, यहां तक कि वोह पहले आस्मान पर चले जाते हैं और किरामन कातिबीन उस के अ़मल को बहुत ज़ियादा समझते हैं और उस को ख़ालिस जानते हैं फिर जब वोह दरवाज़े पर पहुंचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ते उन से कहता है : इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो। मैं ग़ीबत का फ़िरिश्ता हूं, **अल्लाह**

तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो लोगों की **ग़ीबत करता है।**[(1)] वोह मुझे छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाता है।

फिर दूसरे दिन फ़िरिश्ते ऊपर जाते हैं, उन के पास बहुत अच्छे अ़मल होते हैं, वोह अ़मल नूर से रोशन होते हैं किरामन कातिबीन उन को बहुत ज़ियादा और पाकीज़ा ख़याल करते हैं यहां तक कि जब वोह दूसरे आस्मान पर जाते हैं तो फ़िरिश्ता कहता है : ठहर जाओ और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो क्यूंकि उस की निय्यत इस अ़मल से दुन्या कमाने की थी मुझे मेरे **अल्लाह** ने हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है फिर फ़िरिश्ते शाम तक उस पर ला'नत करते रहते हैं।

फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं और इन से बड़ा ख़ुश होते हैं, इन में सदक़ा, रोज़ा और बहुत सी नेकियां होती हैं, फ़िरिश्ते इन को बहुत ज़ियादा समझते हैं और ख़ालिस जानते हैं, फिर जब वोह तीसरे आस्मान तक पहुंचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ता कहता है कि ठहर जाओ और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो, मैं तकब्बुर वालों का फ़िरिश्ता हूं, मेरे **अल्लाह** ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, येह आदमी लोगों पर उन की मजालिस में अपनी बड़ाई बयान करता है।

1.....ग़ीबत के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के एक बाब "**ग़ीबत की तबाहकारियां**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

और फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं और वोह अ़मल इस त़रह़ चमकते हैं जैसे सितारे या कोई रोशन सितारा। उन आ'माल में से तस्बीह़ की आवाज़ आती है। उन में रोज़ा, ह़ज, नमाज़ और उ़मरह होता है। फिर जब वोह चौथे आस्मान पर जाते हैं तो वहां का **मुअक्कल**(1) दरबान फ़िरिश्ता उन से कहता है ठहर जाओ और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो, मैं उ़ज्ब वालों का फ़िरिश्ता हूं मुझे मेरे **अल्लाह** ने हुक्म दे रखा है कि मैं ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है येह आदमी जब कोई अ़मल करता है तो उस पर मग़रूर हो जाता है।

और फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं वोह अ़मल इस त़रह़ आरास्ता होते हैं जैसे दुल्हन सुस्राल जाने के वक़्त, जब वोह इन को ले कर पांचवें आस्मान तक पहुंचते हैं इन में जिहाद, ह़ज, उ़मरह, वग़ैरा अच्छे आ'माल होते हैं। उन की चमक सूरज जैसी होती है तो फ़िरिश्ता कहता है : मैं ह़सद करने वालों का फ़िरिश्ता हूं, येह आदमी लोगों पर उन चीज़ों में ह़सद करता था जो उन को **अल्लाह** तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से दी हैं येह आदमी ख़ुदा तआ़ला की पसन्दीदा तक़्सीम पर नाराज़ है। मेरे **अल्लाह** ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के अ़मल ऊपर न जाने दूं कि येह मुझे छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ मुतवज्जेह है।(2)

और फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं उन में अच्छे वुज़ू, बहुत सी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज और उ़मरह होता है वोह छटे आस्मान तक पहुंच जाते हैं, तो दरवाज़े पर मुक़र्ररा निगहबान

1.....ज़िम्मादार। 2.....ह़सद के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "**मक्तबतुल मदीना**" की शाएअ़ कर्दा किताब "**ह़सद**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

कहता है : मैं रह़मत का फ़िरिश्ता हूं इन आ'माल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो येह आदमी कभी किसी इन्सान पर रह़म नहीं करता था और किसी बन्दे को मुसीबत पहुंचती है तो ख़ुश होता है मेरे **अल्लाह** ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के आ'माल को ऊपर न जाने दूं येह मुझे छोड़ कर ग़ैरों की त़रफ़ मुतवज्जेह है।[1]

फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर चढ़ते हैं, उस में बहुत सा सदक़ा, नमाज़, रोज़ा, जिहाद और परहेज़गारी होती है, उन की आवाज़ होती है जैसे **रा'द**[2] की आवाज़ और चमक जैसे बिजली की चमक, फिर जब वोह सातवें आस्मान पर पहुंचते हैं तो फ़िरिश्ता जो इस आस्मान पर मुअक्कल होता है कहता है : मैं ज़िक्र का फ़िरिश्ता हूं या'नी सुनाने का और लोगों में आवाज़ देने का, इस अ़मल वाले ने इस अ़मल में मजलिसों में तज़किरा और दोस्तों में बुलन्दी और बड़े लोगों के नज़्दीक **जाह पसन्दी**[3] की निय्यत की थी, मेरे **अल्लाह** ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के अ़मल को ऊपर न जाने दूं कि येह मुझे छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और हर वोह अ़मल जो **अल्लाह** के लिये ख़ालिस न हो वोह रिया है और रियाकार का अ़मल **अल्लाह** तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता।

और फ़िरिश्ते बन्दे के आ'माल नमाज़, ज़कात, रोज़ा, ह़ज, उ़मरह, **अच्छा ख़ुल्क़**[4] ख़ामोशी और ज़िक्रे इलाही ले कर ऊपर जाते हैं। सातों आस्मानों के फ़िरिश्ते उन की **मुशायअ़त**[5] के लिये

1....ज़ुल्म के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का रिसाला "ज़ुल्म का अन्जाम" का मुत़ालआ़ कीजिये।

2....बिजली के कड़कने। 3....इ़ज़्ज़त पसन्दी। 4....अख़्लाक़। 5....ता'ज़ीम।

साथ हो जाते हैं यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह के सामने से तमाम पर्दे **फट**[1] जाते हैं फिर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़े हो कर उस के लिये शहादत देते हैं कि उस का अ़मल नेक ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये है, तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : तुम मेरे बन्दे के आ'माल पर निगरान हो और मैं उस के दिल की निगरानी करने वाला हूं, इस अ़मल से इस का इरादा मुझे खुश करना नहीं था बल्कि मेरे सिवा औरों को खुश करना मक्सूद था। मैं इसे अपने लिये ख़ालिस नहीं समझता और मैं खूब जानता हूं जो अ़मल करने से इस की निय्यत थी। इस पर मेरी ला'नत, इस ने बन्दों को भी धोका दिया और तुम को भी लेकिन मुझे धोका नहीं दे सकता, मैं ग़ैबों का जानने वाला हूं, दिलों के ख़यालात से वाक़िफ़ हूं, मुझ पर कोई पोशीदा चीज़ छुपी नहीं रह सकती, और कोई छुपी चीज़ मुझ से ओझल नहीं है मेरा इ़ल्म हाज़िर के मुतअ़ल्लिक़ भी उसी त़रह़ है जैसे मुस्तक़बिल के मुतअ़ल्लिक़ है, और गुज़री हुई चीज़ों के साथ मेरा इ़ल्म उसी त़रह़ है जैसा कि बाक़ी चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ और मेरा इ़ल्म पहले लोगों के साथ उसी त़रह़ है जैसे पिछलों के साथ। मैं पोशीदा को जानता हूं और दिल के ख़यालात को भी। मेरा बन्दा अपने अ़मल के साथ मुझे किस त़रह़ धोका दे सकता है ? धोका तो मख़्लूक़ खाती है जिन को इ़ल्म नहीं होता, और मैं तो ग़ैबों का जानने वाला हूं इस पर मेरी ला'नत है और सातों फ़िरिश्ते और तीन हज़ार फ़िरिश्ते **वदाअ़**[2] करने वाले सब कहते हैं : ऐ हमारे रब ! इस पर तेरी ला'नत है, और हमारी भी ला'नत। फिर आस्मानों वाले कहते हैं : इस पर **अल्लाह** की ला'नत और ला'नत करने वालों की ला'नत।

---

1 .....हट। 2 .....रुख़्सत।

फिर मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और बड़ा सख़्त रोए और कहा : ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने जो ज़िक्र फ़रमाया है इस से नजात की क्या सूरत है ? तो फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! अपने नबी की यक़ीन में **इक़्तिदा**(1) कर, मैं ने कहा : आप तो **अल्लाह** के रसूल हैं और मैं मुआ़ज़ बिन जबल हूं, मुझे नजात और ख़लासी किस त़रह़ नसीब हो सकती है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! अगर तेरे अ़मल में कोताही हो तो लोगों की **बे आबरूई**(2) करने से अपनी ज़बान को रोक ख़ुसूसन अपने भाइयों, क़ुरआन पढ़ने वालों से और लोगों की बे आबरूई करने से अपने नफ़्स के ऐ़बों का इ़ल्म तुझे रोक दे, और अपने भाइयों की ख़िदमत कर के अपने नफ़्स को पाक न बना और अपने भाइयों को गिरा कर अपने आप को बुलन्द करने की कोशिश न कर और अपने अ़मल में रियाकारी न कर कि तू लोगों में पहचाना जाए और इस त़रह़ दुन्या में मश्ग़ूल न हो जा कि तुझे आख़िरत का मुआ़मला भूल जाए और जब तेरे पास कोई और आदमी भी बैठा हो तो किसी दूसरे से छुप कर मश्वरा न कर और लोगों में बड़ाई ह़ासिल करने की कोशिश न कर कि दुन्या और आख़िरत की भलाइयां तुझ से मुंह मोड़ लेंगी और अपनी मजलिस में इस त़रह़ **फ़ोह़्श गोई**(3) न कर कि लोग तेरी बद अख़्लाक़ी की वजह से तुझ से गुरैज़ करने लगें और लोगों पर एह़सान न जता और लोगों की इ़ज़्ज़त का पर्दा अपनी ज़बान से चाक न कर कि तुझे जहन्नम के कुत्ते फाड़ डालेंगे और येही है **अल्लाह** तआ़ला का क़ौल : وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾ या'नी हड्डियों से गोश्त को अलग कर देंगे।

---

(1).....पैरवी। (2).....बे इ़ज़्ज़ती। (3).....बेहूदा बातें।

मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इन बातों की कौन ताक़त रख सकता है ? आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! जो मैं ने तुझ से बयान किया है, वोह उसी आदमी पर आसान है, जिस पर अल्लाह तआ़ला आसान करे । तुझे इन तमाम बातों से येह चीज़ किफ़ायत करती है कि तू लोगों के लिये वोही कुछ पसन्द करे जो तू अपने नफ़्स के लिये पसन्द करता है और लोगों के लिये वोही कुछ नापसन्द करे जो अपने नफ़्स के लिये नापसन्द करता है अगर तू ऐसा करेगा तो सलामत रहेगा और नजात पा जाएगा ।

ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा कि ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه क़ुरआने पाक की तिलावत भी इस कसरत से नहीं करते थे जितना कि इस ह़दीस को बयान करते और अपनी मजलिस में इस का तज़्किरा करते ।(1)

और ऐ आदमी ! जब तू ने येह अ़ज़ीम ह़दीस और बहुत बड़ी ख़बर सुन ली है जिस का अन्जाम बड़ा दर्दनाक है जिस के असर से दिल उड़ने लगते हैं और **उ़क़ूल**(2) परेशान हो जाती हैं और जिस को सीने उठाने से तंग हैं जिस की हैबत से नफ़्स घबराते हैं, तो अपने मौला की रह़मत का दामन थाम ले और आ़जिज़ी और **तज़र्रुअ़**(3) और दिन रात के रोने से उस के दरवाज़े को लाज़िम पकड़ । जैसा कि दूसरे आ़जिज़ी करने वाले और तज़र्रुअ़ करने वाले करते हैं, इस मुआ़मले में नजात सिर्फ़ उस की रह़मत से है और इस समन्दर से सलामती के साथ बच निकलना सिर्फ़ उस की तवज्जोह और तौफ़ीक़ और इनायत से है । ग़ाफ़िलों की नींद से

---

(1)......الترغيب و الترهيب، المقدمة، الترهيب من الرياء...الخ، ١/٤٨، حديث:٥٩، بتغير۔

(2).....अ़क़्लें । (3).....गिड़गिड़ाने ।

बेदार हो और इस काम को इस का ह़क़ दे और इस ख़ौफ़नाक घाटी में अपने नफ़्स से जिहाद कर ताकि तू हलाक होने वालों के साथ हलाक न हो जाए और हर ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला ही से मदद की इल्तिजा है वोह बेहतरीन मददगार है, और वोह सब रह़्म करने वालों से ज़ियादा रह़्म करने वाला है और गुनाह से बचने और नेकी करने की त़ाक़त भी **अल्लाह** तआ़ला बुलन्द और अ़ज़ीम की तौफ़ीक़ से है।

फ़स्ल

क़िस्सा मुख़्तसर जब तू ने अच्छी त़रह़ देख लिया और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त के अन्दाज़े को मुलाह़ज़ा कर लिया और मख़्लूक़ और उन की कमज़ोरी और उन की जहालत को देख लिया तो अपने दिल के साथ उन की त़रफ़ तवज्जोह मत कर और उन की मद्ह़ो सना और उन की ता'ज़ीम से बेनियाज़ हो जा कि इस में कोई फ़ाइदा नहीं है, तू इन चीज़ों से अपनी इ़बादत को मर्दूद न कर और जब तू ने दुन्या की कमीनगी और ह़क़ारत और **सुरअ़ते ज़वाल**(1) को जान लिया है, तो **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत से उस की त़रफ़ तवज्जोह न कर और अपने नफ़्स से कह : ऐ नफ़्स ! रब्बुल आ़लमीन की ता'रीफ़ और उस की शुक्र गुज़ारी आ़जिज़ और जाहिल मख़्लूक़ की **सना**(2) से बेहतर है जो कि ह़क़ीक़त में तेरे अ़मल की क़द्र को और तेरी मेह़नत को जानते ही नहीं और तेरे ह़क़ को तेरे आ'माल में और तेरी तक्लीफ़ात में नहीं पहचान सकते बल्कि बसा अवक़ात तुझ पर किसी ऐसे आदमी को फ़ज़ीलत देंगे जो कि तुझ से हज़ारहा दरजा कमतर होगा और सब से ज़ियादा ह़ाजत के अवक़ात में तुझ को ज़ाएअ़ कर देंगे और भूल जाएंगे और अगर वोह ऐसा न भी करें तो उन के हाथ में आख़िर है भी क्या और

1 .....बहुत जल्द ख़त्म होने। 2 .....ता'रीफ़।

उन की त़ाक़त कहां तक पहुंच सकती है ! फिर वोह भी अल्लाह तआ़ला ही के क़ब्ज़े में हैं तो फिर वोह उन को जिस त़रह़ चाहेगा और जिधर चाहेगा फेर देगा तो ऐ नफ़्स ! अ़क़्ल से काम ले और अपनी **अ़ज़ीज़**[1] इबादत को उन की वजह से ज़ाएअ़ न कर और नहीं **फ़ौत**[2] होगी तुझ से उस ज़ात की सना जिस की सना तमाम तर फ़ख़्र और अ़त़ा है, और जिस की अ़त़ा तमाम तर ज़ख़ीरा है और कहने वाले ने कितना सच कहा है :

سَهَرُ الْعُيُوْنِ لِغَيْرِ وَجْهِكَ بَاطِلٌ   وَ بُكَاؤُهُنَّ لِغَيْرِ فَقْدِكَ ضَائِعٌ

तर्जमा : तेरे चेहरे के सिवा आंखों का जागना बात़िल है और तेरे गुम होने के सिवा इन का रोना ज़ाएअ़ है।

और कहो ऐ नफ़्स ! क्या हमेशा की जन्नत बेहतर है या दुन्या और इस का नाकारा और फ़ानी ह़राम से आलूदा सामान, ह़ालांकि तुझे त़ाक़त है कि तुझे तेरी इस इबादत से हमेशा की ने'मतें ह़ासिल हों, पस न हो तो **ख़सीस हिम्मत**[3] **रद्दी इरादे**[4] और कमीना अफ़्आ़ल वाला, क्या तू ग़ौर नहीं करता कि कबूतर जब फ़ज़ा में बुलन्द उड़ने वाला हो तो उस की क़ीमत किस त़रह़ बढ़ जाती है और इस की क़द्र कितनी ज़ियादा हो जाती है ! सो तू अपनी तमाम हिम्मत को आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर और अपने दिल को अकेले अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ाली कर दे जिस के इख़्तियार में तमाम उमूर हैं और नाकारा चीज़ों की वजह से अपनी कमाई हुई इबादत को ज़ाएअ़ न कर, और इसी त़रह़ जब तू अच्छी त़रह़ ग़ौर करेगा तो अल्लाह तआ़ला की न'मतों और बड़े बड़े एह़सानात को इस इबादत में अपने ऊपर मुलाह़ज़ा फ़रमाएगा कि उसी ने तुझ को इस की तौफ़ीक़ बख़्शी और उस ने इस का सामान

1.....क़ीमती। 2.....ज़ाएअ़। 3.....कम हिम्मत। 4.....बेकार इरादे।

फ़राहम किया और उसी ने तमाम **मवानिआ़त**(1) को तुझ से दूर फ़रमाया यहां तक कि इस इ़बादत के लिये फ़ारिग़ हुवा।

फिर उस ने तुझ को तौफ़ीक़ और ताईद से ख़ास किया और इस को तुझ पर आसान बनाया और तेरे दिल में इस को ज़ीनत बख़्शी यहां तक कि तू ने इस पर अ़मल किया।

फिर उसी ने अपनी अ़ज़मत और जलाल और तेरी इ़बादत और तुझ से बे नियाज़ी और अपनी तुझ पर बे अन्दाज़ ने'मतों के बा वुजूद तेरे लिये इस मा'मूली अ़मल पर **सनाए जमील**(2) और सवाबे अ़ज़ीम का अज्र तय्यार कर रखा है जिस का तू किसी सूरत में मुस्तहि़क़ नहीं है फिर वोह इस पर **तुझे शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता**(3) है और इस मा'मूली काम पर **ता'रीफ़ फ़रमाता**(4) है और इसी की वजह से तुझ से मह़ब्बत रखता है।

ख़ामिसन येह सब कुछ उसी के बहुत बड़े फ़ज़्ल की वजह से है, न किसी और वजह से वरना तेरा कौन सा ह़क़ है और तेरे इस ऐ़बदार और ह़क़ीर अ़मल की कौन सी क़द्र है, सो ए नफ़्स ! अपने रब्बे करीम रह़ीम سُبۡحَانَهٗ وَ تَعَالٰی के एह़सान को याद कर कि उस ने तुझ पर इस इ़बादत के बजा लाने में कितना एह़सान किया और उस से शर्म कर कि तू अपने अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह करे बल्कि अल्लाह तआ़ला ही का हम पर हर ह़ाल में फ़ज़्ल और एह़सान है और इस इ़बादत के ह़ासिल हो जाने के बा'द तेरा **शुग़्ल**(5) अल्लाह तआ़ला سُبۡحَانَهٗ की बारगाह में तज़र्रुअ़ और आ़जिज़ी के सिवा और कुछ नहीं होना चाहिये कि वोह इसे अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमा ले। क्या तू ने अल्लाह तआ़ला के ख़लील इब्राहीम (عَلَيۡهِ السَّلَام) की बात नहीं सुनी कि जब वोह ख़ुदा तआ़ला के घर की

1.....रुकावटों। 2.....अच्छी ता'रीफ़। 3.....यहां जुम्ला "तेरी शुक्र गुज़ारी करता" तह़रीर था, जो कि ना मुनासिब है लिहाज़ा इसे "तुझे शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता" से तब्दील किया गया है। (इ़ल्मिय्या) 4.....यहां जुम्ला "सना कहता" तह़रीर था, जो कि ना मुनासिब है लिहाज़ा इसे "ता'रीफ़ फ़रमाता" से तब्दील किया गया है। (इ़ल्मिय्या) 5.....काम।

ता'मीर की ख़िदमत से फ़ारिग़ हुवे तो किस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला की जनाब में गिड़गिड़ाए कि वोह उस को क़बूल फ़रमा कर उन पर एह़सान करे उन्हों ने कहा :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۱۲۷﴾ (1)

ऐ हमारे रब हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है।

और जब अपनी दुआ़ से फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया :

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ (2)

ऐ हमारे रब दुआ़ को क़बूल फ़रमा।

फिर अगर उस ने इस **खोटी पूंजी**(3) को क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एह़सान किया तो उस ने अपनी ने'मत को मुकम्मल कर दिया और एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया। कितनी अच्छी है येह सआ़दत और दौलत व इ़ज़्ज़त व **रिफ़्अ़त**(4) और येह ख़िल्अ़त और ने'मत और ज़ख़ीरा और करामत तुझ पर कितनी ज़ैब देगी और अगर दूसरी कैफ़िय्यत हुई तो इस ख़सारे और नुक़्सान और मह़रूमी पर निहायत अफ़्सोस, पस तू उठ और इस कैफ़िय्यत में मश्ग़ूल हो जा, जब तू इस अ़मल पर हमेशगी करेगा और अपनी इ़बादत से फ़ारिग़ होने पर अपने दिल पर इस की तकरार करेगा और ख़ुदावन्दे तआ़ला से मदद चाहेगा तो वोह तुझे मख़्लूक़ और नफ़्स के **इल्तिफ़ात**(5) से बचा लेगा और उ़ज्ब और रियाकारी के शुग़्ल से मह़फ़ूज़ रखेगा और तुझे ख़ालिस इख़्लास पर इ़बादाते ज़िक्रे इलाही में आमादा करेगा और फिर तमाम ह़ालात में तुझ पर **अल्लाह** तआ़ला का एह़सान होगा। तुझे ज़ाहिरी इत़ाअ़त ह़ासिल होगी जो उम्मीद के क़ाबिल हो और ऐसी नेकियां मयस्सर आएंगी जिन में कोई **कदूरत**(6) न हो और ऐसी मक़्बूल इ़बादतें ह़ासिल होंगी जिन

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता। (پ۱، البقرۃ:۱۲۷) 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले। (پ۱۳، ابراھیم:۴۰) 3.....नाक़िस अ़मल। 4.....बुलन्दी। 5.....मुतवज्जेह होने। 6.....ख़राबी।

में कोई नक़्स न हो और ऐसी इबादत अगर बिलफ़र्ज़ ज़िन्दगी में एक ही दफ़्आ़ मयस्सर हो जाए और फिर कभी मयस्सर न हो तो वोह भी ह़क़ीक़त में बहुत है, और मुझे अपनी उ़म्र की क़सम ! अगर्चे इस की ता'दाद कम हो लेकिन इस के मा'ना बहुत हैं इस की क़द्र बड़ी है, इस का नफ़्अ़ कसीर है, इस का अन्जाम अच्छा है और इस त़रह़ की तौफ़ीक़ मिलना बहुत अ़ज़ीज़ है और बन्दे पर ख़ुदा तआ़ला का बहुत बड़ा एह़सान है। फिर उस तोह़्फ़े से कौन सा तोह़्फ़ा बड़ा हो सकता है कि जिस को **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन क़बूल कर ले और उस कोशिश से अच्छी और कौन सी कोशिश हो सकती है **जिस पर तौफ़ीक़े शुक्र की नवाज़िश**(1) बेक़रारों की दुआएं सुनने वाला करे और रब्बुल आ़लमीन उस पर ता'रीफ़ करे और कौन सी पूंजी इस पूंजी से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ है जिस को रब्बुल आ़लमीन पसन्द कर ले और उस पर ख़ुश हो जाए।

पस ऐ मिस्कीन ग़ौर कर ! और होशयार हो जा कि तू ख़सारा पाने वालों से न हो जाए और जब मुआ़मला इस ह़द तक पहुंच जाएगा तो तू **अल्लाह** तआ़ला के मुख़्लिस डरने वाले, फ़िक्र करने वाले **अल्लाह** के एह़सानात पर राज़ी होने वाले लोगों में से हो जाएगा और तू इस ख़ौफ़नाक घाटी को अपने पीछे छोड़ जाएगा इस की आफ़तों से सलामत रहेगा और इस की भलाइयां और फल अपने साथ ले जाएगा इस की सआ़दतों और करामतों पर हमेशा के लिये फ़ाइज़ हो जाएगा और **अल्लाह** तआ़ला ही अपने फ़ज़्लो करम से इ़स्मत और तौफ़ीक़ का वाली है और **अल्लाह** तआ़ला बुलन्द अ़ज़ीम की तौफ़ीक़ ही से गुनाह से परहेज़ और नेकी की क़ुव्वत ह़ासिल की जा सकती है।

1.....यहां जुम्ला "जिस की शुक्र गुज़ारी" तह़रीर था, जिसे ज़ियादा मुनासिब जुम्ले "जिस पर तौफ़ीक़े शुक्र की नवाज़िश" से बदल दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

सातवां बाब

सातवीं घाटी शुक्र के बयान में

और येह घाटी ह़म्द और शुक्र की है। अल्लाह तुझे भी तौफ़ीक़ दे और हमें भी इन घाटियों के क़त्अ़ करने के बा'द और ऐसी इ़बादत के हु़सूल के बा'द जो आफ़ात से सह़ीह़ सलामत हो। अल्लाह तआ़ला का शुक्र और ह़म्द बजा लाना इसी ने'मते अ़ज़ीमा और एह़साने करीमा पर लाज़िम है और येह तुझे दो वुजूहात से लाज़िम है एक तो ने'मते अ़ज़ीमा के **दवाम**[1] के लिये और दूसरे ज़ियादा ह़ासिल होने के लिये फिर ने'मते दवाम के लिये इस लिये ज़रूरी है कि शुक्र के साथ ने'मतें **मुक़य्यद**[2] हो जाती हैं और हमेशा हमेशा के लिये बाक़ी रहती हैं और इस को तर्क कर देने से चली जाती हैं, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है :

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ؕ (3)

अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम के ह़ालात में उस वक़्त तक तब्दीली नहीं करते जब तक वोह ख़ुद न तब्दील हो जाएं।

और फ़रमाया :

فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللّٰهِ فَأَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ (4)

पस उस ने अल्लाह की ने'मतों का इन्कार किया तो अल्लाह तआ़ला ने उस को ख़ौफ़ और भूक का लिबास पहना दिया येह बदला था उन की कमाई का।

1.....हमेशगी। 2.....क़ैद। 3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद अपनी ह़ालत न बदल दें। (پ۱۳، الرعد:۱۱) 4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह अल्लाह की ने'मतों की नाशुक्री करने लगी तो अल्लाह ने उसे येह सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया बदला उन के किये का। (پ۱٤، النحل:۱۱۲)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ (1)

अगर तुम शुक्र करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह तआला तुम्हें क्यूं सज़ा देगा ?

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِنَّ لِلنِّعَمِ اَوَابِدَ (2) كَاَوَابِدِ الْوَحْشِ فَقَيِّدُوْهَا بِالشُّكْرِ"

ने'मतें भी इसी त़रह़ भाग जाती हैं जैसे जंगली जानवर भाग जाते हैं तो इन को शुक्र के साथ पाबन्द करो।

बाक़ी रहा ज़ियादत का हुसूल ! तो चूंकी शुक्र ने'मतों के लिये ज़न्जीर है तो वोह ज़ियादत का फल देंगी।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ (3)

अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम को ज़ियादा दूंगा।

और फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى (4)

जिन लोगों ने हिदायत को क़ुबूल किया अल्लाह उन को हिदायत ज़ियादा देता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा ? अगर तुम ह़क़ मानो और ईमान लाओ। (پ٥، النساء:١٤٧)

2.....यहां लफ़्ज़ "اَوَابِدًا" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन में दुरुस्त लफ़्ज़ "اَوَابِدَ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा। (پ١٣، ابراھیم:٧)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने राह पाई अल्लाह ने उन की हिदायत और ज़ियादा फ़रमाई। (پ٢٦، محمد:١٧)

और फ़रमाया :

وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَا ؕ (1)

जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन को अपने रास्तों की राहनुमाई करते हैं।

फिर अ़क्लमन्द मालिक जब ग़ुलाम को देखता है कि वोह उस की ने'मत का ह़क़ अदा कर रहा है तो उस पर और भी एह़सान करता जाता है और उस को उन का अहल समझता है, वरना उस से अपने एह़सानात मुन्क़त़अ़ कर लेता है।

फिर ने'मतें दो क़िस्म की हैं : दुन्यावी और दीनी, फिर दुन्यावी दो क़िस्म की हैं : पहली नफ़्अ़ की ने'मत और दूसरी मुदाफ़अ़त की ने'मत, नफ़्अ़ की ने'मत तो येह है कि तुझे **अल्लाह** तआ़ला तेरे मुनासिब और मनाफ़ेअ़ की चीज़ें अ़त़ा फ़रमाएं। फिर मनाफ़ेअ़ की दो क़िस्में हैं : सह़ीह़ पैदाइश और जिस्मानी सलामती और आ़फ़िय्यत और मरग़ूब चीज़ों का मुहय्या करना, मसलन : खाना पीना, लिबास निकाह़ वग़ैरा के फ़वाइद, और मुदाफ़अ़त की ने'मत येह है कि **अल्लाह** तआ़ला तुझ से बिगाड़ पैदा करने वाली और तक्लीफ़ देने वाली चीज़ों को तुझ से रोक रखे और येह भी दो क़िस्म की है : पहली नफ़्स में कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे तमाम आफ़तों, बीमारी से मह़फ़ूज़ रखे, और दूसरी उन चीज़ों की मुदाफ़अ़त जिन से तुझे कोई नुक़्सान पहुंच सके या कोई इन्सान या जिन्न या दरिन्दा और मूज़ी जानवर तुझे बुराई पहुंचाने का क़स्द करे और बाक़ी रहीं दीनी ने'मत तो वोह भी दो क़िस्म की हैं :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे। (پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

ने'मते तौफ़ीक़ और ने'मते इ़स्मत

तौफ़ीक़ की ने'मत तो येह है कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे पहले तो इस्लाम की तौफ़ीक़ बख़्शे फिर इत्तिबाए़ सुन्नत की फिर इता़अ़त की, और इ़स्मत की ने'मत येह है कि सब से पहले **अल्लाह** तआ़ला तुझे कुफ़्र और शिर्क से बचाए फिर बिदअ़त और गुमराही से फिर तमाम गुनाहों से और इस की तफ़्सील इस काइनात के मालिक के सिवा कोई नहीं जानता जिस ने तुझ पर एह़सानात किये हैं, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَاؕ(1) *और अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात को शुमार करने लगो तो शुमार भी न कर सको ।*

और इन तमाम ने'मतों का रवाज बा'द इस के कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ पर इन का एह़सान किया और हर त़रफ़ से इस में इज़ाफ़ा फ़रमाया कि जिस को तेरा वहम न तो शुमार कर सकता है और न वहां तक पहुंच सकता है और येह तमाम चीज़ें एक ही चीज़ से मुतअ़ल्लिक़ हैं और वोह **अल्लाह** तआ़ला की ता'रीफ़ और उस का शुक्र ।

और वोह काम जिस की येह क़ीमत हो जिस में येह तमाम फ़ाइदे हों ह़क़ रखता है कि उस को किसी ह़ाल में ग़फ़लत के बिग़ैर थामे रखा जाए, येह एक क़ीमती हीरा है और **अ़ज़ीज़ कीमिया**(2) है, और **अल्लाह** ही अपने फ़ज़्ल व रह़मत से तौफ़ीक़ का वाली है।

अगर सुवाल किया जाए कि ह़म्द और शुक्र की ह़क़ीक़त क्या है और उस के मा'ना क्या हैं और उन का हुक्म क्या है तो जान लेना चाहिये कि उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) ने ह़म्द और शुक्र में कुछ

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर **अल्लाह** की ने'मतें गिनो तो इन्हें शुमार न कर सकोगे । (پ١٤، النحل:١٨)

2.....निहायत क़ीमती शै ।

फ़र्क़ किया है वोह येह कि ह़म्द तस्बीह़ व तहलील की क़िस्म से है तो येह ज़ाहिरी कोशिशों में से होगी और शुक्र सब्र और सुपुर्दगी की क़िस्म से है तो येह बात़िनी कोशिशों में से होगा क्यूंकि शुक्र कुफ़्र के मुक़ाबिल है और ह़म्द मज़म्मत के मुक़ाबिल और दूसरा फ़र्क़ येह है कि ह़म्द आ़म है और अकसर है और शुक्र कम है और ख़ास है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾ (1) *और मेरे शुक्र गुज़ार बन्दे थोड़े हैं।*

तो साबित हुवा कि येह दोनों अलग अलग मआ़नी रखते हैं, फिर येह फ़र्क़ भी है कि ह़म्द किसी के अच्छे काम करने पर ता'रीफ़ करने को कहते हैं। हमारे शैख़ رَحِمَهُ الله के कलाम का **मुक़्तज़ा**(2) येही है।

बाक़ी रहा शुक्र तो इस के मा'ना में उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) ने बहुत कलाम किया है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ख़ुदावन्दे तआ़ला की ज़ाहिर और बात़िन में तमाम आ'ज़ा से इत़ाअ़त का नाम शुक्र है और हमारे बा'ज़ मशाइख़ (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) का भी येही क़ौल है कि उन्हों ने कहा : ज़ाहिर और बात़िन में इत़ाअ़त का अदा करना शुक्र है, फिर दूसरे क़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ किया और कहा कि ज़ाहिर और बात़िन में गुनाहों से परहेज़ करना शुक्र है और किसी और ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानियों को इख़्तियार करने से अपनी ह़िफ़ाज़त करने का नाम शुक्र है कि तू अपने दिल और ज़बान और आ'ज़ा की इस त़रह ह़िफ़ाज़त करे कि इन तीनों से किसी त़रह भी **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी न कर सके और इस क़ौल और पहले शैख़ के क़ौल में फ़र्क़ येह है कि शैख़े बुज़ुर्ग ने ह़िफ़ाज़त को गुनाहों से इजतिनाब पर एक ज़ाइद मा'ना की ह़ैसिय्यत से साबित

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले। (پ۲۲،سبا:۱۳)

2 .....ह़ासिल / नतीजा।

किया है और नाफ़रमानी से इजतिनाब की ह़क़ीक़त तो येही है कि जब इस के **दवाई**[1] मौजूद हों तो इन्सान नाफ़रमानी न करे और इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ कोई ऐसा मा'ना अपने नफ़्स में ह़ासिल नहीं होगा जिस से बन्दा मश्ग़ूल रहे और नाशुक्री से बचा रहे।

और हमारे शैख़ رَحِمَهُ الله ने फ़रमाया : एह़सान करने वाले की ने'मत के मुक़ाबले में इस त़रह़ ता'ज़ीम की जाए कि एह़सान करने वाले की नाफ़रमानी और नाशुक्री से इस को रोक दे इस का नाम शुक्र है और अगर एह़सान के मुक़ाबले में मोह़सिन की ता'ज़ीम रखी जाए तो ऐसी सूरत में येह भी सह़ीह़ होगा कि **अल्लाह** तआ़ला **बन्दे को शुक्र की तौफ़ीक़ दे**[2] और येह बहुत अच्छी ता'रीफ़ है और इस में काफ़ी तफ़्सील है जिस को हम ने अपनी किताब "**इह़याउ उ़लूमिद्दीन**" वग़ैरा में पूरी त़रह़ बयान किया है, लेकिन ह़ासिल येह है कि बन्दे से शुक्र येह है कि अपने मोह़सिन की इस त़रह़ ता'ज़ीम करे कि उस की नाफ़रमानी से बाज़ आ जाए और येह उस के एह़सान के याद करने से होता है और शुक्र करने वाले का ह़ाल शुक्र में बहुत बेहतर है और नाशुक्री करने वाले का ह़ाल नाशुक्री में बहुत बदतर है।

मैं कहता हूं कि **मुनइ़म**[3] का कम अज़ कम येह ह़क़ है कि उस की ने'मत के साथ उस की नाफ़रमानी न की जाए और कितनी बदतर ह़ालत है उस आदमी की जो मुनइ़म की ने'मत को उस की नाफ़रमानी पर हथयार के त़ौर पर इस्ति'माल करे पस बन्दे पर शुक्र का ह़क़ीक़त में येह फ़र्ज़ है कि उस के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की ऐसी ता'ज़ीम हो कि वोह ख़ुदा तआ़ला और उस की नाफ़रमानी के दरमियान ह़ाइल हो जाए जब कि इस

1.....इस के अस्बाब। 2.....यहां तर्जमे में "**बन्दे का शुक्र करे**" को ज़ियादा मुनासिब जुम्ले "**बन्दे को शुक्र की तौफ़ीक़ दे**" से बदल दिया गया है। (इ़ल्मिय्या) 3.....ने'मत देने वाले।

ने'मत को याद करे, जब उस ने ऐसा कर लिया तो उस ने **शुक्र का अस्ल**(1) अदा कर दिया, फिर उस के मुक़ाबिल खुदा तआ़ला की इत़ाअ़त में कोशिश और इबादत में जिद्दो जहद है क्यूंकि वोह ने'मत के हुक़ूक़ में से है तो नाफ़रमानी से बचते रहना भी ज़रूरी है और अल्लाह तआ़ला ही की त़रफ़ से तौफ़ीक़ है।

अगर तुम येह सुवाल करो कि शुक्र का मक़ाम कौन सा होता है तो मा'लूम होना चाहिये कि इस का मक़ाम दीनी और दुन्यावी ने'मतें हैं, बाक़ी रहा मुसीबतों और सख़्तियों पर दुन्या में ख़्वाह वोह अपने नफ़्स पर हों या अहल और माल पर शुक्र करना बन्दे पर लाज़िम है या नहीं ? तो बा'ज़ ने कहा है कि बन्दे को उन पर उन की ह़ैसिय्यत से शुक्र करना लाज़िम नहीं है बल्कि उन पर सब्र करना लाज़िम है, बाक़ी रहा शुक्र तो वोह ने'मतों पर होता है न कि किसी दूसरी चीज़ पर और बा'ज़ ने कहा है कि कोई सख़्ती ऐसी नहीं कि जिस के पहलू में अल्लाह तआ़ला का एह़सान न हो, तो उस ने'मत पर जो इस सख़्ती से मिली हुई है, बन्दे पर शुक्रिया लाज़िम है न कि सख़्ती और मुसीबत पर, और येह ने'मतें वोह हैं जो "इब्ने उ़मर" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाई।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि जब कभी भी कोई मुसीबत मुझ पर आई तो मैं ने उस में अल्लाह तआ़ला के चार एह़सान देखे :

पहला येह कि वोह मुसीबत मेरे दीन में न आई, दूसरी येह कि उस से ज़ियादा न आई, तीसरी येह कि मैं **रिज़ा बिल क़ज़ा**(2) से मह़रूम न रहा, और चौथी येह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है।

और येह भी कहा गया है कि येह भी एक ने'मत है कि वोह सख़्ती दूर हो जाने वाली है, हमेशा रहने वाली नहीं और येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है न कि किसी दूसरे की त़रफ़ से।

और अगर वोह सख़्ती किसी मख़्लूक़ के सबब से हो तो

1.....शुक्र का ह़क़। 2.....तक़्दीर पर राज़ी होने।

वोह तेरी त़रफ़ से उस पर है न कि उस की त़रफ़ से तुझ पर। तो उस वक़्त बन्दे पर शुक्रिया लाज़िम है उन ने'मतों पर जो सख़्ती के साथ मिली हुई हैं।

और कुछ लोगों ने येह भी कहा है और हमारे शैख़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस क़ौल को **राजेह़**[1] क़रार दिया है कि दुन्या की मुसीबतों पर शुक्र करना भी बन्दे के लिये लाज़िम है क्यूंकि येह सख़्तियां ह़क़ीक़त में ने'मतें हैं क्यूंकि बन्दे को इस के मुआ़वज़े में अ़ज़ीम मनाफ़ेअ़ बे **अन्दाज़**[2] सवाब और अच्छा बदल आख़िरत में मिलता है जिन के मुक़ाबले में इन सख़्तियों की कोई हैसिय्यत नहीं रहती और इस से बढ़ कर और कौन सी ने'मत होगी ? इस की मिसाल ऐसी है जैसा कि तुझे बद मज़ा और कड़वी दवाई पिलाए ताकि ख़त़रनाक बीमारी दूर हो जाए या किसी बहुत बड़ी बीमारी या ख़ौफ़नाक ख़त़रे की वजह से कोई तेरा **फ़स्द करे**[3] या **सींगी लगाए**[4] तो इस का नतीजा नफ़्स की सिह़्ह़त, बदन की सलामती और ज़िन्दगी की सफ़ाई होगा तो उस का तुझे कड़वी दवाई पिला कर तक्लीफ़ देना या फ़स्द का ज़ख़्म लगाना या सींगी खींचना ह़क़ीक़त में एक बहुत बड़ा एह़सान और अ़ज़ीम ने'मत होगी अगर्चे इस की ज़ाहिरी सूरत नापसन्दीदा है इस से त़बीअ़त नफ़रत करती है और नफ़्स वह़शत मह़सूस करता है फिर भी तू उस आदमी का शुक्रिया अदा करता है बल्कि अपनी हिम्मत के मुत़ाबिक़ उस को अच्छा

1.....ज़ियादा बेहतर। 2.....बेशुमार। 3.....या'नी रग खोल कर फ़ासिद ख़ून निकाले। 4.....जहां सींगी लगानी होती है पहले उस जगह को तेज़ धार आले (उस्तरे) वग़ैरा से ज़ख़्म लगाते हैं, फिर किसी जानवर के सींग का चौड़ा हिस्सा ज़ख़्म पर रख कर उस का बारीक हिस्सा अपने मुंह में ले कर ज़ोर से चूसते हैं, फिर उस सूराख़ को आटे वग़ैरा से बन्द कर देते हैं, फिर जब उखेड़ते हैं तो फ़ासिद (ख़राब) ख़ून निकल जाता है।

मुआ़वज़ा भी देता है तो येही हुक्म इन मुसीबतों और सख़्तियों का भी है, क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सख़्तियों पर भी इसी त़रह़ ह़म्द और शुक्र अदा करते थे जैसा कि ख़ुशी की चीज़ों पर। आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا سَاءَ وَ سَرَّ (1) तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं बुराइयों पर भी और भलाइयों पर भी।

क्या आप **अल्लाह** तआ़ला के क़ौल की त़रफ़ ग़ौर नहीं फ़रमाते कि

فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْــٴًـا وَّ يَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ۝۱۹ (2)

*हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को नापसन्द करो और **अल्लाह** तआ़ला ने उस में बहुत सी भलाई रखी हो।*

और **अल्लाह** तआ़ला जिस का नाम भलाई रखे वोह इस से बहुत ज़ियादा है कि तेरा ख़याल भी वहां तक पहुंच सके, और इस की ताईद इस क़ौल से होती है कि ने'मत सिर्फ़ वोही नहीं होती जिस में ख़ुशगवार मज़ा हो या जिसे त़बीअ़त के तक़ाज़े की वजह से नफ़्स चाहे बल्कि वोह चीज़ भी ने'मत है जिस से दरजात में रिफ़्अ़त नसीब हो। येही वजह है कि ने'मत को ज़ियादत के मा'ना में भी इस्ति'माल करते हैं और जब सख़्ती बन्दे के शरफ़ और दरजात की बुलन्दी का सबब है तो येह भी ह़क़ीक़त में ने'मत होगी अगर्चे अपनी ज़ाहिरी सूरत से इसे सख़्ती और तक्लीफ़ शुमार किया जाता है, इस को अच्छी त़रह़ याद रख ख़ुदा तुझे तौफ़ीक़ दे।

1.....यहां लफ़्ज़ "شـــــر" था, येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिहाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "سَرَّ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और **अल्लाह** उस में बहुत भलाई रखे। (پ٤،النساء:١٩)

फिर अगर तुम येह पूछो कि शुक्र गुज़ार अफ़्ज़ल है या सब्र करने वाला ? तो मा'लूम होना चाहिये कि शुक्र करने वाला अफ़्ज़ल है और इस की दलील **अल्लाह** तआला का क़ौल है फ़रमाया :

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ (1) *मेरे थोड़े बन्दे शुक्र गुज़ार हैं।*

तो **अल्लाह** तआला ने उन को **अख़स्सुल ख़वास**(2) बनाया है और नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की ता'रीफ़ में **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया :

اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ﴿۳﴾ (3) *यक़ीनन वोह शुक्र गुज़ार बन्दा था।*

और इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ (4) *वोह उस की ने'मतों का शुक्र गुज़ार था।*

और इस लिये भी कि येह इन्आ़म और आ़फ़िय्यत के मक़ाम पर होता है और इसी लिये कहा गया है कि अगर मुझ पर एह़सान किया जाए और मैं शुक्र करूं तो येह इस से मुझे ज़ियादा पसन्द है कि मैं सख़्ती में मुब्तला किया जाऊं और सब्र करूं।

और येह भी कहा गया है कि सब्र करने वाला ज़ियादा अफ़्ज़ल है क्यूंकि उस की मशक़्क़त चूंकि बड़ी है इस लिये इस का सवाब भी बड़ा और दरजात भी बुलन्द होंगे, **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया :

اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ (5) *हम ने उस को सब्र करने वाला पाया, वोह बड़ा अच्छा बन्दा था !*

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले। (پ۲۲،سبا:۱۳)
2 .....ख़ासों में से ख़ास। 3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था। (پ۱۵،بنی اسرائیل:۳) 4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस के एह़सानों पर शुक्र करने वाला। (پ۱۴،النحل:۱۲۱) 5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा ! (پ۲۳،ص:۴۴)

और **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

إِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾ (1)

साबिर लोग बिग़ैर हि़साब के पूरा पूरा अज्र दिये जाएंगे।

और **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ (2)

*और **अल्लाह** सब्र करने वालों को पसन्द करता है।*

मैं कहता हूं कि ह़क़ीक़त में शुक्र करने वाला साबिर के सिवा कोई नहीं और सब्र करने वाला ह़क़ीक़त में शुक्र गुज़ार के सिवा और कोई नहीं क्यूंकि शुक्र गुज़ार इम्तिह़ान में है। इस में सख़्ती के सिवा चारा नहीं जिस पर वोह लाज़िमी तौ़र पर सब्र करेगा और बे सब्री न करेगा क्यूंकि शुक्र एह़सान करने वाले की ऐसी ता'ज़ीम है जो उस की नाफ़रमानी से रोक दे और बे सब्री भी नाफ़रमानी है।

और सब्र करने वाला भी ने'मत से ख़ाली नहीं है जैसा कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि पहले मा'ना के मुत़ाबिक़ सख़्ती भी ह़क़ीक़त में ने'मत है तो जब उस पर सब्र करेगा तो ह़क़ीक़त में येह भी शुक्र होगा क्यूंकि सब्र येह है कि **अल्लाह** की ता'ज़ीम के लिये अपने नफ़्स को बे सब्री से रोके और शुक्र भी बिऐ़निही येही है क्यूंकि वोह ऐसी ता'ज़ीम है जो नाफ़रमानी से बचाए और इस लिये भी कि शुक्र गुज़ार अपने नफ़्स को नाशुक्री से रोकता है और नाफ़रमानी से सब्र करता है और अपने नफ़्स को शुक्र पर आमादा करता है और इ़बादात पर सब्र करता है तो ह़क़ीक़त में येह भी

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** साबिरों ही को इन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती। (پ۲۳،الزمر:۱۰) 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र वाले **अल्लाह** को मह़बूब हैं। (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۴۶)

साबिर है और साबिर ने **अल्लाह** तआ़ला की ता'ज़ीम की जिस ने उसे बे सब्री से रोक दिया और सब्र पर आमादा किया तो उस ने **अल्लाह** तआ़ला का शुक्रिया अदा किया तो ह़क़ीक़त में येही शाकिर है और इस लिये भी कि नफ़्स को नाशुक्री से रोकना जब कि नफ़्स इस का इरादा रखता हो, एक सख़्ती है जिस पर शुक्र गुज़ार सब्र करता है और साबिर की तौफ़ीक़ और इ़स्मत एक ने'मत है जिस पर साबिर शुक्र गुज़ार है, तो इन दोनों में से कोई एक भी दूसरे से अलग नहीं।

और इस लिये भी कि वोह बसीरत जो इन दोनों पर इन्सान को आमादा करती है वोह एक ही है और वोह हमारे बा'ज़ उ़लमा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के क़ौल के मुत़ाबिक़ इस्तिक़ामत की बसीरत है। इन्हीं वुजूहात की बिना पर हम ने कहा है कि येह एक दूसरे से अलग नहीं हैं। इस जुम्ले को ख़ूब ज़ेहन नशीन कर और तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है।

फ़स्ल

ऐ मर्दे ख़ुदा ! तुझ पर लाज़िम है कि इस आसान सी घाटी को उ़बूर करने के लिये अपनी हिम्मत ख़र्च कर दे येह ऐसी घाटी है कि जिस की मशक़्क़त बहुत थोड़ी है, मुआ़वज़ा बहुत ज़ियादा है और जिस का वुजूद निहायत अ़ज़ीज़ और क़द्रो मन्ज़िलत निहायत अ़ज़ीम है। दो चीज़ों पर ग़ौर कर : पहली येह है कि ने'मत उस को दी जाती है जो इस की क़ीमत को जानता हो, और इस की क़द्र को सिर्फ़ शुक्र गुज़ार ही जानता है और हमारे इस क़ौल की दलील **अल्लाह** तआ़ला का क़ौल है जो कि ख़ुदावन्दे तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से ह़िकायत करते हुवे और उन का जवाब देते हुवे फ़रमाया है :

اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝۵۳ (1)

क्या येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला ने हम में से एह़सान किया है ? क्या अल्लाह तआ़ला शुक्र गुज़ारों से वाक़िफ़ नहीं है ?

तो उन जाहिल लोगों ने येह ख़याल कर रखा था कि अ़ज़ीम ने'मत और बड़ा एह़सान उसी पर किया जाता है जो माली लिहाज़ से ज़ियादा और ह़स्बो नसब के लिहाज़ से अशरफ़ हो, तो कहने लगे : इन फ़क़ीरों का एक मक़ाम है कि उन के क़ौल के मुत़ाबिक़ ग़ुलाम और आज़ाद थे कि इन को येह ने'मते अ़ज़ीमा दी जाए और हमें इस से मह़रूम रखा जाए, तो इन्हों ने तकब्बुर की राह और मज़ाक़ के **त़रीक़**(2) पर कहा : क्या येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने हम में से एह़सान किया है। तो उन पर अल्लाह तआ़ला ने इस रोशन नुक्ते से जवाब दिया और फ़रमाया :

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝۵۳ (3)

क्या ख़ुदावन्दे तआ़ला शुक्र गुज़ारों को नहीं जानता ?

जिस कलाम का मुद्दआ़ येह है कि आक़ाए करीम उसी को ने'मत देता है जो उस की क़द्र को पहचानता हो और उस की क़द्र वोही पहचानता है जो उस पर अपने नफ़्स और दिल से मुतवज्जेह हो, और दूसरी चीज़ों को छोड़ कर उस को पसन्द कर ले और उस के ह़ुसूल में जो मुश्किलात बरदाश्त करना पड़ें उन की परवाह न करे फिर उस का शुक्र अदा करने के लिये हमेशा **मुनइ़म**(4) के दरवाज़े पर खड़ा रहे और हमारे अज़ली इ़ल्म में येह पहले से

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया ? हम में से क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को ? (پ۷،الانعام:۵۳)
(2).....त़ौर। (3).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को ? (پ۷،الانعام:۵۳) (4).....ने'मत देने वाले।

मौजूद था कि येह कमज़ोर लोग इस ने'मत की क़द्र को जानेंगे और इस के शुक्रिया के लिये खड़े होंगे तो तुम्हारी निस्बत येह इस ने'मत के ज़ियादा ह़क़दार थे और तुम्हारी दौलतमन्दी और सरवत और दुन्यावी जाहो ह़श्मत और ह़सबो नसब की **अल्लाह** को कोई परवाह नहीं तुम लोग तमाम तर ने'मते दुन्या और उस के सामान और ह़सबो नसब की बुलन्दी को समझते हो, न कि दीन, इ़ल्म, ह़क़ और मा'रिफ़त को। येही वजह है कि तुम लोग इसी की ता'ज़ीम करते हो और इसी पर फ़ख़्र करते हो क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि तुम इस दीन और इ़ल्म और ह़क़ को अगर क़बूल करते हो तो उस पर एह़सान जताते हो जो येह चीज़ें तुम्हारे पास ले कर आया है और येह इस लिये है कि तुम इन चीज़ों को ह़क़ीर समझते हो और इन की बहुत थोड़ी परवाह करते हो और येह कमज़ोर लोग इस पर अपनी जानें क़ुरबान करते हैं इस की आबयारी के लिये अपना ख़ून देते हैं और जो कुछ इन के हाथों से इस सिलसिले में निकल जाता है इस की परवाह नहीं करते और न उन की परवाह करते हैं जो इन से दुश्मनी रखते हैं और येह इस लिये है कि तुम्हें मा'लूम हो जाए कि येही वोह लोग हैं जिन्हों ने इस की क़द्र को पहचाना जिन केदिलों में इस की ता'लीम **रासिख़**(1) है और इस के सिवा हर चीज़ का ज़ाएअ़ हो जाना उन पर निहायत आसान है और इस में हर सख़्ती को बरदाश्त करना इन को पसन्द है तो येह लोग अपनी तमाम उ़म्र को उस के शुक्रिया में ख़त्म करते हैं येही वजह है कि वोह इस ने'मते अ़ज़ीमा और एह़साने जलीला के अहल क़रार पाए और हमारे साबिक़ा इ़ल्म की वजह से हम ने उन को ख़ास कर लिया और तुम्हें इस से मह़रूम कर दिया।

फिर मैं कहता हूं लोगों में से हर त़रीक़ का येही ह़ाल है कि जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने दीनी ने'मतों में से किसी ने'मत के

1..... पुख़्ता।

साथ ख़ास किया है ख़्वाह वोह इल्मी हो या अ़मली, जब तुम ह़क़ीक़त में ग़ौर करोगे तो इन लोगों को इस की क़द्र का सब से ज़ियादा जानने वाला और इस की ता'ज़ीम में सब से ज़ियादा सख़्त और इस के हुसूल में से ज़ियादा कोशिश करने वाला और इस की ता'ज़ीम में सब से बड़ा और इस के शुक्रिये में सब से ज़ियादा मज़्बूत़ पाओगे।

और बा'ज़ लोगों को **अल्लाह** तआ़ला ने इस से मह़रूम किया है उन को अपनी तक़्दीर के मुत़ाबिक़ इसी बे परवाही और बे अदबी की वजह से मह़रूम किया है फिर अगर इल्म और इ़बादत की ता'ज़ीम अ़वाम और बाज़ारी लोगों के दिलों में भी वैसी ही होती जैसी कि उ़लमा और इ़बादत गुज़ारों के दिल में है तो वोह कभी बाज़ारों को इख़्तियार न करते और इस को छोड़ देना उन पर आसान हो जाता, क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि कोई **फ़क़ीह**[1] जब किसी ऐसे मस्अले को दरयाफ़्त कर लेता है जिस में पहले उस को **इल्तिबास**[2] था तो उस का दिल कितना खुश हो जाता है ! उस की खुशी कितनी बड़ी होती है ! और उस के दिल में उस का मक़ाम कितना बुज़ुर्ग होता है यहां तक कि अगर उस को हज़ार दीनार मिल जाता तो उसे इतनी खुशी न होती और कभी दीन के मुआ़मले में कोई मस्अला उस को परेशान रखता है तो वोह इस में साल भर तक बल्कि दस साल बल्कि बीस साल तक भी ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है और फिर भी वोह इस से उक्ता नहीं जाता यहां तक कि कभी **अल्लाह** तआ़ला उस को येह मस्अला समझा देता है तो फिर उस को **अल्लाह** का बहुत बड़ा एह़सान और सब से बड़ी ने'मत समझता है और इस की वजह से अपने आप को तमाम **अग़निया**[3] से ज़ियादा ग़नी और हर शरीफ़ से ज़ियादा अशरफ़ समझता है बल्कि कभी इस मस्अले को किसी बाज़ारी या किसी सुस्त त़ालिबे इल्म के सामने बयान कर देता है येह समझते हुवे कि

1...इल्मे फ़िक़्ह में माहिर आ़लिम। 2...पेचीदा पन। 3...दौलत मन्दों।

वोह भी इल्म की मह़ब्बत और रग़बत में इसी जैसा है, पस वोह उस की त़रफ़ कान भी नहीं रखता और कभी अगर उस पर कलाम लम्बा हो जाए तो उक्ता जाता है या सो जाता है अगर उस के लिये येह ज़ाहिर हो जाए तो उसे कोई मुआ़मला नहीं समझता तो येही मुआ़मला अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ तौबा करने वाले का है कि वोह रियाज़त और नफ़्स को शहवात और लज़्ज़ात से मह़फ़ूज़ रखने के लिये कोशिश करता है और अपने आ'ज़ा को ह़रकात व सकनात में किस त़रह़ पाबन्द रखता है कि हो सकता है कि शायद अल्लाह तआ़ला पूरी त़हारत और आदाब के साथ दो रकअ़त की तौफ़ीक़ दे दे और अल्लाह तआ़ला की जनाब में कितनी ज़ारी करता है कि अल्लाह तआ़ला उस को सफ़ाई और ह़लावत के साथ एक साअ़त की मुनाजात नसीब कर दे अगर वोह महीना भर में बल्कि साल भर में बल्कि अपनी सारी ज़िन्दगी में एक मरतबा भी इस पर कामयाब हो जाए तो इस को बहुत बड़ा एह़सान और सब से अ़ज़ीम ने'मत समझता है और कितना ख़ुश होता है और कितना अल्लाह तआ़ला का शुक्रिया अदा करता है और उन मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों की कोई परवाह नहीं करता जो उस ने रातों को जाग कर उठाई हैं और अपनी लज़्ज़तों को छोड़ा है।

फिर तू उन लोगों को देखता है जो येह ख़याल करते हैं कि वोह इ़बादत की रग़बत रखते हैं अगर इसी त़रह़ की ख़ालिस इ़बादत मसलन उन के रात के खाने का एक लुक़्मा भी नुक़्सान करने के बा'द ह़ासिल हो, या किसी ऐसी बात के छोड़ने के बा'द जो उन को मह़बूब हो या उन की आंखों से एक साअ़त की नींद रोकने के बा'द ह़ासिल हो तो उन के नफ़्स इन पर आमादा नहीं हुवे और न उन के दिल ख़ुश हुवे हैं और अगर इत्तिफ़ाक़ से उन को ख़ालिस इ़बादत ह़ासिल हो भी जाए तो वोह इसे कोई बड़ा मुआ़मला नहीं समझते और न वोह उस का कोई बड़ा शुक्रिया अदा करते हैं बल्कि

उन की ख़ुशी उस वक़्त होती है और उन की ज़बान से ह़म्द का कलिमा उस वक़्त निकलता है जब उन को कोई दिरहम मिल जाए या कोई रोटी का टुकड़ा मिल जाए या अच्छा सालन मिल जाए या काफ़ी मुद्दत तक बदन की सलामती के लिये नींद आ जाए तो उस वक़्त कहते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه येह **अल्लाह** का एह़सान है। फिर येह ग़ाफ़िल आ़जिज़ लोग उन नेक बख़्त कोशिश और इजतिहाद करने वालों के बराबर कैसे हो सकते हैं? येही वजह है कि येह मिस्कीन लोग इस भलाई से मह़रूम हैं और ख़ुदा की तौफ़ीक़ दिये गए लोग इसी पर कामयाब हैं और इसी त़रह़ हिदायत के मुआ़मले को अह़कमुल ह़ाकिमीन ने तक़्सीम कर दिया है और वोह सब से ज़ियादा जानने वाला है, पस येह तफ़्सील है **अल्लाह** तआ़ला के इस क़ौल की :

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ (1) *क्या **अल्लाह** तआ़ला शुक्र गुज़ारों को नहीं जानता?*

पस इस को समझ और इस के ह़क़ की रिआ़यत कर और जान ले कि जिस भलाई की तू ख़्वाहिश करता है उस से तू सिर्फ़ इसी वजह से मह़रूम है कि तू उस के क़द्र को नहीं जानता सो तू अपनी हिम्मत सर्फ़ कर कि **अल्लाह** की ने'मतों और पूरी ता'ज़ीम की क़द्र जाने फिर तू उस का अहल हो जाएगा और उस की अ़त़ा तुझे नसीब होगी फिर वोह तुझ पर उस की बक़ा के साथ भी एह़सान करेगा जैसा कि उस ने तुझ पर इब्तिदाअन एह़सान किया जैसा कि हम इस को दूसरे अस्ल में बयान करेंगे बेशक वोही है शफ़्क़त करने वाला मेहरबान।

दूसरा अस्ल येह है कि जो आदमी किसी चीज़ की क़द्र न जाने वोह ने'मत उस से छीन ली जाती है और जो क़द्र नहीं जानता वोही नाशुक्रा है जिस ने उस ने'मत की क़द्र न की और उस का शुक्र अदा न किया और इस की दलील **अल्लाह** तआ़ला का क़ौल है :

1..**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या **अल्लाह** ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को? (پ۷،الانعام:۵۳)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِیْنَ۝ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا (الآية)(1)

और पढ़ इन पर ख़बर उस आदमी की जिस को हम ने अपनी आयतें दीं फिर वोह इस से निकल गया फिर शैत़ान उस के पीछे लगा सो वोह गुमराहों से हो गया और अगर चाहते हम तो उस को इन आयतों के ज़रीए से बुलन्द कर देते।

कलाम का मक़्सद येह है कि हम ने उस बन्दे पर बड़ी बड़ी ने'मतों और अ़ज़ीम एह़सानात से दीन के मुतअ़ल्लिक़ जो हम ने उस को बसीरत दी थी इन्आ़म किया और बड़ा रुत्बा और रफ़ीअ़ मन्ज़िलत अपने दरवाज़े पर उस को अ़त़ा की ताकि वोह हमारे पास बुलन्द मर्तबा अ़ज़ीमुल क़द्र बड़े जाहो जलाल वाला हो जाए लेकिन वोह हमारी ने'मत की क़द्र से जाहिल रहा और ह़क़ीर और कमीनी दुन्या की त़रफ़ माइल हो गया और अपनी कमीनी और रद्दी ख़्वाहिशाते नफ़्स को इख़्तियार कर लिया और येह न जाना कि सारी दुन्या **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक दीनी ने'मतों में से एक ने'मत के बराबर भी नहीं है और येह मच्छर के एक पर की हैसिय्यत भी नहीं रखती तो इस आदमी की मिसाल उस कुत्ते की सी है जो इ़ज़्ज़त और राह़त और तौहीन और मशक़्क़त में तमीज़ नहीं कर सकता और न रिफ़्अ़त और शरफ़ को ह़क़ारत और **ख़िस्सत**(2) से अलग देखता है तो येह दोनों ह़ालतों में हांपता है, उस के नज़्दीक तमाम बुज़ुर्गी रोटी के एक टुकड़े में है जिसे वोह

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब इन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह इन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते। (پ۹،الاعراف:۱۷۵۔۱۷٦) 2 .....कमीनगी।

खा ले या दस्तरख़्वान की एक हड्डी में जिसे उस की त़रफ़ फेंक दिया जाए बराबर है कि तू उसे अपने साथ तख़्त पर बिठाए या अपने सामने गन्दगी और मिट्टी में खड़ा कर दे सो उस की हिम्मत और करामत और ने'मत सब कुछ इसी में है, तो इस बुरे इन्सान ने जब हमारी ने'मत की क़दर को न पहचाना और जो बुज़ुर्गी हम ने उस को दी थी उस का ह़क़ न पहचाना तो उस की बसीरत कुन्द हो गई और हमें छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ तवज्जोह करने के सबब से मक़ामे क़ुर्ब में उस का अदब बदतर सूरत इख़्तियार कर गया और हमारी ने'मतों के तज़किरे को छोड़ कर ह़क़ीर दुन्या और ख़सीस लज़्ज़त में मशग़ूल हो गया, तो हम ने उस की त़रफ़ क़हर की नज़र से देखा और उसे इन्साफ़ के मैदान में खड़ा कर दिया, और उस के मुतअ़ल्लिक़ मज़म्मत का फ़ैसला नाफ़िज़ किया फिर उस से अपनी तमाम ख़िलअ़तें और करामतें छीन लीं, और उस के दिल से अपनी मा'रिफ़त खींच ली फिर वोह नंगा हो कर उन तमाम ने'मतों से बाहर निकल गया, जो हम ने उस को अपने फ़ज़्ल से दी थीं। पस वोह एक हांका हुवा कुत्ता और शैत़ान मर्दूद हो गया। हम **अल्लाह** की नाराज़ी और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब से उसी की पनाह चाहते हैं वोह हम पर शफ़्क़त करने वाला मेहरबान है।

फिर एक बादशाह की मिसाल पर क़नाअ़त कर कि वोह अपने किसी बन्दे की इ़ज़्ज़त करे और उसे ख़ास अपने कपड़े पहनाए और उसे अपने क़रीब करे और अपने तमाम ख़ादिमों, दरबानों पर उस को सरदार बना दे और उसे अपने दरवाज़े की मुलाज़मत का हुक्म दे फिर हुक्म दे कि उस के लिये किसी दूसरी जगह में मह़ल ता'मीर किये जाएं और उस के लिये बुलन्द तख़्त बिछाए जाएं, उस के लिये त़रह़ त़रह़ के खाने चुने जाएं, आरास्ता

लोंडियां उस को मुहय्या की जाएं, गुलाम उस के सामने दस्त बस्ता खड़े हों यहां तक कि जब वोह इस मुलाज़मत से वापस जाएं तो उस जगह एक मख़्दूम बादशाह की है़सिय्यत से बिठाया जाए और उस की ख़िदमत की ह़ालत और अपने मुल्क और विलायत की ह़ालत में एक ही साअ़त का फ़ासिला हो या इस से भी कम फिर अगर येह बन्दा बादशाह के दरवाज़े पर जानवरों की निगरानी करते हुवे किसी नोकर को रोटी का टुकड़ा खाते देखे या किसी कुत्ते को हड्डी चबाते हुवे तो बादशाह की ख़िदमत को छोड़ कर उन को देखने में मश्ग़ूल हो जाए और अपनी तवज्जोह उस त़रफ़ फेर दे और शाही ख़िल्अ़तों और करामतों की त़रफ़ तवज्जोह न करे और उस मुलाज़िम की त़रफ़ दौड़े और अपना हाथ फैला कर इस से रोटी का टुकड़ा मांगने लगे या किसी कुत्ते को हड्डी चबाते देख कर मुज़ाहमत करने लगे और उन पर रश्क करे और उन की इस ह़ालत को बड़ा अच्छा जाने तो क्या बादशाह जब उस आदमी को इस ह़ालत में देखेगा तो येह न समझेगा कि येह बे वुक़ूफ़ और कमीना हिम्मत आदमी है ? उस ने हमारी **करामत**(1) का ह़क़ न पहचाना और हम ने इस को ख़िल्अ़त अ़ता कर के और अपनी बारगाह में ह़ाज़िर कर के और अपनी इनायत इस पर मब्ज़ूल कर के इस को जो इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई की थी इस ने इस के क़द्र को नहीं देखा, और हम ने इस के लिये दौलत के ज़ख़ीरे और कई क़िस्म की ने'मतें मुहय्या की थीं येह कमीना हिम्मत और **अ़ज़ीमुल जहल**(2) और बद तमीज़ इन्सान है, इस से ख़िल्अ़तें छीन लो और इस को हमारे दरवाज़े से धुतकार दो।

पस येही ह़ाल आ़लिम का है जब वोह दुन्या की त़रफ़ झुक जाए और येही ह़ाल आ़बिद का है जब वोह ख़्वाहिश की पैरवी करने लगे बा'द इस के कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस को अपनी

1.....नवाज़िशात। 2.....बहुत ही जाहिल।

इबादत और अपनी ने'मतों की पहचान और अपनी शरीअ़त और इस के अह़काम से सरफ़राज़ किया था फिर उस ने इन के क़द्र को न जाना तो वोह **अल्लाह** के नज़्दीक सब से ह़क़ीर और सब से ज़लील है कि इस में रग़बत करता है और इस की ह़िर्स रखता है और उस के दिल में येह सब से बड़ी और सब से मह़बूब चीज़ है उन तमाम चीज़ों से जो इस को इल्म और इबादत और ह़िक्मत और ह़क़ाइक़ से हम ने इनायत की थीं और येही ह़ाल है उस आदमी का कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने त़रह़ त़रह़ की तौफ़ीक़ और इस्मत से ख़ास़ कर लिया और अपनी **ख़िदमत**[1] और इबादत के अन्वार से उस को ज़ीनत बख़्शी और अकसर अवक़ात में रह़मत की नज़र से उस को देखा और उस की वजह से फ़िरिश्तों पर फ़ख़्र किया और उस को अपने दरवाज़े की सरदारी और वजाहत बख़्शी और उसे शफ़ाअ़त के मक़ाम पर खड़ा किया और उस को इ़ज़्ज़त की मन्ज़िल पर उतारा यहां तक कि जब वोह इस ह़ैसिय्यत का हो गया कि अगर उस को पुकारे तो वोह क़बूल करे और लब्बैक कहे और अगर उस से मांगे तो उस को दे और ग़नी कर दे और अगर दुन्या भर की शफ़ाअ़त करे तो उन के मुतअ़ल्लिक़ उन की शफ़ाअ़त को क़बूल करे और उसे राज़ी करे और अगर ख़ुदा को क़सम दे तो वोह उस की क़सम को पूरा करे और अगर उस के दिल में किसी चीज़ का ख़याल आए तो उस को सुवाल करने से पहले अ़त़ा करे फिर जिस आदमी की येह ह़ालत हो और फिर भी वोह इन ने'मतों की क़द्र न पहचाने और इस मन्ज़िलत की क़द्र को न देखे और बे ह़या नफ़्स की रद्दी ख़्वाहिशात की त़रफ़ चला जाए या कमीनी दुन्या के ह़ुसूल में लग जाए जिस को कोई बक़ा नहीं और उन करामतों और ख़िल्अ़तों और हदिय्यों और एह़सानों और अ़त़ाओं को न देखे फिर उन चीज़ों को न मल्ह़ूज़ रखे जिन का उस ने वा'दा

1.....बन्दगी।

किया है जो आख़िरत में इस के लिये तय्यार हैं अ़ज़ीम सवाब और हमेशा की रहने वाली पूरी ने'मतें तो येह कितना ह़क़ीर आदमी है और कितनी बदतर ह़ालत में बन्दा है और अगर वोह जाने तो कितने ख़त़रनाक मक़ाम पर है और इस का येह काम अगर वोह समझे तो कितनी बड़ी बे ह़याई है। हम **अल्लाह** तआ़ला रह़ीम और **एह़सान फ़रमाने वाले**[1] से सुवाल करते हैं कि वोह अपने अ़ज़ीम फ़ज़्ल और वसीअ़ रह़मत से हमारे ह़ालात को दुरुस्त कर दे, बेशक वोह सब रह़्म करने वालों से ज़ियादा रह़्म करने वाला है।

तो ऐ मर्द ! तुम पर लाज़िम है कि तू अपनी हिम्मत सर्फ़ करे ताकि तू अपने ऊपर **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात के क़द्र को पहचाने और जब तुझ पर दीन की ने'मत का एह़सान फ़रमाए तो दुन्या और इस के सामान की त़रफ़ तवज्जोह करने से परहेज़ कर क्यूंकि येह तुझ से एक त़रह़ की सुस्ती होगी कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुझे दीन की ने'मतों का वाली बनाया और फिर तूने क़द्र न की क्या तू ने **अल्लाह** तआ़ला के क़ौल को नहीं सुना जो सय्यिदुल मुर्सलीन (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया है :

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ (الاٰية)[2]

और बेशक दी हम ने तुझ को सात आयतें बार बार पढ़ी जाने वाली और क़ुरआन बुज़ुर्ग अ़त़ा फ़रमाया तो हम ने उन को त़रह़ त़रह़ का सामान दिया है उस की त़रफ़ निगाह उठा कर भी न देख।

1.....यहां से लफ़्ज़ "शफ़ीक़" को ह़ज़्फ़ कर के "एह़सान फ़रमाने वाले" कर दिया है क्यूंकि इस नाम का इत़्लाक़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मन्अ़ है। (इ़ल्मिय्या)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने तुम को सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं और अ़ज़मत वाला क़ुरआन अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने इन के कुछ जोड़ों को बरतने को दी। (پ١٤،الحجر:٨٧۔٨٨)

इस का मत़लब येह है कि जिसे कुरआने अ़ज़ीम दिया जाए उस का ह़क़ है कि वोह ह़क़ीर दुन्या की त़रफ़ पसन्दीदगी और रिज़ामन्दी की निगाह से कभी न देखे चे जाइके उस को इस में रग़बत हो, इस पर **अल्लाह** तआ़ला का हमेशा शुक्र अदा करे कि येह वोह बुज़ुर्गी है जिस की **ह़िर्स**[1] **अल्लाह** तआ़ला के दोस्त इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) ने अपने बाप (मुराद चचा है) के मुतअ़ल्लिक़ की, कि उस पर एह़सान करे लेकिन उस ने इस को क़बूल न किया और **अल्लाह** तआ़ला के ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाहिश की, कि अपने चचा अबू त़ालिब पर इस का एह़सान करे उस ने भी क़बूल न किया।

और बाक़ी रहा दुन्या का सामान तो येह वोह चीज़ है जो **अल्लाह** तआ़ला हर काफ़िर, फ़िरऔ़न, मुल्ह़िद, ज़िन्दीक़, जाहिल और फ़ासिक़ को अ़त़ा फ़रमाता है जो कि **अल्लाह** की निगाह में सब से ज़ियादा ज़लील हैं यहां तक कि वोह इस में डूब जाते हैं और इस सामान से हर एक नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) बरगुज़ीदा सिद्दीक़, आ़लिम और आ़बिद को मह़रूम कर देता है जो कि उस की निगाह में सब से बेहतरीन मख़्लूक़ हैं यहां तक कि इन को रोटी का टुकड़ा और कपड़े का चीथड़ा भी बा'ज़ दफ़्आ़ नसीब नहीं होता, और उन पर एह़सान जताता है कि उन को इस गन्दगी से आलूदा नहीं किया, यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने मूसा और हारून (عَلَیْہِمَا السَّلام) से फ़रमाया :

अगर मैं चाहूं तो तुम को ज़ीनत दे दूं ताकि फ़िरऔ़न को मा'लूम हो जाए जब कि उस को मुलाह़ज़ा करे येह कि उस की क़ुदरत इस से आ़जिज़ है तो मैं कर सकता हूं लेकिन मैं तुम दोनों से दुन्या को लपेट लूंगा और इस को तुम्हारे नज़्दीक न आने दूंगा और मैं अपने दोस्तों से ऐसा ही करता हूं, मैं उन को दुन्या की ने'मतों

---

1 .....ख़्वाहिश।

से इस त़रह़ हांक देता हूं जिस त़रह़ मुशिफ़क़ चरवाहा अपने ऊंटों को ख़त़रनाक जगहों से रोक देता है और दुन्या के ऐ़श और इत़मीनान को उन से अलग रखता हों और येह इस लिये नहीं कि वोह मेरी निगाह में ज़लील हैं बल्कि इस लिये कि वोह मेरी **करामत**[1] से पूरा ह़िस्सा ह़ासिल कर सकें और **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَلَوْلَاۤ اَنْ یَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ یَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُیُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ (الآية)[2]

और अगर येह ख़त़रा न होता कि लोग एक ही गुरौह हो जाएंगे तो हम ख़ुदा तआ़ला का इन्कार करने वालों के मकानों की छतें चांदी की बना देते।

पस दोनों उमूर में ग़ौर कर अगर तुझे बसीरत ह़ासिल है और कह तमाम ता'रीफ़ उस **अल्लाह** के लिये है कि जिस ने हम पर अपने औलिया व अस्फ़िया की ने'मतों से एह़सान फ़रमाया और अपने दुश्मनों के फ़ितने को हम से दूर कर दिया ताकि हम "**ह़म्दे अक्बर**" और पूरे शुक्र और बड़े एह़सान और ने'मते उ़ज़्मा के साथ मख़्सूस हो जाएं और ह़िस्सा ह़ासिल करें जो कि इस्लाम है, पस येह ने'मत इस क़ाबिल है कि तू इस की शुक्र गुज़ारी से दिन रात में किसी वक़्त भी ग़फ़्लत न करे अगर तू इस के क़द्र को पहचानने से आ़जिज़ है तो जान ले कि अगर तू दुन्या की इब्तिदा ही में पैदा कर लिया जाता और और इस्लाम की ने'मत के शुक्रिया अदा करने में अव्वल वक़्त से ले कर हमेशा तक मसरूफ़ रहता तो तू इस का ह़क़ अदा न कर सकता बल्कि इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम के बा'ज़ ह़ुक़ूक़ भी अदा न होते।

1.....नवाज़िशात। 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर येह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाएं तो हम ज़रूर रह़मान के मुन्किरों के लिये चांदी की छतें (बनाते)। (پ٢٥،الزخرف:٣٣)

मैं कहता हूं जानना चाहिये कि येह मक़ाम मेरी दानिस्त के मुत़ाबिक़ जो मैं इस ने'मत का क़द्र जानता हूं इस का मुतह़म्मिल नहीं हो सकता, अगर्चे इस के मुतअ़ल्लिक़ एक करोड़ वरक़ भी लिखे जाएं तो फिर भी मेरा इल्म इस से ज़ियादा होता, बा वुजूद इस ए'तिराफ़ के कि जो कुछ मैं जानता हूं वोह न जानने के मुक़ाबिल में तमाम दुन्या के समन्दरों के मुक़ाबले में एक क़त़रे की ह़ैसिय्यत रखता है। क्या तू ने सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ित़ाब करते हुवे **अल्लाह** तआ़ला का क़ौल नहीं सुना ?

مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَ لَا الْاِيْمَانُ (1)

नहीं था तू जानता कि किताब क्या चीज़ है और ईमान क्या चीज़ !

"اِلٰی اَن قَالَ" यहां तक कि फ़रमाया :

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾ (2)

*और तुझे वोह कुछ सिखाया जो तू नहीं जानता था और तुझ पर **अल्लाह** तआ़ला का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।*

और **अल्लाह** तआ़ला ने एक क़ौम को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया :

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ (الاٰية) (3)

*बल्कि **अल्लाह** तआ़ला तुम पर एह़सान जतलाता है कि उस ने तुम को ईमान की राहनुमाई की।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस से पहले न तुम किताब जानते थे न अह़कामे शरअ़ की तफ़्सील। (پ۲۵،الشوریٰ:۵۲)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। (پ۵،النساء: ۱۱۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि **अल्लाह** तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की। (پ ۲٦، الحجرات:۱۷)

और क्या तू ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ौल नहीं सुना जब कि आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने एक आदमी से सुना कि वोह कह रहा था :

"اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلَی الْاِسْلَام"[1] तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं कि उस ने इस्लाम की दौलत बख़्शी। तो आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : तू ने **अल्लाह** तआ़ला की बहुत बड़ी ने'मत पर ता'रीफ़ की।

और जब या'क़ूब (عَلَیْہِ السَّلَام) के पास ख़ुश ख़बरी लाने वाला आया तो आप ने फ़रमाया : तू ने युसूफ़ (عَلَیْہِ السَّلَام) को किस दीन पर छोड़ा। उस ने कहा : दीने इस्लाम पर तो आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने फ़रमाया : अब ने'मत पूरी हो गई।

और कहा गया है कि इस से ज़ियादा कोई कलिमा **अल्लाह** तआ़ला को मह़बूब नहीं और न इस से ज़ियादा शुक्र गुज़ारी में कोई कलिमा है कि बन्दा कहे : तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने हम पर एह़सान फ़रमाया और दीने इस्लाम की राहनुमाई की।

और इस से होशयार रहना कि इस्लाम के शुक्राने में कभी ग़फ़्लत न करना और इस्लाम और मा'रिफ़त और तौफ़ीक़ और इ़स्मत के जिस ह़ाल पर तू फ़ाइज़ है इस से धोका न खा जाना क्यूंकि इस के बा वुजूद अम्न और ग़फ़्लत का येह मक़ाम नहीं है क्यूंकि तमाम उमूर का तअ़ल्लुक़ अन्जाम से है।

सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی फ़रमाया करते थे : जो आदमी अपने दीन पर मुत़मइन हो जाए उस से दीन छीन लिया जाता है।

और हमारे शैख़ رَحْمَۃُ اللہ फ़रमाया करते थे : जब तू काफ़िरों का ह़ाल और उन का हमेशा आग में रहना सुने तो अपने नफ़्स पर

---

1 ......شعب الایمان، باب فی تعدید نعم اللہ...الخ، ۴/۱۱۹، حدیث: ۴۴۹۸۔

मुत़मइन न हो क्यूंकि मुआ़मला ख़त़रनाक है और तू नहीं जानता कि अन्जाम क्या होगा ? और तेरे मुतअ़ल्लिक़ ग़ैब में क्या फ़ैसला हो चुका है ? तू अपने अवक़ात की सफ़ाई पर मग़रूर न हो कि इन के नीचे निहायत गहरी आफ़तें मौजूद हैं ।

और बा'ज़ ने कहा : ऐ इस्मत से धोका खाने वाले गुरौह इस के नीचे त़रह़ त़रह़ की आफ़त है। **अल्लाह** तआ़ला ने इब्लीस को त़रह़ त़रह़ की इस्मत से मुज़य्यन किया और वोह ह़क़ीक़त में उस के नज़दीक मलऊ़न था । और "**बलआ़म**" को अपनी विलायत के नूर से मुज़य्यन किया ह़ालांकि वोह उस के नज़दीक ह़क़ीक़त में दुश्मन था।

और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : कितने ही लोगों को एह़सान कर के मोहलत दी जाती है और कितने ही आदमी अच्छे क़ौल से फ़ितने में मुब्तला हैं, और कितने ही आदमी ख़ुदा की पर्दा पोशी से धोके में मुब्तला हैं ।

जुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि वोह कौन सी ख़त़रनाक चीज़ है जिस से बन्दा धोका खा जाता है, तो कहा : **अल्त़ाफ़**(1) और करामात से, इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है :

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَیْثُ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾ (2) *कि इन को इस त़रह़ आहिस्ता आहिस्ता खींच रहे हैं कि वोह नहीं जानते ।*

अहले मा'रिफ़त ने कहा कि हम उन पर ने'मतें पूरी करते हैं और उन को शुक्र अदा करना भुला देते हैं, जैसा कि किसी शाइ़र ने कहा है :

1.....लुत़्फ़ो करम । 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जल्द हम इन्हें आहिस्ता आहिस्ता अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से इन्हें ख़बर न होगी। (پ۹،الاعراف:۱۸۲)

(۱)اَحۡسَنۡتَ ظَنَّكَ بِالۡاَيَّامِ اِذۡ حَسَنَتۡ   وَلَمۡ تَخَفۡ سُوۡءَ مَا يَاۡتِيۡ بِهِ الۡقَدَرُ

(۲)وَسَالَمَتۡكَ اللَّيَالِيۡ فَاغۡتَرَرۡتَ بِهَا   وَعِنۡدَ صَفۡوِ (1) اللَّيَالِيۡ يَحۡدُثُ الۡكَدَرُ

तर्जमा : (1) जब तुझ पर अच्छे दिन हों तो तू उन को अच्छा समझता है और इस का ख़ौफ़ नहीं रखता जो तक़्दीर बुरे दिन ले आती है।

(2) और तेरी रातें सलामती से गुज़रती हैं तो तू इस का धोका खा जाता है और रातों की सफ़ाई के वक़्त कदूरतें पैदा हो जाती हैं।

और जान लेना चाहिये कि जब तू बहुत ज़ियादा क़रीब हो जाए तो तेरा मुआ़मला बहुत ज़ियादा ख़ौफ़नाक और मुश्किल है और तेरा अम्र बहुत ज़ियादा सख़्त और बारीक है और तेरा ख़त़रा बहुत बड़ा है कि कोई चीज़ जब इन्तिहाई बुलन्दी पर पहुंच जाती है तो जब वोह नीचे गिरती है तो बहुत बुरी त़रह़ से गिरती है, जैसा कि कहा गया है :

مَا طَارَ طَيۡرٌ فَارۡتَفَعَ   اِلَّا كَمَا طَارَ وَقَعَ

तर्जमा : जब कोई परन्दा उड़ कर बुलन्द चला जाता है तो जिस त़रह़ से उड़ता है उसी त़रह़ गिरता है।

तो इस वक़्त मुत़मइन होने और शुक्राने से ग़फ़्लत बरतने और अपने ह़ाल की ह़िफ़ाज़त में आ़जिज़ी और ज़ारी को छोड़ देने का कोई मक़ाम नहीं है।

इब्राहीम बिन अदहम (رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) फ़रमाया करते थे : हम कैसे मुत़मइन हो सकते थे जब कि इब्राहीम ख़लील (عَلَيۡهِ السَّلَام) येह अ़र्ज़ करते हैं :

1...यहां लफ़्ज़ "صف" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि अस्ल अ़रबी मतन और तर्जमे के लिह़ाज़ से दुरुस्त लफ़्ज़ "صَفۡوِ" है, लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इल्मिय्या)

وَّ اجْنُبْنِیْ وَ بَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ؕ﴿۳۵﴾ (1)

कि मुझे और मेरी अवलाद को बुतों की इ़बादत से मह़फ़ूज़ रख।

और युसूफ़ सिद्दीक़ عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ करते हैं :

تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا (2)

मुझे इस्लाम की ह़ालत में फ़ौत कर।

और सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमेशा कहते रहते : या **अल्लाह** ! बचा ले बचा ले। गोया कि आप कश्ती में हैं जिस के ग़र्क़ होने का अन्देशा है।

और हमें मुह़म्मद बिन युसूफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत पहुंची है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : मैं ने सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को एक रात ग़ौर से देखा, वोह सारी रात रोते रहे। मैं ने पूछा : क्या गुनाहों पर रोते हो ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक **तिन्का**[3] उठाया और कहा : गुनाह **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक इस से भी ज़ियादा ह़क़ीर है, मैं इस से डरता हूं कि **अल्लाह** मुझ से इस्लाम न छीन ले और इस से ख़ुदा की पनाह !

और मैं ने बा'ज़ आ़रिफ़ीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن) से सुना है। कहते थे कि बा'ज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से बलआ़म और उस के मर्दूद होने का मुआ़मला पूछा कि वोह इन आयात और करामात के बा'द कैसे मर्दूद हो गया ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : जो कुछ मैं ने उस को दिया था उस पर उस

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा। (پ۱۳،ابراھیم:۳۵) 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझे मुसलमान उठा। (پ۱۳، یوسف:۱۰۱) 3.....तर्जमे में लफ़्ज़ "तिन्कह" किताबत की ग़लती थी जिसे "तिन्का" कर दिया है। (इ़ल्मिय्या)

ने सारी ज़िन्दगी भर एक दिन भी शुक्र अदा न किया, और अगर एक दफ़्आ़ भी वोह मेरा शुक्रिया अदा कर देता तो मैं उस से न छीनता।

पस ऐ आदमी ! होशयार हो और शुक्र के रुक्न की बहुत ज़ियादा ह़िफ़ाज़त कर और दीनी ने'मतों पर उस की ह़म्द बयान कर कि सब ने'मतों से बाला तर इस्लाम है और मा'रिफ़त है और सब से छोटी ने'मत तस्बीह़ कहने की तौफ़ीक़ या बे मक़्सद बात करने से परहेज़ है। मुमकिन है कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी ने'मतें तुझ पर पूरी करे और ज़वाल की कड़वाहट में तुझे मुब्तला न करे कि सब से ज़ियादा तल्ख़ और सब से ज़ियादा मुश्किल इ़ज़्ज़त के बा'द ज़िल्लत और क़ुर्ब के बा'द **बुअ़्द**(1) और विसाल के बा'द फ़िराक़ है और **अल्लाह** तआ़ला बन्दों पर **करीम**(2) और मेहरबान है।

फ़स्ल

और क़िस्सा मुख़्तसर कि जब तू **अल्लाह** तआ़ला के बड़े बड़े एह़सानात और बड़ी बड़ी ने'मतों को अपने ऊपर देखे कि जिन को तेरा दिल शुमार भी नहीं कर सकता और तेरा ख़याल उन का इह़ात़ा नहीं कर सकता यहां तक कि तू ने इन मुश्किल घाटियों को अपने पीछे छोड़ दिया और उ़लूम और बसीरतों को पा लिया और बड़े गुनाहों के बोझ से पाक हो गया और मवानिआ़त से आगे निकल गया और अ़वारिज़ात को रद्द कर दिया और बुरी चीज़ों से सलामत बच निकला और **अल्लाह** की रह़मतों पर फ़ाइज़ हो गया, तो कितनी ही शरीफ़ ख़स्लतें और बुलन्द रुत्बे तुझ को ह़ासिल हो गए कि जिन की इब्तिदा बसीरत और पहचान से हुई थी

1.....दूरी। 2.....''मुशफ़िक़ व शफ़ीक़'' जैसे अल्फ़ाज़ का इत़्लाक़ ज़ाते बारी तआ़ला पर दुरुस्त नहीं लिहाज़ा यहां से ''मुशफ़िक़'' को ह़ज़्फ़ कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

उन की इन्तिहा कु़र्ब और बुज़ुर्गी पर हुई, फिर तू इस में अपने अ़क़्ल की मिक़्दार और तौफ़ीक़ के मुत़ाबिक़ ग़ौर करेगा और अपनी हिम्मत के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** तआ़ला का शुक्रिया अदा करेगा तो तेरी ज़बान उस की ह़म्द और सना में मश्ग़ूल हो जाएगी और तेरा दिल उस की अ़ज़्मत और रौनक़ से भर जाएगा और तू ऐसे मक़ाम पर पहुंच जाएगा कि वोह तेरे और तेरे गुनाहों के दरमियान ह़ाइल हो जाए और तुझे उस की ख़िदमत पर तेरी हिम्मत के मुत़ाबिक़ आमादा करेगा और उस के इन्आ़म और एह़सान का ह़क़ अदा करने से अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ कोताही का इक़रार करने पर उभारेगा और जब तू उस के शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए या ख़ामोश हो जाए या फिसल जाए तो तू उस की त़रफ़ तज़र्रुअ़ और ज़ारी करे और कोशिश करे और वसीला तलाश करे और कहे : ऐ **अल्लाह** ! ऐ मेरे मालिक ! जिस त़रह़ तू ने बिग़ैर किसी **इस्तिह़क़ाक़**[1] के मह़्ज़ अपने फ़ज़्ल से एह़सान की इब्तिदा की थी इसी त़रह़ बिग़ैर किसी इस्तिह़क़ाक़ के अपने फ़ज़्ल से इसी को इन्तिहा तक पहुंचा और उस को इस के औलिया की ज़बान में पुकारा कि जिन्हों ने इस की हिदायत का ताज पाया और इस की मा'रिफ़त की ह़लावत चखी फिर भी वोह अपने ऊपर हांक देने और इहानत की जलन और गुमराही और बा'द की वह़शत और मा'ज़ूली और ज़वाल की कड़वाहट से डरते रहे, वोह दरवाज़े पर फ़रयाद करते हुवे रोते और आ़जिज़ी करते हुवे उसी की त़रफ़ हाथ फैलाते रहे, और अपनी ख़ल्वतों में चीख़ चीख़ कर दुआ़एं करते :

---

1 .....मुस्तह़िक़ होने।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝[1]

ऐ हमारे रब हिदायत देने के बा'द हमारे दिलों को टेढ़ा न कर और हमें अपनी जनाब से रह़मत इनायत फ़रमा बेशक तू ही अ़त़ा करने वाला है।

मैं कहता हूं इस का मत़लब येह है और **अल्लाह** तआ़ला ही बेहतर जानें कि हम ने तुझ से ने'मत ह़ासिल की और दूसरी ने'मत के हम उम्मीदवार हैं कि तू ही **जवाद**[2] और अ़त़ा करने वाला है फिर जिस त़रह़ तू ने हमें इन्आ़म की फ़ज़ीलत इब्तिदा में बख़्शी है इसी त़रह़ इतमाम की रह़मत इन्तिहा में अ़त़ा फ़रमा। क्या तू ने ग़ौर नहीं किया कि सब से पहली दुआ़ जो **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन ने अपने मुसलमान बन्दों को सिखाई है जिस को **अल्लाह** ने अपनी मख़्लूक़ के लिये इन्तिख़ाब फ़रमाया, वोह **अल्लाह** तआ़ला का येह क़ौल है :

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝[3]

हमें सीधे रास्ते की राहनुमाई फ़रमा।

या'नी हमें हमेशा इस पर साबित क़दम रख इसी त़रह़ हम भी उस की जनाब में इल्तिजा करते हैं कि मुआ़मला बहुत अ़ज़ीम है।

कहा गया है कि हुकमा ने ग़ौर किया तो जहान की तमाम मुसीबतों और मेह़नतों को पांच चीज़ों में पाया :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़त़ा कर बेशक तू है बड़ा देने वाला। (پ۳،اٰل عمرٰن:۸) 2.....यहां लफ़्ज़ "**सख़ी**" तह़रीर था, जिसे लफ़्ज़ "**जवाद**" से बदल दिया है क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़े "**सख़ी**" इस्ति'माल करने को "फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 27, सफ़ह़ा 165" पर मन्अ़ किया गया है। (इल्मिय्या) 3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम को सीधा रास्ता चला। (پ ۱ ، الفاتحة : ۵)

﴾1﴿ मुसाफ़री में बीमारी ﴾2﴿ बुढ़ापे में फ़क़ीरी ﴾3﴿ जवानी में मौत और ﴾4﴿ देखने के बा'द अन्धा होना और ﴾5﴿ मा'रिफ़त के बा'द बे बसीरत हो जाना।

और इस से भी बढ़ कर किसी का येह क़ौल है :

لِكُلِّ شَيْءٍ إِذَا فَارَقْتَهُ عِوَضٌ وَلَيْسَ لِلّٰهِ إِنْ فَارَقْتَ مِنْ عِوَضٍ

तर्जमा : हर चीज़ का कोई न कोई इवज़ है, जब उस को छोड़ दिया जाए लेकिन अगर तू ख़ुदा को छोड़ दे तो इस का कोई इवज़ नहीं।

और किसी और ने कहा हैं :

إِذَا أَبْقَتِ الدُّنْيَا عَلَى الْمَرْءِ دِيْنَهُ فَمَا فَاتَهُ مِنْهَا فَلَيْسَ بِضَائِرِ

तर्जमा : जब दुन्या किसी आदमी का दीन ख़राब न करे तो जो कुछ भी इस से ज़ाएअ़ हो जाए वोह नुक़्सान देने वाला नहीं है।

और इसी त़रह़ हर एक ने'मत का मुआ़मला है, जो वोह तुझ को इन्आ़म फ़रमाए और इन घाटियों में से किसी घाटी के क़त्अ़ करने में ख़ुदा की ताईद इसी त़रह़ है ताकि जो उस ने तुझे दिया है उसे हमेशा रखे और तुझे तेरी तमन्ना और ख़्वाहिश से भी ज़ियादा दे फिर जब तू इस मक़ाम पर पहुंच जाए तो तू ने इस ख़त़रनाक घाटी को उ़बूर कर लिया और तू ने दो निहायत अच्छे ख़ज़ाने ह़ासिल कर लिये जो कि इस्तिक़ामत और ज़ियादत हैं, फिर मौजूदा ने'मतें जो उस ने तुझे अ़त़ा की हैं तेरे पास हमेशा रहेंगी तुझे इन के ज़वाल का ख़त़रा न होगा और जो ने'मतें तुझे उस ने अ़त़ा नहीं की हैं वोह तुझे अ़त़ा फ़रमाएगा ह़ालांकि तू उन को अच्छी त़रह़ मांग भी नहीं सकता और आरज़ू भी नहीं रखता, पस तू उन के फ़ौत होने से न डर और इस वक़्त तू उन लोगों से हो जाएगा जो कि आ़रिफ़, आ़लिम, दीन के आ़मिल, गुनाहों से तौबा करने वाले पाक

नुफ़ूस दुन्या से बे रग़बत, और खुदा की **ख़िदमत**[1] के लिये अलग होने वाले शैत़ान को मग़लूब करने वाले, दिल और आ'ज़ा से पूरी त़रह़ तक़्वा इख़्तियार करने वाले, उम्मीदों को कम करने वाले नासेह़, ख़ाशेअ़ और तवाज़ोअ़ करने वाले, तवक्कुल करने वाले अपने काम को खुदा के सिपुर्द करने वाले, राज़ी ब रज़ा सब्र करने वाले, डरने वाले, उम्मीद रखने वाले मुख़्लिस, खुदा तआ़ला की ने'मतों को याद रखने वाले और अपने मालिक रब्बुल आ़लमीन की ने'मतों का शुक्र करने वाले हैं। फिर तू इस के बा'द उन लोगों से हो जाएगा जो सीधी राह पर क़ाइम रहने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ और सिद्दीक़ हैं इस कलाम में ग़ौर कर और **अल्लाह** तआ़ला ही तौफ़ीक़ देने वाले हैं।

फिर अगर तू कहे कि अगर मुआ़मला इस त़रह़ का है तो उस मा'बूद की इबादत करने वाले और इस मक़्सूद पर पहुंचने वाले बहुत थोड़े लोग होंगे और कौन आदमी ऐसी मशक़्क़तों की त़ाक़त रखता है ? और कौन इन शराइत़ और सुन्नतों को ह़ासिल कर सकता है ? तो मा'लूम होना चाहिये कि खुदा तआ़ला भी ऐसा ही फ़रमाते हैं :

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِىَ الشَّكُوْرُ ۝ [2] — *और मेरे थोड़े बन्दे शुक्र गुज़ार हैं।*

और फ़रमाया :

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ [3] — *लेकिन अकसर लोग शुक्र नहीं करते।*

---

1 .....इबादत।

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले। (پ۲۲،سبا:۱۳)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर अकसर लोग शुक्र नहीं करते। (پ۱۲،یوسف:۳۸)

لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ (1) — *नहीं अ़क्ल करते।*

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ (2) — *नहीं जानते।*

फिर येह मुआ़मला उस आदमी पर निहायत आसान है जिस पर **अल्लाह** आसान कर दे। बन्दे के ज़िम्मे कोशिश करना है और **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ के ज़िम्मे हिदायत है। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (3) — *और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की हम अपनी राहों की उन को राहनुमाई करेंगे।*

और जब एक कमज़ोर बन्दा अपने फ़राइज़ को पूरा करने की कोशिश करता है तो रब्बे क़दीर, ग़नी और करीम और रह़ीम के मुतअ़ल्लिक़ तुम क्या ख़याल करते हो ?

फिर अगर तू कहे कि उ़म्र थोड़ी है और येह घाटियां बड़ी त़वील और सख़्त हैं फिर किस त़रह़ उ़म्र बाक़ी रहेगी कि येह तमाम शराइत़ पूरी हो सकें और येह घाटियां तै़ की जा सकें। तो मुझे अपनी उ़म्र की क़सम ! येह घाटियां वाक़ेई बड़ी त़वील हैं और इन की शराइत़ भी बड़ी सख़्त हैं लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे को इन्तिख़ाब कर लेते हैं तो येह लम्बाई उस पर छोटी हो जाती है और येह सख़्तियां उस पर आसान हो जाती हैं यहां तक कि बन्दा इन को क़त़अ़ करने के बा'द कहता है कि येह राह कितनी क़रीब है, कितनी मुख़्तसर है, कितनी आसान और नर्म है, और मैं जब इस जंगल में खड़ा था तो मैं ने येह शे'र कहा था :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बे अ़क़्ल हैं। (پ ۲۱، العنكبوت: ۶۳)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नहीं जानते। (پ ۲۲، سبا: ۳۶)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे। (پ ۲۱، العنكبوت: ۶۹)

عِـلْـمُ الْـمَـحَـجَّةِ وَاضِـحٌ لِـمُـرِيْـدِهٖ وَأَرَى الْـقُـلُوْبَ عَنِ الْمَحَجَّةِ فِيْ عَمٰى

وَلَـقَـدْ عَـجِـبْـتُ لِهَـالِكٍ وَ نَجَـاتُـهٗ مَـوْجُـوْدَةٌ وَ لَقَدْ عَجِبْتُ لِمَنْ نَجَا

तर्जमा : (1) सीधे रास्ते का इ़ल्म चाहने वाले के लिये वाज़ेह़ है और मैं दिलों को देखता हूं कि वोह सीधे रास्ते से अन्धे हैं।
(2) और मैं ने तअ़ज्जुब किया हलाक होने वाले पर ह़ालांकि उस की नजात मौजूद थी और मैं ने नजात पाने वाले पर भी तअ़ज्जुब किया।

यहां तक कि बा'ज़ ऐसे लोग हैं जो इन घाटियों को सत्तर साल में तै़ करते हैं और बा'ज़ बीस साल में और बा'ज़ दस साल में और बा'ज़ वोह हैं कि जिन को येह एक साल में ह़ासिल हो जाती हैं और बा'ज़ इन को एक महीने में तै़ कर लेते हैं बल्कि एक जुम्ले में बल्कि एक साअ़त में यहां तक कि बा'ज़ को खुदावन्दे तआ़ला की ख़ास़ तौफ़ीक़ और इनायत से एक लह़ज़े में ह़ासिल हो जाती हैं।

क्या तू अस्ह़ाबे कहफ़ का वाक़िआ़ याद नहीं करता कि उन की मुद्दत कितनी मुख़्तसर थी जब उन्हों ने अपने बादशाह दक़्यानूस के चेहरे में तग़य्युर देखा तो कहा :

رَبُّـنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰـهًا[1]

तो कहने लगे हमारा रब वोही है जो आस्मानों और ज़मीन का रब है, हम उस के सिवा किसी मा'बूद को कभी न पुकारेंगे।

उन को येह मा'रिफ़त ह़ासिल हुई और इस राह के ह़क़ाइक़ उन्हों ने मुलाह़ज़ा किये और इस राह को तै़ किया तो वोह अपना

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हमारा रब वोह है जो आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे। (پ۱۵،الکھف:۱٤)

मुआ़मला **अल्लाह** के सिपुर्द करने वाले उसी पर भरोसा रखने वाले और इस राह पर क़ाइम रहने वाले बन गए जब कि उन्हों ने कहा :

فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ (1)

तो ग़ार में जगह पकड़ो, तुम्हारा रब अपनी रह़मत तुम पर फैला देगा।

और येह सब कुछ उन को एक साअ़त या एक लह़ज़े में ह़ासिल हो गया। क्या तुम्हें फ़िरऔ़न के जादूगरों का वाक़िआ़ याद नहीं कि उन की मुद्दत एक लह़ज़ा भर थी जब उन्हों ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा देखा तो :

قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ (2)

कहने लगे हम रब्बुल आ़लमीन पर ईमान लाए जो मूसा और हारून का रब है।

उन्हों ने एक ही लह़ज़े में उस राह को देखा और उसे तै़ कर गए और खुदा तआ़ला को पहचानने वालों, **अल्लाह** तआ़ला की तक़्दीर पर राज़ी रहने वालों, और उस की मुसीबतों पर सब्र करने वालों, और उस की ने'मतों का शुक्र करने वालों, और उस की मुलाक़ात का शौक़ रखने वालों से हो गए और पुकार उठे :

لَا ضَیْرَ٘ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ (3)

कोई परवाह नहीं हम अपने रब की त़रफ़ फिरने वाले हैं।

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये अपनी रह़मत फैला देगा। (پ۱۵، الکھف:۱۶)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर जो रब है मूसा और हारून का। (پ۹، الاعراف:۱۲۱-۱۲۲)

(3).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कुछ नुक़्सान नहीं हम अपने रब की त़रफ़ पलटने वाले हैं। (پ۱۹، الشعراء:۵۰)

हम से बयान किया गया है कि इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दुन्या में एक बादशाह थे। उन्हों ने बादशाही छोड़ दी और इस राह का क़स्द किया। उन के लिये येह राह इतनी ही साबित हुई जितनी देर में वोह "बल्ख़" से "मर्व" तक जाते थे। यहां तक कि वोह इस मक़ाम पर पहुंचे कि एक आदमी पुल पर से बहुत गहरे पानी में गिरा। इब्राहीम (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने इशारा कर के कहा : ठहर जा ! तो वोह आदमी हवा ही में मुअ़ल्लक़ ठहर गया और पानी से बच गया।

और राबिआ़ बसरी (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا) एक बुढ़ी लौंडी थी इस को बसरा के बाज़ारों में घुमाया जाता और बुढ़ी होने की वजह से उस को कोई न ख़रीदता। एक सौदागर को उस पर रह़्म आया उस ने उस को सो दिरहम से ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। फिर उस ने येह रास्ता इख़्तियार कर लिया, और इ़बादत पर मुतवज्जेह हुई। एक साल भी नहीं गुज़रा था कि बसरा के ज़ाहिद क़ारी और उ़लमा लोग उस के मर्तबे की बुलन्दी की वजह से उस की ज़ियारत को आने लगे।

और जिस आदमी को ख़ुदावन्दे तआ़ला की इ़नायत शामिले ह़ाल न हो और उस पर फ़ज़्ल और हिदायत का मुआ़मला न किया जाए तो उसे उस के नफ़्स के सिपुर्द कर दिया जाता है फिर बसा अवक़ात वोह एक ही घाटी की किसी वादी में सत्तर साल तक पड़ा रहता है और उसे तै नहीं कर पाता और कितनी दफ़्आ़ चीख़ चीख़ उठता है कि येह राह कितनी अन्धेरी कितनी मुश्किल है और येह मुआ़मला कितना तंग और दुश्वार है, पस ह़ालत एक ही लफ़्ज़ की त़रफ़ लौटती है और वोह है ग़ालिब जानने वाला आ़दिल और ह़कीम की तक़्दीर।

फिर अगर तू येह सुवाल करे कि उस को तौफ़ीक़े ख़ास से क्यूं नवाज़ा गया, और इस को क्यूं मह़रूम रखा गया ह़ालांकि येह

दोनों मुश्तरका त़ौर पर ग़ुलामी की रस्सी में बन्धे हुवे हैं, तो इस सुवाल पर ख़ुदावन्दे तआ़ला के जलाल के पर्दों से आवाज़ आती है अदब मल्हूज़ रखो, और रबूबिय्यत के अस्रार को पहचानो और उ़बूदिय्यत की ह़क़ीक़त मा'लूम करो कि वोह :

لَا يُسْـــئَلُ عَمَّـا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـئَلُوْنَ ۝ (1)

जो कुछ करता है उस से वजह नहीं पूछी जा सकती और बाक़ी सब लोग पूछे जाते हैं।

मैं कहता हूं दुन्या में इस राह की मिसाल आख़िरत में पुल सिरात़ की घाटियों और मुसाफ़िरों के इस को त़ै करने की है कि मख़्लूक़ के अह़वाल वहां मुख़्तलिफ़ हैं। उन में से बा'ज़ पुल सिरात़ को इस त़रह़ उ़बूर करेंगे जैसे चमकने वाली बिजली और बा'ज़ तेज़ व तुन्द आंधी की त़रह़ और बा'ज़ तेज़ रफ़्तार घोड़े की मिस्ल और कुछ परन्दों की त़रह़, कुछ पैदल चलते हुवे, कुछ घिसटते हुवे यहां तक कि वोह कोइले की त़रह़ हो जाएंगे और कुछ इस की आवाज़ें सुनेंगे और कुछ इस के आंकड़ों में गिरिफ़्तार हो जाएंगे और उन को जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। येही ह़ाल इस राह का दुन्या में अपने मुसाफ़िरों के साथ है पस येह दोनों रास्ते हैं : एक दुन्या का रास्ता और एक आख़िरत का रास्ता। आख़िरत का रास्ता तो नफ़्स का रास्ता है कि वोह इस की हौलनाकियां आंखों वाले देखेंगे, और दुन्या का रास्ता दिलों का रास्ता है इस की हौलनाकियां बसीरत और अ़क़्ल वाले देखते हैं, और आख़िरत में ठहरने वालों के ह़ालात मुख़्तलिफ़ होंगे क्यूंकि दुन्या में भी इन के ह़ालात मुख़्तलिफ़ होंगे पस इस पर पूरी त़रह़ तवज्जोह कर और तौफ़ीफ़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा। (پ ۱۷، الانبياء: ۲۳)

फ़स्ल

फिर जानना चाहिये कि जो कुछ इस बाब में **मुह़क़्क़क़**[1] है वोह येह है कि येह रास्ता लम्बा और छोटा होने में उन मसाफ़तों की त़रह़ नहीं है, जिन को आदमी क़दमों से तै करते हैं, फिर नफ़्स की कुव्वत और इस के ज़ो'फ़ के मुत़ाबिक़ इस को तै करते हैं बल्कि येह रास्ता रूह़ानी रास्ता है जिसे दिल तै करते हैं और फ़िक्र से तै करते हैं, अपने अ़क़ाइद और बसीरत के मुत़ाबिक़ तै करते हैं और इस का अस्ल एक आस्मानी नूर और ख़ुदावन्दी निगाह है जो किसी बन्दे के दिल पर पड़े फिर वोह इस के साथ दोनों जहानों के मुआ़मले पर ह़क़ीक़त के साथ ग़ौर करता है फिर येह नूर वोह है कि बन्दा इस को सो साल तक तलाश करता रहता है और इसे नहीं पाता और न इस का कोई निशान मिलता है और येह बन्दे की त़लब और कोशिश में कोताही और इस राह की नादानी की वजह से होता है, और कोई और इस को पचास साल के बा'द पा लेता है और कोई इस को दस साल में, कोई एक दिन में कोई रब्बुल इ़ज़्ज़त की इनायत से एक साअ़त और एक लह़ज़े में पा लेता है और वोही हिदायत का वाली है लेकिन बन्दे को कोशिश का हुक्म दिया गया है और हुक्म की ता'मील उसी पर लाज़िम है और अम्र मफ़्हूम है और परवर दगार ह़ाकिम आ़दिल की तक़्दीर के मुत़ाबिक़ है वोह जो चाहता करता है और जो चाहता है इस का हुक्म देता है।

फिर अगर तू येह सुवाल करे कि येह ख़त़रा कितना बड़ा है और येह मुआ़मला कितना सख़्त है ? और बन्दए कमज़ोर कितना मोह़ताज है ? फिर येह सारा अ़मल और कोशिश और इन शराइत़ का ह़ुसूल किस लिये है ?

---

1 .....साबित।

तो मैं कहूंगा मुझे अपनी उ़म्र की क़सम ! तू अपने इस क़ौल में बिल्कुल सच्चा है कि मुआ़मला बड़ा सख़्त है और ख़त़रा बहुत अ़ज़ीम है और इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है :

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ؕ (1) *हम ने इन्सान को मेह़नत में पैदा किया ।*

और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۙ (2) *कि हम ने अमानत को आस्मानों ज़मीनों, पहाड़ों पर पेश किया उन्हों ने इस को उठाने से इन्कार कर दिया और इस से डर गए और इस को इन्सान ने उठा लिया यक़ीनन वोह ज़ालिम और जाहिल था ।*

और इसी लिये सय्यिदुल मुर्सलीन (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : لَوْ عَلِمْتُمْ مَا اَعْلَمُ لَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا وَلَضَحِكْتُمْ قَلِيْلًا (3) अगर तुम वोह कुछ जानो जो मैं जानता हूं तो तुम ज़ियादा रोओ और थोड़ा हंसो ।

और वोह जो बयान किया जाता है कि एक आवाज़ देने वाला आस्मान से आवाज़ देता कि काश ! मख़्लूक़ पैदा न होती, और अगर पैदा होनी थी तो अपनी पैदाइश के मक़्सद को समझती और जब मक़्सद को समझ लिया तो काश ! इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करती । और सलफ़े सालिह़ीन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهِم) भी इसी त़रह़ कहा करते थे ।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया । (پ۳۰،البلد:٤)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने इस के उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है । (پ۲۲،الاحزاب:۷۲)

3 ......مسند امام احمد،۸/۱۲۱،حدیث:۲۱۵۷۲ وصحیح البخاری، کتاب الکسوف، باب الصدقة فی الکسوف،۱/۳۵۸،حدیث:۱۰٤٤، بتغیر قلیل۔

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं पसन्द करता हूं कि मैं कोई घास होता कि जानवर मुझे खा जाते। और ऐसा अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से फ़रमाते।

और उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक आदमी को सुना वोह तिलावत कर रहा था :

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ○ (1)

कि इन्सान पर एक ऐसा ज़माना गुज़रा है कि जब येह कोई चीज़ या'नी ज़िक्र के क़ाबिल भी न था।

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : काश ! मुआ़मला वहीं ख़त्म हो जाता।

और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं पसन्द करता हूं कि मैं अपने घर वालों का मेंढा होता। मेरा गोश्त लोगों में तक़्सीम हो जाता और मेरा शोरबा लोग पी जाते और मैं क़ियामत को दोबारा पैदा न होता।

और वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आदम का बेटा अह़मक़ पैदा हुवा है, अगर येह अह़मक़ न होता तो दुन्या में इस की ज़िन्दगी कभी ख़ुशगवार न हो सकती।

और फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہ ने फ़रमाया : मैं किसी मुक़र्रब फ़िरिश्ते और नबिये मुर्सल और बन्दए सालेह़ पर रश्क नहीं करता, **क्या येह ह़ज़रात क़ियामत और उस की हौलनाकियां नहीं देखेंगे ?**[2] मैं तो सिर्फ़ उन पर रश्क करता हूं जो पैदा नहीं हुवे।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आदमी पर एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं इस का नाम भी न था। (پ۲۹، الدھر:۱)

2.....तफ़्सीरे रूहुल बयान, जिल्द 5, सफ़हा 253 पर सूरतुल कहफ़ की आयत नम्बर 48 के तह़्त मज़्कूर इसी क़ौल की रोशनी में यहां मौजूद जुम्ला "क्या क़ियामत के रोज़ इन पर इ़ताब नहीं किया जाएगा ?" बदल कर यूं कर दिया है "क्या येह ह़ज़रात क़ियामत और उस की हौलनाकियां नहीं देखेंगे" क्यूंकि इस का मफ़्हूम कुछ नामुनासिब था। (इ़ल्मिय्या)

अ़ता सुलमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि अगर आग जला दी जाए और कहा जाए कि जो आदमी अपने आप को इस में डाल देगा वोह हमेशा हमेशा के लिये ख़त्म हो जाएगा तो मुझे डर है कि मैं आग तक पहुंचने से पहले ही ख़ुशी की वजह से मर जाऊंगा।

तो मुआ़मला ऐ इन्सान ! वाक़ेई बड़ा सख़्त है जैसा कि तू ने कहा है बल्कि वोह तेरे वहमो गुमान से भी बहुत ज़ियादा सख़्त और अ़ज़ीम है लेकिन येह एक ऐसा मुआ़मला है जो तक़्दीर में अज़ल से नाफ़िज़ हो चुका है और ग़ालिब जानने वाले की तदबीर ने इस को जारी किया है, तो अब बन्दे के लिये इस के सिवा कोई चारा नहीं कि वोह ख़ुदा तआ़ला की **इत़ाअ़त**[1] और **अल्लाह** तआ़ला की रस्सी को हमेशा हमेशा के लिये आ़जिज़ी और ज़ारी से थामे फिर मुमकिन है कि **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़्म करे और अपने फ़ज़्ल से उस पर रह़्म करे।

बाक़ी रहा तेरा येह कहना कि येह सब कुछ क्यूं है ? तो येह एक ऐसा कलाम है कि जो तेरी अ़ज़ीम ग़फ़्लत पर दलालत करता है बल्कि दुरुस्त येह था कि तू कहता कि जो कुछ बन्दा चाहता है, उस के मुक़ाबले में इस की ह़क़ीक़त क्या है ! क्या तुझे मा'लूम है कि येह कमज़ोर बन्दा क्या चाहता है ? इस का कमतर मुत़ालबा दो चीज़ें हैं : पहली येह कि दोनों जहानों में सलामत रहे और दूसरी येह कि दोनों जहानों में बादशाही करे। अब दुन्या की सलामती तो इस त़रह़ है कि दुन्या और उस की आफ़तें और उस फ़ितने और ग़फ़्लत के पर्दे इस त़रह़ के हैं कि इस से मलाइकए मुक़र्रबीन भी नहीं बच सके यक़ीनन तू ने हारूत और मारूत का वाक़िआ़ सुना

1...यहां तर्जमे में लफ़्ज़ "ग़ुलामी" था, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने **अल्लाह** तआ़ला के लिये इस लफ़्ज़ के इस्ति'माल से मन्अ़ फ़रमाया है। (फ़तावा रज़विय्या, 24/691) और लफ़्ज़ "ग़ुलामी" ग़ुलाम ही से बना है लिहाज़ा इसे ह़ज़्फ़ कर के "इत़ाअ़त" कर दिया है। (इ़ल्मिय्या)

होगा। यहां तक बयान किया जाता है कि जब बन्दे की रूह़ को आस्मान पर ले जाया जाता है तो आस्मानों के फ़िरिश्ते तअ़ज्जुब से कहते हैं कि येह इस दुन्या से किस त़रह़ बच कर आ गया जहां हमारे बेहतरीन फ़िरिश्ते भी तबाह हो गए, और आख़िरत अपनी हौलनाकियों और सख़्तियों में इस त़रह़ की है कि जिस से अम्बिया और रुसूल (عَلَيْهِمُ السَّلَام) भी चीख़ उठे :

نَفْسِىْ نَفْسِىْ لَا اَسْئَلُكَ الْيَوْمَ اِلَّا نَفْسِىْ मुझे बचा ले मुझे बचा ले, मैं तुझ से सिर्फ़ अपनी जान की अमान चाहता हूं।

यहां तक बयान किया जाता है कि अगर किसी आदमी के पास सत्तर नबियों (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के अ़मल भी हों तो वोह भी येही समझेगा कि नजात मुश्किल है।(1) फिर जो आदमी चाहे कि इन फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रहे तो उसे चाहिये कि वोह इस्लाम को अपने हमराह ले कर निकले सलामती के साथ चला जाएगा उसे कोई मुसीबत न पहुंचेगी और आख़िरत के हौलनाक मनाज़िर से बच कर जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाएगा उसे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचेगी। अब सोच कि येह मा'मूली काम है ?

और बाक़ी रही हुकूमत और करामत तो हुकूमत येह है कि इन्सान का तसर्रुफ़ और मशिय्यत नाफ़िज़ हो और येह ह़क़ीक़त में दुन्या में तो ख़ुदावन्दे तआ़ला के दोस्तों और उस के बरगुज़ीदा लोगों, उस की तक़्दीर पर राज़ी रहने वालों के लिये है कि जंगल और समन्दर और ज़मीन उन के लिये एक ही क़दम है, और पथ्थर और ईंटें उन के लिये सोना हैं, और जिन्न और इन्सान और चरिन्दे और परन्दे उन के ताबेअ़ हैं, वोह जो कुछ भी चाहते हैं हो जाता है क्यूंकि वोह वोही चाहते हैं जो **अल्लाह** चाहे, और जो **अल्लाह**

---

(1) ......المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال، ذكر اهل عليين، ٥/ ٨١١، حديث: ٨٧٨٩، بتغير قليل -

चाहे वोह हो जाता है, येह लोग किसी मख़्लूक़ से नहीं डरते और इन से तमाम मख़्लूक़ डरती है। येह **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी की गुलामी नहीं करते और काइनात की हर चीज़ इन की गुलामी करती है और दुन्या के बादशाहों को इस रुत्बे का **उ़शरे अ़शीर**[1] भी कहां नसीब है बल्कि वोह बहुत थोड़े और बहुत ज़लील हैं।

बाक़ी रही आख़िरत की बादशाही तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाते हैं : जब तू वहां देखेगा तो एक बड़ा मुल्क और ने'मतें देखेगा।[2]

और जिस को रब्बुल इ़ज़्ज़त मुल्के कबीर फ़रमाएं उस की अ़ज़मत का अन्दाज़ा करो, और येह तो तू जानता है कि दुन्या सारी की सारी थोड़ी है, और इस की इब्तिदा से ले कर इन्तिहा तक सारी उ़म्र भी बहुत थोड़ी है और हम में से किसी एक आदमी का ह़िस्सा इस थोड़े में से थोड़ा है और फिर भी हम में से बा'ज़ आदमी इस को ह़ासिल करने के लिये अपना माल और जान क़ुरबान कर देते हैं यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात इस को थोड़े से थोड़ा ह़ासिल कर लेते हैं और फिर इस की मुद्दत भी थोड़ी है, और अगर उसे ह़ासिल हो जाए तो लोग उस को मा'ज़ूर समझते हैं बल्कि उस पर रश्क करते हैं और जो कुछ उस ने इस के ह़ासिल करने में अपनी जान और माल को ख़र्च किया है उस को ज़ियादा नहीं समझता, जैसा कि इमरउल क़ैस ने कहा :

بَـكٰـى صَاحِبِىْ لَمَّا رَاَى الدَّرْبَ دُوْنَهٗ   وَاَيْـقَـنَ اِنَّـا لَاحِـقَـانِ بِقَيْـصَـرَا

فَـقُـلْـتُ لَـهٗ لَا تَبْكِ عَيْنُكَ اِنَّـمَـا   نُـحَـاوِلُ مُـلْـكًـا اَوْنَـمُـوْتَ فَـنُعْذَرَا

1.....निहायत कम।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब तू इधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्त़नत। (پ۲۹،الدھر:۲۰)

तर्जमा : (1) मेरे साथी ने जब अपने सामने फाटक को देखा तो रोने लगा और उस ने यक़ीन कर लिया कि हम क़ैसर से मुलाक़ात करने वाले हैं।

(2) तो मैं ने उस से कहा : तेरी आंखें न रोएं, हम बादशाह से ह़ीला कर के दौलत ह़ासिल करेंगे या मर जाएंगे तो दुन्या हमें मा'ज़ूर समझेगी।

फिर उस आदमी का क्या ह़ाल होगा जो हमेशा रहने वाली जन्नत में बहुत बड़ी हुकूमत चाहता है, क्या वोह इस के मुक़ाबले में उन दो रकअ़तों को जो वोह **अल्लाह** तआ़ला के लिये पढ़ता है, या वोह दो दिरहम जो ख़र्च करता है या दो रातें जो जागता है, उन को काफ़ी समझता है हरगिज़ हरगिज़ नहीं बल्कि अगर उस के पास एक करोड़ बदन हों और हज़ार दर हज़ार रूहें हों और हज़ार दर हज़ार उ़म्रें हों और हर उ़म्र दुन्या की उ़म्र के बराबर हो या इस से भी ज़ियादा और फिर वोह इस मक़्सदे अ़ज़ीज़ के लिये इन तमाम को ख़र्च कर डाले तो भी येह बहुत थोड़ा है। अगर इस के बा'द कभी वोह अपने मक़्सद पर पहुंच जाए तो येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से फ़ज़्ले अ़ज़ीम और **ग़नीमते बारिदा**[1] होगा।

अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त का समरा

सो ! ऐ मिस्कीन ! इस ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो, फिर मैं ने ग़ौर किया कि बन्दा जब **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करता है और उस की **ख़िदमत**[2] को लाज़िम समझता है और अपनी उ़म्र भर इसी रास्ते पर चलता रहता है तो जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला उस को इनायत फ़रमाते हैं वोह चालीस करामतें और ख़िल्अ़तें हैं। बीस तो इन में से दुन्या में हैं और बीस इन में से आख़िरत में,

1 .....आसानी से मिलने वाली ने'मत। 2 .....इबादत।

वोह बीस जो दुन्या में हैं

पहली : येह है कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस का तज़्किरा करते हैं और उस की सना कहते हैं और कितना मुअ़ज़्ज़ज़ है वोह बन्दा जिस की सना कह कर **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन उस पर एह़सान करें।

और **दूसरी** येह है कि **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ **उसे शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है**[1] और **इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत से नवाज़ता है**[2] और अगर कोई तेरे जैसी आ़जिज़ मख़्लूक़ तेरा शुक्रिया अदा करे और तेरी ता'ज़ीम करे तो तू इस को काफ़ी इ़ज़्ज़त समझता है फिर अगर पहलों और पिछलों का मा'बूद ऐसा करे तो इस का अन्दाज़ा करो।

और **तीसरी** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला उस से मह़ब्बत रखते हैं, अगर तेरे मह़ल्ले के रईस या शहर के ह़ाकिम को तुझ से मह़ब्बत हो तो तू इस पर फ़ख़्र करेगा और कई मक़ाम पर इस से फ़ाइदा उठाएगा फिर सोच कि रब्बुल आ़लमीन की मह़ब्बत कैसी होगी !

और **चौथी** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला उस के कारसाज़ हो जाते हैं उस के उमूर की तदबीर करते हैं।

और **पांचवीं** येह है कि उस के रिज़्क़ के कफ़ील हो जाते हैं, **अल्लाह** तआ़ला बिग़ैर किसी मेहनत और मशक़्क़त के रिज़्क़ को उस की त़रफ़ लाते रहते हैं।

1.....यहां तर्जमे में येह जुम्ला ''उस की शुक्र गुज़ारी करते हैं'' तह़रीर था, जो कि नामुनासिब है लिहाज़ा इसे ''उसे शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है'' से तब्दील कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

2.....यहां तर्जमे में येह जुम्ला ''उस की ता'ज़ीम करते हैं'' तह़रीर था, जो कि नामुनासिब है लिहाज़ा इसे ''इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत से नवाज़ता है'' से तब्दील कर दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

और **छटी** येह है कि वोह उस का मददगार होता है और उस के हर दुश्मन को और हर बुराई का इरादा करने वाले को उस से रोकता रहता है।

सातवीं येह है कि वोह उस का अनीस हो जाता है, वोह किसी ह़ाल में भी वह़शत मह़सूस नहीं करता और न तबद्दुल और तग़य्युर का उसे ख़ौफ़ होता है।

आठवीं नफ़्स की इ़ज़्ज़त, उसे दुन्या और दुन्या वालों की ख़िदमत की ज़िल्लत नहीं पहुंचती बल्कि वोह इस पर भी रिज़ामन्द नहीं होता कि दुन्या के बादशाह और जाबिर लोग उस की ख़िदमत करें।

और **नवीं** हिम्मत की बुलन्दी, वोह दुन्या और दुन्या वालों की गन्दगी में आलूदगी से बुलन्द हो जाता है और इस के खेल तमाशा और ख़ुराफ़ात की त़रफ़ तवज्जोह नहीं करता।

दसवीं दिल का ग़िना कि वोह दुन्या के हर ग़नी से ज़ियादा ग़नी होता है। हमेशा पाकीज़ा नफ़्स और फ़राख़ सीना रहता है उसे कोई ह़ादिसा घबराहट में नहीं लाता और न किसी चीज़ के गुम होने का उसे फ़िक्र होता है।

और **ग्यारहवीं** दिल का नूर है, वोह अपने दिल के नूर के साथ उ़लूम और असरार और ह़िक्मतों पर मुत्त़लअ़ होता है कि इन से बा'ज़ की इत्ति़लाअ़ बड़ी मुद्दत और बड़ी कोशिश के साथ होती है।

और **बारहवीं** शर्ह़े सद्र है कि दुन्या के मसाइब और तक्लीफ़ और लोगों की अ़य्यारियों और मक्कारियों से दिल तंग नहीं होता।

और **तेरहवीं** हैबत है, जो लोगों के दिलों में डाल दी जाती है कि सब नेक व बद उस का एह़तिराम करते हैं और हर फ़िरऔ़न व जाबिर उस से ख़ौफ़ खाता है।

और **चौदहवीं** दिलों की मह़ब्बत है, **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये दिलों में मह़ब्बत पैदा कर देते हैं कि तमाम दिल उस की मह़ब्बत पर मजबूर हो जाते हैं और तमाम लोग उस की ता'ज़ीम पर बे इख़्तियार हो जाते हैं।

और **पन्दरहवीं** बरकते आ़म्मा है जो उस के कलाम और नफ़्स या फ़े'ल या कपड़े या मकान ग़रज़ हर चीज़ में पैदा हो जाती है। यहां तक कि लोग उस मिट्टी को मुतबर्रक समझते हैं जो उस के पाउं के नीचे आ चुकी है और उस जगह को जहां वोह किसी दिन बैठा हो, और उस इन्सान से जिस ने उस को देखा हो और उस के साथ कुछ सोह़बत रखी हो।

और **सोलहवीं** जंगलों और समन्दरों ग़रज़ सारी ज़मीन की **तस्ख़ीर**(1) है, यहां तक कि अगर वोह चाहे तो हवा में उडता है, पानी पर चलता है, या सारी ज़मीन को एक घड़ी में तै़ कर लेता है।

और **सत्तरहवीं** ह़ैवानात की तस्ख़ीर है, ख़्वाह दरिन्दे हों या वह़शी जानवर या **हशरातुल अर्ज़**(2) वग़ैरा फिर वह़शी जानवर उस से मह़ब्बत रखते हैं और दरिन्दे उसे चाटते हैं।

और **अठ्ठारहवीं** ज़मीन के ख़ज़ानों की मिल्किय्यत है, वोह जब भी इरादा कर के ज़मीन पर हाथ रखता है, तो उसे ख़ज़ाने मिल जाते हैं जब अपने पाउं ज़मीन पर मारता है तो ज़रूरत के वक़्त पानी के चश्मे उबलने लगते हैं, वोह जहां भी उतरता है अगर उस का इरादा हो तो उसे खाना मिल जाता है।

और **उन्नीसवीं** **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के दरवाज़े पर क़ियादत और वजाहत है, मख़्लूक़ **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह

---

(1).....फ़रमां बरदार होना। (2).....कीड़े मकोड़े।

में उस की ख़िदमत कर के वसीला ढूंडती है और अल्लाह तआ़ला से उस की वजाहत और बरकत से लोग ह़ाजतें त़लब करते हैं।

और **बीसवीं** अल्लाह तआ़ला की जनाब में दुआ़ की क़बूलिय्यत है, वोह अल्लाह तआ़ला से जो कुछ भी मांगता है उस को देता है और अगर किसी की सिफ़ारिश करता है तो उस की सिफ़ारिश क़बूल होती है, और अगर अल्लाह तआ़ला को क़सम देता है तो वोह जिस त़रह़ भी चाहे उस की क़सम को पूरा कर देता है यहां तक कि अगर कोई इन में से पहाड़ की त़रफ़ इशारा करे तो वोह अपनी जगह से हट जाता है, वोह ज़बान से सुवाल करने का मोह़ताज नहीं, अगर उस के दिल में किसी चीज़ का ख़याल आ जाता है तो वोह ह़ाज़िर हो जाती है और वोह हाथ से इशारा करने का भी मोह़ताज नहीं होता। येह करामत तो दुन्या में हैं

वोह बीस जो आख़िरत में हैं

इक्कीसवीं येह है कि अव्वलन तो अल्लाह तआ़ला उस पर मौत की सकरात को आसान कर देते हैं और येह वोह चीज़ है कि जिस से अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام के दिल भी डरते हैं यहां तक कि इन्हों ने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि सकराते मौत को इन पर आसान करे यहां तक कि इन में से बा'ज़ के नज़्दीक मौत इस से भी ज़ियादा ख़ुशगवार होती है, जैसे प्यासे आदमी को साफ़ पानी पीने को मिल जाए, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

اَلَّذِیۡنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ طَیِّبِیۡنَ ۙ (1)

वोह लोग कि उन को फ़िरिश्ते फ़ौत करते हैं और वोह पाक होते हैं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में। (پ۱۴،النحل:۳۲)

और **बाईसवीं** ईमान और मा'रिफ़त पर साबित क़दमी है और येह वोह चीज़ है जिस का इन्तिहाई ख़ौफ़ और घबराहट है और इस पर पूरी बे सब्री और रोना है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ (1)

अल्लाह ईमान दारों को क़ौले साबित की वजह से दुन्या की ज़िन्दगी और आख़िरत में साबित क़दम रखता है।

और **तेईसवीं** फ़िरिश्ते और ख़ुश्बू और बिशारत और रिज़ामन्दी और अमान का पहुंचना है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ (2)

येह कि न ख़ौफ़ करो और न ग़म खाओ और उस जन्नत की बिशारत ह़ासिल करो कि जिस का तुम वा'दा किये जाते थे।

और आख़िरत की आयिन्दा हौलनाकियों से ख़ौफ़ नहीं खाता, और दुन्या में जो कुछ छोड़ गया है इस का उसे ग़म नहीं होता।

और **चौबीसवीं** जन्नतों में हमेशा की रिहाइश और ख़ुदा तआ़ला का **जवारे रह़मत**(3) है।

और **पच्चीसवीं** पोशीदगी में उस के रूह़ की जल्वत है आस्मान और ज़मीन के फ़िरिश्तों पर वोह इ़ज़्ज़त व एह़तिराम से उठाया जाता है और उस के बदन को ज़ाहिर में जनाज़े की ता'ज़ीम ह़ासिल होती है उस पर जनाज़े की नमाज़ के लिये लोगों की भीड़ लग जाती है, उस की

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में। (پ ۱۳، ابراهيم: ۲۷)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि न डरो और न ग़म करो और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता था। (پ ۲٤، حم السجدة: ۳۰)

(3).....यहां लफ़्ज़ "हमसाएगी" को "जवारे रह़मत" से बदल दिया गया है। (इ़ल्मिय्या)

तजहीज़ व तक्फ़ीन में लोग जल्दी करते हैं और इस को बहुत बड़ा सवाब समझते हैं और बहुत बड़ी ग़नीमत जानते हैं।

और **छब्बीसवीं** क़ब्र के सुवालो जवाब के फ़ितने से अम्न है कि वोह इस हौल से मुत़मइन रहता है और उसे सह़ीह़ जवाब का इलक़ा होता है।

और **सत्ताईसवीं** क़ब्र की फ़राख़ी और उस की रोशनी है वोह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में क़ियामत के दिन तक रहता है।

और **अट्ठाईसवीं** उस के रूह़ और जान का मानूस होना और मुअ़ज़्ज़ज़ होना है, उसे सब्ज़ परन्दों के जिस्म में रख दिया जाता है, वोह अपने नेक भाइयों के साथ रहता है और जो कुछ उन को अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से बख़्शा है उस पर ख़ुश रहते हैं।

और **उन्तीसवीं** इ़ज़्ज़त और करामत के साथ उस का ह़श्र है कि उस को लिबासे फ़ाख़िरा और ताज पहनाया जाएगा और बुराक़ पर सुवार होगा।

और **तीसवीं** चेहरे का मुनव्वर और रोशन होना है,

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ○ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ○ (1)

कई चेहरे उस दिन तरोताज़ा होंगे अपने रब को देखते होंगे।

और फ़रमाया :

وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿۳۹﴾ (2)

कई चेहरे उस दिन सफ़ेद होंगे हंसते हुवे ख़ुश।

और **इकत्तीसवीं** क़ियामत की हौलनाकियों से अम्न है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कुछ मुंह उस दिन तरोताज़ा होंगे अपने रब को देखते। (پ۲۹،القیامۃ:۲۲۔۲۳)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे हंसते ख़ुशियां मनाते। (پ۳۰،عبس:۳۸۔۳۹)

اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ (1) *या वोह शख़्स जो आएगा क़ियामत के दिन अम्न की ह़ालत में ।*

और **बत्तीसवीं** दाएं हाथ में नामए आ'माल का मिलना है, और इन में से बा'ज़ आदमी ऐसे भी होंगे जिन्हें ह़िसाबो किताब की ज़रूरत न होगी ।

और **तैंतीसवीं** ह़िसाब की आसानी है ।

और **चौंतीसवीं** नेकियों का बोझल हो जाना, और बा'ज़ इन में से ऐसे भी होंगे जिन को वज़्न के लिये खड़ा नहीं किया जाएगा ।

और **पेंतीसवीं** ह़ौज़े कौसर पर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर होना फिर वोह एक ही दफ़्आ़ पियेगा और इस के बा'द फिर कभी प्यासा न होगा ।

छत्तीसवीं पुल सिरात़ से गुज़र जाना और आग से नजात पा जाना, यहां तक कि बा'ज़ उन में से उस की आवाज़ तक न सुनेंगे, और वोह ऐसी ने'मतों में हमेशा रहेंगे जिन को वोह चाहेंगे और उन के लिये आग बुझ जाएगी ।

और **सैंतीसवीं** क़ियामत के मैदान में शफ़ाअ़त करना जैसे कि अम्बिया और रसूल (عَلَيْهِمُ السَّلَام) शफ़ाअ़त करेंगे ।

और **अड़तीसवीं** जन्नत में हमेशा का मुल्क ।

और **उन्तालीसवीं** **अल्लाह** तआ़ला की बहुत बड़ी रिज़ामन्दी ।

और **चालीसवीं** **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ की मुलाक़ात बिला कैफ़ जो कि पहलों और पिछलों का मा'बूदे बरह़क़ है ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या जो क़ियामत में अमान से आएगा ।
(پ٢٤، حم السجدة: ٤٠)

फिर मैं कहता हूं कि मैं ने इन को अपने फ़हम और अपने **मब्लगे़ इल्म**[1] के मुत़ाबिक़ शुमार किया है, अगर्चे मेरा इ़ल्म निहायत नाक़िस और क़ासिर है, और फिर इस पर मज़ीद येह है कि मैं ने इन को निहायत मुख़्तसर ज़िक्र किया है और इन को उसूलन और इजमालन ज़िक्र कर दिया है। और अगर मैं इन में से बा'ज़ की तफ़्सील बयान करता तो येह किताब इस की मुतहम्मिल न हो सकती ! क्या तू ग़ौर नहीं करता कि मैं ने हमेशा के मुल्क को एक ही ख़िल्अ़त शुमार किया है। अगर मैं इस को तफ़्सील से बयान करता तो येही चालीस ख़िल्अ़तों से ज़ियादा हो जाती। जैसे हूर का नूर और महल्लात और लिबास वग़ैरा की तफ़्सील फिर इन में से हर एक ऐसी तफ़्सील पर मुश्तमिल है जिन को ग़ैब और ह़ाज़िर का जानने वाला ही जानता है कि जिस ने इन को पैदा किया है और इन का मालिक है और हमें इन की मा'रिफ़त की कौन सी तवक़्क़ोअ़ हो सकती है जब कि ख़ुदावन्दे तआ़ला फ़रमाता है :

कोई आदमी नहीं जानता जो उन के लिये आंखों की ठन्डक से पोशीदा रखा गया है।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ (2)

और फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

"خَلَقَ فِيهَا مَالَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ"(3)

कि उस में वोह चीज़ें पैदा की गई हैं जो न किसी आंख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं और न किसी इन्सान के दिल पर उन का गुज़र हुवा।

1 .....इल्म की इन्तिहा।

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है। (پ۲۱، السجدة:۱۷)

3 .....المعجم الكبير، ١١/ ١٤٨، حديث : ١١٤٣٩۔

और मुफ़स्सिरीन **अल्लाह** तआ़ला के इस क़ौल से मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं :

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ (1)

कि इस से पहले समन्दर ख़त्म हो जाएं कि मेरे रब के कलिमात ख़त्म हों।

कि येह वोह कलिमात हैं जिन को **अल्लाह** तआ़ला अहले जन्नत के लिये जन्नत में लुत्फ़ और मेहरबानी कहेगा और जिस की येह कैफ़िय्यत हो तो हम उस के हज़ार दर हज़ार हिस्से को भी क्यूंकर पहुंच सकते हैं कि हम इन्सान हैं या उस के इ़ल्म को मख़्लूक़ क्यूं कर घेर सकती है ?

हरगिज़ नहीं बल्कि हिम्मतें जवाब दे जाती हैं और उ़कूल इन को समझने से क़ासिर हैं और ह़क़ येह है कि इसी त़रह़ होना चाहिये और वोह ग़ालिब जानने वाले की उस के फ़ज़्ले अ़ज़ीम के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ और उस की क़दीम सख़ावत के मुवाफ़िक़ एक अ़त़ा है, ख़बरदार ! इस मत़लूबे अ़ज़ीम के लिये अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिये और कोशिश करने वालों को अपनी कोशिश ख़र्च करनी चाहिये और जानना चाहिये कि येह सब कुछ उस चीज़ के मुक़ाबले में निहायत क़लील है जिस के वोह मोह़ताज हैं और जिस का वोह उस से सुवाल करते हैं और जिस को मांगने के लिये वोह दस्ते सुवाल दराज़ करते हैं।

मा'लूम होना चाहिये कि बन्दे के लिये चार चीज़ें निहायत ज़रूरी हैं : ﴾1﴿ इ़ल्म ﴾2﴿ अ़मल ﴾3﴿ इख़्लास और ﴾4﴿ ख़ौफ़।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी। (پ ١٦، الكهف: ١٠٩)

पहली के साथ वोह रास्ते को मा'लूम करेगा वरना वोह एक अन्धा है, फिर इन के मुत़ाबिक़ अ़मल करेगा वरना वोह रोक दिया जाएगा फिर अ़मल को ख़ालिस करेगा वरना वोह नुक़्सान उठाएगा, फिर वोह हमेशा आफ़ात से डरता रहेगा यहां तक कि वोह अमान ह़ासिल कर ले वरना वोह धोके में पड़ा हुवा है।

जुन्नून मिस्री (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने बिल्कुल सच कहा कि तमाम मख़्लूक़ मुर्दा है सिवा उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के और उ़लमा सोए हुवे हैं मासिवाए अ़मल करने वालों के और अ़मल करने वाले सब धोके में हैं मगर मुख़्लिस लोग और तमाम मुख़्लिस बहुत बड़े ख़त़रे पर हैं।

मैं कहता हूं चार आदमियों से इन्तिहाई तअ़ज्जुब है : एक वोह अ़क़्लमन्द जो आ़लिम न हो क्या वोह इन चीज़ों की मा'रिफ़त का एहतिमाम नहीं करता जो आयिन्दा पेश न आने वाली हैं? क्या वोह इन चीज़ों को मा'लूम नहीं करता जिन को वोह मौत के बा'द देखने वाला है, इस को दलाइल और इ़ब्रतों और इन आयतों के सुनने और इन ख़यालात से दिल की बे क़रारी और नफ़्स के तसव्वुरात से इन को मा'लूम करना चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है :

اَوَ لَمْ يَنْظُرُوْا فِیْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۙ (1)

*क्या वोह ज़मीनों और आस्मानों की बादशाही और जो चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा की हैं उन में ग़ौर नहीं करते।*

और **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या इन्हों ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत में और जो जो चीज़ **अल्लाह** ने बनाई। (پ۹، الاعراف، ۱۸۵)

اَلَا یَظُنُّ اُولٰٓئِکَ اَنَّھُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ لِیَوْمٍ عَظِیْمٍ ۙ[1]

क्या येह लोग ख़याल नहीं करते कि वोह बड़े दिन के लिये उठाए जाएंगे।

और दूसरी उस आ़लिम से जो अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता क्या वोह यक़ीनी त़ौर पर नहीं जानता कि उस के सामने बहुत बड़ी **हौलनाकियां**[2] और मुश्किल घाटियां हैं और येही बहुत बड़ी ख़बर है जिस से तुम मुंह फेरते हो। तीसरे उस आ़मिल से जो मुख़्लिस न हो, क्या वोह **अल्लाह** तआ़ला के इस क़ौल पर ग़ौर नहीं करता ?

فَمَنْ کَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّہٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِکْ بِعِبَادَۃِ رَبِّہٖٓ اَحَدًا ۙ[3]

जो आदमी अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो उसे चाहिये कि नेक अ़मल करे और अपने रब की इ़बादत में किसी को शरीक न करे।

चौथे उस मुख़्लिस से जो डरने वाला न हो क्या वोह **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ के इस मुआ़मले की त़रफ़ ग़ौर नहीं करता जो वोह अपने अस्फ़िया और औलिया (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) और अपने **ख़ादिमों**[4] से करता है जो कि उस के और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा हैं यहां तक कि वोह अपनी सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ मख़्लूक़ को फ़रमाता है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या इन लोगों को गुमान नहीं कि इन्हें उठना है एक अ़ज़मत वाले दिन के लिये। (پ۳۰،المطففین:۴-۵)

2.....यहां लफ़्ज़ "हौलनाकियों" था, येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि जुम्ले के रब्त़ के ए'तिबार से दुरुस्त लफ़्ज़ "हौलनाकियां" होना चाहिये था लिहाज़ा इस की तस्ह़ीह़ कर दी गई है। (इ़ल्मिय्या)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे। (پ۱۶،الکھف:۱۱۰)

4.....इ़बादत गुज़ारों।

وَ لَقَدْ اُوْحِیَ اِلَیْکَ وَ اِلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِکَ (الآیۃ) (1)

और बेशक वह़ी की गई तेरी त़रफ़ और उन लोगों की त़रफ़ जो तुझ से पहले थे।

और इसी त़रह़ की और भी आयात। यहां तक कि बयान किया जाता है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे : मुझे "**सूरए हूद**" और इस जैसी सूरतों ने बुढ्ढा कर दिया।[2]

फिर क़िस्सा मुख़्तसर इन की तफ़्सील वोह है जो रब्बुल आ़लमीन ने अपनी किताबे अ़ज़ीज़ की चार आयतों में बयान कर दी है,

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰکُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّکُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ (3)

क्या तुम ने ख़याल कर रखा है कि हम ने तुम को बे मक़्सद पैदा किया और तुम हमारी त़रफ़ नहीं लौटाए जाओगे ?

फिर **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ ने फ़रमाया :

وَ لْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ اِنَّ اللّٰہَ خَبِیْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (4)

*चाहिये कि हर आदमी उस पर ग़ौर करे जो उस ने कल के लिये भेजा है और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे अ़मलों से ख़बरदार है।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक वह़ी की गई तुम्हारी त़रफ़ और तुम से अगलों की त़रफ़। (پ٢٤،الزمر:٦٥)

2.....المعجم الكبير، ١٧ / ٢٨٦، حديث : ٧٩٠ ـ

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ? (پ١٨،المؤمنون:١١٥)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (پ٢٨،الحشر:١٨)

फिर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (1)

जिन लोगों ने हमारे मुतअ़ल्लिक़ कोशिश की हम ज़रूर उन के लिये अपनी राहें खोल देंगे ।

फिर इन तमाम चीज़ों को एक जामेअ़ आयत में बयान कर दिया है, और वोह सब से ज़ियादा सच्चा **क़ाइल**[2] है,

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ٥ (3)

*जो शख़्स कोशिश करेगा वोह अपनी जान के लिये कोशिश करेगा बेशक **अल्लाह** तआ़ला तमाम आ़लम से बेनियाज़ है ।*

और हम **अल्लाह** तआ़ला से अपने क़दम की लग़ज़िश और अपने क़लम की हर बे राह रवी से मुआ़फ़ी त़लब करते हैं और उन तमाम अक़्वाल से मग़फ़िरत के मुतमन्नी हैं जो हमारे आ'माल के मुत़ाबिक़ न हों, और हर उस चीज़ से मग़फ़िरत के त़ालिब हैं जिस का हम ने दा'वा किया और इस को दीने इलाही के इ़ल्म की ह़ैसिय्यत से ज़ाहिर किया ह़ालांकि इस में बहुत सी कोताहियां हैं और हम इस से हर उस ख़याल से मग़फ़िरत के त़ालिब हैं जिस ने हम को **तसन्नोअ़**[4] पर तय्यार किया और जिस का हम ने अपनी

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे । (پ۲۱،العنکبوت:٦٩) 2.....कलाम फ़रमाने वाला ।
3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक **अल्लाह** बे परवाह है सारे जहान से । (پ۲۰،العنکبوت:٦) 4.....बनावटी पन ।

किताब में इन्दराज किया या हर उस कलाम से जिस को हम ने नज़्म किया, या हर उस इ़ल्म से जिस का हम ने नफ़्अ़ दिया और हम उस से सुवाल करते हैं कि वोह हमें और ऐ भाइयों की जमाअ़त ! तुम्हें भी हमारे इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हम ख़ालिस उस की रिज़ा मन्दी चाहें और सुवाल करते हैं कि वोह इस इ़ल्म को हम पर वबाल न बनाए और उस की नेकियों के तराज़ू में रखे जब कि हमारे आ'माल हमारी त़रफ़ लौटाए जाएं, यक़ीनन वोह बड़ा **जवाद**[1] निहायत करम फ़रमाने वाला है।

शैख़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येही वोह है जिस का हम ने क़स्द किया था कि उ़क़्बा के त़रीक़े के सुलूक की कैफ़िय्यत की शई में ज़िक्र करेंगे और हम ने अपने मक़्सद को पूरा किया और तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** के लिये हैं कि जिस के एह़सान से नेकियां पूरी होती हैं और जिस के फ़ज़्ल से बरकात का नुज़ूल होता है और **अल्लाह** तआ़ला अपनी बेहतरीन मख़्लूक़ पर हर ह़ाल में रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जिस ने मा'बूदे ह़क़ीक़ी की त़रफ़ दा'वत दी या'नी ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम नूरे मुजस्सम अह़मदे मुजतबा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और आप की आल पर पाकीज़ा और बरकत वाली सलामती नाज़िल फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ الْاَمِیْنِ

وَعَلٰی اٰلِہِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاھِرِیْنَ وَاَصْحَابِہٖ وَاَوْلِیَاءِ اُمَّتِہٖ اَجْمَعِیْنَ

1...यहां लफ़्ज़ "सख़ी" तह़रीर था, जिसे लफ़्ज़ "जवाद" से बदल दिया है क्यूंकि बारी तआ़ला के लिये लफ़्ज़े "सख़ी" इस्ति'माल करने को फ़तावा रज़विय्या जिल्द 27 सफ़्ह़ा 165 पर मन्अ़ किया गया है। (इ़ल्मिय्या)

“मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या” की त़रफ़ से पेशकर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علَیہ﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (त़ुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ुक़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) फ़ज़ाइले दुआ़ (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ शर्ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ़ होने वाली अ़रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा–मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़मज़मतुल क़मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (कुल सफ़ह़ात : 713, 677, 570)

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 132)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्ह़ात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्ह़ात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्ह़ात : 59)

(87) सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़्ह़ात : 274)

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

(88) सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्ह़ात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम) (कुल सफ़्ह़ात : 32)

(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्ह़ात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़्ह़ात : 86)

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्ह़ात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िकमत (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्ह़ात :48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्ह़ात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्ह़ात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 33)

(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्ह़ात : 32)

(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़्ह़ात : 48)

(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्ह़ात : 36)

(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)

(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्ह़ात : 32)

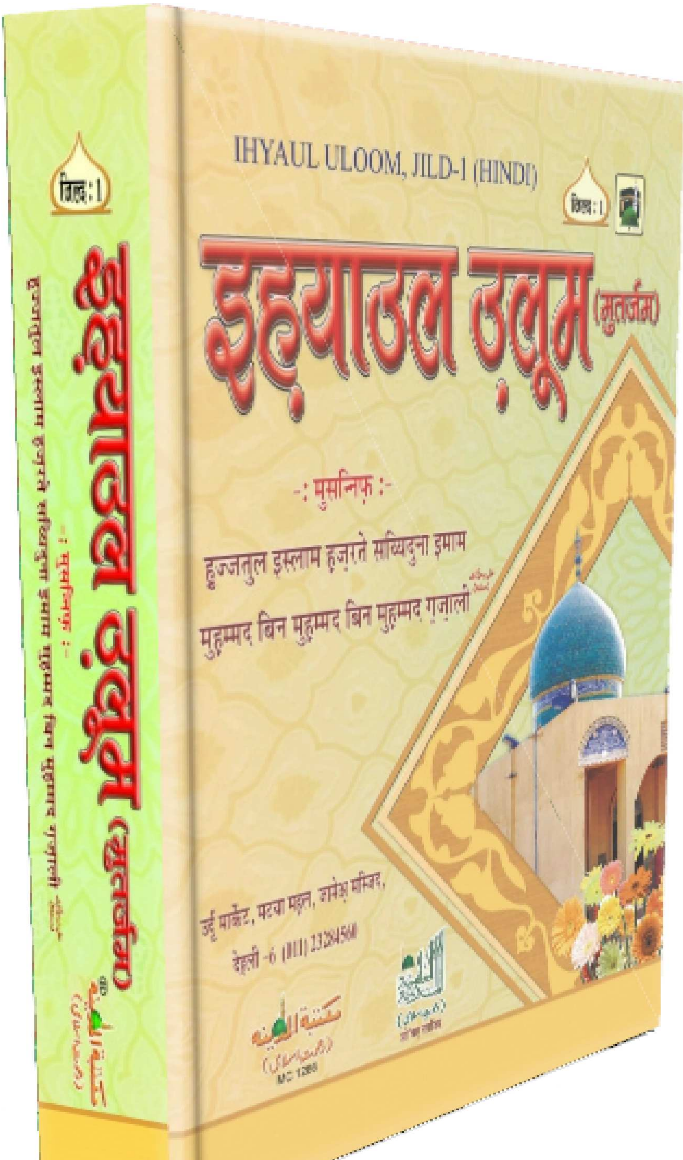
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़्ह़ात : 49)

(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(115) अ़त़्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्ह़ात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(117) आंखो का तारा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़्ह़ात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्ह़ात : 101)

ماٰخذ و مراجع

ترجمۂ قرآن کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ١٣٤٠ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ١٤٣٢ھ
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل سید محمد نعیم الدین مراد آبادی متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ١٤٣٢ھ
تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی البروسوی متوفی ١١٣٧ھ	کوئٹہ
تفسیر درمنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی متوفی ٩١١ھ	دار الفکر بیروت ١٤٠٣ھ
التفسیر المدارک	عبد اللہ بن احمد النسفی ٧١٠ھ	دار المعرفۃ ٢٠٠٠ء
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ٢٥٦ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری متوفی ٢٦١ھ	دار ابن حزم بیروت ١٤١٩ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ٢٧٩ھ	دار الفکر بیروت ١٤١٤ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ٢٧٣ھ	دار المعرفۃ بیروت ١٤٢٠ھ
الفردوس	الحافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ الدیلمی متوفی ٥٠٩ھ	دار الفکر بیروت ١٤١٨ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ٢٧٥ھ	دار احیاء التراث بیروت ١٤٢١ھ
سنن الکبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٤ھ
المسند	امام احمد بن حنبل متوفی ٢٤١ھ	دار الفکر بیروت ١٤١٤ھ
سنن دارمی	امام الحافظ عبد اللہ بن عبد الرحمٰن الدارمی متوفی ٢٥٥ھ	باب المدینہ کراچی
المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد حاکم نیشاپوری متوفی ٤٠٥ھ	دار المعرفۃ بیروت ١٤١٨ھ
البحر الزخار	امام ابوبکر احمد بن عمرو البزار متوفی ٢٩٢ھ	مکتبۃ العلوم والحکم المدینۃ ١٤٢٤ھ
موسوعۃ ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد قرشی متوفی ٢٨١ھ	مکتبۃ العصریۃ بیروت ١٤٢٦ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢١ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ٣٦٠ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٢ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ٣٦٠ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٠ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی متوفی ٩١١ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٥ھ
الترغیب والترہیب	زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری متوفی ٦٥٦ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٧ھ
نوادر الاصول	امام ابو عبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی متوفی ٣٢٠ھ	مکتبہ امام بخاری
حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی متوفی ٤٣٠ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٨ھ
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علاء الدین علی بن بلبان الفارسی متوفی ٧٣٩ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٧ھ

جامع البیان العلم وفضلہ	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ القرطبی متوفی ٤٦٣ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٨ھ
الزہد	امام ہناد بن السری الکوفی متوفی ٢٣٤ھ	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی الکویت ١٤٠٦ھ
الزہد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفی ٢٤١ھ	دار الغد الجدید المنصورۃ مصر ١٤٢٦ھ
کتاب الزہد	امام عبد اللہ بن مبارک مروزی متوفی ١٨١ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الزہد	امام وکیع بن جراح متوفی ١٩٧ھ	مکتبۃ الدار مدینۃ المنورۃ ١٤٠٤ھ
کشف الخفاء	الشیخ اسماعیل بن محمد الجراحی الشافعی متوفی ١١٦٢ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٢ھ
المقاصد الحسنۃ	شیخ محمد عبد الرحمٰن سخاوی متوفی ٩٠٢ھ	دار الکتاب العربی بیروت ١٤٢٤ھ
المدخل	ابو عبد اللہ محمد العبدری المالکی الفاسی متوفی ٧٣٧ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٥ھ
شرح مسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحیٰی بن شرف نووی متوفی ٦٧٦ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٠١ھ
عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری	امام بدر الدین ابی محمد محمود بن احمد العینی متوفی ٨٥٥ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی متوفی ١٠٣١ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٢ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ١٠١٤ھ	دار الفکر بیروت ١٤١٤ھ
نصابِ اصول حدیث	المدینۃ العلمیۃ شعبہ درسی کتب	مکتبۃ المدینہ
الفتاوی الھندیۃ	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ١١٦١ھ وجماعۃ من علماء الہند	دار الفکر بیروت ١٤٠٣ھ
ردالمحتار	محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ١٢٥٢ھ	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
فتاویٰ رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ١٣٤٠ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور، ١٤١٨ھ
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ
الموسوعۃ الفقہیۃ	وزارۃ الاوقاف والشئون الاسلامیۃ۔ الکویت	دار الصفوۃ مصر ١٩٩٣ء
چندے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ
تاریخ جرجان	امام حمزہ بن یوسف الجرجان متوفی ٤٢٧ھ	المکتبۃ الشاملۃ
قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن عطیہ حارثی المکی متوفی ٣٨٦ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٦ھ
معرفۃ الصحابۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ متوفی ٤٣٠ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٢ھ
تاریخ مدینۃ دمشق	امام ابو القاسم علی بن الحسن (ابن عساکر) متوفی ٥٧١ھ	دار الفکر بیروت لبنان ١٤١٥ھ
غیبت کی تباہ کاریاں	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ
فیضانِ مزاراتِ اولیاء	المدینۃ العلمیۃ شعبہ تراجم کتب	مکتبۃ المدینہ
نصاب الصرف	المدینۃ العلمیۃ شعبہ درسی کتب	مکتبۃ المدینہ
التعریفات	سید شریف علی بن محمد بن علی الجرجانی متوفی ٨١٦ھ	دار المنار للطباعۃ والنشر
اردو لغت	ادارہ ترقی اُردو بورڈ	ترقی اُردو لغت بورڈ کراچی ٢٠٠٦ء


IHYAUL ULOOM, JILD-1 (HINDI)
जिल्द : 1
इह़्याउल उ़लूम (मुतर्जम)
-: मुसन्निफ़ :-
हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम
मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली
MC 1266

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

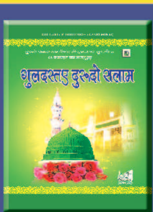
उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

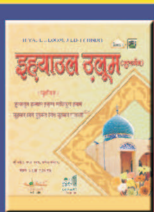
सुन्नत की बहारें

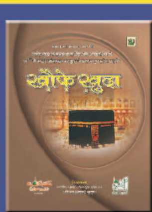
اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तबलीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके **मदनी माहोल** में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में रिज़ाए इलाही के लिये **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**" اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل









-: मक्तबतुल मदीना की शाखें :-

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385
- हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकया, मदनपूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net

ISBN 978-969-631-351-9
0101916

MC 1286